डा. रांगेय राघव

संसार के महान उपन्यास

४५ अमर उपन्यासों का कथा-सार लेखक-परिचय सहित

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

ससार के महान उपन्यास

क्रम

सामाजिक उपन्यास

मनोवैज्ञानिक उपन्यास

रंजक उपन्यास

ऐतिहासिक उपन्यास

सामाजिक उपन्यास

दो शब्द

प्रस्तुत ग्रथ में ससार के महान उपन्यासो की रूपरेखा तथा परिचय दिया गया है, जो एक सदर्भ ग्रथ के रूप में भी लाभदायक रचना सिद्ध हो सकती है। अभी हिन्दी में इन सभी प्रसिद्ध ग्रथो के अनुवाद भी प्राप्त नहीं होते। आशा है पाठको को विदेशी साहित्य का यह सक्षिप्त परिचय एक नया विस्तार देगा।

—रागेय राघव

देहात का पादरी

[द विकार ग्राफ वेकफील्ड[1]]

गोल्डस्मिथ, ओलिवर अंग्रेजी उपन्यासकार गोल्डस्मिथ का जन्म आयरलैण्ड के एक ग्राम में १० नवम्बर, १७२८ को हुआ। शिक्षा ट्रिनिटी कालेज, डब्लिन में प्राप्त की। प्रतिभाशाली थे, लेकिन पैसे के मामले में तंग और फोकटा। दिल्लगीबाजी में उस्ताद, लेकिन कभी कभी मौके पर जवाब नही बना पाते थे। डाक्टरी पढ़ी, लेकिन फिर साल भर यूरोप में घूमते रहे और किसीके कहने से कुछ लिख लिखाकर कमाते रहे। कभी किसीको पढ़ा देते। १७६१ में डॉक्टर जानसन से भेंट हुई और उसने मदद की। तब गोल्डस्मिथ ने डटकर कविताए, नाटक, निबंध और उपन्यास सृजन किया। ४ अप्रैल, १७७४ को लंदन में देहांत हुआ।

'देहात का पादरी' का मूल अंग्रेजी नाम है 'द विकार आफ वेकफील्ड'। यह उपन्यास एक महान कृति माना जाता है। गोल्डस्मिथ ने मानव-जीवन का बड़े ही कौशल से चित्रण किया है।

डॉक्टर प्रिमरोज़ एक सज्जन व्यक्ति था। उसकी पत्नी उसके अनुकूल थी। उसने अपनी सन्तान को दृढता की शिक्षा दी थी। पुत्र और पुत्रिया सब स्वस्थ, सुन्दर और शिक्षित थे। आलीविया सुन्दरी थी। वह बेतकल्लुफ और उत्साही थी। सोफिया विनम्र और लजीली थी। चारो ही पुत्र सुदृढ और जीवत लगते थे। डॉक्टर के पास चौदह हजार पाउण्ड थे। उससे ऊपर की आय वह गरीबो पर भी खर्च कर दिया करता था।

डॉक्टर का बडा बेटा जॉर्ज ऑक्सफोर्ड से पढकर आ गया। उसकी शादी मिस एरैबैला विल्मौट से निश्चित हुई। किन्तु जिस दिन विवाह होनेवाला था, वर-वधू के पिताओ मे तू-तू मै-मैं हो गई। डॉक्टर प्रिमरोज़ का धन जिस व्यपारी के पास लगा था वह चपत हो गया। विल्मौट ने इसके बाद शादी करना उचित नही समझा।

जॉर्ज को कमाने के लिए लन्दन भेज दिया गया। वहा से दूर एक गाव मे डॉक्टर प्रिमरोज भी एक छोटे-से गिरजे के पादरी का स्थान ग्रहण करने चला, जहा उसे प्रतिवर्ष १५ पाउण्ड मिलने को थे।

रास्ते मे उन्हे एक व्यक्ति मिला। वह अच्छा आदमी लगता था। उसका नाम था बर्चैल। उसीने बताया कि नया जमीदार थौर्नहिल युवक था। वह बहुत धनी था और आनन्द तथा मनोरजनप्रिय था। सर विलियम थौर्नहिल जो बहुत विख्यात और सज्जन

---

१ The Vicar of Wakefield (Oliver Goldsmith)

थे, इस नये ज़मीदार के चाचा लगते थे।

यात्रा के समय सोफिया नाले की तीव्रधारा मे गिर पडी। बर्चैल ने तुरन्त कूदकर उसकी रक्षा की। परिवार ने कृतज्ञता प्रकट की। कुछ समय बातचीत करके बर्चैल उनसे बिदा लेकर चला गया।

हेमत ऋतु थी। दुपहर ढल चुकी थी। नया ज़मीदार थौर्नहिल उधर से शिकार करने निकला। मार्ग मे वह पादरी से बाते करने रुक गया। ओलीविया के नयनो मे उसे कुछ अनुराग दिखाई दिया। इसके बाद वह उनके घर अक्सर आने लगा। पादरी उसे हिरन के मास की स्वादिष्ट टिकिया खिलाता और लडकिया की सुन्दरता की सुगन्ध तो उसके आसपास फैलती ही रहती।

अक्सर बर्चैल भी उनके घर आता, परन्तु उसकी तुलना मे जमीदार थौर्नहिल बहुत बडा आदमी था। इसलिए बर्चैल की कद्र कम होना एक मामूली-सी बात थी।

एक दिन तरुण जमीदार थौनहिल दो युवतियो के साथ आया। वे बहुमूल्य वस्त्र पहने हुई थी। थौर्नहिल ने उनका परिचय दिया जो कि शहर से आई थी और फैशनेबुल स्त्रिया थी। उन स्त्रियो के व्यवहार से प्रिमरोज़-परिवार दो-तीन बार चौक भी पडा। उनमे शहरी आदते थी। परन्तु उन्होने एक बात मे सफलता पाई, प्रिमरोज-परिवार की लड-कियो को उन्होने फेशनपरस्ती की तरफ बढाया। पादरी की नसीहतें इस मामले मे कारगर नही हुई। वह इस तरह की चमक-दमक का विरोधी था।

घर की औरतो ने तय किया कि घर का लचर घोडा बेच दिया जाए और एक अच्छा घोडा खरीदा जाए। पादरी का दूसरा बेटा मौजेज इस कार्य के लिए पडोस के इलाके मे लगनेवाले मेले मे भेजा गया ताकि वह सौदा कर आए। उसने अपने घोडे को अच्छी कीमत पर बेच दिया। लेकिन वहा उसे एक आदमी ने बुरी तरह ठग लिया। नतीजा यह हुआ कि परिवार को बहुत हानि पहुची। इस घटना से वे पहले से भी अधिक गरीब हो गए।

तरुण ज़मीदार थौर्नहिल की साथिनो ने श्रीमती प्रिमरोज़ से कहा कि वे ओली-विया और सोफिया को शहर ले जाना चाहती थी। श्रीमती प्रिमरोज़ इस विचार से बहुत प्रसन्न हुई। किन्तु बर्चैल इस विचार के बहुत विरुद्ध रहा और उसने इसके विरुद्ध इतनी बाते कही कि परिवार से उसका तनाव-सा हो गया। कुछ ही दिन बाद ज़मीदार थौर्न-हिल ने परिवार को सूचना दी कि वे स्त्रिया अब इन लडकियो को साथ नही ले जा सकेंगी, क्योकि किसी ईर्ष्यालु व्यक्ति ने इधर की उधर भिडाकर घपला कर दिया था। तभी दोनो महिलाओ के नाम बर्चैल का लिखा एक पत्र प्राप्त हुआ जिसमे चेतावनी दी गई थी कि वे इन लडकियो को अपने साथ नही ले जाए। इस घटना के बाद तो बर्चैल के बारे मे बात साफ ही हो गई।

तरुण ज़मीदार थौनहिल अब इनके घर पहले से भी अधिक आने-जाने लगा। उसके व्यवहार से कुछ ऐसा प्रकट होने लगा कि वह विवाह नही, प्रेम करना चाहता था।

एक दिन साझ हो चली थी। पादरी का पुत्र डिक भागा-भागा आया और उसने कहा कि ओलीविया को दो आदमी ज़बर्दस्ती एक गाडी मे लिए जा रहे थे, वह स्वय देख-

कर आया था। वह काफी रोई-धोई थी, परन्तु उसे विवश कर दिया गया था।

पादरी ने उसकी रक्षा करने का बीडा उठाया और उपाय प्रारम्भ किया। उसे पहले जमीदार थौर्नहिल पर सदेह हुआ किन्तु ज़मीदार ने कसमे खाई और कहा कि उसका इस मामले से कोई ताल्लुक नही था। अब बर्चेल के अतिरिक्त और किसपर सदेह हो सकता था? इस खोज-ढूढ मे पादरी बीमार पड गया। तीन सप्ताह बाद उसे अपनी पुत्री एक गाव की सराय मे अकेली मिली। उसको यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ, बल्कि दिल को धक्का लगा कि झूठी शादी का लालच दिखाकर ओलीविया को चकमा देकर भगा ले जानेवाला और कोई नही, स्वय जमीदार थौनहिल ही था, बल्कि बर्चेल ने तो इसमे बाधा देने की भी चेष्टा की थी।

अगली रात जब वे घर लौटकर आए तो पादरी की वेदना और अधिक बढ गई। उसके घर मे आग लगी हुई थी। परिवार किसी तरह बचकर बाहर भाग निकला। किन्तु इमारत बरबाद हो गई और इसलिए उन्हे एक बडे रद्दी कोठे मे शरण लेनी पडी। पादरी की पत्नी ने पुत्री को देखा तो वह घृणा से कटु वचन कहने लगी। पादरी ने उससे कहा, "मैं एक भटके हुए प्राणी को तुम्हारे पास ले आया हू। वह अपने कर्तव्यो को सुचारु रूप से कर सके, इसलिए आवश्यक है कि हमारा पूर्ववत् स्नेह उसे प्राप्त हो।"

पादरी के ममता-भरे वचनो को सुनकर उसकी पत्नी चुप हो गई।

ओलीविया के दुःख का अन्त नही रहा, जब उसने सुना कि तरुण जमीदार थौर्नहिल का कुमारी विल्मोट से विवाह होनेवाला था। विल्मौट धनी थी और एक दिन उसीसे ओलीविया के भाई की शादी टट गई थी।

डॉक्टर प्रिमरोज को क्रोध-सा हो आया। उसने तरुण ज़मीदार के सामने जाकर उसे खूब फटकारा। तरुण ज़मीदार अपने रुपये मागने लगा। पादरी के पास धन नही था जो किराया चुका देता। अगले ही दिन जमीदार ने पादरी को काउन्टी की जेल मे डलवा दिया, क्योकि वह कर्जदार था।

पादरी का परिवार अब और भी अधिक सकट मे पड गया। धनाभाव ने अपनी भयकर दाढे खोल दी।

जेल मे ही पादरी को यह हृदय-विदारक सवाद मिला कि ओलीविया बीमार होकर इस ससार से सिधार गई। इसी घटना के बाद एक दिन उसकी पत्नी ने रो-रोकर उसे यह समाचार दिया कि गुडे उसकी बेटी सोफिया को पकडकर ले भागे थे।

मुसीबतो के ढेर ने पादरी को अधमरा-सा कर दिया। पादरी का पुत्र जॉर्ज इस अत्याचार के विषय मे पिता का पत्र पाकर अत्यन्त क्रुद्ध हो उठा और परिवार को धोखा देनेवाले तरुण जमीदार थौर्नहिल को दण्ड देने उसके घर पहुचा। ज़मीदार के नौकरो ने उसपर हमला कर दिया और जब जॉर्ज ने उनमे से एक को घायल कर दिया तो जॉर्ज को भी गिरफ्तार करके पिता के पास ही जेल मे भेज दिया गया।

पादरी अब बहुत बीमार हो गया। उसने अन्तिम प्रयत्न किया। तरुण ज़मीदार थौर्नहिल के चाचा सर विलियम थौर्नहिल को उसने सारी घटना लिख दी और उनके उत्तर की प्रतीक्षा पर आशा लगाए रहा। और कोई चारा नही था। मृत्यु निकट आती लग रही

थी। वह परमात्मा से अपने अपराधो की क्षमा मागता, नित्य प्रार्थना करने लगा।

जब निराशा की पराकाष्ठा हो गई, एक दिन बन्दीगृह मे सोफिया के साथ बर्चैल ने प्रवेश किया।

"पापा !" वह चिल्ला उठी ! "यही वे वीर हैं जिन्होने मेरी रक्षा की है।"

पादरी ने बर्चैल के गुणो को स्वीकार किया और कहा कि उससे अधिक उसकी पुत्री के लिए और कोई व्यक्ति योग्य नही था।

तब पता चला कि सर विलियम थौर्नहिल और कोई नही, स्वय बर्चैल ही था।

जो दो गुडे तरुण ज़मीदार थौर्नहिल ने सोफिया को उडाने के लिए तैनात किए थे उन्हे देखकर अब वह स्वय काप उठा। उसी समय एक व्यक्ति और आया। वह वही ठग था जिसने मौजैज़ को ठगा था। दूसरी बार घोडा बेचने जब स्वय पादरी गया था, तब उसीने पादरी को भी धोखा दिया था। इस समय उसी ठग ने बताया कि तरुण ज़मीदार थौर्नहिल और ओलीविया का सचमुच विवाह हुआ था। ज़मीदार के गुमाश्ते ने एक असली पादरी को बुला लिया था, ताकि वह इस शादी से अपने मालिक पर अपना असर डालता रह सके।

तभी पादरी को पता चला कि ओलोविया अभी तक जीवित थी। ओलीविया की मौत की खबर भी ज़मीदार और विल्मौट की शादी का रास्ता साफ करने को उडाई गई थी, वर्ना पादरी इसमे व्याघात डालने का प्रयत्न करता।

जब तरुण ज़मीदार सब तरफ से घिर गया तब वह अपने चाचा थौर्नहिल के चरणो पर दया की भीख मागता हुआ गिर पडा।

सर विलियम ने कहा, "तेरे अपराध, पाप और अकृतज्ञताए, किसी भी प्रकार की करुणा की अधिकारिणी नही है। किन्तु मैं फिर भी तुझपर दया करूगा। तुझे केवल ज़रूरी खर्चा मिलेगा और जो कभी तेरी जायदाद थी, उसका तिहाई भाग ओलीविया का होगा।'

अगले दिन सर विलियम थौर्नहिल से सोफिया का विवाह हो गया। अब जॉर्ज भी बन्दीगृह से मुक्त हो चुका था। मिस विल्मौट से उसका परिणय हो गया। उसी सुबह सवाद आया कि जो सौदागर पादरी का धन ले भागा था, वह एण्टवर्प मे गिरफ्तार हो चुका था और पादरी का धन फिर मिल चुका था।

पादरी के जीवन के सब काम अब पूरे हो चुके थे। उसकी कामना थी कि वह अब अनन्त विश्राम करे। वह बुरे दिनो मे सहन करने के लिए अपेक्षाकृत अधिक शक्ति अर्जित करना चाहता था।

प्रस्तुत उपन्यास अठारहवीं सदी की एक महान कृति है जिसमें तत्कालीन समाज और व्यक्तियो का बहुत ही अच्छा चित्रण हुआ है। गोल्डस्मिथ में भाषा की चुहल काफी है और उपन्यास में करुणा और मनोरजक तत्त्व दोनो ही समान रूप से हमारे सामने आते हैं। प्रस्तुत उपन्यास पादरी की आत्मकथा के रूप में लिखा गया है। वही सारी कथा सुनाता है।

सुख की खोज

[विल्हेम मीस्टर[1]]

गेटे, जोहान वुल्फगैंग वान जर्मन महाकवि गेटे का जन्म फ्रैंकफोर्ट-आन-मेन में १७४९ में हुआ। आप एक राज्य-परामर्शदाता के पुत्र थे। आपने लीपज़िग और स्ट्रैसबर्ग में शिक्षा प्राप्त की। बीस वर्ष के भीतर ही अपनी प्रारंभिक रचनाएं आपने प्रकाशित कराईं। १७७५ में आपको ड्यूक कार्ल आगस्ट मिले, जो सेक्स वाइमार के शासक थे। गेटे को उन्होंने अपना राज्य सचिव बना लिया। उनकी थुरिन्जियन रियासत कुछ ही दिनों में संस्कृति का केन्द्र बन गई। ड्यूक के नाट्यगृह में गेटे ही सूत्रधार थे और आपने उनके खेती के फार्मों तथा खानों में नये वैज्ञानिक सिद्धांतों द्वारा कार्य प्रारंभ कराया। १८०६ में गेटे ने क्रिस्टियेन वल्पियस नामक महिला से विवाह किया जो आपके घर की देखरेख गत १८ वर्षों से करती थी। २२ मार्च, १८३२ को वाइमार में आपका देहांत हो गया। आप कवि, उपन्यासकार, नाटककार, राजनीतिज्ञ, वैज्ञानिक तथा दार्शनिक सभी कुछ थे। आपने यूरोप पर गहरी छाप डाली थी। आपके समय में नेपोलियन ने जर्मनी को पराजित किया था। किन्तु जब गेटे के भव्य व्यक्तित्व को नेपोलियन ने देखा था तो उस गर्वीले सम्राट के मुख से भी निकल गया था कि वह एक महापुरुष के सामने आ गया था।

'विल्हेम मीस्टर' (सुख की खोज) गेटे का महान और प्रसिद्ध उपन्यास है। इसका पहला भाग 'विल्हेम मीस्टर्ज अपरेंटिसशिप' के नाम से १७९५-९६ में छपा। फिर आगे चलकर १८२१ २९ में दूसरा भाग 'विल्हेम मीस्टर्ज जर्नीमेन यिअर्ज' के नाम से छपा। जर्मन साहित्य में गेटे का जो स्थान है, वह अमर है, किन्तु गेटे अब विश्व-साहित्य का अंग बन चुके हैं।

सुन्दरी अभिनेत्री मरियाना को धनी नौबर्ग की तुलना मे विल्हेम मीस्टर ही अधिक पसन्द आया। नौबर्ग के वे उपहार उसका हृदय नही जीत सके। मरियाना की नौकरानी बार्बरा के शब्दो मे विल्हेम एक अनुभवशून्य व्यापारी का पुत्र था। विल्हेम के पिता को पुत्र का एक अभिनेत्री से सम्बन्ध रखना पसन्द नही था। लेकिन बावजूद इसके विल्हेम नाट्य गृह मे अपनी मित्र से मिलने जाया करता था। अपने लडकपन मे उसने बडे दिन पर एक कठपुतली का तमाशा देखा था। तब से ही नाटक के प्रति उसका हृदय सदैव झुका रहता। उसका मित्र और होनेवाला रिश्तेदार सदैव मरियाना के विरुद्ध बाते करता। वह विल्हेम को बार-बार बताता कि मरियाना उससे प्रेम नही करती थी।

---

१. Wilhelm Meister (Johann Wolfgang Von Goethe)

और यह कि उसका एक प्रेमी और था। परतु विल्हेम पर जैसे उन बातो का कोई प्रभाव नही पडता था। एक बार उसके पिता ने उसे व्यापार के लिए यात्रा करने को कहा। परन्तु विल्हेम जब चला तो अपने मित्र सर्लो के पास गया, जोकि एक नाट्यगृह चलाता था। विल्हेम ने विचार किया कि वहा जाकर वह अभिनेता बने और बाद मे सुविधानुसार मरियाना से विवाह कर ले।

विल्हेम ने ये सारी बाते एक पत्र मे लिख ली और मरियाना से मिलने गया। लेकिन मरियाना का व्यवहार उसने शुष्क-सा पाया। दुपहर का समय था। विल्हेम ने पत्र को जेब से बाहर नही निकाला। मरियाना का गले मे लपेटने का रूमाल उठाकर वह लौट आया। आधी रात हो गई। वह बेचैन-सा सडको पर घूमता रहा। तभी उसे लगा जैसे मरियाना के घर से कोई काली छाया-सी निकली। कौन होगा वह व्यक्ति ? यही उसके मस्तिष्क मे चक्कर लगाने लगा। घर आकर उसने इसे भल जाना चाहा। रूमाल जेब से निकाला तो उसने उसके कोने मे एक पत्र बधा देखा। यह मरियाना ने नौर्बर्ग को लिखा था और बडे प्रेम से उसे सध्याकाल मे बुलाया था। इस पत्र को देखकर विल्हेम को जैसे काठ मार गया। उसकी यत्रणा असह्य-सी हो गई। और वह इस धक्के को बर्दाश्त नही कर सका। ज्वर ने उसे घेर लिया। उस तीव्र ज्वर से जब वह मुक्त हुआ, तब तक मरियाना की नाटकमडली उस नगर को छोडकर जा चुकी थी। अब वह फिर व्यापार मे लग गया। पिता ने उसे काम सौपकर भेज दिया। वह मार्ग मे एक रमणीक पार्वत्य नगर मे कुछ विश्राम लेने को रुक गया। वहा उसे दो बेकार अभिनेता मिले। एक तो लअर्टीज था और दूसरी थी सुन्दरी फिलीना। विल्हेम ने अपना मनोरजन प्राप्त कर लिया। तभी रस्सियो पर नाच दिखानेवालो की एक मडली आ गई। उसमे बहुत सुन्दर, गभीर स्वभाव की मिनन नामक एक बारह वर्षीया बालिका थी। वह विल्हेम से बहुत हिल-मिल गई। विल्हेम ने उसे उस दल से छुटकारा दिलाया। यही उनके साथ एक दाढीवाला विचित्र-सा व्यक्ति और आ मिला, जो कि हाप बजाने मे बडा कुशल था। वह तारो को ऐसा झनझनाता कि सुननेवाले विमुग्ध हो जाते।

मैलिना नामक एक अभिनेता और आ गया और विल्हेम ने कपनी बनाने मे उसको सहायता दी। उनके दल मे एक बुजुर्ग भी था, जिसे सब लोग विद्वान कहते थे, क्योकि वह बडी लच्छेदार भाषा का प्रयोग करता था। उस विद्वान ने विल्हेम को बताया कि वह मरियाना के साथ रगमच पर काम कर चका था। उसीने यह भी बताया कि जब मरियाना विल्हेम के नगर से जा रही थी, तब वह मा बननेवाली थी। मरियाना एक गाव की सराय मे छूट गई थी। विद्वान ने ही उसके प्रसव का व्यय दिया था परन्तु वह एक दुश्चरित्रा-दुष्टा स्त्री थी जिसने धन पाने के बाद उसे अपना समाचार तक नही भेजा था। किंतु विल्हेम मरियाना को एक अधभूखी, दीन, जर्जर माता के ही रूप में देख सका, जो शायद उसीके पुत्र को लिए, बेबस-सी भटकती फिर रही थी।

निकट ही एक काउट का स्थान था। उसके यहा राजकुमार अतिथि बनकर ठहरा हुआ था। काउट ने इस मडली को अपने किले मे बुलाया, ताकि राजकुमार का मनोरजन हो सके। मडली को इसमे काफी मुनाफा हुआ। काउट की पत्नी ने विल्हेम मे कुछ

दिलचस्पी ली। लेकिन इन लोगो का एक खेल गलत बैठा और काउट तथा उसकी पत्नी दोनो ने ही फिर दिलचस्पी नही ली। विल्हेम को काउट के कपडे पहनकर आना था कि काउटेस भ्रम मे पड जाए। लेकिन काउटेस की जगह उसे काउट ने देखा और उसे लगा कि वह एक भूत देख रहा था।

किले मे ही विल्हेम को जार्नो मिला। यह राजकुमार का खास मुहलगा था। बडा वाक्चतुर व्यक्ति था। उसने नाटकमडली मे काम करने के लिए विल्हेम को खूब फटकारा। लेकिन उसने इसी बातचीत मे शेक्सपियर की कृतियो का परिचय विल्हेम को दिया।

काफी पैसे मिल जाने से अभिनेतागण एक सुदूर नगर की ओर चल पडे। जहा मैलिना को आशा थी कि वह अपनी कम्पनी जमा लेगा।

किंतु रास्ते के जगल मे उन लोगो पर डाकुओ ने हमला कर दिया। उनको रोकते समय विल्हेम काफी घायल हो गया। सब लोग इधर-उधर भाग निकले। जब विल्हेम को होश आया तो उसके पास फिलीना और मिनन के अतिरिक्त और कोई नही था।

तभी एक घुडसवारो का दल उधर मे निकला। उस दल का नेतृत्व एक अत्यन्त सुन्दर स्त्री कर रही थी। विल्हेम को लगा जैसे वह परियो की रानी थी। उसके साथ एक बुजुर्ग था, जिसे वह चाचा कहती थी। उन्होने विल्हेम की सुश्रूषा की। विल्हेम फिर मूर्च्छित हो गया। और जब उसने आखे खोली, उसके उपकारक वहा से जा चुके थे।

निकट के ही एक ग्राम मे फिलीना और मिनन की सेवा से धीरे-धीरे विल्हेम फिर स्वस्थ हो गया। और तब वह अपने मित्र सर्लो के पास गया। वह बिखरे हुए अभि-नेताओ का फिर से पता लगाने लगा। परन्तु उसे परियो की रानी के बारे मे कुछ भी पता न चल सका।

सर्लो की मडली मे विल्हेम ने हैमलेट नामक नाटक के नायक का पार्ट करना स्वीकार कर लिया। सर्लो की बहिन ऑरेलिया को ओफीलिया का पार्ट दिया। ऑरेलिया एक युवती विधवा थी। उसे लोथारियो नामक एक बैरन से प्रेम था। न जाने उस प्रेम मे क्यो कुछ अवरोध आ गया था और ऑरेलिया इसलिए बहुत खिन्न रहती थी। सर्लो के घर मे एक खूबसूरत, तीन साल का बच्चा था। फिलीना का कहना था कि वह ऑरेलिया का किसी अन्य प्रेमी से हुआ पुत्र था। बच्चे को फैलिक्स कहते थे। वह बिलकुल अल्हड था। मिनन ने शीघ्र ही उससे अच्छी दोस्ती कर ली।

इसी बीच विल्हेम को अपने पिता के पत्र मिले। उसने जो परिवार को पत्र न लिखकर उपेक्षा दिखाई थी उन्होने इस अपराध को क्षमा कर दिया था। इसी समय दूसरा पत्र आया, जिससे उसे ज्ञात हुआ कि उसके पिता इस ससार से उठ गए थे। तब विल्हेम ने निश्चय किया कि वह फिर से रगमच और नाटक-मडली मे ही कार्य करेगा और उसने एक सबधी पर परिवार के प्रबन्ध का भार छोड दिया।

हैमलेट नाटक खेला गया। इसके बाद ही दो घटनाए हो गईं। हार्प बजानेवाले अध-पागल दाढीवाले ने आग लगा दी और उसमे फैलिक्स करीब-करीब घिर ही गया। फिलीना के पास एक व्यक्ति आता था। फिलीना ने विल्हेम को बताया कि वास्तव मे वह व्यक्ति

एक स्त्री था। उसके केश बहुत सुन्दर थे और उसका नाम मरियाना था। परन्तु विल्हेम को उसने उससे बातें न करने दी और वह उसके साथ चली गई।

ऑरेलिया बहुत बीमार पड गई। उसने विल्हेम को बैरन लोथारियो के नाम एक पत्र दिया जो कि उसके मर जाने के बाद ही बैरन के हाथो पहुचाया जाने को था। उसकी वेदना से व्याकुल होकर विल्हेम ने मिनन को श्रीमती मैलिना की देखरेख मे छोडा और स्वय लोथारियो के किले की ओर चल पडा।

विल्हेम ने पत्र दे दिया, किन्तु लोथारियो को अगले दिन सुबह एक द्वद्वयुद्ध करना था, और वह उस समय उसमे व्यस्त था। विल्हेम वही किले मे ठहर गया और अगले दिन उसने लोथारियो को काफी घायल अवस्था मे लौटते देखा। जिस डॉक्टर ने बैरन का इलाज किया उसके पास भी वैसा ही बटुआ था, जैसाकि परियो की रानी के चाचा के पास विल्हेम ने देखा था। किन्तु विल्हेम यह नही जान सका कि वह बटुआ इस डाक्टर के पास कैसे आ गया था। लोथारियो के घर मे एक तो जार्नो था, जिसके राजकुमार की मृत्यु हो चुकी थी और एक पादरी था। पादरी ऐसे ही राजकुलो मे शिक्षा दिया करता था। लोथारियो के घर की देखभाल लिडिया करती थी और अब जार्नो और पादरी ने विल्हेम को एक काम सौप दिया कि वह लिडिया को लोथारियो की टैरेसा नामक मित्र के यहा पहुचा दे, क्योकि लिडिया के वासनामय प्रेम की अभिव्यक्ति बैरन की शीघ्र आरोग्य-प्राप्ति मे बाधा पहुचा रही थी।

टैरैसा एक असाधारण स्त्री थी। वह पुरुषो की भाति सारे प्रबन्ध करने मे दक्ष थी। विल्हेम को पता चला कि एक बार लोथारियो इस स्त्री से विवाह करने ही वाला था कि उसे पता चला कि पहले वह स्वय ही टैरैसा की मा से भी प्रेम कर चुका था। तब बैरन ने लिडिया को बसा लिया। लिडिया सुन्दरी थी और टैरैसा के साथ ही पली थी।

विल्हेम जब लौटा तो उसने देखा कि लोथारियो का स्वास्थ्य लगभग सुधर चुका था। टैरैसा को देखकर ही वह समझ गया था कि ऑरेलिया की उपेक्षा किसलिए की गई थी। जार्नो ने उसे बताया कि फैलिक्स ऑरेलिया का पुत्र नही था, बल्कि एक वृद्धा उसे वह बालक सौंप गई थी और उस वृद्धा के कथनानुसार फैलिक्स स्वय विल्हेम का ही पुत्र था। विल्हेम शीघ्र सर्लो के घर पहुचा और उस वृद्धा से मिला। उसने देखा कि वह कोई और नही, बार्बरा ही थी। उसकी बातचीत मे कटुता थी। उसने बताया कि मरियाना मर चुकी थी। यद्यपि नौर्बर्ग ने उसे अनेक प्रलोभन दिए थे, फिर भी कभी मरियाना ने उसके सामने समर्पण नही किया था क्योकि वह विल्हेम से प्रेम करने लगी थी। इस घटना के काफी बाद ही विल्हेम को पता चला कि वास्तव में फिलीना के साथ एक पुरुष ही रहता था। उसने गलत कहा था कि वह एक छद्मवेशधारिणी स्त्री थी। तलाश करने पर विल्हेम को मालूम हुआ कि वह व्यक्ति लोथारियो का छोटा भाई फ्रैड्रिख था। मरियाना ने अपने पीछे एक पत्र छोडा था। जब विल्हेम ने उसे पढा तो वह आत्मग्लानि और घोर दु ख से पीड़ित हो उठा, किन्तु अब बहुत देर हो चुकी थी और उसके पास दुखी होने के अतिरिक्त और कोई चारा भी नही था।

विल्हेम ने फैलिक्स को साथ लिया और लोथारियो के दुर्ग को चल पडा। उसने

मिनन की बीमारी देख उसे टैरैसा के पास छोडा। टैरैसा ने उसे एक ऐसे मित्र के पास भेज दिया जो कुछ और लडकियो को भी पढा रहा था।

एक दिन सध्या के समय जार्नो विल्हेम को दुर्ग के एक गुप्त भाग मे ले गया। कमरा सजा हुआ था। वहा एक व्यक्ति ने उससे कहा, "शिक्षक का कार्य यह नही है कि वह गलती करने से रोके। उसका कार्य है गलती करनेवाले विद्यार्थी को सुधारे।"

यह कहकर पादरी ने विल्हेम को एक कागज़ का पुलिंदा दिया। जिसमे लिखा था, "जब तक व्यक्ति ठीक कार्य करता है, वह नही जानता कि वह क्या कर रहा है। किन्तु गलत बात करते समय हम खूब जानते हैं कि वह ठीक नही है।" दूसरे कागज़ पर विल्हेम के जीवन की घटनाए उल्लिखित थी। इसी प्रकार के अन्य कागज़ भी दुर्ग मे अन्यो को दिए गए। विल्हेम को ज्ञात हुआ कि पादरी के सिद्धान्तानुसार युवको को उपदेश नही देना चाहिए, वरन् उनके गुरुओ को उनकी रुझान देखकर उनके अभीष्ट की ओर उनको पहुचाना चाहिए।

विल्हेम ने थियेटर छोड देने का निश्चय किया और सब लोगो ने इस निश्चय का स्वागत किया।

फैलिक्स को शिक्षा नही मिल रही थी, इसलिए विल्हेम ने मन ही मन तय कर लिया और टैरैसा को पत्र लिखा कि वह उसकी पत्नी बन जाए और उसके पुत्र का माता के समान लालन-पालन करे। उसका उत्तर आने के पहले विल्हेम को लोथारियो की बहिन नटालिया के घर बुलाया गया। विल्हेम को पता चल गया था, काउटेस बैरन की बहिन भी थी। अब उसे ज्ञात हुआ कि उसके एक बहिन और थी—वही जिसके पास टैरेसा ने मिनन को भेजा था। परिस्थिति ठीक नही थी और विल्हेम की आवश्यकता पड गई थी।

वह नटालिया के भव्य भवन मे पहुचा। एक तरुणी ने उसको देखा तो उठकर उसके पास आई। उसको यह देखकर परमाश्चर्य हुआ कि वह तो स्वय परियो की रानी थी। वह अपने घुटनो पर झुक गया और भावावेश मे उसने उसके हाथो को चूम लिया। विल्हेम को पता चला कि उसके चाचा डॉक्टर का देहान्त हो चुका था। और यही उसका घर था। मिनन की हालत खराब थी। दिन-रात किसी चिन्ता मे घुल रही थी। शायद हार्पवादक की स्मृति उसे सता रही थी।

एक-दो दिन मे टैरैसा का पत्र आया। लिखा था, "मै तुम्हारी हू।" लेकिन उसने यह भी लिखा था कि लोथारियो को पूरी तरह भुला देना उसके लिए असभव था। नटालिया और विल्हेम बैरन को सूचना देने ही वाले थे कि जार्नो आ गया और उसने बताया कि टैरैसा अपनी प्रसिद्ध मा की पुत्री प्रमाणित नही हुई और अब लोथारियो से उसके विवाह मे कोई बाधा शेष नही थी।

टैरैसा आ गई और मिनन के निर्बल शरीर के लिए अब मिलन का आवेश घातक प्रमाणित हुआ। विल्हेम ने अपने शोक मे टैरैसा को दिए वचन का पालन करना छोड दिया। उसे परियो की रानी भी मिल गई।

इन्ही दिनो एक मार्चेस नामक इटली-निवासी आ गया जो कि लोथारियो का मित्र था। उसने कुछ निशानियो से यह जान लिया कि मिनन उसकी भतीजी थी, जिसे

नट चुरा लाए थे । यन्त्रवादक ही मिनन का पिता प्रमाणित हुआ । जब उसे यह ज्ञात हुआ कि जिस स्त्री को उसने प्रेम किया था वह बहिन भी थी तो उसकी बुद्धि भ्रमित हो गई और वह निरुद्देश्य कही निकल गया । अब विल्हेम की अन्तिम समस्या भी सुलभ गई । लोथारियो ने उसका हाथ थामकर कहा, "यदि मेरी बहिन से तुम्हारा गुप्त सबध था, जिसपर मेरा और टैरैसा का सबध निर्भर था, तो क्या हुआ ? उसने प्रतिज्ञा की है कि हम दोनो दम्पति पवित्र वेदी के सम्मुख उपस्थित होगे ।"

तब बैरन विल्हेम को नटालिया के पास लाया जिसने अपना प्रेम उसके प्रति स्वीकार किया ।

विल्हेम ने कहा, "सचमुच मुझे जो सुख और आनन्द प्राप्त हुए है, मै ससार मे किसी भी वस्तु से उसे बदल नही सकता ।"

प्रस्तुत उपन्यास में गेटे ने कलाकारो के तत्कालीन जीवन पर प्रकाश डाला है । उसने प्रम को माध्यम के रूप में लिया है और व्यक्ति की सुख की खोज को प्रधानता दी है । उसका वातावरण रूमानी है, परन्तु तत्कालीन समाज का उसने बहुत सुन्दर चित्रण किया है । सुख और आनन्द की तृप्ति व्यक्ति को किन अवस्थाओ में मिलती है, गेटे का उद्देश्य इसे दिखाने में रहा है ।

जय-पराजय
[प्राइड ऐण्ड प्रेजूडिस[1]]

ऑस्टिन, जेन अंग्रेजी उपन्यासकार जन ऑस्टिन गाव के गिरजे के एक पादरी की पुत्री थी, शहरों से दूर उन्होने सारी आयु गाव में ही बिता दी। १६ दिसम्बर, १७७५ को हैम्पशायर के स्टीवैन्सन नामक स्थान में आपका जन्म हुआ। जीवन भर आप अविवाहित रही और १८ जुलाई, १८१७ को जब विन्चैस्टर में आपका देहान्त हो गया, तो आप वही गिरजे के पास के कब्रिस्तान में दफना दी गई।

आपके एकाकी जीवन की झाकी आपके उपयासों में स्पष्ट हो जाती है। आपने समाज का बहुत ही सीमित दायरा देखा। गाव के ऊचे खानदान और उच्चवर्गीय व्यावसायिकों का समाज, यही आपका क्षेत्र था। लिखना आपने काफी जल्दी आरम्भ कर दिया था। किन्तु तत्कालीन सामाजिक मयादा के कारण आपको अपने उपन्यासों को अनाम ही प्रकाशित करवाना पडा।

'प्राइड ऐण्ड प्रेजूडिस' (जय पराजय) सन् १८१३ में छपा। यह आपका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है।

धन-सम्पत्तिशाली व्यक्ति के लिए अविवाहित होने पर पत्नी की आवश्यकता पडती ही है, ऐसा प्राय ही स्वीकार किया जाता है।

चार्ल्स बिगले एक धनी व्यक्ति था। उसने नीदरफील्ड पार्क नामक एक भव्य-स्थान किराये पर लिया। वह अविवाहित था।

इस घटना से लौगबौर्न मे लोगो मे बाते चल पडी, क्योकि वहा ऐसे व्यक्ति का आकर बसना एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। पडोस मे बैनैट-परिवार रहता था। उसे विशेष आकर्षण हुआ क्योकि उसमे विवाह योग्य लडकिया थी, जो धनी और क्वारे पुरुष की प्रतीक्षा कर रही थी।

लौगबौर्न मे सामाजिक सम्पर्क बढाने के कुछ स्थान थे। जहा सब एकत्र होते थे, वह एसेम्बलीहाल नाम से ख्यात था। वहा सामूहिक नृत्य होते थे। उनमे बॉलनृत्य प्रमुख था। शीघ्र ही यह भी सुनने मे आया कि चार्ल्स बिगले अपने घर के लोगो के साथ निकट भविष्य मे होनेवाले बॉलनत्य मे भाग लेने को उपस्थित होगा।

लौगबौर्न मे बैनैट-परिवार विख्यात और महत्त्वपूर्ण था। श्री बैनैट की पाच

---

१ Pride and Prejudice (Jane Austen)। इस उपन्यास का हिन्दी अनुवाद 'जय-पराजय' नाम से शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली में छपा है। अनुवादक है विद्याधर विद्यालकार।

अविवाहित पुत्रिया थी और उनके पास उनका विवाह कर देने को अधिक धन भी नही था। विरासत मे भी उन लडकियो को अधिक धन मिलनेवाला नही था।

श्रीमती बैनेट एक सुन्दरी महिला थी और उन्होने अपनी सुन्दरता को अभी तक बना रखा था। न वे बहुत समझदार थी, न उन्हे ससार की ही अधिक जानकारी थी। बल्कि उनका मिज़ाज भी ठिकाने नही रहता था। यद्यपि उन्होने अपने विवाहित जीवन के २३ वष बिता दिए थे, फिर भी वे अपने पति के हृदय को समझने की क्षमताविहीन-सी केवल अपनी धुन मे ही रहती थी। श्री बैनैट का व्यगात्मक हास्य, गाभीर्य, उनका सनकीपन, सभी कुछ ऐसे थे कि अपनी पत्नी के लिए वे एक रहस्य-सा बने हुए थे। पति और पत्नी के बीच एक दूरी-सी बनी रहती थी।

आखिर वह दिन आया और बैनैट-परिवार बॉलनृत्य मे पहुचा जहा चार्ल्स बिंगले दिखाई दिया।

देखने मे अच्छा, अकृत्रिम और सज्जन चार्ल्स बिंगले अपनी दो बहनो के साथ मौजूद था। बडी का पति हर्स्ट नामक व्यक्ति भी वहा उपस्थित था। वहा एक और युवक भी था, जिसका नाम था फिट्ज़ विलियम डार्सी। उसके बारे मे कहा जाता था कि वह बहुत धनी था। उसकी आय वर्ष-भर मे दस हज़ार पौड थी जो निस्सदेह एक बडी रकम थी। डार्सी की सुन्दरता से सब लोग प्रभावित थे और उसकी प्रशसा भी किया करते थे। किन्तु वह इतना अधिक घमण्डी था कि उसके व्यवहार ने लोगो को उसके विरुद्ध कर दिया था और जहा पहले लोग उसके प्रशसक थे, वहा अब वे उससे घृणा-सी करने लगे थे।

बिंगले वैसा अभिमानी नही लगता था। वह प्रत्येक बार नृत्य मे भाग लेता था। किन्तु डार्सी मे यह सहज भाव नही था। वह हर बार नृत्य नही करता था। वह प्रतीक्षा करता था कि कब लोग नाचते हुए घूमते हुए ऐसे आए कि वह श्रीमती हर्स्ट और कैरोलीन बिंगले के साथ ही नाच सके। और हुआ यह कि न तो वह किसी अन्य स्त्री के साथ नाचा, न उसने किसीसे परिचय ही किया। वह तो किसीसे भी मिलना नही चाहता था। उसके इस घमड से अन्य स्त्रियो के मन मे एक विक्षोभ-सा भर गया।

ऐलिज़ाबैथ बैनैट-परिवार मे दूसरी बेटी थी। नाचते समय उसे अपना जोडीदार एक बार नही मिल पाया, तो वह बाहर बैठने को मजबूर हुई। वहा श्री डार्सी और श्री बिंगले परस्पर बाते कर रहे थे। ऐलिज़ाबैथ ने उन बातो को सुना। वे दोनो इस बात से बिलकुल अनभिज्ञ थे कि कोई लडकी उनकी बातो को बैठी-बैठी सुन रही थी।

डार्सी ने बातचीत के दौरान मे बिंगले से कहा, "क्या कहा ? मैं इन स्थानीय स्त्रियो के साथ नाचू ? यह तो मुझे सज़ा देने के बराबर है !"

ऐलिज़ाबैथ यह सुनकर जल उठी, परन्तु तभी उसने फिर सुना, "हा ! बैनैट-परिवार की बडी बेटी जेन ज़रूर खूबसूरत है।"

तभी डार्सी की दृष्टि एलिज़ाबैथ पर पड गई। उसे क्या पता था कि वह सब सुन रही थी। उसने अनजाने ही कहा, "वैसे तो यह भी कामचलाऊ है, लेकिन यह कोई ऐसी सुन्दरी नही है कि मेरे हृदय मे अपने प्रति कोई आकर्षण उत्पन्न कर सके।"

यद्यपि ऐलिज़ाबैथ के हृदय मे इन बातो से श्री डार्सी के प्रति सौहार्द तो नही जन्मा, लेकिन वह थी मज़ाकिया तबियत की लडकी। उसने अपनी मित्रो को यह बात बडे मज़े ले-लेकर सुनाई। इस घटना ने उन सबका मनोरजन किया।

किन्तु इतने पर भी बिंगले और बैनैट-परिवारो मे शीघ्र ही मित्रता स्थापित हो गई। दोनो के सम्बन्ध बढ चले।

शीघ्र ही लोगो मे यह प्रकट होने लगा कि चार्ल्स और जेन एक-दूसरे के प्रति आकर्षित थे। चार्ल्स की बहिनो को जेन से भी अधिक प्रिय हुई ऐलिज़ाबैथ, लेकिन श्रीमती बैनैट उनको एक मुसीबत नज़र आती थी। उनकी पुत्री मेरी उन्हे नीरस लगती थी और वे लिडिया तथा किटी के साथ उसे भी महत्त्व नही देती थी। उनकी राय मे ये लडकिया व्यर्थ ही ही-ही करके हसनेवाली थी, जो अपना सारा समय पुरुषो के पीछे घूमने मे व्यतीत किया करती थी।

श्री डार्सी के मन मे कुछ और बात पैदा हो गई थी। वे ऐलिज़ाबैथ के प्रति बडी चौकस दिलचस्पी रखते थे। ऐलिज़ाबैथ की काली आखो मे उन्हे अब भावपूर्णता दिखाई देने लगी थी और वे उसकी प्रशसा भी किया करते थे। अब वह उन्हे अच्छी लगने लगी थी। उससे उनकी तबियत बहलने लगी थी। उसके व्यवहार मे उन्हे एक ऐसी सरलता दिखती जो आकर्षक थी। ऐलिज़ाबैथ सहज थी और उन्हे उसमे कृत्रिमता नही मिलती थी।

धीरे-धीरे बाते खुलने लगी। एक दिन बिंगले की बहिन ने डार्सी से पूछा, "अब आपके लिए मैं किस दिन आनन्द मनाऊ?"

उसने स्पष्ट ही बात मे एक रहस्य का उद्‌घाटन करने की चेष्टा की थी।

किन्तु डार्सी चौकस थे। बोले, "सचमुच! स्त्रियो की कल्पना भी कितनी तेज़ी से उडती है।"

बात साफ नही हुई।

इन्ही दिनो बिंगले-परिवार मे कुछ दिनो के लिए दोनो बडी बहिने आईं। तब बैनैट-परिवार की बडी पुत्री जेन बिंगले-परिवार मे मिलने के लिए गई। वहा उसे बडे ज़ोर का जुकाम और बुखार हो आया। उसकी तबियत खराब हो गई। इस बीमारी मे वह बिंगले-परिवार मे आकर रहने लगी। श्री बैनैट ने भी ऐसी तरकीबे की कि उनकी बेटी बिंगले-परिवार मे अधिक से अधिक दिन बनी रहे। इस निवासकाल मे जेन बिंगले-परिवार मे अधिक प्रिय हो गई और ऐलिजाबैथ उतनी प्रिय नही हो सकी। बिंगले-परिवार मे कैरोलीन अवश्य उसे बहुत आकर्षक मानती थी, किन्तु श्रीमती हर्स्ट उसे जीभ की बहुत तीखी माना करती थी।

इन सम्बन्धो के बावजूद ऐलिज़ाबैथ के हृदय मे श्री डार्सी के प्रति पूर्वग्रह बना ही रहा। उनके वे वाक्य उसे अभी तक याद थे।

तभी वहा श्री विकहैम आए। वे सुन्दर थे, स्वभाव के मीठे थे। लौगबौर्न के सबसे पास मैरीटोन नाम का एक कस्बा था। विकहैम वहा एक अफसर बनकर सैनिक रैजी-मेट मे आए थे। उस युवक अफसर से जब ऐलिज़ाबैथ की बातचीत हो गई तो डार्सी के

प्रति उसके हृदय मे जो पूर्वग्रह था, वह पहले की तुलना मे कही अधिक परिवर्धित हो गया। इसका कारण यह था कि विकहैम का पिता डार्सी के पिता की सेवा मे था और बहुत विश्वासपात्र था। उसकी सेवाओ मे प्रसन्न होकर डार्सी के पिता ने विकहैम को पुरस्कारस्वरूप कुछ सम्पत्ति देने की इच्छा की थी। डार्सी ने बडी निष्ठुरता से पिता की इस इच्छा को ठुकरा दिया था और विकहैम को बिलकुल ही वचित कर दिया था। ऐलिज़ाबैथ को डार्सी की यह निष्ठुरता स्वाथस्वरूप दिखाई दी और उसका पूर्वग्रह पहले से भी अधिक सशक्त हो उठा।

बिंगले और जेन के पारस्परिक सम्बन्ध बढते जा रहे थे। ऐसा लग रहा था कि शीघ्र ही बिंगले किसी दिन बैनैट-परिवार मे आकर जेन से विवाह का प्रस्ताव रखेगा। बॉलनृत्य मे सब फिर मिले। वहा बैनैट-परिवार का व्यवहार ऐसा रहा कि स्वय ऐलिज़ाबैथ को भी पसन्द नही आया। अचानक ही नीदरफील्ड से सारा बिंगले-परिवार शहर चला गया। और तो कोई समझ नही सका, किन्तु ऐलिज़ाबैथ ने नृत्य बेला मे अपने परिवार के व्यवहार को ही इसके लिए दोषी ठहराया।

इन्ही दिनो लौंगबौर्न मे पादरी के उत्तराधिकारी बनकर विलियम कॉलिन्स आए। वे बैनैट-परिवार से मिलने को उपस्थित हुए। यह आदमी चटक-मटक दिखाने का शौकीन था। न यह व्यवहारकुशल था, न मज़ाक ही समझ पाता था।

एक दिन इस युवक पादरी ने ऐलिजाबैथ से विवाह का प्रस्ताव किया। ऐलिज़ाबैथ उसकी लम्बी रटी-रटाई-सी वक्तृता सुनती रही और अन्त मे उसने उससे विवाह करना अस्वीकार कर दिया। कॉलिन्स पर उल्टा प्रभाव पडा। वह यही कहता रहा कि ऐलिज़ाबैथ केवल उसे सताने के लिए ऐसा कहती थी, वैसे वह उसके विरुद्ध नही थी, मन मे वह उसे चाहती थी।

परिणामस्वरूप पादरी कॉलिन्स के प्रयत्न बराबर चालू रहे, भले हा वह प्रत्येक बार सफलता से दूर ही होते गए। दो बार कॉलिन्स ने फिर प्रस्ताव रखे, किन्तु जब ऐलिजाबैथ ने फिर दोनो बार अस्वीकार कर दिया, तब कही जाकर पादरी ने इस अस्वीकृति को सत्य समझा, परन्तु वह भी बडी मुश्किल से ही। ऐलिज़ाबैथ की एक शार्लट ल्यूकस नाम की सहेली थी। कॉलिन्स ने शार्लट से ही विवाह कर लिया। उस सीधी-सादी लडकी ने कोई विरोध नही किया।

अफवाह तो यह थी कि बिंगले का हृदय डार्सी की बहिन ज्यौर्जिआना के प्रति आकर्षित था, इसीलिए वह जेन को छोड गया था। किन्तु कॉलिन्स के विवाह ने श्री बैनैट की हास्य-व्यग्य-वृत्ति को उभाड दिया। उन्होने बात ही बात मे अपनी दूसरी बेटी ऐलिज़ाबैथ से पूछा, "लडकिया शादी करने को बहुत उत्सुक होती है। लेकिन कोई उनसे पूछे कि शादी के बाद तुम्हे क्या प्रिय है, तो वह क्या चीज़ हो सकती है? मैं समझता हू, प्रेम मे तुनुक जाना! बताओ! अब तुम्हारी बारी कब आने को है? क्या तुम्हे विकहैम पसन्द है?"

विकहैम से ऐलिज़ाबैथ के सम्पर्क गहरे नही हो पाए थ। प्रवाद तो यह था कि वह किसी धनी महिला के प्रति उन्मुख हो गया था। लेकिन जहा तक पारस्परिक सम्बन्ध

थे, विकहैम और ऐलिज़ाबैथ मे मैत्री थी और उनमे कोई मनमुटाव नही था।

कॉलिन्स और शालट का विवाह हो जाने पर, वे दोनो ही उनके यहा हन्सफोर्ड मिलने गए।

पडोस मे ही डार्सी भी अतिथि बनकर ठहरे हुए थे। उन्हे देखकर ऐलिजाबैथ के हृदय मे फिर नई विरोधी भावनाए जागने लगी। उसे यह सन्देह बढने लगा कि जेन और बिगले के बढते सम्बन्धो मे असल मे डार्सी ने ही बाधा डाली थी।

परन्तु ऐलिजाबैथ से मिलकर डार्सी के मन मे प्रसन्नता हुई। डार्सी ने अचानक ही उसके प्रति अपना प्रेम व्यक्त कर दिया और विवाह का प्रस्ताव कर दिया।

ऐलिज़ाबैथ चौक उठी।

डार्सी ने अपना त्याग दिखाना चाहा। उसने कहा, "देखो ऐलिजाबैथ! मेरा सामाजिक स्थान ऊचा है। यदि मै तुम्हारे परिवार से अपना सम्बन्ध जोडता हू तो मेरा सम्मान कुछ घटेगा ही। किन्तु मै तुमसे प्रेम करता हू और उसके लिए भी तत्पर हू।"

परिणाम उल्टा हुआ। ऐलिजाबैथ का पूर्वग्रह फिर भडका। उसे वह घमडी दीखा। उसने न केवल अस्वीकार किया, वरन् अस्वीकृति के कारण भी बता दिए।

डार्सी ने प्रस्थान किया, परन्तु ऐलिजाबैथ के लिए एक पत्र छोड दिया, जिसमे बैनैट-परिवार पर गहरे व्यग्य थे, और उनमे सचाई भी थी। उसने लिखा कि वह यह बिलकुल नही जानता था कि जेन और बिगले मे पारस्परिक आकर्षण था। उसने यह भी प्रकट किया था कि विकहैम काहिल था और उसके प्रति उसने बहुत अच्छा व्यवहार किया था, जिसका फल उसे नही मिला। विकहैम ने स्वय उसकी बहिन ज्यौर्जिआना को भगा ले जाने की चेष्टा की थी।

ऐलिज़ाबैथ ने पत्र पढा परन्तु वह सहसा ही कुछ निश्चित नही कर सकी।

दो महीने बीत गए। ऐलिजाबैथ अपने एक रिश्ते के चाचा और चाची—गार्डिनर-परिवार के यहा पैम्बर्ली गई हुई थी। वहा डार्सी का भी एक मकान था। बहुत ही अन-मनी-सी ऐलिज़ाबैथ उसका घर देख रही थी। उसकी बातचीत उस घर की देखभाल करनेवाले सेवक से हुई तो उसने डार्सी की प्रशसा की अति कर दी।

ऐलिज़ाबैथ सोच ही रही थी कि अचानक डार्सी भी वहा आ गए। अब ऐलिज़ा-बैथ के हृदय मे डार्सी के प्रति कुछ आकषण होने लगा था कि तभी एक दुर्घटना हो गई, जिसने सारा काम बिगाड दिया।

सूचना आई कि लिडिया ने तरकीबे करके अपने को ब्राईटन नामक स्थान मे निमत्रित करवाया था और वहा जाने के बहाने से वह मौका पाकर विकहैम के साथ भाग गई थी, क्योकि उसका सैन्य-दल वही ठहरा हुआ था।

जेन और ऐलिज़ाबैथ के सम्बन्ध पक्के नही हुए थे। मेरी और किटी के भी नही। बीच की लडकी लिडिया का यो भाग जाना अच्छा नही था। वह भी विकहैम के साथ जिसने स्वय अपने उपकारी डार्सी की बहिन ज्यौर्जिआना को भगा ले जाने की चेष्टा की थी। खबर यह भी थी कि विकहैम और लिडिया बिना विवाह किए ही लन्दन मे मौजूद थे।

इस सवाद से डार्सी लडखडा गया। गार्डिनर-परिवार तथा सभी लोग तुरन्त श्री बैनैट से मिलने लौंगबौर्न चल पडे। श्री बैनैट के भाई (ऐलिज़ाबैथ के चाचा) गार्डिनर श्री बैनैट के साथ विकहैम और लिडिया को खोजने लदन चले गए। परन्तु श्रीमती बैनैट को दूसरी ही चिन्ता सता रही थी। उन्हे यह सोच हो रहा था कि आखिर लिडिया अपने विवाह के लिए वस्त्र कहा से खरीदेगी ?

पादरी क़ॉलिन्स को पना चला तो उसने बडे अफसोस से पत्र लिखा, लेकिन बैनैट-परिवार की चिन्ता तभी दूर हो गई। लिडिया और विकहैम का पता लग गया था और विकहैम को उससे विवाह करने को तैयार कर लिया गया था।

परिवार के सम्मान को बनाए रखने के लिए प्रयत्न करके विकहैम को न्यूकासिल रैजीमेट मे अच्छा पद दिलाया गया। लिडिया बहुत प्रसन्न थी। उसने अपनी माता और अविवाहित बहिनो को निमत्रित किया और कहलवाया कि शीत ऋतु समाप्त होने के पहले ही वह अपनी क्वारी बहिनो के लिए पति ढूढ डालेगी।

जब लिडिया से भेट हुई तब उसने बताया कि उसके विवाह मे डार्सी उपस्थित था। ऐलिजाबैथ का मत अब बदलने लगा। श्रीमती गार्डिनर की बातो से भी डार्सी के विषय मे ज्ञात हुआ। अब ऐलिजाबैथ को ज्ञात हुआ कि विकहैम और लिडिया को ढूढने-वाला असल मे डार्सी ही था। उसीने विकहैम को लिडिया से विवाह करने को तैयार किया था। इसके लिए उसने अपने पास से एक हज़ार पाउण्ड खर्च करके विकहैम के सारे कर्ज़ चुकाए थे और लिडिया के खर्चे के लिए भी उसीने एक हज़ार पाउण्ड और भी दिए थे। किन्तु इतना करके भी उसने इस सबके बारे मे कुछ भी नही कहा था।

ऐलिज़ाबैथ तथा बैनैट-परिवार लौगबौर्न आ गया और बिगले भी इसी समय फिर नीदरफील्ड लौट आया और ऐलिज़ाबैथ ने देखा कि उसकी माता श्रीमती बैनैट ने बिगले का पुन बहुत अच्छा स्वागत किया। लेकिन जब डार्सी आया तब उसके व्यवहार मे कुछ रुखाई दिखाई दी। ऐलिज़ाबैथ का हृदय माता के इस व्यवहार से दुखी हो गया। डार्सी ने पुन उससे विवाह का प्रस्ताव किया और ऐलिजाबैथ ने स्वीकार कर लिया। जिस समय यह सवाद बैनेट-परिवार ने सुना, सभी किकर्तव्यविमूढ हो गए। आखिर जब बात समझ मे आई तब सबको विवश होकर इसपर विश्वास करना पडा। ऐलिज़ाबैथ के इस परिवर्तन ने सबको ही आश्चर्य मे डाल दिया।

अन्त मे बिगले और जेन का भी सम्बन्ध पक्का हो गया।

श्री बैनैट पुत्रियो के विषय मे अब कुछ भी निश्चित धारणा नही बना सके। उन्होने अपनी हास्यवृत्ति से यही कहा, "अब अगर कोई नौजवान मेरी बेटियो—मेरी और किटी के लिए आए तो उन्हे भी भेज दो। मैं अब काफी फुर्सत मे हू।"

प्रस्तुत उपन्यास अपने मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के लिए विख्यात है। इसमें कथा-सूत्र विचारो को लेकर चलता है। व्यग्य तीखा है और सामाजिक व्यवस्था पर इससे प्रकाश पडता है। जेन ऑस्टिन की तत्कालीन समाज की जानकारी और नारी-हृदय का विश्लेषण विलक्षण है।

खण्डहर

[पियरे गोरियो[1]]

बाल्ज़ाक, ओनोर द फ्रासीसी लेखक बाल्ज़ाक का जन्म २८ मई, १७९९ को फ्रास में टूर्स नामक स्थान पर हुआ। प्रारम्भिक जीवन दरिद्रता में अत्यन्त कष्ट से व्यतीत हुआ। १८२९ में आपकी रचनाओं के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ और तब से आपकी परिस्थिति कुछ सुधरी। आप बहुत अधिक लिखते थे। शराब भी बहुत पीते थे और बहुत अधिक परिश्रम की क्षमता रखते थे। आपके ऊपर बहुत अधिक कर्जा हो गया था और इसलिए आपको इतना अधिक लिखना पडा कि आपने ९६ उपन्यास लिखे। आपने कई प्रकार के व्यापार किए, जिसका परिणाम यह हुआ कि आपके ऊपर कर्ज चढते चले गए। पोलैण्ड की काउटेस इवेलिन हन्सका से आपका प्रेम-सम्बन्ध बहुत दिन तक चलता रहा। अपनी मृत्यु के कुछ दिन पहले ही आप उससे विवाह कर पाए। आपका देहान्त १८ अगस्त, १८५० को पेरिस में हुआ। आपने इतना अधिक लिखा है कि विद्वानों के मतानुसार इतना कार्य साधारणतया पाच प्रतिभाशील व्यक्ति मिलकर अपने भरपूर श्रम से कर पाते।
'पियरे गोरियो' (१८३४) नामक उपन्यास में बहुत अच्छा मनोविश्लेषण हुआ है। आपका यह उपन्यास अत्यत प्रसिद्ध है।

मादाम वेकूर ने चालीस वर्ष तक न्यू सेन्त जेनेवीव मे एक मध्यमवर्गीय बोर्डिंग हाउस चलाया। पेरिस मे फेबर्ग सेन्त मार्शल और लेटिन क्वार्टर के बीच मे पडनेवाली यह जगह बडी इज्जतदार मानी जाती थी, क्योकि नैतिकता के क्षेत्र मे उसपर आज तक किसी प्रकार का लाछन नही लगाया जा सका था। गत ३० वर्षों से उस मकान मे कोई युवती दिखाई नही दी थी। लेकिन १८१९ मे, जिस समय की यह कथा है, एक दरिद्र जवान लडकी वहा रहा करती थी।

मादाम वेकूर के भवन का नीचे का भाग बहुत बडा नही था। उसमे एक बैठक थी जिसमे पुरानेपन की गन्ध आया करती थी। उसकी बगल मे खाने का विशाल कमरा था और निस्सन्देह वह इतना अच्छा नही था। इस कमरे ने सात बजे प्रात काल प्रतिदिन मादाम वेकूर आ बैठती थी। उनके टोप के नीचे से उनके निकले बाल ऊन के गुच्छो के रूप मे लटके रहते थे। उनका हाथ छोटा और मोटा था और उनका वक्षस्थल बहुत अधिक प्रशस्त था। वह चलने मे हिलता था।

---

१ Pierre Goriot (Honore De Balzac)। इस उपन्यास का हिंदी अनुवाद 'खण्डहर' नाम से राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली में छपा है। अनुवादक है हसराज रहबर।

घर मे सात व्यक्ति ठहरे हुए थे। निचली मजिल पर मादाम वेकूर रहती थी और मादाम कोतूर भी उनके निकट ही रहती थी। वह एक सेना के पे-मास्टर की विधवा थी। उसके पास एक लडकी थी जिसका नाम था विक्टरीन टेलेफर। लडकी के वस्त्र बहुत सादे होते हुए भी उसका स्वास्थ्य उनके अन्दर से छिप नही पाता था। वह प्रसन्न रहती थी और अवश्य ही यदि प्रेम ने उसकी आखो मे एक दीप्ति भर दी होती तो वह अपनी परिस्थिति मे कही सुन्दर भी दिखाई देने लगती। लडकी के पिता को सन्देह था। वह अपने को उसका पिता नही मानता था और इसलिए उसने छ सौ फ्रैंक सालाना के तौर पर उसके लिए बाध दिए थे। और उसके पास जो करोडो की दौलत थी उसका वारिस उसने अपने बेटे को बना दिया था। मादाम कोतूर उसकी एक दूर की रिश्तेदार थी और उन्होने ही विक्टरीन को अपनी लडकी की तरह पाला था। दूसरी मजिल पर एक वृद्ध सज्जन रहते थे जिनका नाम पोयरेत था। वे पेन्शन पानेवाले एक सरकारी आदमी थे। उम्र लगभग ४० वर्ष थी। काली विग पहनते थे। अपने गलमुच्छो को खिजाब लगाते थे और अपने-आप को मासियो वोतरीन नाम का रिटायर्ड सौदागर बताया करते थे। तीसरी मज़िल पर अधिक कमरे नही थे। चार कमरो मे चार अलग-अलग व्यक्ति रहते थे। एक कमरे मे बूढी मेमोजील मिचोनु थी। दूसरे मे अपने व्यापार छोडे हुए वृद्ध गोरियो रहा करता था। तीसरा व्यक्ति एक डाक्टरी पढनेवाला व्यक्ति था जिसे बियाकन कहते थे और एक कानून का विद्यार्थी था, यूजीन रास्तिकनाक। यूजीन रास्तिकनाक दक्षिण के एक दरिद्र हो गए बैरन का पुत्र था। उसके बाल काले थे, आखे नीली थी और उसके व्यवहार व आकृति मे उसकी अभिजात शिक्षा का प्रभाव झलकता था। वोतरीन यद्यपि सदैव हसमुख बना रहता, लेकिन कभी-कभी उसके चेहरे पर ऐसा एक फौलादीपन आ जाता कि उसको देखकर डर लगने लगता। वह असल मे क्या करता था इसे शायद ही कोई समझ पाता था। इस घर मे जैसाकि ससार मे भी होता है, हरएक के मज़ाक का एक केन्द्र था और वह था गोरियो। छ साल पहले उसने व्यापार से छुट्टी ले ली थी और यहा रहने आ गया था। उस समय वह बहुत सुन्दर कपडे पहने हुआ था और उसकी सोने की घडी चमक रही थी। उसके सामानो मे उस वक्त अनेक कीमती चीजे थी और वह उनको बडी हिफाज़त से रखता था। चादी की एक डिश थी और वह कहा करता था—शादी की पहली बरसी पर मेरी पत्नी ने यह मुझे दी थी। मैं भूखा भले ही मर जाऊगा, पर यह चादी की प्लेट किसीको नही दूगा। लेकिन अभी मेरी हालत ऐसी खराब नही है और मेरे पास खाने को बहुत कुछ है।

साल-भर बीत गया। गोरियो पहले की तुलना मे अब खर्च कम करने लगा। दो साल बाद वह निचली मज़िल पर उतर गया और उसने तापने के लिए चिमनी जलाना छोड दिया। हालाकि उसे राज्य की ओर से आठ हज़ार फ्रैंक से अधिक ही मिलते थे। उसके पास दो जवान औरते बडे अच्छे फैशनेबल कपडे पहिने कुछ दुबकती हुई-सी आया करती थी। बोर्डिंग हाउस मे रहनेवाले यही समझते थे कि बूढा गोरियो रगीला और बदचलन था। जब एक बार गोरियो को यह बात बताई गई तो उसे बहुत अधिक क्रोध आया और उसने घोषणा की कि वे दोनो उसकी लडकिया थी। लेकिन यह उसने किसी-

को नही बताया कि वे दोनो लडकिया उससे पैसा सूतने आया करती थी और बूढे को दिन पर दिन गरीब करती जा रही थी।

सालो बीत गए। अब उसने और गरीब मजिल मे अपना पडाव डाल दिया। गोरियो के खच और कम हो गए। वह दुबला हो गया, कमजोरी आ गई। और चौथे साल बाद सत्तर से ऊपर का नजर आने लगा। शक्ल से बुढ्ढ, कापता हुआ, कपडे ढीले-ढाले, गन्दे। उसके सोने और जवाहरात के सामान सब गायब हो गए।

यूजीन द रास्तिकनाक पेरिस के अभिजात-समाज मे प्रवेश करने का इच्छुक था। उसने अपनी चाची की एक रिश्तेदार विकोन्तेस द ल्यूसाग से परिचय प्राप्त कर लिया और उसे एक बॉलनृत्य मे निमन्त्रित किया गया। विकोन्तेस को उसका प्रेमी छोड गया था, इसलिए उसे द रास्तिकनाक मे बडी दिलचस्पी हो गई और उसने उसे समाज मे प्रवेश कराने मे बडी दिलचस्पी ली। यूजीन को डचेज द लेगियाम मिली और उसीने बूढे गोरियो की कहानी सुनाई।

गोरियो आटे का व्यापारी था। उन दिनो क्रान्ति चल रही थी और दसगुनी कीमत पर सामान बेचकर वह खूब पैसा इकट्ठा किया करता था। अपनी बेटियो के लिए वह जान देता था। उसने हर बेटी को आठ लाख फ्रैंक दहेज मे दिए। बडी बेटी का नाम अनास्तेसी था जिसका विवाह उसने काउन्ट द रेस्तोव से कराया। छोटी का नाम डलफिन था जिसका कि एक जर्मन धनी व्यापारी बैरन द तुसिनगिन से उसने विवाह करवा दिया। उसके बाद बूढे ने यह अनुभव किया कि दोनो बेटिया अपने बाप से शर्मिन्दा होती थी, क्योकि वह इतने अभिजात कुल का व्यक्ति नही था। इसलिए उसने उस निवास-स्थान को छोड दिया और अलग रहने लगा। यह त्याग करते हुए उसे तनिक भी खेद नही हुआ। डचेज़ ने यह नही बताया कि अनास्तेसी का एक प्रेमी और भी था और इसलिए उसने बूढे गोरियो से, जो कुछ उसके पास बाकी था वह (लगभग दो लाख फ्रैंक) भी निकलवा लिया था ताकि अपने प्रेमी पर जूए मे हो गए कर्ज को चुका सके।

बॉलनृत्य से लौटते समय यूजीन ने देखा कि गोरियो अपनी चादी की प्लेट को ठोक-ठोककर एक पिण्ड के रूप मे बना रहा था। उसने सूप खाने की चादी की कटोरी को भी तोड दिया। अगले दिन वे दोनो बिक गई। अनास्तेसी ने अपने कुछ और खर्च पूरे कर लिए। जब यूजीन को यह मालूम पडा तो उसके मुख से निकला कि बूढा गोरियो सचमुच महान है। दूसरी ओर डलफिन का जर्मन पति उच्च समाज मे अपना स्थान नही पा रहा था। वह चाहती थी कि वह किसी प्रकार वहा प्रवेश पा सके। उसका भी अपना एक प्रमी था जिसके ज़रिये वह अपने पति को आगे बढाना चाहती थी। उस प्रेमी को रुपया देने के लिए वह खुद जूआ खेलने लगी थी और जूए के अड्डो मे जाने लगी थी, क्योकि उसके पिता के पास उसको देने के लिए अब और रुपया नही था।

इस बीच मे यूजीन के परिवार ने समाज मे उसके स्थान को ऊचा करने के लिए उसको बारह हजार फ्रैंक देना प्रारम्भ किया। एक दिन वोतरीन ने उसे विक्टरीन के साथ जाते देखा और बाग मे अकेले मे ले जाकर कहा—तुम चाहो तो विक्टरीन तुम्हे पत्नी के रूप मे मिल सकती है और तुम्हे दस लाख फ्रैंक भी दहेज मे मिल सकते है, बशर्ते

कि यूजीन दो लाख फ्रैंक दे दे। मेरा एक मित्र है जो सेना मे कर्नल है, उसको ज़रूरत है। विक्टरीन का भाई फेड्रिक है, वह जायदाद का उत्तराधिकारी हे। उससे झगडा करके द्वन्द्व-युद्ध मे उसे मार डालने से यह काम हो सकता है।

यूजीन ने विक्षुब्ध होकर इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

कुछ दिन बाद यह बात फैली कि पुलिस को वोतरीन पर सन्देह था। पुलिस का ख्याल यह था कि वोतरीन ट्रोम्पे लेमोर्ते नामक प्रेमी था जिसे भयानक माना जाता था। वह किसी तरह से जेल मे से भाग निकला था। उसको चालाकी से नशे की दवा पिलाई गई और वह खुल गया। उसको गिरफ्तार कर लिया गया। उधर यह सूचना आई कि द्वन्द्वयुद्ध मे फेड्रिक की हत्या हो गई थी और अब अपने पिता की लाखो की सम्पत्ति पर विक्टरीन का एकमात्र अधिकार हो गया था।

उससे विवाह करने की बजाय रास्तिकनाक ने अब डलफिन से प्रणय-सम्बन्ध स्थापित किया। बूढा गोरियो उन्हे मदद करता रहा, ताकि दस हज़ार फ्रैंक खर्च करके उनके लिए रहने के स्थान का प्रबन्ध कर सके। उसकी एकमात्र लालसा यह थी कि वह अपनी बेटी को रोज़ देख सके।

यूजीन की पहली प्रणय-पात्री विकोन्तेस ने अपने प्रेमी के विवाह के उपलक्ष्य मे एक बॉलनृत्य का आयोजन किया। उस समय अनास्तेसी ने निमन्त्रण पाकर अपने पिता से धन मागा ताकि रेस्तोव-परिवार के जवाहरातो को छुडा सके जो कि उसने गिरवी रख दिए थे। गोरियो अपनी रोग-शय्या से उठा। उसने अपने आखिरी बर्तन-भाडे भी बेच दिए और जो साधारण धन उसे मिला था वह भी कर्ज चुकाने मे लगा दिया। डलफिन को भी रास्तिकनाक के द्वारा एक निमन्त्रण-पत्र मिल गया।

उधर नृत्य हो रहा था, इधर अपने ठण्डे बिस्तर मे बूढा आदमी गोरियो बीमार पडा था। एक व्यक्ति को बॉलनृत्य मे भेजा गया। उसने जाकर लडकियो को सूचना दी कि उनका पिता मरने से पहले अपनी बेटियो को स्नेह से चूमना चाहता था। बूढे ने यूजीन से कहा कि अब वह मरकर ऐसी जगह चला जाएगा जहा से वह फिर उन्हे नही देख पाएगा। खबर देनेवाला आदमी लौट आया और उसने बताया कि लडकियो ने आने से इन्कार कर दिया था। डलफिन उस वक्त बहुत ज्यादा थक गई थी और उसे नींद लगी हुई थी, अत वह आने मे असमर्थ थी और अनास्तेसी उस समय अपने पति से झगडने मे व्यस्त थी। बूढे गोरियो की हालत खराब हो चली। वह कुछ बर्राने लगा और कभी वह अपनी लडकियो को दोष देता और कभी उन्हे क्षमा करता। वह बड-बडाता, "मेरी लडकिया बहुत बुरी है। मेरी जान की मुसीबत हैं। मैंने ही तो उन्हे बिगाडा हैं। ठीक है, मुझे जो सज़ा मिली है वह बिल्कुल ठीक है। आ रही है क्या वे? अब मैं कुत्ते की तरह मरूगा। वे दोनों बडी दुष्टा है। उनके हृदय मे दया-ममता नही है।"

और अन्त मे उसने कहा, "हे भगवान और फरिश्तो!" और तब तकिये पर उसका सिर लुढक गया और वह सदा के लिए चला गया। अनास्तेसी आई ज़रूर, लेकिन बहुत देर मे। उसने अपने पिता का हाथ चूमकर कहा, "पिता, मुझे क्षमा करो।"

गोरियो का अन्तिम सस्कार भिखमगो का सा हुआ। उसके अभिजात दामादो

ने उसमे खर्चा देने से इन्कार कर दिया। कानून और डाक्टरी के विद्यार्थियो ने कुछ रुपया इकट्ठा किया, लेकिन यूजीन और उसके सेवक के अतिरिक्त किसीको भी दफनाते वक्त अफसोस नही हुआ। यूजीन अन्तिम समय मे केवल एक प्रार्थना कर सका।

यूजीन उसके बाद बहुत उच्च स्थान पर चढ गया और उसने देखा कि नगर के धनी-मानी और फैशनेबल लोग किस प्रकार रहते थे। और फिर उसने कहा, "अब हम लोगो का युद्ध कठोरता और कट्टरता से चलेगा।" और उसके बाद वह डलफिन के साथ खाना खाने चला गया।

प्रस्तुत उपन्यास में बाल्जाक ने तत्कालीन समाज के खोखलेपन पर भयानक व्यग्य किया है, कुल-गर्व की विषमता उसने प्रकट की है और यह भी बताया है कि मनुष्य किस प्रकार अपनी महत्ता के कारण अनर्थों को जन्म देता है और परिवार की सीमाए किस प्रकार उसे सद्-असद्-विवेक से दूर कर देती है। बाल्जाक ने कई चरित्र खडे किए है। यद्यपि सब अलग-अलग है, फिर भी वे एक-दूसरे से गुथे हुए-से है। अपनी उलझनो के बावजूद प्रस्तुत उपन्यास समाज पर गहरा प्रभाव डालता है।

एच० बी० स्टो

टॉम काका की कुटिया
[अंकिल टॉम्स केबिन[1]]

स्टो, हैरियट बीचर अंग्रेजी लेखक एच० बी० स्टो का जन्म कनैक्टीकट के लिचफील्ड नामक स्थान में १४ जून, १८११ को हुआ। हार्टफोर्ट के कैथराइन्स स्कूल में शिक्षा मिली। बाद में वही पढाने लगी। यह स्कूल आपकी बहन कैथराइन ही चलाती थी। १८३२ में बीचर परिवार सिनमिनैटी आ गया और १८३६ में हैरियट बीचर ने लेनथियौलौजाकल सैमिनरी के प्रौफेसर कॉल्विन एलिस स्टो से विवाह कर लिया। श्रीमती स्टो बनकर १८४३ में आपने अपनी रचनाए प्रकाशित करवानी प्रारम्भ कीं। उस समय अमरीका में दास प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन चल रहा था। श्रीमती स्टो ने भी दासता के विरुद्ध काफी कुछ लिखा। गृहयुद्ध के बाद भी आपका लेखन चलता रहा। जावन के अतिम भाग में आप पब्लिक के बीच पढ-पढकर सुनाने लगी। १ जुलाई, १८९६ को हाटफोट के अपने घर में आपका देहान्त हो गया।

'अंकिल टॉम्स केबिन' (टॉम काका की कुटिया) नामक उपन्यास १८५२ में प्रकाशित हुआ था। इसने प्रकाशित होते ही लोगों के हृदय को हिला दिया था। उपन्यास बहुत ही मार्मिक है।

श्री जॉर्ज शैल्बी कैन्टुकी के एक प्रसिद्ध मानववादी थे। उनके बागो मे जो दास काम करते थे, उनके प्रति उनका व्यवहार बहुत ही अच्छा था। हेली नामक एक गुलामो को खरीदने-बेचनेवाले सौदागर ने एक बार उनके एक रेहन पर अधिकार प्राप्त कर लिया। तब उससे भुगतान करने को शैल्बी तैयार हो गए। उन्होने उसकी शर्तें मजूर कर ली। हेली ने अधेड उम्र के टॉम काका नामक हब्शी गुलाम को तथा उनकी नौकरानी ऐलिज़ा के पाच वर्ष के हब्शी बच्चे को मागा। शैल्बी-परिवार जानता था कि वह गुलाम बहुत ही पवित्र हृदय था। शैल्बी-परिवार के प्रति उसमे बडी वफादारी थी। इसी तरह श्रीमती शैल्बी अबोध बच्चे को सौप देना भी ठीक नही समझती थी। इसलिए उसने इस माग का बहुत विरोध किया, किन्तु शैल्बी ने हेली की बात को स्वीकार कर लिया।

ऐलिज़ा का पति जॉर्ज हैरिस नामक व्यक्ति था। हैरिस का पिता एक गोरा था। हैरिस प्रतिभावान था। उसके स्वामी ने उसके प्रति बहुत ही निर्दयतापूर्ण व्यवहार किया। हैरिस ने विद्रोह कर दिया और इस समय वह ओहियो नदी पार करके कनाडा भाग जाने

---

१ Uncle Tom's Cabin (Harriet Beacher Stowe)। इस उपन्यास का हिंदी अनुवाद 'टॉम काका की कुटिया' नाम से राजेन्द्रकुमार एण्ड ब्रदर्स, बलिया में छपा है। अनुवादक है प० बालमुकुन्द बाजपेयी।

की योजना बना रहा था ।

ऐलिजा ने छिपकर सुन लिया कि श्री शैल्बी ने उसके बच्चे को बेच दिया था। वह तुरन्त भाग जाने की तैयारी करने लगी। अगले दिन सुबह जब हेली को उनके भाग जाने का पता चला, उसने घोडे कसवा दिए । ऐलिजा एक जगह छिपी हुई थी। उसके साथ जानेवाले गुलामो मे से एक ने ऐलिजा को चुपचाप हेली के बारे मे खबर दे दी। ऐलिज़ा अपने बच्चे को लेकर भागी । हेली ने पीछा किया । नदी पर बर्फ के बडे-बडे टुकडे बह रहे थे । ऐलिजा झट से नदी मे कूद गई और बर्फ का टुकडा उसे बहा ले चला। हाथ-भर पीछे ही हेली देखता रह गया।

भाग्य ने ऐलिज़ा का साथ दिया । उसने नदी किसी प्रकार पार कर ली और वहा क्वेकर लोगो की बस्ती मे पहुच गई, जोकि शान्ति और प्रेम के प्रचारक थे । ओहियो मे उसे शरण मिल गई । तब तक उसे खोजने दूसरे लोग पहुच भी नही पाए ।

जब यह खबर टॉम काका की कुटिया मे पहुची कि उसे बेच दिया गया था, उसकी पत्नी और बच्चो पर जैसे वज्र टूट पडा । टॉम ने अपने स्वामी की आज्ञा का उल्लघन नही किया। वह निरन्तर बाइबिल पढता था और आज भी उसीसे सात्वना प्राप्त कर रहा था । उसने ईश्वरीय वचन और प्रेम के उस अमर सन्देश को अपनी पत्नी को भी सुनाया ।

अगले दिन हेली ने टॉम काका को गाडी मे बिठाया, पावो मे बेडिया डाल दी और मिसीसिपी की ओर यात्रा पर चल पडा । शैल्बी का तरुण पुत्र जॉर्ज अपने पिता के इस कार्य पर क्रुद्ध हो उठा। उसने रोते हुए टॉम काका से प्रतिज्ञा की कि वह एक दिन आएगा और उसे फिर खरीद लाने की चेष्टा करेगा ।

मार्ग मे हेली ने और भी कई गुलामो को खरीदा। एक स्त्री और उसका दस महीने का बच्चा भी इन नई खरीदो मे थे। नदी पर, पहली ही रात को वह स्त्री पानी मे कूद गई, और हेली ने इस नुकसान को बडी ही निर्ममता से सह लिया, क्योकि ऐसी घटनाए उसके व्यापार मे नई नही थी ।

नौका पर न्यु ओरलियन्स के ऑगस्टीन सेंटक्लेयर नामक एक सज्जन भी यात्रा कर रहे थे । वे अपने घर जा रहे थे । उनके साथ उनकी छ वर्षीय बेटी ईवा तथा उनकी बहिन ओफीलिया भी थी। ओफीलिया वर्मौंट की निवासिनी थी ।

ईवा का बाल सौन्दर्य, उसके स्वभाव की पवित्रता टॉम से छिपी नही रही । उसने बालिका को छोटी-मोटी भेटे देकर अपनी ओर आकर्षित कर लिया । एक बार ईवा पानी मे गिर पडी । तब टॉम ने नदी मे कूदकर उसकी जान बचाई। इसके बाद तो ईवा उससे इतनी हिल-मिल गई कि उसे अपने सग ही रखने के लिए उसने पिता से अनुनय प्रारम्भ कर दी । ऑगस्टीन ने तब हेली को कीमत चुकाकर टॉम काका को खरीद लिया ।

ऑगस्टीन सेटक्लेयर ने न्यू ऑर्लियन्स के उच्चवर्ग की एक स्त्री से विवाह किया था जिसको अपने पति के विचार बिलकुल पसन्द नही आते थे । उसका यह विचार था कि उसका पति उसकी हर बात मे उपेक्षा करता था । उसका नाम मेरी था । वह सदा बीमार-सी रहती अथवा बीमारी का बहाना बनाकर वह अपने आसपास के लोगो पर अपनी इच्छाए लादती रहती थी । वह स्वार्थिनी और अहकारिणी थी तथा नौकरो के प्रति उसका

व्यवहार अत्यन्त निष्ठुर होता। सटक्लेयर दासता की बुराइयो के प्रति खेद प्रकट करता। व्वह दासो के इस व्यापार के भयानक परिणामो को दुहराया करता। अपने दासो के प्रति आवश्यकता से अविक मानवीय करुणा दिखाकर वह अपनी आत्मा को दासता के पाप के बोझ से सदैव मुक्त करने की चेष्टा किया करता था।

टॉम काका को ईवा इतना प्यार करती थी कि बच्ची के सद्‌व्यवहार के कारण वह कभी किसी बात की शिकायत नही करता था। अब वह अस्तबल की देख-रेख करता और पहले की तुलना मे कही अधिक आराम से रहता। ईवा अक्सर उसे बाइबिल पढकर सुनाती। वह उसे लिखना भी सिखाती, ताकि कुछ ही दिनो मे वह अपनी पत्नी को पत्र लिखकर अपने हालचाल आदि लिख सके।

इसी दौरान मे जॉर्ज हैरिस अपनी पत्नी से क्वेकर बस्ती मे जा मिला। मार्क्स नामक एक व्यक्ति कुछ सिपाहियो का दल लेकर आ गया। उसका इरादा था कि इस तरह भाग निकलनेवाले सारे गुलामो को वह हाल मे बने भगोडे गुलामो के कानून के अन्तर्गत पकड ले और उन सबको अपना कहकर बेच डाले। दो स्वस्थ क्वेकरो के साथ ऐलिज़ा और जॉर्ज तथा अन्य कई हब्शी कनाडा की ओर चल दिए। जब मार्क्स और उसके साथियो ने इन लोगो को घेर लिया तो ये लोग कुछ चट्टानो के पीछे जा छिपे और जब गोलिया चलने लगी तब जॉर्ज ने अपना पीछा करनेवालो मे से एक व्यक्ति को गोली मारकर घायल कर दिया। मार्क्स इस वार से घबराकर अपने दल के साथ पीछे हट गया और तब गुलामो का यह जत्था सुरक्षित कनाडा पहुच गया।

कई वर्ष बीत गए। सेटक्लेयर की बहिन कुमारी ओफीलिया ने न्यू ऑर्लियन्स मे जो कुछ देखा, उससे उसके मन मे दास प्रथा के विरुद्ध घोर विक्षोभ जागरित हो गया था। किन्तु फिर भी हब्शियो के साथ, उनको मनुष्य समझकर मनुष्यता का बर्ताव करना उसको बहुत कठिन लगता था।

एक दिन सेंटक्लेयर एक टॉप्सी नामक अनाथिनी को ले आया, जिसे आज तक घोर दुर्व्यवहार और घोर पीडाए दी गई थी। उसने उसे ओफीलिया की देख-रेख मे छोडा। टॉप्सी के ऊधम और खेलो ने घर-भर मे एक उत्साह भर दिया। जब उसे सज़ा मिलती तो वह बार-बार अपने को बुरा कहती और मिस ओफीलिया को बुलाती कि वह उसे पीटे, उसे दण्ड दे। किन्तु जब ईवा ने उसे सच्चे प्रेम और करुणा से सहेजा, टॉप्सी का हृदय भीग उठा और तब उसने बताया कि उसे आज तक किसीने भी प्यार नही किया था। इस बात ने ओफीलिया को विचार-मग्न तो बना दिया, किन्तु फिर भी वह बालिका के प्रति स्नेहार्द्र नही बन सकी।

घर पर ईवा की बीमारी ने एक काली छाया डाल दी। जब उसकी शक्ति का क्षय होने लगा, उसके पिता का मन शकित हो गया, किन्तु नये-नये डाक्टर भी कुछ फायदा नही पहुँचा सके।

प्रति वर्ष की भाँति अब की बार भी वे गर्मियो के दिन काटने झील के किनारे आ गए। गाव का वातावरण खुला हुआ था। ईवा के मन मे करुणा पहले से भी अधिक बढ गई। वह गुलामो के बारे मे और अधिक बाते करती रहती। वह पिता से कहती कि टॉम

काका को दासता से मुक्त कर दिया जाए। एक दिन उसने ओफीलिया से कहा, "मेरे सिर के कुछ घुघराले केश काट दो, ताकि मै इन्हे अपने मित्रो को दे सकू।"

इसके बाद उसने टॉम काका से कहा, "मुझे फरिश्तो की आवाज़े सुनाई देती है काका।"

और कुछ समय के उपरान ईवा का देहान्त हो गया।

ईवा की मृत्यु के बाद उसका पिता अपनी पुत्री की इच्छाओ को पूरा करने के बारे मे अधिकाधिक सोचने लगा। टॉम काका को स्वतन्त्रता देने की ओर उसने कदम उठाना प्रारम्भ किया। वह टॉम काका को अपनी बातो मे अधिक सम्मिलित करता, उससे सलाह लेता, उससे गोपनीय बाते करता। टॉम काका उसका परमात्मा और 'उसकी' इच्छा मे विश्वास सुदृढ न देखकर उसे 'उसीके' रास्ते मे ले जाने की कोशिश करता। क्लेयर इसपर विश्वास तो करना चाहता, किन्तु इतने दिनो से चले आए भेद-भावो की दीर्घ दीवार को लाघना उसे कठिन लगता। मानवता के बीच खाइया खुदी थी। मनुष्य को मनुष्य का विश्वास नही रहा था।

एक दिन शराब के नशे मे धुत होकर दो व्यक्ति लड रहे थे। उनके बीच जाकर उन्हे अलग-अलग करते समय क्लेयर छुरे की चोटो से बुरी तरह घायल हो गया।

मेरी ने अपने दासो को लेकर अपने परिवार की जमीदारी मे चला जाना निश्चित किया। उसने अपने पति की इच्छाओ की चिन्ता न की, और न ओफीलिया की ही बातें सुनी, जोकि टॉम काका और अन्य दासो के पक्ष मे बोलती थी। एकदम निर्ममता से उसने उन सबको अपने वकील को सौप दिया। वकील ने उन्हे एकदम गुलामो के बाज़ार मे भेज दिया।

न्यू ऑर्लियन्स मे टॉम काका पर बोली लगी और बेच दिया गया। उसके साथ ही पन्द्रह साल की एक ऐमीलीन नामक सुन्दर लडकी भी बिकी। नया मालिक साइमन लैग्री बडा कठोर और निर्दय व्यक्ति था। वह अपने बागात मे बडी निष्ठुरता से काम लेता था। रैड रिवर (लाल नदी) के किनारे एकात भूभाग मे उसकी जायदाद थी। वहा उसका एक ही कानून था। उसका कानून जूते, कोडे, घूसो और कुत्तो के बल पर अखड रूप से चलता था। वह स्वय सारा प्रबन्ध करता था। उसके सहायक दो हब्शी थे, जिन्हे उसने खूख्वार बना दिया था और अन्यो पर उन्हे वह छोड देता था। वह टॉम को भी अपना सहायक बनाना चाहता था।

टॉम ने देखा कि लैग्री के दास बहुत ही गन्दे थे, और असह्य दरिद्रता मे रहते थे। वे बिल्कुल ही बेसहारा और भग्नमानस, निराश लोग थ। बहुत-से तो बाइबिल के बारे मे कुछ भी नही जानते थे। लैग्री टॉम से जो काम चाहता था, उसके लिए टॉम अपनी करुणा और पवित्रता के कारण नितात अयोग्य था।

लैग्री के घर म केसी नामक स्त्री रहती थी। वह गोरा-हब्शी दोनो की सकर सन्तान थी। वह लैग्री की घोर शत्रु थी। उसने लैग्री से ऐमीलीन की रक्षा की। उसने टॉम को बुरी तरह पिटवाया और बाद मे उसकी मरहम-पट्टी करके उससे बाते करने लगी।

लैग्री बडा अधविश्वासी था। केसी ने उसकी इस मनोवृत्ति का फायदा उठाया और वह ऐमीलीन को लेकर भाग निकली। वह तो सफल हो गई, किन्तु लैग्री ने इसका दोष टॉम पर मढ दिया। यद्यपि टॉम का केसी के षडयत्र मे कोई भाग नही था, किन्तु उसने लैग्री के क्रोध को चरम सीमा पर पहुचा दिया। टॉम जानता था कि जो मार उसपर पड चुकी थी, उससे उसका बचना असभव था। किन्तु जीवन के इन अन्तिम क्षणो मे उसे मोक्ष की आशा हो गई थी। उसने इसी विजय के गर्व मे लैग्री से स्पष्ट कह दिया कि लैग्री उसकी आत्मा को नही मार सकता था।

इस घटना के कई दिन पहले तरुण शैल्बी टॉम काका को कैन्टुकी ले जाने के लिए अपनी खोज पर चल पडा था। आखिरकार जब वह लैग्री के बागात पर पहुचा, उसने टॉम काका को मरते हुए पाया। टॉम काका के मन मे अखड शान्ति थी। इन पार्थिव कष्टो को वह परलोक के सुखद जीवन का मार्ग समझता था।

साइमन लैग्री चिढ गया। वह केसी और ऐमीलीन को नही ढ्ढ सका। वे दोनो ही कनाडा पहुच गई। वहा केसी अपने बहुत पतले बिछुडे हुए भाई से जा मिली। प्रसन्नता का पारावार न रहा। केसी का भाई और कोई नही, स्वय जॉर्ज हैरिस था।

टॉम काका अपनी पवित्रता को अन्त तक निभाकर स्वर्गवासी हो गया।

प्रस्तुत उपन्यास बहुत ही करुण है। इसमें दास-प्रथा का बहुत ही गहरा चित्रण है। दासो की भीतरी कमजोरियो को भी उभाडकर लेखिका ने सामने रख दिया हैं। तत्कालीन शासक-वर्गों के भीतर कितनी मानसिक प्रक्रियाए तथा चिन्तन-स्तर थे, वे भी हमें यहा स्पष्ट दिखाई देते है। टॉम काका का पुण्यात्मास्वरूप आखो के सामने घूमता रहता है। वह एक अपराजित प्राणी है, जो सत्य और करुणा का कभी भी परित्याग नही करता। ईवा का चरित्र भी बहुत निर्मल है। इस उपन्यास में ऐसी वेदना है कि पाठकों की आखें भीग जाती है।

चार्लोटे ब्रोटे :

अनाथिनी

[जेन आयर[1]]

ब्रोंटे, चार्लोंटे अंग्रेजी लेखिका चार्लोंटे ब्रोंटे का जन्म थोर्नटन, यॉर्कशायर में २१ अप्रैल, १८१६ को हुआ। चार्लोंटे की दो बहिनें भी लेखिकाएं थीं। चार्लोंटे का जीवन एकांत में व्यतीत हुआ। आपको केवल परिवार के लोगों से सम्पर्क प्राप्त हो सका। इसीलिए आप कल्पनालोक में विचरण करती थीं। १३ वर्ष की आयु से ही आपने कहानियां लिखना प्रारम्भ कर दिया था। पारिवारिक जीवन का आपपर काफी प्रभाव था। इसका दबाव आपके लेखन पर भी पड़ा है। बाद में जब आप गवर्नेस बन कर ब्रूसैल्स चली गईं तब आपकी दृष्टि परिवार की सीमाओं के बाहर भी गई और व्यापकता को प्राप्त कर सकी। आपने अपना विवाह किया, किंतु कुछ ही समय बाद ३१ मार्च, १८५५ को आपका देहांत हो गया।

'जेन आयर' (अनाथिनी) मूल रूप में १८४७ में पहली बार प्रकाशित हुआ था। यह एक यशस्विनी कृति है।

जेन आयर बचपन मे ही अनाथ हो गई। बिचारी का सुख नष्ट हो गया। उसका लालन-पालन गेट्सहैड हॉल मे श्रीमती रीड नामक उसकी एक बुआ के यहा हुआ। यहा उसे निष्ठुरता मिली, स्नेह तो नाममात्र को भी नही दीखा। श्रीमती रीड ने अपने भाई से प्रतिज्ञा की कि वे उसे अपनी ही बच्ची की तरह पालेगी, परन्तु जेन को वे अनाथ की भाति रखती थी। बात-बात पर फटकारती थी। बुआ के बच्चे बिगडे हुए और बदमिज़ाज थे। बुआ की ही भाति उसके बच्चे एलिज़ा ज्यौजिआना और जॉन थे और जेन को तिरस्कृत करते थे। उसे एक अछूत जैसा व्यवहार मिलता। जब वह दस वर्ष की हुई तो उसकी किसी गलती पर उसे एक अधेरे कमरे मे अकेली बन्द कर दिया गया। नतीजा यह हुआ कि उसके दिमाग पर बहुत अधिक ज़ोर पडा और उसे एक तरह के दौरे आने लगे।

तीन मास बाद उसे लोवुड स्कूल मे भेज दिया गया। वह चन्दो पर चलाया जाता था, जिसमे गरीब बच्चे पढाए जाते थे। आठ वर्ष तक दु ख-सुख से वह वही रही। घर की तुलना मे यहा उसे अधिक आराम था। पहले ६ वर्ष वह छात्र बनकर रही, और बाद के दो वर्ष का समय उसने वहा अध्यापिका बनकर काटा।

जब वह १८ वर्ष की हो गई, तब सितम्बर मे वह थौर्नफील्ड भवन मे आ गई,

---

१ Jane Eyre (Charlotte Bronte)

जहा वह श्री एडवर्ड रोचैस्टर के यहा उनकी पालिता एडैला वैरन्स की गवर्नैस बन गई। थौर्नफील्ड का वह भवन भव्य और अत्यन्त विशाल था। यहा एडैला की अभिभाविका श्रीमती फेयरफैक्स का जेन के प्रति व्यवहार अच्छा था। श्रमती फेयरफैक्स श्री रोचैस्टर की रिश्तेदार लगती थी।

भवन बहुत विशाल था और उसका काफी भाग खाली पडा रहता था। एक दिन श्रीमती फेयरफैक्स उसे भवन दिखाने लगी। एडवर्ड रोचैस्टर बहुत बडे जागीरदार थे। उनके अनुरूप ही वह भवन भी था। जब वे तीसरी मजिल पर पहुची तो उन्हे एक भयानक अट्टहास सुनाई दिया। जेन चौक उठी। श्रीमती फेयरफैक्स ने कहा, "यह नौकरो की आवाज़ है।" यह कहकर उन्होने ग्रेसपूल को आवाज दी। द्वार पर एक मजबूत-सी स्त्री आ गई।

श्रीमती फेयरफैक्स ने कहा, "इतना शोर न किया करो।"

इसके बाद वह आवाज बन्द हो गई।

जनवरी का महीना था। दिन ढल रहा था। जेन घूमते हुए पडोस के एक गाव मे चली गई थी। वह चलते-चलते थक गई तो एक जगह बैठ गई। उसने देखा कि एक ऊचे घोडे पर एक सवार चला जा रहा था। तभी बर्फीली सडक पर घोडा फिसल गया और सवार किनारे पर लटक गया। सवार का कुत्ता बडा-सा था। वह मदद के लिए जेन को बुलाने लगा, किन्तु सवार ने मदद लेने से इन्कार कर दिया। उसकी भौए मोटी थी और चेहरे पर कठोरता थी। किन्तु जेन को फिर भी उससे डर नही लगा। उसकी कठोरता देखकर उसे एक तोष-सा हुआ। वह व्यक्ति करीब ३५ वर्ष का लगता था। उसके मुख पर क्रूरता और विरक्ति-सी थी।

जेन ने उसको उस परिस्थिति मे छोडना स्वीकार नही किया। तब सवार ने उसका परिचय पूछा। जब उसको मालूम हुआ कि जेन थौर्नफील्ड भवन मे गवर्नैस थी, तब उसने उसे घोडे पर सवार कराने मे उसकी मदद स्वीकार कर ली और तुरन्त ओझल हो गया। कुत्ता भी अधेरे मे उसके पीछे भाग चला।

जब जेन घर पहुची तब उसे मालूम हुआ कि राह मे मिलनेवाला सवार स्वय उसके मालिक श्री रोचैस्टर थे।

अगले दिन जेन को श्री रोचैस्टर और एडैला के साथ चाय पीने के लिए बुलाया गया। वहा एक अजीब-सी उदासी छा रही थी। सन्नाटा था।

मालिक ने कुछ गम्भीर और कुछ उपहास-भरे स्वर मे कल की घटना का उल्लेख किया और कहा कि शायद घोडे पर जेन ने जादू कर दिया था। लेकिन जेन ने इसका उत्तर दिया कि ऐसा नही था। उसका स्वर सुनकर मालिक की कठोरता कुछ कम दिखाई दी। इस तरह आठ सप्ताह व्यतीत हो गए। मालिक उससे मिलने पर अवश्य बात करते और कभी-कभी मुस्करा भी देते। कभी-कभी जेन को ऐसा लगने लगता जैसे वह उनकी नौकरानी नही, बल्कि कोई रिश्तेदार थी।

एक रात जेन सो रही थी कि उसके कमरे के बाहर कुछ आवाज़ हुई। जेन की नीद टूट गई। उसे एक पैशाचिक हास्य सुनाई दिया। फिर लगा जैसे बाहर एक पगचाप

पीछे हटते-हटते तीसरी मजिल की सीढी की ओर चली गई। वह भय से काप उठी और उसने दरवाजा खोलकर देखा। वहा कोई नही था। उसने देखा कि श्री रोचैस्टर के कमरे से धुए के गुबार उठ रहे थे। वह समझ नही पाई। वह उनके कमरे मे घुस गई और उसने देखा कि बिस्तर मे आग लग गई थी, लेकिन श्री रोचैस्टर उसीपर बेहोश-से सोए पडे थे। उसने लपटो पर पानी डालकर उन्हे बुझाया और मालिक को भी भिगो दिया। तब वे जागे। वे चौक उठे और बोले, "क्या तुम मुझे डुबाकर मार डालना चाहती थी।" जेन ने आग जलने की बात बताई। तब वे जाच करने को उठे। बोले, "मैं तीसरी मजिल देख-कर आता हू।"

लौटकर आए तब वे शात-से थे। उन्होने जेन से प्रतिज्ञा कराई कि इस घटना के बारे मे वह किसीसे कुछ नही कहे।

घर के लोगो से यही कह दिया गया कि पास रखी मोमबत्ती से ही बिस्तर मे आग लग गई थी जिसे स्वय मालिक ने ही बुझा दिया था।

इसके बाद मिस्टर रोचैस्टर चले। जब वे बाहर थे तब एक अजनबी आया। उसने बताया कि वह वैस्टइण्डीज़ से आया था। उसका नाम श्री मेसन था। जब रोचैस्टर लौटकर आए और उन्हे आगतुक के बारे मे बताया गया, उनका चेहरा सफेद पड गया और वे बोल उठे, "उफ ! जेन ! मुझपर प्रहार हुआ है !"

वे हाफ उठे और बोले, "मै चाहता हू कि मैं किसी एकात द्वीप मे चला जाता, जहा केवल तुम मेरे साथ होती और मैं सारी परेशानियो से दूर हो जाता।"

लेकिन इसके अतिरिक्त उन्होने कुछ भी नही कहा और वे मेसन से मिलने चले गए। बडी देर तक उनमे बाते होती रही। जब वे लौटकर आए अब पुन उनके मुख पर प्रसन्नता थी। उनके स्वर मे प्रफुल्लता थी। जेन ने यह देखा तो उसके मन पर से बोझ-सा उतर गया।

रात हो गई। अधेरे मे अचानक तीसरी मजिल से एक भयानक चीत्कार सुनाई दिया और सारा घर जाग गया। अपने कमरे के ठीक ऊपर के कमरे मे जेन को लगा जैसे कोई भयानक सघर्ष हो रहा है और एक आवाज़ गूज उठी, "बचाओ !"

श्री रोचैस्टर तीसरी मजिल से उतरते दिखाई दिए और उन्होने सबको सोने भेज दिया। उन्होने कहा कि एक सेवक दु स्वप्न देखकर चिल्ला उठा था। सब लौट गए।

लगभग एक घटे बाद उन्होने चुपचाप जेन को बुलाया और उसे ऊपर की मजिल मे एक भीतरी कमरे मे ले गए, जिसके भीतरी कोठे से भयानक स्वर आ रहे थे जैसे कोई पशु गुर्रा रहा हो और वही विचित्र हास्य भी सुनाई पडा। बाहरी कमरे मे मेसन लेटा था। वह बेहोश था। उसकी एक बगल से खून बह रहा था। जेन ने दो घटे उसकी सुश्रूषा की, तब उसने अपनी आखे खोली, और तब, सूर्योदय के पहले, उसे वहा से हटा दिया गया।

मधुर ग्रीष्म ऋतु आ गई। दो बेलाए मिल रही थी। मनोहरता चारो ओर छा रही थी। कुज मे जेन उपवन मे खडी थी। वही श्री रोचैस्टर आ गए। बाते होने लगी। जेन ने स्वीकार किया कि उसे थौर्नफील्ड से कुछ आत्मीयता हो गई थी। श्री रोचैस्टर ने

कहा, "बेचारी !"

जेन समझी कि रोचैस्टर सुन्दरी कुमारी इन्ग्रैम से विवाह करना चाहते थे, जो कि बहुधा उनसे मिलने आया करती थी। उसने स्वामी से इस बारे मे बात चलाई। रोचैस्टर ने स्वीकार किया, "हा ! लगभग एक महीने मे, मै आशा करता हू, मै दूल्हा बन जाऊगा।"

जेन के हृदय को कडा धक्का लगा। वह रोने लगी और कह उठी, "मैं यहा बिना तुमसे कुछ सम्बन्ध हुए क्या रह सकती हू ? मै सीदी-साधी और साधारण हू तो क्या तुम समझते हो कि मेरे आत्मा नही है ? क्या मै हृदयहीन हू ?"

रोचैस्टर ने उसे भुजाओ मे भरकर चूम लिया। वह पीछे हट गई। तब उन्होने बताया कि जिसे वे प्रेम करते थे वह कुमारी इन्ग्रैम नही, बल्कि जेन थी।

उन्होने स्नेह से कहा, "तुम मेरी दुल्हन हो, क्योकि तुम मेरी बराबर की हो। मेरी पसन्द के अनुकूल हो !"

जेन ने कहा, "सच कहते हो ? तुम सचमुच मुझे प्यार करते हो ?"

"हा, मैं सौगन्ध खाता हू !"

हवा चलने लगी थी। पेड कापने लगे थे, कराहते-से। वे दोनो भवन की ओर तजी से चल पडे।

एक महीने बाद जब एडवर्ड रोचैस्टर और जेन शादी के लिए गिरजे मे खडे हुए तब कोई नौकर उनके पास नही था। पादरी ज्योही उनके विवाह-कर्म को समाप्त करनेवाला था कि एक स्वर सुनाई दिया, "यह विवाह नही हो सकता, क्योकि श्री रोचैस्टर की एक पत्नी जीवित है।"

और श्री मेसन सामने आए। उन्होने घोषणा की कि वे उस पत्नी के भाई थे। पत्नी थौर्नफील्ड भवन मे ही थी।

रोचैस्टर के मुख पर कठोर मुस्कराहट दिखाई दी जो उनके होठो पर बिखर गई।

उन्होने कहा, "बहु-पत्नी प्रथा यद्यपि एक कुरूप और कुत्सित शब्द है किन्तु मैं बहु-पत्नीवान ही होना चाहता हू।"

उपस्थित लोगो को वह अपने भवन की ओर ले चले। जिस कमरे मे मेसन घायल पडा था उसके भीतरी कोठे मे कोई जन्तु चारो पावो पर चल रहा था। वह हर चीज़ को छीनना चाहता था, और किसी हिंस्र पशु की भाति गुर्रा उठता था। उसे कपडो से ढक रखा गया था और ढेर-ढेर खुले हुए रूखे हुए बालो ने उसका मुह और सिर ढक रखा था।

वही रोचैस्टर की पहली पत्नी थी।

रोचैस्टर ने बताया, "पन्द्रह साल पहले मुझे धोखे मे डाला गया था और इस पागल और पशु सदृश स्त्री से विवाह-सम्बन्ध मे मुझे बाध दिया गया था।"

जेन ने उस क्षण रोचैस्टर को क्षमा कर दिया किन्तु अगले दिन सवेरे वह वहा से चली गई।

मोर्टन मे उसे आश्रय मिला जहा उसने अपना नाम जेन इलियट रख लिया और वह गाव मे एक स्कूल-मास्टरनी बन गई। वहा के गिरजे के पादरी थे श्री सेंट जौन रिवर्स।

शीघ्र ही उन्होने उससे विवाह का प्रस्ताव किया। लेकिन एक रात उस ऐसा लगा जैसे श्री रोचैस्टर उसे पुकार रहे थे—"जेन !"

जेन ने देखा, उस जगह कोई पुकारनेवाला नही था। तब वह शान्ति से नही रह सकी और सवेरे ही थौर्नफील्ड की ओर चल पडी। वहा जाकर उसने देखा कि एक काला जला हुआ खडहर पडा था।

वह सराय मे जाकर ठहर गई। वहा उसे पता चला कि एक रात ग्रेसपूल शराब के नशे मे धुत हो गई और तब वह पागल औरत छ्ट निकली और उसने घर मे आग लगा दी। श्री रोचैस्टर ने नौकरो को बाहर निकाला। तब वे अपनी पागल स्त्री को निकालने लौटे। लेकिन पगली छत पर चढ गई थी और वह वही से कूदी और गिरकर मर गई। उस समय जब श्री रोचैस्टर बाहर निकल रहे थे तब सामने की सीढी गिर पडी और वे चपेट मे आ गए। जब उन्हे खडहर से निकाला गया तब उनकी एक आख फूट चुकी थी और एक हाथ इतना कुचल गया था कि उसको काट डालना पडा। उसके बाद दूसरी आख भी सूज गई और वे अन्धे हो गए। अब वे केवल दो सेवको के साथ फर्नडीन मे अपने एकान्त भवन मे दिन काट रहे थे। जेन यह सुनकर तुरन्त उनसे मिलने चल पडी। उसका हृदय आतुर हो रहा था। जेन ने घर मे प्रवेश किया, वह सहसा ही उनका हाथ पकडकर बोल उठी।

वे हर्ष से चिल्ला उठे "कौन जेन ? जेन आयर ?"

"हा, मेरे प्रिय स्वामी !" उसने कहा, "मैं ही हू जेन आयर ! मैने तुम्हे खोज लिया है, और मै तुम्हारे पास लौट आई हू।"

प्रस्तुत उपन्यास में मानव-चरित्र की गहराइया हमारे सामने आती है। नारी-जीवन की विवशता और वेदनाए उभर-उभर आती है। स्त्री में प्रेम की भूख अखण्ड रूप से विद्यमान रहती है। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण को लेखिका ने बहुत ही कुशल लेखनी से चित्रित किया है।

एमिली ब्रोंटे

प्रेम की पिपासा

[वुदरिंग हाइट्स[1]]

ब्रोंटे, एमिली एमिली ब्रोंट अंग्रेजी लेखिका चार्लोटे ब्रोन्टे की छोटी बहिन थी। आपका जन्म ३० जुलाई, १८१८ को थोर्नटन में हुआ था। आप तीस वर्ष की अवस्था में हेवर्थ, यॉर्कशायर में १९ दिसंबर, १८४८ को दिवगत हुई। आप बहुत कम घर के बाहर निकली। जब भी कही बाहर जाती तो घर की याद आपको सताने लगती और इस तरह आपने अपना जीवन उत्तरी इंगलैंड के रंगहीन बंजर मैदानों में ही व्यतीत किया, जिसकी छाया आपकी रचनाओं में भी मिलती है। आप अपनी शार्लट और एन नामक बहिनों के साथ अपनी कल्पना के उद्वेग को पथ देती हुई कहानियां और कविताए लिखा करती थी। 'वुदरिंग हाइट्स' (प्रेम की पिपासा) मूल रूप में पहली बार १८४८ में प्रकाशित हुआ। यह आपका एकमात्र उपन्यास है। इसके प्रकाशन के एक वर्ष बाद ही आप इस ससार को छोड गई। आप यह नहीं जान सकी कि आपके एक ही उपन्यास ने आपको साहित्य में अमर बना दिया।

श्री लौकवुड थ्रशकौस ग्रेन्ज[2] के नये किरायेदार थे। जब वे अपने मकान-मालिक से मिलने उसके घर गए तब उनका स्वागत अच्छा नही हुआ। नौकर-चाकर, कुत्ते, यहा तक कि स्वय भवन के स्वामी—सब ही रूखे थे। भवन-स्वामी श्री हीथक्लिफ थे। वे एक कजर जैसे लगते थे, यद्यपि उनके वस्त्र और व्यवहार को देखने पर वे एक जागीरदार से जान पडते थे। वे दृढ़ शरीर के ऊचे व्यक्ति थे, आकृति मे सुन्दर थे, किन्तु अत्यन्त ही रूक्ष, उदास और गम्भीर दीखते थे।

भूस्वामी के पक्के और सुन्दर भवन का नाम था वुदरिंग हाइट्स। वह खेतो के बीच बना एक पुराना, अब जर्जर-सा हो चला, भवन था। उस जगह हवाए मुक्त चलती थी और तूफानी मौसम के लिए वह जैसे खुला पडा था।

लौकवुड मे कौतूहल जाग उठा। वह दूसरे दिन फिर इन विचित्र लोगो से मिलने गया। बाहर बर्फानी तूफान चलने लगा। तब वह रात वही बिताने को विवश हो गया। रात को उसे इस घर के बाकी विचित्र प्राणी भी मिले। एक हीथक्लिफ के पुत्र की विधवा पत्नी थी। वह सुन्दरी थी और अभी उसने लडकपन से पाव बाहर रखे ही थे। वह चुप रहती थी और घृणा उसके मुख पर खेला करती थी। एक गदा-सा युवक था—हेअरटन

---

१ Wuthering Heights (Emily Bronte)

२. ग्रेन्ज—ग्राम-भवन

अर्नशॉ। यही नाम वुदरिंग हाइटस के द्वार पर खुदा हुआ था, जिसके नीचे तारीख खुदी हुई थी '१५००ई०।'

रात को लौकवुड को एक कमरे मे ठहरा दिया गया। उस शयनागार का अब प्रयोग नही होता था। लौकवुड ने देखा कि भीतो पर 'कैथराइन अर्नशॉ', 'कैथराइन हीथक्लिफ', और 'कैथराइन लिण्टन' इत्यादि नाम खरोचकर लिखे गए थे। किताबो के खाली पन्नो पर उसे एक डायरी-सी लिखी दिखाई दी, जिसमे ऐसा लिखा हुआ था, "हिण्डले घृणित है—उसका हीथक्लिफ के प्रति व्यवहार अत्यन्त बर्बर और निष्ठुर है—ही और मै विद्रोह करेगे। बेचारा हीथक्लिफ ! हिण्डले उसे गुडा, आवारा कहता है, उसे हमारे साथ बैठने भी नही देता।"

लौकवुड को दु स्वप्नो ने आ घेरा। उसने स्वप्न मे एक डरी हुई पीली पड गई-सी लडकी को देखा जो अपने को कैथराइन लिण्टन कहती थी। वह खिडकी के बाहर खडी आर्तस्वर से विलाप करती-सी कह रही थी, "मै बीस बरसो से बेघरबार भटक रही हू।"

लौकवुड जाग उठा। जब वह ग्रेन्ज मे लौट आया तो उसने सारी कहानी अपने घर की देखभाल करनेवाली श्रीमती नैलीडीन को सुनाई। नैली हाइट्स और ग्रेन्ज दोनो ही जगहो पर बहुत दिनो तक नौकरी कर चुकी थी। उसने लौकवुड को यह कथा सुनाई

हेअरटन के पितामह वृद्ध अर्नशॉ लिवरपूल गए। यात्रा से लौटने पर वे अपने साथ एक गदा, चिथडे पहने हुए काले बालोवाला लडका ले आए। जो उन्हे बेघर सडक पर मिला था। उन्होने लडके को नहलवाया और उसे केवल हीथक्लिफ नाम दिया, जिससे उसके परिवार इत्यादि का कुछ भी पता नही चलता था। यह लडका बडा चुप्पा था और था वैसे मजबूत दिल का, क्योकि मार खाने पर एक भी आसू उसकी आखो से नही निकलता था। इसीलिए अर्नशॉ को यह लडका बहुत पसन्द था। अर्नशॉ की लडकी कैथराइन शीघ्र ही इस हीथक्लिफ के साथ खेलने लगी और दोनो मे मित्रता हो गई। किन्तु अर्नशॉ का पुत्र हिण्डले अर्नशॉ को इस हीथक्लिफ से बडी घृणा थी। वह यह समझता था कि हीथक्लिफ उसके पिता का सारा स्नेह उससे छीने ले रहा था।

वृद्ध अर्नशॉ मर गए। हिण्डले कॉलेज से अपनी पत्नी के साथ लौट आया। यह स्त्री हीथक्लिफ से बहुत घृणा करती थी। उसने उसे नौकर बना दिया। कैथराइन को युवक हीथक्लिफ से वही स्नेह बना रहा। वह भाई के व्यवहार को पसन्द नही करती थी।

हिण्डले के एक बेटा पैदा हुआ और कुछ दिन बाद ही उसकी पत्नी क्षय रोग से मर गई। हिण्डले दु ख से व्याकुल हो गया और खूब शराब पीने लगा।

इन्ही दिनो थ्रशकौस ग्रेन्ज के एडगर लिण्टन ने कैथराइन को देखा। वह उसे देखकर मोहित हो गया। वह शात और नम्र स्वभाव का विद्वान व्यक्ति था। कैथराइन के मन मे हीथक्लिफ के प्रति प्रेम था, इसलिए जब लिण्टन ने विवाह का प्रस्ताव किया तो कैथराइन बहुत ही मुश्किल से मानी।

जब हीथक्लिफ ने इस सबध के बारे मे सुना तो वह अचानक ही गायब हो गया। कैथराइन रात-भर उसे बाहर मेह मे ढूढती रही और अन्त मे उसे बडे ज़ोर के बुखार ने

आ दबाया। इस बीमारी ने उसके शरीर को तोड दिया और उसकी मानसिक उत्तेजना उसके स्वास्थ्य के लिए एक भय का कारण बन गई।

तीन वर्ष बीत गए। अब कैथराइन श्रीमती लिण्टन थी। वह ग्रेन्ज मे रहने चली गई थी। नैलीडीन जो अब तक हिण्डले के छोटे बच्चे हेअरटन की धाय थी, अब कैथराइन के साथ आ गई थी। हीथक्लिफ का कुछ पता नही चला। यद्यपि नैली को ऐसी आशा नही थी, फिर भी विवाह के प्रारभिक छ मास शान्तिपूर्वक व्यतीत हो गए। कैथराइन भी पहले से अधिक शात दिखाई देनी थी।

अचानक हीथक्लिफ लौट आया। वह कैथराइन से मिलने आया। वह अब पूरा जवान और खूबसूरत आदमी था और भद्र पुरुष लगता था। उसे देखकर ही लगता था कि उसके पास अपार धन था। वह इतने दिन कहा रहा, कैसे एक गवार से वह ऐसा भद्र पुरुष बन गया, कैसे शिक्षा और धन दोनो पर उसने अधिकार कर लिया, यह कोई नही जान सका। अब भी उसके सुन्दर कजर जैसे मुख पर एक हिसक भाव दिखाई देता था। वह कठोर-सा तो लगता ही था।

कैथराइन उसे देखकर हर्ष से पागल हो गई। एडगर ने उसे देखा तो वह क्रुद्ध भी हुआ और उदास भी, क्योकि हीथक्लिफ ने उसका प्रकट रूप से तिरस्कार किया। हीथक्लिफ बहुधा आता। कुछ ही दिनो मे एडगर की अठारह वर्षीय बहिन उसके प्रेम मे पड गई। कैथराइन को इससे मनोरजन तो हुआ किन्तु उसने लडकी के भविष्य की दृष्टि से उसे हीथक्लिफ का असली परिचय दिया कि वह वास्तव मे बडा क्रूर था और उसके जीवन का उद्देश्य था—वह अपने शत्रुओ का नाश करे। और यह कि कैथराइन हीथक्लिफ की वास्तविकता जानते हुए भी उससे प्रेम करती थी जैसे उसे न चाहना उसके लिए असभव था।

हीथक्लिफ वुदरिंग हाइट्स मे जम गया। हिण्डले के अब दो ही शौक थे, शराब पीना और जुआ खेलना। हीथक्लिफ उसे खूब पैसा देता था और शीघ्र ही हीथक्लिफ ने उसे बरबाद कर दिया और अपने जूए के कर्ज़ चुकाने को हिण्डले ने सारी अर्नशॉ की सम्पत्ति को हीथक्लिफ के हाथ गिरवी रख दिया।

अर्नशॉ-परिवार के बाद हीथक्लिफ को लिण्टन-परिवार से घृणा थी, क्योकि लिण्टन ने ही कैथराइन को उससे छीन लिया था। जब उसे एडगर की बहन ऐसाबेला के प्रेम का पता चला, वह उसे झूठे ही फसाने लगा। और एक दिन नैली ने इसे देख लिया और कैथराइन से कह दिया। पहले तो कैथराइन लिण्टन की ओर बोली, पर जब लिण्टन हीथक्लिफ के विरुद्ध बोला तो वह हीथक्लिफ की तरफ से बोलने लगी। मार-पीट हो गई। हीथक्लिफ चला गया और कैथराइन बेहोश हो गई। उसको सदमा बैठ गया। उसी रात ऐसाबेला हीथक्लिफ के साथ भाग गई। छ हफ्ते बाद ऐसाबेला का पत्र आया जिसमे हीथक्लिफ के प्रति घृणा थी। वह उससे बहुत ही निष्ठुर व्यवहार करता था। नैली को पता चला कि कैथराइन की बीमारी के दिनो मे हीथक्लिफ उसके बाग मे छिपा रहता था।

कैथराइन के एक लडकी हुई और कैथराइन मर गई। लडकी का नाम भी कैथराइन रखा गया। लिण्टन-परिवार में पुत्र का अभाव था। अत सम्पत्ति ऐसाबेला की

सन्तान को मिलेगी—हीथक्लिफ यह देख रहा था। कैथराइन की मृत्यु ने उसे अत्यन्त दु ख दिया। वह रात-भर उसकी कब्र के पास रहता। और परिणामस्वरूप वह ऐसाबेला पर और भी अधिक अत्याचार करता। एक रात वह ग्रेन्ज को भाग गई। फिर दक्षिण को भाग गई और वहा उसने एक पुत्र को जन्म दिया।

हीथक्लिफ ने हिण्डले के पुत्र हेअरटन को अशिक्षित रखा था। हिण्डले शराब पी-पीकर जवानी मे ही मर गया। अब हीथक्लिफ वुदरिंग हाइट्स का स्वामी बन गया। कुछ वर्षो बाद ऐसाबेला भी मर गई और उसके पुत्र को एडगर ग्रेन्ज मे ले आया। वह सोलह साल का था और अस्वस्थ रहता था। अन्त मे नैली उसे उसके पिता के पास ले गई। उसे देख हीथक्लिफ का घृणा हुई, पर उसने उसे हेअरटन की तुलना मे इज्जत से रखा।

लडकी कैथराइन को लिण्टन से प्रेम हो गया। वह एक बार वुदरिंग हाइट्स आ गई।

हीथक्लिफ ने तरकीबे करके अपने पुत्र लिण्टन का कैथराइन से विवाह करा दिया। इसके उपरान्त ही एडगर का देहान्त हो गया। अब थ्रशकौस ग्रेन्ज और कैथराइन दोनो ही हीथक्लिफ के हाथ मे आ गए थे। हीथक्लिफ का पुत्र बीमार पडा। हीथक्लिफ ने डाक्टर भी नही बुलाया और शीघ्र ही वह भी मर गया।

यह वह परिवार था, जहा लौकवुड गया था।

लौकवुड लदन लौट आया। अगली गर्मियो मे जब वह यात्रा पर गया तो उसने देखा वुदरिंग हाइटस मे सब कुछ बदल गया था। दरवाजा खुला था, बाग मे फल खिले थे। कैथराइन और हेअरटन एक पुस्तक पढते बैठे थे। नैलीडीन घर की देखभाल करती थी। नैली ने ही यह बाकी कथा भी सुनाई

जब लौकवुड चला गया तो पखवारे पीछे ही उसे वुदरिंग हाइट्स बुलाया गया। हीथक्लिफ का व्यवहार अब और भी विचित्र और एकान्तप्रिय हो गया था। उसने नैली को बताया कि कैथराइन की आत्मा उसके बहुत पास रहकर भी उससे दूर रहती थी। कैथराइन—पुत्रवधू और हेअरटन मे मित्रता बढ चली। हीथक्लिफ जैसे देखकर भी देख नही रहा था। फिर तीन दिन तक उसने कुछ नही खाया। और तब एक तूफानी रात मे वह मर गया।

कैथराइन और हेअरटन ने विवाह कर लिया था और वे ग्रेन्ज मे रहते थे। यही नैली की कथा का अत था। उसने यह भी कहा कि लोगो मे एक अफवाह थी कि हीथक्लिफ और उसकी प्रिया कैथराइन की आत्माए मैदानो मे साथ-साथ घूमती है।

लौकवुड लौट गया।

अग्रेजी उपन्यासो में यह पहली रचना मानी जाती है जिसने यथार्थ को अपने सामने रखा। प्रेम के माध्यम से लेखिका ने सामाजिक ऊच-नीच पर प्रकाश डाला है, धनी-दरिद्र के भेद पर प्रकाश डाला है। इसलिए यह उपन्यास अत्यन्त प्रभावोत्पादक बन पाया है।

त्याग और प्रेम

[कैमिले[1]]

ड्यूमा, अलेक्जैंडर फिल्स फ्रेंच लेखक अलेक्जैंडर ड्यूमा फिल्स का जन्म पेरिस में २७ जुलाई, १८२४ को हुआ। आपके पिता प्रसिद्ध उपन्यासकार अलेक्जैंडर ड्यूमा थे। माता का नाम मेरी लैबे था। जब आपका जन्म हुआ तब आपके माता पिता का विवाह नही हुआ था। बाद में उनका विवाह हो गया। अपने स्कूल-जीवन में आपको अवैध सन्तान के नाम से काफी अपमान उठाना पड़ा। वैसे पिता पुत्र में बड़े अच्छे सबध थे और दोनों ही बड़े खर्चीले थे। अकेले अकेले रहते थे। शीघ्र ही आपपर १०,००० का कर्जा हो गया। आर्थिक सकट से बचने के लिए आप लिखने लगे और १८४८ में 'कैमिले' की रचना की। बाद में आपने इसका नाट्यरूपातर कर दिया। आगे चलकर आप बहुत धनी हो गए और आपको साहित्यिकों में बड़ा सम्मान मिला। आपमें अपने पिता के प्रति सद्भावना बनी रही। आपको १८७४ में फ्रेंच अकाडमी के लिए चुन लिया गया। २७ नवम्बर, १८९५ में आपकी मृत्यु हुई।
'कैमिले' (त्याग और प्रेम) मूलरूप में पहली बार १८४८ में प्रकाशित हुआ। यह आपकी एक मर्मस्पर्शी रचना है।

पेरिस का वह बदनाम हिस्सा अपने आदमियो की वजह से यह नाम पा सका था। र्‍यूद-अन्तिन के एक मकान मे एक वेश्या की बुरी हालत मे मृत्यु हो गई थी, क्योकि वह कर्जों से लदी हुई थी। अब उसका फर्नीचर और सामान बिक रहा था। उस भीड मे लोग वैसे ही तमाशा देखने के लिए खडे थे, क्योकि इससे उन्हे एक तरह की सनसनी मिल रही थी। लेकिन एक व्यक्ति ऐसा भी वहा था जिसके उद्देश्य इतने निम्नकोटि के नही थे। वह एक साहित्यिक व्यक्ति था जो न केवल कौतूहलप्रिय था किन्तु उसमे यौवन और प्रेम के आकर्षण के कारण एक दूसरी भावना थी। मेमूज़ील मारग्यूराइट गोथियार के पास कई लोग ऐसे आते थे जो उसमे दिलचस्पी लिया करते थे और उनका स्तर बहुत निम्न-कोटि का होता था। पर यह आदमी ऐसा नही था। वह देखता था कि रूप और यौवन से सम्भ्रात एक स्त्री दुखियारी थी। उसने उसे केवल दूरी से देखा था। उसने मेननलेस-कोट नामक पुस्तक की एक प्रति उस नीलाम मे खरीद ली। जब उसने उस किताब को खोला तो उसमे लिखा हुआ था, 'मारग्यूराइट के प्रति मेनन—विनम्रता', और नीचे आरमन्ध ड्यूवल के हस्ताक्षर थे। इस लेख ने उसमे एक कौतूहल जगा दिया। कुछ दिन

---

१ Camille (Alexander Dumas fils)

बाद एक अजनबी उसके यहा आया और उसने अपना नाम आरमन्ध ड्यूवल बताया। ड्यूवल एक सुन्दर युवक था। उसकी विनम्रता भी उसकी वेदना को ढक सकने मे असमर्थ थी। वह अपनी पुस्तक को वापिस लेने के लिए उपस्थित हुआ था। उसकी सवेदना को देखकर उसे वह पुस्तक ड्यूवल को लौटानी पडी। ड्यूवल को इसका खेद था कि वह अपनी प्रिया के पास उसकी मृत्यु की बेला मे नही पहुच सका था। उसने एक पत्र दिखाया जो मेमूजील गोथियार ने अपने जीवन के अन्त से पहले उसे लिखा था। उसमे उसने उसके प्रति अपना प्रेम प्रकट किया था और चाहना प्रकट की थी कि केवल उसीके दर्शन करने के लिए वह कुछ दिन और जीवित रहना चाहती थी, लेकिन यह एक व्यर्थ की आशा थी। ड्यूवल के आने के पहले ही वह इस ससार से चली गई। तरुण ड्यूवल पर जैसे वेदना फिर घिर आई और वह शीघ्रता से चला गया। वह देखता रह गया कि उसका अतिथि आया था और चला भी गया और वह सोचने लगा कि इन दोनो के प्रेम-सम्बन्ध कैसे रहे होगे।

यह साहित्यिक व्यक्ति स्वर्गीया मारग्यूराइट के परिचितो से प्राय ही अनेक प्रकार की सूचनाए प्राप्त कर लेता। अनेको उसके प्रेमी रह चुके थे। उसने अनुभव किया कि सम्भवत यह वेश्या अन्य वेश्याओ के समान नही थी। वह चतुर और ईमानदार थी और पेरिस की अन्य वेश्याओ के समान उसके आचरण मे अश्लीलता नही थी। तरुण ड्यूवल के दु ख की वास्तविकता और दृढता जानने के लिए यह साहित्यिक व्यक्ति एक दिन मोट-मार्त्रे के कब्रिस्तान मे मारग्यूराइट की कब्र के पास पहुचा। वहा उसने देखा कि उसपर सुन्दर फूल चढे हुए थे। केमिलीयाज फूलो से कब्र ढकी हुई थी। यह मारग्यूराइट के प्रिय कुसुम थे। इस कथा ने साहित्यिक व्यक्ति के कौतूहल को जगा दिया और ड्यूवल से सारी कथा सुनने के लिए वह उसके घर गया। तरुण उस समय बीमार था, किन्तु मिलने के लिए तत्पर था। वह अपने दु ख को किसी दूसरे से कहना चाहता था। उसे एक सुनने-वाला मिल गया था। उसने साहित्यिक व्यक्ति को निमत्रित किया और कब्रिस्तान मे ले गया। तब उसने बताया कि वह उसको एक कब्र मे से दूसरी कब्र मे लिटाएगा तभी उसे यह निश्चित होगा कि मारग्यूराइट वास्तव मे मर गई थी। अन्त मे यही किया गया। अब शव को एक कब्र मे से दूसरी कब्र मे ले जाया गया तब अपनी प्रिया के सडते हुए, विकराल हुए मुख को देखकर ड्यूवल अपना मानसिक सतुलन खो बैठा। बीमारी से धीरे-धीरे अच्छे होते समय उसने अपनी सारी कथा साहित्यिक मित्र को सुनाई।

कुछ वर्ष पहले ड्यूवल की मारग्यूराइट से मुलाकात हुई थी और वह तन्वी घने काले केशो मे अत्यन्त सुन्दरी दिखाई देती थी। श्वेत वस्त्र पहनती थी और केमेलिया कुसुम का एक गुलदस्ता-सा बनाकर एक दुकान मे घुसते समय उसे दिखाई देती। ड्यूवल ने उसे क्षण-भर देखा था, किन्तु उसका सौदर्य उसके मन पर सदैव के लिए अकित हो गया था और उसने प्राणपण से यह चेष्टा की थी कि वह उसके अधिक से अधिक समीप हो सके। एक बार वह अपने एक फैशनेबल मित्र के साथ एक थियेटर मे बाक्स मे बैठी थी, तब ड्यूवल ने पहचाना था कि उसका मित्र उसका अपना भी परिचित था। उसी समय उसने उससे परिचय प्राप्त किया था। मारग्यूराइट उसके प्रति विशेष रुचि नहीं

दिखा सकी। उसका व्यवहार बिल्कुल उपेक्षापूर्ण था। युवक ड्यूवल जब लौटा तो उसे पीछे से मारग्यूराइट का हास्य सुनाई दिया। कुछ ही दिन बाद उसको पता चला कि मारग्यूराइट को तपेदिक हो गई थी और वह कुछ महीनो के लिए बैगनरेश चली गई थी। वहा एक कुलीन वृद्ध ड्यूक रहते थे। उन्होने जब मारग्यूराइट को देखा तो वे विचलित हो गए। कुछ ही दिनो पहले उनकी पुत्री की मृत्यु हुई थी। मारग्यूराइट को देखकर उन्हे लगा कि वह उनकी पुत्री से बिल्कुल मिलती-जुलती थी। यद्यपि मारग्यूराइट बदनाम थी, फिर भी ड्यूक ने उसे अत्यन्त सुख से रखा। ड्यूवल की तृष्णा और भी अधिक धधक उठी। वह इस सुन्दरी को दूर से ही देखता और मानो मन ही मन उपासना करता। जब वह बीमार थी तो वह नित्य उसके घर जाकर उसकी तबियत का हाल पूछता। यद्यपि उसने भी उससे मिलने की चेष्टा नहीं की। अन्त मे एक बार फिर एक मित्र के माध्यम से उसकी मुलाकात हुई, जो एक पुरानी वेश्या के यहा जाया करता था। इस वेश्या का नाम था प्रूडेस डोवरनोय। यद्यपि उसने काफी कमा लिया था और अधेड हो गई थी, फिर भी अपनी पुरानी आदत उससे छटी नही थी। प्रूडेस अब मारग्यूराइट की पडोसिन थी। कैमिले नाम का एक व्यक्ति बार-बार मारग्यूराइट को परेशान करने के लिए आता था। वह उसका प्रेमी था। उससे पीछा छुडाने के लिए एक बार मारग्यूराइट प्रूडेस के घर गई। इस बार जब उसने सुन्दर ड्यूवेल को वहा देखा तो उसके व्यवहार मे स्नेह था, मानो वह अधिक विनम्र हो गई थी। फिर आनन्द की धारा बहने लगी। मदिरा प्रवाहित होने लगी और मारग्यूराइट पर तपेदिक का नया हमला हुआ। उपस्थित लोगो मे से किसीने भी इसपर ध्यान नही दिया किन्तु डयूवल ने इस बात पर जोर दिया कि वह अपने स्वास्थ्य की देखभाल करे। इस युवक के सौहार्द से प्रभावित होकर मारग्यूराइट ने उसके चुम्बनो को स्वीकार किया और उसकी आखो मे आसू देखकर यह वचन दिया कि वह उसकी रखैल बनकर रहेगी किन्तु एक शर्त यह लगा दी कि वह किसी भी चीज़ की माग न करे। दो दिन, दो राते ड्यूवल ने मारग्यूराइट की भुजाओ मे व्यतीत किए। वह हर्ष से विभोर हो उठा था। किन्तु एक दिन उसने कैमिले को मारग्यूराइट के साथ थियेटर के बॉक्स मे बैठे देखकर अपने अन्दर घोर ईर्ष्या का अनुभव किया। अगली रात जब मारग्यूराइट ने कहा कि उसकी तबियत खराब थी तब वह यह जान गया कि वह अपने प्रेमी की बात छिपाने की चेष्टा कर रही थी। उसकी ईर्ष्या अनन्त हो गई। उसने उसे एक पत्र लिखा और पेरिस जाने को तैयार हो गया। मारग्यूराइट ने उसे उत्तर दिया और ड्यूवल ने उसे एक प्रायश्चित-भरा पत्र लिखा। वह उसे मिलने के लिए आई और उसका समझौता फिर से हो गया। आनन्द से कई महीने व्यतीत हो गए। एक दिन देहात मे घूमते समय मारग्यूराइट ने यह निश्चय किया कि वे दोनो साथ-साथ रहेगे। उसने एक मकान किराये पर ले लिया और उसका प्रेमी निर्भय होकर उसके साथ रहने लगा। वृद्ध ड्यूक इस बात से क्रुद्ध हो उठा। उसने अपनी सहायता बन्द कर दी। तब मारग्यूराइट चुपचाप धन की कमी पूरी करने के लिए अपने सामानो को बेचने लगी। जब ड्यूवल को यह पता चला तब वह भयभीत हो गया और जो कुछ भी थोडी-बहुत सम्पत्तिउसके पास थी, उसने उसके लिए उसे सर्पपित करने का विचार किया।

जब ड्यूवल के पिता को यह ज्ञात हुआ तो उसने इस सम्बन्ध को तोड देने की आज्ञा दी। ड्यूवल ने इन्कार कर दिया लेकिन जब वह पेरिस से लौटकर आया तो उसने देखा कि मारग्यूराइट चली गई थी। जब उसको यह ज्ञात हुआ कि वह धनी कमिले के पास चली गई थी तो उसकी वेदना की सीमा नही रही। वह मानो पागल हो गया। महीनो बाद जब वह पेरिस लौटा तो इस बार उसने एक दूसरी रखैल रखी, यह थी तो सुन्दरी किन्तु अश्लील थी। अब ड्यूवल ने निस्सहाय और बीमार मारग्यूराइट का सबके सामने अपमान करना शुरू किया। एक रात मारग्यूराइट ड्यूवल के समीप आई। उसे अपने पुराने प्रेम की याद जगाई और उसकी भुजाओ मे सिमटकर उससे प्रार्थना की कि वह उसे सताना छोड दे। लेकिन जब वह अगले दिन उससे मिलने के लिए गया तो उसने देखा कि वह फिर कैमिले की भुजाओ मे थी। तब ड्यूवल ने ईर्ष्या से ग्रस्त होकर पाच सौ फ्रैंक का नोट मारग्यूराइट को भेजकर लिखा—यह है तुम्हारी रात की कीमत। और फिर वह वहा से चला गया। एलेग्ज़ेन्ड्रिया मे ड्यूवल को फिर पता चला कि मारग्यू-राइट बीमार थी। उसने उसे पत्र लिखा और उससे प्रेम-भरा पत्र प्राप्त भी किया और तुरन्त पेरिस चल पडा। किन्तु अब बहुत देर हो चुकी थी। जितनी देर मे वह घर पहुचा, वह वेदना से मुक्त हो गई थी और उसके जीवन का आखिरी क्षण अपनी पीडा से अब उसे ग्रस्त नही कर सकता था। मारग्यूराइट अपने प्रेमी के लिए अपने अतिम समय के विचारो को लिखकर छोड गई थी। उसको पढकर उसे ज्ञात हुआ कि वृद्ध ड्यूवल के पत्र को प्राप्त करके ही उसने अपने प्रेमी को छोड दिया था ताकि उसका जीवन विनष्ट न हो। वह गिरजे मे ही मृत्यु को प्राप्त हुई थी। सचमुच उसने उसे हृदय से प्यार किया था।

लेखक ने नारी-जीवन के प्रति अत्यत उदार दृष्टि अपनाई है। प्रस्तुत कथानक का उसने नाटक भी बनाया था, जो अत्यन्त विख्यात हुआ था। यहा एक वेश्या का विशाल हृदय दीखता है, जिसमें हमें समर्पण और त्याग की भावना अपने मनोहर रूप में दिखाई देती है। उपन्यास में मानसिक उतार-चढावो का बडा हृदयहारी चित्रण हुआ है।

एमिल जोला •

नाना

[नाना[1]]

जोला, एमिल फ्रेंच उपन्यासकार एमिल जोला का जन्म पेरिस में २ अप्रैल, १८४० को एक इटैलियन ग्रीक इञ्जीनियर के घर में हुआ। माता फ्रेंच थी। एक्स में आपका लालन पालन हुआ। १८५८ में आप पेरिस में एक क्लर्क बन गए और १८६४ में आपने अपनी पहली किताब प्रकाशित कराई। १८६६ में जोला एक जबरदस्त आलोचक बन गए। कला और साहित्य पर आपके लेख पत्र पत्रिकाओं में निकलने लगे और यह आलोचना आपने अनेक उपन्यासों और पुस्तकों में जारी रखी। २६ सितम्बर, १६०२ को जोला की मृत्यु हुई। आपके शयनागार में एक खराब स्टोव के कारण गैस भर गई और इससे आपकी मृत्यु हो गई।

नाना (१८८०) जोला का विश्व-विख्यात उपन्यास है। आपने बहुत अधिक रचनाए लिखी है लेकिन 'नाना' और 'नाना की मा' का नाम बहुत अधिक लिया जाता है। 'नाना' में आपने फ्रास के वैभव-विलास की वास्तविक पोल को उघाड़कर सामने रख दिया है, समाज पर व्यग्य किया है।

उस समय वैरायटी थियेटर मे दी ब्लाडवीनस नामक नाटक होनेवाला था। बोर्दीनेव थियेटर का मैनेजर बहुत व्यस्त था। मुलिएफोचेरी नामक पत्रकार ने देहात से आए हुए अपने रिश्ते के भाई हेक्टरदलाफलोय का परिचय मैनेजर से कराया। बोर्दीनेव अपने थियेटर को चकलां कहा करता था और उसने यह भी बताया कि उसके यहा एक नई अभिनेत्री आई थी। उसका नाम नाना था और सारा पेरिस उसके बारे मे चर्चा कर रहा था लेकिन न वह गाना जानती थी और न उसे अभिनय करना आता था लेकिन वह इतनी सुन्दर थी कि उसे किसी चीज़ की ज़रूरत ही नही थी। क्योकि आज उद्घाटन था, भीड़ काफी इकट्ठी हो गई थी। स्टीनर बेंकर वहा उपस्थित था। उसकी प्रिया रोज मिनन थी। वह नाना के साथ अभिनय किया करती थी। उस दिन रोज मिनन का पति स्टीनर के साथ था। मिनन अपनी पत्नी के प्रेम-सम्बन्धो का प्रबन्ध किया करता था। दाग्वेने नामक युवक स्त्रियों पर अपना समस्त धन नष्ट कर चुका था, उसको नाना का प्रिय पात्र कहा जाता था। लूसीं स्टेवर्ड ब्लाक देशिवरी और गोगा नामक प्रसिद्ध वेश्याए भी वहा उपस्थित थी। दरबार का चेम्बरलेन काउण्ट मफत दे ब्यूविले अपनी पत्नी और ससुर के साथ

---

१ Nana (Emile Zola)। 'नाना' का हिन्दी अनुवाद इसी नाम से किताब महल, इलाहाबाद से प्रकाशित है। अनुवादक हैं विष्णु शर्मा।

उपस्थित था। उसका ससुर मार्क्विस वे शुवार्ड कहलाता था। लेबोरदेथ और काउण्ट दी वेंदुवर्स भी वहा उपस्थित थे। नाटक ओलम्पस के देवताओ का मखौल-सा उडाता था। नाना अभी तक नही आई थी और उसको देखने के लिए दर्शक अधीर हो रहे थे। वह १८ वर्ष की स्त्री थी। उसके कन्धो पर उसके सुनहले केश लहराते थे। अपनी आयु के लिए वह लम्बी भी अधिक थी और स्थूल भी। न उसमे अभिनय-कौशल था और न उसकी आवाज़ अच्छी थी। उसी समय एक तरुण चिल्ला उठा, "यह बहुत प्रभावित कर रही है।" सब लोग चिल्लाने लगे, "इसने हमको आहत कर दिया है।" और इसके बाद सबकी आखे उसपर गड गई और उसकी प्रशसा मे घोर कोलाहल होने लगा। वह बहुत ही कम वस्त्र पहने हुए थी और लोगो की आखे उसपर से हट नही रही थी। अन्तिम अक आ गया। अब नाना के शरीर पर कोई वस्त्र नही थे केवल उसके लम्बे केश ही उसके लिए आवरण थे। उस दृश्य को देखकर किसीने कोलाहल नही किया। पुरुष आगे झुक गए। उनके नथुने सिकुड गए और उन्हे अब इस हसती हुई लडकी मे से नारीत्व बाहर प्रस्फुटित होता हुआ दिखने लगा। जो उसे देखता था वह चकित रह जाता था। घोर वासना और तृष्णा के गुप्त रहस्यो को प्रकट करती हुई नाना की मुस्कान ऐसी दिखाई देती थी मानो वह पुरुषो को नष्ट कर देना चाहती थी, उनका उपहास कर रही थी। अगले दिन बोले-वार्सहोसमेन के नाना के निवास-स्थान पर सभी आयु के पुरुष इकट्ठे थे। नाना को यहा दो व्यक्तियो ने बसाया था। उन्होने सारा खर्चा किया था। इस समय वे दोनो यहा नही थे। उसने सब लोगो को हटा दिया। उसे अपने बच्चे लुई की चिन्ता थी जो उसके सोल-हवे साल मे पैदा हुआ था। वह अपनी नौकरानी जौ से बात करती रही। यह नौकरानी मादाम त्रिकेन के यहा मे उसके साथ आई थी। केश-सज्जा करनेवाला फ्रासिस आया। नाना ने जल्दी से कपडे पहने और एक घण्टे के लिए वह एक व्यक्ति के पास गई, जिससे वह अपने लिए जरूरी चार सौ फ्रेंक ले आई। जो कोई भी थियेटर मे गया था वह नाना मे मिलना चाहता था और वह बडी मुश्किल से रसोई मे से निकलकर शाम के नाटक के लिए चुपचाप जा सकी। मगल की शाम को मफन लोगो के यहा पेरिस के सम्भ्रात लोग इकट्ठे होते। फोचेरी इस अफवाह मे बडी दिलचस्पी ले रहा था कि सेंबिस नामक प्रसिद्ध काउण्टेस का भी एक प्रेमी था। पत्रकार अगले दिन आधी रात को नाना के यहा लोगो को खाने के लिए निमन्त्रित कर रहा था लेकिन काउण्ट और वृद्ध मार्क्विस ने वहा जाने से इन्कार कर दिया।

नाना के ड्राइग रूम मे बहुत-से बेबुलाए मेहमान भी आ गए थे। बोर्दनिव के पाव मे चोट लग गई थी, इसलिए वह दो कुर्सिया मिलाकर बैठा। जार्ज ह्यूगन स्कूल का वह लडका, जिसने थियेटर मे पहली आवाज लगाई थी कि नाना बहुत प्रभावित कर रही है, दाग्वेने के पास बैठा था और दाग्वेने वहा उपस्थित स्त्रियो की जानकारी करा रहा था। स्टीनर, जो सट्टा बाजार मे अपना आतक रखता था, नाना के पास बडे आराम से बैठा हुआ था जैसे अब काटे मे फस गया था और ऐसा किंकर्तव्यविमूढ-सा उसकी ओर देख रहा था कि जो कीमत वह कह देगी उसीको वह तुरन्त स्वीकार कर लेगा। रोज मिनन एक प्रमी से हाथ धो बैठने के दुख के बजाय फोचेरी से अपनी क्रीडा प्रारम्भ कर रही थी जो

उसके बारे मे अखबारो मे खबरें निकलवा सकता था। अलख भोर मे पार्टी समाप्त हुई और सव शराब पीकर झगडा करते हुए वहा से निकल गए।

कुछ हफ्तो के बाद स्टीनर ने नाना के लिए ह्यूगन के घर के पास लायर्ट मे देहात का एक बडा मकान खरीद दिया। नाना ने कुछ दिनो के लिए छुट्टी ली और वहा चली गई और उसने अपने सब मित्रो को वहा निमन्त्रित किया। इस बीच मे काउण्ट मफत और उसका परिवार मादाम ह्यगन के यहा मेहमान बनकर आया। काउण्ट के साथ एक अग्रेज राजकुमार था जो कुछ दिन पहले नाना से मिल चुका था और अब उसको देखकर ढलती उम्र मे भी उसकी जवानी जाग उठी—उस रात यदि वह एक घण्टे उसका सम्पक प्राप्त कर लेता! और यही उसकी कामना थी और उसके लिए वह कुछ भी देने को तैयार था। अपने नये घर की सुषमा और सुन्दरता से नाना बहुत प्रभावित हुई। यहा उसे पहले जॉर्ज मिला। इस लडके से वह प्रभावित हुई किन्तु काउण्ट मफत से मिलने की उसकी इच्छा नही थी। मफत की आतुरता और आवेग उसको डराते थे। स्टीनर के लिए नाना बीमार बन गई और एक सप्ताह तक वह जॉर्ज के साथ ऐसे रही जैसे पन्द्रह वर्ष की कोई लडकी अपने प्रथम प्रेम मे निमज्जित रहती है। नाना के प्रेमी पेरिस से आने लगे और जॉर्ज उनके साथ रविवार को घूमने निकल गया। उसे उसकी मा ने नाना की गाडी मे देख लिया। जॉर्ज को उसके भाई फिलिप ने डाटा। उस रात नाना ने मफत के सामने समर्पण किया पर वह फिर से लौट आई जहा दूसरी अभिनेत्री उसकी जगह काम कर रही थी। तीन महीने बाद काउण्ट मफत की लडाई हो गई। उसे यह अभी तक नही मालूम था कि नाना पर साथ-साथ स्टीनर का भी अधिकार चल रहा था। जब उसने उसे थियेटर के हास्य अभिनेता फोनतन के साथ देखा तो उसे क्रोध आ गया। नाना को इधर फोचेरी पर बहुत क्रोध आया क्योकि उसने पत्र मे एक लेख लिख दिया था 'सुनहरी मक्खी' जिसमे उसने एक लम्बी खूबसूरत लडकी के बारे मे वर्णन किया था जा पेरिस की गन्दी गलियो से निकलकर आई थी और अभिजातकुल को बिगाड रही थी, बर्बाद कर रही थी। नाना ने मफत से कहा कि फोचेरी मफत की पत्नी को बहका रहा था। यद्यपि यह सत्य था किन्तु काउण्ट इसको प्रमाणित नही कर सका।

अब नाना फोनतन के प्रेम मे पड गई। फोनतन उसे मारता, उसके धन को खर्च करता। नाना अब सडको पर घूमने लगी। ताकि फोनतन को सहायता दे सके। अब एक मासूम चेहरेवाली वेश्या सेटिन ही नाना की दोस्त थी। इस बीच मे पुलिस नाना के पीछे लग गई। वह उसके चगुल से बाल-बाल बची और इसलिए उसे काफी समय बाद मफत से मित्रता कर लेनी पडी। बोर्दीनेव के नये नाटक मे एक डचेस का उसे अभिनय करना पडा। इस नाटक का खर्चा काउण्ट उठा रहा था। पार्क मोनश्यू के निकट एक विशाल भवन सौदे के रूप मे तय किया गया। नाना एकमात्र काउण्ट की बनकर रहे, इसके लिए वह सब कुछ देने को तैयार था। इस नाटक मे नाना बुरी तरह असफल रही लेकिन अब वह अपने ससार की रानी बन गई। उसके घर मे सबसे अच्छी चीजे आ गई। सुन्दर सामान। उसके शयनागार मे अनुरूप सज्जा दिखाई देने लगी। फर्श पर रीछो की खालें बिछा दी गई। उसके पास अब कई सेवक थे और पाच गाडिया थी और तीन लाख फ्रैंक

उसपर खर्च किए जाते थे । अब नाना मफत के प्रति अपना पतिव्रत दिखाने लगी । यहा तक कि कभी-कभी उसे घरेलू मामले मे भी सलाह देने लगी । किन्तु कुछ ही दिन बाद वह काउण्ट द वेदुवर्स की सम्पत्ति को भी उडाने मे लग गई । इसके बाद जॉर्ज के भाई फिलिप आने लगा । नाना ने उसके सिर पर जादू कर दिया था जिसको कि नाना के चगुल से जॉर्ज को बचाने के लिए भेजा गया था . किन्तु निरन्तर पुरुषो मे घिरी रहने के कारण नाना ऊबने लगी और क्योकि उसके पास धन निरन्तर चारो ओर से बरसता था, इसलिए उसपर कर्ज़े बढने लगे । लुई खुद अस्वस्थ रहता था । वह उसके पास भी जाती और कुछ घण्टो के लिए माता का सा व्यवहार करती । इसके बाद नाना को सेटिन मिली और उसे अपने भवन मे ले आई । पुरुषो ने सेटिन मे नाना की प्रतिद्वद्विनी पाई ।

जन का महीना था । रविवार के दिन लागचेम्पस मे पेरिस के बडे पुरस्कार की घुडदौड होनेवाली थी । वेदुवस की सम्पत्ति विनष्ट हो चुकी थी । लूसीगनन नाम के प्रिय घोडे पर उसने अपना दाव लगाया और एक घोडी का नाम उसने नाना रख दिया था। नाना ने भी वहा उपस्थित रहकर उस समुदाय को जैसे जीवन्त कर दिया । उसके चारो ओर जो लोग घिरे हुए थे उनसे वह अपनी गाडी मे बैठी हुई, शैम्पेन जैसी कीमती शराब पिलाती हुई मानो अपना दरबार कर रही थी । घुडदौड शुरू हुई और नाना नामक घोडी पीछे से निकलकर आगे आ गई । विशाल भीड मे 'नाना-नाना' गूजने लगा । वेदुवर्स ने नाना नामक घोडी पर लोगो को दाव लगवा दिए थे, लेकिन अपना धन उसने लुसीगनन नामक घोडे पर ही लगाया था । यह बात खुल गई और वह बदनाम हो गया और इस बदनामी ने उसे बर्बाद कर दिया ।

कुछ दिन बाद नाना बहुत बीगार पड गई, उसके गर्भपात हो गया था । अपनी रोगशय्या पर पडे हुए उसने प्रयत्न किया कि मफत का उसकी पत्नी से मेल हो जाए । अन्त मे उन दोनो का मिलान हो गया । मफत ने देखा कि नाना अब जॉर्ज की भुजाओ मे थी । अब वह अपने जीवन के बारे मे बेपरवाह हो गई थी । नौकर उसे बेवकूफ बनाते थे, धोखा देते थे । बहुत साधारण चीजो पर वह हजारो फ्रैंक खर्च कर देती थी । पर फिर वे चीज़े बेफिक्री से तोड दी जाती थी । बडे-बडे बिल बिना चुकाए पडे थे । कर्जा बढता जा रहा था । इसके बाद जॉर्ज को गिरफ्तार कर लिया गया । नाना को देने के लिए उसने अपने रेजीमेन्ट मे बारह हजार फ्रैंक चुराए थे । जॉर्ज को पता चल गया था कि नाना का उसके भाई से सम्बन्ध भी था, तो उसने नाना के शयनागार मे अपना छुरा भोक लिया, लेकिन वह मर नही सका । मादाम ह्यू गन इस घटना स किकर्तव्यविमूढ हो गई और सेवा-सुश्रूषा कर ठीक करने के लिए जॉर्ज को अपने साथ ले गई ।

अब नाना ने मफत के प्रति ऐकान्तिक तन्मयता दिखाने का बहाना करना छोड दिया । हर समय लोग उसके पास खुले तौर पर आने लगे । वह एक के बाद एक से धन निकाल लेती । काउण्ट इस बात को सुन-सुनकर क्रुद्ध हाने लगा । स्टीनर, मुलिए फोचेरी से जैसे वह निकल गई । मफत उसपर अधिकार करने मे असमर्थ हो गया । वह मानो नाना के मनोरजन के लिए एक कुत्ता था किन्तु मफत का भी अन्त आ गया । उसका बूढा ससुर मार्क्विस नाना के पास आने लगा । मफत भाग गया और उसने गिरजे मे

शान्ति प्राप्त करने की चेष्टा की।

तभी नाना को पता चला कि जॉज मर चुका था। जिसको नाना छूती थी वही बर्बाद हो जाता था लेकिन नाना अब भी उतनी ही सुन्दर और स्वस्थ थी। और इसके बाद जैसे उसपर एक पागलपन छा गया। उसने अपना घर नीलाम करवा दिया। छ लाख फ्रैंक लेकर वह विदेशो की ओर चल दी और उसकी विदेश-यात्राओ की कहानिया लोगो के पास आने लगी। कई महीने बाद नाना को पता चला कि लूई बीमार था। वह शीघ्र लौटी। उसकी सेवा करते समय नाना को चेचक हो गई और वह ग्राण्ड होटल मे मर गई। उसके मरने के समय उसकी पुरानी प्रतिद्वन्द्विनी स्त्रिया मौजूद थी। किन्तु पुरुष बीमारी के कारण डरे हुए थे और वे समीप नही आते थे। सबसे अन्त मे रोज मिनन गई। ठीक उमी समय बाहर भीड चिल्लाती जा रही थी—बर्लिन चलो। फ्रास का प्रशा से युद्ध छिड गया है।

इस उपन्यास में जोला ने एक वेश्या के चित्रण के माध्यम से पेरिस की वास्तविकता का उद्घाटन किया है। इस उपन्यास ने अपने समय में हलचल मचा दी थी और इससे साहित्य में एक नये यथार्थ ने प्रवेश पाया था। जोला ने वास्तविकता को उभारकर रखा है। उसने वासना को प्रश्रय नही दिया, बलिक उसके घृणित रूप को सुस्पष्ट कर देने की चेष्टा की है।

हेलेन जैक्सन

प्रेम के बन्धन

[रमोना[1]]

जैक्सन, हेलेन हट अंग्रेजी लेखिका हेलेन मेरिया फिस्के का जन्म १८ अक्टूबर, १८३१ को अमरीका में एम्हर्स्ट नामक स्थान में हुआ। २१ वर्ष की अवस्था में आपने कैप्टेन एडवर्ड हट से विवाह किया। १८६३ में आपके पति का देहात हुआ। तब तक आप अपने पति के साथ जगह जगह तबादला होने पर आती-जाती रहीं। उसके बाद ही आपने लेखन प्रारम्भ किया। १८६७ से मृत्यु पर्यंत आपने काफी लिखा। पहले 'एच० एच०' के उपनाम से लिखा। बाद में आपने कोलोरेडो स्प्रिंग्स के डब्ल्यू० एस० जैक्सन नामक एक बैंकर से विवाह कर लिया। उसके बाद अमरीकी इण्डियनों के प्रति आपकी सहानुभूति बढती गई। उनकी जमीन-जायदाद को यूरोप से आए हुए लोगों ने छीन लिया था। श्रीमती जैक्सन का मत था कि यह इण्डियनों के प्रति एक प्रकार का अत्याचार था। १८८४ में आपने अपना आक्रोश व्यक्त करते हुए 'रमोना' नामक उपन्यास लिखा जो बहुत विख्यात हुआ। इसके एक वर्ष बाद १२ अगस्त, १८८५ को आपका सैन फ्रांसिसको मे देहात हो गया।

इण्डियन बहुधा रैड इण्डियन कहे जाते है। यूरोपीय लोगों के पहुंचने के पूर्व अमरीका महादेशों में अनेकों जातिया रहती थी। क्योंकि कोलम्बस भारत अथात इण्डिया ढूढने निकला था, गलती से उसने अमरीका को इण्डिया कहा और उसके निवासियों को इण्डियन कह दिया। बाद में जब भारत का यूरोपीय लोगों ने पता चला लिया, तब अमरीका के मूल निवासियों को अमरीकन इण्डियन कहा जाने लगा। यूरोप की विभिन्न जातिया अमरीका में जा बसी थी। उन्होंने वहा की मूल जातियों के प्रति घोर अत्याचार किया था। हेलेन उन्नीसवी सदी की लेखिका थी। उस समय तक ये घटनाए होती रहती थी। इसलिए उनके इस उपन्यास में इन परिस्थितियों का विवरण अत्यत विशद रूप में आ गया है।

भेडो पर ऊन उगती ही है और उसे काटा भी जाता है। सिनौरा मोरैनो के पशु-पालन-केन्द्र मे भी वर्ष का सबसे अधिक व्यस्त समय आ पहुचा था। खूनी मैक्सिकन युद्धो से पूर्व, जबकि दक्षिण कैलिफोर्निया अलग नही हुआ था, पशुओ के लिए बहुत अधिक चरागाहे थी। अब उतनी अच्छी चरागाहे नही बची थी, लेकिन विधवा सिनौरा ने अभी तक मोरैनो-परिवार की काफी सम्पत्ति बचा रखी थी। वह अपने परिवार की भूमि की रक्षा के लिए केवल अपने हेतु ही नही लडती थी। उसके पास एक आशा थी—उसका प्यारा बेटा फेलिपे। वह सुन्दर था। किन्तु माता के कठोर अनुशासन ने उसे कुछ दब्बू

१ Ramona (Helen Hunt Jackson)

बना दिया था। वास्तव मे सिनौरा का स्वभाव था ही रोबीला।

फिलिपे की बीमारी ने सारा काम बिगाड दिया। सिनौरा व्यस्त हो गई अपने पुत्र की देख-रेख मे। ऊन काटने का काम फिलिपे के ठीक होने तक के लिए रुक गया। रमोना सिनौरा की पालिता बालिका थी। वह भी सिनौरा के साथ फिलिपे की निरन्तर सेवा करती रही। धीरे-धीरे फिलिपे का स्वास्थ्य सुधरने लगा।

सिनौरा के पास रमोना विगत सोलह वर्षो से थी। वह बडी विनम्र, प्रसन्नचित्त और कोमल हृदय बालिका थी। उसकी जन्मकथा सिनौरा के लिए दु खद थी। सिनौरा की मर्यादाए और गर्व दोनो को ही उससे आघात पहुचता था। रमोना के पिता का नाम था ऐंगस फेइल। वह स्कॉटलैड का निवासी था। सिनौरा की बडी बहिन ने पहले तो उससे प्रेम प्रदर्शित किया, किन्तु बाद मे उसे ठुकरा दिया था। क्रोध और अपमान से विक्षुब्ध ऐंगस मदिरा पीने लगा और उसने पतन का पथ पकड लिया। शीघ्र ही उसका नाम कलकित हो चला। अन्त मे उसने एक अमरीकी इडियन स्त्री से विवाह कर लिया। उसके रमोना नामक पुत्री हुई। एक बार वह उस बालिका को लेकर सिनोरा की बडी बहिन से मिलने गया। वह अपनी पुरानी प्रेमिका को शायद अपनी बच्ची दिखाना चाहता था। परन्तु तब उस सिनौरिटा का, जो अपने-आप मे रहती थी, और जिसने बडी निष्ठुरता से व्यवहार किया था, दर्प खडित हो चुका था। उसका विवाहित जीवन दु खो से भरा था। और अब वह बाझ थी। उसने ऐंगस स वह बच्ची माग ली और गोद ले ली। जब उसका देहान्त हो गया तब उस बच्ची को सिनौरा मोरैनो ने पाल लिया। अब रमोना बडी हो गई थी। वह बिलकुल अपनी इडियन माता जैसी लगती, किन्तु उसके नेत्र अपने पिता जैसे नीले-नीले थे। वह न अपनी सुन्दरता के प्रति जागरित थी, न उसे यही पता था कि तरुण फिलिपे उसके प्रति अगाध प्रेम लिए हुए था। उसे केवल इतना ज्ञात था कि सिनौरा को उससे तनिक भी प्रेम नही था। वह उसे पालती थी, पढाती थी, उसकी देख-रेख करती थी, वह यह सब कुछ कर सकती थी, करती थी, किन्तु वह उससे प्रेम नही कर सकती थी, न ही करती थी।

आखिर वह दिन आया जब सिनौरा ने पुत्र के पूर्ण स्वास्थ्यलाभ की घोषणा कर दी। भेडो की ऊन का कटना प्रारम्भ हुआ। पशुपालन-केन्द्र के सब कर्मचारी सन्नद्ध हो गए। इडियनो का एक दल अपने मुखिया के पुत्र ऐलैस्सैड्रो के साथ ऊन कटाई मे मदद करने आ गया। ऐलैस्सैड्रो एक सशक्त सुन्दर युवक था। काम शुरू होने के कुछ ही समय बाद फिलिपे की तबियत उस गर्मी मे बिगडने लगी। वह थकान से फिर बुखार मे पड गया और उसकी हालत बहुत ज्यादा खराब हो गई। घर-भर को लगा जैसे वह मौत के करीब पहुच गया था। किन्तु भाग्य उसके साथ था। धीरे-धीरे सकट दूर होने लगा और वह फिर अच्छा होने लगा। किन्तु शय्या छोडने मे उसे काफी समय लग गया। उसकी अनुपस्थिति मे, कई सप्ताह तक, सबको अपनी योग्यता, नम्रता और कौशल से प्रभावित करता हुआ, ऐलैस्सैड्रो ऊन कटाई के काम की देखरेख करता रहा।

इस कार्य-वेला मे वही हुआ जिसकी सभावना थी। ऐलैस्सैड्रो रमोना पर मोहित हो गया। और धीरे-धीरे रमोना भी उसके प्रेम को बढावा देने लगी। अन्त मे वह इडियन

मुखिया का सुन्दर पुत्र अपने भावावेग को अवरोधो मे नही रख सका और उसने अपना प्रेम रमोना पर प्रकट कर दिया। रमोना ने उसकी पत्नी बनना स्वीकार कर लिया।

ज्योही उन्होने विभोर होकर आलिगन किया, सिनौरा ने उन्हे उस अवस्था मे देख लिया। सिनौरा मैक्सिकन थी। उसके क्रोध का अन्त नही रहा। उसने तुरन्त हो रमोना को ऐलैस्सैड्रो के बाहुपाश से अलग कर दिया। उसने आशा की कि अगले दिन वे लोग उससे अपने इस व्यवहार के लिए क्षमा माग लेगे। सिनौरा की जातीयता का गर्व इस बात से बहुत आहत हुआ कि रमोना ने एक इडियन से विवाह करना निश्चित कर लिया था। यह उसकी दृष्टि मे एक घोर अपराध था। तब उसने रमोना को उसके जन्म की सारी कथा सुना दी, ताकि लाछन मैक्सिकनो पर न लग सके। इस कहानी से रमाना को और भी बल मिला। उसको यह ज्ञात हो गया कि उसके रक्त मे इडियन अश भी था, क्योकि उसकी माता स्वय इडियन थी। सिनौरा ने रमोना को उत्तराधिकार के सारे सुखो से वचिन कर देने की धमकी दी, किन्तु वह रमोना को विचलित नही कर सकी। रमोना ऐलैस्सैड्रो से विवाह करने के लिए दृढ थी। धीरज से वह अपने प्रेमी के लौटने की प्रतीक्षा करने लगी, जो अपने पिता को विवाह के बारे मे सूचना देने घर चला गया था।

लेकिन कई दिन बीत गए। ऐलैस्सैड्रो नही लौटा। रमोना को धीरे धीरे यही निश्चय हो गया कि वह कही मारा जा चुका था, अन्यथा वह अवश्य लौटकर आता। वेदना से रमोना का मन फटने लगा और वह अकेली रहने लगी। वह अपनी स्मृति को सजग रखने के लिए उन स्थानो पर घ्मने लगी, जहा वह अपने प्रेमी से एकात मे मिला करती थी। एक दिन न जाने क्यो शाम की घिरती छायाओ मे, उसे यह लगने लगा जैसे उसका प्रेमी लौट आया था, और एक एकान्ट मिलन-स्थल मे उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। प्रेम की यह भाषा बडी दु सह होती हे, परन्तु अनुभूति के माध्यम से प्रेमी उसे समझ लेते है। उसे लगा कि यदि वह वहा जाएगी तो उसे अवश्य ही ऐलैस्सैड्रो के दर्शन होगे। और वह सचमुच उधर ही चल दी। एक व्यक्ति उसे वहा दिखाई दिया। दुखो की छाया उसके मुख पर स्पष्ट थी। वह देखकर भी उसे पहचान नही सकी। वह एलैस्सैड्रो ही था!

अन्त मे रमोना को उसने अपनी कहानी सुनाई। अमरीका मे आकर बसनेवाले यूरोपियनो ने उसके गाव को बरबाद कर दिया था। उनके घोडे, गाय और बैल चुरा लिए थे। इण्डियनो को तबाह करके भगा दिया था। उनके घर लूटे जा चुके थे। और यह सब कुछ कानून के नाम पर हुआ था!

ऐलैस्सैड्रो जो पहले मुखिया का पुत्र था, अब न उसके पास धरती थी, न पैसा था। वह इतने आरामो से पली, इतनी कोमल और अनुभवशील रमोना को अपनी पत्नी बनाकर कैसे ले जा सकता था?

रमोना सुनती रही। ऐलैस्सैड्रो की एक भी बात उसे विचलित नही कर सकी। जब ऐलैस्सैड्रो आनाकानी करने लगा तो रमोना ने भी दृढता से अपना निश्चय सुना दिया

कि यदि वह उसकी पत्नी नही बनेगी तो साधुनी हो जाएगी । अन्त मे ऐलेस्सैड्रो को स्वीकार करना पडा ।

वे सैनडीगो चले गए और वही उन दोनो का विवाह हुआ । अब रमोना ने अपना नाम बदल लिया । एलैस्सैड्रो उसे मजेल्ला कहा करता था । रमोना को मजेल्ला नाम प्रिय था । पुराने जीवन का कोई भी निशान बाकी नही रहा । वे सैन पास्क्वेल नामक कस्बे मे जा बसे । और दोनो ने नया जीवन प्रारम्भ किया ।

ऐसा लगने लगा कि सुख लौट आए । ऐलैस्सेंड्रो ने अपना पशुपालन-केन्द्र बना लिया और कुछ ही दिन बाद उनके यहा आनन्द की हिलोर दौड गई । रमोना ने एक नीली आखोवाली बच्ची को जन्म दिया । वह मन ही मन बालिका को देखकर मुग्ध हो गई । किन्तु यह हर्ष भी अल्पकालिक प्रमाणित हुआ ।

नये अमरीकी बढते चले आए । और ऐलैस्सैड्रो को अपना घर और जमीन बेचने को मजबूर होना पडा । एक बार फिर वह इण्डियन-परिवार बेघरबार हो गया ।

ऐलैस्सैड्रो को नई चिन्ता थी—एक ऐसी जगह ढूढी जाए, जहा ये निर्दय अमरीकी न मिले । रमोना ने फिर किसी कस्बे मे बसने की सलाह दी, किन्तु ऐलैस्सैड्रो ने उसपर तनिक भी ध्यान नही दिया, क्योकि रमोना उसे मजदूर बनाना चाहती थी, ताकि आमदनी का जरिया पक्का बना रहे ।

ऐलैस्सैड्रो का ध्यान सैन जैकिटो की पर्वत-श्रेणियो की ओर गया । और वह अपना परिवार लेकर वही बसने चल पडा । यात्रा बहुत लम्बी थी । भयानक ठड थी । मार्ग मे ऐसा ज़बरदस्त तूफान आया कि बाप-बेटी और रमोना, तीनो ही घिर गए । ज़िन्दगी के लाले पड गए और मौत अब करीब थी कि किस्मत ने साथ दिया । यात्रा करते हुए एक अमरीकी परिवार ने दया की भावना से विवश होकर उनके प्राणो की रक्षा की ।

अन्त मे पति-पत्नी सबोबा नामक ग्राम मे बस गए । ऐसा लगा जैसे फिर अच्छे दिन लौट आए थे परन्तु बालिका स्वस्थ नही हुई थी । सारी ग्रीष्म ऋतु बीत गई और इण्डियन एजेंसी के अमरीकी डाक्टर की लापरवाही से अन्त मे वह इस ससार से बिदा हो गई । ऐलैस्सैड्रो और रमोना पर मानो वज्रपात हुआ । वे दु ख से व्याकुल होकर पर्वतो के एकान्त मे चले गए । और वही अपने दिन काटने लगे । धीरे-धीरे दु ख कम होने लगा और उनके यहा एक और बालिका ने जन्म लिया । पति-पत्नी ने उसका नाम रमोना रखा ।

ऐलैस्सैड्रो के साथ हुए अत्याचारो ने उसमे एक कटुता भर दी थी । एक बार अपने आवेश मे उसने एक अमरीकी का घोड़ा पकड लिया और उसे हाक ले चला । गोरे अमरीकी ने देखा और निहायत ठडे खून से उसने पिस्तौल निकालकर इण्डियन के गोली मार दी । ऐलैस्सैड्रो ने अन्तिम अत्याचार सह लिया और सदा के लिए मुक्त हो गया ।

रमोना की जीने की इच्छा समाप्त हो गई । अब वह विधवा हो गई थी । उसे बुखार ने पकड लिया । किन्तु फिलिपे की प्यास बुझी न थी । उसने सिनौरा के मरने पर

अपनी प्रिया को ढूढना शुरू कर दिया था। उसे रमोना का पता चल गया। वह रमोना और उसकी बेटी को अपने पशुपालन-केन्द्र मे ले आया। यहा उसने रमोना की ऐसी सेवा की कि वह कृतज्ञता से झुक गई। और अन्त मे उसकी पत्नी बन गई। तब वह मैक्सिको लौट गए।

उनके कई सताने हुई, किन्तु सबसे अधिक प्रिय, सबसे बडी रमोना थी, जो इण्डियन ऐलैस्सैड्रो की बेटी थी।

प्रस्तुत उपन्यास में इण्डियनो पर कानून के नाम पर होनेवाले अत्याचारो का वर्णन बहुत ही विशद है। इसमें हमें बडे ही हृदयद्रावक दृश्य मिलते हैं। अपने समय में इस रचना ने बडी ही हलचल मचा दी थी। आज भी इसका महत्त्व कम नहीं है, क्योकि इसमें एक युग सजीव होकर बोलने लगता है।

ऐल्कॉट

एक परिवार

[लिटिल वीमेन[1]]

ऐल्कॉट, लुईजा मे अंग्रेजी लेखिका लुइजा मे ऐल्कॉट का जन्म पैन्सिल्वैनिया (अमरीका) में, जर्मनटाउन में २९ नवम्बर, १८३२ को हुआ। आपके पिता एमास ब्रौन्सन ऐल्काट स्वय बडे बौद्धिक व्यक्ति थे, परन्तु उनमें परिवार पालन की शक्ति समुचित नही थी। उनकी सामत पुत्री लुइजा जब १६ वर्ष की हुई तो आपपर सारे परिवार का बोझ आ पडा। आप स्कूल में पढाती, और सिलाई-कढाई करती। कॉन्कर्ड (मैसेचुसैट्स राज्य) में जहा वे लोग अब रहते, आप घरेलू काम भी करती। आपका लेखन तब प्रारम्भ हुआ जब आपने धनोपार्जन के लिए पत्रिकाओं मे लिखना प्रारम्भ किया। १८६२ मे आप युद्ध मे नर्स बनकर वाशिंगटन गईं। वहा आपका स्वास्थ्य बिगड गया और १८६६ मे आप यूरोप चली गईं जब आप १८६७ में लौटी तो आपने 'लिटिल वीमेन' (एक परिवार) नामक उपन्यास लिखा, जिसमें आपने अपनी और अपनी बहिनों की आत्मकथा को कहानीरूप दिया। आप निरन्तर अपने परिवार का पोषण करती रही। आपने विवाह ही नही किया। आपने अपना जीवन अपने पिता, अनाथ भतीजों-भाजों का पालन पोषण करने में लगा दिया। ६ मार्च, १८८८ को पिता की अन्तिम बीमारी में सेवा करते समय चढे हुए ज्वर के कारण आप बोस्टन में सदा के लिए सो गईं।

'लिटिल वीमेन' (एक परिवार) एक महान उपन्यास माना जाता है।

मार्च-परिवार वैसे निस्सन्देह सुखी था। पिता का नाम मार्च था, इसलिए परिवार भी इसी नाम से पुकारा जाता था। गरीबी आई, परिश्रम की मार टूटी। पिता मार्च यूनियन सेनाओ के साथ चला गया, किन्तु मार्च-परिवार की लडकियो का साहस नही टूटा। मैग, जो, बैथ और ऐमी अपने काम मे अडिग बनी रही। वे अपनी माता को मार्मी कहती थी।

बडा दिन आ गया। लोग एक-दूसरे को भेट देने लगे। लेकिन धनाभाव के कारण लडकियो ने अपने लिए तो कुछ नही लिया, पर उन्होने मार्मी के लिए भेट खरीद दी। पडोस मे एक परिवार रहता था। वह बहुत ही अधिक दरिद्र था। लडकियो ने वहा अपना त्यौहार का भोजन पहुचा दिया। अच्छाई ने अपना शुभकर फल दिखाया।

पडोस मे ही श्री लॉरेन्स नामक एक धनी व्यक्ति भी रहते थे। उन्होने बडे दिन की दावत का निमन्त्रण भिजवाया। श्री लॉरेन्स उम्रदार आदमी थे। लौरी उनका पौत्र

---

१ Little Women (Louisa May Alcott)

था, जिसे जॉन ब्रुक पढाया करता था। जो ने लौरी से दोस्ती करनी चाही, क्योकि वह बालक अकेला रहता था। पर जो की बहिनो ने इसपर बधन लगा दिए और दोनो सग-सग नही खेल सके।

मार्च-परिवार की ये बहिने, केवल अच्छी ही हो, ऐसी बात नही थी। उनमे अपने दोष भी थे। सुन्दरी मैग स्कूल के बच्चो को पढाती थी और कभी-कभी वह असन्तुष्ट हो जाती थी। जो मे लडको का सा स्वभाव था और आसानी से वह क्रुद्ध हो जाती थी। जब भी उसे बूढी चाची मार्च का ध्यान आता, ऐसा विशेषतया हो जाता। वह उसके साथ रहती। ऐमी के बाल सुनहले थे। स्कूल मे पढती थी। किन्तु जैसे उसमे सहजता नही थी। बथ घर की देख-भाल करती थी। वह सदैव स्नेहपूर्ण व्यवहार करती और विनम्र स्वभाव की थी।

मार्च-परिवार जब पार्टी मे निमन्त्रित होता तो यह एक विशेष घटना बन जाती। जब श्रीमती गार्डिनर ने दोनो बडी लडकियो को अपने यहा निमन्त्रित किया तो मार्च-परिवार के छोटे-से घर मे काफी सनसनी-सी फैल गई। पार्टी मे जो को अपना पडोसी लौरी मिला और गहरी मित्रता हो गई। इसके बाद जब लौरी बीमार पडा तो जो बिना किसी तकल्लुफ के उसके घर चली गई। लौरी सकोची स्वभाव का था। लजीला था। उसके विशाल भवन मे जो उसका मनोरजन करती। उसके व्यवहार से मार्च-परिवार के प्रति सबको स्नेह हो गया। यहा तक कि वृद्ध श्री लॉरेन्स भी प्रभावित हो गए। उन्हे बैथ बहुत प्रिय थी और जब जो से उन्हे ज्ञात हुआ कि उस बालिका को सगीत बहुत प्रिय था, तो उन्होने बैथ के लिए एक पियानो खरीदकर भिजवा दिया। अध्यापक जॉन ब्रुक को सुन्दरी मैग ही सबसे अधिक भाती थी। लौरी को लगने लगा कि शायद दोनो मे कोई प्रेम-व्यवहार जाग उठा था।

यो ही दिन आनन्द से व्यतीत होते रहे। परन्तु अन्धकार अपना काम करता रहता है और एक दिन उसकी छाया स्पष्ट दिखाई पडने लगी।

श्रीमती मार्च के नाम एक तार आया, जिसमे लिखा था, "तुम्हारे पति बहुत बीमार है, तुरन्त आओ।"

श्रीमती मार्च ने अपने मन पर काफी काबू किया। लडकियो ने भी यही दिखाने का प्रयत्न किया कि वे घबराई नही थी। श्रीमती मार्च ने उसी समय जाना निश्चित कर लिया।

लडकियो ने अपनी माता मार्मी की भरपूर मदद करने की कोशिश की। जो ने सबसे जोरदार तरीका निकाला। उसने अपने सुन्दर केश—अपनी लम्बी लटे—पच्चीस डालरो मे बेच दिए क्योकि धन की बहुत अधिक आवश्यकता थी।

श्रीमती मार्च युद्धक्षेत्र की ओर चल पडी। जॉन ब्रुक साथ मे गया। लडकिया घर रह गईं और भगवान से कुशल-मगल के लिए प्रार्थना करने लगी।

छोटी बैथ पडोस मे एक मरीज की सहायता करने जाने लगी। मरीज़ के जिस्म मे सर्वत्र लाल चकत्ते पड गए थे। छूत की बीमारी थी। सेवा-सुश्रूषा का परिणाम यह हुआ कि बैथ को भी छूत लग गई और उसे भी ज्वर आने लगा। वह बहुत ज्यादा बीमार हो गई और उसकी ज़िन्दगी को खतरा पैदा हो गया। डॉक्टर ने हताश होकर कहा कि

श्रीमती मार्च को बुला लिया जाए।

किन्तु जैसे एक चमत्कार हो गया। श्रीमती मार्च जब तक लौटकर आई, लडकी की तबियत पहले से कही अधिक सुधर चुकी थी।

फिर बडा दिन आ गया। बैथ पहले जैसी स्वस्थ तो नही हो सकी, परन्तु अब बिस्तर पर पडी नही थी।

युद्धक्षेत्र से पिता मार्च लौट आया। परिवार मे आनन्द छा गया और बडे दिन की दावत मे लॉरेन्स-परिवार, श्री ब्रुक तथा सब आनन्द से सम्मिलित हुए।

बात छिपी नही रही। जॉन ब्रुक ने मैग से विवाह की बात चलाई। चाची मार्च ने सुना, तो नाराज़ हो गई, मैग को धमकी दी कि वे उसे अलग कर देगी, यह शादी हो गई तो उसे कुछ भी नही मिलेगा, लेकिन मैग पीछे नही हटी और उसी बात पर अडी रही। मार्च-परिवार ने इस प्रस्ताव को स्वीकार तो कर लिया, किन्तु तीन वर्ष के लिए टाल दिया।

तीन वर्ष व्यतीत हो गए। मार्च-परिवार की लडकिया बडी हो गई। मैग का ब्रुक से विवाह हो गया। पहले तो कुछ घरेलू सकट आए, किन्तु शीघ्र ही पति-पत्नी ने गिरस्ती जमा ली और आनन्द से रहने लगे।

जो अब साहित्य मे रुचि लेने लगी थी। वह लिखती भी थी। न केवल यह उसके आनन्द का एक साधन था, वरन् इससे उसकी आय भी बढी।

ऐमी की रुचि चित्रकला मे थी। वह बडी सुन्दर स्त्री बन गई थी। चित्र बनाती और समाज मे उसके प्रति लोगो मे दिलचस्पी दिखाई देने लगी।

बैथ ने अपना पुराना स्वास्थ्य फिर कभी नही पाया। सारे परिवार को उसके प्रति सहानुभूति थी। सब जानते थे कि वह अधिक दिन नही जिएगी। इसलिए सब उसे अपना स्नेह देते थे।

मार्च-परिवार की एक परिचित महिला यूरोप जा रही थी। उन्हे एक धार्मिक साथिन की जरूरत थी। जो का विचार था कि उसीको वे इस यात्रा मे सगिनी बनाकर ले जाएगी लेकिन उसके चचल स्वभाव के कारण उन महिला ने उसे न चुनकर, सुन्दरी ऐमी को चुना। इससे जो का हृदय टूक-टूक हो गया।

जो अपनी मार्मी और बैथ के साथ घर ही रह गई और कुमारी ऐमी यूरोप चली गई।

किन्तु अब जो व्याकुल रहती। उसे पता था कि लौरी उससे प्रेम करता था। शायद वह उससे विवाह का भी प्रस्ताव करेगा—जो इससे परिचित थी। किन्तु उसके हृदय मे लौरी के प्रति वही स्नेह था, जो एक बहिन को अपने भाई के प्रति होता है।

इसलिए जो ने अपनी समझदार मा से परामर्श किया और अपने भाग्य की परीक्षा करने वह उससे आज्ञा लेकर न्यूयार्क चली आई। श्रीमती कर्क एक बोर्डिंग हाउस चलाती थी, जहा कई लोगो का प्रबन्ध करना पडता था। उन्हीके यहा जो को गवर्नेस का काम मिल गया।

यद्यपि जो अपनी स्वतन्त्रता चाहती थी, फिर भी पहले उसे परिवार से बिछुडने

का दुख सताने लगा। किन्तु उसके साहित्यिक जीवन ने उसे सात्वना दी। उसकी मित्रता एक जर्मन अध्यापक प्रोफैसर फ्रैडरिख मेयर से हो गई। वह व्यक्ति बडा अच्छा था। उसके सत्सग ने धीरे-धीरे जो के मन से घर की याद दूर कर दी।

शीघ्र ही जो को एक प्रकाशक मिल गया और उसकी कहानिया छपने लगी। जो को इससे बडा भारी सन्तोष प्राप्त हुआ। किन्तु अब जो के घर लौटने का समय आ रहा था और उसने अत्यन्त भारालस हृदय से प्रोफैसर मेयर से विदा ली।

घर पहुचते ही उसने लौरी को पाया, जो बडी उत्सुकता से उसके घर लौटने की प्रतीक्षा कर रहा था। लौरी ने उससे विवाह का प्रस्ताव किया। जो ने अस्वीकार कर दिया, क्योकि वह उसे भाई समझती थी। लौरी की पीडातुर अवस्था ने जो के हृदय को व्याकुल कर दिया। अपनी वेदना को भूलने के लिए लौरी अपने पितामह श्री लॉरेन्स के साथ यूरोप की यात्रा पर चला गया और वही उसकी ऐमी से फिर भेट हुई।

इधर घर मे दुख की घटा और गहरी हो गई। बैथ को धीरे-धीरे यह पता चल गया कि वह अधिक दिनो जीवित नही रह सकेगी। और सचमुच वसन्त आते-आते वह इस ससार से चली गई।

उसके बाद यूरोप से समाचार आया कि लौरी ने अपनी निराशा से अपने को मुक्त कर लिया था और ऐमी से विवाह का प्रस्ताव किया था और शीघ्र ही दोनो परिणय के सूत्र मे बध जाने वाले थे।

जो अब एक सफल लेखिका मानी जाने लगी थी। किन्तु जीवन मे वह अपने को एकाकिनी अनुभव करती। प्रोफैसर मेयर उससे मिलने आया। तब जो ने अनुभव किया कि वह जिस जीवन-सगी की प्रतीक्षा करती थी, वह यही था। शीघ्र ही दोनो का विवाह हो गया और उन्होने लडको के लिए स्कूल खोल डाला।

छोटी-छोटी बच्चिया अब औरते हो गई थी। अब उनके अपने बच्चे थे। वे उन सब बच्चो की देखभाल करते थे जो उनकी देख-रेख मे थे। प्रेम और सज्जनता के जो बीज उन्होने जीवन मे बोए थे, अब उन्हीकी फसल उनके हाथ आ गई थी। वेदनाए जो आई थी, उन्होने उन्हे सवेदना का अक्षय पाठ पढा दिया था।

प्रस्तुत उपन्यास में लडकियो का मानसिक चित्रण किया गया है। दुख से ही मनुष्य में वास्तविक धैर्य का जन्म होता है, यह प्रकट करना इसका ध्येय रहा है। लेखिका ने जीवन के उतार-चढावो को पारिवारिक परिपार्श्व में रखकर देखा है, ताकि साधारण में से ही इस सत्य की पुष्टि हो। इसलिए यह उपन्यास अत्यन्त प्रभावोत्पादक सिद्ध हुआ है।

अभागिन

[टेस ऑफ द ड्यूर्बर्विले[1]]

हार्डी, टामस अग्रेजी उपन्यासकार टॉमस हार्डी का जन्म २ जून, १८४० में इगलेंड में डोरचैस्टर नामक स्थान के निकट हुआ। अधिकतर शिक्षा अपने आप पाई। एक स्थापत्यकार के दफ्तर मे जवानी में काम किया, और फिर स्वतत्र रूप से इमारते बनवाने का काम किया। १८७१ से १८९७ तक आपने कुछ उपन्यास प्रकाशित कराए। उनसे अत्यत ख्याति प्राप्त हुई। १८९७ के बाद आप कविता लिखने मे लग गए। आप डोरचैस्टर में ही रहते थे और ११ जनवरी, १९२८ को वही आपका देहात हुआ। हार्डी के उपन्यासों को आचलिक कहा जा सकता है। आपके उपन्यासों में निराशा मिलता है। आप यह मानते थे कि मनुष्य का जीवन कुछ विशेष घटनाओं के मोड से बदल जाया करता है। टेस ऑफ द ड्यर्र्बिले (अभागिन) पहली बार १८९१ में प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास अपनी तीक्ष्ण मार्मिकता के कारण अत्यन विख्यात है।

मई का सुहावना महीना था। शाम हो चुकी थी। जैक दर्बेफील्ड अपने घर जा रहा था। वह एक अधेड आदमी था और उसका निवास मार्लेट ग्राम मे था। वह एक झोपडे मे रहता था। उसका परिवार काफी बडा था। गुजर-बसर काफी मुश्किल से हो रही थी। अडोस-पडोस मे वह तरह-तरह के काम करता था और अपनी रोजी कमाता था।

आज वह कुछ शराब पी आया था। रास्ते मे उसे दर्बेफील्ड का पादरी मिला। जैक को यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि पादरी ने उसे प्रणाम किया। जैक जैसे मामूली गरीब आदमी को गाव का इज्जतदार पादरी प्रणाम करे, यह बात क्या कम आश्चर्य की थी ?

पादरी ट्रिंघम को पुरानी गाथाओ की खोज करने का शौक था। ब्लैकपूर की उपजाऊ घाटी की कितनी ही कहानिया वह इकट्ठी किया करता था। उसने जैक को 'सर जॉन' कहकर पुकारा।

धीरे-धीरे पादरी ने बताया कि वह ड्यूर्बर्विले के प्राचीन राजकुल का वशज था, विलियम के समय के, जो कि विख्यात विजेता था, एक नौर्मन सामत के वश मे उसके गौरवमय पूर्वजो का उल्लेख था।

जैक इस बात से अत्यन्त विचलित और प्रभावित हो उठा। उसमे एक अजीब गर्व भर गया। परिवार ने सुना तो उसमे भी आशा का सा सचार हुआ।

---

१ Tess of the D'urbervilles (Thomas Hardy)

अगले दिन, जैक की पत्नी को ड्यूर्बविले नामक एक परिवार का स्मरण हो आया, जोकि निकट ही ट्रैंट्रिज नामक स्थान मे बसा हुआ था। जैक की पत्नी ने तुरन्त यह जान लिया कि वह परिवार उसके पति से सम्बन्धित था। उसने अपनी बडी बेटी सुदरी टेस को वहा भेजना निश्चित किया। हो सकता था कि वह परिवार अपने सम्बन्धो को याद करे और इन गरीबो की कुछ मदद करे।

परन्तु इस परिवार ने तो ड्यूर्बविले नाम वैसे ही रख लिया था, ताकि उनको कुछ सहूलियत हो जाए। इन लोगो का जैक मे किसी प्रकार का भी रक्त-सम्बन्ध नही था। टेस को जाना पडा। घर की हालत खराब थी ही। अगले दिन वह चेज जिले मे श्रीमती ड्यूर्बविले के घर पहुची। बहुत विशाल भवन था। बाहर हरे मैदान पर ही उसे एक युवक मिला, जिसने अपना नाम ऐलैक ड्यूर्बविले बताया। ऐलैक ने टेस का सौन्दर्य देखा तो वह तुरन्त उससे आकर्षित हो गया। उसने उससे कई प्रश्न पूछे, किन्तु उसे अपनी माता के पास नही ले गया।

दर्बेफील्ड-परिवार मे कुछ ही समय बाद एक पत्र आया, जिसमे टेस को नौकरी पर रखने की सूचना थी। काम यह था कि यह श्रीमती ड्यूर्बविले की फाख्ताओ की देख-रेख करे। पत्र मे लिखा था कि टेस तैयार हो जाए। एक गाडी भेज दी जाएगी, जिसमे वह अपना सामान रख लाए।

टेस तैयार हो गई। जिस दिन जाने का समय आया, स्वय ऐलैक अपनी अच्छी गाडी हाक ले आया जिसमे एक उम्दा घोडी जुती थी। अपने घर ले जाते समय उसने टेस को छेडा, क्योकि गाडी जब पहाडी से उतरती थी तो टेस भयभीत हो जाती थी। वह हसता रहा।

वहा पहुचकर टेस को पता चला कि श्रीमती ड्यूर्बविले अधी थी। वह उनके सामने बहुत कम ले जाई जाती। टेस का काम बहुत हल्का था। शनिवारो को वह बाकी नौकरो के साथ बाजार मे खरीद-फरोख्त करने चली जाती या नृत्यो मे भाग लेती।

एक शनिवार को जब वे लौटे तो और दिनो की अपेक्षा अधिक देर हो चुकी थी। औरतो मे चख-चख चल पडी, एक अपना गुस्सा टेस पर उतारने लगी। उसी समय ऐलैक घोडे पर सवार उधर से निकला। उसने टेस को घोडे पर चलने का निमत्रण दिया। टेस प्रसन्नता से उसके साथ चली आई।

पहले की भाति उसने टेस से प्रेम प्राप्त करने की चेष्टा की। टेस कुछ घबरा गई। वह थक भी गई थी। उत्तर ठीक से नही दे सकी। वह चलते-चलते मोड से आगे निकल आया था। अब दिशाज्ञान के लिए उसे नीचे उतरना पडा। टेस भी उतर पडी। वह इतनी थक गई थी कि उसकी आखे झपक गई और वही पथ पर सो गई। ऐलैक को अपनी वासना पूर्ण करने का अवसर मिल गया।

ट्रैन्ट्रिज मे टेस को आए चार महीने हो चुके थे। अक्तूबर का महीना था। टेस अपनी डलिया एक हाथ मे लटकाए, दूसरे मे अपने सामान का बडल लिए अपने गाव मार्लट लौट चली। ऐलैक फिर अपनी गाड़ी लिए उसे रोकने आया, लेकिन वह उसे मना नही सका। उसने उसे कभी प्यार नही किया था, न वह उसे कभी प्यार कर सकती थी।

जब वह घर पहुची, उसने सारी दु ख-भरी कहानी अपनी मा को सुना दी। वह ऐलैक से डरती थी, लेकिन वह विवश थी, इसलिए उसने ऐलैक के सामने समर्पण कर दिया था, क्योकि वह उसके क्षणिक सद्व्यवहार से भ्रम मे पड गई थी। किंतु उसे उससे घृणा थी, इसलिए वह अब घर लौट आई थी।

एक वर्ष बीत गया। उसी दुर्घटना के फलस्वरूप टेस ने एक शिशु को जन्म दिया। शिशु मे निबलता अधिक थी, उसका स्वास्थ्य भी अच्छा नही था। परतु टेस चाहती थी कि उसका बप्तिस्मा हो जाए। उसी रात शिशु की हालत बहुत बिगड गई और टेस आशकाओ से ग्रस्त होकर उसे लेकर उसी समय पादरी के पास बप्तिस्मा कराने ले गई। प्रात होने से पूर्व ही शिशु का देहात हो गया। पादरी ने उसकी अतिम क्रिया ईसाई धर्म के अनुरूप करने से इकार कर दिया।

इसके बाद टेस ने मार्लट ग्राम छोड देने का निश्चय किया, लेकिन मई तक उसे सुयोग प्राप्त नही हो सका। अत मे उसे एक पत्र मिला जिसके द्वारा उसे ज्ञात हुआ कि दक्षिण की ओर कई मील आगे एक डेरी थी, जिसमे एक ग्वालिन की जरूरत थी। टैल्बोथेज़ डेरी का आकर्षण टेस को वहा खीच ले गया।

अब टेस के लिए नई जिंदगी शुरू हुई। वह खुश थी। डेरी का मुखिया क्रिक था। उसकी पत्नी टेस से प्रसन्न थी और उसीकी उम्र की और भी लडकिया वहा ग्वालिने थी। वे सब भी दोस्ताना व्यवहार से काम लेती थी। टेस गायो की सेवा मे काफी कुशल हो गई। धीरे-धीरे पुरानी कष्टकर स्मृतिया उसके मस्तिष्क से दूर हो चली।

निकट ही सम्मिन्स्टर नामक स्थान था। वहा क्लेयर नामक एक बहुत ही श्रद्धालु और भक्त प्रवृत्ति का पादरी था। उसका पुत्र एन्जिल क्लेयर कृषि का विद्यार्थी था। आजकल वह टैल्बोथेज मे रहता था। उसके पिता के विचार ऐसे थे कि उसकी कट्टरता न अन्य पादरियो को भाती थी, न उसके पुत्र ही उससे सहमत होते थे। एन्जिल को उच्चवर्ग से कुछ घृणा थी, इसीलिए वह गाव मे रहता था। वह कुछ दिन अध्ययन करने के बाद, स्वय खेती करना चाहता था, अपना कार्य बनाना चाहता था।

वह टेस के प्रति आकर्षित तो हुआ, किंतु उस आकर्षण को प्रेम के रूप मे परिवर्तित होने मे काफी समय लग गया। टेस के साथ की तीन अन्य ग्वालिने भी एन्जिल के प्रति आकर्षित थी। किंतु एन्जिल का व्यवहार टेस के प्रति पक्षपात और सहृदयता का होने लगा और स्वय टेस ही नही, बाकी ग्वालिने भी इसे जान गई। किंतु वे लडकिया अच्छी थी, और उनमे से किसीमे भी इस वजह से जलन पैदा नही हुई। एन्जिल ने अत मे टेस के समुख अपना हृदय खोल दिया। वह टेस से विवाह करना चाहता था। यद्यपि टेस उससे स्वय बहुत प्रेम करने लगी थी, किंतु विवाह के लिए वह तुरत ही तैयार नही हुई।

इस बीच एन्जिल अपने मात-पिता को अपने विचारो से अवगत कराने घर गया। यद्यपि माता-पिता उसे किसी अच्छे कुल की कन्या से विवाहित देखना चाहते थे, परन्तु फिर भी उन्होने अस्वीकार नही किया और उन्होने उसे ऐसा करने की आज्ञा दे दी।

अत मे टेस ने उसकी प्रार्थनाओ से झुककर विवाह के प्रस्ताव को स्वीकार कर

लिया। वह उसे अपने अतीत की सब घटनाए पहले बता देना चाहती थी और जब उसने अपने पिता के ड्यूबर्विले कुल की बात बताई तो एन्जिल ने उसे समझा नही, और उसीको उसकी 'गुप्त' बात समझकर टाल दिया, उसपर अधिक ध्यान नही दिया।

नये साल के एक दिन पहले शादी होना तय हुआ। टैल्बोथेज मे आए टेस को सात महीने हो चुके थे। एन्जिल ने टेस को अपने साथ ले जाना निश्चित किया क्योकि वह निकट बसी मिलो का अध्ययन करना चाहता था। वह एक फॉर्म खोलने वाला था। शादी के बाद, जिसमे वर-वधू दोनो के परिवार सम्मिलित नही हुए, पति-पत्नी वैल्ब्रिज की ओर गाडी मे बैठकर चले गए। वहा एन्जिल ने अपने निवास का प्रबध किया था।

शादी की रात टेस ने अपनी बात सुना दी। ऐलैक ड्यूर्बर्विले से हुए सबधो के बारे मे भी बता दिया। पहले तो एन्जिल विश्वास ही नही कर सका। वह इस विषय मे जितना अधिक सोचता, उतना ही वह टेस से दूर खिचता जाता। अब उनमे विवाद होने लगे और अत मे एन्जिल ने घोषित कर दिया कि वह उसके साथ नही रह सकता था। शादी के चौथे दिन दोनो मे विच्छेद हो गया। एन्जिल अपने भविष्य की चिता मे लगा और टेस अपने परिवार मे लौट आई। एन्जिल कुछ ही दिन बाद ब्राजील चला गया। जहा नये-नये बसनेवालो को राज्य की ओर से भूमि तथा सुविधाए दी जा रही थी।

आठ महीने बीत गए। इस दौरान टेस ने थोडे-थोडे दिनो के लिए कई डेरियो मे काम किया। अब वह फिर काम की खोज मे निकली। टैल्बोथेज की एक पुरानी दोस्त ग्वालिन मेरियन ने उसे फ्लिट्कूम्बऐस के फार्म मे नौकरी मिलने की सभावना से सूचित किया। टेस वही चल पडी। अब की बार खेतो मे उसे कडी मेहनत का काम मिला।

रविवार को अपने पति के माता-पिता से मिलने वह एम्मिन्स्टर चल पडी। वहा जाकर उसे पता चला कि सब लोग गिरजे गए हुए थे। एन्जिल के भाइयो की बातचीत सुनने के बाद वहा जाने की हिम्मत उसमे बाकी नही रही। जब वह फ्लिट्कूम्बऐस फार्म की ओर लौट रही थी तो रास्ते मे उसने एक घूमते-फिरते उपदेशक को देखा। वह उसके भाषण को सुनने लगी। उसे आश्चर्य हुआ कि वह स्वय ऐलैक ड्यूर्बर्विले था।

ऐलैक उसके पीछे चल पडा और उसने उससे बाते करने की प्रार्थना की। उसने बताया कि वह पादरी क्लेयर का शिष्य हो गया था। उसीके उपदेशो ने उसे बदल दिया था। अब वह अक्सर टेस से मिलने आने लगा। एक दिन वह फिर पुराने ठाठ से फार्म मे आ पहुचा। उसने बताया कि टेस के प्रभाव के कारण उसने उपदेश देना बद कर देना निश्चित किया था। अब वह टेस को पत्नी रूप मे पुन प्राप्त करना चाहता था। और उसने वादा किया कि वह अपने परिवार के प्रति पूर्णतया अनुरक्त बनकर रहेगा।

टेस को अब उससे पहले से भी अधिक घृणा थी। उसके पिता की मृत्यु हो चुकी थी और सारा परिवार बहुत बुरी हालत मे था। उसे एन्जिल की भी कोई सूचना नही मिली थी। परिवार के लिए कुछ करना अब टेस के लिए नितात आवश्यक हो गया था। ऐलैक निरतर ही एन्जिल की खिल्ली उडाया करता था। टेस ने एन्जिल को एक लबा भावपूर्ण पत्र लिखा। क्लेयर-परिवार ने उस पत्र को ब्राज़ील भिजवा दिया।

जब एन्जिल ब्राज़ील से लौटकर घर आया, टेस का पत्र उसे मिला। टेस की किसी

ुरानी मित्र का पत्र भी उसे प्राप्त हुआ जिसमे लिखा था कि टेस की हालत बहुत नाजुक ी। एन्जिल ने टेस की माता की मदद से उसे ढढना प्रारभ किया। वह सैडबर्न मे मिली, कंतु उसीके यहा ऐलैक भी ठहरा हुआ था।

टेस ने कहा कि अब बहुत देर हो गई थी।

किन्तु एक घटे बाद ही सैन्डबन के बाहर पथ के किनारे एन्जिल को टेस मिली, ाह शहर से भाग रही थी। उसने बताया कि एन्जिल के चले आने के बाद उसने ऐलैक ो छुरे से गोद डाला था।

दो दिन तक वे खेतो मे छिपते रहे और एक निर्जन खडहर मे अपना समय उन्होने बेताया। एन्जिल के साथ बिताए ये क्षण टेस को बहुत ही अच्छे लगे। पाचवे दिन साय- ाल के समय, जब वे स्टोनहैन्ज तक ही पहुचे थे कि पुलिस ने उन्हे घेर लिया।

जुलाई के गर्म दिन थे। विनटोन सैस्टर के पुराने शहर की जेल मे फासी का इन्तज़ाम हो रहा था। दूर एक पहाडी से एन्जिल क्लेयर ने देखा कि एक झडा उठा और न्याय' का हाथ चल गया।

अमरो के अध्यक्ष परमात्मा ने इसके बाद टेस के साथ अपना खिलवाड सदा के लिए बन्द कर दिया।

प्रस्तुत उपन्यास में मनुष्य की निरीहता उभरकर ऊपर आ गई है। परमात्मा उसे चाहे जैसे खिलाता है, और मनुष्य भाग्य के हाथो नाचता है। हार्डी के उप- न्यासो में यह भावना सर्वत्र मिलती है कि मनुष्य बडे ही निर्दय भगवान के हाथों सताया जाता है। अपने ग्रामीण जीवन की जानकारी, मानव-स्वभाव के गहरे चित्रणो में हार्डी एक महान कलाकार है, इसमें कोई भी सन्देह नहीं।

सेल्मा लागरलोफ :

रूप की घुटन

[गौस्टा बर्लिग[1]]

लागरलोफ, सेल्मा स्वीडिश लेखिका सेल्मा लागरलोफ का जन्म २० नवम्बर, १८५८ को स्वीडन मे मार्बाका में हुआ। वामलैंड प्रात, अपनी जन्मभूमि का वर्णन आपने अपनी पुस्तकों मे बहुत ही अच्छी तरह किया है। लैण्ड्सक्राना में आप अध्यापिका हो गई और अपने लेखन से कमाने योग्य होने तक (१८६५ तक) पढाती रही। प्रस्तुत उपन्यास के कुछ अशो पर ही आपको साहित्यिक प्रतियोगिता में पुरस्कार मिला। आप अनेक भाषाओं का ज्ञान रखती थी। आपने इटली, पैलैं-स्टाइन और पूव की भी यात्रा की, किंतु आपने अपने देश का ही सबसे अच्छा चित्रण किया। १६०६ में आपको साहित्य के नोबेल पुरस्कार मिला। १६१४ में स्वीडिश अकादमी की प्रथम महिला सदस्य बनी। १६ मार्च, १६४० को आपका देहात हुआ।

'गौस्टा बर्लिग (रूप की घुटन) में मनुष्य को सुख की तृष्णा और वास्तविक आनद के सघष को चित्रित किया गया है। जनजीवन और विलासी शोषकों का भी चित्रण है। 'गौस्टा बर्लिंग' एक पाप पुण्य के बीच भटकता प्राणी है, जिसका विश्वास, श्रद्धा और ममता ही उद्धार करते ह। अपने मानसिक विश्लेषणों के कारण यह उपन्यास बहुत बडा महत्त्व रखता है।

स्वीडन मे वार्मलैंड का नाम अपनी लोहे की खानो के कारण विख्यात था। वैसे यह धरती ऊसर थी। पीढी दर पीढी इसका यही वर्णन वहा चलता चला आ रहा है। किसी समय सचमुच यहा लोहा निकाला जाता था और उससे कुछ लोग अपार धन पैदा करते थे। उन धनिको के यहा अनेक आश्रित रहते थे। योद्धा लोग आश्रय खोजने आते और आनन्द से वहा जीवन बिताते थे। वे अपने आश्रयदाताओ का मनोरजन करते, उन्हे हसाते, और अडिग मेहमान बनकर खाते-पीते। गौस्टा बर्लिंग भी ऐसा ही एक व्यक्ति था। सौभाग्य की खोज और आनन्द की तृष्णा ही ऐसे लोगो को आश्रित बना देती।

पश्चिमी वार्मलैण्ड के एक गिरजे मे गौस्टा पादरी बनकर आया था। वह प्रतिभावान था, भगवान मे उसका अटूट विश्वास था, सौन्दर्य मे वह अतुलनीय था, किन्तु इस ऊसर प्रान्त मे जीवन उसे एक भार लगता और पादरी होने मे उसे कोई भी आराम नही था। परिणामस्वरूप वह शराब पीने लगा। यह आदत इतनी बढ गई कि

---

१ Gosta Berlıng (Selma Lagarlof)

वह गिरजे मे भी उपदेश देते समय पिए रहता। अन्त मे खबर ऊपर पहुची और बडा पादरी उसे निकालने आ पहुचा। किन्तु अचानक ही गौस्टा की भक्ति उमड पडी और उसने उस दिन इतना अच्छा उपदेश दिया कि उपस्थित समुदाय ने उसे क्षमा कर दिया। गौस्टा को लगा कि उसके पाप अब नष्ट हो गए थे। किन्तु दुर्भाग्य से उसके एक नशेबाज़ साथी ने बडे पादरी की हत्या कर डालने की धमकी दी। गौस्टा अपने-आप को इसके फलस्वरूप बडे पादरी के क्रोध से बचा नही सका।

गौस्टा के सामने कोई पथ नही बचा। उसने आत्महत्या कर लेने का निर्णय किया। किन्तु यहा भी उसकी इच्छा पूरी नही हुई। ऐकैबाई मे एक दृढ हृदय और अत्यन्त धनवाली स्त्री थी। वह एक मेजर की पत्नी थी। उसने गौस्टा को आत्महत्या करने से बचा लिया। उसने गौस्टा को अपनी दु खद कथा सुनाई कि जब वह लडकी ही थी, उसके माता-पिता ने जबर्दस्ती उसकी शादी ऐसे आदमी से कर दी थी, जिससे वह प्रेम नही करती थी। कुछ समय के उपरात उसका पुराना प्रेमी लौट आया। वह धनी हो गया था। उसने उसकी मदद की और उसके पति को भी सहारा दिया। परन्तु जब महिला की माता को ज्ञात हुआ कि वह अपने प्रेमी के प्रति दुराचार मे रत थी, तो उसने इस अपमान के लिए उसको शाप दिया। धनी प्रेमी मर गया और अपनी वसीयत मे ऐकैबाई की सारी जायदाद मेजर और उसकी पत्नी के लिए छोड गया।

गौस्टा इसी महिला के यहा आश्रित हो गया। वहा लगभग एक दर्जन व्यक्ति और भी इसी प्रकार पल रहे थे।

किन्तु गौस्टा को कही भी प्रसन्नता नही मिली। काउटैस ऐबा डोना एक पवित्र और सुन्दरी युवती थी। गौस्टा उसे पढाने लगा। कुछ दिनो मे ही दोनो मे प्रेम हो गया। किन्तु जब उस श्रद्धालु युवती को यह पता चला कि गौस्टा तो पदच्युत पादरी था, तो उसको भ्रष्ट जानकर उसे बहुत दु ख हुआ। उससे पीछा छुडाने के लिए वह बीमारी मे रहकर भी बिना इलाज किए ही चुप रही, ताकि उसकी मृत्यु हो जाए और यह प्रेम-काड सदा के लिए समाप्त हो जाए। गौस्टा प्रतिभाशाली ही नही था, अब वह विख्यात भी हो गया था। वह सारे आश्रितो का नेता बन चुका था। उसके जीवन का एक ध्येय था—सुख पाना। इस मृत्यु ने भी उसे चैन नही लेने दिया।

वृद्ध सिन्तराम कुरूप था। वह लोहे की खानो का एक मुखिया था। कहा जाता था कि उसकी शैतान से साठ-गाठ थी।

सिन्तराम ने आश्रितो को बताया कि वे मेजर की पत्नी के द्वारा शैतान के हाथो बेचे जा चुके थे। गौस्टा ने शैतान से यह तय किया कि आश्रितो को ऐकैबाई पर एक वर्ष शासन करने का अधिकार मिल जाए। यदि उस समय के अन्त मे आश्रित अपने को सच्चरित्र और सज्जन प्रमाणित करें तो शैतान का राज्य ऐकैबाई पर से उठ जाए, अन्यथा वह सबकी आत्माओ का स्वामी बन जाए।

आश्रितो ने यह सुना तो उन्हे मेजर की पत्नी पर बहुत क्रोअ आया कि वह दुतरफा चाल चल रही थी। उन्होने बदला लेने के लिए मेजर को उसकी पत्नी के पुराने पापो की कहानी लिख भेजी। मेजर ने पत्नी को घर से निकाल दिया और ऐकैबाई को

आश्रितो के हाथ मे दे दिया ।

गौस्टा को देखकर स्त्रिया शीघ्र आकर्षित हो जाती थी । सुन्दरी अन्ना त्जानौंक उसके प्रेम मे पड गई । मरिअन्ना सिक्लेयर नामक सुन्दरी पर कई लोग मोहित थे किन्तु इस बहिष्कृत पादरी से प्रेम करने के कारण वह भी अपने पिता के घर से निकाल दी गई । मरिअन्ना को चेचक ने कुरूप बना दिया । तब गौस्टा से अलग होकर वह पिता के यहा लौट गई ।

मेजर की पत्नी ने विक्षोभ से ऐकैबाई मे आग लगाने की चेष्टा की, किन्तु वह पकडी गई । उसे इस अपराध के लिए जेल हो गई । कस्बे के लोगो का मत था कि मेजर की पत्नी का कोई अपराध नही था । उन्होने इसका दोष आश्रितो को दिया ।

आश्रित लोग तरुणी 'काउटैस ऐलिजाबैथ से बहुत ही क्रुद्ध हो उठे । काउटैस सुन्दरी थी, वह बहुत भली थी और उत्फुल्ल रहती थी । वह इतनी भोली-भाली थी कि वह यह भी नही समझती थी कि उसका पति काउट हैड्रिक वास्तव मे-निष्ठुर मूर्ख था, जिसे अपने ऊपर जरूरत से ज्यादा घमड था । काउटैस को लगा कि मेजर की पत्नी को इस दशा मे पहुचाने के लिए गौस्टा ही ज़िम्मेदार था । उसने नृत्य मे उसके साथ नाचने से इन्कार कर दिया । गौस्टा की प्र तहिसा जाग उठी । वह उसे अपनी स्लेज मे बलात् ले गया । किन्तु वह इतनी सुन्दर और मधुर थी, कि गौस्टा उसके सामने पराजित हो गया । वह उसे उसके पति के यहा पहुचा आया । उपस्थित समुदाय को इसपर आश्चर्य हुआ कि गर्वीले काउट ने अपनी पत्नी से, गौस्टा के प्रति किए गए अपमान के लिए, क्षमा-याचना करवाई । काउटैस के इस अपमान से गौस्टा के मन मे सवेदना जागी और वह सचमुच उससे प्रेम करने लगा । अब काउटैस से उसकी मित्रता हो गई । ये सम्बन्ध निरन्तर बढते गए । अन्त मे एक बार ऐलिजाबैथ को गौस्टा के कलुषित अतीत के बारे मे पता चला । उसे गहरा धक्का लगा और उसने गौस्टा से सारे सम्बन्ध विच्छेद करना निश्चित कर लिया । दु ख से गौस्टा विचलित हो गया । और एक खानाबदोश पागल लडकी के पीछे फिरने लगा । जब काउटैस को ज्ञात हुआ कि वह दु ख से पागल-सा होकर उस पगली से विवाह करने की कोशिश कर रहा है, तो वह उसे रोकने चली । नदी ठड के कारण जम गई थी । काउटैस बर्फ पार करके उसे रोकने गई ।

यह खबर मूर्ख काउट के पास भी पहुची । उसने अपनी तरुण पत्नी पर सारा दोष मढ दिया । पवित्र काउटैस इतनी सीधी थी कि गौस्टा के प्रति अपनी ममता मे उसे दोष दिखाई देने लगा और उसने इसे स्वीकार कर लिया । काउट और उसकी निर्दय माता ने कई तरीको से काउटैस का अपमान किया । उसे अनेक कष्ट दिए । तरुणी काउ टैस प्रसन्नता से उन्हे झेलती रही, क्योकि वह स्वय अपने को अपराधिनी समझकर प्रायश्चित्त करना चाहती थी । अन्त मे उसकी शक्ति क्षीण होने लगी । वह गर्भवती थी। उसे अपने भीतर पलते बच्चे की चिन्ता सताने लगी । वह घर से भाग गई और छिपकर एक किसान के यहा रहने लगी । लेकिन जब उसे ज्ञात हुआ कि काउट ने उसके चले जाने से शादी रद्द करवा दी थी, उसने गौस्टा से प्रार्थना की कि वह उससे विवाह कर ले, ताकि उसके होनेवाले बच्चे को एक पिता मिल जाए । गौस्टा ने इसे स्वीकार कर लिया ।

लेकिन कुछ ही दिनो बाद उस शिशु की मृत्यु हो गई। गौस्टा ऐलिज़ाबैथ को प्यार करता था, पर जानता था कि यह विवाह ऐलिजाबैथ का जीवन नष्ट कर देगा।

उन्ही दिनो कैप्टेन लेन्नर्ट जेल से छूटकर आया। वह एक झूठा अपराध लगाकर पकडवा दिया गया था। आश्रितो ने उसे खूब मदिरा पिलाई। कैप्टेन को मदिरापान की आदत नही थी। शीघ्र ही वह नशे मे झूम गया। आश्रितो ने उसी अवस्था में उसे उसके घर भेज दिया। स्त्री ने उसे घर से निकाल दिया। कैप्टेन ने जीवन के शेष दिन गरीबो की मदद करते हुए इधर-उधर घूमते हुए बिताए। अन्त मे एक दिन वह जब असहायो की मदद कर रहा था, एक दगे मे मारा गया।

गाववाले भूख से व्याकुल हो रहे थे। उनकी परेशानिया और गरीबी बढती जा रही थी। आश्रितो की हरकतो से वे चिढ गए थे। उन्होने ऐकैबाई पर हमला करने की कोशिश की। किन्तु ऐलिजाबैथ की विनम्रता और गौस्टा की वक्तृताओ ने उन्होने उस गलत रास्ते पर चलने से रोक दिया।

अपनी पत्नी से मुक्ति पाने के लिए गौस्टा ने आत्महत्या करने की कोशिश की, किन्तु इसमे बाधा पड गई। अन्त मे ऐलिजाबैथ ने उसे यह समझाने मे सफलता प्राप्त की कि आत्महत्या मे उसे शाति नही मिल सकती थी। उसे अपनी विलास-भावना को छोडकर ही सतोष मिल सकता था और उसीसे वह ऐलिज़ाबैथ को भी सुखी कर सकता था।

दुष्ट सिन्तराम का व्यापार बिगड गया और वह बरबाद हो गया। मेजर की पत्नी की अपनी माता से लडाई दूर हो गई, जिसने उसे शाप दिया था। वह मरने के लिए ऐकैबाई ही लौट आई। गौस्टा और ऐलिज़ाबैथ ने अपने जीवन को फिर से शुरू करने की शक्ति जुटाई और वे लोकसेवा मे तन्मय होकर लग गए। उन्हे दूसरो की सेवा मे ही मन की शाति प्राप्त हुई।

प्रस्तुत उपन्यास में विलास और वैभव से ऊपर प्रेम को स्थान दिया गया है। नारी की सहनशीलता इसमें भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। लेखिका ने गौस्टा के रूप में यूरोप की समग्र अभिलाषाओ और तृष्णाओ को समेट लेने की चेष्टा की हैं। उपन्यास जीवन के विविध रगो को हमारे सामने फैला देता है। मानसिक गहराइयों की अनुभूति हमें बहुधा इसमें दिखाई देती है।

जेम्स मैथ्यू बेरी

गांव

[लिटिल मिनिस्टर[1]]

बेरी, जेम्स मैथ्यू अग्रेजी उपन्यासकार जेम्स मैथ्यू बेरी का जन्म स्कॉटलैंड के किरीम्यूर नामक स्थान में ९ मई, १८६० को हुआ। स्काटिश स्कूलों में शिक्षा मिली और १८८२ में एडिन्बरा विश्वविद्यालय से ग्रैज्युएट हुए। स्वाभाविक रुझान पत्रकारिता की ओर था। कुछ समय तक ऐडिन्बरा की पत्र-पत्रिकाओं में काम भी किया। शीघ्र ही स्कॉटलैंड के जीवन और विशेषकर देहाती रहन सहन से परिचय अच्छा हो गया। आपने रेखाचित्र लिखे, यश मिलने लगा और 'लिटिल मिनिस्टर' (गाव) के १८९१ में प्रकाशन होने पर सफलता स्थायी बन गई। १८९७ मे इगलैंड आकर नाटक लिखना प्रारभ किया। सन् १९१३ में बैरन का पद प्राप्त हुआ। १९ जून, १९३७ को लदन में देहात हुआ।

'लिटिल मिनिस्टर' (गाव) में ग्रामीण जीवन का बहुत अच्छा चित्रण हुआ है।

गैविन डिशार्ट केवल २१ वर्ष का था। न वह बहुत लम्बा था, न दीर्घकाय ही। बल्कि वह अपने आप को जितना बडा समझना चाहता था, वह उतना भी नही लगता था। लडकपन जैसे उसने अभी तक पार नही किया, यही विचार उसे देखकर पहले सबके मन मे अपना घर कर लेता था। वह अब स्कॉटलैंड के थ्रम्स नामक ग्राम के ऑल्ड लिक्ट्स नाम के गिरजे मे छोटा पादरी होकर आया था।

उसकी स्नेहमयी माता मार्गरेट बडी विनम्र और अच्छे स्वभाव की थी। उसने अपने पुत्र को शिक्षा दिलाने के लिए बडे-बडे कष्ट सहर्ष स्वीकार किए थे, गरीबी को उसने अपने-आप झेला था। जिस पादरी-घर मे वे अब रहते थे, उनके रहने को काफी था। गैविन को सालाना अस्सी पाउण्ड मिलते थे। इतनी आय मे वे अपने को समृद्ध समझते थे। मा और पुत्र, दोनो की ही दृष्टि मे गिरजे का पादरी बन जाना, एक बहुत बडी बात थी। उन्नति की जो चरम सीमा किसी मनुष्य के लिए प्राप्तव्य थी, वह मानो प्राप्त की जा चुकी थी। थ्रम्स ग्राम के लोग गरीब थे। वे मेहनती थे, और वैसे उनमे श्रद्धा का भी अभाव नही था। अधिकाश लोग बुनकर थे। उनका जीवन घोर परिश्रम और सघर्षों मे व्यतीत होता था। उनके आमोद-प्रमोद सरल तथा आडम्बरहीन थे। उनके जीवन मे नैतिकता को विशेष महत्त्व दिया जाता था। किन्तु जब उनकी सुरक्षा और सत्ता सकट मे पड जाती, तब वे उन्नद्ध-से हो उठते।

---

[1] Little Minister (James Matthew Barrie)

कुछ ही दिन हुए, उन्होने एक दगा कर दिया था। उस दगे के सरगना नेताओ की पुलिस अभी तक तलाश कर रही थी।

छोटा पादरी आया तो गाव मे काफी उत्साह-सा छा गया। गैविन की ईमानदारी और भलमनसाहत का काफी अच्छा प्रभाव पडा। ग्रामीण तो उसके सद्व्यवहार पर मुग्ध हो गए। जब वह गिरजे मे वेदी पर खडा होकर सुन्दर भाषण देता, तो उनके मन प्रफुल्लित हो जाते। अपने गिरजे के प्रभाव मे रहनेवाली जनता के प्रति उसके मन मे जो स्नेह-भाव था, वह किसीसे छिपा नही था, और उसके इस ममत्व ने सबके मन मे उसके प्रति एक प्रेमभाव जगा दिया था।

गैविन के आगमन से स्कूल-मास्टर श्री ओगिलवी पर गहरा प्रभाव पडा। उन्होने कभी उसकी माता मागरेट से प्रेम किया था, और आज भी उसकी ऊष्मा जागरित थी। ओगिलवी चुपचाप मा और बेटे को देखकर प्रसन्न हुआ करता। छोटा पादरी इस रहस्य से नितान्त अनभिज्ञ था।

एक दिन इतवार को सब गिरजे मे आकर एकत्र हुए। उसी समय शराब के नशे मे चूर, शान्ति के दिवस मे भी उत्पात और कोलाहल करता हुआ रौब डो नामक भीमकाय व्यक्ति घुस आया। वह गुडा था और सब उसके भय से कापते थे। कोई भी उसे रोकने का साहस नही कर सका। छोटा पादरी तनिक भी विचलित नही हुआ। सबने चौककर देखा कि छोटा पादरी आगे बढा और उसने शराबी को चुप कर दिया। अपनी विनम्रता से उसने दयालु स्वभाव के कारण उस बर्बर रौब डो की निष्ठुरता पर भी विजय प्राप्त कर ली। रौब डो उसका मित्र बन गया। इस घटना ने गैविन का प्रभाव कही अधिक बढा दिया।

कुछ ही दिन शान्ति से व्यतीत हुए थे कि गैविन के सामने एक समस्या उपस्थित हो गई। वह अपने काम मे लगा रहता, अपने कर्तव्य-पालन मे सुख अनुभव करता और माता को तृप्त देखकर सतुष्ट रहता। गिरजे मे आनेवालो का सद्व्यवहार उसे प्रसन्नता प्रदान करता। परन्तु समस्या आई रात के अधियारे की घिरती छायाओ के साथ।

राज्यसेना ने थ्रम्स ग्राम को घेर लिया था और वह हाल मे हो चुके विद्रोह के नेताओ को गिरफ्तार करना चाहती थी। सैनिको की यह योजना ग्रामीणो को पहले ही से ज्ञात हो गई। उन्होने इशारे बाध लिए। समय होते ही एक शृगी बज उठी और बुनकर चौकन्ने हो गए। वे सन्नद्ध हो चले। गैविन दुविधा मे फस गया। कर्तव्य कहता था कि वह विद्रोहियो को गिरफ्तार करा दे, या उन्हे आत्मसमर्पण करने की सम्मति दे। किन्तु अपराधियो के प्रति उसके हृदय मे सहानुभूति थी और वह गैविन को प्रेरित कर रही थी कि वह उन्हे भाग जाने की सलाह दे।

उसके गिरजे के अनुयायियो ने हथियार जमा कर रखे थे। वह उन्हे शस्त्र डाल देने का उपदेश देने लगा। किन्तु अचानक ही एक स्त्री का स्वर गूजकर उनको अपने अधिकारो के लिए लडने को उत्तेजित करता हुआ ललकारने लगा। उत्तेजना फैलानेवाली एक अत्यन्त सुन्दर कजर लडकी थी।

गैविन का प्रभाव खडित हो गया। लोगो ने उसकी आज्ञा का उल्लघन कर दिया

और उस लडकी के वचनो पर चलने लगे। जब तक सेना के लोग आए, तब तक कई पुरुष सुरक्षित रूप से छिप चुके थे। स्त्रिया सैनिको पर पत्थर फेकती और धूल उडाकर अपने को छिपाती हुई भाग रही थी।

कजर लडकी को इस बात का बडा खेद हो रहा था कि वह अचूक निशाना लगाना नही जानती थी। उसने गैविन के हाथ मे जबर्दस्ती ही एक पत्थर रख दिया और सेना के कप्तान की ओर सकेत करके वह फुसफुसाई, "उसे मारो !"

न जाने क्यो गैविन कुछ भी नही कह सका। उसपर जैसे जादू हो गया था। उसने निशाना साधा और पत्थर घुमाकर कप्तान के सिर पर मारा। भगदड बढ चली। घेरा सकरा होने लगा। कजर लडकी चतुराई से सन्तरियो के बीच मे घुस गई।

सन्तरी ने टोका, "तू कौन है ?"

कजर लडकी ने कहा, "मै छोटे पादरी की पत्नी हू।"

सन्तरी ने उसे निकल जाने दिया।

जब गैविन को यह बात पता चली, उसको विक्षोभ और क्रोध ने व्याकुल कर दिया। उसे कजर लडकी पर ही नही, अपने ऊपर भी अब ग्लानि तथा रोष हो रहे थे। गैविन अब स्त्री-विरुद्ध हो गया और उसने नारी के विरुद्ध कठोर उपदेश देना प्रारम्भ किया। किन्तु इतना सब होने पर भी वह उस कजर लडकी की अपरूप सुन्दरता को नही भुला सका।

कजर लडकी विलुप्त नही हुई। जब वृद्धा और गरीब नैनी वैब्सटर नामक स्त्री को, उसकी इच्छा के विरुद्ध ही, पकडकर दरिद्रालय मे ले जाया जाने लगा, तो वह लडकी स्वय प्रकट हो गई और उसने कहा, "इसे कहा ले जाते हो ? मै इसका भरण-पोषण करने की प्रतिज्ञा करती हू।"

एक कजर लडकी के पास धन भी हो सकता है, इसपर सबने ही आश्चर्य किया। किन्तु उसकी ईमानदारी पर अविश्वास करने का कोई कारण भी दिखाई नही देता था। सुननेवालो ने कहा, "कौन ? बैबी ? नैनी को सहायता देगी ?"

गैविन को देखकर बैबी ने कहा, "मै नैनी के लिए पाच पाउण्ड का नोट दूगी। क्या आप मुझसे जगल मे मिलेगे ?"

गैविन 'न' नही कर सका।

बैबी ने सचमुच अपने वचन का पालन किया। गैविन ने देखा, वह मस्त थी, मनमौजी थी। उद्धत और चचल उस कजर लडकी ने छोटे पादरी पर व्यग्य कसा, "कैसी पराधीन वृत्ति है आपकी, जिसमे आपकी कुछ भी नही चलती ?"

गविन क्रोध से झल्ला उठा। दोनो मे झगडा हो गया, परन्तु गैविन ने अनुभव किया कि उसे मन मे उस लडकी पर तनिक भी क्रोध नही था। तो क्या वह उसके प्रति आकर्षित था ?

साझ डूब गई। अधेरा घिर आया। मनमौजी बैबी हाथ मे लालटैन झुलाती, गिरजे की भूमि पर स्थित गैविन के घर उसे डराने आ पहुची। गैवित उसे डाटने-फटकारने को बाहर निकला, किन्तु अकस्मात् ही उसे वह चूम उठा। उस क्षण बैबी ने भी अनुभव किया

कि वह उसे प्यार करती थी ।

गैविन अपने मन मे जानता था कि यदि वह एक कजर लडकी से विवाह कर लेगा तो उसका भविष्य अधेरा हो जाएगा, क्योकि ग्रामीणो की नैतिकता रूढिपरक थी और इस काय के परिणामस्वरूप वे उसका सम्मान करना छोड देते। किन्तु अब वह जैसे विवश हो गया था। उसने बेंबी के सामने अपना हृदय खोल दिया। बैबी सुनती रही। पर उसने धीरे से कहा "मै नही चाहती कि मेरे कारण मेरे प्रियतम का अनिष्ट हो, उसका सम्मान घटे। मै तुम्हारे पतन और विनाश का कारण नही बन सकती।"

वह चली गई। काफी दिनो तक गैविन को यह पता ही न चल सका कि आखिर वह कहा खो गई थी।

एक बार स्कूल-मास्टर श्री ओगिलवी बैबी को मिले। इमी बीच अफवाह उड गई कि पिछले दिनो मदिरालय मे कोई जबरदस्त झगडा हो गया और वहा शान्ति स्थापित कराते समय गैविन मार डाला गया। बबी को नैनी वैब्सटर की कुटिया मे छोडकर ओगिलवी इस बात की सचाई का पता लगाने निकले। जब गैविन से उनकी भेट हुई, तो उन्होने उसे स्वस्थ और सुरक्षित पाया। उधर बैबी की व्याकुलता वे देख चुके थे, इधर गैविन की वेदना देखी, तो उनके हृदय मे करुणा जाग उठी। वे अपने-आपको रोकने मे असमर्थ हो गए और उन्होने गैविन को नैनी का पता बता दिया।

गैविन और बैबी बडे स्नेह से मिले। दोनो के आनन्द का पार न रहा।

तब बैबी ने अपने विषय मे गैविन को सब कुछ बताया लॉड रिट्रल ने उसको पाला था। पहाडी पर बने किले के स्वामी थे। वर्षो पहले उन्हे बैबी एक बच्ची के रूप मे मिली थी। उन्होने उसे बडा किया था। पर बाद मे वे उसकी सुन्दरता पर मुग्ध हो गए थे और इसीलिए उससे अगले दिन ही विवाह करनेवाले थे।

गैविन ने इसे मान लेने से अस्वीकार कर दिया।

शाम हो गई। गिरजे मे छोटा पादरी अनुपस्थित था। घण्टे बजने लगे। बडे-बूढे छोटे पादरी से रुष्ट हो गए।

परन्तु गैविन व्यस्त था। उस समय कजरो का सरदार गैविन और बैबी की शादी करा रहा था। अभी यह विचित्र विवाह हो ही रहा था कि तूफान टूट पडा और भयानक आधी चलने लगी। देखते ही देखते नदी का पानी रोकनेवाले बाधो मे बाढ आ गई और बैबी अपने पति से बिछुडकर गिरजेवाले घर मे आश्रय प्राप्त करने चली गई। गैविन भी श्री ओगिलवी के घर जा पहुचा। यहा उसे एक विचित्र कथा ज्ञात हुई।

बहुत दिनो पहले उसकी माता मार्गरेट ने अपने पति को समुद्र मे डूब गया जान कर श्री ओगिलवी से विवाह कर लिया था। गैविन का जन्म हुआ। किन्तु बाद मे जब मार्गरेट का पूर्वपति लौट आया, उसने ओगिलवी को छोड दिया और पति के साथ चली गई। ओगिलवी ने भग्न हृदय से सब कुछ चुपचाप सह लिया।

दूसरो की पीडा से पीडित होनेवाले गैविन का हृदय इस कथा को सुनकर तडप उठा। एकाएक उसे एक आतक ने ग्रस लिया। कही बैबी रिट्रल के हाथो मे तो नही पड गई होगी ? इस विचार ने उसे ऐसा व्याकुल कर दिया कि उस भयानक तूफान मे ही वह

उसे ढूढने चल पडा।

जब वह नदी के पास पहुचा, चारो ओर जल ही जल उमड रहा था। बीच मे धरती कुछ उठी-सी थी, जो द्वीप जैसी दीख रही थी। वहा लॉर्ड रिण्ट्रल घिर गया था। यद्यपि लॉर्ड उसका शत्रु था, किन्तु गैविन इस बात को भूल गया और उसकी रक्षा करने मे जुट गया। परिणाम यह हुआ कि वह भी पानी मे घिर गया और दोनो ही मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगे।

किनारे पर खडे-खडे गाववाले लाचारी से देख रहे थे। नदी के बीच की वह द्वीप जैसी भूमि अब धीरे-धीरे नीचे धसकती जा रही थी। मृत्यु समीप थी। गैविन ने धैर्य से सिर झुकाया और वह प्रार्थना करने लगा। उसके विश्वास और भक्तिपूर्ण साहस ने थ्रूम्स के निवासियो पर ऐसा गहरा प्रभाव डाला कि उन्होने उस केसारे अपराधो को क्षमा कर दिया। छोटे पादरी के प्रति उनकी ममता पूर्ववत् जागरूक हो उठी और उनके नयनो मे आदर झाकने लगा।

परन्तु द्वीप धसकता जा रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे सब कुछ शीघ्र ही नष्ट हो जाएगा। परन्तु उसी समय गैविन का पुराना शराबी मित्र रौब डो आता दिखाई पडा। उसके हाथ मे एक मोटा रस्सा था। डो जल मे कूद पडा और उसने अपनी जान की बाजी लगा दी। चारो ओर हाहाकार मच उठा। अन्त मे डो को सफलता मिली और वह रिण्ट्रल और गैविन की जान बचाने मे समर्थ हो गया। चारो ओर आनन्द से कोलाहल होने लगा।

इस उपन्यास के कथानक में एक विशेष रोचकता है, किन्तु इसकी विशेषता ग्रामीण जीवन के यथातथ्य और सफल चित्रण में है, जिसकी कि पाठक पर गहरी छाप पडती है।

एडिथ व्हार्टन

पीडा का भाग
[इथैन फ्रोम[1]]

व्हार्टन, ऐडिथ अग्रेजी लेखिका ऐडिथ न्यबोल्ड जोन्स का जन्म न्यूयार्क में पहले से बसे एक परिवार में १८६२ ई० मे हुआ। आपको घर पर ही अच्छी शिक्षा प्राप्त हुई और आपने विदेश यात्राए भी की। लिखना आपने काफी जल्दी प्रारभ किया था। जब आप केवल १५ वर्ष की थी, प्रसिद्ध कवि लोगफैलो ने अटलाटिक नामक पत्रिका में छापने को आपकी कविताओं के लिए सिफारिशी पत्र भेजा था, क्योंकि वे कविताए उन्हे बहुत पसद आई थी। १८६० के आसपास आपका ऐडवर्ड व्हार्टन से विवाह हुआ। तब आप अपनी कहानिया पत्रिकाओं में प्रकाशन के लिए भेजने लगी। १८६६ तक आपकी कहानियो के सग्रह और उपन्यास छपने लगे। १६०० के बाद आप प्राय विदेश में रही। १६०७ से १६३७ तक आप फ्रास में ही अधिक रही। १६३७ में आपका देहात हो गया।

'इथैन फ्रोम' (पीडा का भाग) आपकी प्रसिद्ध रचना है। नाम से ही ज्ञात होता है कि यह एक पात्र विशेष को लेकर लिखा गया उपन्यास है।

मैसेचुसैट्स मे स्टार्कफील्ड नामक ग्राम मे बर्फ पड चुकी थी। धरती पर बर्फ की तह दो-दो फुट जमी हुई थी। युवक इथैन फ्रोम निर्जन पथो पर जल्दी-जल्दी पाव उठाता चला जा रहा था। गिरजे के बाहर वह रुक गया। छाया के आचल मे अडे होकर उसने सुना कि भीतर से सगीत की मधुर ध्वनि आ रही थी। कभी-कभी झनझनाता हुआ हास्य गूज उठता था। फ्रोम के हृदय की गति तीव्र हो गई।

एक वर्ष पूर्व इथैन फ्रोम और उसकी पत्नी जीना के यहा मैटी सिलवर आई थी। वह जीना की बहिन लगती थी। उसके पिता की मृत्यु हो चुकी थी। उसके लिए दुनिया मे कोई जगह नही थी। जीना चाहती थी कि घर के काम-काज मे मदद करने को उसे मिल जाए। इसीलिए उसने निश्चय कर लिया। तनख्वाह देकर किसी नौकरानी को रखने की बजाय उसने मैटी को बुला लिया। उसके रहने का प्रबन्ध कर दिया और मैटी उसकी सहायिका बन गई।

कभी-कभी ही मैटी घर से निकलती, जब कोई विशेष अवसर होता और स्टार्कफील्ड के गिरजे मे आकर युवक-युवतियो के साथ अपना मनोरजन करती। इथैन उसे अपने फॉर्म से यहा दो मील के फासले पर गिरजे मे लेने आता और वे दोनो साथ-साथ

---

१ Ethan Frome (Edith Wharton)

लौटा करते।

इथैन देखता रहा। मैरी एक आइरिश युवक के साथ उस समय नृत्य मे मग्न थी। न जाने क्यो इथैन के मन मे एक कसक-सी उठी। तरुण बडा जानदार था। इथैन देखता रहा। कुछ देर मे ही नृत्य-गीत समाप्त हो गए। इथैन वही अधकार मे खडा रहा। मैटी उस तरुण के साथ बाहर आई। उसने मैटी से कहा कि वह उस अपनी बर्फ पर फिसलने-वाली स्लेज गाडी मे घर पहुचा देगा। किन्तु मैटी ने उसके प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया। वह इथैन के पास आ गई।

वे बर्फ पर चलने लगे। इथैन ने उसकी बाहु थाम ली। उस स्पर्श ने उसे रोमाचित कर दिया। उन दोनो मे एक मौन आदान-प्रदान हो रहा था और वे बिना बाले ही एक-दूसरे के भावो को समझने लगे थे। किंतु फिर भी वे बोलते न थे, न किसी प्रकार का कोई विशेष इगित ही करते थे। भीतर की भीतर ही पलती चली जा रही थी। ऐसे अवसरो पर इथन को जीना की याद हो आती और वह घुट-सा जाता। मैटी भी इस भाव के प्रति सचेत और जागरूक थी।

चलते-चलते इथैन ने भावावेश मे भरकर कहा, "मैटी! एक दिन ऐसा भी आएगा, जब तुम हमे छोडकर चली जाओगी!"

मैटी समझी नही। उसने पूछा, "क्यो! क्या जीना अब मुझे नही रखना चाहती?"

किन्तु इथैन का तात्पर्य दूसरा ही था। वह सोच रहा था कि इतनी सुन्दर युवती किसी न किसी दिन तो विवाह कर ही लेगी। तब तो वह चली ही जाएगी!

वे फॉर्म पहुच गए! जीना अमूमन चटाई के नीचे चाबी रख जाया करती थी। परन्तु उस दिन उन्हे चाबी वहा नही मिली। जीना ऊपर से उतरकर आई। तब उन दोनो ने भीतर प्रवेश किया। जीना ने आज और दिनो की अपेक्षा अपने अस्वस्थ रहने की कही अधिक शिकायत की। उसने अपने दर्द बढ जाने का भी उल्लेख किया।

जब इथैन सोने गया, तब उसे लगा जैसे जीना इधर कुछ दिनो से अधिक गभीर रहती थी। वह अधिक असतुष्ट सी दीखती थी, और बात-बात पर चिढ भी जाती थी। उसे ध्यान आया। पहले तो उसका स्वभाव ऐसा नही था!

अगले दिन जब वह भोजन करने आया तो उसने देखा कि जीना अपने सबसे अच्छे कपडे पहने थी।

जीना ने स्वय कहा कि वह बैट्साब्रिज जा रही थी। आज दुपहर को उसे अपने दर्दो के बारे मे एक नये डॉक्टर से सलाह लेनी थी। लेकिन क्योकि मौसम बडा खराब था, रेल का सफर था, वह अगले दिन ही लौट सकेगी, वर्ना उसपर ज्यादा जोर पडेगा, जो वह अपनी कमज़ोरी मे बर्दाश्त नही कर सकेगी।

इथैन के मन मे था कि वह जल्दी से घर पहुच जाए। इसलिए वह स्वय उसे जकशन तक पहुचाने भी नही गया। किराये का आदमी लगाकर, बहाना बनाकर, वह लौट आया।

जब से फ्रोम-परिवार मे मैटी आई थी, तब से आज तक कभी मैटी और इथैन इस तरह का एकात नही पा सके थे।

कमरे मे ऊष्मा थी, और सब कुछ बडा स्फूर्तिप्रद-सा लग रहा था। जब इथैन आया तो उसे मेज पर खाना लगा-लगाया मिला। चमकदार लाल काच की तश्तरी मे उसका मनपसन्द अचार भी रखा था।

इस क्षण की प्रतीक्षा वह दोपहर से कर रहा था। परन्तु इस समय वह उन सारे विचारो को खाना खाते-खाते व्यक्त ही नही कर सका। वह चुपचाप खाता रहा। उसे ध्यान मे मग्न देखकर बिल्ली कूदी और मेज पर चढ गई। इस धमा-चौकडी मे अचार की तश्तरी फर्श पर गिरकर टट गई।

मैटी का मन आतक से भर गया। उसने तश्तरी के टुकडो को इकट्ठा किया।

असल मे यह तश्तरी जीना को बहुत ही प्रिय थी। वह इसको बडी हिफाजत से रखती थी। उसकी चाची ने उसे यह तश्तरी उसकी शादी के वक्त भेट दी थी। चीनी के बर्तनो की अलमारी मे वह इसे ऊपर के भाग मे सिर्फ सजाकर रखती थी, इसका प्रयोग नही करनी थी और इतना तक कि बाहर भी न निकालती थी। आज उस तश्नरी का उमकी अनुपस्थिति मे टट जाना, एक पूरा सकट ही था! इथैन ने इसे समझा। उसने मैटी को सात्वना देने की चेष्टा की। उसने काच के टुकडो को जमाया। तश्तरी फिर साबुत लगने लगी। तब इथैन ने कहा कि कल वह थोडा-सा काच चिपकाने का मसाला ले आएगा और उसे चिपका देगा।

इसके बाद वे सन्ध्या को प्रसन्नचित्त बैठे रहे। मैटी सिलाई करती रही। इथैन अगीठी के पास बैठा-बैठा उसे देखता रहा। किन्तु बार-बार उसे जीना की याद आ जाती और वह मैटी से कुछ भी नही कह पाता, मानो जीना की स्मृति उसे रोक लेती थी। यो ही समय व्यतीत हो गया।

दूसरे दिन जब इथैन दोपहर बाद काम परमे घर लौटकर आया, मैटी ने उसे बताया कि जीना लौट आई थी और सीधी अपने कमरे मे चली गई थी। जब वह रात को खाना खाने भी नीचे नही आई तो इथैन अपनी पत्नी ज़ीना के पास ऊपर गया।

ज़ीना उस समय खिडकी के पास कठोर मुद्रा बनाए बठी थी। अभी तक उसने अपने कपडे भी नही उतारे थे।

इथैन को देखकर ज़ीना कहने लगी, "डॉक्टर ने कहा है कि शायद मेरी बीमारी मे उलझने पैदा हो जाए। इसीलिए मै चिन्ता मे पड गई हू।"

जब वह अपने विषय मे सब कह चुकी तो उसने अन्त मे कहा, "मैं एक लडकी का इन्तज़ाम कर आई हू। तनख्वाह लेगी पर काम सब सभालेगी। कल आ जाएगी।"

तब इथैन की समझ मे आया कि ज़ीना के कहने का मनलब क्या था। वह चाहती थी कि मैटी को तुरन्त निकल जाना होगा और उसकी जगह एक लडकी आ रही थी।

सात वर्ष के विवाहित जीवन मे इतना विसाक्त वातावरण उन दोनो के बीच कभी नही हुआ था। खाने के बाद जब ज़ीना ने अचानक अलमारी देखी और उसे अपनी शादी की भेटवाली तश्तरी ट्टी मिली तो ऐसा तनाव खिच गया, जैसा कि इथैन सोच भी नही सकता था।

इथैन इस सबके बारे मे मैटी को सूचना देना चाहता था। वह ज़ीना को रोक

सकने मे असमथ हो गया था। निचली मज़िल मे उसने अपने अध्ययन के लिए एक छोटा-सा कमरा चुन रखा था। वह उसीमे चला गया और कोई तरकीब निकालने के लिए विचारो मे डूब गया। उसने ज़ीना को एक पत्र लिखना प्रारम्भ किया 'मैं मैटी के साथ पश्चिम की ओर जा रहा हू अपना जीवन फिर से प्रारम्भ करने के लिए '

किन्तु फिर वह रुक गया क्योकि नये सिरे से ज़िन्दगी शुरू करने के लिए उसके पास धन कहा था ?

अगले दिन इथैन ने सुबह का वक्त कस्बे मे गुजार दिया। आज मैटी का फॉर्म मे अन्तिम दिन था। इथैन चाहता था कि किसी प्रकार वह धन एकत्र कर ले और मैटी को लेकर चला जाए दूर बहुत दूर , पर जब दोपहर ढले वह लौटा तब उसे मन ही मन यह स्वीकार करना पडा कि उसके पास कोई रास्ता नही था

जीना ने मैटी को स्टेशन तक पहुचाने का प्रबन्ध कर लिया था। परन्तु जब समय निकट आ गया, इथैन स्वय ही गाडी चलाने जा बैठा और उसने किराये पर बुलाए हुए साईस को हटा दिया। जीना उसे नही रोक सकी।

चार बजे के लगभग मैटी और इथैन स्लेज मे चल दिए। इथैन ने लम्बा रास्ता पकडा। वह उन जगहो पर स्लेज को हाक चला, जहा वे दोनो पहले कभी-कभी मिला करते थे। वह सोच रहा था कि आखिर मैटी अब जाएगी भी कहा ? वह करेगी भी तो क्या ?

इथैन ने कहा, "कहा जाओगी अब ? करोगी क्या तुम ?"

मैटी ने कहा, "मैं स्वय नही जानती।"

फिर मैटी कहने लगी, "मै तुम्हे प्यार करती हू। मैं तुम्हे बहुत दिनो से चाहनी हू।"

छह बजने को आ गए। अब एक-दूसरे से बिछुडना उन दोनो के लिए और भी कठिन होता जा रहा था। स्थानीय पहाडी की आड मे आते-आते जहाज़ रुका करते थे। उस पहाडी के ऊपर इथैन ने गाडी रोक दी। दूर ऍल्म नामक जगली वृक्ष अपने विशाल शरीर को लिए दीख रहा था। पहाडी के नीले आते-जाते जहाजो को उसके कारण घूमना पडता था।

अचानक मैटी ने कहा, "मुझे पहाडी के नीचे पहुचा दो !"

इथैन को वही पेडो के बीच एक स्लेज गाडी पडी दिखाई दी। दोनो उसपर जा बैठे। गाडी बफ पर फिसलने लगी। मैटी ने कहा, "अबकी बार फिर गाडी को फिसलाओ और ऍल्म वृक्ष तक चल

गाडी तेज़ी से फिसल चली। पहाडी के नीचे पहुचकर मैटी ने फिर गाडी तेज़ करने को कहा। सामने ऍल्म का विशाल वृक्ष था, इथैन ने गाडी मोड दी और फिर एक भयानक टक्कर हुई

बीस वर्ष बीत गए। एक व्यक्ति इथैन फ्रोम से मिलने आया। फ्रोम के फार्म पर पहुचते-पहुचते उसे बर्फ के भयानक तूफान ने घेर लिया। तब मजबूर होकर उसे वहा पनाह मागनी पडी।

रसोई मे उसने एक लम्बी, पतली-दुबली औरत देखी जो इथैन की सेवा कर रही

थी। एक कुर्सी पर एक स्त्री बैठी थी जो उस स्त्री की तुलना मे उम्र मे कम थी। लेकिन इस औरत के बुरी तरह से अग भग हो चुके थे और उसकी आखे बहुत ही अधिक चमकदार थी। वह केवल अपना सिर हिला पाती थी और कुछ भी करना उसके लिए असभव था। इथैन भी कुर्सी पर पगु बना बैठा था। आगन्तुक को तब ही पता चला कि इथैन फ्रोम गत बीस वष से जीना और मैटी के साथ इसी प्रकार जीवित था। स्टार्कफ़ील्ड के लोग इस दुर्घटना के बारे मे बात तक नही करते थे। परन्तु कुछ लोगो का कहना था कि इस सबमे सबसे अधिक पीडा का भागी शायद इथैन फ्रोम ही था।

प्रस्तुत उपन्यास एक प्रेम-कथा है। प्रेम की घुटन तीनो पात्रो में हमें उत्कट रूप से मिलती है, कोई भी स्पष्ट नही कह पाता। बीस वर्ष तक दु ख-भोग का चित्र रखकर लेखिका ने एक विचित्र वेदना का सृजन कर दिया है। इथैन के चरित्र-चित्रण में हमें एक अजीब कसक-सी मिलती है। इथैन फ्रोम ससार में इसलिए एक प्रसिद्ध उपन्यास माना गया है।

मैक्सिम गोर्की

मा
[द मदर[1]]

गोर्की, मैक्सिम रूसी उपन्यासकार मैक्सिम गोर्की का जन्म १४ मार्च, १८६८ को हुआ और आपकी मृत्यु १४ जून, १९३६ में हुई। आप रूसी थे। नाटक, उपन्यास, कविता, कहानिया, लेख सभी कुछ आपने लिखे है। आप बहुत ही दरिद्र परिवार में जन्मे थे और आपने भिखारियों की सी हालत मे बहुत यात्रा की थी। आपको जीवन का अगाध अनुभव था। बिना कही शिक्षा पाए आप ससार के महान साहित्यकार बने। आपकी प्रतिभा अद्भुत थी। आपने रूसी क्राति में सक्रिय सहयोग दिया था। आपने जनता को जगाया था। आप लेनिन के घनिष्ठ मित्र थे।

'मा' (द मदर) आपका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। इस उपन्यास के कारण आप विश्वविख्यात हो गए।

पेलागेया निलोवना का पति मिखाइल ब्लासोव फैक्टरी मे काम करनेवाला मिस्त्री था। बस्ती-भर मे वह सबसे अधिक बलवान और झगडालू था। सभी उससे भय खाते थे। वह बोलता बहुत कम था, परन्तु हर छुट्टी के दिन किसी न किसीको पीट देता। प्रति-दिन भोजन करने के पश्चात् वह वोदका (शराब) पीता और बेसुरे कण्ठ से गीत गाता। अपने लडके पावेल से भी वह बहुत कम बात करता था। उसकी पत्नी पेलागेया तो पिटने के भय से हर समय कापती रहती। रक्त-स्राव से मिखाइल ब्लासोव की मृत्यु हो गई।

पेलागेया लम्बे कद, झुकी हुई कमर, झुर्रियो-भरे चेहरे कीकाली आखो वाली स्त्री थी। उसकी दाहिनी भौह पर चोट का एक गहरा निशान था। उसकी आखो से भय और व्यथा झलकती थी। मिखाइल ब्लासोव की मृत्यु के दो सप्ताह बाद ही एक इतवार को पावेल ब्लासोव वोदका पीकर लडखडाता हुआ घर आया। पेलागेया ने कहा, "अगर तुमने पीना प्रारम्भ कर दिया तो मेरा पेट कैसे पालोगे ?" इसपर पावेल ने उत्तर दिया था, "सभी तो पीते है।"

वास्तव मे बस्ती के सभी नवयुवक वोदका पीते और झगडा करते थे। अभी पावेल की आयु लगभग सोलह साल की थी। वह वोदका पचा नही सका और उसे उल्टी हो गई। उसे मा की आखो मे व्यथा देखकर दु ख हो रहा था। कुछ ही दिन बाद पावेल ने अपने लिए एक अकार्डियन (बाजा), एक कलफदार कमीज, एक चमकदार नेकटाई, जूते और एक घडी खरीद ली। अब बस्ती के दूसरे युवको की तरह वह फैक्टरी मे काम

---

१ The Mother (Maxim Gorky)

करता और शाम को उनके साथ हर इतवार को वोदका पीता। न जाने क्यो जब भी वह वोदका पीता, उसकी तबियत खराब हो जाती, दूसरे दिन उसके चेहरे का रग उड जाता, सिर मे दर्द रहता और हृदय मे जलन होती। पहले तो वह इसे अपनी अल्पायु का प्रभाव मानता रहा परन्तु एक दिन उसने अपनी मा से कहा, "मै बिलकुल जानवर हो गया हू। अबकी बार मै मछली के शिकार को निकल जाऊगा या फिर मै एक बन्दूक खरीद लूगा और शिकार खेलने चला जाया करूगा।" इसके बाद पावेल कभी वोदका पीकर नही आया। उसके मित्रो ने भी उसके घर आना छोड दिया था। अब वह पुस्तके लाता और चोरी-छिपे उन्हे पढकर छिपा देता। प्रतिदिन शाम को वह पढता और इतवार की सुबह घर से निकलता तो रात को लौटता। मा से वह बहुत कम बात करता। पेलागेया ने देखा कि पावेल अब पहले की तरह अशिष्ट भाषा का प्रयोग नही करता था। और भी छोटी-छोटी बाते थी जिनसे उसके स्वभाव-परिवतन का पता चलता था। उसने भडकीले कपडे पहनना छोड दिया था और शरीर तथा कपडो की सफाई की ओर अधिक ध्यान देने लगा था। उसकी मा उसके परिवर्तन का कारण नही समझ पाई थी। एक दिन पावेल अपने एक बढई मित्र से अलमारिया बनवा लाया था और उन अल्मारियो मे अब पुस्तको की सख्या बढती जा रही थी। बेटे की गम्भीरता देखकर पेलागेया चिन्तित रहती थी। अब वह कारखाने के दूसरे नवयुवको की तरह नही रहता था। कभी-कभी वह सोचती पावेल किसी लडकी के प्रेम के कारण इनना बदल सकता है। परन्तु प्रेम के चक्कर मे तो पैसो की आवश्यकता होती है और वह अपना पूरा वेतन मा को दे देता था। मामला उसकी समझ के बाहर था। इसी तरह दो वर्ष बीत गए। अब ब्लासोव-परिवार का जीवन शान्ति से व्यनीत हो रहा था।

एक दिन पेलागेया ने पावेल से पूछा कि वह हर समय क्या पढता रहता है। उसने मा को बताया कि वह गैरकानूनी पुस्तके पढता है जिनमे मज़दूरो के सम्बन्ध मे सच्ची बाते लिखी रहती है। सुनकर पेलागेया रोने लगी, किन्तु जब पावेल ने उसे समझाया कि इनसे मजदूरो के दु ख दूर होगे और स्वय पढकर वह दूसरो को भी पढाएगा तब वह शान्त हुई। पावेल ने उसे साफ साफ बता दिया कि यदि वे पुस्तकें उसके पास पकडी जाएगी तो उसको जेल जाना पडेगा, परन्तु इस डर से वह उन्हे पढना बन्द नही कर सकता। पेलागेया को पावेल की आखो मे दृढता, गम्भीरता और कोमलता दिखाई दी। वह अपने बेटे पर गर्व करने लगी।

पहली बार जब पावेल ने कहा कि उसके मित्र शनिवार की शाम को शहर से आएगे तो पेलागेया मन ही मन भयभीत हो उठी थी, किन्तु उनके आने पर उसकी धारणा बिलकुल बदल गई। नताशा और आन्द्रेई नखोदका से बात करके तो वह भयमुक्त हो गई थी। उनका व्यवहार मा को बहुत अच्छा लगा। जब आन्द्रेई ने पेलागेया के माथे की चोट के निशान को देखकर कहा कि उसे जिस स्त्री ने मा की तरह पाला था उसके भी इसी तरह का निशान था और उसके पति के मारने से वह निशान पडा था तो वह उसकी तरफ ममता से देखने लगी थी। नताशा के सम्बन्ध मे जब पेलागेया को मालूम हुआ कि उसका पिता मास्को मे लाहे का व्यापार करता है और बहुत धनी है परन्तु नताशा को उसने

इसीलिए घर से निकाल दिया कि वह मज़दूरो से सहानभूति रखती है और उनके दु ख दूर करना चाहती है, तो वह बहुत दु खी हुई। पावेल के मित्र काफी रात तक पुस्तक पढने और बाते करते रहे। उन्होने कारखाने के नवयुवको की तरह न तो शराब पी और न गन्दी भाषा का ही प्रयोग किया। उनके चले जाने पर पेलागेया ने पावेल से पूछा, "पावेल, मेरी समझ मे नही आता कि इसमे ऐसी खतरनाक और गैरकानूनी क्या बात है ? तुम कोई गलत काम तो नही कर रहे हो न ?" पावेल के समझाने पर वह उस दिन समझ गई थी। फिर भी पावेल ने कह दिया था कि किसी दिन उन्हे जेल मे ठूसा जा सकता है। पेलागेया अपने बेटे की सुरक्षा के लिए चिन्तित हो उठी थी। इसके पश्चात् हर शनिवार की शाम को पावेल के घर बैठक होने लगी। शहर से दूसरे लोग भी आकर इसमे सम्मिलित होने लगे थे। वेसोवाश्चिकोव, समोइलोव तो बस्ती के ही थे। याकोव सोमोव, निकोलाइ इवानोविच पहले से आते ही थे। अब एक दुबली-पतली लडकी साशा भी शहर से आने लगी थी। साशा ने बैठक मे पहली बार अपने-आपको समाजवादी कहा था। पेलागेया तो समाजवादी शब्द सुनकर ही डर गई थी। उसने पावेल से पूछा भी था कि क्या वह भी समाजवादी है, और उसके 'हा' करने पर वह डर गई थी। धीरे-धीरे समाजवादी शब्द सुनने की उसे आदत पड गई। जब भी बैठक मे विदेशो के मजदूर-आन्दोलन का समाचार पढा जाता तब सभी चिल्लाते और खुश होते। वे बहुधा गीत गाते। आन्द्रेई नखोदका को पेलागेया आन्द्रयूसा कहने लगी थी। वह कारखाने मे वही काम करने लगा था और हर रोज़ शाम को पावेल के साथ पढने उनके घर आता था। धीरे-धीरे पेलागेया उससे इतना स्नेह करने लगी कि उसे अपने ही घर मे रहने के लिए बुला लिया। आन्द्रूयसा भी मा से प्रेम करता था। वह उसके काम मे भी हाथ बटाने लगा।

कुछ दिन बाद ही पावेल ने फैक्टरी के व्यवस्थापको के विरुद्ध मजदूरो की आख खोलने के लिए पर्चे छपवाना प्रारम्भ कर दिया। नवयुवक मजदूर उन्हे बडे ध्यान से पढते थे और सचाई को महसूस करने थे। हर सप्ताह इस तरह के पर्चे निकलते और मज-दूरो मे हलचल मच जानी। पर्चे शहर मे छपते थे, इसलिए किसीको यह नही पता चलता था कि वह किस तरह छपते है। पावेल चुपके-चुपके उन्हे बाट देता था। इन पर्चों का पता लगाने के लिए जासूस लगा दिए गए थे और बस्ती के सभी मजदूर आशकित हो उठे थे। एक दिन मारिया कोरसुनोवा ने पेलागेया के घर जाकर कहा, "पेलागेया, सावधान रहना। भडा फूट गया। आज तुम्हारे घर की तलाशी ली जाएगी, और माज़िन और वेसोवाश्चिकोव के घर की भी।" उस दिन तो तलाशी नही हुई, परन्तु एक महीने बाद एक रात को सशस्त्र पुलिस उनके घर आई और घर-भर का सामान उलट-पुलट दिया। अलमारियो मे से निकालकर पुस्तको को इधर-उधर फेक दिया और पावेल, आन्द्रेई और पेलागेया से ऊट-पटाग सवाल पूछे। भूरी वर्दियोवाले सिपाही निकोलाई और आन्द्रेई को पकडकर अपने साथ ले गए। निकोलाई और आन्द्रेई को जब मां ने सम्मनो पर हस्ताक्षकर करते देखा तो वह दु खी होकर रो पडी। पेलागेया को रोते देखकर पुलिस का अफसर बोला, "बुढिया, इतने आसू न बहा, नही तो आगे चलकर कहा से लाएगी ?" इसपर उसने कोधित होकर उत्तर दिया, "मा की आखो मे सदैव हर बात के लिए पर्याप्त

आसू रहते है, हर बात के लिए। अगर तुम्हारी मा है, तो वह इस बात को जानती होगी। यह सुनकर उस अफसर ने कोई उत्तर नही दिया था। वह तुरन्त वहा से चल दिया था। दूसरे दिन ही बुकिन, समोइलोव और सोमोव आदि पाच दूसरे लोग भी पकड लिए गए। रीबिन को पुलिसवाले गवाह बनाकर अपने साथ पावेल के घर लाए थे। दूसरे दिन वह उसके पास आया और आन्द्रेई तथा दूसरे सभी मजदूरो की प्रशसा करने लगा। रीबिन ने कहा कि वह चालीस वर्ष का हो चुका था, परन्तु फिर भी उनके साथ कुछ करना चाहता था। वह बहुत देर तक पावेल से बात करता रहा। पेलागेया इन्ही दिनो एक बार आन्द्रेई से जेल मे मिल आई थी।

धीरे-धीरे बस्ती के सभी लोग पावेल की इज्जत करने लगे थे और आवश्यकता पडने पर उससे परामर्श लेते थे। फैक्टरी मे इन्ही दिनो एक महत्त्वपूर्ण घटना हो गई जिसने पावेल को सामने ला दिया। फैक्टरी के पास दलदल थी, जिसमे गन्दगी होने से मच्छर पैदा होते और बस्ती मे बुखार फैलाते थे। फैक्टरी के डायरेक्टर ने दलदल को सुखाने के लिए मजदूरो के वेतन मे से रूबल पीछे एक कोपेक काटने का निर्णय किया था। नाम तो मजदूरो की भलाई का लिया जा रहा था परन्तु दलदल की भूमि का लाभ फैक्टरी को होनेवाला था। फैक्टरी के सारे मजदूर डायरेक्टर के निर्णय के विरुद्ध थे और उन्होने पावेल से सलाह लेने को सिजोव और माखोतिन को भेजा। उस दिन पावेल फैक्टरी नही गया था इसलिए घर पर ही था। पावेल ने दलदलवाली घटना का समाचार लेकर मा को शहर भेजा जिससे अखबार मे छप सके। यह पेलागेया को अपने बेटे द्वारा बताया हुआ पहला काम था। वह प्रसन्नतापूर्वक शहर गई और येगोर ईवानोविच को पावेल का पत्र दे आई। यह शनिवार की बात थी। इतवार तो निकल गया, परन्तु सोमवार को ही फैक्टरी के मज़दूर एकत्र हो गए। पावेल ने उन्हे कोपेक काटने की अनुचितता समझाई और डायरेक्टर को बुलवाया। डायरेक्टर ने पावेल तथा उसके साथियो की बातो पर कुछ भी ध्यान नही दिया और मजदूरो को काम पर लौटने का आदेश दिया और कहा कि जो काम पर नही आएगे उन्हे नौकरी से निकाल दिया जाएगा। यह कहकर वह चला गया। इसपर मजदूरो ने पावेल से पूछा कि अब वे क्या करे। पावेल ने स्पष्ट रूप से हडताल की सलाह दी। हडताल के नाम से मजदूर डर गए और काम पर लौट गए। पावेल को इससे बहुत दु ख हुआ। उसी शाम को पावेल के घर पुलिस आई। उन्होने घर की तलाशी ली और पावेल को पकडकर ले गए। पेलागेया अब व्यथित हो उठी। कुछ दिन बाद समोइलोव और येगोर इवानोविच रात के समय उसके घर आए। येगोर इवानोविच ने कहा कि सुबह ही निकोलाई इवानोविच जेल से छूटकर आया है और उसके हाथो खोखोल और पावेल ने नमस्ते कहलवाया है। येगोर ने ही पेलागेया को यह बताया कि पावेल के अतिरिक्त और भी बहुत-से लोग जेल भेजे गए है, पावेल तो उनचासवा आदमी है। इस बात से पेलागेया को ढाढस बधा। येगोर ने पेलागेया से कहा कि अगर उन्होने फैक्टरी मे पर्चे बाटना बन्द कर दिया तो पुलिसवाले समझेगे कि पावेल और उसके साथी ही यह काम करते थे। पावेल वगैरह के बचाव के लिए अब फैक्टरी मे पर्चे बटना आवश्यक है। उसने कहा कि पेलागेया को खोमचेवाली कोरसूनोवा से इस सम्बन्ध

मे बात करनी चाहिए। वह पर्चे ले जा सकती है, और लोगो की तो तलाशी होती है। पेलागेया ने येगोर से स्वय पर्चे ले जाने की बात कही तो बह प्रसन्नता से उछल पडा। पेलागेया को समझ मे यह बात आ गई थी कि पर्चे बटने से फैक्टरी के मालिक पावेल पर यह आरोप नही लगा सकेगे। दूसरे दिन पेलागेया खोमचेवाली मारिया कोर-सुनोवा से मिलने गई। वह पेलागेया की गरीबी समझकर उसे खाने की टाकरी लेकर फैक्टरी ले चलने को राजी हो गई। अगले दिन कोरसुनोवा तो बाजार से सामान खरीदने गई और टोकरिया लेकर पेलागेया फैक्टरी गई। दो-तीन दिन बाद ही साशा और येगोर ने पर्चे लाकर पेलागेया को दे दिए जिन्हे वह कपडो मे छिपाकर फैक्टरी मे ले गई। वैसे तो सन्तरी और खुफिया पुलिसवाले प्रत्येक की तलाशी ले रहे थे परन्तु पेलागेया ने टोक-रियो के बोझ का बहाना बना दिया, जिसमे उसकी तलाशी नही ली गई। भीतर पहुचते ही वासिली गुसेव और इवान गुसेव नामक दो भाई, जोकि वहा मिस्त्री थे, उसके पास आए। पेलागेया ने निश्चित सकेतवाक्य बताने पर उन्हे पर्चो के बडल दे दिए। दूसरे मजदूर पेलागेया को खोमचा लगाते देखकर सहानुभूति जताने लगे और उसीसे शोरबा तथा सेवइया खरीदने लगे। पर्चे पहुचाकर पेलागेया का हृदय उल्लास से भर गया। उसी दिन शाम को आन्द्रेई जेल से छटकर आ गया। जब पेलागेया ने उससे फैक्टरी मे पर्चे पहुचाने की बात कही तो वह भी बहुत खुश हुआ। उसी दिन आन्द्रेई ने पेलागेया को यह बताया कि साशा और पावेल एक-दूसरे से प्रेम करते है। यह जानकर पेलागेया साशा से और अधिक स्नेह करने लगी। दूसरे दिन पेलागेया फैक्टरी पहुची तो सन्तरियो ने उसकी तलाशी ली परन्तु उन्हे उसके पास कुछ नही मिला। अब हर तरफ पर्चो के बटने की चर्चा होने लगी। कुछ दिन बाद जब पेलागेया पावेल से जेल मे मिलने गई तो उसने सकेत से बता दिया कि फैक्टरी मे उसने पर्चे पहुचाए थे, जिनके कारण काफी हलचल मची। पावेल मा के पर्चे पहुचाने की बात पर इतना प्रसन्न हुआ कि उसने उसे चूम लिया। अब आन्द्रेई फिर से फैक्टरी मे काम करने लगा था और सारा वेतन पेलागेया को देता था। इन दिनो पेलागेया चुपके-चुपके पढने लगी थी। कठिनाई होने पर वह आन्द्रेई से पूछ लेती। वह भी उन सब बातो को जानना चाहती थी जिन्हे पावेल ने उन पुस्तको से सीखा था। आखिर पावेल भी एक दिन जेल से छट गया। उसे देखकर पेलागेया बहुत हर्षित हुई।

पावेल के आने के कुछ दिन पश्चात् ही रीबिन एक दिन पेलागेया के यहा आया। उसने बताया कि इन दिनो मै येगिलदेयेबो नामक कस्बे मे तारकोल बनाने का काम करता था तथा किसानो मे समाजवादी भावना का प्रचार किया करता था। वह कुछ पुस्तके लेने आया था, उसके साथ येफीम नाम का एक लडका भी था। पुस्तके लेकर तथा किसानो के लिए अखबार और पर्चे निकालने की बात कहकर वह फिर कस्बे को लौट गया।

एक दिन आन्द्रेई पर मा के स्नेह को देखकर पावेल ने उससे कहा, "मा, तुम्हारा हृदय बहुत उदार है।"

पेलागेया बोली, "मै तो चाहती हू कि मैं तुम्हारे और तुम्हारे दोस्तो के किसी काम आ सकू। काश, मै इन बातो को समझती होती!"

"तुम सीख जाओगी।"

"मुझे तो बस एक बात सीखनी है कि किसी तरह मै चिन्ता करना छोड द।"

और वास्तव मे पेलागेया की बात ठीक ही थी, वह पावेल के लिए हर समय चिंतित रहती थी। अब पावेल और आन्द्रेई तो फैक्टरी चले जाते और पेलागेया मई दिवस की तैयारी मे उनका योग देती। वह उनके पोस्टरो के लिए लेई बनाती, लाल रोशनाई तैयार करती। इसके अतिरिक्त अपरिचित लोग जोकि रहस्यमय ढग से आकर पावेल के लिए सदेश दे जाते, उन्हे स्मरण रखती। मजदूरो से मई-दिवस के समारोह मे भाग लेने का आग्रह करनेवाले पोस्टर हर रात दीवारो पर चिपकाए जाते। रात-रात-भर जगलो मे आन्द्रेई और पावेल मीटिंग करते। मई दिवस के दिन जलूस मे सबसे आगे झडा लेकर चलने का काम पावेल को करना था। इससे मा मन ही मन चिन्तित थी, परन्तु पावेल के भय से कुछ नही कह सकती थी। मई-दिवस के दिन जुलूस मे पावेल के साथ आन्द्रेई और पेलागेया भी गए। जुलूस के आगे-आगे पावेल ने लाल झडा ऊपर उठाया और दर्जनो हाथो ने झडे का बास थाम लिया। झडे का बास थामनेवालो मे पावेल की मा का भी हाथ था। पावेल ने 'मजदूरवर्ग ज़िन्दाबाद' और 'समाजवादी-जनवादी मज़दूरदल ज़िन्दा-बाद' के नारे लगाए। जनसमुदाय ने उन्हे ऊचे स्वर से दुहराया। इसके पश्चात् क्राति के गीत गाए गए तथा आन्द्रेई बोला। जब कतार बाधकर जुलूस चलने लगा तो पेलागेया माजिन के पीछे चलने लगी। लोगो का जुलूस मे सम्मिलित होने का उत्साह देखकर पेलागेया का हृदय गव से भर उठता था। पावेल के सम्मान को देखकर वह उल्लसित हो रही थी। परन्तु रह-रहकर उसे उसके लिए चिन्ता भी हो उठती थी। फिर भी पेलागेया ने अपने मन को समझा लिया था। जुलूस सडक पर आगे बढ रहा था तभी सशस्त्र सिपाही सडक को घेरकर खडे हो गए और उनकी सगीनो की चमक दिखाई देने लगी। एक अफसर ने तलवार चमकाकर भीड को तितर-बितर हो जाने का आदेश दिया और धीरे-धीरे लोग पीछे हटने लगे। झडे के साथ केवल कुछ दजन लोग रह गए। इसी समय पीछे से पेलागेया ने लोगो के भागने की आवाज सुनी। सगीने झडे के सामने चमक रही थी। निकोलाई ने पावेल के हाथ से झडा लेना चाहा, परन्तु उसने दिया नही। एक अफ-सर के आदेश पर सिपाहियो ने बन्दूक के कुन्दो के बल पर झडा छीन लिया और आन्द्रेई, पावेल तथा उनके साथियो को गिरफ्तार कर लिया। इस छीना-झपटी मे झडे का बास टूट गया, और लोगो पर सिपाहियो का क्रोध उमडने लगा। पेलागेया को एक सिपाही ने धक्का दिया और उसके सीने मे घूसा मारा। वह जैसे-तैसे उठकर एक गली मे घुस गई। टूटा हुआ झडा उसके हाथ मे था। गली मे लोगो की भीड थी, वही खडी होकर वह कहने लगी, "हमारे बच्चे सुख की खोज के लिए लडाई के मैदान मे उतरे है और उन्होने यह हम सबकी खातिर किया है—उस लक्ष्य के लिए किया है जिसके लिए ईसामसीह ने अपने प्राण दिए थे। वे उन तमाम चीज़ो के खिलाफ लडने को मैदान मे उतरे हैं जिन्हे पापी लोगो ने, झूठे और लालची लोगो ने, हमे बाधने के लिए, हमारी आवाज बन्द करने के लिए, हमे कुचल देने के लिए इस्तेमाल किया है" बोलते-बोलते वह मूर्च्छित होने लगी थी कि किसीने उसे थाम लिया और सिजोव उसे घर पहुचाने गया। सब उसे आदर की

दृष्टि से देखने लगे।

उस दिन ही रात को सशस्त्र सिपाही पेलागेया के यहा तलाशी लेने को आ धमके। यह तीसरा अवसर था जबकि सशस्त्र पुलिस उसके यहा तलाशी लेने आई थी। जब तलाशी हो चुकी तो अफसर ने कुछ कागजो पर पेलागेया से हस्ताक्षर करवाए। टेढी-मेढी लिखावट मे पेलागेया ने हस्ताक्षर किए

'पेलागेया ब्लासोवा, एक मजदूर की विधवा'।

यह शब्द उसके मज़दूरो के प्रदि लगाव को प्रकट करते है, जिन्हे पढते ही वह अफसर उससे बोला, "जगली कही की!"

दूसरे दिन ही पेलागेया से मिलने इवानोविच आया। उसने उसे बताया कि पावेल और आन्द्रेई से उसका यह तय हुआ था कि उनके गिरफ्तार होने पर वह उसे शहर पहुचा आए। उसने तलाशी के बारे मे भी पूछा। निकोलाई इवानोविच के साथ पेलागेया शहर जाने को तो तैयार हो गई परन्तु उसने अपने लिए कुछ काम ढ्ढ लेने का भी कहा था। निकोलाई ने रीबिन के यहा पर्चे और अखबार पहुचाने का काम बनाया। मा ने स्वीकार किया और निकोलाई के साथ शहर मे उसके घर रहने लगी।

शहर के सिरे पर एक सुनसान सडक के किनारे निकोलाई दुमजिले मकान मे रहता था। निकालोई ने पेलागेया को बता दिया कि उसकी बहन सोफिया भी उनका काम करती है और कभी-कभी वहा आ जाती हे। सोफिया आई तो उसने पेलागेया का उल्लास के साथ स्वागत किया। पेलागेया को सोफिया के चेहरे पर अपार साहस और चचलता दिखाई दी। उसने बताया कि जैसे ही मुकदमा चलाकर पावेल और उसके सायियो को देश-निकाला देकर कही भेजा जाएगा, वे लोग पावेल को भगाने का प्रबन्ध कर लेगे। निकोलाई और सोफिया का व्यवहार पेलागेया के प्रति बहुत अच्छा था। वह उनके भोजन और कॉफी की व्यवस्था करती थी और आगे की योजनाओ पर उनसे बाते करती थी। सोफिया पियानो बहुन अच्छा बजाती थी। मा उसका पियानो सुनकर बहुत प्रभाविन हुई। निकोलाई और सोफिया को मा ने अपनी रामकहानी सुनाई और यह भी बताया कि किस तरह उसका पति उसे पीटा करता था और कैसे-कैमे कष्टो मे वह दिन बिता चुकी है, आदि। मा के गत जीवन की बाते जानकर सोफिया उसका बहुन ही आदर करने लगी।

कुछ दिन बाद ही शहर की गरीब स्त्रियो के वेश मे सोफिया और पेलागेया शहर की सडके पार करके खेतो की ओर चल दी। चलते-चलते सोफिया अपने जीवन के सस्मरण मा को सुनाती जा रही थी। सोफिया की बाते सुनकर पेलागेया प्रसन्न हो रही थी, परन्तु कभी-कभी उसे आशका होती कि रीबिन सोफिया से मिलकर खुश नही हो सकेगा। तीसरे दिन सोफिया और पेलागेया रीबिन के पास तारकोल के कारखाने जा पहुची। रीबिन पेलागेया और सोफिया से बडी आत्मीयता से मिला। पावेल के बारे मे पूछने पर माँ ने जुलूस से लेकर जेल जाने तक की मारी घटना बता दी। रीबिन को उन्होने पुस्तके और अखबारो के बडल दिए। पहले तो रीबिन सोफिया से तीखी-तीखी बाते करने लगा, परन्तु जब उसने उसके जेल जाने तथा दूमरे कामो के बारे मे सुना तो उसका विचार बदल

गया। रात को सोफिया और पेलागेया वही रही। रीबिन ने एक तपेदिक के रोगी को बुलाया जिसने अपनी करुण कहानी सुनाई कि किस तरह उसका शोषण किया गया था। फिर सोफिया ने मजदूरो की एकता और कार्यक्रम की बात कही। चलते समय दूर तक रीबिन और उसके साथी उन्हे पहुचाने आए। मा यह जानकर खुश थी कि वह पावेल के काम को आगे बढाने मे सहायक हो रही थी। अब उसे काम मिल गया था। उसे अपने अस्तित्व का भान हो गया था।

रीबिन के यहा से लौटने पर पेलागेया का जीवन कुछ दिन तो निश्चित क्रम से चलने लगा—सुबह निकोलाई चाय पीकर उसे अखबार पढकर सुनाता, फिर दोपहर को वह खाना बनाती, नहा-धोकर पढती। निकोलाई ने जब से मा को पढते देखा, तभी से वह बहुत खुश हुआ और उसने सचित्र पुस्तके लाकर उसे दी। कभी-कभी साशा उससे मिलने आती और पावेल की कुशल पूछती और उससे नमस्ते कहकर फिर चली जाती। पेलागेया अपने बेटे पावेल के बारे मे जब भी सोचती, उसकी आखो के सामने आन्द्रेई तथा फ्योदोर आदि के चित्र घूम जाते। कभी-कभी झुझलाहट अवश्य होती कि पावेल पर शीघ्र मुकदमा क्यो नही चलाया जाता, क्यो उसे वैसे ही जेल मे बन्द कर रखा है।

कपडा बुनने के कारखाने मे जब से नताशा ने पढाना प्रारम्भ किया, तभी से पेलागेया ने उसे पुस्तके, अखबार और पर्चे आदि पहुचाने काम करना आरम्भ कर दिया था। इन गैरकानूनी चीजो को वह बडी सावधानी से पहुचा देती। कुछ दिन बाद तो पूरे इलाके मे पेलागेया ने यह काम करना प्रारम्भ कर दिया। वह कभी तो साधुनी का भेष बनाकर जाती और कभी लैसे बेचनेवाली का। उसके कधे पर कभी तो थैला पडा होता और कभी वह हाथ मे सूटकेस लिए होती।

एक दिन निकोलाई ने उसे समाचार दिया कि उनका कोई एक साथी जेल से भाग आया है परन्तु वह उसका नाम नही जानता। उसने यह भी बताया कि येगोर के यहा जाने पर उसका पता चल सकता है। पेलागेया के हृदय मे हलचल मचने लगी, उसे रह-रहकर यह ख्याल आता कि कही पावेल तो नही आ गया। वह तुरन्त येगोर के घर गई। वास्तव मे वेसोवाश्चिकोव जेल से भागकर आया था। वेसोवाश्चिकोव ने येगोर और पेला-गेया को बताया कि जेल मे पावेल ही उनका नेतृत्व करता था, सभी उसका सम्मान करते थे और अफसरो से बात करनी होती तो वही करता था। वेसोवाश्चिकोव की बाते सुनकर मा चुप रही। कभी-कभी वह येगोर के चेहरे को देख लेती जोकि अब सूजा हुआ था। येगोर अब बहुत-बहुत ज़ोर से खासने लगा था और उसका स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन बिगडता जा रहा था। मा बाज़ार से वेसोवाश्चिकोव के लिए कोट खरीद कर लाई। जब निकोलाई मा से मिला तो उसने बताया कि येगोर इवानोविच की तबीयत बहुत खराब हो गई और उसे अस्पताल ले जाया गया है। पेलागेया शीघ्रता से शलूका पहनकर अस्पताल जा पहुची। वहा कुछ देर बाद ही येगोर की मृत्यु हो गई। दूसरे दिन वह येगोर के कफन आदि की व्यवस्था करती रही। येगोर की अर्थी निकालने के लिए तीस-चालीस व्यक्ति अस्पताल के फाटक पर एकत्र हो गए थे और प्रदर्शन रोकने के लिए सशस्त्र पुलिस भी चक्कर लगाने लगी थी। जैसे ही अर्थी अस्पताल के द्वार पर आई सबने टोपिया उतारकर

सम्मान प्रकट किया। एक पुलिस-अफसर ने अर्थी पर बधे हुए लाल फीतो को काट देने की आज्ञा दी। पेलागेया को पुलिस की हरकत देखकर बहुत क्रोध आया। उसने पास मे खडे एक नवयुवक से कहा कि वे उन्हे मर्जी के माफिक अन्त्येष्टि सस्कार भी नही करने देते। कितनी शम की बात है ! उसी समय अर्थी पर बधे हुए लाल फीते तलवार से काट दिए गए। अर्थी के साथ जानेवाले लोग शोक मे डूबे स्वर से गाने लगे तो उन्हे पुलिसवालो ने रोक दिया। सभी के मन मे क्रोध उमडा पड रहा था, परन्तु कोई भी कुछ नही कह रहा था। जब अर्थी कब्रिस्तान मे पहुची ता एक नवयुवक ऊची आवाज मे येगोर की शिक्षा को कभी न भूलने की बात कहने लगा। पुलिस-अफसर ने उसे गिरफ्तार करने का आदेश दिया और पुलिसवाले भीड को चीरते हुए वक्ता की ओर बढ चले। लोगो ने उसे घेरा बनाकर अपने बीच मे कर लिया और नारे लगाने लगे। अन्त मे पुलिस ने उस नवयुवक को घेर ही लिया और दूसरे लोगो को मार-मारकर भगाने लगे। पहले तो वे पीछे हटे। फिर चहारदीवारी की टूटी हुई लकडियो और बेतो से पुलिसवालो का सामना करने लगे। पुलिस तलवारे खीचकर उनपर टूट पडी। उसी समय निकोलाई ने कहा कि साथियो, अपनी शक्ति व्यर्थ मे नष्ट मत करो, और लोग उसकी बात मानकर वहा से भागने लगे। निकोलाई ने उत्तेजित भीड को पीछे हटाने के लिए भरसक प्रयास किया। उसी समय सोफिया एक घायल लडके का हाथ मा के हाथ मे पकडा गई और उसे घर ले जाने को कहा। पेलागेया लडके को लेकर घर चली गई।

एक बार जब पेलागेया पावेल से जेल मे मिलने गई तो उसे चुपके से एक पर्चा दे आई। पर्चे मे उससे वहा से भागने को कहा गया था और इसकी व्यवस्था उसके साथी करनेवाले थे। सोफिया ने पेलागेया को वह पर्चा दिया था। जब भी पेलागेया पावेल से मिलने जेल जाती उसी दिन साशा उससे पावेल के सम्बन्ध मे पूछने आती थी। इस बार भी वह आई और कहने लगी कि उसे आशा नही है कि पावेल जेल से भागने को राजी हो जाएगा, इसलिए वह समझा-बुझाकर उसे मनाने का यत्न करे। उससे साशा ने यह भी कहने को कहा कि उसे पावेल के स्वास्थ्य की बहुत चिन्ता है और बाहर उसके लिए बहुत काम है। साशा ने बडी कठिनाई से मा से इतना सब कहा था। पेलागेया इस बात को अच्छी तरह समझती थी कि वह पावेल से बहुत प्रेम करती है।

दूसरे दिन से ही फिर पेलागेया अपने काम मे व्यस्त हो गई। वह घोडागाडी मे बैठकर अखबार और पर्चे देने रीबिन के कस्बे की ओर चल दी। जसे ही वह अड्डे पर घोडागाडी से उतरी, उसने एक भीड देखी। उत्सुकता से उसने देखा तो बीच मे रीबिन बधे-हाथ पुलिसवालो के बीच खडा था। पेलागेया एक बार तो घबराई, परन्तु फिर सभल गई। तभी रीबिन ने अपने एक किसान साथी स्तेपान के कान मे कुछ कहा और वह मा को अपने घर लिवा ले गया। मा ने देखा कि थानेदार ने बेदर्दी से रीबिन को घूसो से पीटा, जिससे उसके मुह मे खून आ गया। किसान क्रोधित तो हुए परन्तु कुछ कर नही सके। अभी वे विद्रोह के लिए तैयार नही थे। पुलिसवाले रीबिन को गाडी मे बिठाकर शहर ले गए। पेलागेया ने उस किसान के घर पहुचकर उसे अखबार व पर्चे दे दिए। उसके लडके के सम्बन्ध मे पूछने पर पेलागेया ने बताया कि वह जेल मे है। किसान और

उसके साथी पावेल की कहानी सुनकर बहुत प्रभावित हुए। रात-भर पेलागेया वही रही और स्तेपान को अपना शहर का पता बताकर सुबह गाडी मे बैठकर शहर लौट पडी। रास्ते-भर उसे रीबिन का चेहरा याद आता रहा। घर पहुचते ही निकोलाई ने पेलागेया को बताया कि उसके पीछे वहा पुलिस ने तलाशी ली थी और उसे पेलागेया के पकड जाने का डर था। जब पेलागेया ने रीबिन की गिरफ्तारी से लेकर स्तेपान किसान के घर रुकने और अखबार तथा पर्चे पहुचा आने की बात कही तो निकोलाई चिन्तामुक्त हो गया। रीबिन की गिरफ्तारी का समाचार सुनकर निकोलाई को बहुत दुख हुआ, क्योकि वह इस तथ्य से परिचित था कि जेल मे उसे कष्ट दिया जाएगा। दूसरे दिन सुबह होने से पहले ही इगनात नामक युवक, जो कि रीबिन के साथ तारकोल के कारखाने मे काम करता था, वहा आया और रीबिन की गिरफ्तारी के बारे मे कहकर उसने रीबिन के हाथ का लिखा एक पर्चा दिया जिसे वह पकडे जाने से पहले लिख गया था। निकोलाई ने पढा। पर्चे मे लिखा था, "मा, हमारे काम से हाथ न खीच लेना और उस लम्बे कदवाली नेक औरत मे कह देना कि वह हम लोगो के बारे मे पहले मे भी ज्यादा लिखा करे। अच्छा विदा!—रीबिन।"

मा ने इगनात को बताया कि जब वह निकोल्स्कोये के अड्डे पर पहुची तब रीबिन को पुलिसवालो ने बहुत बुरी तरह पीटा। इसके पश्चात् निकोलाई ने रीबिन की गिरफ्तारी के सम्बन्ध मे एक पर्चा छपवाने का प्रबन्ध किया।

इतवार को जब पेलागेया फिर पावेल से जेल मे मिलने गई तो उसने चुपके से उसके हाथ मे एक पर्चा दिया। घर लौटने पर उसने पर्चा निकोलाई को दे दिया। वह आशा कर रही थी कि पावेल जेल से भागने की बात मान गया होगा, परन्तु निकोलाई ने पर्चा पढा "साथियो, हम भागने की कोशिश नही करेगे। हम यह नही कर सकते। हममे से कोई भी नही। अगर हम भागे तो हमारे आत्मसम्मान को धक्का लगेगा। लेकिन उस किसान की मदद करने की कोशिश करो जो अभी गिरफ्तार होकर आया है। उसे तुम्हारी मदद की आवश्यकता है। यहा उसकी बडी बुरी अवस्था है, रोज अधिकारियो से उसका झगडा होता है। वह चौबीस घण्टे तो काल कोठरी मे भी बिता चुका है। हम सब यही चाहते है कि तुम लोग उसकी सहायता करो। मेरी मा को समझा देना, उसे सब कुछ बता देना, वह समझ जाएगी ।"

पेलागेया पावेल की बातें पहले ही समझती थी, परन्तु मा का हृदय यह मानने को तैयार नही था कि वह जेल से नही भागेगा। पावेल के ऊपर पेलागेया को पूरा भरोसा था। वह जानती थी कि वह जो करेगा, ठीक ही करेगा। अपने बेटे की इच्छा पूरी करना और उसके काम मे सहयोग देना पेलागेया अपना धर्म समझने लगी थी। उसने निकोलाई से कहा भी कि पावेल उसका बहुत ध्यान रखता है। उसने उसे समझाने को लिखा था। निकोलाई ने पावेल की प्रशसा की। वह हृदय से उसका संम्मान करता था। पेलागेया ने निकोलाई से रीबिन की सहायता करने के लिए कोई योजना बनाने को कहा। वैसे पावेल के उत्तर से पेलागेया भारी थकन अनुभव कर रही थी। साशा के आने पर उसने सारी बातें उसे बताईं और रीबिन के बारे मे भी कहा। साशा उसे जेल से भगाने की योजना

बताने लगी। तीसरे दिन ही साशा ने बताया कि रीबिन को जेल से भगाने की तैयारी पूरी हो गई है। उसने यह भी बताया कि रीबिन को छिपाने के स्थान और कपडो की व्यवस्था उसने कर दी है। साशा ने कहा कि गोबून और वेसोवाश्चिकोव उनकी सहायता करेंगे। पेलागेया उस दिन उनके साथ गई और जेल के पासवाले कब्रिस्तान की चहारदीवारी के पास छिपकर खडी हो गई। पेलागेया ने देखा कि एक आदमी बत्ती जलानेवालो की तरह कधे पर सीढी रखे आया और उसने सीढी जेल की दीवार के सहारे लगा दी। सीढी पर चढकर उस आदमी ने हाथ घुमाकर सकेत किया और दीवार पर एक व्यक्ति का सिर दिखाई दिया। वह रीबिन था। उसके बाद ही एक और आदमी दीवार से सीढी पर आया और उतरकर एक तरफ को भागा। रीबिन को देखकर पेलागेया धीरे-धीरे बोली भागो! भागो!! उसी समय जेल मे सिपाहियो की सीटिया बजने लगी तथा उनके भागने की आवाज़ सुनाई देने लगी। पेलागेया जिस काम को इतना कठिन समझ रही थी वह कितनी सरलता से हो गया था। वह सोच रही थी कि रीबिन की तरह पावेल भी जेल से भाग सकता था। धीरे-धीरे मा वहा से चल दी। घर आकर उसने निकोलाई को रीबिन के भागने का वृत्तान्त सुनाया। निकोलाई ने कहा कि उसे पेलागेया की बहुत चिन्ता थी कि कही वह पकडी न जाए। पेलागेया अब भी पावेल के मुकदमे से बहुत डरती थी। निकोलाई ने उसे समझाया कि वह मुकदमे से डरना छोड दे। पेलागेया ने बताया कि वह स्वय नही जानती कि वह क्यो डरती है। वास्तव मे उसका पूरा जीवन भय और चिन्ता मे ही बीता था। अब एकदम उनसे मुक्त होना उसके हाथ की बात नही थी। उसने स्पष्ट कह दिया कि उसे रह-रहकर यह विचार आता है कि मुकदमे मे न जाने क्या होगा। उसने यह भी कहा कि उसे सज़ा से डर नही लगता कि पावेल को क्या सजा मिलेगी। डर तो मुकदमे की कार्यवाही से लगता है। निकोलाई ने पहले ही पेलागेया को बता दिया था कि पावेल और उसके साथियो को साइबेरिया भेजने का दड दिया जाएगा, ऐसा समाचार उसे विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ था।

जैसे-जैसे मुकदमे का दिन निकट आता जा रहा था, पेलागेया का भय बढता जाता था। मुकदमे के दिन अदालत जाते समय तो उसके लिए सिर उठाकर चलना भी कठिन हो गया था। अदालत के बाहर और बरामदे मे उसे उन लोगो के सम्बन्धी मिले, जिनपर कि मुकदमा चलाया जा रहा था। वह सिजोव के पास जाकर बेच पर बैठ गई और मुकदमे की कार्यवाही देखने लगी। एक सिपाही के पीछे-पीछे पावेल, आन्द्रेई, फ्योदोर माज़िन, गुसेव नामक दोनो भाई, समोइलोव, बूकिन तथा सोमोव आदि आए और कठघरे मे रखी बेच पर बैठ गए। सबके चेहरो पर मुस्कराहट थी। कोई भी मुकदमे से डरा नही था। जजो ने उनसे प्रश्न पूछे, जिनका वे निर्भीकता से उत्तर देते रहे। बीच-बीच मे वकील भी कुछ बोलते जाते थे। इसके बाद कुछ समय के लिए अदालत उठ गई और सब लोग आपस मे बाते करने लगे या बाहर चाय पीने चले गए। कैदियो के सम्बन्धी उनसे बातें करने लगे। थोडे समय मे ही फिर जज लोग कुर्सियो पर आ बैठे और कार्यवाही आरम्भ हो गई। सरकारी वकील सभी कैदियो पर आरोप लगाता रहा। फेदोसेयेव, मारकोव और जगारोव की ओर से सफाई का वकील बोला। पेलागेया समझती थी कि उसके बेटे

और दूसरे लोगो का फैसला ईमानदारी से किया जाएगा, परन्तु जजो की भावहीन सूरत और वकीलो की ऊल-जलूल बातो ने उसे निराश कर दिया। अब मुकदमे की कार्यवाही मे उसे रुचि नही रही। अन्त मे पावेल और उसके साथी एक-एक करके बोलने खडे हुए। पावेल ने अपनी सफाई मे कुछ भी कहने से इन्कार कर दिया और समाजवादी दल के सम्बन्ध मे तथा जारशाही के दोषो के सम्बन्ध मे विस्तार से बोलने लगा। जजो ने पहले तो उसे टोका परन्तु वे फिर चुपचाप सुनने लगे। पावेल ने कहा

"हम क्रान्तिकारी है और उस वक्त तक क्रान्तिकारी रहेगे जब तक इस दुनिया मे यह हालत रहेगी कि कुछ लोग केवल आदेश देते है और कुछ लोग केवल काम करते है। हम उस समाज के विरुद्ध है जिसके हितो की रक्षा करने की आप जज लोगो को आज्ञा दी गई है। हम उसके कट्टर शत्रु है, और आपके भी, और जब तक इस लडाई मे हमारी जीत न हो जाए, तब तक हमारा कोई समझौता सम्भव नही है।"

जज, कैदी और दर्शक तथा वकील सभी पावेल का उत्तेजक भाषण सुन रहे थे। उसने जारशाही को खूब खरी-खरी सुनाई। पेलागेया इस बात से खुश थी कि पावेल इतनी निर्भीकता से बोला, फिर भी वह फैसले से डर रही थी। पेलागेया पावेल की बातो से अपरिचित नही थी। वह बहुत बार उन्हे उसके मुह से सुन चुकी थी। पावेल के बाद आन्द्रेई, समोइलोव, माजिन आदि से सफाई के सम्बन्ध मे पूछा गया, और वे भी इसी तरह कुछ कहकर बैठ गए। अन्त मे बडे जज ने देश-निकाले का दड सुना दिया। जैसे ही पेलागेया अदालत से बाहर निकली, बहुत-से नवयुवक और नवयुवतियो ने उसे घेर लिया। सभी मुकदमे की कार्यवाही और सजा के सम्बन्ध मे पूछने लगे। पेलागेया को पावेल व्लासोव की मा जानकर तो सभी पावेल के साहस की प्रशसा करने लगे। कोई-कोई उससे हाथ भी मिलाने लगे। लोगो ने 'रूसी मजदूर जिन्दाबाद' के नारे लगाने भी प्रारम्भ कर दिए। पुलिस की सीटिया बजती रही, परन्तु नारे बन्द नही हुए। पेलागेया अपने बेटे का इतना सम्मान देखकर अपनी व्यथा भूल गई और हर्ष के आसू उसकी आखो मे छलछला आए। उसी समय एक व्यक्ति जारशाही के विरुद्ध भाषण देने लगा। तभी साशा वहा आई और पेलागेया को हाथ पकडकर दूर ले गई। उसने कहा कि गिरफ्तारी शुरू होने से पहले ही उसे वहा से चला जाना चाहिए। साशा ने पेलागेया से पावेल के भाषण के बारे मे पूछा कि वह कैसा बोला और यह भी बताया कि उसका काम सभालने-वाला आदमी मिलने पर वह भी शायद साइबेरिया चली जाए। उसने मा को साफ-साफ बताया कि उसे भी सजा सुनाई जानेवाली है और उसे भी साइबेरिया भेजा जा सकता है। मा चुपचाप साशा की बात सुनती रही और पावेल के प्रति उसके प्रेम के बारे मे सोचती रही। उसे साशा पर बहुत तरस आने लगा। वहा से साशा और पेलागेया निकोलाई के घर आई, और पेलागेया कुछ देर तक उससे बाते करती रही, फिर लुद्मीला के घर चली गई। वह इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रख रही थी कि कोई उसका पीछा तो नही कर रहा। लुद्मीला को उसने पावेल के भाषण का पर्चा देकर छाप देने को कहा। वही उनके पर्चो को छापा करती थी। पेलागेया तो थकन के मारे सो गई और लुद्मीला भाषण को छापने का प्रबन्ध करने लगी। दूसरे दिन, उसने मा को काफी पर्चे छापकर दे दिए।

इसी बीच निकोलाई गिरफ्तार कर लिया गया था, यह समाचार भी लुद्मीला ने ही पेलागेया को सुनाया। लुद्मीला ने मा से कहा,"तुम भी कितनी भाग्यवान हो ! मा और बेटे का कन्धे से कन्धा मिलाकर साथ चलना कितनी शानदार बात है और ऐसा बहुत कम ही होता है।"

पेलागेया ने धीमे स्वर मे कहा, "हमारे बच्चे दुनिया मे आगे बढ रह है। मै तो इसे इसी तरह देखती हू, वे सारी दुनिया मे फैल गए है और दुनिया के कोने-कोने से आकर एक ही लक्ष्य की ओर बढ रहे है। हमारे बच्चे सचाई और न्याय के पथ पर चल रहे है।" पेलागेया अब पावेल के लक्ष्य को समझने लगी थी। वह उसके साथियो की सद्भावना से परिचित हो गई थी। वह अधिक तो नही जानती थी, परन्तु सुन्दर भविष्य का चित्र उसकी आखो मे भी घूम जाता था। लुद्मीला ने उससे कहा कि उसके साथ रहकर उसे बहुत खुशी होती है।

अब पावेल के भाषण को बाटने का काम पेलागेया को करना था। गाडी से दूर-दूर उसे अपने बेटे का भाषण पहुचाना था। वह गाडी के समय से पहले ही स्टेशन जा पहुची। मुसाफिरखाने की एक बेंच पर जाकर पेलागेया बैठ गई, और कुछ देर बाद ही एक नवयुवक सकेतवाक्य सुनने के बाद उसे पर्चो का बक्सा दे गया। अब पेलागेया को भय लगने लगा था कि कोई उसपर निगाह तो नही रख रहा है। एक बार तो उसके मन मे प्रश्न उठा कि क्या वह पावेल के भाषण के पर्चो से भरा बक्सा छोडकर चली जाए ? परन्तु फिर वह साहस बटोरकर वही बेठी रही। उसने बक्सा मजबूती से हाथ मे पकडे रखा। कुछ देर बाद ही एक जासूस उसको देखकर लौट गया। उसने शाति की सास ली, परन्तु थोडी देर मे ही वह गार्ड के साथ फिर लौटा। गार्ड उसे घूरने लगा। मा को डर लग रहा था कि कही वे उसे पीटे नही। गार्ड ने उससे कहा, "अच्छा यह बात है। चोर कही की ! इस उम्र मे यह सब करते शर्म नही आती ?" तो पेलागेया क्रोध से काप उठी और झटका लगने से बक्सा खुल गया। वह और कोई चारा न देखकर चिल्लाने लगी, "कल राजनीतिक कैदियो पर एक मुकदमा चलाया गया था और उनमे मेरा बेटा पावेल व्लासोव भी था। उसने अदालत मे एक भाषण दिया था, यही वह भाषण है। मैं इसे जनता के पास ले जा रही हू ताकि वे इसे पढकर सचाई का पता लगा सकें।" और पर्चो की गड्डिया उछाल-उछालकर लोगो की ओर फेकने लगी। उसके चारो ओर भीड लग गई और वह पर्चे बाटती रही। तभी सशस्त्र सिपाही आए और पीट-पीटकर भीड को तितर-बितर करने लगे। लोग पेलागेया से भाग जाने को कहने लगे, परन्तु वह गई नही। वह शासन के अत्याचारो और अपने बेटे तथा उसके साथियो के उद्देश्य आदि के सम्बन्ध मे उन्हे बताने लगी। जितना वह जानती थी वही बताती रही। भर्राए हुए गले से वह बोली,"मेरे बेटे के शब्द एक ऐसे ईमानदार मजदूर के शब्द है जिसने अपनी आत्मा को बेचा नही है। ईमानदारी के शब्दो को आप उसकी निर्भीकता से पहचान सकते है " इसी समय किसी सिपाही ने उसकी छाती पर जोर से घूसा मारा और वह बेच पर गिर पडी। अब सिपाही भीड को पीछे धकेलने लगे थे। अपनी बची हुई शक्ति से पेलागेया फिर बोलने लगी तो सिपाहियो ने उसे थप्पड और घूसो से मारना प्रारम्भ कर

दिया। उसकी आखो के आगे अधेरा छा गया और उसके मुह से रक्त आ गया। बहुत-से लोग सिपाहियो से कहने लगे खबरदार जो उसे हाथ लगाया। वे हमारे दिमाग का तो खून नही कर सकते !

परन्तु पेलागेया पर थप्पड और घूसे बरसते रहे। यह बोलती रही, "रक्त की नदिया भी बहा दो, तो सचाई उसमे नही डूब सकती !" तभी एक सिपाही उसकी गर्दन पकडकर गला घोटने लगा, फिर भी वह बोली, "कमबख्तो ! "

मा अपने बेटे के पथ पर चलती हुई, उसके काम को आगे बढाने के लिए प्राण न्योछावर कर रही थी।

गोर्की का यह उपन्यास विश्वविख्यात है। वर्ग-सघर्ष और दलितो की यातना को इसमें बडी कलात्मकता के साथ दिखाया गया है। मा का चरित्र बहुत ही ममतामय, दृढ और उदात्त है। मजदूर वर्ग का ऐसा चित्रण गोर्की के अतिरिक्त और कोई नहीं कर सका।

धरती माता

[द गुड अर्थ[1]]

बॅक, पर्ल एस०   अग्रेज़ी उपन्यासकार पर्ल एस० बॅक का जन्म सन् १८९२ में वेस्ट वर्जीनिया में हुआ। चार मास की थी, तब पिता चीन के चिनकियाग प्रात में जा बसे, और बालिका पर्ल उसी वातावरण में पली। चीन में ही आपकी शिक्षा-दीक्षा हुई। अमरीका पर्ल में कोर्नल तथा रेडॉल्फमैकन से आपने उच्चशिक्षा की डिग्रियाँ प्राप्त कीं। फिर आप एक मिशनर बनकर चीन लौट गई और वहीं अग्रेज़ी पढाने लगी। नान्किंग विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जे० लॉसिंग बॅक से आपने विवाह कर लिया। सन् १९२७ में जब चीन में दगे हो गए तो पति-पत्नी बडी कठिनाई से वहा से बचकर निकल सके। तब आप अमरीका लौट आईं।

'द गुड अर्थ' (धरती माता) का प्रकाशन सन् १९३१ में हुआ। यह उपन्यास बहुत अधिक बिका। इसमें जापानी आक्रमण-काल तक के जीवन का चित्रण किया गया है। इस उपन्यास पर श्रीमती बॅक को नोबल पुरस्कार भी मिल चुका है, और पुलिट्ज़र पुरस्कार भी। 'द गुड अर्थ' (धरती माता) ससार के विख्यात उपन्यासों में से एक है।

वाग लुग किसान था। उसके पिता ने उसके लिए वधू ढूढ ही दी। वह हवाग के धनी घराने मे एक दासी थी। वधू के लिए सौन्दर्य आवश्यक नही था, वह घर-गिरस्ती सभाल सके, बच्चो को जन्म दे सके, खेतो मे काम कर सके, तन्दुरुस्त हो—यही देखना आवश्यक था। वाग लुग ने जब अपनी पत्नी को उत्सुकता से देखा तो उसे सतोष हुआ कि उसकी पत्नी के चेहरे पर चेचक के दाग नही थे और उसको हुठकटी भी नही कहा जा सकता था। वैसे उसे 'चोखी' कहा जा सकता था।

वधू का नाम था ओ-लैन। वह लम्बी और मज़बूत औरत थी, और नीला कोट और पजामा पहनती थी। मुह ज़रा छोटा था, जिसपर नाक कुछ चपटी थी, आखे काली थी। वह बडी ईमानदारी से मेहनत करती थी। एक बार जब अकाल पडा था, तब दस साल की उम्र मे, उसके माता-पिता उसका भरण-पोषण करने मे असमर्थ हो गए थे, और तब उन्होंने हवाग के धनी घराने मे उसे एक दासी के रूप मे बेच दिया था।

पति-पत्नी मे विशेष कोई बात नही हुई, क्योकि ओ-लैन बात अधिक नही करती थी। वाग लुग उसे खेतो पर ले गया। वही निवासस्थान था, और वधू ने ही शादी की दावत का सब सामान तैयार कर दिया। वाग लुग के चाचा वहाँ मेहमान के रूप मे

---

१ The Good Earth (Pearl S Buck)

उपस्थित हुए। वे बडे मजाकिया तबियत के आदमी थे। बडे चालाक थे और काम-धाम के बारे मे बिलकुल बेकार थे। चाचा का बेटा पन्द्रह बरस का था—उद्दड और झगडालू। पडोसी चिग के अतिरिक्त कुछ और भी किसान थे।

बहू ने ही रसोई से खाना तैयार करके वाग के हाथो दिया और वाग ने परोसा। नई बहू का सुहागरात के पहले सबके सामने जाना ठीक भी नही था। जब सब चले गए तो वाग ने अपने-आपसे कहा यह औरत मेरी है, और अब मुझे इससे सम्बन्ध स्थापित करना ही होगा। तदुपरात उसने बिना किसी हिचकिचाहट के अपने वस्त्र उतारे। वह भी विरोधहीन ही रही। वाग हसा और उसके बाद वे पति-पत्नी बन ही गए। यो उनके जीवन का प्रारम्भ हुआ। अधिक बातचीत की कोई आवश्यकता नही हुई।

सुबह हो गई। वह गर्म पानी ले आई। उसने कुछ पानी वाग को दिया और कुछ उसके पिता को। वाग खेत पर चला गया। जब वह लौटा तो खाना तैयार मिला। वह लकडियाँ-ईंधन इकट्ठा कर लाती। दोपहर मे वह बाहर चली जाती और खाद के लिए बडी सडक पर जाते घोडो और खच्चरो की लीद अपनी डलियो मे भर लाती।

एक दिन वह फावडा लिए खेत मे आ गई। बोली आज रात तक घर मे कोई काम बाकी नही है, और वही कुडो मे उसके साथ काम करने मे जुट गई। धीरे-धीरे सूर्य अस्त हो गया, और जब वाग ने काम बद करके देह को सीधा किया, उसने अपनी पत्नी की ओर देखा जो पसीने से तर थी और उसपर जगह-जगह भूरी मिट्टी लग गई थी। क्षण-भर उसे लगा जैसे उस मिट्टी और उसकी पत्नी की देह के रग मे कोई भेद नही था। बहुत ही बेतकल्लुफी से स्त्री ने कहा, "मैं गर्भवती हू।" इस तरह कई मास बीत गए।

एक दिन खेत मे उसने वाग से कहा, "बच्चा पैदा होनेवाला है। तुम एक ताज़ा छिला हुआ नरकुल ले आओ, ताकि मै बच्चे की नाल काट दूगी।"

जब वाग घर लौटकर आया तब उसकी स्त्री खाना बना चुकी थी। दरवाजा जरा खुला हुआ था। उसने उसीसे नरकुल बढा दिया। स्त्री ने उसे थाम लिया। उसके बाद वाग ने सुना वह भीतर कराह रही थी। फिर गर्म लहू की सी गध आई। फिर एक कोमल रुदन सुनाई दिया।

वाग लुग ने आवेश से पूछा, "क्या लडका हुआ है ?'

ओ-लैन की धीमी-सी आवाज़ सुनाई दी, "हा, लडका है !"

अगले दिन ही ओ-लैन उठ खडी हुई और उसने खाना पकाया। कुछ दिन बाद वह फिर खेतो मे काम करने आ गई।

नया साल आया। दोनो ही गर्व से ह्वाग के धनी घराने मे जा पहुचे। घराने मे बडी शाहखर्ची थी, जो दिन-ब-दिन बढती जा रही थी और अब बरबादी के लक्षण प्रकट होने लगे थे। ज़मीन बिक रही थी। एक टकडा वाग लुग ने भी खरीद लिया।

वसन्त की हवा चलने लगी। ओ-लैन फिर से गर्भवती हो गई। शरद् ऋतु आने पर वह फिर घर चली गई, उसने फावडा खेत मे ही छोड दिया। रात अभी झुकी नहीं थी, जब वह खेत मे लौट आई और उसने सहज ही कहा, "एक लडका और हो गया।"

इस वर्ष वाग लुग ने ह्वाग के धनी घराने से कुछ और अधिक भूमि खरीदी।

दस महीने बीत गए। वाग लुग का चाचा अब भी वैसा ही फोकटी था। वह रुपये उधार ले गया और वाग लुग को देने पडे। ओ-लैन के अबकी बार एक लडकी पैदा हुई। आकाश मे काले कौए उडते नज़र आए। यह सब अपशकुन थ, जिनका अर्थ था कि आने-वाले दिन अच्छे नही थे।

सूखा पडने लगा। खेत सूख चले। पर ओ-लैन फिर गर्भवती थी। फिर से चाचा कर्ज मागने आ गया और वाग लुग के पास अब रुपये नही थे। कुछ चावल थे तथा कुछ सेम और बोडा थे। दिन पर दिन यह भी कम होते जा रहे थे। लेकिन चाचा तब ही हटा जब कुछ ले गया। वह इतना फोकटी था कि फिर मागने लौट आया। पर अब वाग लुग के पास कुछ भी नही बचा था। चाचा ने पडोसियो को भडका दिया कि वाग लुग ने अपने पास नाज छिपा रखा है, और ऐसे समय मे भी मिल-बाटकर खाने से इनकार कर रहा है। भूखे पडोसी उत्तेजित हो गए। चाचा की बातो मे पडोसी चिग भी आ गया। भूख, भूख ने सबको व्याकुल कर दिया था। और तब सब भूखो ने उसके घर पर हमला कर दिया। परन्तु घर मे सचमुच कुछ नही था। उन्होने काफी सामान नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।

ओ-लैन ने फिर एक शिशु को जन्म दिया। किन्तु जब वाग लुग उसे देखने भीतर गया, धरती पर उसे एक अत्यन्त जर्जर, क्षीण, मृत देह दिखाई पडी।

अब कुछ भी शेष नही था। तब परिवार ने अपने काठ-कबाड को बेचा, और फिर वे रेल की ओर चल पडे। अन्हवई से वे कियागसू पहुचे। वाग लुग एक रिक्शा खीचने लगा। ओ-लैन और बच्चे पथ पर भीख मागने लगे। ओ-लैन बच्चो को भीख मागने की तरकीबे सिखाने लगी। वे पहले वाग लुग के पिता को खिलाते, तब ही बाकी लोगो के पेट मे कुछ जाता। वाग लुग के बडे बेटे ने मजबूरी मे चोरी की। जब वाग लुग को पता चला तो उसने उसे खूब मारा।

गरीबो मे फौज की भर्ती चल पडी थी। दूर कही युद्ध हो रहा था। लोग जबरन भी पकडे जाते थे। वाग लुग डर गया और उसने दिन मे रिक्शा चलाना छोड दिया। वह रात के अधेरे मे गाडिया ढोने लगा।

गरीबो का हाहाकार दिन पर दिन बढता चला जा रहा था। विशाल प्राचीरो के भीतर धनी लोग और भी अधिक धनी होते चले जा रहे थे और बाहर भीडे भूखी मर रही थी। अन्त मे सहिष्णुता की सीमाए टूट गई। भूख के जादू ने भीड मे हलचल भर दी और गरीबो ने धनिको के भवनो पर आक्रमण कर दिया। उस भीड मे वाग लुग भी टूट पडा। और उसको मिला एक मोटा-सा डरपोक आदमी। प्राण-भय से उसने वाग लुग को सोना दिया, ताकि वागलुग उसे जान से न मारे। सोना पाकर वाग लुग लौट आया।

धन आते ही वे सब फिर घर लौट आए। एक रात वाग लुग को लगा जैसे ओ-लैन के वक्ष के पास कुछ छिपा कर रखा गया था। उसने देखा। एक थैली थी, जिसमे रत्न भरे हुए थे। जब कियागासू मे भीड ने हमला किया था, तब एक भवन मे कुछ ईंटे ढीली-सी नज़र आई थी। उन्हे सरकाने पर उसमे से यह थैली मिल गई थी।

वाग लुग ने वे रत्न ले लिए। ओ-लैन ने उससे दो मोती अपने मूक अनुनय द्वारा माँगे। वाग लुग ने मोती उसके लिए छोड दिए।

कुक्कू ह्वाग के धनी घराने की चालाक दासी थी। और बाकी सब नौकर बिना तनख्वाह के भाग चुके थे, क्योकि बडा घराना दिन पर दिन बरबादी की तरफ तेज़ी से बढ रहा था। वाग ने कुक्कू की मदद से ह्वाग घराने की जमीनें खरीद डाली।

एक बार लूटने और कुछ न पाने पर पडोसी चिग के मन मे एक प्रकार की लज्जायुक्त ग्लानि भर गई थी। अब वह अकेला रह गया था। उसकी पत्नी मर चुकी थी। वाग ने उसे अपने खेतो की देखभाल करने के लिए रख लिया।

ओ-लैन के जुडवा सन्तान हुई—एक लडका, एक लडकी।

अब पता चला कि वाग लुग की बडी लडकी गूगी थी। सारे परिवार को दु ख हुआ, किन्तु कोई उपाय नही था। वाग लुग उसे 'बेचारी गाबदू' कहता, परन्तु लडकी फिर भी न बोल पाती।

पाच वर्ष बीत गए। अब वाग लुग एक धनी व्यक्ति था। किन्तु फिर भी वह अशिक्षित था। उसे यह बात अखरती थी। उसने अपने बडे लडके को पढ़ने भेज दिया। दो वर्ष और व्यतीत हो गए। बाढे आईं, परन्तु उन्होने सारे तूफानो और मुसीबतो का सामना किया। धन का तो अभाव ही न था।

एक दिन जबकि खेतो मे पानी भरा था, काम बद था, वाग को कुक्कू मिली। वह थी चालाक और तर्राट। अब बडे घराने मे उसके लिए कोई काम नही रह गया था। वह वेश्याओ की दलाल हो गई थी। वह उसे फुसलाकर ले गई और उसने लोटस (कमल) नामक सुन्दरी से उसकी मुलाकात करा दी। लोटस उतनी युवती नही थी, किन्तु किसान ही तो था वाग। वह उसकी नज़ाकत और नखरो से फस गया। उसने अपने शरीर मे सुगन्धि लगाई। अपनी चुटिया काट डाली और आधुनिक बन गया। और तब उसने ओ-लैन पर निगाह डाली। वह घरेलू औरत! उसके पाव कितने बडे और कुरूप थे! उसका पेट कैसा निकल आया था! ऐसी औरत को अब प्यार करना वाग के लिए असभव था। ओ-लैन ने उसके कटे बाल देखे तो आतक से थर्रा उठी। वाग को स्वय अपने ऊपर झुझलाहट थी कि वह उस स्त्री के प्रति अब किसी प्रकार के अनुराग का अनुभव नही करता था। उसने वह दोनो मोती भी ओ-लैन से ले लिए और लोटस को भेट कर दिए। ओ-लैन ने इसे भी चुपचाप सह लिया।

वाग लुग का चाचा लौट आया। वाग कुछ भी नही कह सका। समाज के नियमानुसार उसे अपने यहा टिकाने को वह बाध्य हो गया। उसकी मोटी औरत भी आ गई और उसका बेकार नालायक लडका भी वही आ गया, जोकि वासना से विह्वल रहता था। चाची ने जब वाग मे लोटस के प्रति ऐसी अनुरक्ति देखी तो उसने कुटनी का काम किया और वह लोटस को घर पर ही ले आई। इस रखैल के साथ घर मे आ घुसी कुक्कू। ओ-लैन को एक गहरे विषाद ने घेर लिया किन्तु वह विरोध नही कर सकी।

वाग के वैभव ने भी उसे टोका नही। वह निरतर उसी प्रकार उसके खेतो और घर मे काम करती रही और वाग उधर लोटस के आगन मे रगरेलियो मे उलझा रहने

लगा।

ओ लैन को लोटस से इतनी घृणा नही थी जितनी कुक्कू से थी, क्योकि बडे घराने मे रहते समय कुक्कू ने ओ-लैन को पीटा था। वाग का वृद्ध पिता जब भी लोटस को देखता, चिल्ला उठता—'वेश्या ! वेश्या !' बच्चे भी लोटस की ओर मँडराते-बकते।

धीरे-धीरे बाढ का पानी उतर गया। वाग खेतो पर लौट गया और धरती माता को देखकर उसमे फिर से नई स्फूर्ति लौट आई। तब उसने लियू नामक व्यापारी की लडकी से अपने बडे बेटे की शादी का प्रबन्ध कर दिया।

चाचा के परिवार की मागे बढती जा रही थी। वे वाग को चूसे जा रहे थे। नशा अलग, खाना अलग। तग आकर उसने चाहा कि चाचा को निकाल बाहर करे, पर तभी उसे पता चला कि इलाके मे जगह-जगह डाके डालनेवाले लुटेरे चाचा के गिरोह के लोग थे। बल्कि चाचा की उपस्थिति के कारण ही अभी तक वह डाकुओ से बचा हुआ था। भय से वाग काप उठा। उसने चाचा से कुछ भी कहना, अपनी मौत को निमत्रण देना ही समझा।

इसके बाद एक नई मुसीबत आ खडी हुई। आकाश मे टिड्डिया छाने लगी। वाग अपनी सारी शक्ति लगाकर जुट गया। जगह-जगह गडढे खोदकर उनमे आग लगाई जाने लगी। धुए की भीते उठने लगी और टिड्डियो से युद्ध होने लगा। अत मे मनुष्य ने विजय प्राप्त की।

अब वाग के बडे लडके ने दक्षिण जाना चाहा ताकि वह वही पढ सके, किन्तु वाग ने अस्वीकार कर दिया। इन्ही दिनो उसे पता चला कि बडे लडके का कुछ अनुचित सम्बन्ध लोटस से होने को था। वाग क्रोध से पागल हो उठा। उसने बडी निर्दयता से पुत्र को पीटा और उसे दक्षिण भेज दिया। दूसरे लडके को उसने लियू के पास रख दिया कि वह व्यापार का काम सीख सके। और उसने यह भी निश्चित कर दिया कि उसकी जुडवा सन्तान वाली लडकी का किसी दिन भविष्य मे लियू के दसवर्षीय पुत्र से विवाह हो।

अब वह ओ-लैन पर ध्यान देने लगा, किन्तु वह तभी बीमार पड गई। वसत लगते ही ओ-लैन ने अपने बडे बेटे और होने वाली वधू को बुलवाया। दावतो के साथ शादी हो गई। तब ओ-लैन का देहान्त हो गया। उस समय वाग ने अनुभव किया कि उसे वे दोनो मोती उससे नही छीनने चाहिए थे। वाग का वृद्ध पिता इस ससार से उठ गया और बहू तथा ससुर की मनभावनी धरती मे एक पहाडी पर कब्रे बना दी गई।

समय की दौड मे फिर बाढ और अकाल आ गए। इतने भयानक, जैसे पहले कभी नही आए थे। वाग ने एक दिन चुपचाप अपने चाचा और चाची को अपने विरुद्ध षड्यन्त्र रचते सुन लिया। वाग के बडे बेटे ने सलाह दी कि दोनो को खत्म करने के लिए उन्हे अफीम की आदत लगा देना आवश्यक था। चाचा का बेटा भी मौजूद था और उसके सामने घर की औरतें भी जाने से डरती थी। यहा तक कि वाग की छोटी बेटी भी उसके सामने नही जाती थी।

काढ उतर गई। इस दौरान कई लोगो ने अपनी लडकिया बेच डाली। वाग ने भी पाच दासिया ख़रीद ली। पियर ब्लॉसम (प्रफुल्ल नासपाती-फल) नामक लडकी उसने लोटस की सेवा मे रख दी। किंतु वाग का बडा बेटा अभी तक वाग के चाचा से भयभीत था। इसलिए वाग ने ह्वाग के बडे घराने के विशाल भवन को खरीद लिया। एक दिन वाग यही ओ-लैन को लेने गया था। वाग का दूसरा पुत्र व्यवहारकुशल था। उसने अपने लिए एक कुशल गृहिणी की माग की। वाग को अपने इस पुत्र की व्यवहार-दक्षता पर आश्चर्य हुआ। बडे बेटे की फिजूलखर्ची उसे अखरने लगी, क्योकि छोटा भाई बडे भाई से इसी बात पर अप्रसन्न था। बडा भाई अधिकार जमाना चाहता था। छोटा डरता था कि कही बटवारा होने के पहले ही वह सारी जायदाद को बरबाद न कर दे।

वाग के चाचा के बेटे ने रुपये मागे और वह युद्ध मे दूर देश चला गया।

वाग के बडे बेटे का पुत्र पैदा हुआ। उस समय चारो ओर हलचल मच रही थी। वाग को ओ-लैन के पहले प्रसव की याद हो आई।

चिंग बूढा हो चला था। अत्यधिक परिश्रम से उसकी शक्ति क्षीण हो गई और वाग को अत्यन्त दु खी करता हुआ वह सदा के लिए इस ससार को छोडकर चला गया।

वाग अपना हुक्का पीता रहता, किंतु उसके मन मे शाति नही थी। उसका तीसरा बेटा जवान हो रहा था। वाग की इच्छा थी कि उसे ही खेतीबाडी दे-दे। किंतु वह विद्रोह करने लगा। वाग ने उस पर एक मास्टर लगा दिया।

चार वर्ष मे चार नाती, तीन नातिने आई और घर भर चला। वाग के मन को कुछ सतोष मिलने लगा। तभी उसका चाचा मर गया। चाची बडे घर मे अपनी अफीम लेकर आ धमकी, किंतु शीघ्र ही वह भी मर गई।

इन्ही दिनो सैनिक आ गए और बडे घर मे ठहरे। चाचा का बेटा भी इन्ही मे था। आगन डर से सूने हो गए और औरते छिप गईं। पियर ब्लॉसम बडी हो गई थी। चाचा के बेटे ने उसे लेने की इच्छा प्रकट की, उधर वाग का तीसरा पुत्र भी उसपर मोहित था। लोटस भी उसे चाचा के बेटे को ही देना चाहती थी। किंतु वाग ने लोटस की चिंता नही की। उसने पियर ब्लॉसम न चाचा के बेटे को दी, न अपने तीसरे बेटे को। तीसरा बेटा क्रान्तिकारियो मे जा मिला और घर छोड गया, क्योकि सत्तर वर्ष की अवस्था मे वाग ने सत्रह वर्षीय उस पियर ब्लॉसम का स्वीकार कर लिया था, जोकि अपनी इच्छा से उसके पास आ गई थी।

यद्यपि वाग के पुत्र अपने बाप का आदर करते थे, परतु वाग रहता था अपनी पियर ब्लॉसम और अपनी गूगी लडकी 'बेचारी गाबदू' के साथ ही। वह अपने एकात को नही छोडता था। कुछ दिन बाद वाग अपने पुराने घर मे लौट आया। पियर ब्लॉसम ने प्रतिज्ञा की वह वाग के बाद सदा ही मुस्कराने वाली गूगी लडकी 'बेचारी गाबदू' की रक्षा तथा सेवा किया करेगी।

वाग लुग वृद्ध हो गया था। एक दिन वह कूडो के बीच ठोकर खाकर गिर पडा। उसके लडके उसके मरने के बाद ज़मीन बेच देने की सलाह बना रहे थे। वाग लुग के लिए यह असह्य था। उसे पुराने दिन याद आए जब ह्वाग के धनी घराने ने धरती से

सबध तोड लिए थे और बरबाद हो गया था। वाग लुग क्रोध से काप उठा। तब उसके पुत्रो ने उसे आश्वासन दिया कि वे धरती को नही बेचेंगे। किंतु वृद्ध वाग लुग उनके हास्य मे व्यग्य नही देख सका।

और एक दिन वृद्ध वाग लुग सदा के लिए चला गया।

प्रस्तुत उपन्यास में चीन के किसानो के जीवन का चित्रण किया गया है। लेखिका का चीन से बहुत ही गहरा परिचय है। पर्ल बक ने और भी उपन्यासो में चीन का वर्णन किया है। ओ-लैन के रूप में उसने पितृसत्ता का, चीन की सहिष्णु नारी का बडा ही मार्मिक चित्रण उपस्थित किया है। वाग-लुग के चरित्र में धन और उसके प्रभाव का अच्छा परिचय मिलता है। इसमें चीन की तीन पीढियो की विभिन्न विचारधारा का बहुत ही अच्छा वर्णन है। इस उपन्यास की काया एक दीर्घ कालखड को अपने में समेट लेती है। इसमें चीन के देवी-देवता और अनेक निम्न तथा धनी लोगो के बडे ही सहज चित्र लेखिका ने उपस्थित किए हैं। इस उपन्यास को यदि एक महान गाथा भी कहा जाए तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास

तुर्गनेव

मेरा पहला प्यार

[माई फर्स्ट लव[1]]

तुर्गनेव, ईवान सर्जियेविच रूसी लेखक ईवान सर्जियेविच तुर्गनेव का जन्म ओरेल में २८ अक्तूबर, १८१८ को हुआ था और आपकी मृत्यु १८८३ में हुई। आप रूस के एक महान उपन्यासकार थे। मास्को और बर्लिन में आपकी शिक्षा हुई थी। आपने कहानिया तथा नाटक भी लिखे है। आपकी भाषा बहुत अच्छी थी। दृश्य-चित्रण में आप बहुत ही कुशल थे। आपकी रचनाओं से रूस का जार इतना प्रभावित हो गया था कि उसने १८६१ में रूस से दास-प्रथा हटा दी थी, क्योंकि आपने खेतिहर दासों के करुणा-भरे दु खी जीवन का चित्रण किया था।

'मेरा पहला प्यार' ('माई फर्स्ट लव' अग्रेजी नाम) आपके प्रसिद्ध लघु उपन्यासों में गिना जाता है।

यह ब्लादीमीर पेत्रोविच द्वारा कही हुई उसीकी कहानी है। उन दिनो ब्लादीमीर पेत्रोविच की आयु सोलह वर्ष थी और वह अपने माता-पिता के साथ मास्को नगर से बाहर नैसकुशनी बाग के पास देहात मे एक किराये के मकान मे रहता था। वह यूनिवर्सिटी की परीक्षा की तैयारी भी कर रहा था। उसकी माता मारिया निकोलाइवना उसके पिता प्योत्र वेसलेविच से दस वर्ष बडी थी। पिता की आयु चालीस से ऊपर हो चुकी थी। माता सदैव परेशान और उदास रहा करती थी, वह ईर्ष्याग्रस्त भी थी। पिता प्योत्र वेसीलेविच सुन्दर और युवक लगते थे। मारिया निकोलाइवना से उन्होने धन के लोभ मे ही विवाह किया था। दोनो ही ब्लादीमीर के प्रति उदासीन रहते थे, वैसे वह उनका इकलौता लडका था। माता-पिता से छूट मिलने के कारण ब्लादीमीर नैसकुशनी के बागो और मैदानो मे घूमा करता और अपने टट्टू पर सवार होकर दूर-दूर तक चक्कर लगाया करता। कुछ दिन पश्चात् ही उसकी दिनचर्या मे विचित्र परिवर्तन आ गया। उनके पडोस के खाली मकान में प्रिंसेज जैसेकीना नामक महिला रहने लगी। वह बस नाम-मात्र की प्रिंसेज थी। उसके पास न तो अपनी गाडी थी और न ही अच्छा फर्नीचर। फिर भी जब मारिया निकोलाइवना को अपने पडोसियो के सम्बन्ध मे मालूम हुआ तो वह खुश हुई। ब्लादीमीर ने उस ओर विशेष ध्यान नही दिया। एक दिन वह बन्दूक

---

१. My First Love (Ivan Turgenev)—इस उपन्यास का अनुवाद 'मेरा पहला प्यार' नाम से हिन्दी में छप चुका है; अनुवादक—शिवदानसिह चौहान एव श्रीमती विजय चौहान; प्रकाशक—राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली।

लेकर कौओ के शिकार को गया तो बाग मे उसने प्रिंसेज जैसेकीना की लडकी जिनेदा को देखा। वह दुबली-पतली, लम्बी लडकी गुलाबी रग की धारीदार पोशाक पहने और सिर पर सफेद रूमाल बाधे घर के छोटे बाग के बीच खडी हुई थी। उसके आसपास चार युवक खडे थे जिनके सिर पर वह बारी-बारी से फूलो से प्रहार कर रहा थी। लडकी देखने मे शोख, स्नेहपूर्ण और आकर्षक थी। ब्लादीमीर ने जिनेदा को देखा तो देखता ही रह गया। उस दिन उसे इतनी प्रसन्नता हुई कि वह सोते समय तक जिनेदा के बारे मे सोचता रहा। दूसरे दिन उठते ही वह किसी तरह भी पडोसियो से परिचय करने का ढग सोचने लगा। तभी प्रिसेज़ जैसेकीना का एक पत्र उसकी मा को मिला जिसमे कुछ व्यक्तियो से सिफारिश करने की प्रार्थना की गई थी और प्रिसेज ने मा से मिलने की इच्छा भी प्रकट की थी। मारिया निकोलाइवना ने ब्लादीमीर को प्रिंसेज के घर यह कहने भेजा कि वह उनकी सहायता करने को तैयार है और बारह से एक बजे के बीच प्रिंसेज उनसे मिल ले। ब्लादीमीर परिचय का इनना अच्छा अवसर छोडना नही चाहता था और वह तुरन्त प्रिसेज़ के घर चला गया। प्रिसेज जैसेकीना को ब्लादीमार ने अपनी मा का सदेश कह दिया। तब उन्होंने जिनेदा से उसका परिचय कराया। जैसेकीना की आयु पचास से ऊपर थी और वह पुरानी हरे रग की पोशाक पहने थी जिससे उनकी विपन्नता का पता चलता था। जिनेदा ब्लादीमीर को अपने कमरे मे ले गई और बडी बेतकल्लुफी से उससे बाते करने लगी। तभी उसने यह भी बताया कि उसकी आयु इक्कीस वर्ष की है। ब्लादीमीर उसके व्यवहार से प्रसन्न था। हा, एक बात अवश्य थी कि जिनेदा उसे अब भी बच्चा समझती थी। उसके कई प्रेमी थे जो उसकी कृपादृष्टि प्राप्त करने के लिए कुछ भी कर सकते थे। एक घुडसवार सैनिक बोलोवजोरोव उस समय जिनेदा के लिए एक चितकबरा बिल्ली का बच्चा लाया जब कि ब्लादीमीर उसके घर ही था। जिनेदा बिल्ली के बच्चे को देख ही रही थी कि तभी ब्लादीमीर के घर से उसे बुलाने के लिए नौकर आ गया और वह घर चला गया। घर से आए उसे एक घटा हो गया था।

प्रिंसेज जैसेकीना ब्लादीमीर की मा से मिलने आई परन्तु वे मारिया निकोलाइवना को पसन्द नही आई। प्रिंसेज़ कई तो मुकदमो मे फसी हुई थी। फिर भी उसने प्रिंसेज़ और उसकी लडकी को डिनर पर आमत्रित किया।

दूसरे दिन, प्रिसेज़ जैसेकीना और जिनेदा उनके यहा डिनर पर आई। प्रिंसेज़ के फूहडपन से तो सभी परेशान हो गए किन्तु जिनेदा के व्यवहार से शिष्टता झलकती थी। शिष्टता के साथ ही जिनेदा के व्यवहार मे अहकार मिला हुआ था जिससे ब्लादीमीर की मा चिढ गई किन्तु उसके पिता ने उसका स्वागत किया। ब्लादीमीर के पिता रह-रहकर जिनेदा की तरफ देख रहे थे। जिनेदा और ब्लादीमीर के पिता फ्रेंच मे बात कर रहे थे। जिनेदा का फ्रेच उच्चारण बहुत शुद्ध था। जाते समय जिनेदा ब्लादीमीर के कान मे चुपचाप आठ बजे घर आने को कह गई।

शाम को आठ बजे ब्लादीमीर सज-धजकर जिनेदा के घर गया। कमरे मे जिनेदा के साथ उसके पाच प्रेमी भी थे। काउण्ट मेलेवस्की, डाक्टर तू इस, कवि मैदेनोव, रिटायर्ड कैप्टन निमत्सकी और उस दिनवाला घुडसवार सैनिक बेलोवजोरोव। सबसे

जिनेदा ने ब्लादीमीर का परिचय कराया। वह एक तो पहले ही घबराया हुआ था ऊपर से उनके खेल को देखकर और चौका। वह 'फोरफीट' खेल रहे थे। विचित्र खेल था। एक कुर्सी पर एक मर्दाना हैट लिए जिनेदा खडी थी और हैट मे पाचो व्यक्तियो के लिए पाच पर्चिया थी। जिसकी पर्ची मे 'चुम्बन' लिखा होता वही जिनेदा के हाथ का चुम्बन लेता और अपने-आपको भाग्यशाली समझता। ब्लादीमीर के नाम की पर्ची उसमे डाल दी गई और भाग्य की बात कि ब्लादीमीर के उठाने पर चुम्बनवाली पर्ची निकली। परन्तु घबराहट के मारे उससे तो जिनेदा के हाथ का ठीक से चुम्बन भी नही लिया गया। इसके बाद कुछ इसी तरह का दूसरा खेल खेला गया जिसमे ब्लादीमीर और जिनेदा के सिर एक रूमाल से बाध दिए गए। जिनेदा से अब उसे मन की बात कहने को कहा गया। जिनेदा के गर्म श्वासो का स्पर्श और और उसके सुवासित केशो की चुभन ब्लादीमीर को उत्तेजित कर रही थी। उसके सारे शरीर मे सनसनी-सी फैल गई थी। उससे कुछ भी कहते नही बना तो फुसफुसाकर जिनेदा ने कहा, "कहो क्या कहते हो ?" हसकर, लज्जा के मारे ब्लादीमीर ने अपना मुह दूसरी ओर फेर लिया। और भी तरह-तरह के खेल खेले गए और वह शाम ब्लादीमीर ने बडे उल्लास मे बिताई, सोते समय भी उसे जिनेदा याद आती रही। दूसरे दिन सुबह मारिया निकोलाइवना ने उसे प्रिंसेज़ के घर जाने के लिए डाटा और पढने-लिखने को कहा। परन्तु पिता प्योत्र वेसीलेविच उसे बाह पकडकर बाग मे ले गए और बडे मज़े मे प्रिंसेज़ के घर का हाल सुनने लगे। ब्लादीमीर ने उमग के साथ शाम की घटना उन्हे सुना दी। उसके पिता कभी-कभी ही उससे लाड करते थे और उसकी स्वतन्त्रता मे कभी बाधा नही डालते थे। परन्तु फिर भी वे उससे दूर-दूर रहते थे। जब ब्लादीमीर जिनेदा की तारीफ कर रहा था तब वे मन्द-मन्द मुस्कराते रहे। पूरी बात सुनने के बाद वे प्रिंसेज़ जैसेकिना के घर गए और वही से शहर की ओर चले गए।

कुछ दिन मे जिनेदा को ब्लादीमीर के प्रेम की बात विदित दो गई, परन्तु उसके और भी प्रेमी थे जिनसे वह अपना मनोरजन करती थी। सभी उसका प्रम पाने के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते। सैनिक बेलोवजोरोव स्वस्थ सुन्दर युवक था। वह जिनेदा के लिए कुछ भी कर सकता था। डाक्टर लूइस मसखरा था और सामने भी जिनेदा को गालिया दिया करता था। मैदेनोव उसकी प्रशसा मे कविताए सुनाया करता। मेलेवस्की सुन्दर, फुर्तीला और चालाक था। वह जिनेदा की चापलूसी किया करता। जिनेदा इनमे से किसी से प्रेम नही करती थी, फिर भी इन सबके साथ हसती-खेलती थी। एक बार तो उसने ब्लादीमीर से कहा भी कि वह इनमे से किसीमे प्यार नही करती। ब्लादीमीर बहुधा जिनेदा के घर के चक्कर काटने लगा, परन्तु मा के डर से वह अपनी सब गति-विधियो को गुप्त रखता था। मा प्रिंसेज़ और उसकी बेटी जिनेदा को पसन्द नही करती थी। जिनेदा कभी तो ब्लादीमीर के साथ खेलती और उसे उकसाती और कभी उसका तिरस्कार करती। ऐसी स्थिति मे वह बाग की दीवार पर जाकर चुपचाप बैठ जाता। एक दिन उसने देखा कि जिनेदा बाग मे बैठी है और उसके चेहरे पर अवसाद की छाया मडरा रही है। जब उसने कारण पूछा तो वह उलटकर ब्लादीमीर से ही पूछने लगी कि वह उसे प्यार करता है न ! जब उसने उत्तर नही दिया तो वह स्वय बोली कि वह इस

बात को जानती है। वह उस दिन बहुत ही दु खी थी। ब्लादीमीर से उसने 'ज्योर्जिया की पहाड़ियो की कविता' सुनी, और फिर उसे पकडकर अपने घर ले गई। उसी दिन उसे इस बात का पता चला कि जिनेदा किसी और व्यक्ति से प्रेम करती है और वह छुपकर जिनेदा की गतिविधियो को देखने लगा।

कुछ ही दिनो मे जिनेदा के सब प्रेमियो को उसके प्रेम की बात मालूम हो गई परन्तु वह किस व्यक्ति से प्रेम करती है यह सम्भवत किसीको विदित नही था। तूइस ने तो ब्लादीमीर से कहा भी कि उसे अपनी पढाई मे मन लगाना चाहिए और जिनेदा के घर से दूर ही रहना चाहिए, परन्तु ब्लादीमीर पर इस उपदेश का कोई प्रभाव नही पडा। उसी दिन शाम को जिनेदा के घर उसके पाचो प्रेमी एकत्र हुए और ब्लादीमीर भी वहा था। जिनेदा ने उनसे पूछा कि जब क्लियोपेट्रा बजरे मे चढकर एण्टोनी से मिलने गई थी तब एण्टोनी की आयु क्या थी। तूइस के चालीस से ऊपर बताने पर उसने तूइस को घूरकर देखा था। ब्लादीमीर तभी समझ गया था कि जिनेदा किसीसे प्रेम तो अवश्य करती है परन्तु वह है कौन, यह पता नही चलता। धीरे-धीरे दिन बीतते गए और जिनेदा बदलती चली गई। वह दु खी और उदास रहती। पहले जैसी मुस्कान कभी ही उसके होठो पर दिखाई देती, तब भी लगता कि वह कुछ छुपा रही है। वह रहस्यमयी होती चली गई। ब्लादीमीर उन दिनो जर्जर हॉट हाउस की चौदह फुट ऊची दीवार पर एकात मे बैठा रहता। एक दिन जब वह इसी तरह दीवार पर बैठा था तब नीचे सडक पर जिनेदा जा रही थी। उसे दीवार पर खडा देखकर वह खडी हो गई और बोली, "तुम सचमुच मुझे प्यार करते हो तो सडक पर कूदकर दिखाओ।" जिनेदा का कहना था कि ब्लादीमीर कूद पडा और गिरते ही मूर्च्छित हो गया। मूर्च्छा क्षण-भर के लिए आई थी परन्तु जिनेदा ने उसके चहरे पर चुम्बनो की झडी लगा दी और चिन्तित हो उठी। जब ब्लादीमीर उठ बैठा तो वह वहा से चली गई। इन्ही छोटी-छोटी घटनाओ ने ब्लादीमीर के हृदय मे प्रेम की आग लगा दी थी। जिनेदा का सम्मोहन ठुकराना उसकी शक्ति से परे था। अगले ही दिन जिनेदा ने बेलोवजोरोव से सवारी के लिए एक घोडा लाने को कहा। उसने दूसरे दिन घोडा ला दिया। दूसरे दिन ही जब ब्लादीमीर सवेरे-सवेरे उठकर नगर के बाहर घूमने निकल गया तो उसे घोडे पर सवार उसके पिता और जिनेदा मिले। उनके पीछे बेलोवजोरेव भी था। उसके पिता उसे देखकर अपना घोडा जिनेदा के घोडे से दूर हटा ले गए। इस दिन के पश्चात् पाच-छ दिन तक जिनेदा से ब्लादीमीर मिल नही सका। जिनेदा इन दिनो उससे दूर-दूर रहने लगी थी।

कुछ दिनो बाद जब अचानक बाग मे जिनेदा से सामना हुआ तो ब्लादीमीर मुह फेरकर जाने लगा परन्तु जिनेदा ने उसे रोक लिया। बातो ही बातो मे जिनेदा ने उससे कह दिया कि वह उससे बडी है और उसकी मौसी हो सकती है या बडी बहन। और वह उसके लिए एक बच्चा ही है। अब वह पहले से अधिक नम्र और शात हो गई थी। शालीनता उसकी आकृति पर झलकती थी। जिनेदा ने यह भी कहा कि वैसे वह ब्लादीमीर को बहुत चाहती है।

पहले की तरह एक दिन प्रिंसेज के घर जब सभी एकत्र थे तो जिनेदा एक नया

खेल खेलने लगी। उसने सभी से कहा कि हर कोई अपना देखा हुआ कोई सपना सुनाए। यह सुनकर पहले की तरह शोर मचना बद हो गया, और उछल-कूद भी थम गई। मैदेनोव ने अपना लम्बा सपना सुनाया। इसके बाद स्वय जिनेदा ने अपनी कल्पना सुनाई। एक महारानी द्वारा रात मे पार्क के फव्वारे के पास अपने प्रेमी की प्रतीक्षा की कहानी सुनकर सभीके माथे ठनक गए। काउण्ट मेलेवस्की ने तो ब्लादीमीर से दूसरे दिन कहा भी कि उसे रात-दिन जिनेदा की गतिविधियो को देखना चाहिए। इन्ही दिनो काउण्ट चापलूसी करके ब्लादीमीर की मा का कृपापात्र बन गया था, परन्तु उसके पिता उसे पसन्द नही करते थे। जब मेलेवस्की ने ब्लादीमीर से 'रात, पार्क और फव्वारा' याद रखने को कहा तो वह जिनेदा के अज्ञात प्रेमी से बदला लेने को तैयार हो गया। रात को बारह बजे अपना चाकू लेकर ब्लादीमीर बाग मे जा पहुचा। चारो ओर सन्नाटा था। एक घटे तक प्रतीक्षा करने के बाद भी उसे कोई दिखाई नही दिया। वह अपने-आप पर झुझलाने लगा था कि उसे दरवाज़ा खुलने की आवाज़ और किसीके पैरो की आहट सुनाई दी। उसने चाकू खोलकर हाथ मे ले लिया। आनेवाला उसके निकट आ रहा था। ब्लादीमीर ने देखा कि वह किसी पुरुष की आकृति थी परन्तु पहचानते ही वह ज़मीन पर दुबककर बैठ गया, भय से चाकू घास पर गिर पडा। वे उसके पिता थे। उन्होने गहरे रगो का एक लबादा ओढ रखा था और हैट चेहरे तक झुका रखा था। जब उसके पिता उसके पास से चले गए तो वह भी कुछ देर बाद अपने कमरे मे चला आया। पिता के जाने के कुछ देर बाद ही उसने जिनेदा की खिडकी पर परदे गिरते देखे थे। रह-रहकर उसके हृदय मे आशकाए उठ रही थी। सत्य उसके सामने था, परन्तु स्वीकार करने का साहस उसमे नही था।

दूसरे दिन उठते ही उसने अनुभव किया कि एक दुखदायी व्याकुलता, गहन उदासी उसपर छा रही थी। वह जिनेदा को सब कुछ स्पष्ट रूप से बता देने के लिए गया भी, परन्तु उसके सामने पहुचकर उसका साहस जाता रहा। उसी दिन बूढी प्रिंसेज़ का बारह साल का लडका वोलोद्या पीटर्सबर्ग से आया था। वह वहा सैनिक स्कूल मे पढता था। जिनेदा ने ब्लादीमीर से वोलोद्या को सैर करा लाने के लिए कहा और ब्लादीमीर उसके साथ-साथ पार्क मे चला गया। उसी शाम ब्लादीमीर बाग के एक एकात कोने मे बैठा था तब जिनेदा वहा आई। जब जिनेदा ने उससे उदासी का कारण पूछा तो वह उसकी बाहो मे फूट-फूटकर रोने लगा। जिनेदा की सात्वना पर भी जब उसके आसू नही रुके तो वह घबरा उठी। कई बार पूछने उसने कह ही दिया, "मैं सब कुछ जानता हू। तुमने मेरी भावनाओ से क्यो खिलवाड किया? तुम्हे मेरे प्यार की आखिर क्या ज़रूरत थी?" जिनेदा ने उसे समझाया और मोहक दृष्टि से देखा। वह सब कुछ भूल गया।

एक दिन ब्लादीमीर के माता-पिता मे झगडा हो गया और सबने शहर चलने की तैयारिया शुरू कर दी। यह झगडा एक पत्र के कारण हुआ जिसे मेलेवस्की ने भेजा था। पत्र मे किसीका नाम नही था, परन्तु उसमे प्योत्र वेसीलेविच के जिनेदा के साथ सम्बन्ध की बात लिखी थी। उसी शाम वेसीलेविच ने मेलेवस्की को अपने घर से निकाल दिया। ब्लीदीमीर को उनके नौकर फिलिप ने बताया था कि वेसीलेविच ने प्रिंसेज़ को कोई

प्रॉमिजरी नोट दिया था और मारिया निकोलावना ने वेसीलेविच से यह भी कहा कि वे जिनेदा से मेल-जोल बढा रहे थे और यह उनके प्रति वेवफाई थी। मारिया निको-लाइवना की इन बातो पर वेसीलेविच कुपित हो गए थे और झगडा बढ गया था। फिलिप ने तो ब्लादीमीर को साफ-साफ कह दिया कि उसके पिता का जिनेदा से ऐसा ही सम्बन्ध था। ब्लादीमीर को इस घटना से बहुत धक्का लगा था। जिस दिन ब्लादीमीर का परि-वार शहर जा रहा था वह प्रिसेज के घर गया। जिनेदा से जब उसने 'अलविदा' कहा तो वह बोली, "सचमुच मैं वैसी नही हू। मै जानती हू कि मेरे बारे मे तुम्हारी राय अच्छी नही है।"

ब्लादीमीर ने कहा, "विश्वास करो जिनेदा, तुमने चाहे जो भी किया हो, मुझे कितना ही क्यो न सताया हो, मैं ज़िन्दगी के आखिरी दम तक तुम्हे प्यार करता रहूगा और तुम्हारी पूजा करता रहूगा।" यह सुनकर जिनेदा ने ब्लादीमीर की गर्दन मे बाहे डालकर उसे चूम लिया था। शहर जाने पर एक दिन ब्लादीमीर की मुलाकात तूइस से हुई जिसने बताया कि उसे खासने की बीमारी है और वेलोवजोरोव काकेशस चला गया है। तूइस ने यहा भी उसे उपदेश दिया कि उसे साधारण जीवन बिताना चाहिए।

वेसीलेविच को प्रतिदिन घुडसवारी करने की आदत थी। एक दिन ब्लादीमीर भी उनके साथ अपने टट्टू पर बैठकर घूमने चला गया। उसके पिता वेसीलेविच का घोडा 'इलैक्ट्रिक' बडा बिगडैल घोडा था और बहुत तेज दौडता था। ब्लादीमीर बडी कठिनाई से उसके साथ अपने टट्टू को ले जा रहा था। दूर-दूर तक सवारी करने के पश्चात् वे घोडे कुदाते हुए नदी के किनारे-किनारे चलने लगे। एक स्थान पर बल्लियो का ढेर था वहा ब्लादीमीर के पिता घोडे से उतर गए और लगाम उसके हाथ मे देकर नुक्कड की एक तग गली मे चले गए। जब उसे दोनो घोडो की लगाम पकडकर चहलकदमी करते काफी देर हो गई तो वह उसी गली की ओर चल चल पडा जिसमे वेसीलेविच गए थे। एक मोड मुडने के बाद चालीस कदम की दूरी पर एक छोटे-से लकडी के मकान की खिडकी खुली हुई थी जिसपर उसके पिता कुहनिया टिकाए खडे थे। खिडकी के पर्दो के उस तरफ जिनेदा खडी थी। देखते ही ब्लादीमीर सन्न रह गया। पिता के भय से वह चलने ही वाला था कि किसी अज्ञात आकर्षण से वही खडा रहा। उसे लगा कि वेसीलेविच किसी बात बात के लिए बार-बार आग्रह कर रहे थे और जिनेदा के होठो पर हठीली मुस्कान थी। जिनेदा ने फिर अपनी बाह आगे कर दी और वेसीलेविच ने घुडसवारी का चाबुक जिनेदा की नगी बाहो पर सन्न से जमा दिया। जिनेदा चौक पडी। उसने वेसी-लेविच की ओर देखा और बाह पर पडे लाल दाग को चूमने लगी। ब्लादीमीर के पिता चाबुक एक ओर फेककर घर के भीतर चले गए। ब्लादीमीर फिर से घोडो को लिए नदी-किनारे आ गया। अब तो छुपाने को कुछ रह ही नही गया था। जिनेदा उसके पिता की प्रेयसी थी। कुछ देर बाद ही उसके पिता आ गए और वे घोडे दौडाते घर चले आए। इस घटना के छ महीने बाद ही वेसीलेविच की लकवे से मृत्यु हो गई। उसी दिन उन्होने अपने बेटे ब्लादीमीर को फ्रेंच मे पत्र लिखना शुरू किया था, "मेरे बेटे! औरत के प्यार से सावधान रहना, उस खुशी से, उस ज़हर से "

तीन-चार वर्ष बाद यूनिवर्सिटी से डिग्री लेने के पश्चात् भी ब्लादीमीर ने अभी कोई काम प्रारम्भ नही किया था। उन्ही दिनो एक शाम थियेटर मे उसकी भेट मैदेनोव से हो गई। उसने विवाह कर लिया था और अब वह किसी सरकारी दफ्तर मे नौकर भी था। मैदेनोव ने उसे बताया कि जिनेदा ने दौलस्की नामक किसी धनी व्यक्ति से विवाह कर लिया था और वह 'मादाम दौलस्काया' कहलाती थी। मैदेनोव ने उसे जिनेदा का 'डेमुथ होटल' का पता भी दिया। दो सप्ताह तक सोचकर भी ब्लादीमीर डैमुथ होटल नही जा सका। जब एक दिन वह जिनेदा से मिलने डैमुथ होटल पहुचा तो उसे मालूम हुआ कि चार दिन पहले ही वह प्रसव मे मर गई। ब्लादीमीर फटी-फटी आखो से होटल के उस चौकीदार को देखने लगा जिसने उसे जिनेदा की मृत्यु का समाचार सुनाया था। फिर वह चुपचाप होटल से सडक पर आ गया और रास्ते पर चल पडा। उसे कुछ भी दिखाई नही दे रहा था। केवल अतीत की स्मृतिया उसके मस्तिष्क मे मडरा रही थी।

इन बातो को वर्षों बीत गए, परन्तु ब्लादीमीर पेत्रोविच जिनेदा के साथ गुज़रे हुए दिनो की स्मृति को जीवन की सबसे ज्वलत और अनमोल वस्तु मानता था।

प्रेम का अनेक रूप से लेखक ने यहा चित्रण किया है। हृदय की जिन गहराइयो को यहा दिखाया गया है, वे हमारे जीवन पर आज भी प्रभाव डाल सकने में समर्थ है। तुर्गनेव ने केवल कथा पर अधिक बल नहीं दिया है, वरन् उसने अन्तरात्मा को प्रतिबिंबित किया है।

परिवार और बन्धु
[द ब्रदर्स करामजोव[1]]

दॉस्तोएवस्की, फ्योदोर रूसी लेखक फ्योदोर दॉस्तोएवस्की का जन्म मास्को में २० अक्तूबर, १८२१ को हुआ था। आपके जीवन में बडे उतार चढाव आए। आपको प्रारभ में सेना तथा इञ्जीनियरी के स्कूलों में शिक्षा दी गई। १८४४ में आपने साहित्य-सेवा के लिए सेना की नौकरी छोड दी। आप फिर साम्यवादी विचारधारा के सपर्क में आ गए। आपको १८४६ में गिरफ्तार कर लिया गया और चार वर्ष के लिए साइ-बेरिया भेज दिया गया। फिर कुछ दिन को आप सेना में आ गए। कुछ दिन पत्र-कारिता की ओर कुछ दिन अपने कर्जों के बोझ से बचने के लिए आप विदेश भाग गए। बाद में आप उदार विचारधारा के सपादक कहलाए। आपकी मृत्यु २८ जनवरी, १८८१ को हुई। आपने विचित्र मानसिक सघर्षों का चित्रण करनेवाले उपन्यासों का सृजन किया है।

'द ब्रदर्स करामजोव' (परिवार और बन्धु) अपनी मूल भाषा रूसी में १८८० ई० में प्रकाशित हुआ। इसने पर्याप्त ख्याति अर्जित की है।

"ईवान ! मेरे बेटे, अगर तुम चर्माश्नेया जाकर मेरी वह जायदाद बेच आओ, तो तुमको रूस की सबसे सुन्दर लडकी दे दूगा ! यह सच है कि उसके पाव नगे है पर उस जैसी अनन्य सुन्दरी तुम्हे अन्यत्र नही मिलेगी। इन गरीब लडकियो से तुम नफरत नही किया करो। ये सुख देनेवाले मोती के समान होती है।" यह कहकर फ्योदोर पावलोविच करामज़ोव खुशी से हस उठा। उसकी गुरियो-सी बूढी आँखें हर्ष से चकमने लगी और वह अपने कॉपते हुए हाथो से ब्राडी का दूसरा गिलास भरने लगा।

ईवान ने अपने पिता की ओर प्रकट घृणा से देखा और कहा, "आप ही वहा क्यो नही चले जाते ?"

वृद्ध ने हसते हुए कहा, "बात असल मे यह है कि यहा मुझे एक बड़ा जरूरी काम है !"

ईवान के पास ही उसका छोटा भाई अल्योशा बैठा हुआ था, उसने उसकी ओर रहस्यमय दृष्टि से देखा। आज उसका भाई पिता से मिलने के लिए अपने मठ मे से विशेष आज्ञा प्राप्त करके आया था।

दोनो बेटो और बाप मे यह एक विचित्र-सा नाता था। उनमे एक अजीब-सी

---

१ The Brothers Karamazov (Feodor Dostoevsky)

आजादी थी। करामजोव परिवार के बारे मे सब लोगो को यह विचित्रता सहज प्रतीत होती। उन लोगो मे परस्पर जैसे कोई भेद-भाव नही था। वृद्ध फ्योदोर एक धनी जमीदार था, जिसने मदिरापान, वासनामय जीवन व्यतीत करना और स्वेच्छा से विचरण करना ही अपने जीवन का आधार बना रखा था। यह गुण उसकी चुभती हुई आखो मे मानो बहुत गहरे तक उतर गया था। उसके गालो पर अभी तक इस वासना का उफान लालिमा पोत दिया करता था और उसके भरे हुए होठ फफकते-से दिखाई देते थे।

ईवान चौबीस साल का था। उसका चेहरा शात था—गम्भीर, जैसे वह एक बडा चतुर सासारिक व्यक्ति हो। शालीनता उसके व्यवहार से प्रकट होती थी, लेकिन मानो उसमे हर वस्तु के प्रति एक तिरस्कार था।

छोटा भाई अल्योशा बीस वर्ष का था। वह एक पादरी बनने की तैयारी कर रहा था, लेकिन तपस्वी जीवन का कोई गर्व उसमे दिखाई नही देता था। उसके गाल लाल थे। स्वच्छ यौवन उनपर झिलमिलाया करता था। आखो मे आनन्द की चमक तैरा करती थी और देखने मे ही प्रकृति से वह सहज और सीधा-सादा लगता था।

अल्योशा और ईवान दोनो ही इस बात को खूब जानते थे कि वृद्ध पिता वहा जाने मे क्यो हिचकिचा रहा था। उनको यह भी पता था कि वह जरूरी काम, जोकि पिता को यहा रोक रहा था, अपने-आपमे कुटिलता का सदेश लिए था। मित्या उनका सबसे बडा भाई था। उसमे और पिता मे एक मरणान्तक सघर्ष चल रहा था। मित्या करामज़ोव सेना मे लेफ्टिनेण्ट था, उसका जीवन बहुत ही उच्छृखल था, इसलिए उसे अपनी नौकरी से त्यागपत्र देना पडा। उसने एक सेना के जनरल को अपमान से बचाया था और इस कृतज्ञता के लिए उस जनरल की पुत्री केतरीना इवानोवना की उससे सगाई हो गई और ब्याह हो गया। मित्या अपने पिता की तरह ही महाप्रचड और गुस्सैल था। वह अपनी पत्नी का बुरी तरह अपमान किया करता था। एक दफा स्त्री ने उससे तीन हज़ार रूबल मागे जो वह मास्को मे अपनी बहन को भेजना चाहती थी। लेकिन वह धन मित्या ने वेश्याओ पर लुटा दिया और उसके बाद वह केतरीना को मायके छोड आया। एक पोलिश अफसर की पहली प्रिया ग्रूशका नाम की स्त्री थी। अब मित्या उसकी सुन्दरता देखकर उसपर पागल हो गया था।

वृद्ध फ्योदार ने जब ग्रूशका को देखा तो उसके लावण्य ने उसे बन्दी बना लिया। उसे मालूम था कि उसका पुत्र मित्या इस स्त्री से सम्पर्क रखे हुए था, किन्तु न जाने क्यो इस भावना ने उसकी वासना को और भडका दिया और वह निर्लज्ज रूप से यह प्रयत्न करने लगा कि किस प्रकार अपने पुत्र की प्रिया को अपनी बना सके। उसने ग्रूशका से कहा कि यदि वह एक रात ही के लिए भी उसके पास आ जाएगी तो वह उसे तीन हज़ार रूबल देगा। उस धनराशि को उसने अपने तकिये के नीचे एक लिफाफे मे बन्द करके रख छोडा था।

मित्या घोर ईर्ष्या से कापता हुआ विकराल हो उठा था। वह अपने पिता के घर पर दिन-रात नज़र रखता था।

वृद्ध करामज़ोव ने हिचकिया लेते हुए फिर कहा, "मैने कभी जीवन मे स्त्री को

कुरूप नही माना । मेरे बेटे, तुम इस बात को नही समझ सकते । तुम अभी बच्चे हो । तुम्हारी नसो मे अभी तक दूध है—रक्त नही बहता । तुम तो सहज ही किसी भी स्त्री पर लट्टू हो सकते हो । सुनो, तुम्हारी मा अब मर चुकी है । मै उसके साथ विचित्र मनोरजन किया करता था । मै अपने हाथ पृथ्वी पर रखकर घुटनो के बल चलता था और उसके पावो को चूमा करता था । यहा तक कि आखिर वह हसने लगती थी जैसे कि मीठी घटिया बज रही हो और कुछ ही देर मे वह ऐसी हो जाती थी जैसे उसे दौरा पड गया हो, लेकिन हर्ष के उन्माद मे भी उसके कठ से जैसे चीत्कार फूटता रहता था । उसको फिर होश मे लाने के लिए मुझे हर बार किसी मठ की ओर ले जाना पडता था ताकि वहा के शान्त और पवित्र वातावरण से उसकी चेतना फिर लौट सके । पवित्र पादरी लोग उसको आशीर्वाद दिया करते थे । लेकिन तुम्हारी माता धर्म के कारण ही ऐसी नही हो जाती थी । मैं उसके अन्दर के सारे रहस्यवाद को नष्ट कर देना चाहता था और एक दिन मैंने इसका निश्चय कर लिया । एक दिन मैंने उससे कहा, 'तुम अपने पवित्र देवता को देखती हो । तुम समझती हो कि यह चमत्कार है तो देखो मैं इसपर थूकता हू और तुम देखना कि मुझे कुछ भी नही होगा ।' हे भगवान, मुझे वह क्षण ऐसा लगा जैसे वह मेरी हत्या कर देगी । लेकिन उसने कुछ नही किया । वह केवल उछली और उसने अपने हाथो को मला और क्षण-भर मे ही अपने हाथो से अपने मुह को ढक लिया और कापती हुई पृथ्वी पर गिर पडी, मानो वह एक मास की ढेर थी—सघर्ष करती हुई अल्योशा, अल्योशा, क्या हुआ, क्या हुआ !"

वृद्ध हठात् भयभीत सा खडा हो गया । अल्योशा अपनी कुर्सी से ठीक वैसे ही उछलकर खडा हो गया था जैसे कि पिता ने माता के बारे मे बताया था । वह अपने हाथ-मलने लगा । उसने अपने हाथ मे अपने मुह को छिपा लिया । और अपनी कुर्सी पर गिर-कर बुरी तरह से कापते हुए, जैसे उसपर जूडी का बुखार चढ आया था, वह चुपचाप रो रहा था ।

वृद्ध चिल्लाया, "ईवान, ईवान, पानी लाओ, पानी ! बिलकुल अपनी मा जैसा है वही मेरा वही देवता का चित्र और ऐसी ही धार्मिक दौरा उसपर भी आता था । अपने मुह मे से थोडा पानी इसपर डालो । मै भी तुम्हारी माता के लिए यही करता था । यह लडका अपनी माता की याद मे पागल हो गया है !" वृद्ध ने बडबडाते हुए कहा ।

ईवान ने बहुत ठडे स्वर से कहा, "इसकी मा शायद मेरी भी मा थी । थी ना ?" और यह कहते हुए उसकी काली उदास आखो मे आग-सी जलने लगी । वृद्ध उसको देखकर भयभीत-सा पीछे हटा और पीछे रखी कुर्सी से टकरा गया ।

उसने अल्योशा के स्वर मे बडबडाते हुए कहा, "तुम्हारी मा, हा तुम्हारी मा सचमुच वह थी, मुझे माफ करो । मैं यह सोच रहा था ईवान यह कहकर शब्दो के अभाव मे वह हसने की चेष्टा करने लगा । शराब का नशा एक झूठी-सी व्यर्थ की हसी बनकर उसके होठो को कुछ ऊपर की तरफ सिकोड गया ।

उस समय हॉल मे बहुत ज़ोर से कोलाहल उठने लगा । बडे ज़ोर-ज़ोर की आवाज़े

सुनाई देने लगी। भोजन के कमरे मे एकदम द्वार खुल गया और एक आदमी बडी तेजी से कमरे मे घुस आया। लगभग २८ वर्षीय युवक था वह। हट्टा-कट्टा, बलिष्ठ, लेकिन उसके गाल पीले थे, कुछ धसे हुए। उसके ललाई लिए माथे पर काले घने बालो का गुच्छा लटक रहा था और उसकी विशाल आखो मे पागलपन की एक चमक-सी दिखाई देती थी। जब उसने फ्योदोर की वृद्ध और डरी हुई आखो को देखा तो वह पागलपन जैसे और भी अधिक सुलग उठा।

वृद्ध ने चिल्लाकर कहा, "मुझे बचाओ, मुझे बचाओ। यह मुझे मार डालेगा! यह मुझ मार डालेगा!" यह कहकर उसने ईवान के गले मे हाथ डाल लिए और वह चिल्लाया, "इस मित्या के पास मुझे अकेला मत छोडो। इस मित्या को मेरे पास मत आने दो!"

मित्या कमरे मे आगे बढा और चिल्लाया, "वह यही है। मैंने उसे घर की ओर मुडते हुए देखा था। वह निकल गई और मैं उसे पकड नही पाया। कहा है वह इस समय? मुझे बताओ वह कहा छिपी है? भीतरी हिस्से मे जानेवाले दोहरे दरवाज़ो की ओर वह तेजी से बढा। दरवाज़ो मे इस समय ताला लगा हुआ था। मित्या ने एक कुर्सी उठा ली और बडे ज़ोर से उस दरवाज़े पर फेंककर मारी। दरवाज़ा अर्राकर टूट गया। मित्या वेग से भीतर चला गया।

वृद्ध ने कापते हुए कहा, "ईवान! अल्योशा! वह यही है। अल्योशा! वह यही है। मित्या ने उसे मेरे घर की ओर आते देखा है!" उसने अपने होठो को चाटा और दोहरे दरवाज़े की ओर बढा।

ईवान चिल्लाया, "अरे बुढऊ, लौट आओ! वह तुम्हारे टुकडे-टुकडे कर देगा! तुम जानते हो कि वह यहा नही आई है।"

मित्या फिर से भोजनगृह मे आ गया था। उसने दूसरी ओर के दरवाज़े मे ताला लगा हुआ देखा था। दूसरे कमरो के वातायन और खिडकिया भी बन्द थी। इसलिए यह निश्चय हो गया कि ग्रूशका कही से भी भीतर नही आ पाई थी। वृद्ध चिल्लाया, "पकड लो इसे। इसने मेरे तकिये के नीचे से मेरा धन चुरा लिया है।"

और ईवान के हाथ से छूटकर वृद्ध मित्या की ओर बढा। मित्या ने उसे पकड लिया और जोर से दे मारा। मित्या बढा और उसने जगलियो की तरह अपने जूते की एडी से बूढे को ठोकर मारी। ईवान और अल्योशा झपटकर उसको अपने कराहते हुए शिथिल पडे पिता के पास से दूर धकेलने लगे। ईवान चिल्लाया, "तुमने पिता को मार डाला है!"

मित्या ने बलपूर्वक अपने को उन दोनो से छुडा लिया औग पागल की तरह अपने भाइयो को देखने लगा। "तुम मुझे देखते क्या हो?" उसने कहा, "लेकिन यह समझ लेना कि आज भले ही भाग्य मेरी ओर न हो, लेकिन शीघ्र ही मैं अपना यह काम पूरा कर दूगा!" यह कहकर उसने अल्योशा की ओर प्रार्थना-भरी आखो से देखा और कहा, "अल्योशा एक तुम ही हो जिसपर मैं विश्वास कर सकता हू। सच बताओ, क्या वह यहा अभी आई थी, या यह मेरा भ्रम है?"

अल्योशा ने कहा, "मैं कसम खाकर कहता हू कि वह यहा नही आई और हममे से किसीको यह आशा भी नही थी कि वह यहा आएगी।"

बिना एक शब्द कहे मित्या मुडा और कमरे से भाग निकला। रास्ते मे दो नौकरो ने उसे रोकने की चेष्टा की लेकिन वह उन्हे धक्के देकर निकल गया। वृद्ध सेवक ग्रिगेरी जब उठा तब उसके सिर से रक्त बह रहा था। वह अपने वृद्ध स्वामी के पास आ गया। उसके पीछे-पीछे एक पतला-दुबला मुहासे-भरे चहरेवाला स्मरद्याकोव था जोकि वृद्ध फ्योदोर का सेवक और रसोइया था।

ईवान और ग्रिगेरी ने वृद्ध को उठाया और आरामकुर्सी पर बिठाया। वृद्ध के चेहरे से रक्त बह रहा था। उन्होने रक्त धोया। घाव पर पट्टी बाधी। उसके कपडे बदले और उसे शय्या पर लिटा दिया। अचानक वृद्ध ने अपनी आखे खोली और कहा, "वह यहा है ! वह यही होगी !" यह कहते हुए उसके मुख पर विलास और वासना की एक घृणित थिरकन-सी नाच उठी और उसके बाद वह मूर्च्छित हो गया।

ईवान अल्योशा की ओर मुडा और बोला, "यदि मै मित्या को दूर नही ले जाता तो आज उसने काम खत्म कर दिया होता !" अल्योशा काप उठा। उसने कहा, "भगवान बचाए !"

ईवान ने मुस्काकर कहा, "क्या बचाए भगवान ! इसमे क्या बात है ! एक साप दूसरे साप को निगल गया ! इससे अधिक इसमे कोई तथ्य तो था नही।" जब अल्योशा को यह निश्चय हो गया कि उसके पिता को अब कुछ आराम है, वह फिर मठ जाने के लिए तैयार हो गया। ईवान उसके काफी देर बाद गया। जब वह फाटक पर पहुचा, स्मरद्याकोव ने उसे रोका। ईवान ने पूछा, "क्यो क्या बात है ?" उसे यह चालाक लगनेवाला युवक बहुत ही घृणित-सा लगता था। स्मरद्याकोव पर सब लोग दया करते थे, क्योकि उसे मिरगी के दौरे आया करते थे। वृद्ध फ्योदोर उसे बहुत पसन्द करता था क्योकि स्मरद्याकोव एक बहुत ही अच्छा रसोइया था और यह भी एक अफवाह थी, जिसे न कोई प्रमाणित कर सकता था और न अप्रमाणित ही कर सकता था, कि स्मरद्याकोव उस वृद्ध का ही पुत्र था।

स्मरद्याकोव ने बडबडाकर कहा, "श्रीमान ईवान ! मैं बहुत ही दयनीय अवस्था मे हू। आपके भाई श्रीमान मित्या और आपके पूज्य पिता आपकी अनुपस्थिति मे दोनो ही पागलो जैसा व्यवहार करते है। हर रात वृद्ध महोदय घर-भर मे घूमा करते है और हर मिनट पूछा करते है, 'क्या वह आ गई है ? वह अभी तक क्यो नही आई ?' और दूसरी ओर से भी मुझसे ऐसे प्रश्न किए जाते है, 'क्या वह आज यहा आई थी ? क्या वह आज आनेवाली है ?' अधेरा होते ही आपके बडे भाई मेरे पास आकर कसम खिला-खिलाकर इस तरह के प्रश्न पूछते है और अत मे कहते है, 'ओ बेहूदे रसोइये, ज़रा पैनी आखो से देखा कर। अगर वह तेरी नज़र से निकल गई और भीतर पहुच गई, या तूने उसके आने पर मुझे नही बताया, तो मै तुझे एक मक्खी की तरह मसल दूगा !' दोनो ही एक-दूसरे से अधिक क्रुद्ध होते चले जा रहे है। कभी-कभी तो मुझे ऐसा लगता है कि मैं डर के मारे ही मर जाऊगा। मुझे डर है, ग्रूशका यहा आए या न आए, लेकिन श्रीमान मित्या

मौका पाते ही वृद्ध महोदय की हत्या कर देगे, ताकि उनके शयनकक्ष से वे उनके सारे धन को चुराकर ले जा सके। मित्या महोदय के पास अपना तो धन तनिक भी शेष नही रहा है, और का ग्रूशको किसी दूर-दराज देश मे ले जाने के लिए उन्हे तीन हज़ार की इस समय बडी आवश्यकता है।"

ईवान ने पूछा, "लेकिन, इस सम्बन्ध मे मैं क्या करस कता हू ?"

रसोइये ने उत्तर दिया, "जैसा आपके पिता चाहते है, चर्माश्नेया की ओर आप प्रात काल चले जाए। अल्योशा मठ मे होगे। ग्रूशका के आने के समय वे आप दोनो को यहा रखना नही चाहते, यहा से दूर रखना चाहते है।"

ईवान ने उत्तर दिया, "तुम समझते हो कि तुम और ग्रिगेरी दोनो मिलकर मेरे भावावेश से भरे हुए बडे भाई के लिए काफी साबित होगे ?"

"नही।" उसने उत्तर दिया। "वृद्ध ग्रिगेरी सोता रहेगा और मुझे कल रात को एक भयानक मिरगी का दौरा आएगा जो सवेरे तक चलता रहेगा।"

"तुम्हे यह कैसे पता है कि कल रात तुम्हे दौरा आएगा ही ?"

"मैं हमेशा बता सकता हू कि मुझे दौरा कब आनेवाला है।"

ईवान ने कहा, "अच्छा, तब तो निश्चय ही मेरी यह इच्छा है कि मै यही रहू और अपने पिता की रक्षा करू। मैं चर्माश्नेया नही जाऊगा।"

इसपर रसोइया बोला, "श्रीमान ईवान, इस बात पर और सावधानी से विचार कर ले। आपके पिता ने निकट भविष्य मे ग्रूशका से विवाह करने का विचार प्रकट किया है। यदि वे ऐसा करेगे तो उनके पुत्रो को पुत्राधिकार से वञ्चित होना पडेगा, लेकिन यदि उनके विवाह के पहले ही उनकी मृत्यु हो गई तो आपमे से हर एक को चालीस हज़ार पौड मिल जाएगे।"

ईवान का मुख कठोर हो गया।

"आपने हर बात को सोच लिया है," रसोइये ने धीरे से कहा, "सोच लिया हैं ना ?" उसने फिर ईवान से पूछा, "आप चले जाएगे ना ?"

अधकार मे बढते हुए ईवान ने उत्तर दिया, "ओ चूहे! मैं इस बारे मे और सोचूगा !"

अगले दिन प्रात काल ईवान चर्माश्नेया चला गया था।

ग्रूशका अपनी सेविका फेनिया के साथ कैथेड्रल स्क्वायर के पास एक छोटे-से लकडी के मकान मे रहा करती थी। साझ हो गई थी और अधेरा हुए लगभग एक घटा हो गया था। फेनिया रसोई मे बैठी कुछ सिलाई कर रही थी, उसी समय मित्या ने ज़ोर से दरवाज़ा खोला और उस छोटे-से घर के कमरे की तलाशी लेने लगा और वह फिर फेनिया के पास लौट आया और चिल्ला उठा, "कहा गई है वह ?"

फेनिया बुरी तरह डर गई। उसको सास लेने का भी उसने एक क्षण नही दिया और व्याकुल-सा उसके चरणो पर गिर पडा। उसने रोते हुए कहा, "फेनिया, ईश्वर के लिए मुझे बता दो कि वह कहा चली गई है।"

"मै नही जानती !" लडकी ने कहा, "मै नही जानती मित्या फ्योदोरोविच, तुम भले ही चाहे मुझ जान से मार डालो, लेकिन मैं नही बता सकती ! क्योकि मुझे पता ही नही है।"

मित्या चिल्लाया, "तू झूठ बोलती है ! तू जो डर रही है, तुझे जो अपने अपराध का आभास हो रहा है उससे मुझे पता चल रहा है कि वह इस समय कहा है।"

मेज़ पर एक मूसल रखा था मित्या ने उसे झपटकर उठा लिया और सडक पर भाग चला। उसने चौराहा पार किया। एक लम्बे रास्ते पर दौड चला। फिर पुल पार किया और एक सूनी गली मे होता हुआ आखिर वह अपने पिता के बगीचे की ऊची बाड के समीप आ गया। उसने भीमवेग से एक उछाल लगाई और उस बाड के ऊपरी भाग को पकड लिया और वह उस ऊचाई पर झूलने लगा। एक क्षण मे ह। वह ऊपर चढ गया।

उसने अपने-आपसे कहा, "बढे के सोने के कमरे मे उजाला हो रहा है, जरूर वह वही होगा।" बिना आवाज किए वह नीचे की हरी घास पर उतर आया और मुलायम दूब पर वह बिल्ली की तरह चलता हुआ जरा-सी भी आवाज पर चौक-चौक उठता हुआ आगे बढ चला। उसे उजालेदार खिडकी के पास पहुचने मे पाच मिनट लग गए। उसने उसे धीरे से थपथपाया और फिर घनी झाडी की छाया मे छिप गया। खिडकी खुल गई और वृद्ध फ्यादोर तेज़ लैंप की रोशनी से भरे हुए कमरे मे दिखाई दिया। लैप एक किनारे रखा था। उसके आलोक की किरणे उसपर तिरछी होकर गिर रही थी। वह रेशम का एक नया ड्रैसिंग गाउन पहने था जो गरदन पर खुला था। भीतर से सोने के बटन-वाली बहुत ही फैशनेबल लिनिन की कमीज़ दिखाई दे रही थी। बूढे ने बाहर झाका और हर ओर देखने लगा और बोला, 'ग्रूशका, तुम आ गई हो, तुम आ गई हो, तुम आ गई हो, ग्रूशका ?" उसकी आवाज़ काप रही थी और वह फिर बडबडाया, "मेरी चिडिया, तुम कहा हो ? देखो, मै तुम्हे कुछ भेट देना चाहता हू।"

मित्या ने सोचा, 'उस लिफाफे मे रखे हुए तीन हज़ार रूबल बूढा ग्रूशका को देना चाहता है।' अचानक ही उसके मस्तिष्क मे एक विचार कौध गया, 'काश वह धन उसको मिल जाए, तो वह उससे क्या नही कर सकता !'

बूढे ने भरभराए स्वर से कहा, "लेकिन तुम हो कहा ? मेरे सामने क्यो नही आती ?"और अपने इस उन्माद मे वह खिडकी मे से आधा बाहर झुका गया, मानो देखने की चेष्टा कर रहा था कि वह किस ओर छिपी खडी थी। अब वह मित्या से हाथ-भर की दूरी पर था। उसका सिर झुका हुआ था। उसकी नुकीली नाक, कापते हुए होठ, दोहरी ठोडी और गले की कापती हुई हड्डी दूसरी ओर से आते लैप के प्रकाश के सामने बिलकुल स्पष्ट दिखाई दे रही थी। मित्या का हृदय घृणा की भयानक लहर से भीग गया। उसने अपनी जेब से मूसल को बाहर निकाल लिया। लाल-लाल-सा कोहरा-सा उसकी आखो के सामने तैर गया। कुछ देर तक उसको यह पता ही नही चला कि उसकी सास कम क्यो पड गई थी और वह हरियाली दूब को इतनी कठिनाई से क्यो पार कर रहा था। वह बाड के पास पहुच गया, एक बार फिर उछला और जब वह चला तो उसे लगा कि बाड पार करने के बाद उसमे शक्ति बाकी नही रही थी, मानो भारी पत्थर उसके पाव मे

बाध दिया गया था। उसे लगा कि किसी ने उसका पाव पकड लिया था और एक व्याकुल घुटी हुई सी आवाज सुनाई दी, "हत्यारे!" यह वृद्ध ग्रिगेरी की आवाज थी। मित्या का हाथ बिजली की तरह नीचे गिरा। बूढा नौकर कराह कर गिर गया। मित्या क्षण-भर तक उसे देखता रहा और फिर उसके पास ही गिर पडा। अचानक उसने यह अनुभव किया कि उसके हाथ मे एक भयानक चीज़ अभी तक मौजूद थी। उसने उसकी ओर आश्चर्य मे देखा और फिर उसे अपने-आपसे दूर फेक दिया।

वह ग्रिगेरी के पास झुक गया। बूढे नौकर के सिर से रक्त बह रहा था। मित्या ने अपना रूमाल निकाल लिया और उसके बहते खून को रोकने के लिए उसके घाव पर लगाया। रूमाल लहू से तर-बतर हो गया। मित्या के रग-रग मे आतक की लहर दौड गई और वह दहशत से थर्रा उठा। एक कौध-सी उसके दिमाग मे घूम गई और उसे लगा कि जैसे उसके भीतर से कोई कह रहा था, 'मैने इसकी हत्या कर दी है!' एक झपाटे मे वह बाड को पार कर गया और पागल की तरह भागता हुआ नगर मे घुस गया। अब अनन्त सकट और असीम कष्ट मे डूबने के पहले उसकी एक ही तृष्णा बाकी रह गई थी कि वह एक बार फिर ग्रशका के दर्शन कर ले।

फेनिया अपनी दादी के साथ रसोई मे बैठी थी। मित्या ने तेजी से प्रवेश किया और उसकी गरदन पकड ली। और वह गरज उठा, "बताती है, या मरती है, बोल! कहा गई है वह?"

दोनो स्त्रिया भय से चिल्ला उठी। फेनिया कुर्सी मे सिकुड गई और मित्या की बलिष्ठ उगलियो के दबाव से उसकी गरदन दर्द करने लगी और निरन्तर कसते वेग के कारण उसकी आखे बाहर निकल आईं। वह घबराकर बोली, "ठहरो, ठहरो! मैं तुम्हे बताती हू, लेकिन मैं मरी जा रही हू। मित्या प्यारे, मुझे छोड दो! वह अपने अफसर के पास मोकरो गई है!"

मित्या गुर्राया, "कौन अफसर?"

फेनिया ने कहा, "वही पोलिश सज्जन, जिसने उसे पाच वर्ष पूर्व निकाल दिया था। आपके मित्र कालगानोव और मैक्सिमो उसके साथ है। वे लोग त्रिपनी बोरिसोविच की सराय मे इकट्ठ होगे। ओह मित्या, तुम इतने पागल-से क्यो देख रहे हो! तुम क्या उसकी हत्या करना चाहते हो!"

लेकिन मित्या अब तक सडक पर आ गया था और प्लोपनीको के बडे स्टोर की तरफ तेजी से भागा चला जा रहा था। स्टोर के मालिक ने उसे देखा तो उसकी आतु-रता को देखकर उसे आश्चर्य हुआ। मित्या ने चिल्लाकर कहा, "मुझे तुरन्त घोडे दो और गाडी जुतवाओ और मुझे शैम्पेन शराब दो! कम से कम तीन दर्जन बोतल! मै मोकरो जाना चाहता हू। अगर तुम्हारा गाडीवाला आधी रात से पहले मुझे वहा पहुचा देगा तो मै उसे इनाम दूगा!" और यह कहकर मित्या ने अपनी जेब से निकालकर बीस रूबल साईस के लिए फेके और बाकी नोट जेब मे रख लिए। मालिक ने देखा कि नोटो पर कही-कही खून के दाग लग रहे थे। उसने बाकी नोटो की प्रतीक्षा मे हाथ फैला दिए और मित्या क्रूरता के से भाव से उसका हिसाब चुकाने लगा।

ज्योही मित्या ने त्रिपनीविच होटल के उस नीले कमरे मे प्रवेश किया, ग्रूशका के मुह से भयानक चीत्कार निकल गई। वह लगभग बाईस वर्ष की एक सुन्दर युवती थी। लम्बी, कोमल, मासल, वही सौदर्य जो रूस की औरतो मे बहुत जल्दी आ जाता है और बहुत ही जल्दी समाप्त भी हो जाता है। उसका मुख अत्यन्त श्वेत था और गालो पर बहुत ही मनोहर धुली हुई सी ललाई दिखाई देती थी। वह इस समय एक नीची कुर्सी पर बैठी हुई थी। एक लम्बे सोफे पर उसके सामने कालगानोव बैठा था, जिसके कि बाल बडे सुन्दर थे और जो देखने मे भी बडा आकर्षक विद्यार्थी था। उसके पास मेक्सिमो था। वह एक अधेड ज़मीदार था जोकि अपनी सम्पत्ति को हाल ही मे विनष्ट कर चुका था। वह सुदृढ और छोटे कद का आदमी था जो मित्या के इस प्रकार प्रवेश करने पर अत्यन्त क्रुद्ध हो उठा था। मुसूयोलाविच, जिसपर ग्रूशका गत पाच वर्षो से इतनी मोहित थी, भी उनके निकट ही बैठा था। वह एक पोलिश अफसर था और उसके पीछे एक विशालकाय वह्ब्लेवस्की नाम का व्यक्ति खडा था। वह ग्रूशका के पीछे झुकता हुआ उसकी कुर्सी के समीप था।

मित्या ने प्रचड स्वर से कहना प्रारम्भ किया, "सज्जनो!" लेकिन वह प्रत्येक शब्द पर अटकने लगा, "मै आपसे प्रार्थना करता हू कि मुझे अपने साथ प्रात काल तक यहा रहने की आज्ञा दे। मै भी आपका एक सहयात्री हू, अनन्त की ओर जाता हुआ मै नही, नही, नही, बात तो कोई भी नही है।" और फिर ग्रूशका की ओर मुडकर उसने कहा, "मैं क्या चाहता हू, मैं नही जानता।"

ग्रूशका कुर्सी मे जैसे सिकुड गई थी। गठीले और छोटे कद के पोलिश अफसर ने कहा, "श्रीमान, यह एक आपसी लोगो का मिलन है, इसको ध्यान रखिए।" और उसने अपने मुह से अपना पाइप हटाते हुए कहा, "यहा और भी कमरे है।"

मित्या ने बाकी और दो आदमियो की ओर मुडकर कहा, "सज्जनो, मेरे इस प्रकार आ जाने के लिए आप मुझे क्षमा करिए।" उसके स्वर मे याचना की झलक थी, "मैं अपनी आखिरी रात अपनी रानी के साथ बिताना चाहता था। मैंने उसको जीवन-भर प्यार किया है। सज्जनो! मुझे क्षमा कर दीजिए।" और वह पागल की तरह चिल्लाया, "मैं भागकर आया हू। आओ हम लोग सब मित्र बन जाए। मै ढेर-ढेर शराब अपने साथ लाया हू। देखिए, देखिए, नौकर उस शराब को भीतर ला रहे हैं! आप लोग पोलैंड के निवासी हैं, तब फिर हम लोग पोलैंड के कल्याण के लिए ही आज मदिरा पीए!"

त्रिफन, जोकि इस सराय का मालिक था, अपने नौकरो के साथ भीतर घुस आया। मित्या की लाई हुई बोतलो मे से शराब उडेली जाने लगी, और गिलास उन लोगो के हाथो मे उठ गए। उन लोगो ने गिलास एक-दूसरे से टकराए और पोलैड के कल्याण के लिए पीने लगे। मित्या चिल्लाया, "और बोतले खोलो! और अब हम रूस के कल्याण के लिए पिएगे! हम लोग आज से भाई-भाई है!"

लम्बे पोल ने उठकर अपने गिलास को उठाया और उसने व्यग्य से कहा, "रूस के कल्याण के लिए—जैसाकि रूस १७७२ से पहले था, उसी रूस के लिए!"

मित्या का चेहरा लाल हो गया। वह चिल्लाया, "तुमने मेरे देश का अपमान

किया है !"

"चुप रहो" ग्रूशका उत्तेजित होकर बोली, "यहा मैं किसी प्रकार का लडाई-झगडा पसन्द नही करूगी, समझे !" यह कहकर उसने पृथ्वी पर अपने पैरो को ज़ोर से पटका।

मित्या बडबडाया, "सज्जनो ! मुझे क्षमा कीजिए, यह सब मेरा ही अपराध था। मुझे खेद है। अच्छा, आपके पास ताश की गड्डी भी है। आइए, देखे कौन जीतता है।"

एक घटे के बाद इन पोल लोगो से मित्या लगभग २०० रूबल हार चुका था। कालगानोव ने अपना हाथ फैलाया और पत्तो को मेज के नीचे गिरा दिया और कहा, "नही मित्या, मै तुम्हे इस तरह खेलने नही दूगा !" उसकी आवाज़ नशे से भर्रा गई और उसने फिर कहा, "तुम बहुत ज्यादा हार चुके हो।"

मित्या ने कहा, "लेकिन तुमको इससे क्या !"

लेकिन ग्रूशका ने तभी मित्या के कधे पर हाथ रखकर कहा, "कालगानोव ठीक कहता है।" उसके स्वर मे एक विचित्रता आ गई थी और वह बोली, "बस, अब तुम मत खेलो !"

ग्रूशका की आखो की ओर देखकर उसकी आखो मे एक विचित्र-सी प्रेरणा-भरी चमक आ गई। वह उठ खडा हुआ और मुसूयालोविच के कधे को थपथपाकर कहा, "मेरे दोस्त, आओ ज़रा बगल के कमरे मे चले, मुझे तुमसे कुछ कहना है। अपने अगरक्षक को भी अपने साथ ले आओ।" यह कहते हुए उसने उस विशालकाय पोल की तरफ देखा जो कि उस अफसर का रक्षक था। और वह उन दोनो को लेकर दायी ओरवाले कमरे मे चला गया और तब मित्या ने दबी लेकिन तनाव-भरी आवाज़ मे कहा, "श्रीमान, मेरी बात ध्यान से सुन ले। ये तीन हज़ार रूबल है। इन्हे मुझसे ले लीजिए और दोज़ख का रास्ता मापिए। मैं आप लोगो का सब इन्तज़ाम कर दूगा, घोडे अभी तैयार हो जाएगे और आप बिना अधिक झझट किए शीघ्र ही यहा से जा सकते हैं।"

दोनो पोल क्रोध से भरे फिर उसी कमरे मे लौट गए। मुसूयोलोविच ने अहकार से भरे हुए कहा, "ग्रूशका, मेरा घोर अपमान हुआ है। मैं अतीत की बातो को क्षमा करने यहा आया था।"

ग्रूशका झपटकर अपनी कुर्सी से खडी हो गई और चिल्लाई, "तुम तुम, मुझे क्षमा करने के लिए आ गए थे !"

"हा," पोल ने कहा, "मैं सदा से ही कोमल हृदय का व्यक्ति हू। लेकिन मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि तुमने हम लोगो की उपस्थिति मे ही अपने एक मित्र को भी यहा निमत्रित किया, और यही नही, उसने मुझे तुरन्त यहा से चले जाने के लिए तीन हज़ार रूबल लेने की भी बेहूदा पेशकश की है !"

यह सुनकर ग्रूशका जैसे पागल हो गई थी। उसने कहा, "क्या कहा ! उसने मेरे लिए तुम्हे धन दिया है ? मित्या, क्या यह सच है ? मै कहती हू, तुम्हारा इतना साहस कैसे हुआ ? क्या मैं बिकाऊ हू ? और तुमने धन लेने से इन्कार कर दिया ?"

मित्या ने पुकारकर कहा, "वह ले चुका है, वह उस धन को ले चुका है ! लेकिन वह चाहता था कि पूरे के पूरे तीन हज़ार उसको एकसाथ मिल जाए और मेरे पास इस

समय पूरे नही है।"

ग्रशका कुर्सी पर गिर गई और उसने एक विचित्र स्वर से कहा, "अब मुझे पता चला कि इसको इस बात का ज्ञान हो गया था कि मेरे पास काफी धन है और इसलिए यह मुझे क्षमा करने आया था और इसलिए इसने मुझसे विवाह की बात चलाई थी।"

लाल चेहरेवाले नाटे कद के पोल अफसर ने गर्जन किया, "ग्रुशका, मै अतीत की बातो को भूल जाना चाहता था और तुम्हे अपनी पत्नी बनाना चाहता था, लेकिन तुम तो बिलकुल बदल गई हो! बिलकुल विचित्र हो गई हो—घृणित और निर्लज्ज !"

ग्रशका ने उदास स्वर मे कहा, "तुम जहा से आए हो वही चले जाओ, मै ही एक मूर्ख हू। मैं सचमुच बडी मूर्ख हू कि मैने तुम जैसे प्राणी के लिए अपने को पाच वर्ष तक असह्य यातना दी। तुम इतने मोटे और बूढे हो कि तुम खुद अपने बाप भी हो सकते हो। यह तुमने नकली बाल कहा से लगा लिए है। हे भगवान, तुम्हारा यह रूप, और मैं तुम्हे प्यार करती थी! पाच वर्ष तक मैंने रो-रोकर तुम्हारे लिए आखे सुजाई थी, लेकिन पाच वर्ष तक वास्तव मे मैंने इस मित्या से प्रेम किया था। फिर भी आज नक मैंने कभी इसका अनुभव नही किया, कैसी पागल हू मैं! इस सारे ससार मे वही एक व्यक्ति है जो मेरा है, जो मेरे लिए सब कुछ करने के लिए तत्पर है! मित्या, मुझे क्षमा कर दो! मैंने तुम्हे असह्य यत्रणा दी है, लेकिन मैं अब तुम्हारे चरणो पर गिरती हू। अपना बाकी जीवन मैं तुम्हारी सेवा मे व्यतीत करूगी। मै जब तक जिऊगी तब तक तुम्हे प्यार करूगी! अब हम सदा के लिए सुखी हो जाएगे, क्योकि फिर हम दोनो एक-दूसरे से मिल जाएगे।"

उसी समय दरवाजे पर बडी ज़ोर की खटखटाहट सुनाई दी। कालगानोव उठ खडा हुआ और उसने द्वार खोल दिया। एक लम्बा मज़बूत आदमी पुलिस-कप्तान की वर्दी पहने हुए कमरे के बीच मे आ गया और उसने कठोरता से कहा, "मित्या फ्योदोरोविच करामज़ोव, मै तुम्हे अपने पिता की हत्या करने के अपराध पर गिरफ्तार करता हू।"

अल्योशा ने कहा, "वह निरपराध है!"

ईवान ने पूछा, "तुम्हारे पास इसका प्रमाण भी है?"

अल्योशा उसी समय मित्या से बन्दीगृह मे मिलकर आया था। उसने कहा, "उसने मुझसे स्वय कहा है और मै उसका विश्वास करता हू। ईवान! जब उन्होने उसको गिरफ्तार किया था तब वह स्वय नही जानता था कि उसने अपने पिता की हत्या की थी। उसे विचार आया था कि शायद उन लोगो ने ग्रिगेरी को ही उसका पिता समझ लिया था। उसे केवल ग्रिगेरी की हत्या की अत्यधिक चिन्ता हो रही थी, लेकिन उन लोगो ने बताया कि ग्रिगेरी का घाव भयानक नही था और वह ठीक हो जाएगा।"

"और स्मरद्याकोव कैसा है?" ईवान ने पूछा।

"वह बिलकुल ठीक है, उसका दौरा तो सुबह तक चलता रहा और वह बिलकुल निर्बल होकर पडा रहा, और तभी यह भयानक खबर आई।"

ईवान ने बीच मे ही रोककर कहा, "मैं चलता हू और उसे देखना चाहता हू।"

"लेकिन वह तो मेरिया कोद्रोतेवना के घर पर है, क्योकि हमारे पिता के घर मे उसकी देखभाल करनेवाला कोई भी नही था।"

दोनो भाइयो ने अगले दिन स्मरद्याकोव से भेट करने की योजना बनाई।

अगले दिन मेरिया के घर मे स्मरद्याकोव से मिलने के लिए ईवान गया।

स्मरद्याकोव अपना ड्रेसिग गाउन पहने एक पुराने सोफे पर लेटा हुआ था। उसकी आखे मटमैली और कुछ विषादयुक्त थी। आखो के नीचे के गड्ढे स्याह दिखाई दे रहे थे।

ईवान ने कहा, "तुम्हे इस तरह बीमार देखकर मुझे अफसोस होता है।"

स्मरद्याकोव ने आश्चर्य से उसकी ओर देखकर कहा, "तुम भी तो पहले जैसे ठीक दिखाई नही दे रहे हो, पीले पड गए हो, और तुम्हारे हाथ काप क्यो रहे है ? श्रीमान ईवान, आप इतने बेचैन क्यो है ? क्या इसलिए कि कल से मुकदमा शुरू होने-वाला है ? घर जाइए और आराम से सो जाइए। किसी बात के लिए डरने की वजह नही।"

ईवान ने आश्चर्य से कहा, "मैं तुम्हारी बात नही समझा, मेरे लिए डरने की बात भी क्या है ?"

स्मरद्याकोव ने उत्तर दिया, मानो वह अपने-आपमे बडबडा रहा हो, "मैं तुम्हारे बारे मे कुछ भी नही कहूगा, कोई भी प्रमाण मौजूद नही है। मै कहता हू कि तुम्हारे हाथ इतने काप क्यो रहे है ? घर जाओ, और सो जाओ। किसी तरह का भी डर मत करो। तुम्हारा कुछ भी नही होगा।"

ईवान उठ खडा हुआ और उसने उसके कधो को पकडकर कहा, "मुझे हर बात बता दे कुत्ते, मुझे सच बात बता !"

स्मरद्याकोव की आखो मे एक पागलपन उभर आया था और उसकी इधर-उधर उलटती आखे मानो घृणा बरसाने लगी। उसने फुसफुसाकर कहा, "अच्छा, तो तुम्ही-ने अपने बाप की हत्या की थी ! बोलो, ठीक कहता हू न ?"

ईवान एक नीरस हास्य के साथ अपनी कुर्सी पर बैठ गया और बोला, "मै चर्मा-श्नेया चला गया था, और वृद्ध को बिना किसी सहायक के छोड गया था, इसलिए तुम मुझसे ऐसा कहते हो ?"

स्मरद्याकोव की आखें पूरी तरह खुल गईं। उसने कहा, "अरे, अब इस तरह का बाते बनाने से फायदा ही क्या है ! तुम मेरे ही मुह पर मुझी पर सारी बात थोप देना चाहते हो। तुम असली हत्यारे थे ! मैं तो सिर्फ तुम्हारा औज़ार था। क्योकि मै तुम्हारा वफादार नौकर था। मैंने अपनी ओर से कुछ नही किया, मैं तो केवल तुम्हारी आज्ञा का पालन कर रहा था।"

ईवान का जैसे लहू ठडा हो गया। उसने लडखडाते स्वर से पूछा, "तुमने क्या किया ?"

"मैंने ," स्मरद्याकोव ने कहा, "उसके सिर पर चोट की ! यह देखो !" यह कहकर उसने अपने ड्रेसिग गाउन के अन्दर कुछ खोजा और नोटो का बडल निकालकर

मेज पर फेक दिया।

ईवान ने देखा तीन बण्डल थे और हर एक मे एक-एक हजार रूबल के नोट थे।

ईवान ने उतावली से पूछा, "तुमने ऐसा कैसे किया ?" उसका चेहरा बिलकुल सफेद हो गया था।

"आठ बजे थे। कल रात मे मै दौरे की वजह से तहखाने की सीढियो पर गिर पडा। लेकिन वह मेरा असली दौरा नही था। मैने इस तरह एक नकली खेल खेला था। ग्रिगेरी मुझे उठाकर मेरे बिस्तर पर छोड आया था। तुम तो जानते हो कि मेरा शयन-कक्ष उसके शयनकक्ष के बिलकुल बगल मे है। थोडी देर मे आखे झपकाए रहा और तभी मुझे मालिक की आवाज सुनाई दी, 'मित्या आया था! वह भाग गया है! उसने ग्रिगेरी की हत्या कर दी है!' मैंने जल्दी से कपडे पहने और बाग मे भागकर गया। मैंने देखा, बाड के पास ग्रिगेरी बेहोश पडा था। तभी मैने सोचा बूढे करामजोव को मारने का इससे अच्छा अवसर नही आ सकता—मित्या यह काम (ग्रिगेरी की हत्या) कर गया है, अत हर कोई यही सोचेगा कि दूसरा काम (बूढे करामजोव की हत्या) भी उसीने किया होगा। मै तुरन्त मालिक के कमरे मे गया। वे खाली खिडकी के पास खडे हुए थे। मैने बडबडाकर कहा, 'ग्रूशका यहा आ गई है।' ओह! मेरा यह कहना था कि वृद्ध के मुख पर एक विचित्र भाव आ गया, मानो आवेश के कारण उसकी नसे फटने-फटने को हो गई थी। 'कहा है वह, कहा है वह ?' उन्होने मुझसे कहा। मैने कहा, 'उस झाडी मे। वह आपको देखकर हस रही है। क्या आप उसे नही देख सकते ?' यह सुनकर मालिक खिडकी से बिलकुल बाहर की तरफ झुक गए। मैने उसकी मेज पर से लोहे का पेपरवेट उठा लिया। तुम तो जानते हो ना कि उसका वज़न तीन पौड है, और मैने जोर से उसे उनके सिर पर दे मारा। वे चिल्ला भी नही सके। उनकी मृत्यु को और निश्चित कर लेने के लिए मैंने दो भयानक आघात और किए। तब मैने अपने-आपको देखा कि मैं कितना साफ था। मुझपर खून की एक बूद भी नही थी। मैने पेपरवेट को फेक दिया और उसे ऐसी जगह छुपा दिया—ईवान तुम कुछ चिन्ता मत करो—उसे कोई नही ढूढ सकता और तभी मैंने वह धन ले लिया। मित्या उस धन को कभी ढूढ भी नही सकता था। बूढे और मेरे सिवाय कोई भी नही जानता था कि वह किस कोने मे छिपाकर रखा जाता था। मैंने लिफाफे को खोल डाला। नोटो को निकाल लिया और लिफाफा फाडकर फर्श पर फेक दिया।"

ईवान चिल्लाया, "ठहरो, तुमने लिफाफे को नीचे क्यो पटक दिया ?"

स्मरद्याकोव ने मुस्कराकर कहा, "ताकि जासूसो को अपने से दूर रख सकू। हर कोई जानता था कि मुझे उस लिफाफे के बारे मे मालूम है, क्योकि मैंने ही उसके अन्दर सारे नोट रखे थे, मोहर लगाई थी और उस नीच बुड्ढे के कहने से मैंने ही उसपर लिखा था, 'मेरी प्रिय ग्रूशका के लिए।' अगर मैं लिफाफा चुरा लेता तो जासूस लोग यह सोचते कि मैं जब भी उस लिफाफे को पाऊगा तुरन्त जेब मे रख लूगा, उसे खोलूगा नही, क्योंकि मुझे मालूम ही था कि उसके अन्दर क्या था। मित्या को तो लिफाफे के बारे मे एक उडती हुई खबर मिली थी, उसने उसे देखा तो नही था, और अगर वह उसे लेता तो

अपने को यकीन दिलाने के लिए, कि धन उस लिफाफे के अन्दर था, वह जरूर उस लिफाफे को खोलता और नीचे फेक देता। क्योकि मित्या के पास इतना समय न होता कि वह इस बारे मे कुछ सोचता कि यह फटा लिफाफा उसके विरुद्ध प्रमाण बन जाएगा।"

ईवान खडा हो गया और बेचैनी से कमरे मे कई मिनट तक टहलता रहा। फिर वह रुक गया और फिर उसने स्मरद्याकोव की तरफ ऐसे देखा जैसे वह उसकी हत्या करेगा। उसने रुककर कहा, "शैतान, मै इन नोटो को लेकर सीधे पुलिस के पास जा रहा हू और मै उन्हे सारी बात बता दूगा!"

स्मरद्याकोव ने जम्हाई ली और कहा, "बेकार कष्ट मत करो। नोटो के नम्बर किसीको नही मालूम थे और न मालूम है। ये तो किसीके भी नोट हो सकते है, तुम्हारे भी हो सकते है और जो कहानी मैने तुम्हे बताई है उसके लिए एक भी सबूत तुम्हारे पास नही है।"

ईवान की आखे चमक उठी और उसने कहा, "जब तुम मेरे पिता के कमरे मे से निकल आए तो तुमने क्या किया?"

"मैने कपडे उतारे और मै अपनी शय्या पर चला गया। जबकि बगीचे से लौट-कर ग्रिगेरी लडखडाते हुए आया तो उसने मुझे खडे हुए देखा।"

ईवान ने विजय के स्वर से कहा, "अब मैंने तुम्हे पकड लिया। ग्रिगेरी ने जरूर देख लिया होगा कि तुम महज दौरा पडने का मक्कर मार रहे हो—क्योकि इतनी देर तक कोई भी आदमी मिरगी के दौरे का बहाना नही कर सकता।"

स्मरद्याकोव ने सिर हिलाकर कहा, "ठीक कहते हो। लेकिन जब मै शय्या पर लौटकर गिरा, ठीक उसी समय मुझे असली दौरा आ गया—शायद इतना बडा जो आवेश मेरे भीतर भर गया था, उसने मुझे सचमुच पागल कर दिया था।"

ईवान के माथे पर की नसे जैसे तन गई। कुछ देर तक वह बोलने के लिए बेकार चेष्टा करने लगा और वह स्मरद्याकोव को देखकर चिल्लाया, "अभी तुम्हारी पूरी जीत नही हुई। मैं अभी पुलिस को यहा लाता हू और भगवान साक्षी है कि तुम्हारे अन्दर से सारी सच्चाई किसी न किसी तरह से निकलवा ली जाएगी।"

स्मरद्याकोव की हसी झनझना उठी। उसने कहा, "अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो ऐसा कभी नही करता। यह तो बिलकुल बेकार है, इससे फायदा ही क्या है। और हम दोनो के लिए यह कोई सुखद समाचार भी नही है। मुझे निश्चय से मालूम है कि तुम केतरीना इवानोवना को यह बताना नही चाहते थे कि तुम चर्माश्नेया क्यो गए थे। मुझे मालूम है, तुम उसे प्यार करते हो। जब से मित्या उसे छोड गया था तुम उससे मिलने रोज जाया करते थे। सुनो, मैं तुम्हारी हिम्मत बढानेवाली एक बात कहता हू, वह भी तुम्हे प्यार करती है। आज सुबह वह मुझसे मिलने आई थी तो उसने मुझसे यह कहा था। इसलिए, मेरे प्यारे ईवान, घर लौट जाओ और तुम आराम से सोओ और मीठे सपने देखो।"

जब स्मरद्याकोव के घर से ईवान चला तो उसमे दुतरफा भावो की मार चल रही थी। मानो वह एक तूफान मे घिर गया था और समझ नही पा रहा था कि क्या

करे। वह सडक पर चलने लगा। वह सोचता जा रहा था कि केतरीना उसे प्यार करती है, मित्या निरपराध है—लेकिन वह एक बेकार का आदमी है, उसके फासी हो जाने मे कोई हर्ज नही है। लेकिन एक बात और भी तो थी कि वह उसका भाई था और हर हालत मे उसे उसकी जान बचानी थी।

पुलिस स्टेशन के सामने ईवान मन मे आशका लिए डावाडोल-सा खडा रहा और फिर उसने अपने कधे हिलाए, मानो सारे बोझ को अपने से दूर कर देना चाहता हो और फिर वह अपने घर की ओर चल पडा।

अनिश्चय की भावना मे वह घण्टो अपने कमरे मे घूमता रहा। तभी दरवाज़े पर थपथपाहट सुनाई दी। उसने द्वार खोला।

सामने अल्योशा खडा था, उसने पूछा, "तुम अकेले हो ?"

अल्योशा के मुख पर एक पवित्रता थी—एक अटूट शान्ति विराजमान थी, ऐसी कि ईवान ने कभी पहले देखी नही थी। वह उस पवित्रता को देखकर हतबुद्धि-सा रह गया। अचानक ही पागल की तरह वह हस उठा और बोला, "अकेला नही हू, शैतान मेरे साथ है !"

अल्योशा उसकी ओर करुणा-भरे नेत्रो से देखता रहा और उसने कहा, "ईवान, तुम बीमार हो गए हो। ऐसा लगता है, मुझे तुम्हारी देखभाल करनी होगी। तुम्हे ज्वर भी है। और दूसरे, मै तुम्हारे लिए एक बडा गम्भीर सम्वाद लाया हू। स्मरद्याकोव ने अभी-अभी अपने गले मे फदा लगाकर आत्महत्या कर ली है।"

न्यायालय मे जज के आने के पहले ही ठसाठस भीड हो रही थी। मॉस्को और पीटर्सबर्ग जैसे सुदूर स्थानो से भी दर्शक आए थे। उनमे कितनी ही उच्चकुल की महिलाए थी। दूर-दूर तक मित्या के नाम की धूम मच गई थी कि वह स्त्रियो का हृदय जीतने मे सिद्धहस्त है। अत स्त्रियो को उसके प्रति बडा कौतूहल था। धीरे-धीरे फुसफुसाती आवाज़े चुप हो गईं, और जब मुकदमा शुरू हुआ, चारो ओर ऐसी घोर निस्तब्धता छा गई कि एक पत्ता भी हिलता तो वहा उसकी सरसराहट सुनाई देती। सरकारी वकील बडे ज़ोर-शोर से बोलने लगा और उसने न जाने कितनी गवाहिया, कितने प्रमाण मित्या के विरुद्ध एकत्रित कर दिए—मित्या अपने पिता से घृणा करता था, हत्या करने के पहले उसने अपने पिता पर आक्रमण भी किया था, ग्रूशका के पास पहुचने के लिए उसे धन की अत्यन्त आवश्यकता थी, हत्या के समय वह बाहर मौजद था, ग्रिगेरी ने अपनी गवाही दी थी, खून से भीगा हुआ मूसल मिला था, फटा लिफाफा वहा पडा था, इस प्रकार के अनेक प्रमाण थे जो सब अपराधी के विरुद्ध बोलते थे। जब मित्या गिरफ्तार हुआ तो उसके पास कुल सौ रूबल ही थे। अगर मान लिया जाए कि मोकरो मे उसने ज़रूरत से ज्यादा धन खर्च किया था तब भी कम से कम दो हज़ार रूबल तो उसके पास बाकी होने ही चाहिए थे। वकील ने उससे पूछा, "बाकी धन का तुमने क्या किया ? क्या तुमने उसे सराय मे कही छिपा दिया ?"

मित्या ने दृढता से उत्तर दिया, "मैं तुमसे सौ बार कह चुका हू कि मैंने वह धन

नही लिया ।" इस समय वह एक बिलकुल नया फ्रौककॉट (मर्दाना लबा कोट) पहने था। उसके हाथ पर बकरी के बच्चे की नरम खाल के काले दस्ताने चढे हुए थे। यद्यपि ये उसके जीवन के गम्भीर क्षण थे लेकिन तब भी उसे इस बात का ध्यान था कि जो 'लिनिन' वह पहने हुए था, उसने उसके सौदर्य को द्विगुणित कर दिया है। उसे पता था कि न्यायालय मे स्त्रिया उसके प्रति किस प्रकार आकर्षित हो रही है। उसने फिर कहा, "मै जब मोक्रो की ओर चला था, तब मेरे पास केवल १५०० रूबल थे। केतरीना इवानोवना ने जो मुझे तीन हजार रूबल दिए थे उसमे से केवल वही मेरे पास बच रहे थे।" यह कहते हुए उसके नयन लज्जा से झुक गए।

"तुम अपना धन कहा रखा करते थे।" वकील ने अगला सवाल किया।

"एक छोटे-से कपडे के बटुए मे, जिमे मै तनियो से बाधकर गले मे लटकाए रखता था।"

"तुमने उस बटुए का क्या किया ?"

"मैने उसे मोकरो के बाज़ार मे फेक दिया था।"

विजय की भावना से वकील ने चारो ओर गर्व से देखा, मानो उसने एक नई बात निकलवा ली थी, और अपनी कुर्सी पर बैठ गया। तब मित्या की ओर से वकील खडा हुआ—फेत्यूकोविच। वह एक लम्बा, दुबला व्यक्ति था, उसकी दाढी-मूछ बिलकुल साफ थी और उसे देखकर ऐसा लगता था कि जैसे यह आदमी कभी भी परिश्रात होना नही जानता हो।

कचहरी मे एक फुसफुसाहट की लहर दौड गई। किसीने कहा, "कहते है यह अद्भुत वक्ता है, बडा चतुर है!"

फिर किसी स्त्री ने धीरे से बडबडाकर कहा, "लेकिन सरकारी वकील का केस ऐसा नही है कि यह उसको हरा सके।"

मित्या के वकील ने फिर से एक-एक गवाह को बुलाया और उससे जिरह की। पहले तो जज ने उसके प्रश्नो को व्यर्थ समझा किन्तु थोडी ही देर मे यह साबित हो गया कि उसके तर्क-वितर्क यह प्रमाणित कर सकते है कि देखने को तो मित्या के विरुद्ध सब कुछ सच प्रतीत होता है, लेकिन अगर सबको मिलाकर देखा जाए तो उन गवाहो की बातो मे कोई तारतम्य नही था। अलग-अलग परीक्षा लेते समय सारा केस जैसे टुकडे-टुकडे हो गया। उसने अनेक गवाहो की धज्जिया उडा दी। त्रिफन बोरिसोविच को उसने एक झूठा गवाह प्रमाणित कर दिया और ग्रिगेरी के मुह से एसी विरोधी बाते निकली कि न्यायालय मे लोग देख-देखकर हसने लगे और उसके बाद उसने अकस्मात् ही अल्योशा को गवाहो के कठघरे मे बुलाया।

पहले सरकारी वकील ने उससे पूछताछ की। उसने पूछा, "क्या तुम यह विश्वास करते हो कि तुम्हारे भाई ने तुम्हारे पिता की हत्या की है ?"

अल्योशा ने जोर से स्पष्ट स्वर मे कहा, "बिलकुल गलत! मै उसे बिलकुल निरपराध मानता हू। उसने हत्या नही की!"

सनसनी की एक लहर न्यायालय मे दौड गई। प्रत्येक व्यक्ति अल्योशा से प्रेम

करता था और उसका सम्मान भी। लोग जानते थे कि वह किसी भी अवस्था मे झूठ नही बोल सकता था। सरकारी वकील गुस्से से लाल हो गया। उसने पूछा, "तुम्हारे पास अपने भाई के निरपराध होने का क्या प्रमाण है जो तुम इतने निश्चय से यह बात कहते हो ?"

"मै जानता हू," अल्योशा ने कहा, "वह मुझसे झूठ नही कह सकता। मैने उसके मुख पर देखा था, वहा अपराध की कलुषित छाया नही थी।"

वकील ने कहा, "यह बात तुमने केवल उसके चेहरे को ही देखकर कही है ? क्या यही तुम्हारे पास एकमात्र प्रमाण है ?" वकील के स्वर मे व्यग्य फूट निकला।

अल्योशा ने सिर हिलाकर कहा, "हा, मेरे पास और कोई प्रमाण नही है, और न मुझे किसी प्रमाण की आवश्यकता ही है।"

सरकारी वकील हसा और बैठ गया। और किसी भी तथ्य से मित्या का निरप-होना साबित नही हो रहा था, लेकिन उसका वकील खडा हो गया। वह जानता था कि अल्योशा के शात सत्य ने जूरी पर अपना प्रभाव डाल दिया है। उसने फिर सरकारी वकील के ऊपर एक नया प्रहार किया। उसने अल्योशा से पूछा, "क्या मित्या के गले मे केतरीना इवानोवना द्वारा दिया धन बटुए मे लटका रहता था ?"

अल्योशा ने कहा, "मैने वह बटुआ कभी नही देखा। लेकिन जिस दिन मित्या मोकरो जाने वाला था उसके एक दिन पहले मैने यह ज़रूर देखा था कि मित्या बार-बार अपने सीने पर हाथ रखता था, और कहता था, 'यही मेरे पास, इस जगह वह सब कुछ है, जिसकी मुझे आवश्यकता है।' पहले मै समझा कि वह अपने दिल को ही ठोक-ठोककर मुझे दिखाने की चेष्टा कर रहा था। पर फिर मैने गौर किया तो मुझे पता चला कि गरदन के नीचे कुछ चीज फली हुई सी थी। हो सकता है, वह उस छोटे बटुए की तरफ ही कुछ इशारा कर रहा हो।"

मित्या अपनी कुर्सी से उठकर चिल्लाया, "ठीक कहते हो अल्योशा, मैंने उस बटुए को ही अपने हाथ से दबाया था !"

ऐसा प्रमाण भी यदि किसी दूसरे गवाह के मुह से आया होता तो वह उप-हासास्पद दिखाई देता, लेकिन अल्योशा के बारे मे लोगो का दूसरा ही मत था। न्याया-लय मे अधिकारीगण भी उसकी बात का सम्मान करते थे। चारो ओर फिर फुसफुसाहट होने लगी और किसीने स्पष्ट कहा, "शायद मित्या छूट जाए।"

ईवान को न्यायालय मे बुलाया गया। उसके चेहरे पर मुर्दनी-सी छाई हुई थी। एक बार उसने अपनी आखे मूद ली, फिर जैसे वह हिल उठा और यदि ठीक समय पर वह सामने की छड को नही पकड लेता तो शायद गिर जाता।

सरकारी वकील उससे प्रश्न करने के लिए उठा, लेकिन इससे पहले कि सरकारी वकील कुछ बोलता ईवान ने अपने अन्दर की जेब से नोटो की एक गड्डी निकाली और उसे मेज़ पर फेंक दिया—जहा पहले से अपराध-प्रमाण के रूप मे पेश किया गया फटा लिफाफा पडा था और दूसरे अनेक प्रकार के मित्या को अपराधी प्रमाणित करने-वाले साधन एकत्रित किए गए थे। उस मेज़ पर नोटो की वह गड्डी जाकर शान्त

हो गई। फिर ईवान ने चिल्लाकर कहा, "यही नोट इस लिफाफे मे से निकले थे। कल मैंने इनको पाया था।" और यह कहकर उसने फिर सिर उठाकर कहा, "कल ये मुझे हत्यारे स्मरद्याकोव से मिले थे। जब उसने अपने गले मे फासी लगाई थी उससे थोडी ही देर पहले मै उसके साथ था। उसीने मेरे पिता की हत्या की थी, न कि मेरे भाई ने! उसने उनकी हत्या की थी, और मैने उसे इसकी प्रेरणा दी थी। दुर्भाग्य से इन नोटो के नम्बरो का कही विवरण नही है, वे किसीके भी हो सकते है। लेकिन यह कितना विचित्र है, कितने नारकीय रूप से भयानक है!" और वह बौराए स्वर मे हस उठा, मानो वह अपने विकराल हास्य को रोक नही पाया था।

न्यायालय के अध्यक्ष ने कहा, "क्या तुम्हारा दिमाग ठीक है?"

"मै समझता हू कि मै बिलकुल ठीक हू। जिस प्रकार आप लोगो का दिमाग ठीक है। ये जो घृणित चेहरे यहा पर इकट्ठे है, जिनके अन्दर कुटिलताए भरी हुई है, जिस प्रकार ये सब जागरूक है उसी प्रकार मै भी सचेत हू।" और यह कहते हुए उसने न्यायालय मे न्यायकर्ताओ की ओर देखा और फिर वह गुर्राया, "मेरे पिता की हत्या कर दी गई है! और तुम इस तरह से देख रहे हो जैसे तुम डर गए हो परन्तु यह सब झूठ है, तुम सब झूठे हो! यदि हत्या नही होती तो तुममे से किसीको चिन्ता भी नही होती! तुम लोगो के लिए यह सस्ती सनसनी की चीज है। अरे, मुझे कोई पानी दो! ईसामसीह के नाम पर मुझे कोई पानी पिलाओ!" और उसने सिर को पकड लिया।

अल्योशा उठ खडा हुआ और चिल्लाया, "वह बीमार है! उसकी बात का विश्वास मत करो! मालूम होता है उसका दिमाग पागलपन की तरफ खिच गया है।"

एक काले बालोवाली स्त्री, जिसका मुख सुन्दर और आकर्षक था, अपनी जगह से उठ खडी हुई और भयभीत दृष्टि से ईवान की ओर टकटकी लगाकार देखने लगी, वह केतरीना इवानोवना थी।

ईवान ने फिर कहना शुरू किया, "तुम मत घबराओ मै पागल नही हू, मैं केवल एक हत्यारा हू! हत्यारा कोई अच्छा वक्ता नही हो सकता।"

सरकारी वकील अध्यक्ष के पास निराश-सा गया। बाकी दोनो न्यायाधीशो ने जल्दी-जल्दी कुछ परामर्श किया। अध्यक्ष ने आगे झुककर सुना और फिर कहा, "तुम बखूबी समझ सकते हो कि तुम्हारा बयान, तुम्हारे शब्द ऐसे नही है, कि जिनका कोई स्पष्ट अर्थ लगा सके। यदि हो सके तो पहले तुम अपने-आपको शात करो और तब अपनी पूरी कहानी सुनाओ। जो कुछ तुमने कहा है उसके लिए तुम प्रमाण क्या दे सकते हो?"

ईवान ने कहा, "यही तो बात है, मेरे पास प्रमाण के लिए कुछ भी नही है। वह घृणित स्मरद्याकोव मर चुका है और अब उस परलोक से वह आपके पास कोई प्रमाण नही भेज सकता! अब उसका दूसरा लिफाफा नही आ सकता। मेरे पास कोई गवाह नही है। शायद एक है!" यह कहकर वह गम्भीरतापूर्वक मुस्करा पडा जैसे कुछ सोच रहा हो।

"अपने गवाह को पेश करो।" अध्यक्ष ने कहा।

"श्रीमान, उसके पूछ है और उसको कचहरी मे लाना ठीक नही होगा, क्योकि

कानून के पास शैतान के लिए जगह नही है !" ईवान ने ऐसे कहा, मानो वह कोई बडा भारी गुप्त रहस्य प्रकट कर रहा हो, "श्रीमान, वह यही है, यही कही है ! उसके पास सारे प्रमाण है और वह उस मेज के पीछे है। मैने उससे कहा था कि मै अपनी जीभ पर लगाम नही लगाऊगा, और इसलिए वह मेरे साथ आ गया है, कि जो कुछ मै कहू उसको वह झुठलाता चले । ओह ! यह सारी मूर्खता कितनी विचित्र है ! मै आपका आदमी हू—अपराधी हू, मैं मित्या नही हू। मैं यहा व्यर्थ के लिए तो नही आया। आप लोग प्रतीक्षा किसलिए कर रहे है ? मुझे पकड क्यो नही लिया जाता ? सब लोगो को क्या किसी मूर्खता ने पकड लिया है, कोई हिल क्यो नही रहा है ?"

न्यायालय के अर्दली ने ईवान की भुजा पकड ली। ईवान ने मुडकर उसकी ओर घूरकर देखा और उसका कधा पकडकर उसे ज़ोर से पृथ्वी पर दे मारा। एक ही क्षण मे पुलिस ने ईवान को घेर लिया। ईवान चिल्लाता हुआ हाथ-पैर चलाने लगा। वे लोग उसे न्यायायालय से बाहर खीच ले चले।

कचहरी मे सब लोग खडे हो गए थे। सब लोग चिल्लाने लगे थे। कोई हाथ हिला रहा था। कई मिनट बीत गए, तब कही जाकर फिर से न्यायालय मे शाति स्थापित हो सकी। अध्यक्ष लोगो से कुछ कहने ही लगे थे कि इसी समय केतरीना ईवानोवना की तीखी और पैनी चीख. गूज उठी, जिसने अध्यक्ष की बात को रोक दिया। उसे दौरा पड गया था। वह बुरी तरह से रो रही थी, वह चिल्लाती थी और प्राथना करती थी, "मुझे यहा से न हटाया जाए !" आखिर उसने अध्यक्ष से कहा, "अभी और भी सबूत है, जो मै पेश करूगी—यहा, यही पेश करूगी ! यह एक दस्तावेज़ है, एक पत्र—इसे देखिए, इसे जल्दी से पढिए। मैने इसे इस हत्या के एक दिन पहले पाया था। यह उस दैत्य का पत्र है—वह आदमी, जो वहा खडा है, वही अपने पिता का हत्यारा है !" यह कहकर उसने मित्या की ओर उगली उठाई। वह फिर चिल्लाई, "ईवान बीमार है, वह बीमारी मे पागल हो गया है !" वह बराबर यही चिल्ला चिल्लाकर कहने लगी।

पत्र को ज़ोर से पढकर सुनाया गया

"कत्या,

कल मुझे रुपया मिल जाएगा और मैं तुम्हारे तीन हज़ार वापस कर दूगा। फिर अलविदा ! यदि वहा मुझे कर्ज़ नही मिलेगा तो मैं तुम्हे यह वचन देता हू कि मैं अपने पिता के पास जाऊगा, उनका सिर तोडकर उनके तकिये के नीचे से वह धन निकाल लूगा—लेकिन एक शर्त पर, यदि ईवान वहा नही रहा तो। यदि मुझे इसके लिए साइ-बेरिया भी जाना पडा तो भी तुम्हारे तीन हज़ार वापस कर दूगा। कत्या, ईश्वर से प्रार्थना करो, कोई न कोई मुझे वह धन दे दे, और तब मुझे कल की हत्या के लहू से भीगना नही पडेगा।

—मित्या"

क्लर्क ने ज्योही पत्र पढना समाप्त किया, इससे पहले कि उसे कोई रोक सके, ग्रूशका दौडकर आगे आ गई। उसका चेहरा आसुओ से भीगा हुआ था। उसके केश उसके कधो पर बिखरे हुए थे। वह आर्त स्वर से चिल्ला उठी, "मित्या ! उस साप ने तुम्हे नष्ट कर दिया है !"

सिपाहियो ने उसे पकड लिया और पीछे खीच ले चले, चूकि वह मित्या के समीप जाने के लिए जगली पशु की भाति सघर्ष करने लगी थी। मित्या चिल्ला उठा और उसके निकट पहुचने का प्रयत्न करने लगा, किन्तु उसको उसी समय सिपाहियो ने रोक लिया।

सब प्रमाण सुन लिए गए थे। अत जूरी विचार करने के लिए उठ गई। अब निर्णय और दड के विषय मे लोगो को अधिक सदेह नही था। एक घटे बाद घटी बजी, और जूरी ने फिर से अपने स्थान को ग्रहण किया।

अध्यक्ष ने मृत्यु जैसी नीरवता मे पूछा, "क्या अपराधी ने हा वस्तुत हत्या की है ?" जूरी का अगुआ स्पष्ट स्वर मे बोल उठा, "हा, वह नि सदेह अपराधी है !"

मित्या खडा हो गया और हृदयविदारक स्वर से चिल्ला उठा, "मैं ईश्वर की सौगध खाकर कहता हू, मै कयामत के दिन की कसम खाकर कहता हू, कि मैने अपने पिता की हत्या नही की ! कत्या, मै तुम्हे क्षमा करता हू। भाइयो, मित्रो, परायी स्त्रियो पर दया करो !"

प्रस्तुत उपन्यास 'परिवार और बन्धु' (द ब्रदर्स करामजोव) में लेखक ने पाप और पुण्य की बहुत सुदर विवेचना की है। मनुष्य की वासना और तृष्णा के साथ ही उसके असीम दु ख और पीडा को भी स्पष्ट किया गया है। लेखक में उदासीनता है और वह आर्त मानव का चित्रण करने में सिद्धहस्त है।

अधूरा स्वप्न

[मादाम बावेरी[1]]

फ्लॉबेयर, गस्ताव फ्रेंच कलाकार गस्ताव फ्लॉबेयर का जन्म १२ दिसम्बर, १८२१ को र्यून में हुआ था। आपके पिता पशु चिकित्सक थे। गस्ताव एक सुन्दर व्यक्ति थे। आपने बहुत जल्दी ही निर्णय कर लिया कि आप लेखक बनेंगे। आप अपनी माता के प्रति इतने अधिक अनुरक्त थे कि आपने जीवन-भर विवाह ही नहीं किया। आप लेखन में डूबे रहते थे। मा विधवा थी, अत आप ही उसके सहारे थे। पेरिस में रहने के कुछ दिन बाद आपका निवास स्थान र्यून के पास ही क्रोइसैट नामक स्थान हो गया। वहा आपकी लुइज़े कोलैट नामक स्त्री से घनिष्ठता हो गई, परन्तु वह भी आपके साधुवत् जीवन से आपको बाहर नहीं ला सकी। अत्यधिक कार्य ने आपको जर्जर बना दिया। आप खाने पीने के शौकीन थे, और बहुत अधिक मात्रा में शराब पीते थे। आपका स्वर्गवास १८८० ई० में हुआ।

'मादाम बॉवेरी' (अधूरा स्वप्न) आपकी एक बहुत प्रसिद्ध रचना है।

फार्म-हाउस के सामने की सडक के पार एक आदमी खडा था। रसोई की खिडकी की ओर देखते हुए उसके हृदय की गति बार-बार बढ जाती और रह-रहकर उसका शरीर काप उठता था। उसी समय एक खडखडाहट-सी सुनाई दी और खिडकी जोर से खुल गई। बहुत दिनो के बाद आज उसके स्वप्नो के पूरा होने का दिन आ गया था। शार्ल्स बॉवेरी को पता चल गया कि एम्मा रोल्ट अन्त मे उसकी पत्नी बनने के लिए तैयार थी। उन्होने आपस मे यही 'इशारा' तय किया था कि जिस दिन वह झटके के साथ खिडकी के पट खोल देगी उस दिन मानो वह शार्ल्स के प्रस्ताव को स्वीकार कर लेगी। एम्मा चाहती थी कि उसका विवाह आधी रात के समय हो और चारो ओर दीपो का प्रकाश फैला रहे। लेकिन वृद्ध शार्ल्स किसान था, वह परम्परा की सारी रीतियो का निर्वाह करना उचित समझता था। उसने शादी के दिन अपने तेतालीस मित्रो को निमन्त्रित किया। अगले दिन दम्पती टास्टीज चले गए, जहा शार्ल्स का घर था। वहा वह हिकमत भी किया करता था। उसने वृद्ध रोल्ड के टूटे हुए पैर को जोड दिया था, इसलिए उसको वहा श्रेष्ठ डाक्टर माना जाता था। एम्मा और उसके पिता को यह नही मालूम था कि वह एक मामूली-सी चोट थी, जिसमे कि हड्डी साधारण तौर पर चटक गई थी। शार्ल्स

---

१ Madame Bovary (Gustave Flaubert)—इस उपन्यास का अनुवाद 'अधूरा स्वप्न' नाम से छप ही चुका है। अनुवादक हैं प्रकाश पण्डित, और प्रकाशक राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली।

के सुख का प्याला मानो लबालब भर गया था। पति पत्नी दोनो साथ-साथ खाते, सन्ध्या समय भ्रमण के लिए साथ-साथ जाते। एम्मा अकसर अपने हाथ ऊपर उठाकर अपने गहरे रग के बालो को इकट्ठा किया करती, उसका टोप खिडकी के सहारे लटका रहता—और यह सब उसके पति को अनन्त सुख प्रदान करनेवाली वस्तु थी। अब तक उसे जीवन मे मिला ही क्या था! जब वह स्कूल जाता था तो उसे यही अनुभूति होती थी कि उसके साथी उससे अधिक धनी और बुद्धिमान थे। वे उसके ग्रामीण उच्चारण पर हसा करते थ और उसके कपडो का मज़ाक उडाया करते थे। बाद मे वह जब डाक्टरी पढने लगा तो फिर वह अकेला रह गया। किसी भी दिन उसकी हालत ऐसी नही हुई कि वह किसी दुकान मे काम करनेवाली लडकी को अपने साथ शाम को घुमाने ले जा सके। उसकी कोई प्रिया नही थी। इसके बाद उसने विवाह किया। उसकी माता ने उसके लिए एक विधवा चुन ली जो जब शय्या मे लेटी रहती तब भी उसके पाव बर्फ की तरह ठडे रहते। विवाह के चौदह महीने के बाद वह उसे विधुर बनाकर चली गई थी। अब उसे अपने जीवन मे एक सुन्दर सहारा मिला था—ऐसा, जिसको वह प्यार कर सके। उस स्त्री के बाहर जैसे उसके लिए ससार ही नही था और उसे मन ही मन यह खेद होता कि जितना उसे अपनी पत्नी से प्रेम करना चाहिए था उतना सम्भवत वह नही करता था। और एम्मा की हालत यह थी कि हाथो की अगुलियो की पोरो से लेकर कधो तक (समूची बाहो पर) और कधो से लेकर गालो तक वह चुम्बनो से अटी रहती। इतना ही नही, कभी-कभी तो उसे मानपूर्वक अपने प्रेम-विभोर पति को पीछे धकेलना पड जाता। वैसे वह पति का प्यार पाकर मन ही मन प्रसन्न होती थी, पर ऊपर से नाराजगिया दिखाती, मानो वह उसका पति नही, कोई बच्चा हो, जो उसे परेशान किया करता हो। विवाह के पहले वह समझती थी कि उसे शार्ल्स से प्रेम था किन्तु विवाह के उपरान्त उसे वह सुख नही मिला। वह जिस आनन्द की कल्पना करती थी वह मानो उसको मिला ही नही। और उसे लगने लगता कि उसने ऐसा विवाह करके एक भूल कर दी थी। वह सदैव इस बात पर आश्चर्य किया करती थी कि पुस्तको मे जो शब्द इतने सुन्दर लगते थे—वासना, आवेश, प्रेम—ये सब उसके जीवन मे क्यो नही आए थे!

तेरह वर्ष की अवस्था मे उसके पिता ने उसे रूयून के कॉनवेट मे भेज दिया था। पहले तो वहा की विनम्र बैरागिनो के बीच जीवन उसे बडा अच्छा, सुहावना लगा। शान्त वातावरण था। वह जैसे मत्रमुग्ध हो गई। वेदी पर सुगन्धिया फैलती और लोबान की मादक गध से उसका घ्राण तृप्त हो जाता। एक विचित्र रहस्यमय-सा आलस उसके रोम-रोम मे व्याप्त हो जाता। और न जाने वह कहा से कहा पहुच जाती! उसके बाद 'अपराधो की स्वीकृति' आई। यह काम उसे इतना अच्छा लगा कि अपराध न करते हुए भी वह झूठमूठ उनकी स्वीकृति करती। उनकी नई-नई कल्पना कर लेती। उपदेशक लोग जब रहस्यवादी ढग से तुलनाए करते और उनके मुख से 'अनन्त विवाह', 'दूल्हा', 'दुलहन' आदि शब्द निकलते तो उसकी आत्मा के भीतर तक मानो एक मिठास-सी भर जाती।

एक वृद्धा, जो उनके कपडो की मरम्मत करने आती थी, बडी लडकियो के लिए

कॉनवेट मे चोरी-छिपे उपन्यास लाया करती। उन उपन्यासो मे वासना से मत्त नारियो का वर्णन होता। उन उपन्यासो मे पढा घने-काले जगलो के अन्दर आहे भरना, आसू गिराना, कसमे खाना, कभी-कभी एम्मा की आखो के सामने से गुजर जाता। और उन पुस्तको मे वह उन राज-दरबारियो के बारे मे भी पढती जो एक ओर मेमने से कोमल होते थे और दूसरी तरफ सिहो से भी ज्यादा पराक्रमी। उस जमाने मे उसने ऐसी पुस्तके खूब पढी। अभागिनी मेरी स्टूअर्ट, जोन ऑफ आर्क, हिलोय आदि वीर नायिकाए उसकी कल्पना मे खेलने लगी थी।

किन्तु, जब उसके पिता उसे लेने आए, उस समय कॉनवेट छोडते समय उसे खेद नही हुआ। गिरजा उसे इसलिए अच्छा लगता था कि उसमे एक फूलो से भरा रहस्यवाद था जिसकी कल्पना भी उसे मनोरम प्रतीत होती थी, किन्तु प्रार्थनाए, जीवन की नियमित मर्यादा और कठिन आचरण यह सब उसे अच्छा नही लगता था। जब वह घर आ गई तो पहले घर पर अपनी आज्ञा चलाकर सुख प्राप्त करने का साधन ढढने लगी, किन्तु शीघ्र ही दिनो-दिन इस जीवन से वह ऊबने लगी और उसे फिर से कॉनवेट की याद सताने लगी। जब शार्ल्स पहली बार उसके यहा आया उस समय तक उसकी आखो का पर्दा फट चुका था, जैसे उसके पास सीखने के लिए कुछ भी बाकी नही रहा था, जैसे वह अपने जीवन के स्वप्नो को खो चुकी थी। शार्ल्स के आने से एक परिवर्तन हुआ। अपने मन की अनुभूतियो को उसने प्रेम मे परिवर्तित करने की चेष्टा की, जैसाकि आज तक उसने प्रेम के बारे मे पढा था। अन्त मे वह उसके जीवन मे अवतरित होनेवाला था, किन्तु अब वह देख रही थी कि शार्ल्स अपने काले मखमली फ्रॉक-कोट (लबा मर्दाना कोट) पहने हुए अपने नुकीले टोप और तग जूतो मे वह नही बन पाया था, जिसकी उसने कल्पना की थी। उसके स्वप्न का पति कोई और ही था। शार्ल्स की बातचीत उसे ऐसी लगती जसे सडक का कोई शोरगुल। उसके अन्दर कोई भी बात जागती नही थी। भाव, हास्य या विचार कुछ भी शार्ल्स जगा नही पाता था। पुरुष को सब कुछ समझना चाहिए। उसे हर प्रकार के कार्यो मे कुशल होना चाहिए। जिसमे वासना का महासागर लहरा रहा हो, उसमे कम से कम इतना सामर्थ्य तो होना चाहिए कि औरत को उसमे से पार करा सके। उसे जीवन की सुन्दरता के प्रति जागरूक होना चाहिए, जिससे वह औरत के सारे रहस्यो का उद्घाटन कर सके। लेकिन यह आदमी (शार्ल्स) न तो कुछ सीखता था न कुछ जानता था और न उसकी कोई चाहना ही थी। वह यह समझता था कि जो सघर्षहीन शान्तिप्रिय जीवन उसने एम्मा के लिए जुटा दिया था, वह उसके लिए बहुत काफी था। किन्तु वास्तविकता यही थी कि वह इसी बात से चिढती थी। वह इसे अपने जीवन का अन्त नही मानती थी।

उसने यही चेष्टा की कि वह उससे प्रेम कर सके। जब आकाश मे चाद आता और दूधिया चादनी नीचे छिटकने लगती तब वह उठती और उसे उपवन मे ले जाती। वह उसे वासना-भरी कविताए सुनाती और अलसाई-सी, तोड-मरोड-भरी गीतो की तान उसके मुख से बिखर-बिखर जाती। किन्तु न तो कविता, न सगीत—कोई भी उसके जीवन की एकान्तता को नष्ट नही कर सका, और न उसके पति की बाहरी झिल्ली को तोड

सका। उसे यह मन ही मन स्वीकार करना पडा कि शार्ल्स उसके प्रति एक सीमा मे अनुरुक्त था, और वास्तव मे, उसमे प्रेम की ऊष्मा और गहराई नही थी।

इन्ही दिनो वोबीएसार मार्रक्विस दादरवेलिए ने पति-पत्नी दोनो को अपने यहा बॉल-नृत्य पर निमन्त्रित किया। वहा जो वैभव एम्मा ने देखा, उससे वह ठगी-सी रह गई! खूब राग-रग उसके देखने मे आया। वह इन सबसे इतनी प्रभावित हुई कि वहा से लौटने के बाद भी उस बॉल-नृत्य के विषय मे ही सोचते रहना अब उसके लिए एक काम हो गया। वह सोते मे से जाग उठती और अपने-आप याद करने लगती, 'अरे, मै एक हफ्ते पहले गई थी, मुझे वहा गए पन्द्रह दिन हो गए! ओह, उस वातावरण मे गए मुझे तीन हफ्ते हो चुके!' उस बॉल-नृत्य के दौरान मिले लागो के चेहरे घुल-मिलकर अब उसकी स्मृति मे धूमिल हो चुके थे। वहा सुनी सगीत की ताने भी धीरे-धीरे उसके कानो मे अस्पष्टतर होती चली गई। वहा हुई सारी बाते, सारी घटनाए अब उसके सामने साफ नही थी। लेकिन उसकी स्मृति बडी मादक थी, अत्यन्त व्याकुल कर देनेवाली।

शादी के प्रारम्भ मे एम्मा अपने-आपको पियानो बजाने मे लगाए रखती और शार्ल्स को बजा-बजाकर सुनाती। कभी वह चित्र बनाती। इस प्रकार वह अपने को व्यस्त रखने की चेष्टा किया करती थी। उसे सदैव अपने सौन्दर्य का ध्यान रहता। हमेशा सजी-बनी रहती। उसने यह भी प्रयत्न किया कि ग्रामीण लगनेवाले शार्ल्स के वस्त्रो मे भी कुछ नागरिकता का प्रादुर्भाव हो। वह घर की एक-एक चीज को करीने से रखती। घर ऐसा सजा-सजाया बनाए रखती कि देखते ही बनता। लेकिन धीरे-धीरे उसकी आदते भी बदलने लगी। अब वे पुराने शौक उसके मन को बहलाने के लिए काफी नही थे। घर के सब काम उसने नौकरो पर छोड दिए। सारे दिन अपने कमरे मे उदास पडी रहती। न पढती, न सीना-परोना करती। यहा तक कि अब अपना शृगार करने मे भी उसे अधिक रुचि न थी। उसको समझना अब कठिन हो गया था—जैसे उसमे एक स्वेच्छा भर गई थी। उसका आचरण भी कुछ विचित्र हो गया था। गालो पर एक पीलापन छा गया था और कभी-कभी उसे दिल की धडकन तकलीफ देने लगी। उसे एक तरह के दौरे आने लगे। या तो वह बहुत ज्यादा बात करती या फिर बिलकुल सन्नाटे मे डूब जाती। हमेशा ही वह टास्टीज की निन्दा करती। यहा तक कि अन्त मे शार्ल्स ऊब गया और उसने उस गाव को छोड देने का निश्चय किया। ऐसा निश्चय करना सहज बात नही थी। चार वर्ष वहा रहकर उसने वहा अच्छी-खासी प्रैक्टिस जमा ली थी। लेकिन अब जीवन की समस्या दूसरी थी और व्यावहारिक मनुष्य होने के नाते वह उनका हल निकालने लगा। दौड-धप करके और अच्छी जाच करने के उपरान्त उसने न्यूचेटिल के कस्बे मे जगह ढूढ ही ली। जब उन्होने टास्टीज छोडा, श्रीमती बॉवेरी उस समय गर्भवती थी।

जब वे लोग अपने नये घर मे पहुचे, साझ घिर चुकी थी। आज जीवन मे चौथी बार वह एक नई जगह मे सो रही थी—पहली बार कॉनवेंट मे, फिर टास्टीज मे और फिर वोबीएसार मे, और अब यहा न्यूचेटिल मे—रात को अपने मायके के घर के अलावा किसी नये स्थान पर। इनमे से हर रात ने उसकी ज़िन्दगी मे एक नया पहलू शुरू किया था। वह यह नही मानती थी कि हर नई जगह जीवन एक-सा ही प्रारम्भ

होगा और हर जगह वही बात दोहराई जाएगी। उसको यह लगा कि उसके विचार मे दोनो खराब थे और एक अतीत की तुलना मे उसके बाद का अतीत अच्छा हो गया था। इसीसे उसको आशा हो गई कि अब जो कुछ होगा सम्भवत वह बीते हुए कल की तुलना मे अधिक ही अच्छा होगा। लेकिन नये स्थान ने शार्ल्स के लिए परेशानिया खडी कर दी। यहा मरीज पहले की तरह नही आते थे। हाल मे उसने एम्मा के कपडो मे बहुत अधिक खच कर दिया था और फिर घर बसाने मे भी काफी खर्चा हुआ था। लेकिन जब वह एम्मा को देखता तो हर्ष से भर जाता। वह जानता था कि कुछ दिन बाद वह मा होने वाली थी और इस बात से उसका हृदय गर्व से भर जाता था। इस विषय मे जब भी वह सोचता एक कृतज्ञता की भावना उसके अन्दर भर जाती। उसके प्रति उसे अत्यन्त स्नेह हो गया था और अन्य सारे विचारो को वह अपने दिमाग से दूर कर देता। एम्मा ने जब अपनी इस नई परिस्थिति को देखा तो वह जैसे पागल-सी हो गई। लेकिन बाद मे यह भावना बदल गई। उसके अन्दर एक कौतूहल-सा जाग उठा। वह जानना चाहती थी कि मा होकर वह कैसा अनुभव करेगी। वह एक पुत्र चाहती थी—सुन्दर और दृढ, और वह उस बच्चे मे अपने जीवन के बीते हुए सारे व्यथ दिनो को सहेज लेगी और जो कुछ भी उसमे अभाव था उसे पूरा कर लेगी। पुत्र की यह नई कल्पना उसे एक विचित्र प्रकार से सुख देने लगी। किन्तु भाग्य ने उसका साथ नही दिया। उसने एक कन्या को जन्म दिया। लडकी का नाम उसने रखा बर्थ। उसको याद आया कि इस नाम की एक युवती को उसने बॉल-नृत्य मे देखा था। वृद्ध रोल्ट की जगह होमे नाम का एक केमिस्ट आ गया था। उसके साथ एक तरुण सॉलिसिटर क्लक एनलीयो आया था जो पेरिस मे वकालत करने से पहले अपने अध्ययन को पूर्ण कर रहा था। एम्मा जब उससे मिली तो मन ही मन एक विचित्र आनन्द उसे हुआ। वह भी पेरिस का दीवाना था। गाव के लोग उसे पसन्द नही थे। उसे कविता पसन्द थी और श्रीमती बॉवेरी से उसकी रुचि इस बात मे मिल गई थी कि वेदनात्मक जर्मन गीत उसे भी उतने ही प्रिय थे जितने श्रीमती बॉवेरी को। उसके जीवन मे भी ऐक्टर, सगीत, अच्छे वस्त्र और ऐसी ही वस्तुओ की भरमार थी जो श्रीमती बॉवेरी के कल्पनालोक मे सदैव विद्यमान रहती थी। उसको वह देहाती जीवन पसन्द नही था। इतनी सुन्दर स्त्री को वहा देखकर उसे लगा, जैसे सही मायनो मे उसका जीवन अब प्रारम्भ हुआ हो। यह स्त्री उस देहात से बिलकुल अलग थी। वह बॉवेरी परिवार मे अकसर आने लगा, लेकिन जब उसे मालूम पडा कि शार्ल्स को उसका आना-जाना पसन्द नही है तब वह यह नही सोच पाया कि वह शार्ल्स को कुछ किए बिना वहा कैसे पहुचे और यह भी वह जानता था कि एम्मा उसके प्रति अनुरक्त थी। लेकिन हर सध्या को उसे दवाखाने मे उससे मिलने का एक न एक अवसर प्राप्त हो जाता। शार्ल्स और होमे वहा खेला करते थे और लीयो और एम्मा चिमनी की आग के पास बैठे हुए स्त्रियो की फैशनेबल पत्रिकाओ मे मे कविताए पढते रहते। अपने पढे हुए उपन्यासो के बारे मे विचार-विनिमय करते। इस प्रकार उन दोनो के बीच मे एक सम्बन्ध स्थापित हो गया। प्रेम-कथानकों के विषय मे बार-बार बात करते-करते उनमे एक अजीब-सा सम्बन्ध पैदा हो गया। इस बढती हुई मित्रता को देखकर उसके पति को कोई ईर्ष्या नही

हुई क्योकि उसका यह स्वभाव नही था। अचानक एम्मा ने यह अनुभव किया कि वह उस तरुण के प्रेम मे पड गई थी। वह सोचने लगी कि उसके जीवन मे एक नया अध्याय खुल गया था। वह सुन्दर था। उसके केशो मे भी एक कोमलता थी। वह सोचने लगी कि उसके प्रेम का प्रत्युत्तर मिल रहा था और हृदय की गहराई मे से एक आवाज उठी, 'काश, यह हो सकता !' फिर उसे विचार आया कि ऐसा क्यो नही हो सकता, उसे रोकनेवाला है ही कौन ?

इस विचार-मात्र ने कि वह प्रेम मे थी उसमे एक नया परिवर्तन भर दिया। उसने सगीत का बिलकुल परित्याग कर दिया ताकि वह घर की देखभाल अच्छी तरह कर सके। बचपन मे ही बर्थ की देखभाल एक धाय किया करती थी। अब वह स्वय उसकी देखभाल करने लगी और पति के प्रति उसमे एक नई अनुरक्ति आ गई। बाहर वह बिलकुल शात थी, गम्भीर और विनम्र, लेकिन भीतर ही भीतर घृणा और क्रोध जैसे उसे खाए जा रहे थे और वह सारा जोश धीरे-धीरे शार्ल्स के विरुद्ध इकट्ठा होने लगा। शार्ल्स उसके इस आतरिक क्रोध की बात बिलकुल नही जानता था। यदि शार्ल्स उसे मारता और अपने से घृणा करने का कोई कारण देता, अपने ऊपर प्रतिहिसा उतारने का कोई सुयोग देता तो कितना अच्छा होता। कभी-कभी उसे अपने विचार स्वय डराने लगते। वे कितने भयानक थे ! जब वह उनके बारे मे सोचती तो स्वय आश्चर्य से चकित रह जाती और अपनी ही कल्पना से अपने-आप भयभीत हो जाती। तब शाति के लिए उसने गिरजे की ओर निगाह उठाई। किन्तु बेचारा पादरी अत्यधिक कार्य-व्यस्त था। वैसे ही लोगो से परेशान रहता था। वह जो उससे दबी-मुदी बाते कहती उन पहेलियो को सुलझाने का उसके पास समय कहा था और न उसमे इतनी सामर्थ्य ही थी कि उसके रहस्यमय वाक्यो समझ सके।

लीयो की परिस्थिति दूसरी थी। उसको लगता था कि वह अत्यन्त पवित्र थी और धीरे-धीरे उसने यह जान लिया कि उसको प्राप्त करना उसके लिए असम्भव ही था। उसने उसका परित्याग कर दिया, किन्तु ऐसा करते समय भी उसने उसकी स्थिति की कल्पना की और उसको 'मेडेना' का गौरवमय नाम दिया, जिस तक पहुच सकना कठिन था, क्योकि उसकी पावनता का स्पर्श करना भी एक पाप के समान था। इसके बाद उसके लिए वहा रहना कठिन हो गया और उसने पेरिस जाने का निश्चय कर लिया।

केमिस्ट के घर से इस व्यक्ति का चला जाना एक विशेष घटना के रूप मे आया और तरुणो को अपनी ओर खीच लेनेवाली राजधानी का ध्यान एक बार फिर लोगो के सामने मडरा गया, लेकिन इस विदा की बेला मे एम्मा मानो उपेक्षापूर्ण थी। लीयो को लगा, वह इस तरह से दूर होकर मानो उसके पास आ गई है। यही एम्मा के जीवन मे हुआ। उसकी कल्पना के लीयो अधिक लम्बा हो गया, अधिक सुन्दर दिखाई देने लगा और मानो उसमे पहले से अधिक मत्रमुग्ध करने की शक्ति आ गई थी। उसे लगता कि वह सर्वत्र उपस्थित था। अब लीयो की छाया भी उसको सताने लगी। उसे लगता कि घर की हर दीवाल मे वह मौजूद था। अब उसे इस बात का खेद होने लगा कि इतने दिनो तक समीप रहकर भी क्यो एक दिन भी वह उसके सामने समर्पण न कर सकी। क्यो एक बार भी शरीर का सुख न ले सकी, न दे सकी। उसने उसको एक बार भी इसका

अवसर नही दिया, और उसने तृष्णा भरने लगी कि वह उसके पीछे पेरिस चली जाए, उसकी भुजाओ मे अपने-आपको समर्पित कर दे और पुकार उठे, 'मै आ गई हू ! मैं तुम्हारी हू !' किन्तु वास्तविकता मे यह काय अत्यन्त कठिन था और उसके हृदय मे एक नई विरक्ति भरने लगी। विरक्ति के मूल मे एक उत्कठा, चाहना थी, वासना अपनी सम्पूर्ण उद्विग्नता के साथ मानो भीतर ही भीतर बिजली की तरह कौधने लगी थी।

जो टास्टीज मे हुआ था वही अब फिर उसके सामने उपस्थित हो गया। अब वह अपने को पहले से भी अधिक दु खी समझती क्योकि उसको अपने दु खो का कही भी अन्त नही दिखाई देता। उसे ऐसा लगता कि वह विवाह की वेदी पर शहीद हो गई थी और इसलिए उसका स्वेच्छाचार सम्पूर्ण रूप से उचित था। अब वह बहुत अधिक खर्च करने लगी। कपडो पर खूब पैसा लुटाती, अपने शृगार के साधन जुटाती और ऐसी ही छोटी-मोटी वस्तुओ को खरीद-खरीदकर रुपया बहाने का उसे शौक हो गया। उसने इटैलियन सीखने का प्रयत्न किया। न जाने कितने कोश खरीद लिए, व्याकरण-पुस्तके ढेर की ढेर इकट्ठी कर ली। लेकिन उनमे से एक को भी न पढा। अब कभी-कभी उसे बेहोशी के दौरे आ जाते और वह खून थूकने लगी। शार्ल्स जब व्याकुल होकर उससे कुछ प्रश्न करता तो वह कह देती, 'क्या है, कोई खास बात तो नही !'

योनविले मे बुधवार को हाट लगा करती थी और एम्मा खिडकी मे से भीड को देखना बहुत पसन्द करती थी। एक दिन सवेरे उसने हरे मखमली कोट और पीले दस्ताने पहने हुए एक व्यक्ति को देखा। उसके एक नौकर के शरीर मे कुछ कष्ट था और वह चाहता था कि उसका कुछ रक्त निकाल दिया जाए। इसलिए वह नौकर को लेकर शार्ल्स के पास आया। एम्मा ने नर्स का काम किया और उस सज्जन से दो-एक बाते भी की। बातो मे उसे पता चला कि वह हाउचेट की छोटी रियासत का मालिक पडोस का ज़मीदार रोदोल्फ बोलाजे था।

रोदोल्फ जब डाक्टर के घर से निकला तब गहन चितन मे लीन था। उसको श्रीमती बॉवेरी पसन्द आ गई थी। वह सुन्दर स्त्री उसके मन को भा गई। उसके सुन्दर दात, उसकी काली आखें, उसके सुन्दर टखने, उसका दुबला-पतला शरीर, जो विचित्र रूप मे मासल था, उसे ऐसा भा गया जैसे वह खास पेरिस की निवासिनी थी, न कि कोई ग्रामीण स्त्री। वह अपने पति की तुलना मे कितनी अच्छी थी। डाक्टर कितना बेवकूफ लगता था। उसके नाखून कितने गन्दे थे और कम से कम तीन दिन की हजामत बढी हुई थी। रोदोल्फ ने मन ही मन कल्पना की और वह समझ गया कि यह स्त्री अवश्य ही अपने पति से ऊबी हुई है और अवश्य ही उससे घृणा भी करती है। इस स्त्री के लिए उचित स्थान पेरिस ही था जहा वह नृत्य मे और भोजो मे मग्न रहने का आनन्द प्राप्त कर सकती थी। बेचारी प्रेम के लिए तरस-तरस जाती होगी। पानी के पास रहकर भी वह मानो प्यासी थी। यदि वह किसीका मनोरजन करने के लिए रखैल बनकर रहे तो वह जीवन का कितना आनन्द दे सकती थी ! लेकिन एक बात और थी। एक बार उसे बसा लेने के बाद क्या उससे पीछा छुडाना भी आसान होगा ? वह इसी बारे मे सोचने लगा। चौतीस वर्ष का रोदोल्फ प्रकृति का कठोर था और व्यावहारिक बुद्धि उसमे बहुत

अधिक थी। उसने पहले ही से सोच लिया कि इस स्त्री से सम्बन्ध बढाने मे क्या-क्या बाधाए उपस्थित हो सकती है। लेकिन जब वह उसकी आखो के बारे मे सोचता तब उसे लगता जैसे वह आखे तीर की तरह उसके हृदय मे घुस गई थी। सबसे बडी बात तो यह थी कि एम्मा का रग सुनहला-सा था और सुनहरे रग पर रोदोल्फ जान देता था। घर पहुचने के पहले ही रोदोल्फ ने यह निश्चय कर लिया कि किसी न किसी प्रकार वह उस स्त्री को अवश्य प्राप्त करेगा।

एक कृषि-प्रदर्शनी मे वे लोग दूसरी बार मिले। मेयर और गणमान्य नागरिक भीड को अपने भाषण सुनाने लगे। उस समय रोदोल्फ एम्मा को ,टाउनहाल के एक खाली कमरे मे ले गया। उसने कहा कि वहा से सारा दृश्य अच्छी तरह दिखाई दे सकेगा। वहा ले जाकर उसने अपने व्यथित हृदय की वेदना उसके सामने खोल दी। अपनी कल्पना के और तृष्णाओ के ससार का उसने उसके सामने उद्घाटन कर दिया। उसने एम्मा को कहा कि वह भी जीवन की द्वन्द्व से ऊब चुका है और अपनी कल्पना-लोक की नारी की प्रतीक्षा कर रहा है। और यह कहकर उसने श्रीमती बॉवेरी की ओर भाव-भरी आखो से देखा। फिर कहने लगा कि विश्व के अनन्त स्रोत और विस्तार के सम्मुख मनुष्य द्वारा निर्मित ये कृत्रिम व्यवधान कितने तुच्छ है—और वीरत्व और सौन्दर्य का उत्तर प्रेम है। प्रेम ही इस पृथ्वी पर सर्वश्रेष्ठ वस्तु है, जिसमे व्याघात डालने के लिए अनेक प्रकार के व्यवधान समाज ने उपस्थित कर दिए है। आवेश, कविता, सगीत इत्यादि के विषय मे वह बोलता ही चला गया और उसने एक रगीन स्वप्न-सा एम्मा की आखो के सामने जाग्रत् कर दिया।

वह एक छोटे स्टूल पर अपने घुटनो को अपने हाथो मे समेटे एम्मा के चरणो के पास बैठा था। उसका शरीर उसके समीप था और सिर ऊपर उठा हुआ था। एम्मा दो बाते देख रही थी—रोदोल्फ की काली पुतलियो मे से जैसे सुनहली किरणे निकल रही थी, उसके केशो मे से सुगन्ध आ रही थी—वही सुगन्ध, जो वोबीएसार मे नृत्य करते समय वाईकाउट के केशो मे उसने सूघी थी। एम्मा को लगा कि वह शिथिल हो गई थी। उसे लगा मानो वह उसी गाडी को देख रही थी जो लीयो को लेकर चली गई थी योन-विले से दूर। उसे लगा उसके चरणो पर स्वय लीयो बैठा था और एक बार फिर वह मादकता उसकी रग-रग मे थिरक उठी। उसके रोम-रोम मे जैसे वासना अतलात हाहा-कार कर उठी। और इस विह्वल अनुभूति के साथ ही साथ रोदोल्फ के केशो की गध धीरे-धीरे उसकी सासो मे समाती रही। कितनी प्यारी लग रही थी उसे वह सुगध। रोदोल्फ ने हाथ बढाकर उसकी उगलियो को पकड लिया। एम्मा ने रोका नही। उनके होठो मे एक उत्कट चाहना ने एक अजीब-सी गर्मी पैदा कर दी थी। उगलिया आपस मे गुथ गई, मानो उनकी तृष्णाओ के घट जाने का यह पहला प्रतीक था।

लगभग छ हफ्ते बीत गए। रोदोल्फ एक दिन उनके घर आया और सीधा भीतर चला आया। एम्मा जैसे पीली पड गई। तब वह समझ गया कि शीघ्र ही न आकर उसने ठीक ही किया है। उसने शार्ल्स से पूछा कि उसकी पत्नी ऐसी रोगिणी क्यो दिखाई दे रही थी और सुझाव दिया कि यदि श्रीमती बॉवेरी घुडसवारी प्रारम्भ कर दे तो शायद

उनका स्वास्थ्य फिर से ठीक हो सके। शार्ल्स अपनी पत्नी के स्वास्थ्य के बारे मे अधिक चितित था। उसकी समझ मे ही नही आ रहा था कि वह किस प्रकार उसको ठीक करे। इस सुझाव ने उसे एकदम पुलकित कर दिया।

लेकिन एम्मा घुडसवारी के लिए नही जाना चाहती थी। उसने उसका घोर विरोध किया और अन्त मे उसने कहा कि उसे आदत तो थी नही और बिना आदत के घोडे पर वह चढ भी कैसे सकती थी।

शार्ल्स ने उत्तर दिया, "आदत तो डालने से पडती है।" और इस बात ने मामला तय कर दिया। पहली बार वे लोग जब घोडे पर चले तो वह सहर्ष चली गई। अब घर पर वह निरन्तर दर्पण मे अपने मुख को देखा करती। उसमे कैसा परिवर्तन आ गया था। उसकी आखो मे गहराई पहले कभी नही थी, और न वह इतनी ज्यादा ही थी। कैसी विचारमग्न प्रतीत होती थी वह, और वह धीरे-धीरे बडबडाया करती, 'मेरा एक प्रेमी है, जो मुझे प्यार करता है।' उसको ऐसा लगा, जैसे एक बार फिर से उसपर यौवन आ गया हो। बाध टूट गया था, और प्रेम का आनन्द फिर से उमडने लगा था। अन्त मे स्वतन्त्रता की हिलोर पर उसने अपने-आपको छोड दिया और बाढ उसे बहा ले चली। वे लोग अब गुप्त रूप से पत्र-व्यवहार करने लगे, किन्तु उसके पत्रो को उसने सदैव बहुत छोटा पाया। एक दिन सुबह वह जल्दी उठ गई और उसके मन मे यह आया कि वह रोदोल्फ से मिल ले। शार्ल्स उस दिन तडके ही कही चला गया था। वह चुपचाप खेतो की ओर निकल पडी और उसने पीछे मुडकर भी नही देखा। ओस से भीगी हुई जब वह रोदोल्फ के घर पहुची तो जाकर अपने प्रेमी की शय्या पर लेट गई।

सारे जाडे की ऋतु हर हफ्ते मे दो-तीन बार रोदोल्फ उनके बगीचे मे आया करता था। वह बडे आतुर हृदय से शार्ल्स के सो जाने की प्रतीक्षा किया करती। बगीचे मे सघन कुज मे एक पुरानी बैच पडी थी। पहली गर्मी की ऋतु मे वहा वह लीयो के साथ बैठा करती थी और लीयो उसका मन बहलाया करता था। अब वह लीयो की कोई चिन्ता नही करती थी और उसका स्थान रोदोल्फ ने ले लिया था। कभी-कभी रोदोल्फ को लगता कि वह आवश्यकता से अधिक अनुभूतिशील थी, क्योकि वह बार-बार अपने बालो की लट उसे देकर उससे उसके बालो की लट मागा करती थी। अन्त मे उसने एक दिन उससे एक असली विवाह की अगूठी मागी। वह अब भी सुन्दर थी, और प्रेम के क्षेत्र मे इतनी रसीली स्त्रिया रोदोल्फ को कम ही मिली थी और इस प्रेम मे एक विचित्रता थी कि यह व्यभिचार नही था। इसमे उसकी वासना भी तृप्त होती थी और गर्व भी। जिस रूप मे वह अपने-आपको समर्पित करती उससे उसके मध्यवर्गीय नैतिक विचारो को धक्का लगता, किन्तु यह सोचकर उसकी कल्पना-विभोर हो जाती कि वही उसका केन्द्र था। किन्तु जब प्रेम चरमता पर पहुच गया तो उसका रुख बदलने लगा। उसके कोमल शब्द चले गए। सब कुछ महज़ उसकी वासना के दुलार की चीज़ होकर रह गया। अब वह अपनी उपेक्षा को छिपाने मे भी असमर्थ हो गई थी।

एम्मा को प्रायश्चित्त की भावना ने ग्रस लिया अब वह सोचने लगी कि आखिर वह शार्ल्स से घृणा क्यो करती थी। क्यो न वह उसीको प्रेम करना प्रारम्भ कर दे ? क्या

यह अच्छा नही होगा ? यदि यह न भी हो तो यह अच्छा डाक्टर तो था ही। क्या इसी-लिए उसका आदर करना आवश्यक नही था ? उन्ही दिनो केमिस्ट ने होटल मे रहनेवाले एक लडके के पाव का नया आपरेशन करने के लिए शार्ल्स को तैयार कर लिया। लडके के पाव मे तकलीफ थी और उसका काम था इधर-उधर सदेश पहुचाना। केमिस्ट रोज-रोज़ शार्ल्स का दिमाग खाता था और शार्ल्स की हिम्मत नही पडती थी। एम्मा ने भी केमिस्ट का समर्थन किया। और अन्त मे शार्ल्स ने यह खतरा मोल लेना स्वीकार कर लिया। आपरेशन बिलकुल असफल हुआ और लडके की टाग काटनी पडी। इस बात से व्यथित होकर एम्मा ने लडके को एक बहुत महगी लकडी की टाग खरीदी। जब चलते समय वह लकडी की टाग धरती पर खटपट करती तो शार्ल्स अपने द्वारा घायल किए गए उस लडके को देखकर भय से काप उठता और चाहता कि वह कभी भी उस खटपट को न सुने।

एम्मा का मानसिक सतुलन धीरे-धीरे खोने लगा। उसके सभी सपने लगभग नष्ट हो चुके थे। जिससे उसमे एक बार फिर नया आवेश आ गया। अपने व्यभिचारी हृदय को उसने समग्र शक्ति के साथ नई वासनाओ की ओर प्रवृत्त कवने की चेष्टा की। अपनी जितनी वासनाए थी उनको उसने जागरूक किया और स्वेच्छा की लपटो को अपनी ही तृष्णाओ के पवन से वह भडकाने लगी। अब वह दिन-दहाडे अपने प्रेमी के घर चली जाती थी। उसे वहा से निकलते हुए डर नही लगता था। वह उसे बहुमूल्य उपहार देती और जब उसका मूल्य नही चुका पाती तब कस्बे के बोहरे, मूलिए, लेहूरे आदि महाजनो के पास कुछ न कुछ गिरवी रख आती। एक बार तो पति के एक बिल की धनराशि को उसने बीच मे से ही ले लिया। शार्ल्स की माता तक से उसका झगडा हुआ। वह कुछ ही दिन के लिए रहने के लिए आई थी। श्रीमती बॉवेरी अपने पुत्र की कल्याण-कामना मे उसे सुखी देखना चाहती थी। लेकिन एम्मा के व्यवहार ने उसको अधिक से अधिक व्याकुल किया। अब एम्मा ने यह निश्चय कर लिया कि वह अपने पति के साथ नही रहेगी, क्योकि यह उसके लिए अब बहुत कठिन काम था। उसने रोदोल्फ से प्रार्थना की कि वह उसे एक सुदूर देश मे ले जाए जहा उनका प्रेम बिना किसी व्याघात के चल सके। रोदोल्फ उसे स्वीकार तो करना चाहता था, लेकिन अन्तत उसने कोई सन्तोषजनक रुख नही दिखाया। उसने एम्मा से कहा कि वह सारी तैयारी कर ले और ठीक जिस दिन कि वे जानेवाले थे, उससे एक दिन पहले उसने बहुत सावधानी से बन्द एक पत्र उसे भेजा, जिसमे उसने लिखा कि उसे उसके साथ नही जाना चाहिए, क्योकि उसके साथ जाने के उपरान्त वह शीघ्र ही पश्चात्ताप करने की अवस्था मे आ जाएगी। एम्मा इस उद्वेग को नही मह सकी और उसने खिडकी से कूदकर जान देनी चाही। उसे बडी मुश्किल से उसके परिवार-भर ने मिलकर रोका। किन्तु मानसिक आघात ने उसे कुछ पागल-सा कर दिया और उसकी दशा ऐसी हो गई जैसे अब वह नही बचेगी। शार्ल्स के लिए जीवन नरक हो गया। उसे ऐसा लगने लगा कि जिस पत्नी को वह प्राणो से भी अधिक प्यार करता था वह उसे सदैव के लिए छोड जाएगी। और उन्ही दिनो उसके पास दुकानवालो के बिल पर बिल आने लगे जिनको चुकाना उसके लिए असम्भव था। एम्मा की बीमारी का खर्च और

रोदोल्फ को देने के लिए उसके द्वारा खरीदे हुए बहुमूल्य उपहारो का भुगतान शार्ल्स को महाजन-बोहरे के हाथ मे फसा गया। अपना कज चुकाने के लिए उसे दूसरी जगह से ऋण लेना पडा। वह मन मे अच्छी तरह से जानता था कि शायद वह लेहूरे के कर्ज को कभी वापस नही चुका सकेगा। लेकिन एम्मा नही मरी। धीरे-धीरे, धीरे-धीरे वह ठीक होने लगी। जब वह फिर बाहर आने-जाने के योग्य हो गई, तो उसका ध्यान बटाने के लिए शार्ल्स उसे र्‌यून ले गया। वहा एक प्रसिद्ध नाटक होनेवाला था और कोई मगीतज्ञ भी आया था। ऑपेरा हाउस मे उन लोगो को लीयो मिल गया। पेरिस मे अपना अध्ययन समाप्त करने के उपरान्त लीयो एक वकील के यहा क्लर्क हो गया था। पहले की तुलना मे वह अब परिपक्व दिखाई देता था। पेरिस की दुकानो मे काम करनेवाली लडकियो और वेश्याओ तथा सग पढनेवाली लडकियो से अनेक प्रकार का व्यभिचार करने के उपरान्त उसमे एक बाहरी आत्मविश्वास-सा आ गया था। लेकिन वैसे वास्तव मे वह अब भी उतना ही लजीला था। इन सारे दिनो उसके हृदय मे एम्मा की छवि जीवित रहती। उसे ऐसा लगता था कि जैसे वह एक धुधली-सी प्रतिज्ञा थी, जो न जाने उसके जीवन मे कब पूरी होगी—मानो वह किसी वृक्ष से लटका हुआ स्वर्ण-फल था, जिस तक वह पहुचना चाहता था, लेकिन पहुच नही पाता था। उसने शार्ल्स को इस बात के लिए आसानी से मना लिया कि अगले दिन का नाटक देखने के लिए एम्मा र्‌यून मे रह जाए। और एम्मा से एकात मे मिलने के अवसर की ताक मे वह लगा रहा। जिस समय होटल के कमरे मे वह उसे अकेली मिली तब उसने अपना प्रेम उसपर प्रकट कर दिया और उसकी अनुपस्थिति मे अनुभव की हुई पीडा का सकोचपूर्वक प्रकाश करते हुए उसने कहा, "न जाने मैंने कितने स्वप्न तुम्हारे वियोग मे झेले है।"

एम्मा सुनती रही और उसने धीरे से कहा, "मैं भी सदैव तुम्हारे विषय मे सोचा करती थी।"

लीयो का सकोच एम्मा के लिए रोदोल्फ की मुखरता की तुलना मे अधिक भयानक प्रमाणित हुआ। उसी दिन सन्ध्या के समय एम्मा ने लीयो को पत्र लिखा कि उन दोनो मे अब किसी प्रकार का सम्बन्ध भी वाछनीय नही है। किन्तु वह उसका पता नही जानती थी। उस पत्र को पहुचाने के लिए उसे गिरजे तक जाना पडा। गिरजे मे इसलिए कि यह उन्होने पहले दिन तय किया था कि वहा मिलेगे। लीयो एक गाडी लेकर आया था। वह उसपर बैठना नही चाहती थी। लेकिन जब लीयो ने उससे कहा कि वह यह गाडी पेरिस से ही लाया है, तब वह मान गई। जब गाडी चलने लगी तब वह मानो उसकी प्रिया हो गई। और एक बार फिर शार्ल्स ने अपनी पत्नी के लिए वासना के अपराध का मार्ग खोल दिया।

लेहरे ने अब तक शार्ल्स पर पूरा कब्ज़ा कर लिया था। अपने धन को वसूल करने का उसे एक ही तरीका नज़र आया कि वह एम्मा के ऊपर ध्यान केन्द्रित करे। उसने एम्मा से कहा कि अपने पति के कर्ज़ को चुकाने के लिए सारा काम-काज और तत्सबधी अधिकार वह अपने हाथ में ले ले। इतनी जिम्मेदारी लेने की एम्मा की कोई इच्छा नही

वकील की राय की जरूरत है। उसने शार्ल्स से बात की। वह किसी ऐसे व्यक्ति को नही जानता था जिससे कि वह सलाह ले सके। बेचारा शार्ल्स फिर जाल मे फस गया—उसने लीयो का नाम लिया, क्योकि वह वकालत के पेशे मे था। तब एम्मा र्‌यून गई लीयो से सलाह लेने। तीन दिन उसके पास रुकी। वे उनकी सुहागरात के दिन थे। जब वह लौटी तो मानो उसका रोम-रोम सगीतमय हो गया था। अब वह सगीत की ओर झुकना चाहती थी, किन्तु उसकी उगलिया अभ्यास के बिना पहले की तरह लोचदार नही रही थी। शार्ल्स ने सलाह दी कि वह र्‌यून मे जाकर सगीत की शिक्षा ले। र्‌यून के होटल मे उन्होने एक कमरा किराये पर लिया और उसे वे अपना घर कहने लगे। कमरे के अन्दर अच्छी सजावट थी। उसमे खासा फर्नीचर था। उन्हे सचमुच ऐसा लगने लगा जैसे वे किसी घर मे रहते थे। उसका पारिवारिक जीवन फिर लौट आया। रोदोल्फ वाली बेला फिर लौट आई। वह सुन्दर थी और पति के प्रति अनुरक्त भी दिखाई देती थी। शार्ल्स समझता था कि वह ससार का सबसे सुखी व्यक्ति है।

जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया। अपनी तृष्णा को जीवित रखने के लिए एम्मा को अधिक से अधिक बाह्य उपकरणो की आवश्यकता पडने लगी। उसने कई-एक अभिसार यात्राए की। यद्यपि सदैव वह अपनी इस तरह की यात्रा के अन्त के लिए तैयार रहती थी, किन्तु यात्रा से लौटते वक्त रेल मे उसके भीतर यह भावना जाग उठती थी कि उसे यात्रा के दौरान कोई असाधारण अनुभूति नही हुई। मानो उसके अन्दर एक निराशा बढती जा रही थी। हर निराशा उसे एक नई आशा की ओर लालायित करती थी।

हर बार वह अपने प्रेमी के पास पहले से भी अधिक उत्सुकता से जाती थी और प्रत्येक बार उसकी वासना पहले की तुलना मे कही बढी-चढी होती। वह अपने वस्त्रो का अनावरण निर्लज्जता से करती थी, मानो वह उन्हे फाडकर उनमे से बाहर निकल आती थी। नगे पाव, पजो पर चलकर वह अपने प्रेमी के दरवाजे तक जाती और देखती कि वह सचमुच बन्द है कि नही और तब गम्भीरता और सकोच से, बिना एक शब्द भी बोले, वह लीयो के वक्ष पर कापती हुई अपने-आपको समर्पित कर देती। लीयो उससे कोई प्रश्न नही करता था, लेकिन वह काम-कला मे प्रवीण था। इसलिए उसकी यह अवस्था देखकर वह समझ जाता था कि वासना और प्रेम की समस्त घुमडन एम्मा के अन्दर घूम रही है। यहा तक तो सब ठीक था। किन्तु उसे एतराज़ इस बात से था कि वह उसके व्यक्तित्व को जैसे अपने भीतर समेटे ले रही थी, वह उसपर छाए जा रही थी। हर बार मानो एम्मा की ही विजय होती थी और मन ही मन लीयो इस बात से अपने मन मे एक कचोट खाता था। अब मानो एम्मा उसकी रखैल नही थी, लीयो स्वय एम्मा की एक रखैल के समान था। इसके अतिरिक्त जिस वकील के यहा वह काम करता था उसे किसी प्रकार इन सब घटनाओ की सूचना मिल गई थी, और उसने इस विषय मे उसे सावधान भी किया था कि वह एक स्त्री के पीछे अपने भविष्य को बिगाड रहा है। किन्तु एम्मा फिर भी सतुष्ट नही थी। जीवन जैसे उसकी मादकता के लिए अपूर्ण था। जिसका भी वह सहारा लेती थी वही उसके चरणो के नीचे टूटकर गिर जाता था। जीवन ने उसे

कितनी आशाए दिखाई थी, किन्तु वे सब मिथ्या मे परिणत होती चली जा रही थी। हर मुस्कराहट के पीछे एक ऊबी हुई जम्हाई थी। हर आनन्द के पीछे मानो कुतर-कुतरकर खाता हुआ कोई अभिशाप झाक रहा था। हर वासनामय सुख के पीछे एक अतृप्ति उचक-उचक उठती थी। अधरो पर प्रेम के उन मधुर चुम्बनो से पीछे भी उस अप्राप्य सुख की कामना प्यासी ही रह जाती थी, जिसके लिए कि यह सारा खेल हो रहा था।

एक रात जब वह र्‍यून से लौटी लो उसे एक पत्र मिला भूरे कागज पर लिखा हुआ। उसने पढा—"कानून के हिसाब से, जैसाकि आपका-हमारा समझौता हुआ था, चौबीस घटे मे, बिना किसी बाधा के, निश्चित रूप से हमारे आठ हजार फ्रैंक चुका दिए जाए।" धन की राशि बहुत बडी थी। वह समझी, यह जरूर लेहरे का पत्र है। किन्तु वास्तविकता यह थी कि एक न एक प्रकार से कर्ज लिए जाते थे, और हुडिया बदली जाती थी। और अब अतत घूम-फिरकर बोहरे को इतनी बडी राशि मागने का अवसर मिल गया था, क्योकि उसे एक महत्त्वपूर्ण कार्य मे उस धन को लगाना था। सत्य जब उसके सामने आया, तब एम्मा के पावो के नीचे से धरती खिसक गई। शार्ल्स भी देख रहा था कि उसका घर नीलाम होगा, वह बर्बाद हो जाएगा, उसका जीवन समाप्त हो जाएगा, और यह सब किसलिए—केवल एम्मा के कारण।

एम्मा गई और जाकर लेहरे के चरणो पर लोट गई। किन्तु अब यह व्यर्थ था। तब वह लीयो के पास गई, किन्तु कर्जा इतना बडा था कि जब लीयो ने सुना तो उसके छक्के छूट गए। शायद एक हजार फ्रैंक तक होता तो वह प्रयत्न भी करता, किन्तु फिर उसने उस विषय मे चर्चा भी नही की। अब वह योनविले के वकील के पास गई, किन्तु जब उसने कहा कि धन तो वह दे देगा, लेकिन उसका भुगतान उसके शरीर से करेगा। तब वह उसके दफ्तर से भाग गई। अब वह रोदोल्फ के पास गई। वह जानती थी कि इस समय वह उस वेश्या के समान थी, जो पैसे के लिए अपना शरीर बेचती है। जिस चीज को उसने वकील के यहा त्याज्य समझा था, वह उसको मन ही मन स्वीकार करके रोदोल्फ के यहा पहुची। लेकिन रोदोल्फ भी उसकी कोई सहायता नही कर सका। अब एम्मा के पास एक ही माग था—आत्महत्या। वह केमिस्ट के घर मे गई और उसने सखिया खा लिया। जब शार्ल्स घर आया तो उसने उसे पत्र लिखते हुए पाया। वह बिलकुल शान्त दिखाई दे रही थी। फिर वह शय्या पर लेट गई, सो गई, और जब उठी तब मुह कडवा हो रहा था। अब वह कौतूहल से अपनी अवस्था को स्वय निरखने लगी। उसे कोई कष्ट नही हो रहा था। आग जल रही थी। उसे आवाज सुनाई दे रही थी। घडी की टिक-टिक उसके कानो मे स्पष्ट आ रही थी। शार्ल्स उसके सिरहाने बैठा था। उसकी सासो की आवाज वह सुन सकती थी। उसे ऐसा लगा जैसे वह सिर्फ प्यासी थी, बहुत प्यासी थी। उसने पानी मागा, और लगा जैसे वह रक्त वमन करेगी। शार्ल्स ने धीरे से उसके पेट को थपथपाया मानो वह उसको प्यार कर रहा था, सहला रहा था। एकाएक वह बडे जोर से चिल्ला उठी। घबराकर शार्ल्स पीछे हट गया। एम्मा का चेहरा नीला पड गया। पसीना बहने लगा, उसके दात बजने लगे और उसने शून्य दृष्टि से चारो ओर देखना प्रारम्भ किया। एक-दो बार वह मुस्कराई भी और फिर उसकी कराहे बढने लगी,

और हठात् वह एक बार फिर बडी जोर से चिल्ला उठी।

दो डाक्टर बुलाए गए। लेकिन अब करने के लिए कुछ भी शेष नही था। वह खून उगलने लगी। उसके सारे शरीर पर भूरे चकत्ते पड गए। पीडा के कारण उसका आर्तनाद गूजने लगा और उसकी नब्ज उगलियो मे ऐसे स्पदित होने लगी, जैसे अब कही सरककर भाग जाना चाहती हो। पादरी आया और उसने अतिम प्रार्थना की। कुछ ही देर बाद एम्मा सदा के लिए चल बसी।

शार्ल्स की इच्छा यह थी कि वह अपने विवाह के वस्त्रो मे दफनाई जाए—सफेद जूते और फूलो की माला पहने हुए। उन्होने उसके केशो को उसके कधो पर फैला दिया, और बलूत तथा महोगनी की लकडी तथा रागे से बने कफन-सन्दूक मे उसको लिटा दिया। एम्मा की मृत्यु शार्ल्स का भी अन्त था। वह फिर कभी बाहर नही निकला। किसीसे नही मिला और उसने अपने रोगियो को भी देखना बन्द कर दिया। राहगीर उसको बगीचे मे खडा हुआ देखते—गन्दा, बिना नहाए-धोए, कुछ जगली-सा जो पौधो के बीच मे इधर-उधर घूमते समय ज़ोर-ज़ोर से रो उठता था। एक दिन उसकी बेटी ने उसे कुज मे मरा पडा पाया। लम्बे बालो की एक फैली लट उस समय भी उसके हाथ मे दिखाई दे रही थी।

नारी की वासना असीम भी हो सकती है। प्रेम अतृप्त रह जाने पर भयानक रूप धारण कर लेता है। वह एक ऐसा हाहाकार बन जाता है जो अन्तर को खोखला कर देता है। ऐसा ही है एम्मा का चरित्र। वह अपने हृदय को ढूढती है। उस पर काबू करना चाहती है, किन्तु कर नहीं पाती। और अन्त में वह विनाश के गर्त में डूब जाती है। लेखक ने उसकी द्वन्द्व-भरी घुटन का बहुत ही सुन्दरता से अन्त तक निभाव किया है।

स्टीवेन्सन :

इन्सान या शैतान

[डॉक्टर जेकिल एण्ड मिस्टर हाइड[1]]

स्टीवेन्सन, रॉबर्ट लुई अंग्रेजी कथाकार रॉबर्ट लुइ स्टीवेन्सन का जन्म एडिनबरा में १३ नवम्बर, १८५० को हुआ। अपने जीवन के प्रारम्भिक दिनों में ही आपमें साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत् हो गइ। अपने पिता को प्रसन्न करने के लिए सिविल इन्जीनियरिंग का अध्ययन किया और कानून भी पढा। लेकिन लेखन के लिए दोनों का ही परित्याग कर दिया। बचपन से ही आपका स्वास्थ्य अच्छा नही था, प्राय अस्वस्थ रहते थे। आपने अपना स्वास्थ्य सुधारने के लिए फ्रास, कैलिफोर्निया, एडिरोन डेक्स और दक्षिणी समुद्र के द्वीपों की यात्राए की। आपकी पत्नी निरतर आपकी सहायता करती रही और आपके लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रही। स्टीवेन्सन इस विषय में दु खी रहे कि उन्हें अपने मित्रों से बिछुडकर दूर रहना पडता था। अधिकाश साहित्यिक रचनाओं का जन्म आपकी रोग शय्या पर हुआ। ३ दिसम्बर, १८९४ को आपका देहात समोआ नामक द्वीप में हुआ। स्टीवेन्सन ने कविताए भी लिखी। बालकों को अत्यन्त रुचिकर लगनेवाली कृतियों के लिए आप बहुत प्रसिद्ध है।
'डॉक्टर जेकिल और मिस्टर हाइड' (इन्सान या शैतान) आपका एक बडा मार्मिक उपन्यास है। यह पहली बार १८८६ में छपा था।

अटरसन एक वकील था। रिचर्ड एनफील्ड नामक एक व्यक्ति उनका दूर का सम्बन्धी था। एक दिन वह लन्दन के समीप रविवार को घूम रहा था, कि उसे एक विचित्र-सा मकान दिखाई दिया। यह मकान एक गली मे था। दुमजिला था, लेकिन उसमे खिडकी एक भी नही थी, और देखकर ही वह कुछ अजीब-सा, डरावना-सा लगता था। एनफील्ड को वह मकान देखते ही एक भयानक दृश्य याद आ गया। उसने उस दृश्य के बारे मे अटरसन को बताया, "एक सवेरे पौ फटी ही थी कि एक आदमी बडी तेज़ी से चलते समय एक छोटी-सी लडकी से टकरा गया, और वह बच्ची गिर पडी। लेकिन उस आदमी के ऊपर कोई भी असर नही पडा, और वह बडी शाति से उस बच्ची के शरीर को अपने पैरो से रौंदता हुआ उसके ऊपर से निकल गया।" यह कहते हुए एनफील्ड को जैसे फुरफुरी आ गई और उसने कहा, "मै इस दृश्य को नही देख सका। मैंने तेज़ी से भागकर उस आदमी को पकड लिया और गरदन पकडकर उस बच्ची के

---

१ Dr Jekyll and Mr Hyde (Robert Louis Stevenson)—इस उपन्यास का हिन्दी अनुवाद 'इन्सान या शैतान' छप चुका है। प्रकाशक हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लिमिटेड, शाहदरा, दिल्ली-३२, अनुवादक देवेन्द्रकुमार विद्यालकार।

पास खीच लाया। वह आदमी बडा कुरूप था। उसने बच्ची के परिवार को हर्जाने के तौर पर धन देना स्वीकार कर लिया और वह इसी रहस्यमय मकान मे घुस गया और दस सोने के पौड ले आया। और उसने एक चैक भी दिया, जिसके ऊपर कि एक अत्यन्त सम्मानित व्यक्ति के हस्ताक्षर थे।" एनफील्ड ने यह कहकर मि० अटरसन की ओर देखा।

वकील अटरसन ने कहा, "मै उस आदमी का नाम जानना चाहता हू जो उस बच्ची को इस तरह कुचलकर चला गया था।"

एनफील्ड ने हिचकिचाते हुए उत्तर दिया, "उस आदमी का नाम हाइड था।"

अटरसन ने कहा, "यह जो मै उस दूसरे आदमी का नाम नही पूछ रहा, जिसने चैंक दिया था, इसकी भी एक वजह है।"

एनफील्ड ने पूछा, "वह क्या ?"

वकील ने उत्तर दिया, "वह सीधी-सी बात है, कि मैं उस नाम की कल्पना कर सकता हू, और मैं उसे जानता हू।"

उस रात वकील अटरसन ने डा० हेनरी जेकिल की वसीयत को फिर बारीक नज़रो से देखा। उसमे लिखा हुआ था कि जेकिल की मृत्यु के उपरात उसकी सारी जायदाद एडवर्ड हाइड को मिल जानी चाहिए। लेकिन उसमे यह भी शर्त थी कि यदि जेकिल गायब हो जाए या तीन महीने तक, किसी अज्ञात कारण से ही सही, उसका पता न चले तो हाइड को चाहिए कि वह जेकिल का स्थान तुरन्त ले ले।

एटरसन सोचने लगा, 'यह तो बिलकुल पागलपन की सी बात है!' और उसने वसीयत को रखते हुए फिर सोचा, 'बडी अपमानजनक-सी बात मालूम देती है।'

जेकिल का एक पुराना मित्र था डा० लेनियन। अटरसन डा० लेनियन से मिलने गया तो उसको पता चला कि डा० लेनियन के सम्बन्ध जेकिल से बहुत दिनो से टूट चुके थे। लेनियन ने कहा, "जेकिल जाने किस धुन मे रहा करता था। मै तो उसकी बात कुछ समझ नही सका। और इस हाइड नाम के व्यक्ति को तो मैं जानता ही नही। यह कौन है ?"

वकील अटरसन का कौतूहल होने लगा। उसने उस अजीब मकान पर नजर रखनी शुरू की और काफी देखभाल के बाद उसे एक आदमी वहा मिला। उस अजीब-से मकान के दरवाज़े पर उस आदमी ने अपना परिचय हाइड नाम से दिया। वह साधारण छोटा-सा आदमी था। सादे कपडे पहने था। घर के भीतर जाने से पहले दोनो ने एक-दूसरे को घूरकर देखा। मुलाकात के दौरान हाइड ने वकील को अपना पता बताया। डा० जेकिल के मकान से बाहर निकलने पर निकट ही एक मोड पर अटरसन को जेकिल का रसोइया मिल गया। वह घर का बहुत पुराना सेवक था। उसने बताया कि जेकिल घर पर नही थे और हाइड के ही पास डाक्टर के चीरा-फाडी करनेवाले कमरे के दरवाज़े की चाभी थी।

इसके लगभग एक वर्ष बाद इग्लैड मे सनसनी फैल गई। सर डेनबर्स केरयू वयो-वृद्ध थे और उनकी किसीने बर्बरता से हत्या कर दी थी। हत्यारा अपने छडी को वही

छोड गया था, जहा उसने मार-मारकर केरयू की हत्या की थी। वह एक भयानक हत्या थी। जब अटरसन को यह पता चला तो वह तुरन्त घटनास्थल पर पहुचा क्योकि सर केरयू उसके मुवक्किल थे। उसे यह देखकर बडा आश्चर्य हुआ कि वह छडी उसकी पहचानी हुई थी। किसी समय अटरसन ने ही वह छडी अपने हाथो से डा० जेकिल को दी थी। इस बात ने उसके कौतूहल को और भी बढा दिया। वह तुरन्त हाइड के पते पर पहुचा। हाइड सोहो मे रहता था और इस समय वहा से गायब हो चुका था। मकान मे केवल चैक-बुक पडी मिली। और उसके अतिरिक्त वहा कुछ भी नही था। बैक से जब दरियाफ्त किया गया तो पता चला कि हाइड के एकाउण्ट मे सैकडो-हजारो पौड थे। उनको निकाल लिया गया था, पर इसके बारे मे बैकवालो को भी कुछ पता नही था।

अटरसन के पता करने पर उसे वैज्ञानिक जेकिल मिल गया—वह अपने घर था मे ही उसके चेहरे पर एक अजीब मौत की सी खामोशी थी। वह चीर-फाड करनेवाले कमरे के भीतर बैठा था। आग उसके सामने जल रही थी, जिसे वह ताप रहा था। उसकी बातचीत से यह भी प्रकट हुआ कि उसे इस भयानक हत्या के बारे मे पता था।

अटरसन ने कहा, "मालूम देता है तुम अभी इतने पागल नही हुए हो कि उस हत्यारे को छिपा दो।"

जेकिल ने जब यह सुना तो वह कसम खाने लगा और उसने कहा, "मै हत्यारे को नही छिपा रहा हू और अब उसके बारे मे शायद कभी किसीको सुनाई भी नही देगा।"

यह कहकर जेकिल ने वकील के सामने एक पत्र रख दिया जिसके नीचे हस्ताक्षर थे—एडवर्ड हाइड। वकील ने देखा कि डा० जेकिल ने यह पत्र अपनी बात के प्रमाण मे प्रस्तुत किया है। वकील पत्र को अपने साथ ले आया। उसने पत्र एक हस्तलिपि-विशारद को दिखाया। हस्तलिपि-विशारद की बात सुनकर उसे बडा आश्चर्य हुआ। विशारद ने कहा, "यह पत्र जेकिल के हाथ की लिखावट से बहुत ज़्यादा मिलता-जुलता है।"

वकील ने चिहुककर पूछा, "क्या कहते हो ? हेनरी जेकिल ने एक हत्यारे के लिए नकली पत्र लिखा है ? यह कैसे हो सकता है ?"

कुछ दिन और बीत गए। एक दिन वकील अटरसन ने डा० लैनियन के यहा पहुचकर देखा कि वहा एक व्यक्ति बैठा था। उसके चेहरे पर जैसे मौत झाक रही थी।

लेनियन ने उस व्यक्ति की ओर दिखाते हुए कहा, "इस व्यक्ति को कोई कडा सदमा पहुचा था, जिससे बचना बहुत कठिन लग रहा था।"

अटरसन ने जेकिल की बात चलाई। लेनियन काप उठा और उसने कहा, "उसके बारे मे मुझसे कोई बात मत करो ! डा० जेकिल इस ससार मे नही है। वह मर चुका है।"

इस बात के करीब पन्द्रह दिन के भीतर लेनियन का देहान्त हो गया। वकील अटरसन को एक पत्र मिला जो मुहरबन्द था। उसने मोहर तोडकर देखा तो पत्र मिला। स्वर्गीय लेनियन ने ही यह पत्र उसको लिखा था। उस पत्र के अन्दर एक और पत्र था जिसपर लिखा हुआ था—"जब तक हेनरी जेकिल मर न जाए, या गायब न हो जाए,

तब तक इस पत्र को न खोला जाए।"

जेकिल के रसोइये का नाम पूल था। वकील अटरसन को उसके द्वारा यह ज्ञात हुआ कि डाक्टर बहुत निराश, गम्भीर और मौन रहा करता था। ऐसा लगता था जैसे उसके मस्तिष्क पर कोई भयानक भार आ गया था और अपनी प्रयोगशाला से बाहर निकलना उसने लगभग बन्द ही कर दिया था। उसका जीवन बिलकुल एकाकी हो गया था।

एक दिन रविवार को एनफील्ड के साथ घूमते हुए अटरसन ने जेकिल को अपने घर की खिडकी पर देखा। उसपर जैसे असीम निराशा और उदासी घिर आई थी। ऐसा लगता था जैसे वह एक बहुत ही बेचैन बन्दी था। दोनो घर के भीतर गए। डाक्टर को सैर पर चलने के लिए कहा। पर उसने इन्कार कर दिया, और अचानक ही उसके चेहरे पर ऐसे भयकर आतक और निराशा का भाव आ गया कि वकील अटरसन और एनफील्ड दोनो का ही भय के कारण जैसे रक्त जम गया

एक रात पूल अचानक ही बहुत घबराया हुआ सा अटरसन के घर आ गया। उसने कहा कि सात दिन से उसके मालिक उस कमरे मे बन्द है और उनका कुछ पता नही चल रहा है।

रसोइये की हालत बहुत ज्यादा खराब थी। वह बहुत ज्यादा डरा हुआ था। उसने बहुत ही याचना-भरे हुए स्वर से कहा, "वकील साहब, आप मेरे साथ चलिए।"

अटरसन डा० जैकिल के घर पहुचा। सब नौकर बहुत ही डरी हुई हालत मे थे। चीर-फ़ाड के कमरे मे पूल के साथ प्रवेश करके अटरसन ने जब दरवाजा खटखटाया तो भीतर से आवाज आई, "मैं किसीसे नही मिल सकता। इस वक्त मैं किसीसे मिलना नही चाहता।" द्वार नही खुला। तब वे लोग रसोई की ओर चले गए।

पूल ने कहा, "हुजूर, क्या यह मेरे मालिक की आवाज थी ?"

वकील ने कहा, "यह तो बडी बदली हुई आवाज़ मालूम पडती थी।"

पूल ने कहा, "मुझे ऐसा लगता है कि मेरे मालिक की हत्या कर दी गई है।"

"किसने की है ?" वकील ने पूछा।

पूल ने कहा, "उसीने की होगी जो वहा मौजूद है।"

वकील ने कहा, "यह कैसे हो सकता है ? अगर उसने हत्या की है तो अभी तक वह वहा मौजूद क्यो है ?'

पूल ने कहा, "जो भी उस कोठरी मे बन्द है, वह दिन-रात किसी दवाई के लिए बुरी तरह चिल्लाता है। लेकिन जैसे उसे याद नही आता कि वह कौन-सी दवाई है।"

"तुम्हे यह बात कैसे मालूम हुई ?"

पूल ने एक कागज़ निकालकर उसके सामने रखा और कहा, "इस कोठरी के बाहर फेका गया था।"

वकील ने उसको पढा। वह एक वडी दु खभरी याचना थी—जिसमे कहा गया था कि वह पहले किसी 'विशेष' प्रकार के नमक का प्रयोग करता रहा है, और उसे उस नमक की और ज़रूरत है। वह पत्र जेकिल के नाम लिखा गया था, लेकिन उसका लेख

जेकिल की लिखावट से बहुत कुछ मिलता-जुलता था।

पूल ने कहा, "मैने उसको देखा हे। वह मेरा मालिक नही है। वे तो बडे लम्बे और अच्छी तन्दुरुस्ती के व्यक्ति है, और यह भीतरवाला तो कुछ बौना-सा नजर आता था।"

सब लोग इकट्ठे हो गए। अटरसन ने कहा, "दरवाजा नही खुला, तो कोई परवाह नही। कुल्हाडा ले आओ, और दरवाजा तोड दो।"

भीतर से आवाज़ आई, "अटरसन, भगवान के लिए दया करो।"

अटरसन पुकार उठा, "यह जेकिल की आवाज़ नही है ! यह हाइड की आवाज है ! पूल दरवाज़ा तोड दो।"

कुल्हाडा दरवाजे से टकराया। भीरत से ऐसी आवाज़ आई जैसे किसी जानवर ने भयभीत होकर चीत्कार किया हो। दरवाजा गिर गया। एक आदमी का शरीर वहा पडा हुआ था। अब भी उसमे फडक मौजूद थी और वह अत्यन्त विकृत हो चुका था। उसके पास ही जहर की शीशी खाली पडी थी। उसने शरीर को सीधा किया। यह एडवर्ड हाइड का शव था जिसनें कपडे डा० जेकिल के पहन रखे थे। लेकिन डा० जेकिल का कही पता नही था। न उसकी लाश मौजूद थी, न वह वहा जिन्दा ही था। तलाश करने पर उसको एक कागज़ मिला। उसमे अटरसन के नाम एक वसीयत थी।

तब अटरसन ने डा०लेनियनवाला वह पत्र खोलकर देखा, जिसे जेकिल के मरने या खो जाने के बाद ही खोलने की आज्ञा थी। उस पत्र ने सारी समस्या को सुलझा दिया।

एक रात हाइड बहुत ढीले-ढाले कपडे पहने हुए लेनियन के दफ्तर मे बहुत ही बेचैन-सा पहुचा था। जेकिल उसके लिए कुछ देर पहले कुछ दवाई की पुडिया वहा छोड गया था। हाइड इस समय उन्हीको लेने के लिए आया था। बडी उत्सुकता से हाइड ने उस पुडिया को ले लिया था और उसने पुडियो की दवाई मे कोई तरल पदार्थ मिलाया था जिससे दवाई का बैंगनी रग शीघ्र ही हरा हो गया था। उसने उसे एक ही घूट मे पी लिया था। उसके बाद उसने चीत्कार किया था। वह अपनी जगह लडखडा गया था और उसका शरीर कुछ फूलने लगा था। ऐसा लगने लगा था जैसे वह बदल रहा हो, जैसे उसका शरीर फूल रहा हो। उसकी शक्ल बदलती जा रही थी, जैसे वह कोई नरम घुलनेवाली चीज़ हो। लेनियन डर के मारे पीछे हट गया था। और तब उसने देखा था, उसके सामने स्वय डा० जेकिल खडा था।

डा० जेकिल ने अपने बारे मे जो पूरा बयान दिया था, उसमे साफ लिख दिया था कि उसने एक ऐसा नमक ईजाद कर लिया था जो उसे अत्यन्त सम्मानित, दयालु और विज्ञान के प्रवीण प्रयोगकर्ता की जगह मि० हाइड नामक भयानक शैतान बना देने की सामर्थ्य रखता था। ज्यो-ज्यो वह नमक का प्रयोग करता रहा, हाइड का भयानक व्यक्तित्व उसका अपना स्वाभाविक स्वरूप बन गया। लेकिन एक समय ऐसा आया कि उसको वह नमक नही मिल सका, जो उसे कभी-कभी जेकिल बना दिया करता था। उस समय आत्महत्या के अतिरिक्त उसके पास कोई और मार्ग नही रहा।

इस उपन्यास में स्टीवेन्सन ने विज्ञान के विकास पर परोक्ष रूप से व्यंग्य किया है। देखने में यह एक रहस्य-भरी कहानी-मात्र ही दिखाई देती है, लेकिन इसके पीछे व्यक्तित्व के दो रूपों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी है। एक यह कि विज्ञान की सामर्थ्य मनुष्य की सज्जनता का नाश करती है, और दूसरे यह कि आविष्कार के पीछे की महत्त्वाकांक्षा जैसे अपने भीतर एक पुनीत अवधारणा लिए हुए न हो तो वह अवश्य ही मनुष्य को निकृष्ट पथ की ओर ले जाती है। इसीलिए इस उपन्यास ने अपने युग में इतना अधिक प्रभाव डाला था। इसमें एक रोमांचक वातावरण प्रारम्भ से अंत तक रखा गया है और व्यक्तित्व के द्वन्द्व इसमें बहुत ही सुन्दरता से अपना निर्वाह कर सके हैं।

एक औरत की ज़िन्दगी

[यूने वी[1]]

मोपासा, गाय द फ्रेंच कथाकार मोपासा का जन्म एक सम्भ्रान्त कुल में हुआ। आपका परिवार अभिजात कुलीन था। फ्रास में सेनइन्फ र् यूरे नामक स्थान के निकट आप ५ अगस्त, १८५० को पैदा हुए। आपका माता का उप यासकार फ्लाबेयूर से अच्छा परिचय था। मोपासा पर फ्लॉबेयर का साहित्यिक प्रभाव बहुत अधिक पडा। प्रारम्भ से ही मोपासा की रुचि साहित्य की ओर हो गई। बडे होने पर पेरिस में जन-सेवा विभाग में आपकी नियुक्ति क्लर्क के रूप में हो गई। फ्रेंको प्रशियन युद्ध में आपने काम किया। इसके उपरान्त आप कविताए और कहानिया प्रकाशित कराने लगे, जिनमें निराशा की गहरी भावना थी और नैतिक भावना का एक अभाव भी था। मोपासा का बौद्धिक सतुलन धीरे-धीरे विनष्ट होने लगा और १८९२ में आपका दिमाग बिलकुल खराब हो गया। ६ जुलाइ, १८९३ को आपकी एक पागलखाने में मृत्यु हो गई। आप मुख्यत कहानीकार के रूप में प्रसिद्ध है। किन्तु उपन्यास के क्षेत्र में भी आपने विश्व साहित्य को अद्वितीय रचनाए दी है।

'यूने वी' (एक औरत की जिन्दगी) १८८३ ई० मे प्रकाशित हुआ था। यह आपका अत्यन्त विख्यात उपन्यास है।

जीन ले परश्यू र्यून मे अपने घर लौट आई। वह अपने कॉन्वेट की शिक्षा समाप्त कर चुकी थी। वह बहुत सुन्दर थी—अट्ठारह साल की एक सरल बालिका। प्रकृति का सौन्दर्य उसपर गहरा प्रभाव डालता और उसको भावुक बना देता। अपने माता-पिता के निकट आकर एक बार फिर उसमे जीवन के आनन्द की हिलोर लहराने लगी। परिवार का पुराना मकान नॉर्मन समुद्र तट पर था। उसको पोपलर्ज़ कहते थे। उसकी बडी इच्छा थी कि वह वहा जाए और आनन्द से अपने दिवस व्यतीत करे।

जीन गाव आ गई। यहा एक स्वतन्त्र और आनन्दमय जीवन प्रारम्भ हुआ। देहात की हवा मे ताजगी थी। सदरू के फूलो की सेगन्ध उस एकान्त स्थान मे भुमराया करती थी और जीन विभोर होकर वहा घूमा करती थी।

समुद्र दूर तक फैला हुआ दिखाई देता, उसकी लहरे आती और बिखर जाती। फेन-राशि पीछे लौट जाती। क्षितिज तक आकाश को देखने पर भी उसकी आखे तृप्त

१ Une Vie (Guy De Maupassant)—इस उपन्यास का हिन्दी अनुवाद हो चुका है 'एक औरत की जिन्दगी', अनुवादक श्री शिवदानसिंह चौहान एव श्रीमती विजय चौहान, प्रकाशक राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली।

नही होती। घटो तक एकान्त मे वह बैठी समुद्र के गहन गर्जन को सुना करती। उसके पिता बैरन थे जो कुलीन थे। उन्हे अपने काश्तकारो को सुखी देखने मे बडी दिलचस्पी थी। खेत की उन्नति करना उन्हे बहुत रुचिकर था। उनकी पत्नी बैरोनेस अस्वस्थ रहा करती थी। उसके दिल पर बडा जल्दी असर हो जाया करता था, इसलिए वह लम्बी यात्रा के पक्ष मे नही थी। घर के आस-पास ही घूम लिया करती थी। जीन की एकमात्र मित्र थी—एक किसान की लडकी रोजाली। दोनो की एक ही उम्र थी। रोजाली उनके घर मे काम किया करती थी, लेकिन उसे ऐसे पाला गया था जैसे वह जीन की बहन ही हो। एक दिन पादरी पिको बैरोनेस से मिलने आया। यह एक स्थानीय पादरी था। यद्यपि बैरन और बैरोनेस दोनो ही कैथोलिक मत का प्रतिपालन कठोरता से नही करते थे फिर भी पादरी से उनकी मित्रता थी। पादरी उन्हे गिरजे मे आने को कह गया।

इतवार आया। मा-बेटी दोनो गिरजे गई। गिरजे मे सामूहिक प्रार्थना समाप्त हुई। पादरी ने इन लोगो का परिचय वाईकाउण्ट जूलियन द लामार नामक पडोस के एक तरुण अभिजात कुलीन व्यक्ति से कराया। उसके परिवार की जो कुछ सम्पत्ति शेष थी, वह उसीपर गुजारा करता था और बहुत ही किफायत से अपनी जिन्दगी गुजारता था। जीन के माता-पिता को वह व्यक्ति पसन्द आया। उसकी बोल-चाल, रहन-सहन, उसके परिवार का नाम—सब कुछ उनको अच्छा लगा और उसका सुन्दर मुख, सुडौल शरीर उन्ही को नही, जीन के हृदय मे भी अपना प्रभाव डाल गया। अब जीन अपने पिता की नाव मे जूलियन के साथ इधर-उधर के कस्बो तक घूमने जाने लगी। बडे आनन्द से जल-यात्राए होती। शाम को पोपलर्ज़ के निकट जब जीन उसके साथ घूमती तो प्रेम की सुखद कल्पना जैसे साकार हो उठती और उसके मन मे पला हुआ बहुत दिनो का एक मधुर सपना जैसे जीवित हो उठता। जूलियन ने एक दिन बैरन से निवेदन किया कि वह जीन से विवाह करना चाहता था। जीन इस बात को सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हो गई। माता-पिता को कोई विरोध नही था इसलिए सगाई हो गई और शादी का दिन भी तय हो गया और विवाह के उपलक्ष्य मे कौरसिका नामक स्थान पर जाने की योजना भी बना ली गई। विवाह मे जीन की तरुण चाची लिसो एकमात्र अतिथि बनकर आई।

लेकिन जीन को किसी ने भी यह नही बताया था कि पत्नी के कर्तव्य क्या होते है। माता-पिता ने कभी उसे इसकी शिक्षा नही दी कि एक पति अपनी से क्या आशा कर सकता है और उसके सम्बन्ध क्या होने चाहिए, इसलिए सुहागरात को अपने पति के साथ रहने पर उसको विचित्र-सा धक्का लगा। उसकी कोमल भावुक्ताए जैसे खडित हो गईं। यह सब कुछ वह जानती ही नही थी और उसे यह सब बडा कुरूप और अनगढ-सा दिखाई दिया। विवाह के उपरान्त वे लोग जब यात्रा मे चले तो उसका पति उसके प्रति जो अनुरक्ति दिखाता, जीन को उस सबसे घृणा हो आती और वह बेचैन-सी घबराने लगती। वे लोग कौरसिका के देहात की ओर चल पडे और यात्रा के दिनो मे पर्वतो और कन्दराओ के अनिंद्य प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर जीन का हृदय अत्यन्त प्रभावित हुआ। उसकी चेतनाए जाग उठी और अपने पति के आवेग का प्रत्युत्तर वह स्नेह से देने लगी।

लेकिन जब वे लोग पोपलर्ज़ मे लौट आए तो जूलियन मे एक विचित्र उपेक्षा छा

गई। उसे लगा जैसे जादू उतर गया है और जैसे जीन भी रिक्त हो गई है। दैनिक जीवन की उबा देनेवाली गतिविधि मे जीन का मन ऐसा हो गया जैसे कि इन्द्रजाल उसके ऊपर से उतर गया, कुछ बाकी न रहा। उसे लगता कि उसकी किसी बात मे दिलचस्पी नही रह गई है, जिसमे मन लगाकर वह अपने-आपको भुला सके, अर्थात् जिममे उसे आनन्द मिल सके। उसे ऐसा लगता था जैसे कि जो कुछ हो रहा है, उसे होने देना चाहिए—वह सब होने ही के लिए है। जूलियन अब फिर अपने फार्म के पास आ गया था और छोटी-छोटी किफायते करना उसने प्रारम्भ कर दिया था। बेरन देखते तो उन्हे कुछ मनोरजन-सा होता पर जीन कभी-कभी इससे चिढ जाती। वे पडोसियो से मेल-जोल बढाने लगे। वर्ष समाप्त होने के समय जीन के माता-पिता ने निश्चय किया कि वे अब र्यून लौट जाएगे। उनके चले जाने पर जीन को उदासी ने घेर लिया। उसके लिए जैसे जगह बदल गई। अब रोजाली भी बहुत पहले जैसी नही रही। वह अस्वस्थ थी और उसके जीवन मे दु ख ही दु ख था। एक रात जीन ने देखा रोजाली शयनगृह मे फर्श पर पडी कराह रही थी। उसके उसी समय एक बच्चा पैदा हुआ था। जूलियन को जब इस बारे मे पता चला, वह क्रोध से भर गया और दोनो को उसने वहा से निकाल देने के लिए तुरन्त जोर दिया। जीन पूछ-पूछकर हार गई, लेकिन रोजाली ने बच्चे के पिता का नाम नही बताया।

कई हफ्ते बीत गए। एक रात जीन को यह पता चला कि रोजाली का प्रेमी जूलियन ही था। इस खबर से जीन को ऐसा लगा कि धरती उसके पाव के नीचे से सरक गई है। उसके मस्तिष्क का सतुलन बिलकुल बिगड गया। उसने जल्दी से कपडे पहने और समुद्र की ओर भाग चली। बाहर बर्फ पड रही थी। जूलियन उसके पीछे भागा। अन्त मे उसने जीन को पकड लिया। चट्टान के ऊपर खडी वह नीचे कूदने को तैयार थी और बुरी तरह थक चुकी थी। बर्फ ने उसे बीमार कर दिया। जस उसकी बीमारी की खबर उसके माता-पिता को पहुची तब वे लोग मिलने आए। जूलियन ने अपने को निरपराध घोषित किया। तब जीन ने निश्चय किया कि रोज़ाली से असली बात का पता लगाया जाय। पादरी को बुलाया गया। पादरी के सामने रोजाली ने अपना बयान दिया कि जब पहली बार जूलियन पोपलर्ज़ मे आया था, तभी उसने उसपर अपने डोरे डाल दिए थे और बच्चा उसीका था। बैरन ने रोज़ाली के लिए पच्चीस हजार फ्रैंक की कीमत का फार्म अलग निश्चित करना स्वीकार कर लिया और पादरी ने उसके लिए पति ढूढने का उत्तरदायित्व लिया। इन्ही दिनो जीन को ज्ञात हुआ कि वह गर्भवती है। इससे उसके मन के घाव धीरे-धीरे जैसे कुछ ठीक होने लगे। अपने जीवन की जितनी भी विकृतियाँ थी, गतिरोध थे उन सबको उसने दिशा बदलकर अजन्मे शिशु की ओर मोड दिया, और जब बालक का जन्म हुआ, उसने अपना सारा प्यार उसी पर केन्द्रित कर दिया।

इस बीच उनके मित्रो का समुदाय बढता गया था। पडोस मे ही काउण्ट और काउण्टेस द फोरवील रहते थे। जूलियन की उनसे बहुत अधिक मित्रता हो गई। वे दोनो ही जैसे उसे बहुत सुख देते थे और जीन के प्रति दोनो ही का ध्यान बहुत अधिक था। लेकिन ज्लियन को अपने पुत्र पॉल मे कोई दिलचस्पी नही थी।

इधर पिछले दिनो से जूलियन कुछ बदल गया था। जीन को पता चला कि

जूलियन और काउण्टेस द फोरवील मे परस्पर प्रेम-व्यवहार चल रहा है । दोनो ही घोडो की पीठ पर बैठकर देहात मे घूमने जाया करते थे । एक दिन जीन ने भी उन लोगो का पीछा किया । दोपहर ढल चुकी थी और घोड पर बैठे हुए जीन ने देखा—जूलियन और काउण्टेस के घोडे एक एकान्त कुज के निकट बधे खडे थे, किन्तु प्रेमी और प्रेमिका दीख नही रहे थे ।

उन्ही दिनो जीन की मा पोपलर्ज़ की ओर लौट गई । अकस्मात् उनको दिल का दौरा हुआ और वे मर गईं । जीन के लिए यह एक नया आघात हुआ और अब वह अपनी मा के पुराने पत्रो को पढकर उस दु ख को घटाने का प्रयत्न करने लगी । मा के पत्रो को पढते-पढते उसे यह जानकर बहुत ही दु ख हुआ कि अपने ज़माने मे स्वय उसकी मा का भी बैरन के एक पुराने और बहुत अच्छे मित्र से प्रेम-सम्बन्ध रहा था ।

एक दिन पोपलर्ज़ के हरे-भरे लॉन पर गभीरतापूर्वक चहल-कदमी करता हुआ काउण्ट द फोरविल जीन के पास आया । उसके मुख पर एक कठोर भयानकता थी । जीन उसको देखकर ही समझ गई कि शायद उसे जूलियन और अपनी पत्नी काउण्टेस के प्रेम-सम्बन्ध का पता चल गया है । जीन उसे अभी कुछ कह भी नही पाई थी, कि वह उन दोनो—काउण्टेस और जूलियन को फिर ढूढने चल पडा ।

जाडे के दिनो मे गडरिये और चरवाहे बर्फ से बचने के लिए चरागाहो मे झोपडे से बना लेते थे । ऐसे ही एक झोपडे के पास काउण्ट को दो घोडे दिखाई दिए । काउण्ट ने झोपडे के अन्दर झाका । दोनो प्रेमी केलि-क्रीडा मे मस्त थे । काउण्ट के क्रोध का पारावार न रहा । प्रचड उन्माद से भरकर उसने झोपडे को सरकाना शुरू किया । काउण्ट बहुत हट्टा-कट्टा था, अत झोपडे को एक चट्टान के ऊपर तक खीच ले जाने मे सफल हो गया । चट्टान के ऊपर से उसने झोपडे को युगल-प्रेमियो समेत एक गर्त मे नीचे ढकेल दिया ।

किसानो ने जब नीचे के चकनाचूर झोपडे को देखा तो उन्हे बहुत नीचे खड्ड मे जूलियन और काउण्टेस के शव दिखाई दिए ।

इस घटना के बाद जीन ने अपने सारे जीवन को पॉल की देख-रेख मे लगा दिया । उसने उससे इतना दुलार किया कि लाड ने उस बच्चे को बिगाडना शुरू कर दिया । उस बच्चे के नाना अर्थात् बेरन और चाची उस की छोटी से छोटी इच्छा के दास बन गए और स्वभावत ही इसका परिणाम अच्छा नही हुआ । जब वह पन्द्रह साल का हुआ तब शिक्षा के लिए उसे बाहर भोजने की बात उठी । जीन ने कभी इस बात की कल्पना भी नही की थी कि शिक्षा के लिए उसको दूर भेज दिया जाएगा । वह सदा उसे अपने पास रखना चाहती थी । उसकी राय यह थी कि उसको दूर क्यो भेजा जाय । यही गाव मे पढा-लिखाकर खेती-बाडी सिखाई जाए और वह एक इज्ज़तदार जमीदार बनकर अपना जीवन व्यतीत करे । लेकिन बैरन के मत मे ऐसा ठीक नही था । बैरन की राय थी कि पॉल को कालेज भेजा जाय और अन्त मे जीन को इसे स्वीकार करना पडा । कालेज मे दूसरा साल खत्म कर लेने पर पॉल का पोपलर्स मे आना धीरे-धीरे कम हो गया । अब उसके नये-नये दोस्त हो गए थे । उसके आनन्द के लिए नये विलास-भरे साधन इकट्ठे होने लगे

थे। इससे पहले कि जीन इस परिवर्तन को देखती, तब तक वह बढ-चढकर पूरा आदमी बन गया था और और अब अपने से दुलार करनेवाले परिवार के प्रति उसकी अनुरक्ति बहुत ही कम हो गई थी। चौथे साल उसने जीन को बिना सूचना दिए ही कालेज छोड दिया। उसने एक रखैल भी रख ली थी।

आगामी कुछ सालो मे परिवार से उसका पत्र-व्यवहार केवल इसलिए हुआ क्योंकि उसे बार-बार धन की याचना करनी होती थी। वह अब काफी बडा हो गया था। वह अपनी विरासत को देखने के लिए छ महीने मे कभी-कभार आता। उसके ऊपर बहुत-से कर्ज़ हो गए थे। उसका नाना अपनी जायदाद को बार-बार गिरवी रखने लगा, ताकि पॉल को किसी प्रकार बचाया जा सके। पॉल पर एक बार इतना कर्ज़ा हो गया कि उसको चुकाने के इन्तज़ाम मे बैरन की मृत्यु हो गई।

जीन तेजी से बूढी हो रही थी। उसकी आमदनी करीब-करीब खत्म हो चुकी थी। पॉल की रखैल के प्रति उसे घोर घृणा थी। यह घृणा उसे मन ही मन खाए जा रही थी। अब उसका मस्तिष्क केवल अतीत की ओर दौडता और वह वर्तमान मे रहना भूल गई थी। पुरानी कल्पनाओ मे ही वह अपने-आपको उलझाए रखती और उसका जीवन एकाकी हो गया।

एक दिन रोज़ाली पोपलर्ज मे लौट आई। जीन ने उसे देखा तो उसे बहुत आनन्द हुआ। रोज़ाली ने जीन के हिसाब-किताब अपने हाथ मे ले लिए और कहा कि जो कुछ बचाया जा सके उसको कडाई से बचाना चाहिए और उसने उससे स्पष्ट कह दिया कि पोपलर्ज़ को बेच देना चाहिए। जीन इस विचार के पक्ष मे नही थी, लेकिन उसने इसे स्वीकार कर लिया, क्योकि मजबूरी थी। वह रोजाली के साथ कुछ दूर पर एक छोटी-सी कोठरी मे रहने के लिए चली गई। वह पॉल से मिलने के लिए पेरिस भी गई। लेकिन वहा पॉल की जगह अपना कर्ज़ वसूल करनेवाले लोग उसको मिल गए। अन्त मे जीन ने यही निश्चय किया कि वह पॉल से मिलने भी नही जाएगी। अभी उसने यह विचार किया ही था कि उसको यह सूचना मिली कि जिस स्त्री से पॉल ने प्रेम किया था वह एक बच्चे को जन्म देकर बीमार पड गई थी और मरनेवाली थी। रोज़ाली तुरन्त पेरिस गई, ताकि बच्चे को ले आए और उसके माता-पिता का विवाह करा दे। अगले दिन सूचना आई कि पॉल की रखैल मर चुकी है और वह घर आ रहा है। अनेक वर्षों के बाद जीन को प्रसन्नता हुई।

रोज़ाली ने जीन से कहा, "देखती हो, जीवन न तो उतना बुरा ही है, न उतना अच्छा ही, जितनी कि हम कल्पना करते हैं।"

प्रस्तुत उपन्यास में मोपासा ने जीन के माध्यम से मनुष्य-जीवन के उतार-चढाव को चित्रित किया है। इस ससार में मनुष्य की कल्पना अपने व्यक्तिगत दायरो के भीतर बनती है, किन्तु यह आवश्यक नहीं है कि हर व्यक्ति उस कल्पना के अनुरूप ही चलता रहे। एक-दूसरे के आनन्दो की कल्पना का सघर्ष हमारे दैनदिन जीवन में उतरता रहता है और हमारे सुख-दु ख की भावना से हमारी परिस्थितिया जन्म लेती है, किन्तु परिस्थितिया उनका निर्माण भी करती चलती है।

अपनी छाया

[द पिक्चर ऑफ डोरियन ग्रे[1]]

ऑस्कर वाइल्ड आपका पूरा नाम ऑस्कर फिंगाल ओ' फ्लाहर्टी विल्स वाइल्ड था। पर आप ऑस्कर वाइल्ड के नाम से ही प्रसिद्ध थे। आप एक प्रसिद्ध सर्जन के पुत्र थे। आपकी माता कवयित्री थी। आपका जन्म डबलिन में १५ अक्तूबर, १८५४ को हुआ। ट्रिनिटी कॉलेज और ऑक्सफोर्ड में क्लासिक्स तथा कविता में आपको डिस्टिंक्शन मिला। उन्नीसवी शताब्दी के अन्तिम दशक में लन्दन में 'सौन्दर्य वादी' आन्दोलन के नेता के रूप में आपने बहुत अधिक यश अर्जित किया। आप अपने समय में अत्यन्त विख्यात थे। आपकी वाक् चतुरता से लोग बहुत प्रभावित थे। आप कवि, उपन्यासकार और नाटककार थे। किन्तु आपने १८९५ में समाज के नैतिक नियमों का उल्लंघन कर दिया, इसलिए आपका सामाजिक सम्मान गहरे धक्के के कारण लड़खड़ा गया और दो वर्ष के लिए आपको कड़ी सजा मिली। ३० नवम्बर, १९०० को पेरिस में आपकी मृत्यु हुई। ऑस्कर वाइल्ड अपने समय के प्रबुद्ध विचारकों में से भी थे।

'द पिक्चर ऑफ डोरियन ग्रे' (अपनी छाया) आपका एक प्रसिद्ध उपन्यास है। यह पहली बार १८९० में प्रकाशित हुआ।

लार्ड हेनरी बोटन दीवान पर लेटा हुआ था। स्टूडियो मे गुलाबो की मधुर गन्ध भरी हुई थी। दीवान के कोने पर हुआ लार्ड बोटन मधुवर्णी कुसुमो के गुच्छो को उपवन के पादपो पर लिखते हुए देख रहा था। मधुमक्खिया गुजन कर रही थी। चारो ओर एक निस्तब्धता छा रही थी और ऐसा लगता था जैसे कोलाहल किसी स्वप्न-लोक मे जाकर निद्रित हो गया था। भीने-भीने सुरभित कुसुम आलोडित पवन पर झूम उठते थे और स्टूडियो मे उनकी गन्ध वायु पर बैठकर धीरे-धीरे से बह-बह आती थी। किन्तु यह निस्तब्धता लार्ड बोटन को मानो भारालस किए दे रही थी। कमरे के मध्य मे एक असाधारण सौन्दर्य-युक्त व्यक्ति का चित्र था। निस्सन्देह चित्र का व्यक्ति युवक था और उसको देखकर आखे जैसे तृप्त हो जाती थी। चित्र के सम्मुख बैसील हारवर्ड नामक चित्रकार बैठा था। बैसील कुछ दिनो पहले अचानक ही गायब हो गया था। उसके बारे मे लोगो मे बडा कौतूहल पैदा हो गया था, और उसके लिए लोग रहस्यात्मक शब्दो का प्रयोग किया करते थे।

---

१ The Picture of Dorian Gray (Oscar Wilde)—इस उपन्यास का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो चुका है—'अपनी छाया', अनुवादक—रामकुमार, प्रकाशक—राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली।

लार्ड हैनरी ने कहा, "वैंसील, क्या यह तुम्हारा सर्वश्रेष्ठ चित्र है ? तुम्हे इसको ग्रोस वीकर के पास भेज देना चाहिए।"

वैसील ने कहा, "इसको मै कही नही भेजूगा—मैंने मानो इसमे अपने-आपको ही उडेलकर रख दिया है। इस चित्र मे मैं इतना अधिक उतर आया हू कि इसे कही भी भेजना नही चाहता।" और तब चित्रकार वैसील ने बताया कि चित्र के युवक का नाम डोरियन ग्रे था। जिस समय उसने उसे देखा था, तभी उसपर जैसे एक जादू-सा हो गया था। उसने जैसे उसे पराभूत कर लिया था अपने सौन्दर्य से। उसको देखकर वैसील को लगा था कि उसका चित्र बनाने के लिए, कला की एक नई अभिव्यक्ति, उसके अपने व्यक्तित्व को सराबोर करके, अपने-आपको प्रकट करने की चेष्टा कर रही थी। वह इसमे सफल भी हुई। और उसके बाद चित्रकार ने कुछ उदासी से कहा, "लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि मैने अपनी सारी आत्मा उडेलकर एक ऐसे व्यक्ति को दे दी है जो उसका मूल्याकन तदनुरूप नही करता। उसके लिए मानो यह एक कोट मे लगाने के, मात्र एक फूल के समान है।" चित्रकार ने लार्ड हेनरी की ओर देखा और विनीत स्वर मे कहा कि वह उसके मित्र के सादे और मधुर स्वभाव को बिगाडे नही। क्योकि वह जानता था कि लाड हेनरी बोटन प्रत्येक वस्तु के प्रति एक उपेक्षा का भाव रखता था और अविश्वास-भरा व्यग्य उसके होठो पर थिरका करता था।

अभी वे लोग बाते ही कर रहे थे कि डोरियन ग्रे के आने की सूचना मिली।

लार्ड हेनरी बोटर ने देखा कि डोरियन के होठ गुलाबी थे—स्वच्छ। आखें नीली थी—निर्मल। केश कोमल और स्वर्णिम थे। और लार्ड हेनरी को लगा कि यह एक पवित्र यौवन था, अभी इस पर किसी प्रकार की कलक-कालिमा का प्रभाव नही पडता था।

चित्रकार अपनी तूलिका लेकर पुन मग्न हो गया। डोरियन लार्ड हेनरी से बाते करता रहा।

लार्ड हेनरी ने कहा, "किसी भी प्रकार की लालसा से मुक्त होने के लिए आवश्यक है कि एक बार उसके सम्मुख समर्पण करके उसको प्राप्त कर लिया जाए। और तृप्ति हो जाने पर मन मे अवश्य ही अनुरक्ति का स्थान विरक्ति ग्रहण कर लेगी।"

इस वाक्य ने जैसे डोरियन ग्रे पर अपना प्रभाव दिखलाया। ऐसा लगा कि यह ध्वनि उसके हृद्तत्री के तार को बजा गई।

लार्ड हेनरी ने डोरियन को यह भी कहा कि जब उसे सौन्दर्य मिला है तो उसे अवश्य ही उसका सम्पूर्ण उपभोग करना चाहिए, क्योकि यौवन सदैव स्थिर नही रहता। वस्तु की सार्थकता उसके नियोजित भोग मे है, उसके सापेक्ष सम्बन्धो मे है। क्योकि व्यक्तित्व अपने-आपमे तब तक पूर्ण नही होता जब तक कि पार्थिव रूप तृप्ति की अनुभूतियो के माध्यम से अपना सम्पूर्ण उपभोग नही कर लेता।

चित्रकार ने पुकारकर कहा, "लो, मेरा चित्र समाप्त हो गया।"

तीनो ने उस अत्यन्त सुन्दर कलाकृति को देखा। डोरियन ग्रे ने धीरे से बुदबुदाकर कहा, "यह कितने विषाद का विषय है, बुढापा आएगा और मेरे इस रूप को कुरूपता

ग्रस लेगी ! किन्तु यह चित्र कभी वृद्ध नही होगा। अगर मैं सदैव युवक ही बना रहू जो कि असम्भव है, तो सम्भवत मेरा सौन्दर्य नष्ट नही होगा। उस अवस्था मे मेरी जगह मेरा यह चित्र बूढा होता चला जाए तो कैसा विचित्र हो। इसके लिए मै अपनी आत्मा तक को बेचने के लिए तैयार हू।"

डोरियन विशाल सम्पत्ति का स्वामी होनेवाला था। उसकी माता एक अत्यन्त सुन्दर स्त्री थी। कुलीन परिवार की होते हुए भी वह एक बहुत साधारण व्यक्ति के साथ भाग निकली थी। उस व्यक्ति और उसके पिता का द्वन्द्व-युद्ध हुआ। पिता उसमे मारा गया, और माता भी अधिक जीवित नही रही। उसको उस दूसरे व्यक्ति ने पाला। डोरियन उसके साथ-साथ नाटक देखने जाता। भोज मे सम्मिलित होता। किन्तु जब उस व्यक्ति को यह ज्ञात हुआ कि डोरियन एक छोटे थियेटर मे काम करनेवाली सत्रह वर्षीय अभिनेत्री सिविल वैन के प्रेम मे पड गया है, तो उसने रोष प्रकट किया। लार्ड हेनरी बोटन को जब यह सब ज्ञात हुआ तो मन ही मन एक विचित्र भावना ने जन्म लिया।

डोरियन ग्रे अपने मित्रो को लेकर थियेटर मे जाता। जब उसकी अभिनेत्री से सगाई तय हो गई तो वह अपने मित्रो को लेकर उसका अभिनय देखने गया। अभिनेत्री उसको 'जादूगर राजकुमार' कहा करती थी, क्योकि वह उससे अत्यन्त प्रभावित थी। इस बार वह सुन्दर अभिनय नही कर सकी। डोरियन ने देखा कि पहली बार वह अपने काम मे असफल हो गई थी। डोरियन को धक्का लगा। वह उसको सौन्दर्य और कला की देवी मानता था। जब उसने इस विषय मे अभिनेत्री से प्रश्न किया तो सिविल वैन ने कहा, "रगमच मेरे लिए अब वास्तविकता और यथार्थ का प्रतीक नही है।"

डोरियन ग्रे आहत-सा कह उठा—तुमने मेरे प्रेम की हत्या कर दी है !" और उसको रोते हुए छोडकर चला गया।

जब वह घर आया और उसने अपना चित्र देखा ता उसके मुख पर एक निष्ठुरता की भावना उदित हो आई थी। चित्र देखकर उसे आश्चर्य हुआ। उसने दर्पण मे अपना मुख देखा—वही आकृति थी, वही मुद्रा थी, सब कुछ वैसा ही था। कुछ भी परिवर्तित नही हुआ था। किन्तु चित्र मे अकस्मात् ही एक ऐसा परिवर्तन आ गया था। और तभी उसे अपनी चाहना की याद हो आई जब उसने कहा था, 'मै ऐसा ही बना रहू, और जितने भी परिवर्तन हो, वे सब इस चित्र मे ही हुआ करे।' इस विचार ने उसके हृदय को धक्का पहुचाया, किन्तु उसने अपने मन को यह कहकर सात्वना दी, 'मैं निष्ठुर नही हू। यह तो सिविल वैन का अपराध है।'

अगले मध्याह्न की वेला मे उसने सिविल को क्षमा-याचना करते हुए एक पत्र लिखा। किन्तु इतने मे लार्ड हेनरी बोटन ने उसे सूचना दी कि सिविल ने विष खाकर आत्महत्या कर ली है।

"अच्छा ही हुआ।" लार्ड हेनरी ने कहा, "वरना वह तुम्हे बिलकुल उबा देती।"

डोरियन को लगा कि उसके इस वाक्य मे कुछ तथ्य अवश्य है उसने यह अनुभव किया कि वह लार्ड की बात से सहमत है। यह दु ख-भरा प्रकरण बिलकुल नाटकीय ढग से हुआ था। स्वय डोरियन ग्रे उसका एक भाग था, इसकी डोरियन को एक विचित्र अनुभूति

हुई, और मुस्कराते हुए उसने चित्र पर एक पर्दा डाल दिया। अब यह उसकी आत्मा के लिए एक दर्पण के समान हो गया। जो परिवतन उसके लिए बाह्य रूप मे अप्रकट थे उनको वह इस चित्र मे देख सकता था। अगले दिन सबेरे चित्रकार वैसल उसके पास आया। उसने डोरियन को फिर मॉडल बनने के लिए कहा। किन्तु डोरियन ने चित्रकार को वह चित्र देखने की भी आज्ञा नही दी। चित्रकार ने डोरियन की प्रशसा मे कहा कि डोरियन उसकी कल्पना मे एक आदर्श पुरुष है। उसने उसके सौन्दर्य के रूप मे अपनी कल्पना को साकार कर लिया है। लेकिन डोरियन किसी भी तरह उसके लिए फिर से मॉडल बनकर बैठने को तैयार नही हुआ। चित्रकार के चले जाने के बाद डोरियन ने चित्र को उठा लिया। उसके घर मे ऊपर की मज़िल मे एक कमरा था जिसका कोई प्रयोग नही होता था। उसने उस चित्र को उस कमरे मे पहुचा दिया और दरवाज़ा बन्द करके ताला लगा दिया।

लार्ड हेनरी बोटन ने डोरियन के पास एक उपन्याम भेजा। यह पेरिस के एक युवक की कहानी थी। पेरिस के इस युवक ने जीवन के विचित्र अनुभव किए थे। अतीत की शताब्दी मे पाप और पुण्य की सारी भावनाओ को अपने अनुभव मे उतारने के लिए उसने जीवन की समस्त वासनाओ को अपने ऊपर खेल जाने दिया था। यह एक विषाक्त वासनात्मक पुस्तक थी। डोरियन पर उसका जादू का सा प्रभाव हुआ। वर्षो तक वह उससे प्रभावित होता रहा। उसे ऐसा लगता जैसे वह उसका अपना ही जीवन-चरित्र था—और वह जब पैदा भी नही हुआ था, जब उसने उस जीवन को जिया भी नही था, तभी मानो उसको लिख दिया गया था।

डोरियन के अद्भुत सौन्दय और उसके मुख की पवित्रता आज भी उसके साथ थी। ऐसा लगता था जैसे उसमे कभी कोई परिवर्तन नही आएगा। लेकिन लन्दन मे उसके बारे मे तरह-तरह की अफवाहे उड रही थी। हर बुरी घटना से लोग उसे सम्बद्ध करते थे। वह कई दिनो तक घर से गायब रहता, रहस्यमय तरीके से इधर-उधर विचरण करता, लेकिन जब वह घर लौट कर आता तो अपने हाथ मे दर्पण लेकर वह उस एकान्त कमरे मे चित्र के सम्मुख खडा हो जाता। उसे यह देखकर विचित्र-सा आनन्द होता कि दर्पण मे उसकी मुखाकृति वेसी ही निष्कलक और सुन्दर दीखती है। लेकिन चित्र की मुखाकृति पर बुढापा आता जा रहा था और कुटिलता अपनी कुरूपता को प्रदर्शित करने लगी थी। चित्र के व्यक्ति का आनन वासना-ग्रस्त था, भारी था, माथे पर घृणित रेखाए उभर आई थी, और शरीर भी बेडौल होता जा रहा था। लेकिन वह स्वय वैसा ही सुन्दर और सुडौल था।

अपनी वेष-भूषा बदलकर डोरियन डोक्स के निकट एक बदनाम सराय मे जाया करता था। उसकी भावनाए अधिक भयकर होती जा रही थी। ज्यो-ज्यो उसकी अपने को तृप्त करने की चेष्टाए बढती जाती, त्यो-त्यो उसकी क्षुधा और भयकर होती जाती। वह लोगो को भोज पर बुलाता था, सगीत-पार्टियो का आयोजन करता था, ताकि लोग उससे प्रभावित हो और यही समझें कि वह एक नई विचारधारा का प्रतिपादन कर रहा है जिसमे सौन्दर्य की सूक्ष्म अनुभूतियो द्वारा प्रेरित एक नई आध्यात्मिकता प्राप्त की जा

सकती है।

इसी बीच डोरियन को रोमन कैथोलिक उपासना-पद्धति ने प्रभावित किया। उसने सुगन्धियो का अध्ययन किया। सगीत की ओर वह अनुरक्त हुआ। उसने रत्नो और बेशकीमती कशीदो को इकट्ठा किया और उनपर गहरी खोज-जाच की। अपने चित्र के प्रति वह बहुत अधिक अनुरक्त था। इसलिए वह लन्दन से दूर नही जाता था। किन्तु अब कुछ लोग उसके विरुद्ध हो चले थे, और जब वह पचीस वर्ष का हुआ तब उसके बारे मे अफवाहे उडने लगी कि उसकी सोहबत बहुत खराब है। लेकिन बहुत-से लोगो के लिए तो ये अफवाहे भी उसके प्रति आकर्षण बनाए रखने के लिए काफी थी।

डोरियन को अडतीसवा साल लगा। उस शाम को वैसील हारवर्ड उससे मिलने आया। रात काफी बीत चुकी थी। चित्रकार गुप्त रूप से कार्य करने के लिए अगले दिन चुपचाप पेरिस जानेवाला था। उसने सोचा कि डोरियन से मिलता चलू। चित्रकार ने डोरियन को बताया कि लोग उससे घृणा करते है—वह बहुत बदनाम हो गया है। डोरियन क्रुद्ध होकर उसे अपने एकात कमरे मे ले गया। चित्रकार ने चित्र की ओर देखा और वह काप उठा। चित्र के व्यक्ति का रूप भयकर था, घृणित था। उसको देखकर जुगुप्सा हो आती थी। वैसील ने विनय के स्वर मे कहा, "डोरियन, तुम अपने पापो के लिए प्रायश्चित्त करो। तुम परमात्मा से प्रार्थना करो। तुम्हारे लिए मुक्ति का अन्य कोई मार्ग नही।"

किन्तु यह सुनकर डोरियन पर एक आवेश-सा छा गया और उसने चित्रकार की छुरा भोककर हत्या कर दी। चित्रकार गुप्त रूप से आया था, इसलिए कोई नही जानता था कि डोरियन की उससे मुलाकात हुई है। डोरियन ने ऐलेन कैम्पबेल नामक व्यक्ति को बुलाया। डोरियन ने ही कैम्पबेल के जीवन को विनष्ट किया था। कैम्पबेल रसायन-शास्त्र का विद्यार्थी था। डोरियन ने उसको मजबूर किया कि वह चित्रकार के शरीर को विनष्ट कर दे। इसके बाद डोरियन लेडी तारवरो के यहा भोज पर गया। वहा लार्ड हेनरी भी उपस्थित था। दोनो मे बहुत दिलचस्प बातचीत हुई। लेकिन डोरियन भीतर ही भीतर घबराया हुआ था। उसके अन्दर भय की एक भावना उतर गई थी। उस रात डोरियन अफीमचियो के एक अड्डे पर पहुचा। वहा एक मल्लाह था। एक स्त्री ने डोरियन को 'जादूगर राजकुमार' कहकर पुकारा। मल्लाह ने इस बात को सुन लिया। मल्लाह का नाम जिम वैन था। वह सिबिल वैन (डोरियन की मृत प्रेमिका) का भाई था। क्रोध के कारण उसने डोरियन पर आक्रमण किया और शायद उसकी हत्या ही कर दी होती, किन्तु डोरियन अपने सुन्दर मुख के कारण लोगो की सहायता से जीवन प्राप्त कर सका और वहा से बचकर निकल भागा।

एक सप्ताह के बाद जबकि डोरियन देहात के एक मकान मे ठहरा हुआ था, उसको लगा कि वैन उस पर नज़र रखे हुए है। डोरियन को लगा कि उसका अन्त समीप है। वैन अब इस तरह के मार-पीट के कामो मे लग गया था। डोरियन के भाग्य से अकस्मात् एक दिन वैन एक शिकारी की गोली का शिकार हो गया। डोरियन ने सुख की सास ली।

इसी तरह कुछ सप्ताह और बीत गए। एक दिन लार्ड हेनरी बोटन से डोरियन

ने कहा, "अब मै अपने अच्छे कार्यो का प्रारम्भ कर रहा हू।"

"मुझे बताओ, वह क्या काम है ?"

"देहात की एक सुन्दर लडकी है। मैं उसको फसा नही रहा हू।"

लार्ड हसा और वैसील के गायब हो जाने के बारे मे बात करता रहा। लार्ड की पत्नी भी किसी व्यक्ति के साथ भाग चुकी थी। लार्ड कहने लगा कि वैसील भी अब अपना कला-कौशल लगभग खो चुका है। इसके बाद वे दोनो अलग हुए। डोरियन घर की ओर चल पडा।

अब उसमे अपने बचपन के निष्कलक जीवन की स्मृति जाग उठी। उसका मन करने लगा कि किसी प्रकार वह अपनी उस पवित्रता को फिर से प्राप्त कर सके जिसको उसने इतना कलकित कर दिया था। पर क्या अब यह सम्भव था ? वह चित्र ही उसकी असफलताओ का कारण था। लेकिन वह अपने भविष्य को बदल सकता था, क्योकि ऐलेन कैम्पबेल भी अब तक मर चुका था और डोरियन अब पूर्णत सुरक्षित था। अपने मन मे अपने भविष्य को सुधारने का निश्चय करने के उपरान्त, वह कमरे मे उस चित्र को देखने गया। उसने सोचा कि शायद उसमे कोई परिवर्तन आ गया हो, क्योकि उसने अपने मन को पवित्र करने का निश्चय कर लिया था। पर चित्र को देखकर उसके मुख से एक दु ख-भरा चीत्कार निकल गया। चित्र पर एक ढोग और चालाकी का भाव और आ गया था, और हाथ पर रक्त का निशान भी दिखाई देने लगा था। डोरियन ने एक चाकू उठा लिया और चित्र पर ज़ोर से दे मारा। एक भयानक चीत्कार हुआ और किसी के नीचे गिरने की आवाज़ आई। नौकर दौड पडे। उन्होने बलपूर्वक कमरे का दरवाज़ा खोला। उन्होने देखा कि उनके स्वामी का चित्र दीवार पर लटक रहा था। जैसा उन्होने अपने स्वामी को कभी देखा था वैसा ही सौन्दर्य उस चित्र मे अकित था—निष्कलक और निर्मल, अद्भुत सौन्दर्य, अनुपमेय यौवन, किन्तु फर्श पर एक मुर्दा पडा था। उस मुर्दे के चेहरे पर झुरिया पडी हुई थी। उसका रूप विकृत था, और वह अत्यन्त घृणित दिखाई देता था। वे उस व्यक्ति को नही पहचान सके, किन्तु बाद मे जब उन्होने उस मुर्दे की अगुलियो पर अगूठिया देखी, तब उन्हे मालूम पडा कि वह मुर्दा और कोई नही, स्वय उनका स्वामी डोरियन ग्रे था।

प्रस्तुत कथा में ऑस्कर वाइल्ड ने बहुत ही कलात्मक रूप से मनुष्य के अन्तस्थ और बाह्य का अनन्योश्रित सम्बन्ध प्रदर्शित किया है। व्यक्ति अपने स्वार्थ और वासनाओ के कारण अपने वास्तविक स्वरूप को नहीं देख पाता, किन्तु पाप अपनी छाया अवश्य डालता है। ऑस्कर वाइल्ड के इस उपन्यास में हमें इसका बडा भव्य चित्रण मिलता है। इस उपन्यास का डोरियन ग्रे एक ऐसा पात्र है, जो मनोविज्ञान और धर्म-भावना, दोनो का ही बडा सश्लिष्ट चित्र उपस्थित करता है।

जा क्रिस्तोफ[1]

रोम्या रोला फ्रेंच साहित्यकार रोम्या रोला का जन्म २९ जनवरी, १८६६ को फ्रास में क्लेमेसो नामक स्थान में हुआ था। आपने बचपन में ही सगीतज्ञ बनने का निश्चय कर लिया था। आपकी शिक्षा इखोल नोरमेल सुपीरियर में हुई और सगीत-सम्बन्ध अध्ययन पर ही आपको 'डॉक्टर ऑफ लेटर्स' की डिग्री मिली। आप वहीं 'कला के इतिहास' के प्रोफेसर बन गए। बाद में सोरबिन में 'सगीत के इतिहास' को पढाने लगे। इस बीच में आपको अनेक सम्मान प्राप्त हुए। १९१५ में आपको नोबल पुरस्कार मिला, क्योंकि आपके नाटक और उपन्यास बहुत उच्च कोटि के माने गए। प्रथम महायुद्ध में आप शातिवादी बन गए और स्विटजरलैंड चले गए। १९४० में जर्मनी ने जब फ्रास को पराजित किया तब आप वही रहते थे। ३० दिसम्बर, १९४४ को आपकी मृत्यु हुई। अपने जीवनकाल में आप बहुत ही विख्यात रहे। ससार के अत्यन्त प्रसिद्ध व्यक्तियों से आपका व्यक्तिगत परिचय भी रहा।

'जा क्रिस्तोफ' (१९१२) में आपने व्यक्ति-चित्रण के माध्यम से मानस की उन गहराइयों का पर्यवेक्षण किया है जिनको देखकर आश्चर्य होता है।

जा क्रिस्तोफ क्रोप्ट मेलकायर का पुत्र था। मेलकायर एक नशेबाज़ सगीतज्ञ था। उसका लूईशा नामक रसोईदारिन से सम्बन्ध हो गया था और इसके दुष्परिणाम-स्वरूप जा क्रिस्तोफ का जन्म हुआ।

रहिन नामक एक छोटे कस्बे मे जा मिचेल नामक व्यक्ति ने पचास वर्ष पहले अपना निवास-स्थान बनाया था। यह जा मिचेल जा क्रिस्तोफ का बाबा था। बहुत छुटपन मे ही क्रिस्तोफ की रुचि सगीत की ओर हो गई। मेलकायर नित्य ही अपने पुत्र को पियानो के पास ज़बरदस्ती बिठा लेता और रोज़ उससे अभ्यास करवाता। बच्चे को यह चीज़ पसन्द नही थी।

एक दिन जा मिचेल उसको ऑपेरा दिखाने ले गया, जहा जा क्रिस्तोफ पर इतना अधिक प्रभाव पडा कि उसने सगीतज्ञ बनने का निश्चय कर लिया।

कुछ समय बाद एक दिन जा मिचेल ने अपने पोते क्रिस्तोफ द्वारा अब तक लिखे सभी गीतो को सगृहीत कर लिया। क्रिस्तोफ खेलते वक्त इन गीतो को वैसे ही बना लिया करता था। बाबा ने इन गीतो के सग्रह का नाम रखा 'शैशव के सुख'। मेलकायर

---

१ Jean Christophe (Romain Rolland)

ने अपने पुत्र की प्रतिभा को पहचाना और शीघ्र ही एक सगीत-सभा का आयोजन किया। उसमे ग्राडड्यूक ऑफ लीयोफोल्ड को निमन्त्रित किया गया और जा क्रिम्तोफ नामक साढे सात वर्ष के सगीतज्ञ ने अपने बनाए गीतो को उस सभा मे गाया-बजाया। वे सब गीत ग्राडड्यूक को समर्पित कर दिए गए थे। क्रिस्तोफ को दरबार की कृपा प्राप्त हुई। उसको सरकार की ओर से वजीफा बाव दिया गया और महल मे बाजा बजाने का काम भी मिल गया।

इन्ही दिनो उसके बाबा की मृत्यु हो गई और आमदनी का एक जरिया खत्म हो गया। उसके पिता की नशेबाजी भी अब और बढ गई। परिणाम यह हुआ कि होब थियेटर के ऑरकेस्ट्रा मे से उसे निकाल दिया गया। शराब ने उसके पिता की नौकरी छुडवा दी थी, अत चौदह वर्ष की अवस्था मे ही वायलिन की केवल पहली धुन बजा पानेवाले क्रिस्तोफ को सारा परिवार सभालने का बोझ उठाना पडा।

क्रिस्तोफ के मामा का नाम गोटफ्रीड था। वह सीधा-सादा ईमानदार आदमी था। उसकी आमदनी के आधार पर क्रिस्तोफ ने एक जीवन-दर्शन बनाया और उसको अपनाने की चेष्टा की। अब क्रिस्तोफ इधर-उधर सगीत सिखाने भी जाया करता था। एक धनी परिवार मे एक लडकी को वह सगीत सिखाने लगा। वह उस लडकी से प्रेम करने लगा, किन्तु लडकी ने उसका मजाक उडा दिया। इस बात से जा क्रिम्तोफ को बहुत दु ख हुआ। कुछ ही दिन बाद उसके पिता की भी मृत्यु हो गई। इसका परिणाम यह हुआ कि क्रिस्तोफ का मन राग-रग से उचाट खा गया और वह नीरम विशुद्धतावादी-सा बन गया। किन्तु फिर भी उसका मन इतनी नीरसता से अपने-आपको बाध नही सका और कुछ दिनो मे ही जा क्रिस्तोफ सेबीन नामक एक विधवा युवती के प्रेम मे फस गया। किन्तु इससे पूर्व कि वह प्रेम परिपक्व होता, बढता, सेबीन मर गई। इस घटना ने क्रिस्तोफ को बहुत ही विरक्त कर दिया और वह देहात की ओर घूमने का शौकीन हो गया। दूर-दूर तक घूमता। ऐसे ही घूमते-घूमते एक बार उसकी एडा नामक एक लडकी से मुलाकात हुई। उन्होने होटल मे रान साथ-साथ गुजारी और क्रिस्तोफ उसके प्रेम मे पड गया। लेकिन जब उसे यह पता चला कि उसके छोटे भाई के साथ एडा का प्रेम-सम्बन्ध चल रहा है तो उसे बडा भारी धक्का लगा। अब वह पूरी शक्ति से अपने काम मे लग गया। जैसे-जैसे उसकी परिपक्वता बढती जा रही थी, उसकी परख, ईमानदारी, सचाई और चेतना मे पुष्टि आ रही थी। उसके सगीत-रचना के नियम जर्मन नियमो से टकराने लगे और एक स्थानीय पत्र मे उसने जमन पद्धति को बर्बर कहना प्रारम्भ किया। इसका परिणाम यह हुआ कि सम्पादको से उसका झगडा हो गया और वह एक साम्यवादी पत्र मे लिखने लगा। इस बात से ग्राडड्यूक भी क्रुद्ध हो गया और क्रिस्तोफ को राज्य की ओर से मिलनेवाली सहायता भी बन्द हो गई। किन्तु जा क्रिस्तोफ की विपत्ति का यही अन्त नही हुआ। कस्बे के लोग उसके विरुद्ध हो गए और धीरे-धीरे सारे मित्र भी उसे छोडने लगे। केवल बूढा पीटर शेटज, जो सगीत के इतिहास का रिटायर्ड प्रोफेसर था, उसकी बात को समझता था।

एक बार एक सराय मे एक किसान लडकी के साथ नृत्य करते समय क्रिस्तोफ

का कुछ शराबी सैनिको के साथ झगडा हो गया। उस समय वह बीस वर्ष का था। सैनिको से झगडा करने के अपराध मे जेल हो जाने का खतरा था, इसलिए क्रिस्तोफ को मजबूर होकर पेरिस भाग जाना पडा। पेरिस मे अपने जीवन-यापन के लिए वह सगीत की ट्यूशन करने लगा। वहा उसे बचपन का एक दोस्त मिल गया—सिलवे कोहन, जो पेरिस मे अपनी स्थिति बना चुका था। उसने क्रिस्तोफ को पेरिस के समाज मे घुसा दिया, किन्तु क्रिस्तोफ को वह सब पसन्द नही आया। उस समाज मे एक खोखलापन था, काहिली थी, नैतिक निर्वीर्यता थी, उद्देश्यहीनता, व्यर्थता अपने-आपको नष्ट कर देनेवाली अनावश्यक आलोचना थी, जैसे उस समाज मे एक सार्वजनिक तनाव था जिसने लोगो की सहजता को विनष्ट कर दिया था। ऐसे समाज मे प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए क्रिस्तोफ को इन सब बातो से समझौता करने की आवश्यकता थी, जो करना उसने स्वीकार नही किया। और इसलिए वह ट्यूशन से अपना काम नही चला पाया। क्योकि वह धीरे-धीरे सबसे दूर होता चला गया था। अब वह एक प्रकाशक के लिए सगीत-लिपि लिखने लगा।

इसी बीच वह बहुत बीमार पड गया। उसके पडोस मे कछ लोग रहते थे, जिनमे सीडोनी ने उसकी बहुत सेवा-सुश्रूषा की। यहा उसकी इकोल नोरमेल के एक तरुण लेक्चरर ओलिवियर ज्यानिन से मुलाकात हो गई। उसको पता चला कि ओलिवियर एतोनित का भाई था, जिससे कि उसकी जर्मनी मे मुलाकात हुई थी। यद्यपि जा क्रिस्तोफ का कोई दोस्त नही था, फिर भी उसका परिचित होने के कारण एतोनित का समाज मे सम्मान नष्ट हो गया था। उसे पता चला कि एतोनित को तपेदिक हो गई थी और अपने भाई को पढाने के प्रयत्न मे घोर परिश्रम करने और उस अवस्था मे अपनी देख-रेख न कर पा सकने के कारण उसकी मृत्यु हो गई थी।

एक दिन ओलिवियर ने क्रिस्तोफ से कहा कि अब तक वह असली फ्रास के सम्पर्क मे नही आया है—असली फ्रास की जनता के सम्पर्क मे। दोनो ही एक-दूसरे को नई-नई जानकारी जुटाते। दोनो एक-दूसरे की प्रकृति से अवगत हो गए थे। ओलिवियर स्वभाव का गम्भीर था, किन्तु शारीरिक रूप से वह स्वस्थ नही था। क्रिस्तोफ मे अपार शक्ति थी और उसकी आत्मा भी तूफानी थी। दोनो की जोडी ऐसी थी जैसे एक लगडा था और एक अधा।

कुछ दिन बाद कोलेथ नामक लडकी के पीछे दोनो मित्रो मे एक तनाव आ गया। क्रिस्तोफ कोलेथ को पहले प्यार करता था, और अब ओलिवियर उसका नया प्रेमी था। कोलेथ ने लूसियन लेवीकोर नामक एक व्यक्ति को बीच मे लिया। यह क्रिस्तोफ का पुराना शत्रु था और उसने एक प्रकार की उलझन पैदा कर दी थी। नासमझी मे क्रिस्तोफ बहुत क्रुद्ध हो गया उसने एक पार्टी मे लेवीकोर का अपमान कर दिया और परिणाम यह हुआ कि लेवीकोर ने द्वन्द्व के लिए उसे ललकारा। दोनो युद्ध के लिए तैयार हुए, किन्तु दोनो की गोलिया खाली चली गईं। इसका परिणाम यह हुआ कि क्रिस्तोफ और ओलिवियर का तनाव दूर हो गया और दोनो एक-दूसरे के मित्र हो गए।

इस बीच मे फ्रास और जर्मनी के बीच युद्ध की भयानक खबरे आने लगी। चारो

ओर एक आतक फैल गया। जब कुछ शाति हुई, क्रिस्तोफ रचनात्मक कार्य मे दसगुनी शक्ति के साथ लग गया। अब उसकी मगीत-सबधी रचनाए प्रकाशित होने लगी और फ्रेंच और जर्मन ऑरकेस्ट्रा उन्हे बजाने लगे। उसकी सफलता का पथ प्रशस्त हो चला था। लेकिन ऐसे समय दुर्भाग्य से उसे जमनी मे अपनी माता की मृत्युशय्या के निकट जाना पडा।

जेक्लीन लैंगियास एक खूबसूरत लडकी थी, जिसकी आदते बिगड चुकी थी और जो बहुत ही चपल थी। ओलिवियर उसके प्रेम मे पड गया और उसने उससे विवाह कर लिया। उसको फ्रास के कस्बे मे एक नौकरी मिल गई और अब वह अपनी पत्नी के साथ वही एक कस्बे मे बस गया। कुछ दिन बाद वे लोग पेरिस आ गए। लेकिन जेक्लीन ओलिवियर से ऊब गई। एक बच्चा भी पैदा हुआ, किन्तु दोनो पति-पत्नी उसके कारण भी एक नही हो सके। जेक्लीन ने क्रिस्तोफ से प्रेम करने की चेष्टा की, किन्तु उसका मन नही भरा, और वह एक बदचलन लेखक के साथ भाग गई। इस घटना का परिणाम यह हुआ कि क्रिस्तोफ और ओलिवियर, जिनमे कभी वैमनस्य हो गया था, जेक्लीन के कारण फिर से मित्र हो गए। वे दोनो पेरिस के समाज को समझना चाहते थे। ओलिवियर आदर्शवादी था और क्रिस्तोफ मे मानववादी चेतना थी। इन बातो ने उन्हे मज़दूर आन्दोलन की ओर आकर्षित किया। 'मई दिवस' के प्रदर्शन को देखने ओलिवियर भी गया। क्रिस्तोफ बडे जोश मे था। ओलिवियर वहा एक दगे मे मारा गया। क्रिस्तोफ का इसपर पुलिस से झगडा हो गया, किन्तु उसके मित्रो ने उसे बचा लिया उन्होने उसे देश की सीमा के पार पहुचा दिया। अब वह एक बार फिर अधिकारीवर्ग के सामने भगोडा हो गया—जैसा कि दस वर्ष पूर्व इधर से उधर भाग रहा था। डाक्टर ब्रोन ने उसे आश्रय दिया। वे जर्मन थे। उनकी पत्नी का नाम.अन्ना था। कुछ दिनो बाद क्रिस्तोफ और अन्ना मे प्रेम-व्यवहार प्रारम्भ हो गया। यद्यपि उन्होने बहुत चेष्टा की कि उस सम्बन्ध को तोड दे, किन्तु वे सफल नही हुए। ब्रोन को धोखा दिया गया है, यह सोच-सोचकर अन्ना को इस बात का इतना मानसिक दुख हुआ कि उसने अन्त मे आत्महत्या तक करने की चेष्टा की। परिणामस्वरूप, क्रिस्तोफ वहा से निकल भागा।

वह स्विटज़रलैंड के पर्वतीय इलाके मे पहुच गया। इस तरह वर्षो बीत गए—क्रिस्तोफ को विदेशो मे घूमते-फिरते। इटली मे रहते हुए क्रिस्तोफ को ग्रेजिया मिली। एक बार जवानी मे उससे पेरिस मे क्रिस्तोफ की मुलाकात हुई थी। ग्रेजिया ने आस्ट्रिया के एक काउण्ट से विवाह किया था। अपने पति के प्रभाव से उसने क्रिस्तोफ को उस समय सहायता दी थी, जबकि जनता क्रिस्तोफ के सगीत को पसन्द नही करती थी। उसके पति की द्वन्द्व-युद्ध मे मृत्यु हो गई थी और अब वह एक मा थी। क्रिस्तोफ और ग्रेजिया एक-दूसरे के प्रेम मे पड गए, किन्तु बाद मे जल्द ही दोनो अलग-अलग हो गए। क्रिस्तोफ पेरिस लौट आया। उधर ग्रेजिया का स्वास्थ्य नष्ट हो गया और वह मर गई।

अपने जीवन के ढलते वर्ष क्रिस्तोफ अपने पुराने मित्रो के साथ बिताने लगा। इन्ही दिनो क्रिस्तोफ के लिए भय का नया कारण उत्पन्न हो गया, और वह यह था कि जर्मनी और फ्रास मे युद्ध के बादल घिर रहे थे। परन्तु उसको निश्चय था कि यदि युद्ध

हुआ, तो भी वह दोनो देशो के बीच भाईचारे के सम्बन्ध को नष्ट नही कर पाएगा।

अन्तिम समय तक क्रिस्तोफ सगीत-रचना करता रहा। यहा तक कि जब मृत्यु निकट आ गई, तो भी उसने अपनी कलम उठाई और अपना बनाया हुआ गीत लिखा

"तू फिर से जन्म लेगा, विश्राम कर।
अब सब कुछ एक हो गया है।
रात और दिन की मुसकाने मिल गई है।
प्रेम और घृणा परस्पर समरसता मे परिणत हो चुके है।
मैं दो विशाल पखोवाले देवता का आराधन करूगा।
जीवन की जय, मृत्यु की जय! "

प्रस्तुत उपन्यास एक बहुत बडे कैनवैस (पृष्ठभूमि) पर लिखा गया है। इसमें मनुष्य की सत्य की खोज प्रमुख है, क्योकि इसमें घटना-क्रम इतना महत्त्व नहीं रखता, जितना चरित्र का विकास। कला, जनता, राजनीति तथा साहित्य और दर्शन आदि अनेक विषयो को प्रबुद्ध विचारक रोम्या रोला ने गहन मनो-विश्लेषण के साथ प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास के बारे में लेनिन ने कहा था कि 'यह हमारे युग का एक महान काव्य है, क्योकि इसमें कलाकार ने निष्पक्ष रूप से जीवन के सागोपाग रूपो को प्रस्तुत किया है।' यद्यपि देखने में ऐसा लगता है कि क्रिस्तोफ अपने एक के बाद एक होनेवाले प्रेम-सम्बन्धो के कारण विलासी है, किन्तु इसमें हमें यह भी ध्यान रखना पडेगा कि यह वातावरण फ्रास की सास्कृतिक विरासत पर आधारित है जो हमारी नैतिकता से कुछ अलग है। हमारी बहुत-सी मान्यताए ऐसी है जो अपना अधिक विकास कर चुकी है। यह मतभेद का भी विषय हो सकता है किन्तु रोला के उपन्यास की गहराई हमें अवश्य स्वीकार करनी पडती है।

सॉमरसेट मॉम

बरसात

[द रेन[1]]

मॉम, विलियम सामरसेट अंग्रेजी कथाकार विलियम सामरसेट माम का जन्म २५ जनवरी, १८७४ ई० में हुआ। आप पेरिस में जनमे, क्योंकि आपके पिता वहा ब्रिटिश राजदूतावास में काम करते थे। माता-पिता से आप बचपन में ही वंचित हो गए। आपने प्रारम्भिक जीवन कष्ट से बिताया। डाक्टरी पढी, परन्तु लग पडे साहित्य-सृजन में। भूखे मरे, पर साहित्य नही छोडा। आपने विवाह किया था, पर १६२७ में पति पत्नी में तलाक हो गया। फिर आपने विवाह नही किया। आपने उदीयमान लेखकों के लिए ही अपने समस्त धन की वसीयत कर दी। आपने अनेक उपन्यास लिखे है। 'द रेन' (बरसात) आपका एक सुप्रसिद्ध उपन्यास है।

डा० मैकफेल दो साल तक युद्ध मे रहने के पश्चात् जहाज़ द्वारा अपनी पत्नी के साथ सफर कर रहे थे। उन्हे इस बात का सतोष था कि वे कम से कम एक साल तक एपिया मे शान्तिपूर्वक रह सकेंगे। जहाज़ पर ही उनकी मुलाकात डेविडसन-परिवार से हो गई थी। डा० मैकफेल की उम्र चालीस के लगभग थी—लम्बा-पतला शरीर, और सूखकर सिकुडे हुए चेहरे पर एक भरे हुए घाव का निशान। वे बहुत धीरे-धीरे, ठहर-ठहरकर बोलते थे, जिससे उनके स्काच होने का अन्दाजा सहज मे ही लगाया जा सकता था।

मि० डेविडसन पादरी थे। कद लम्बा, बैठे हुए गाल, उभरी हुई हड्डिया और मुटाई पकडता हुआ चेहरा। आखे अन्दर धसी हुई और काली थी। हाथो की अगुलिया उनकी शक्ति का परिचय देती थी। उनका कार्य-क्षेत्र समोआ टापू के उत्तर के कुछ छोटे-छोटे टापुओ मे था जो एक-दूसरे से काफी दूर थे। अत उन्हे अधिकतर नाव से सफर करना पडता था। उनकी अनुपस्थिति मे श्रीमती डेविडसन ही मिशन का काम सभालती थी। श्रीमती डेविडसन का कद छोटा था। अपने भूरे बालो को वे बडी तरतीब से सवारे रखती थी तथा अपनी नीली आखो पर हमेशा सुनहरे फ्रेम का चश्मा लगाए रहती थी।

जहाज़ पर श्रीमती डेविडसन ने डा० मैकफेल को बताया कि जब उन लोगो ने वहा मिशन का कार्य आरम्भ किया था तो उन्हे बडी मुश्किलो का सामना करना पडा था। वहा के निवासियो मे बहुत अनैतिकता और बुराइया फैली हुई थी, जिन्हे वे लोग बुराइया और पाप नही समझते थे। उनके विवाह का ढग निहायत भद्दा और अश्लील था, जिसके

---

१. The Rain (William Somerset Maugham)

बारे मे श्रीमती डेविडसन ने श्रीमती मैकफेल को अलग से बताया, क्योंकि स्त्री-सुलभ लज्जा के कारण वे डाक्टर को वह सब बता नही सकती थी। उनके कार्य-क्षेत्र के किसी भी गाव मे एक भी सच्चरित्र लडकी का मिलना प्राय असम्भव था। मिस्टर डेविडसन ने इसके कारणो की खोज की तो वे इस परिणाम पर पहुचे कि इसका एकमात्र कारण वहा के निवासियो का वह भद्दा, अश्लील नृत्य है, जो वे अकसर करते रहते है। उन्होने वह बन्द करवा दिया। श्रीमती डेविडसन ने डा० मैकफेल को यह भी बताया कि अपने मिशन के कार्य मे मिस्टर डेविडसन इतने व्यस्त रहते है कि उनको अपने शरीर की तनिक भी परवाह नही रहती।

दूसरे दिन जहाज़ पैंगो बन्दरगाह के किनारे रुका। जब उनका सामान उतारा जा रहा था, डाक्टर गौर से वहा के निवासियो को देख रहे थे उनमे कई फीलपाव के रोगी थे। पुरुष और स्त्रिया सभी 'लावा लावा' (दक्षिणी टापुओ के निवासियो के घास के बने लहगे) वस्त्र-विशेष पहने हुए थे।

कुछ देर बाद मूसलाधार वर्षा शुरू हो गई। बारिश से बचने के लिए और लोगो के साथ डा० मैकफेल, उनकी पत्नी और श्रीमती डेविडसन भी भागते हुए एक बचाव के स्थल पर पहुचे, जहा कि जहाज़ो ने लगर डाल रखे थे। कुछ देर बाद मिस्टर डेविडसन भी वहा आ गए। मिम्टर डेविडसन ने उन्हे बताया कि टापू के निवासियो मे खसरे का रोग फैला हुआ है। जहाज़ का एक खलासी भी बीमार पड गया था, जिसे अस्पताल मे भर्ती करा दिया गया था।

इतने मे एपिया से तार आया कि उस जहाज़ को एपिया मे अभी नही आने दिया जाएगा। इस खबर से डा० मैकफेल भी बहुत चिन्तित हुए, क्योकि उन्हे एपिया जल्दी ही पहुचना था। मिस्टर डेविडसन भी मिशन के कार्य के लिए चिन्तित थे, क्योकि उन्हे एक साल से वहा से दूर रहना पड रहा था और मिशन का काम एक देशी पादरी के हाथ मे था।

मिस्टर डेविडसन को टापू के गवर्नर से मालूम हुआ था कि वहा एक व्यापारी किराये पर मकान देता है। अत वे बरसाती पहनकर उसके यहा पहुचे। मकान का मालिक हार्न वर्णशकर था। उसकी पत्नी वही की मूलनिवासिनी थी, जो अपने भूरे-भूरे बच्चो से घिरी रहती थी। हार्न ने उनको मकान दिला दिया। उन लोगो ने अपना सामान खोलना शुरू किया।

जब डा० मैकफेल अपना सामान सभालने नीचे अपने केबिन मे आए तो उन्हे मालूम हुआ कि मिस थाम्पसन नामक एक युवती ने भी, जो उन्हीके जहाज़ मे सफर कर रही थी, एक कमरा किराये पर लिया है जिसे उसने मकान-मालिक हार्न से खूब तर्क-वितर्क करके एक डालर रोज़ पर तय किया है। उसका कमरा नीचे की मजिल मे था। मिस थाम्पसन की अवस्था लगभग सत्ताईस वर्ष की थी, शरीर मोटा था परन्तु उसे असुन्दर नही कहा जा सकता था। उसने सफेद कपडे पहन रखे थे और सिर पर एक चौडी सफेद टोपी लगा रखी थी। मिस थाम्पसन के साथ स्वान नामक एक व्यक्ति और था जिसने मकान-मालिक हार्न से उसकी सिफारिश की थी।

किराये के मकान मे मिस थाम्पसन ने डाक्टर को भी शराब के लिए निमन्त्रित किया, परन्तु डाक्टर धन्यवाद देकर अपना काम करने लगे।

अगले दिन जब दूसरे लोग टहलकर लौटे तो मि० डेविडसन ने बताया कि उन्होने गवर्नर से काफी बहस की है पर शायद उन्हे पद्रह रोज तक और ठहरना पडे। मि० डेविडसन मिशन के कार्यो मे इस तरह हो रही देरी से काफी परेशान हो रहे थे। शाम को जब सब लोग मिलकर बैठे, तो पादरी डेविडसन ने अपने जीवन की विस्तृत व्याख्या की। उन्होने बतलाया कि किस प्रकार श्रीमती डेविडसन से उनकी प्रथम बार मुलाकात हुई और फिर किस प्रकार शादी। उन्होने अपने अब तक के उस सारे जीवन का भी वर्णन किया, जब से कि वे पति-पत्नी, एकसाथ रहकर मिशन का कार्य कर रहे थे। बातचीत के दौरान मे उन्हे ऊची आवाज मे एक बाजारू प्रेम के गाने के बोल सुनाई दिए।

नीचे के कमरे मे मिस थाम्पसन ग्रामोफोन बजा रही थी, और कुछ नाविक मदिरा पीकर नृत्य कर रहे थे और साथ ही अश्लील गाने भी गा रहे थे। मिस थाम्पसन भी उनका साथ दे रही थी। इस समय बरसात फिर शुरू हो गई थी। उस समय उन लोगो ने सोचा, शायद मिस थाम्पसन अपने मित्रो को दावत दे रही है।

उसके दूसरे रोज़ भी शाम को जब डा० मैकफेल और डेविडसन-परिवार खाना खा रहे थे, नीचे से फिर मिस थाम्पसन ने ग्रामोफोन बजाना आरम्भ कर दिया, और कुछ देर बाद मदमस्त नाविको के जोरदार कहकहे और भद्दी-भद्दी बाते उन्हे सुनाई दी। मिस थाम्पसन अपने मित्रो (नाविको) के साथ एक बाज़ारू गाना गा रही थी और साथ मे मदिरा-पान भी। मिस्टर डेविडसन को मिस थाम्पसन के प्रति शका होने लगी कि शायद वह वेश्या है, और इबोली से भागकर आई है, और यहा अपना पेशा करना चाहती है। मिस्टर डेविडसन ने इबोली मोहल्ले के बारे मे बताया कि वहा औरतो के शरीर का व्यापार बहुत भद्दे ढग से होता था, लेकिन उनके मिशन ने अब इस मोहल्ले को पूर्ण रूप से बदल दिया था।

मिस्टर डेविडसन नीचे मिस थाम्पसन के कमर मे गए, लेकिन वहा उसके प्रेमी नाविको ने मि० डेविडसन को बुरी तरह पीट-घसीटकर कमरे से बाहर निकाल दिया। उन लोगो ने मि० डेविडसन पर एक गिलास शराब भी उडेल दी। दूसरे रोज़ मिस थाम्पसन ने श्रीमती डेविडसन की भी दो बार मजाक बनाई। शाम को मि० डेविडसन फिर मिस थाम्पसन के कमरे मे गए और एक घटे तक उसको समझाते रहे। उस समय भी बरसात हो रही थी। यहा की बरसात की विशेषता है कि जब एक बार शुरू हो जाए तो रुकने का नाम नही, कई दिनो तक बरसती रहती है। मच्छरो के कारण लोगो का सोना भी हराम हो जाता है। साल मे तीन सौ इच तक वर्षा होती है।

मि० डेविडसन ने डाक्टर मैकफेल को बताया कि उन्होने मिस थाम्पसन को हर प्रकार से समझाया, पर वह नही समझी। अब उसकी आत्मा के उद्धार के लिए वे शक्ति का प्रयोग करेंगे। मि० डेविडसन ने मि० हार्न को भी उसको कमरा देने के लिए भला-बुरा कहा। मि० हार्न ने पादरी (मि० डेविडसन) से वायदा किया कि अब मिस थाम्पसन के पास कोई व्यक्ति नही आएगा।

उसके दूसरे रोज़ की शाम को मिस्टर डेविडसन अपने छात्र-जीवन की बाते डा० मैकफेल आदि को बता रहे थे और नीचे मिस थाम्पसन ग्रामोफोन बजा रही थी, परन्तु आज उसके पास और कोई व्यक्ति न था। मिस थाम्पसन रात को देर तक ग्रामोफोन बजाती रही और मिस्टर डेविडसन अपने कमरे मे एक रस प्राथना करते रहे।

दो-तीन रोज तक कोई विशेष बात नही हुई और इन दिनो मे मिस थाम्पसन ने अपने लिए कही और जगह देखने की कोशिश की, पर सफलता न मिली। वह रात को बहुत देर तक अकेली ग्रामोफोन बजाती रही। रविवार के दिन मिस्टर डेविडसन ने हार्न को कहा कि आज प्रभु के विश्राम और प्रार्थना का दिन है अत मिस थाम्पसन को कह दे कि ग्रामोफोन न बजाए। हार्न के वैसा कहने पर उस दिन मिस थाम्पसन ने ग्रामोफोन बन्द कर दिया।

इसी बीच मि० डेविडसन रोज़ गवर्नर से मिलते और मिस थाम्पसन के बारे मे बताते तथा उन्हे इस बात पर मजबूर करते कि वे मिस थाम्पसन को वहा से चली जाने की आज्ञा दे दे। पहले तो गवर्नर राज़ी नहीं हुआ, परन्तु बाद मे मि० डेविडसन ने उनपर चर्च की तरफ का ज़ोर देकर उनको मजबूर कर दिया। जब मिस थाम्पसन को इसका पता लगा तो उसने मिस्टर डेविडसन को बहुत गालिया दी और उनका अपमान किया। मि० डेविडसन ने उससे शान्तिपूर्वक बाते की पर वह झल्लाकर नीचे चली गई। गवर्नर ने उसे मगलवार को सेनफ्रासिस्को जानेवाले जहाज से चले जाने की आज्ञा दे दी थी। उसके दूसरे दिन हार्न डा० मैकफेल को मिस थाम्पसन के कमरे मे ले गया और बताया कि उसकी तबीयत खराब है। मिस थाम्पसन ने डाक्टर की सहायता चाही और कहा कि वह सेनफ्रासिस्को नही जाना चाहती। डा० मैकफेल ने कोशिश करने का वायदा किया। डा० मैकफेल ने मि० डेविडसन से इस बात पर वाद-विवाद भी किया और उसको पन्द्रह रोज़ और ठहर जाने की इजाज़त दिलानी चाही, परन्तु मि० डेविडसन राज़ी न हुए। डा० मैकफेल गवर्नर से भी मिले, परन्तु उन्हे वहा भी सफलता न मिली।

दूसरे दिन स्वय मिस थाम्पसन मिस्टर डेविडसन से मिली और रोती हुई उनसे प्रार्थना करने लगी। उसने मि० डेविडसन को बताया कि वह सेनफ्रासिस्को नही जाना चाहती क्योकि वहा उसके घरवाले रहते है। चूकि मिस थाम्पसन वेश्या-सुधार जेल से भागकर आई है, अत उसे तीन साल की सज़ा का भी डर था। उसने मिस्टर डेविडसन से वायदा किया कि अब वह अपना चरित्र सुधार लेगी। परन्तु मिस्टर डेविडसन ने उसे बताया कि उसे वहा जाना चाहिए और जो दण्ड उसे मिले उसे सहर्ष स्वीकार करना चाहिए, इसीसे उसकी आत्मा का उद्धार हो सकेगा। मिस थाम्पसन ने हर सम्भव प्रार्थना की, गिड-गिडाई, पर मिस्टर डेविडसन पर उसका कोई असर नही पडा। आखिर डाक्टर की सहायता से वह अपने कमरे मे आई और देर तक रोती रही। और मिस्टर डेविडसन बाइबिल निकालकर सबके साथ मिस थाम्पसन की आत्मा के उद्धार के लिए प्रार्थनाए करने लगे। काफी देर तक वे लोग प्रर्थना करते रहे। इस बीच डा० मैकफेल नीचे जाकर मिस थाम्पसन को देखने चले गए। वह अब भी आरामकुर्सी पर बैठी सिसक रही थी।

मिस थाम्पसन ने मिस्टर डेविडसन से मिलने की इच्छा प्रकट की। मिस्टर

डेविडसन के आने पर मिस थाम्पसन ने कहा कि वह बहुत बुरी है और अब पश्चात्ताप करना चाहती है। मिस्टर डेविडसन बहुत प्रसन्न हुए। डा० मैकफेल और हार्न को यह समाचार अपनी पत्नी को सुनाने को कहकर वे दरवाजा बन्द कर मिस थाम्पसन के साथ रात को दो बजे तक प्रार्थना करते रहे। बाद मे भी वे अपने कमरे मे रात-भर प्राथना करते रहे।

दूसरे दिन जब डा० मैकफेल मिस थाम्पसन को देखने गए तो मिस थाम्पसन ने बताया कि वह मि० डेविडसन से मिलना चाहती है। मिस्टर डेविडसन जब तक उसके पास रहते है उसे बहुत शान्ति मिलती है। अगले दो दिनो तक मिस्टर डेविडसन का अधिकतर समय मिस थाम्पसन के साथ प्रार्थना करने मे ही व्यतीत होता रहा। जब तक वे बिलकुल थककर चूर न हो जाते, वे प्रार्थना करते रहते। इन दिनो उनको विचित्र-विचित्र स्वप्न भी आते रहते। मिस्टर डेविडसन उस बदनसीब औरत के हृदय मे छिपी पाप की जडो को छाट-छाटकर फेकते जा रहे थे। वे उसके साथ बाइबिल पढते और प्रार्थना करते।

दिन धीरे-धीरे बीतते चले जा रहे थे। मिस थाम्पसन अस्त-व्यस्त रहती, कमरे मे टहलती, कपडो की उसे परवाह न रहती। उसको एकमात्र डेविडसन का ही सहारा था। वह उनके साथ बाइबिल पढती और प्रार्थना करनी रहती। मि० डेविडसन को वह एक क्षण भी अलग नही करना चाहती थी। ऐसे तमाम समय मे वर्षा अविराम गति से होती जा रही थी। ऐसा मालूम होता था मानो इन्द्र का खजाना खाली होने जा रहा है।

सभी मगलवार का इन्तज़ार कर रहे थे, जब सेनफ्रासिस्को जानेवाला जहाज़ जाएगा। सोमवार की शाम को गवर्नर के आफिस का एक क्लर्क आकर मिस थाम्पस न को दूसरे दिन ग्यारह बजे तक तैयार होने को कहकर चला गया। मि० डेविडसन भी उस समय उसके साथ थे। श्रीमती डेविडसन को उसके चले जाने की खुशी थी। सब लोग थक चुके थे, अत सोने चले गए।

सवेरे डाक्टर के कधे पर किसीने हाथ रखा कि वे चौंककर उठ बैठे, हार्न उनको जगा रहा था। हार्न ने डाक्टर को इशारे से अपने पीछे-पीछे आने को कहा। डाक्टर अपना बैग लेकर उसके पीछे-पीछे चल पडे। उन्होने समझा—शायद मिस थाम्पसन की तबीयत अधिक खराब है। मि० हार्न जो हमेशा जीन का सूट पहनता था आज 'लावा-लावा' पहन रखा था। दोनो नीचे उतरे, बाहर पाच देशी लोग खडे थे। वे सडक पर आ गए, सडक पार करके वे बन्दरगाह पर पहुचे। डाक्टर ने देखा, कुछ लोग तट पर किसी चीज़ को घेरकर खडे हैं। उन्होने डाक्टर को रास्ता दिया। डाक्टर ने देखा कि मिस्टर डेविडसन की लाश आधी पानी मे और आधी बाहर पडी थी। उनके बाये हाथ में एक उस्तरा था जिससे उन्होने अपना गला काट डाला था। लाश एकदम ठण्डी हो चुकी थी। डाक्टर ने पुलिस को इत्तला देने को कहा। हार्न ने डाक्टर से पूछा कि क्या मि० डेविडसन ने आत्महत्या की है और डाक्टर के 'हा' कहने पर उसने दो आदमियो को पुलिस बुलाने भेजा। पुलिस पहुची और डाक्टर श्रीमती डेविडसन को यह बुरी खबर

सुनाने चले गए। लाश को शवगृह मे रख दिया गया।

श्रीमती डेविडसन अकेली लाश के पास पहुची और थोडी देर मे ही खामोशी से बाहर आ गई। उन्होने सबको वापस चलने को कहा। उस समय उनका स्वर कठोर और सयत था। जब वे मकान के पास पहुची, उनको अचानक ग्रामोफोन का कर्कश स्वर सुनाई दिया जो एक अर्से से शान्त था। मिस थाम्पसन अपने दरवाजे पर खडी हस-हसकर एक नाविक से बाते कर रही थी। वह एकदम बदल गई थी। आज भी उसकी पोशाक वैसी ही थी जैसी पहनकर उसने शुरू मे मकान लिया था। आज उसने अपने-आपको विशेष प्रकार से सजा रखा था। जब वे लोग दरवाज़े मे घुसे तो उसने व्यग्यपूर्वक अट्टहास करते हुए श्रीमती डेविडसन के मुह पर थूक दिया। डाक्टर ने मिस थाम्पसन को कमरे मे धकेल दिया और ग्रामोफोन बन्द करने को कहा। मिस थाम्पसन ने कठोर स्वर मे डाक्टर से कहा कि वह उसकी इजाज़त लिए बिना कैसे उसके कमरे मे चला आया। डाक्टर ने इसका मतलब पूछा तो मिस थाम्पसन ने सयत होकर स्वर मे असीम घृणा और तिरस्कार भरकर कहा, "तुम पुरुष लोग, तुम सभी कुत्ते हो ! जलील घृणित कुत्ते !"

डाक्टर चकित रह गए और कुछ भी न समझ पाए।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने नारी के अनेक अतर्द्वन्द्वो का चित्रण किया है। हम दूसरो से कितनी अपेक्षा करते है, किन्तु स्वय अपनी मर्यादाओ के ढोग में डूबे रहते है। यह बात बहुत ही कम लोग समझ पाते है। उपन्यास में बडी तीखी चुभन है और समाज पर गहरा व्यग्य है।

डी० एच० लॉरेन्स .

पुत्र और प्रेमी

[सन्ज एण्ड लवस[1]]

लारेन्स, डी० एच अंग्रेजी साहित्यकार डी० एच० लॉरेन्स के पिता एक निर्धन व्यक्ति के पुत्र थे जो कोयले की खदान में काम करने लगे थे। आपका जन्म ११ सितम्बर, १८८५ को इस्टवुड नाटिंघम सायर, इंग्लैंड हुआ। आपकी शिक्षा नाटिंघम में ही हुई। आपको पढते समय स्कालरशिप मिली। आपने बहुत अच्छे नम्बरों से परीक्षा पास की और सारे इंग्लैंड में अध्यापन शिक्षण में आपको सबसे अधिक नम्बर मिले। आपके सीने में कुछ शारीरिक निर्बलता थी और आप कोई काम निरन्तर नहीं कर पाते थे। आपने फिर उपन्यास लिखना शरू किया। १९११ में आपको एक सशक्त और मौलिक प्रतिभा के रूप में स्वीकार कर लिया गया। आपकी कृतियों में मनो विश्लेषण का भास अधिक मिलता है। आपने इटली, न्यू मैक्सिको और आस्ट्रेलिया की यात्राए की। २ मार्च, १९३० को राबिरिया में नाइस के निकट वेन्स में आपकी मृत्यु हो गई।

'पुत्र और प्रेमी' (सन्ज एण्ड लवर्स) १९१५ इ० में प्रकाशित हुआ। यह आपका एक प्रसिद्ध उपन्यास है जो आपके 'लेडी चेटर्लीज लवर' के साथ गिना जाता है। अपने समय में आपपर अश्लीलता के दोष लगाए गए, किन्तु आप निर्भीक होकर लिखते रहे। आप कवि भी थे, अतएव आपमें भावुकता भी प्रचुर मात्रा में मिलती है।

गर्टरूड कोपर्ड एक दरिद्र इन्जीनियर की पुत्री थी, जिसने वाल्टर मोरेल नामक कोयले की खदान मे काम करनेवाले एक व्यक्ति से विवाह किया। उस समय वह २३ साल की थी और वाल्टर २७ वर्ष का था। वह बहुत बलिष्ठ था, उन्मुक्त भाव से हसता था और देखने मे सुन्दर था। किन्तु दुर्भाग्य से वह शिक्षित नही था। और दूसरी ओर गर्टरूड थी छोटी-सी, सुन्दर और गर्वीली। उसने बहुत कुछ पढ रखा था और बौद्धिक वातावरण मे पली हुई थी। वह बातचीत मे कुछ ऐसी बात चाहती थी जिसमे चातुर्य हो और जिसमे मानसिक विकास को कुछ न कुछ भोजन मिलता रहे। नाटिंघम के उत्तर की कोयले की खदानो के पास वेस्टवुड मे कोयले की खदानो मे काम करनेवाले लोगो की कुटियाए थी, छोटे-छोटे घर थे और इन्ही मे से एक मे यह दम्पती रहने लगा। छ महीने आनन्द से व्यतीत हो गए, किन्तु गर्टरूड ने, जो अब श्रीमती मारेल थी, क्रमश यह अनुभव किया कि उन दोनो मे कोई गम्भीर वार्तालाप नही होता था क्योकि पति शिक्षित नही

---

१ Sons And Lovers (D H Lawrence)

था। उसके सपने धीरे-धीरे मन ही मन चकनाचूर होने लगे। उसे कुछ खाली-खाली-सा लगता और सबसे बडी मुसीबत थी गरीबी, जिसके कारण अभाव सदैव बने रहते थे। मारेल सहज स्वभाव से फिर शराब पीने लग गया था। उसकी पत्नी अपने नैतिक आचरण मे जिन बातो को आवश्यक समझती थी, उसकी ओर उसका ध्यान नही था। उसकी वासना प्रकृतिमय थी और अपनी पत्नी द्वारा लगाये गए नैतिक बन्धनो को वह तनिक भी स्वीकार नही करता था। इस मनोमालिन्य का परिणाम यह हुआ कि कुछ ही दिन बाद वह चिडचिडा हो गया, उसके जीवन मे अनवरत सघर्ष चलने लगा और दाम्पत्य जीवन विषमय हो गया। गर्टरूड की महत्त्वाकाक्षाए नष्ट हो गई और अब उसका एकमात्र सहारा रह गया—उसके बच्चे। वह उनकी देखभाल मे अपना समय व्यतीत करने लगी, मानो पति के प्रति मानस मे जो अभाव हो गया था उसको पूर्ण करने के लिए उसने दूसरे सहारे की खोज की थी। उसके पहले पुत्र का नाम विलियम था। जब वाल्टर को अत्यधिक क्रोध आ जाता, तब वह विलियम की उससे रक्षा किया करती। वाल्टर उग्र स्वभाव का था और उसे क्रुद्ध होने मे देर नही लगती थी। वह वाल्टर को दैनन्दिन जीवन के अभावो से पीडित किया करती। अब वह उससे प्यार नही करती थी। उसके लिए वह मानो एक बाहरी आदमी था। विवाह के दो वर्ष बाद विलियम का जन्म हुआ था और उसके दो वर्ष के उपरान्त ऐनी पैदा हुई थी। पाच साल बीत जाने पर पोल पैदा हुआ था। पोल एक नाजुक बच्चा था। वह अल्हड नही था। उसकी प्रकृति गम्भीर थी। और गर्टरूड ने जैसे उसपर अपना सारा प्यार उडेल दिया था। इन्ही दिनो वाल्टर बीमार पड गया। इस बीमारी मे खिचाव कुछ दूर हुए और अब वह ठीक हुआ तो घर मे कुछ दिनो के लिए एक स्नेह की भावना उदित हुई और परिणामस्वरूप घर मे चौथी सतान का जन्म हुआ। इस पुत्र का नाम था आर्थर।

विलियम एक शार्टहैंड क्लर्क बन गया और रात्रि-पाठशाला मे पढाने लगा। उसकी सामाजिक महत्त्वाकाक्षा बढ गई। गर्टरूड को अपने इस पुत्र पर गर्व था, क्योकि उसे नाटिंघम मे एक स्थान मिल गया था। लेकिन वह यह पसन्द नही करती थी कि उसका पुत्र नृत्यो मे सम्मिलित होने के लिए जाए। जब विलियम २० वर्ष का हुआ तो उसे लन्दन जाना पडा क्योकि वहा उसे १२० पौंड सालाना की आमदनी बध गई थी। इससे मा को बहुत दु ख हुआ। वह मा थी और उसे ऐसा लगता जैसे विलियम उसके पास से दूर हो जाने पर सचमुच उससे अलग हो जाएगा और यह बात उसके हृदय मे एक वेदना-सी भर देती।

इस बीच एनी शिक्षिका बनने के लिए अध्ययन कर रही थी और पोल कस्बे के पादरी की सहायता से बीजगणित तथा फ्रेंच और जर्मन भाषाए पढ रहा था। ज्यो ज्यो वह बडा होता गया, वह बलिष्ठ होता गया। किन्तु उसका वर्ण पाडुर ही बना रहा और प्रकृति से वह अब भी गम्भीर था, चुप रहनेवाला। माता के प्रति वह सदैव बहुत चैतन्य रहता। उसकी आज्ञाओ का पालन करता। उसकी प्रकृति बडी भावुक थी। वह लोगो के बारे मे क्या सोचता है और लोग उसके बारे मे क्या सोचते है, इन दोनो बातो मे वह नितान्त जागरूक रहता। पिता की शराब पीने को आदत उसके लिए अरुचिकर थी

और पोल को वही वेदना होती जिसने गर्टरूड के जीवन को विषाक्त कर दिया था। पिता की प्रकृति का बर्बर रूप उसे पसन्द नही था। परिवार मे वाल्टर मोरेल का जैसे कोई स्थान नही था। जब कभी त्योहारो पर कोई आनन्द इत्यादि मनाया जाता तब अवश्य उसे लगता कि उसका भी अपना महत्त्व है, अन्यथा वह जैसे रहते हुए भी नही रहता था।

विलियम वकील के दफ्तर मे काम करने लगा और जब छुट्टियो मे घर आया तब वह मजदूरवर्ग का नही दिखता था। वह मध्यमवर्गीय नागरिक जैसा भद्रपुरुष दिखाई देता था। यह सच था कि वह अपने परिवार को भूला नही, लेकिन उसके साथ परेशानी यह थी कि लन्दन की ज़िन्दगी बडी खर्चीली थी और घर भेजने के लिए उसके पास पैसा नही बचता था।

उसका लिली वेस्टर्न नामक एक अभिमानिनी युवती से सम्बन्ध स्थापित हुआ। मोरेल परिवार पर इस युवती ने अपनी आज्ञा चलाना प्रारम्भ किया। अधिक दिन भी नही रही वह, मिलने आई थी वेस्टर वुड मे, अपने होनेवाले पति के साथ, उसके परिवार से। विलियम इस तुनकमिज़ाज और गर्वीली लडकी को अपनी पत्नी के रूप मे पाने की कल्पना से विचलित हो उठा, क्योकि इस घर मे वह ठीक नही बैठती, किन्तु इन्ही दिनो उसे निमोनिया हो गया और मृत्यु ने उसकी समस्याओ का अन्त कर दिया। गर्टरूड के जीवन मे मृत्यु ने एक रेखा खीच दी। महीनो तक वह इस दु ख से पीडित रही और तब उसने अपने जीवन का आधार पोल मे ढूढना शुरू किया।

मिस्टर जार्डन नाटिघम मे डाक्टरी औज़ार और ओषधि इत्यादि बनाने का काम किया करते थे। चार वर्ष की अवस्था मे पोल उनके यहा काम करने चला गया। रहता वह अब भी घर ही था और रोज़ रेल से उसके यहा काम करने जाता और लौट आता। उसे हफ्ते मे आठ शिलिग मिलते थे। और पैसे उसके पास नही बच पाते थे, लेकिन कार-खाना उसे अच्छा लगता था और उसे वहा काम करना पसन्द था।

मोरेल परिवार के मित्रो मे एक लिवियर परिवार भी था। लिवियर परिवार ने विली फार्म ले लिया था। वह उजाड-सा पडा था। उन लोगो ने उसको ले लिया और धरती को बोना प्रारम्भ किया। उनके परिवार मे कई अन्य लडके थे और पोल की उनसे मित्रना थी। वह उन लोगो से मिलने के लिए अकसर वहा जाया करता था। धीरे-धीरे अपने मित्रो की एक बहन मरियम पर उसका ध्यान केन्द्रित होने लगा। मरियम उससे एक साल छोटी थी, लजीली, सुन्दर, धार्मिक और रोमाटिक थी, जैसे उसे उसके रहस्य-वाद ने प्रभावित कर लिया था। पोल के प्रति वह इतनी अनुरक्त हो गई कि मन ही मन जैसे उसकी पूजा करने लग गई। उसके भाई बलिष्ठ और पौरुष के प्रतीक थे। पोल उनसे कम नही था, लेकिन वह उनसे अधिक चतुर था और कोमल विनम्रता उसमे उन लोगो से कही अधिक थी। उसकी माता अत्यन्त धार्मिक थी और पुत्री मे भी उसका प्रभाव था मानो वह निरन्तर एक आवेश मे रहती और पवित्र अनबन्ध जैसे उसे अनुप्राणित किए रहते। एक बार पोल बीमार पडा। दस महीने तक वह कुछ नही कर सका और इस समय मे मरियम से उसका सान्निध्य अधिक बना रहा। उसे मरियम का अध्ययन करने का काफी समय मिला। वे लोग सचमुच एक-दूसरे के प्रेम मे पड गए थे। किन्तु मरियम

कभी भी जैसे साधारण बनकर नही रहती थी। वह अपने को असाधारण बनाए रहने की चेष्टा करती और इसलिए कभी-कभी पोल को उससे घृणा होने लगती। पोल उसको गणित सिखाने लगा। उसने उसे फ्रेंच भाषा सिखाना प्रारम्भ किया और इस भाषा को सिखाने मे वे अपने प्रेम को मुखरित करने मे समर्थ हुए। लेकिन कभी-कभी ऐसा लगता जैसे वह केवल एक बाह्य अनुकृति-मात्र थी। इन्ही दिनो पोल चित्र बनाने लगा था और वह देखती थी, उसके चित्रो मे उसकी आत्मा थी। इसको वे चित्र पोल से भी अधिक आकर्षक दिखाई देते और इस प्रकार मरियम ने अपने प्रेम को ऐसा आध्यात्मिक आवरण दे दिया कि वह इन दोनो के शारीरिक सम्पर्को के बीच मे एक व्यवधान बन गया मानो उनका प्रेम केवल मानसिक था, उसका आश्रय कही देह मे नही था।

गर्टरूड को यह लडकी पसन्द नही थी जो कि उसके पुत्र पर पूरी तरह छा जाना चाहती थी। पोल अपनी वासनाओ का दमन करता था और इसमे उसपर बडी उदासी छा जाती थी, एक प्रकार की निराशा-सी व्याप्त हो जाती थी। गर्टरूड इस बात को चुपचाप देखती थी और उसे उस लडकी से चिढ होती थी।

किन्तु अब गर्टरूड के स्वास्थ्य ने जवाब देना प्रारम्भ कर दिया था। वह पोल को बराबर इस विषय मे डाटती कि वह अपना इतना अधिक समय मरियम के साथ नष्ट न करे। पोल कहता मुझे मरियम से कोई प्रेम नही, मैं तो केवल उससे बात करने का शौकीन हू, आदि। और इन विवादो मे पोल ने अचानक ही यह अनुभव किया मै अपनी माता के जीवन का आधार हू और मा मेरे लिए कितना बडा सहारा है। मरियम के साथ वह रहता तो वह अपने को अनिश्चय के जाल मे फसा हुआ पाता। लेकिन मा के पास जब वह रहता तो उसे लगता कि उसका जीवन अस्थिर नही है, उसे एक अटूट विश्राम मिल रहा है। यहा एक आधार है जिसमे समन्वय है, एक-दूसरे को समझने की ताकत है। यहा मान-मनोव्वल और गर्व की अहम्मन्यता नही। यहा समन्वय है, समर्पण है और एक-दूसरे के लिए मिट जाने की भावना है जो किसी अपेक्षा पर आधारित नही। इसमे कोई स्पर्द्धा नही। मा ने कहा—और कोई स्त्री हो तो मुझे कोई विरोध नही लेकिन मरियम नही क्योकि वह तो मुझसे मेरे पुत्र को बिलकुल छीन लेगी। उसके आ जाने पर मेरे लिए कोई स्थान नही रह जाएगा आदि। और जब पोल ने कहा कि वह मरियम से प्रेम नही करता तो उसकी माता ने उसे हर्षातिरेक से चूम लिया, जैसे चिरकाल से कष्टो मे पाला हुआ यह पुत्र अब भी उसी का था, वह उसके पास से छिना नही था। नारी का यह द्वन्द्व कितना विचित्र था! नई स्त्री सम्पूर्णता से पोल को जीत लेना चाहती थी और दूसरी ओर माता अपने समस्त अधिकारो को खोना नही चाहती थी।

मरियम को पोल पर पूर्ण विश्वास था। जब पोल ने उससे कहा कि वह उसे नही चाहता तो उसने इसपर विश्वास ही नही किया। उसने अपने-आपसे कहा पोल की आत्मा को मरियम की आवश्यकता है। धीरे-धीरे पोल का आना कम हो गया और उसने कहा कि वह अब उसके पास नही आएगा और अच्छा हो कि मरियम अपने लिए कोई दूसरा व्यक्ति चुन ले। मरियम ने जब ऐसा सुना तो उसकी इच्छा हुई कि वह जी-भरकर रो ले। और इसके बाद वह सचमुच बहुत कम आता। मरियम ने निश्चय किया

कि वह एक बार इस विषय मे पोल की परीक्षा ले। उसने श्रीमती क्लारा डोबेस नामक एक सुन्दर स्त्री से उसका परिचय कराया। क्लारा का पति एक लोहार था। वह उससे अलग रहती थी और नारी आन्दोलन मे स्त्रियो के अधिकारो के लिए लडने लगी थी। स्त्री को मत देने का अधिकार होना चाहिए—उन दिनो इसपर काफी सरगर्मी थी। क्लारा सुन्दरी थी। उसकी शारीरिक गठन बहुत आकर्षक थी। और मरियम उसके इस सौन्दर्य के प्रति अनुरक्ति को निचले स्तर की बात समझती थी। वह यह देखना चाहती थी कि पोल मे निचले स्तर की अनुरक्ति थी या उच्च स्तर की। उच्च स्तर मे वह शारीरिक आकर्षण को अधिक महत्त्व नही देती थी। पोल क्लारा से आजादी के साथ मजाक किया करता था। उसके साथ उसे सहज स्वाभाविकता का आनन्द मिलता था जो उसे मरियम के साथ कभी भी प्राप्त नही हुआ, लेकिन मरियम के आत्मविश्वास मे जसे वह यही पुष्टि दे रहा था कि वह अब भी उसीका था और क्लारा उसको नही जीत पाई थी।

पोल के जीवन मे और भी परिवर्तन आए। घटनाए उसके भावुक दैनन्दिन उतार-चढाव को प्रभावित करती रही।

ऐनी का विवाह हो गया। आर्थर सेना मे भरती हो गया और उसने भी विवाह कर लिया। पोल की चित्रकला बढती रही और उसे अब पुरस्कार भी मिलने लगे। एक दिन वाल्टर मोरेल के साथ खान मे दुर्घटना हो गई। उसका पैर कुचल गया और परिणामस्वरूप अपनी ढलती आयु मे वह कुछ लगडाने लगा।

पोल तेईस वर्ष का हो गया था। आज तक उसका किसी स्त्री से शारीरिक सम्पर्क नही हुआ था। उसे प्रेम का यह स्थूल अनुभव प्राप्त नही हो सका था। अब भी वह अपनी माता की सेवा मे रहता। यद्यपि मा बीमार थी, गरीब थी, किन्तु उसे इसका गर्व था कि उसका पुत्र उसके पास था और वह अपने सारे कष्टो को बडे साहस के साथ झेलती थी। उसके लिए उसका पुत्र ही सब कुछ था। अब भी वह यही सोचती थी कि पोल के जीवन का सुख नष्ट करनेवाली स्त्री मरियम ही थी और जब वह इस बात को याद करती तो पुत्र की वेदना उसके हृदय को व्याकुल कर देती। पोल बहुत दिन तक मरियम के पास नही गया। महीनो बीत गए। लेकिन जब वसन्त आया तो अब की बार वह स्वय उसकी परीक्षा लेने गया। आज तक वह उसे कभी चूम नही सका था। वह कभी अपने प्रेम की अभिव्यक्ति नही कर सका था। उसने उस व्यवधान को तोड दिया। एक दिन वन मे साझ घिरने लगी और उस ढलते अन्धकार मे मरियम ने पोल के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। किन्तु यह मानो मरियम की ओर से किया गया एक बलिदान था जिसमे उसे एक विचित्र-सा भय हुआ। भारी आवाज़ का यह बलिष्ठ युवक उसके लिए जैसे एक अजनबी था। पोल को लगा कि वह उसके आलिगन मे बद्ध एक विचित्र विरोध का अनुभव कर रहा था। और क्षण-भर उसे ऐसा लगा कि यह एक उन्मुक्त तन्मयता थी जिसमे कोई भी व्यवधान नही था। एक क्षण उसे ऐसा लगा जैसे वह उसे बहुत, बहुत अधिक प्यार करता था। किन्तु यह एक छाया थी। आई और चली गई और चले जाने के बाद फिर कभी लौटकर नही आई।

अब क्लारा उसके जीवन में प्रमुख हो गई। उसका स्नेह उसको अपनी ओर

खीचने लगा। जार्डन फैक्टरी मे पोल ने ही उसको काम दिलाया था। और इस बीच मे उसने उसके सम्पर्क मे आने पर उसके स्वभाव के अनेक रूप देखे। मरियम से आठ वर्ष के सम्पर्क एक दिन बातो ही बातो मे टूट गए। उन बातो मे स्नेह नही था, एक कटुता थी और अब वह क्लारा के साथ घूमने लगा और एक दिन वह उसे ट्रेण्ट के तीर पर ले गया। अपनी बरसाती को उसने वृक्षो के बीच की भीगी हुई धरती पर बिछा दिया। उसने अपने मुख को उसकी ग्रीवा पर रख दिया। सब कुछ प्रशान्त निस्तब्ध था। दोपहर ढलने लगी थी और वहा कोई नही था। तब क्लारा ने उसे अपने पति वेक्स्टर डोबेस के बारे मे बताया कि वह उसके साथ तीन वर्ष रहकर भी उसे कभी समझ नही पाई थी।

और क्लारा का गर्टरूड ने स्वागत किया, ऐसा जैसा उसने मरियम का कभी नही किया था। यह बात धीरे-धीरे वेक्स्टर तक पहुच गई। सराय मे वेक्स्टर ने इसपर एक दिन व्यग्य भी किया। पोल क्रुद्ध हो उठा और उसने सबके बीच मे अपने हाथ की शराब वेक्सटर के मह पर उछाल दी। वेक्स्टर लोहार था और उसने इसका प्रतिशोध लेने की प्रतिज्ञा की। क्लारा ने पोल से कहा बात बढ चुकी है। कौन जानता है वह किस समय क्या कर देगा, इसलिए तुम्हे अपनी रक्षा करने को अपने पास आयुध अवश्य रखना चाहिए। जब पोल ने अस्वीकार कर दिया तो वह क्रुद्ध हो गई। पोल और क्लारा के बीच का मुख्य सम्बन्ध शारीरिक था। और पोल ने उसके मुख से यह भी निकलवा लिया कि अब भी वह डोबेस को अपना समझती थी। क्लारा ने यह भी कहा कि वेक्स्टर ने अपना सब कुछ क्लारा को दे दिया था और वह जानती थी कि पोल वैसा सम्पूर्ण समर्पण उसके सामने कभी भी नही कर सकेगा।

एक रात डोबेस ने पोल को अकेले मे घेर लिया। पोल ने उससे यद्यपि लडाई लडी लेकिन फिर भी उसने उसकी कसकर पिटाई कर दी और इसके बाद पोल क्लारा मे दूर-दूर रहने लगा।

गर्टरूड ऐनी से मिलने के लिए शेफील्ड चली गई और वहा इतनी बीमार पड गई कि उसके बचने की उम्मीद नही रही। उसे भयानक कष्ट हो रहा था और उस पीडा मे ही उसे घर ले आया गया और उसकी मौत का इन्तज़ार किया जाने लगा। इस बीच पोल ने डोबेस से मित्रता कर ली और क्लारा को उससे मिला दिया। पोल अपनी माता का इस प्रकार धीरे-धीरे मरना न देख सका। गर्टरूड जीवन के यथार्थ को अब भी नही भूली थी और वह जान-बूझकर इसलिए बहुत कम खाती थी ताकि जल्दी से जल्दी मर सके। किन्तु इस प्रकार उसे मरते हुए देखना एक बहुत ही कठिन काम था। अन्त मे पोल और ऐनी ने उसे दवाई के रूप मे अधिक मात्रा मे अफीम दे दी। पोल उसकी शय्या के समीप घुटने टेककर बैठ गया। उसने माता के क्षीण शरीर से आलिगन किया और बुद-बुदाया 'मा, ओ मेरी मा, ओ मेरे जीवन के प्यार को आधार!' पोल को ऐसा लगा जैसे मा को वह कभी जाने नही देगा। मा के प्रति जो उसका प्यार था वह उसके लिए सर्वश्रेष्ठ था, सर्वोपरि था। आज यह उसका सम्बल था। महीनो और बीत गए। जैसे उसे एक धुधियाली-सी चौध घेरे रही।

अब पोल को पता नही था कि क्या करे। और तभी उसे नाटिंघम मे फिर

मरियम मिली। लेकिन अब भी वह केवल उसके सामने अपना बलिदान दे सकती थी। वह उसके साथ उसका भार उठाने मे असमर्थ थी।

मरियम का ध्यान छोडकर पोल फिर अपनी मा के बारे मे सोचने लगा। वही तो एक चीज़ थी जिसने उसे जीवन मे अभी तक बनाए रखा था। पर नही, अब वह सब-कुछ त्याग करना नही चाहता था। उसने उसके पास जाकर अपने-आपको खो देने की कल्पना को भी त्याग दिया और नगर की चकाचौध की ओर चल पडा।

इस उपन्यास में लारेन्स ने एक विचित्र मानसिक विश्लेषण की प्रक्रिया दिखाई है—जीवन के शाश्वत अनुबन्धो में पुरुष मा और प्रिया के बीच अपने क्षणो को व्यतीत करता है। दोनो ही मूल प्रवृत्तिया है—एक में उदारता का उत्तर-दायित्व मिलता है और दूसरी ओर रहती है वासना। इन दोनो सघर्ष में व्यक्ति एक समन्वय करता हुआ सा डोलता है। यह सत्य है कि मनुष्य के जीवन में एक शारीरिक भूख है किन्तु उससे भी बडी प्यास उसकी आत्मा की है और यह भी एक बडा सत्य है कि यदि दोनो का समन्वय-रेखा पर मिलात नहीं होता तो जीवन में एक सूनापन-सा आ जाता है लॉरेन्स ने इन्ही उतार-चढावो का वर्णन किया है और पोल के चरित्र के माध्यम से उसने इन समस्याओ को सुल-झाने की बजाए उजागर करने की चेष्टा की है।

सागर और मनुष्य

[द ओल्ड मैन एण्ड द सी[1]]

हेमिंग्वे, अर्नेस्ट अंग्रेजी साहित्यकार अर्नेस्ट हेमिंग्वे का जन्म २१ जुलाई, १८९८ को ओक पार्क, इलिनोइस में हुआ। आप कैन्सास के पत्र-सवाददाता हो गए और लिखना शुरू किया। प्रथम महायुद्ध में आप फ्रेंच सेना में एम्बुलेन्स ड्राइवर बन गए और बाद में आपने इटैलियन सेना में कार्य किया। युद्ध के बाद आप टॉरेंटो के पत्र 'स्टार' के लिए पूर्वी सवाददाता बनकर युद्ध का वर्णन लिखने लगे। फिर अमेरिकन एक्स-पैट्रियेट ग्रुप के सदस्य बनकर पेरिस में बस गए। १९२७ में आपका प्रसिद्ध उपन्यास 'ए फेयरवैल टु आर्म्स' निकला। १९३७ ३८ में स्पेन के गृहयुद्ध में सवाददाता बनकर गए। आपने एक पत्रकार तथा लेखिका मर्था डौलहॉर्न से १९४१ में विवाह किया। १९६१ में बदूक साफ करते समय गोली चल जाने से आपकी मृत्यु हो गइ। आपको नोबल पुरस्कार मिला था।

'सागर और मनुष्य' (द ओल्ड मैन एण्ड द सी) आपका एक महान उपन्यास है, यद्यपि यह बहुत बडा नहीं है।

उष्णप्रदेशीय समुद्र मे एक छोटी-सी नाव पर सैंटियागो नामक बूढा मछुआ मछली पकडा करता था। दुबला-पतला शरीर, गर्दन की पिछली ओर पडी झुर्रिया, गालो पर भूरे धब्बे और हाथो के ऊपर मछली पकडनेवाले रस्सो के चिह्नवाला सैंटियागो साहसी और आशावादी था, पराजय स्वीकार करना तो वह जानता ही न था। मैनोलिन नामक एक लडका उसके साथ मछली पकडा करता था। मैनोलिन को उसने पाच वर्ष की आयु से ही मछली पकडना सिखाया था, इसलिए वह उससे बहुत स्नेह करता था। एक बार चालीस दिन तक उनके हाथ एक भी मछली नही लगी तो मैनोलिन के मा-बाप ने उसे दूसरी नाव पर मछली पकडने भेज दिया। अब भी मैनोलिन रस्से, अकुश, भाले और पाल को घर तक लाने मे बूढे की सहायता करता था और उसे बीयर, काफी, भोजन की अन्य वस्तुए तथा चारे के लिए मछलिया दे जाता था। इसी तरह बूढा सैंटियागो भी लडके से प्रेम करता था। वह उसे अपने यौवन की साहसपूर्ण कहानिया सुनाया करता। दूसरी नाव पर जाने के पश्चात् मैनोलिन को तो मछलिया हाथ लगने लगी थी, परन्तु सैंटियागो चौरासी दिन

---

१ The Old Man And The Sea (Ernest Hemingway) —इस उपन्यास का हिन्दी अनुवाद हो चुका है 'सागर और मनुष्य', अनुवादक—आनन्दप्रकाश जैन, प्रकाशक—राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली।

तक खाली हाथ ही लौटता रहा। वह दूर-दूर तक समुद्र मे निकल जाता किन्तु भाग्य उसका साथ नही दे रहा था। दूसरे मछुओ ने बूढे सैंटियागो की हसी उडाना आरम्भ कर दिया था, फिर भी वह विचलित नही हुआ। मनोलिन को बूढे की शक्ति और मछली पकडने की कुशलता पर पूर्ण विश्वास था। दूसरो के द्वारा हसी उडाए जाने पर भी वह निराश नही हुआ था।

८५वे दिन जब बूढा सैंटियागो नाव लेकर चलने लगा तो मैनोलिन ने उसे एक बहुला और दो चारा मछलिया दी। सैंटियागो नाव खेता हुआ सुदूर समुद्र मे बढता ही चला गया। उसके आसपास कोई भी दूसरी नाव नही थी। इस प्रकार अकेले मे उसे उडन-मछलिया और छोटी चिडियाए बहुत अच्छी लगती थी। समुद्र की कल्पना वह स्त्री-रूप मे किया करता था। बन्दरगाह से वह मुह अधेरे ही चल दिया था और जब सूर्य की किरणे सागर के वक्ष पर चमकने लगी तो उसने काटो मे चारा मछली लगाई और उन्हे पानी मे छोड दिया। कुछ देर बाद अचानक ही उसकी दृष्टि पानी मे से उछलती हुई उडनमछलियो पर पडी और उसे उस स्थान पर धनिष्ठा मछली के होने का विश्वास हो गया। एक छोटे काटे मे बहुला मछली फसाकर सैंटियागो ने उसी स्थान पर छोड दी। कुछ देर बाद ही बूढे के काटे मे लगभग दस पौड की एक भारिका मछली फस गई, जिसे उसने नाव पर खीच लिया।

दोपहर के समय सौ धनुमान नीचे लटकते काटे मे एक बडा मच्छ फसा और उत्तर पश्चिम की ओर चल पडा। बूढा पहले तो रस्से को हाथ मे ही पकडे रहा फिर कमर पर थामे रखा। मच्छ इतना शक्तिशाली था कि नाव को खीच ले चला। बूढे ने मुडकर देखा परन्तु कही थल दिखाई नही देता था। प्यास लगने पर उसने घुटनो के बल झुककर बोतल मे से पानी पिया और नाव मे पडे हुए मस्तूल और पाल पर बैठ गया। उसकी पीठ और हाथ-पैरो पर पसीना बह रहा था तथा सिर पर फसा हुआ तिनके का टोप उसे काटने लगा था। इसी तरह कष्ट सहते सैंटियागो को रात हो गई और शरीर पर का पसीना ठड पाकर जम गया। रस्सा अब उसकी कमर पर गडने लगा था इसलिए काटे के बक्स को ढकनेवाले बोरिए को उसने गरदन से इस तरह बाधा कि पीठ पर लटक-कर वह रस्से के नीचे गद्दे का काम देने लगा। अब बूढा सैंटियागो नाव के धनुष के सहारे कुछ इस तरह झुक गया कि उसे पहले से कम कष्ट अनुभव होने लगा। इस समय रह-रहकर उसे मैनोलिन की याद आ रही थी, अकेलापन उसे खलने लगा था। सवेरा होने से कुछ पहले एक काटे को किसी मछली ने निगला, बूढे ने इस रस्से को ही काट दिया। वह इस बडे मच्छ को छोडना नही चाहता था जोकि नाव को खीचे चल रहा था। बूढे ने अधेरे मे ही शेष डोर को काटकर आपस मे बाध लिया। इसी बीच मच्छ ने एक जोर का झटका दिया जिसमे बूढा मुह के बल गिर पडा और उसकी एक आख के नीचे घाव हो गया। सुबह होते ही सैंटियागो ने रस्से का तनाव बढा लिया, जिससे मच्छ उछले और उसकी रीढ की थैलियो मे हवा भर जाए, क्योकि हवा भरने से फिर वह गहरे पानी मे नही जा सकता। कुछ देर मे ही बूढे ने देख लिया कि रस्सा अधिक नही ताना जा सकता अन्यथा टूट जाने का भय है। तभी एक छोटी-सी चिडिया नाव मे आ

बैठी और बूढा उससे बात करने लगा। उसी समय मच्छ ने अचानक ऐसा झटका दिया कि सैंटियागो को धनुष तक खीच लिया। बूढा यदि रस्से को थोडी ढील न देता तो उचट-कर पानी मे गिर पडता। इस झटके से बूढे का हाथ भी कट गया था जिसे उसने समुद्र के पानी मे भिगोकर ठीक करने की चेष्टा की। जब हाथ को सुखा लिया तो रस्से को बाये कधे पर रखे-रखे ही उसने चिपिटा मछली को चाकू से काटकर खाया। उसका बाया हाथ अब अकडने लगा था और रस्से पर कसी हुई उगलिया दोहरी होने लगी थी। बाये पैर का रस्से पर रखकर वह पीछे झुका और पीठ के सहारे लेट गया। अकडे हुए हाथ की उगलियो को पतलून से रगडकर उसने खोलना चाहा परन्तु उसे सफलता नही मिली। प्रात काल ही मच्छ पानी के ऊपर आया और फिर पानी के भीतर चला गया। बूढे ने देखा कि मच्छ का आकार नाव से भी दो फुट अधिक लम्बा था। हाथ के न खुलने से बूढा बडबडाने लगा था किन्तु दोपहर के समय वह भी खुल गया। अब मच्छ उत्तर-पूर्वी कोण की ओर घूमने लगा। बूढे की पीठ मे बहुत जोर से दर्द होने लगा था, किन्तु वह निराश नही हुआ। साहस जुटाने के लिए वह माता मैरी की प्रार्थना करने लगा। अब उसके मस्तिष्क मे पानी के भीतर तैरते मच्छ का चित्र बन रहा था और वह उसका शिकार करने की योजना बना रहा था। मच्छ समुद्र के गहरे पानी मे आगे बढता रहा और साथ-ही-साथ सैंटियागो की नाव भी चलती गई।

इसी प्रकार सूर्य डूब गया और रात्रि का अन्धकार समुद्र के वक्ष पर दूर-दूर तक फैल गया। सैंटियागो आत्मविश्वास जगाने के लिए अपने यौवन के साहसिक कार्यों को स्मरण करने लगा। वह जब युवक था तब कैसाब्लेका के एक मदिरालय मे उसने एक विशालकाय नीग्रो से पजा लडाने का खेल खेला था। पूरे एक दिन और एक रात तक खेल चलता रहा था, फिर भी अन्त मे उसने हब्शी पहलवान का पजा झुकाकर बाजी जीत ली थी। इस घटना के बाद से ही सब लोग उसे 'चैम्पियन' के नाम से पुकारने लगे थे। इस घटना का स्मरण करके बूढा सैंटियागो अपने-आपमे शक्ति अनुभव करने लगा। अधेरा होने से पूर्व बूढे ने छोटे काटे मे फसाकर एक धनिष्ठा मछली पकड ली थी। नाव पर खीचने के बाद जब मछली फडफडाने लगी तो उसने मूगरी के प्रहार से उसे ठडा कर दिया। काटा मछली से निकालकर उसने दूसरी बहुला का चारा लगाया और फिर समुद्र मे फेक दिया। अब बूढे ने रस्सा अपने दूसरे कन्धे पर बदल लिया था। सैंटियागो की शक्ति अब जवाब देने लगी थी, उसकी कमर मे दर्द था और अब अवसन्नता मे बदलने लगा था। कुछ आराम करने के विचार से वह नाव के धनुष की लकडी से सीना लगाकर पड गया। उसे हर समय यह आशका सता रही थी कि यदि मच्छ सारी रस्सी खीच ले गया तो क्या होगा। पहले तो उसने रस्से को नौका से बाधने की बात सोची फिर मच्छ द्वारा तोड देने के डर से उसने वैसा नही किया। बायें हाथ से रस्से को सभाले वह घुटने के बल चलते हुए नाव के पिछले भाग मे गया और दाये हाथ से चाकू खोलकर धनिष्ठा को चीर डाला। जब उसने मछली की अन्तडिया निकालकर समुद्र मे फेक दी तो उसे मछली का मेदा कुछ भारी लगा। मेदे को चीरने पर सैंटियागो को उसमे दो उडनमछलिया मिली जोकि अभी तक ताजी थी। धनिष्ठा की पाखे उतारकर बूढे ने अस्थिपजर सागर

मे फेक दिया और उडनमछलियो को धनिष्ठा की कटी हुई पट्टियो मे लपेटकर रख दिया। इतना कुछ करने के बाद उसे रस्से की चुभन अनुभव होने लगी और उसने रस्सा दूसरे कन्धे पर बदल लिया। शक्ति बनाए रखने को बूढा धनिष्ठा की कटी हुई फाको को खाने लगा। रह-रहकर उसे नमक तथा नीबू का अभाव खटक रहा था। फिर भी वह उसे कच्ची चबा गया।

इसके पश्चात् सैंटियागो ने सोने की आवश्यकता अनुभव की। रस्से को दाये हाथ से पकडकर वह धनुष की लकडी के सहारे पड गया, बाया हाथ उसने रस्से के ऊपर रख लिया जिससे सोते-सोते यदि दाया हाथ ढीला पडे तो बाया उसे जगा दे। सारे शरीर का बोझ रस्से पर डाले हुए ही वह औंधे मुह सो गया। नींद मे, जैसाकि उसका स्वभाव था, उसने सपना देखा। सपने मे उसे शेर दिखाई देते रहे, और नाव स्वाभाविक गति से मच्छ के साथ-साथ आगे बढती गई। अचानक रस्सा नाव से बाहर खिचने लगा और बूढे के दाये हाथ की मुट्ठी झटके से मुह पर लगी जिससे उसकी आख खुल गई। जैसे-तैसे बाये हाथ से उसने रस्सी पकडी और पीछे की ओर झुक गया। रस्से के खिचाव से उसकी पीठ और हाथ मे जलन होने लगी थी। धीरे-धीरे मच्छ ऊपर आया और उछलकर फिर पानी मे गिरा। इसी तरह मच्छ ने एक दर्जन से ऊपर उछाले लिए जिससे उसकी थैलियो मे हवा भर गई। बूढा सोच रहा था कि अब मच्छ चक्कर काटना प्रारम्भ कर देगा और तभी उसका शिकार करना होगा। मच्छ अब थककर धारा के साथ ही पूरब की ओर चलने लगा था। बूढे का बाया हाथ रस्से की रगड से कट गया था, उसे उसने नाव के एक तरफ से समुद्र मे डाले रखा। जब बूढे के मस्तिष्क मे धुधलका छाने लगा तो उसने शक्ति अर्जित करने के लिए धनिष्ठा के पेट से निकली उडनमछली खा ली। मच्छ ने भी चक्कर काटना प्रारम्भ कर दिया था। मच्छ चक्कर काटता ही रहा और बूढा पसीने से तर हो गया, उसकी आखो के आगे तिरमिरे आते रहे। दो बार तो उसे मूर्च्छा-सी आती प्रतीत हुई, जिससे वह चिंतित हो उठा।

सूर्योदय पहले ही हो चुका था और तिजारती हवा भी उठने लगी थी। धीरे-धीरे विशालकाय मच्छ, जिसके ऊपर कि जामनी धारिया पडी हुई थी, पानी के ऊपर आ गया। प्रत्येक चक्कर के बाद बूढा रस्सा कसता जा रहा था और सोच रहा था कि जैसे ही मच्छ नाव के निकट आए वह भाले से उसे मार दे। बूढे को एक बार फिर मूर्च्छा आने लगी, परन्तु पूरी शक्ति से उसने रस्सा खीचना जारी रखा। रह-रहकर सैंटियागो के सिर मे चक्कर आ रहे थे, वह कमज़ोरी महसूस कर रहा था। कई बार के प्रयत्न के पश्चात् उसने मच्छ को नाव के निकट खीच लिया और मच्छ एक तरफ से उलट गया। पूरी शक्ति लगाकर बूढे सैंटियागो ने भाला मच्छ की पाख मे घोप दिया। मच्छ छपाके के साथ बूढे की नाव पर छीटे मारता हुआ जल मे गिर गया और बूढे को फिर मूर्च्छा ने दबाना प्रारम्भ किया। उसे स्पष्ट रूप से दिखाई देना भी कठिन हो गया। आत्मविश्वास के साथ सैंटियागो ने अपने-आपको सभाला। मच्छ अब पलट गया था और उसका पेट आकाश की ओर था। घाव से रक्त बह-बहकर पानी मे फैल गया था। बूढे ने रस्से को खीचकर मच्छ को अपनी ओर खीच लिया और उसे नाव के साथ बाध दिया। मच्छ को

देखकर बूढे ने मन ही मन हिसाब लगाया कि उसका वजन डेढ हजार पौड के लगभग होगा। मस्तूल खडा करके उसने पाल उठा दिया और नाव के पिछले भाग मे लेटा हुआ दक्षिण-पश्चिम की ओर चल पडा। चकरी से वह नाव चलाता जा रहा था।

अब बूढे सैंटियागो को ग्राह मच्छो के आने का भय था। यदि वे दल बाधकर आए तो मच्छ का सफाया कर जाएगे, यही सोचकर बूढा चिंतित हो उठा। समुद्र मे दूर-दूर तक बूढे की नाव से बधे मच्छ का रक्त फैल गया था जिसकी गन्ध पाकर एक माको ग्राह बूढे की नाव की ओर बढा आ रहा था। बूढे ने मच्छ की रक्षा के लिए भाला तैयार कर लिया। अब तक बूढा फिर से स्वस्थ हो चुका था। ग्राह ने नाव के पीछे से आकर मच्छ के पिछले भाग मे मुह मारा। जैसे ही बूढे ने मच्छ की खाल फटने का शोर सुना वह क्रोधित हो उठा और ग्राह के मस्तक मे उसने भाला घोप दिया। ग्राह तडपकर मर गया और भाले को साथ लिए समुद्रतल मे चला गया। बूढे को यह आशका होने लगी थी कि इतना अच्छा मच्छ वह बन्दरगाह तक कठिनाई से ही सुरक्षित ले जा सकेगा। ग्राह के द्वारा मच्छ का मास कटने से भी बूढा चिंतित हो उठा।

सब कुछ होने पर भी बूढे सैंटियागो के दुर्दमनीय आत्मविश्वास को देखकर मानव-प्रकृति का एक उज्ज्वल पक्ष सामने आता है। "मनुष्य का निर्माण पराजय स्वीकार करने के लिए नही हुआ। मनुष्य नष्ट किया जा सकता है, परन्तु हराया नही जा सकता।"—बूढे सैंटियागो के ये शब्द मानव की अपराजेय भावनाओ का प्रतीक है।

जब से ग्राह ने मच्छ का मास काटा और वह बूढे के भाले को लेकर समुद्रतल मे बैठ गया, तभी से उसे मच्छ की रक्षा की चिंता हो उठी। अब उसके पास ग्राहो का सामना करने के लिए कोई शस्त्र न था। साहसी बूढे ने अन्त मे एक उपाय खोज ही लिया। उसने एक चप्पू के एक डडे मे चाकू बाधकर भाला जैसा बना लिया। जिस स्थान से ग्राह मच्छ का मास नोच ले गया था वही से सैंटियागो ने थोडा-सा मास नोचा और चबाने लगा। उसे मास मधुर लगा और वह कई टुकडे खा गया। दो घटे तक बूढा आराम से नाव मे चलता रहा, इसके पश्चात् दो भयकर ग्राहो ने मच्छ पर आक्रमण किया। एक ग्राह की आख मे बूढे ने चाकू घुसेड दिया और फिर मस्तक मे घोपा जिससे मच्छ को छोडकर वह चक्कर खाता हुआ समुद्र मे खो गया। दूसरा ग्राह नाव के नीचे था, परन्तु बूढे ने नाव को एक ओर झुकाकर उसके सिर मे चाकू घोप दिया। ग्राह पर इसका जब कोई प्रभाव नही हुआ तो बूढे ने उसकी रीढ व सिर के बीचवाले स्थान मे ज़ोर से चाकू घुसेडा, जिससे ग्राह के कोमल तन्तु कट गए और वह मच्छ को छोडकर पानी मे बैठ गया।

कुछ ही देर बीती होगी कि फिर एक ग्राह ने मच्छ पर चोट की। बूढे सैंटियागो ने ग्राह के सिर मे चाकू घोपा तो उसने पीछे की ओर झटका मारा और चाकू का फलका टूट गया। ग्राह तो धीरे-धीरे पानी मे डूब गया किन्तु बूढे सैंटियागो के पास आगे आने-वाले ग्राहो से लडने के लिए छोटी मूगरी, चकरी का डडा तथा दो चप्पुओ के अतिरिक्त कुछ नही रह गया था। अकुश तो था परन्तु उससे लडने मे कोई लाभ नही था। इतने ग्राहो से लडकर बूढा अब थक भी गया था। उसने सूर्यास्त के समय फिर दो ग्राहो को झपटते देखा। जब मच्छ के शरीर मे ग्राहो ने दात गडाए तो बूढे ने ग्राहो के जबडो पर

मूगरी बरसाना प्रारम्भ कर दिया। एक ग्राह तो पहली चोट मे ही मर गया परन्तु दूसरा मच्छ का मास नोचता रहा। बूढे ने उसके मस्तक के नीचे की हड्डी मूगरी की चोट से तोड दी जिससे वह भी चक्कर लगाता हुआ जल मे बैठ गया। जैसे-जैसे अधेरा बढता जा रहा था, बूढा चिन्तित होता जा रहा था। मच्छ का केवल आधा भाग ही अब बच रहा था। लगभग दस बजे उसे नगर का प्रकाश दिखाई पडने लगा, उसी ओर उसने नाव खेना आरम्भ कर दिया। उसके शरीर मे अब पीडा होने लगी थी, शरीर कडा-सा पड गया था और घावो मे जलन मचने लगी थी। आधी रात के समय ग्राह दल बाधकर मच्छ पर टूट पडे। बूढे ने प्राणो का मोह छोडकर ग्राहो पर मूगरी बरसाई जिससे बहुत-सो के जबडे टूट गए, परन्तु किसी ग्राह के पकड लेने से मूगरी उसके हाथ से छूट गई। झल्लाकर बूढे ने नाव चलाने का डडा उखाड लिया और ग्राहो को मारने लगा। ग्राहो के द्वारा नोचा हुआ मच्छ का मास समुद्र मे छितरा रहा था। एक बार तो ग्राह लौटकर चले गए किन्तु कुछ देर पश्चात् ही एक ग्राह मच्छ के मस्तक पर झपटा। ग्राह के दात मच्छ के मस्तक मे घुस गए तो बूढे ने उसे डडा मारना आरम्भ कर दिया। मारते-मारते डडा टूट गया तो बूढा टूटे हुए डडे से ही उसे मारता रहा। टूटा हुआ डडा बूढे ने ग्राह के शरीर मे घुसेड दिया जिससे वह चक्कर लगाता हुआ उलट गया। इस लडाई मे बूढे सेंटियागो ने अपनी पूर्ण शक्ति लगा दी थी। उसके मुह मे रक्त आ गया था और सास कठिनाई से चल रही थी। ग्राहो ने मच्छ का पूरा मास नोच लिया था और बूढा समझ गया था कि अब वह पराजित हो चुका है। उसने बोरा अपने कन्धो पर डाल दिया और नाव खेने लगा। अब वह अपने बिस्तर के बारे मे सोचने लगा और बन्दरगाह की ओर बढ चला। ग्राहो का दल फिर से मच्छ के ढाचे पर टूट रहा था परन्तु बूढा अब निश्चित होकर बैठा था। वह जानता था कि बचाने को अब कुछ रह ही नही गया था।

जब सैंटियागो की नाव बन्दरगाह मे पहुची तो वहा सन्नाटा छाया हुआ था। सब मछुए उस समय तक अपने-अपने घरो मे सोए हुए थे। बूढे ने मस्तूल को उखाडकर पाल उससे लपेटा और कधे पर रखकर अपनी झोपडी की ओर चलने लगा। नाव उसने वही एक चट्टान से बाध दी थी। जब मुडकर उसने नाव के साथ बधे विशाल मच्छ के अस्थि-पजर को देखा तो उसकी शक्ति क्षीण होने लगी। अपनी झोपडी तक पहुचने मे उसे रास्ते मे पाच बार बैठना पडा। एक बार तो वह गिर ही पडा था। झोपडी मे पहुचकर उसने मस्तूल दीवार के सहारे रखा और बोतल से पानी पीकर बिस्तर पर लेट गया। कम्बल से उसने अपना शरीर ढक लिया।

सवेरा होते ही मैनोलिन उसकी झोपडी मे आया और बूढे के लिए कॉफी ले आया। घाट पर बहुत-से मछुए बूढे की नाव के पास खडे थे। एक मछुए ने रस्से से नापकर बताया कि मच्छ की लम्बाई अट्ठारह फुट थी। सभी इसपर आश्चर्य कर रहे थे। इतना बडा मच्छ कभी किसीने नही पकडा था।

जब मैनोलिन ने बूढे को कॉफी का गिलास पकडाया तो सैंटियागो ने कहा कि उसे मच्छो ने हरा दिया था। उसने अपने भाग्य को कोसा। अन्त मे, मैनोलिन के यह कहने पर कि वह अब उसीके साथ मछली पकडेगा और उसने अब कुछ पैसा जोड लिया है, बूढा

अपनी पराजय की बात भूल गया और नये चाकू, भाले और दूसरी अन्य वस्तुए खरीद-कर मछली पकडने की योजना बनाने लगा।

मैनोलिन बूढे के लिए भोजन और अखबार लेने चला गया। साथ ही उसके हाथो के लिए दवा लाने को भी कह गया। बूढा फिर अपनी झोपडी मे सो गया और शेरो के सपने देखने लगा।

इस उपन्यास में समुद्र की भयकरता की पृष्ठभूमि पर मनुष्य के अदम्य जीवन का जो चित्रण किया गया है, वह वास्तव में बहुत ही प्रभावोत्पादक है। लेखक ने जीवन के सघर्ष को बहुत ही निकटता से देखा है।

डॉ० ज़िवागो[1]

पास्नेरनाक, बोरिस लियो निदोविच रूसी लेखक बोरिम लियो निदोविच पास्तेरनाक का जन्म मास्को में १८९० में हुआ। १९६० मे आपकी कैंसर रोग से मृत्यु हो गई। आप सगीत में बहुत रुचि लेते थे। आपने मास्को विश्वविद्यालय में अध्ययन किया। प्रथम विश्वयद्ध के समय आप प्रतीकवादी तथा भविष्यवादी कवियों में थे। द्वितीय विश्वयुद्ध में आपने यूराल के एक कारखाने में काम किया। आपकी कविताए अत्यन्त प्रसिद्ध है। आपके शेक्सपीयर के अनुवादों को सर्वसम्मति से ख्याति मिली है।
'डॉ जिवागो' आपका एक बहुचर्चित उपन्यास है। इसपर आपको नोबल पुरस्कार मिला। इस उपन्यास में राजनीति के विषय मे आपके विचार बहुत विवादास्पद रहे। रूसीयत में आपका उपन्यास कलात्मक रूप से घटिया था और पश्चिमीयन ने इस उपन्यास को महाकृति कहा। यह एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है।

यूरा का पिता जिवागो प्रसिद्ध लक्ष्मीपति था। वह साइबेरिया मे वेश्यागमन और मदिरापान मे व्यस्त रहता था। यूरा की मा मारया निकोलायेवना को उसने छोड रखा था, परन्तु यह बात उसे मा की मृत्यु के पश्चात् ही मालूम हुई। जिस समय मारया निकोलायेवना की मृत्यु हुई, यूरा की आयु केवल दस वर्ष थी। उसकी मा वैसे तो प्रारम्भ से ही दुर्बल थी किन्तु बाद मे तो उसे क्षयरोग हो गया था। प्राय अपना इलाज कराने वह दक्षिणी फ्रास अथवा उत्तरी इटली मे जाया करती थी। जब भी वह यात्रा पर जाती यूरा को किसी परिचित के पास छोड जाती। वह भी अपरिचित वातावरण मे रहने का आदी हो गया था। यूरा के पिता जिवागो ने रेल से कूदकर आत्महत्या कर ली थी। ज़िवागो के साथ उसका वकील भी यात्रा कर रहा था, किन्तु वह उसे आत्महत्या करने से रोक नही सका। यूरा के मामा निकोलाय निकोलायविच उसे बहुत प्रेम कर करते थे। वे स्वतन्त्र विचारो के व्यक्ति थे। बाद मे तो उन्हे अपनी पुस्तको के लिए काफी ख्याति मिली थी। मारया निकोलायेवना की मृत्यु के दो वर्ष पश्चात् सन् १९०३ की गर्मियो मे यूरा अपने मामा के साथ कोलोग्रीवोव की जागीर डुप्ल्याका मे चला गया। कोल्या मामा प्रचलित स्कूली पुस्तको के लेखक इवान इवानोविच वोस्कोबोयनिकोव से मिलने गए। वहा पहुचकर कोल्या मामा और इवान तो अपने काम मे लग गए और यूरा इधर-उधर घूमता रहता। निकी डुडरोव के साथ खेला करता। उसके मामा भी उसे काम के समय

१ Dr Zivago (Boris Pasternak)—हिन्दी में इस उपन्यास का अनुवाद प्रकाशित हो चुका है 'डॉ० जिवागो'।

खेलने भेज देते। एक दिन उसने मधुमक्खियो की ध्वनि तथा चिडियो की चहचहाहट सुनकर अनुभव किया कि मा पुकार रही है। भावुक यूरा इस भ्रम से भयभीत हो उठा। निराश होकर उसने घुटनो के बल बैठकर प्रार्थना की। वह अचेत होकर गिर पडा।

यूरा मामा कोल्या से बहुत प्रभावित था। उनके विचारो ने आगे चलकर उसे प्रेरणा भी दी। बाद मे यूरा रसायन शास्त्र के प्रोफेसर एलेक्ज़ेडर एलेक्जेडरोविच के पास रहने लगा था, क्योकि उसके मामा तो एक स्थान से दूसरे स्थान पर चक्कर लगाते रहते थे। एलेक्जेडर एलेक्जेडरोविच की लडकी टोन्या और यूरा का कमरा मकान के ऊपरी भाग मे था। दोनो साथ-साथ बडे हुए। आगे चलकर टोन्या से यूरा का विवाह भी हो गया।

बेल्जियम के एक इजीनियर की रूसी नागरिकता-प्राप्त पत्नी, जो स्वय फ्रासिसी थी, अपने दो बच्चो (रेडिओन और लारिसा) के साथ मास्को मे आकर बस गई थी। उसका नाम अमालिया कार्लोवना गुइशर था। उसकी आयु ३५ वर्ष थी और वह सुन्दर भी थी। श्रीमती गुइशर के उस समय मुख्य सहायक वकील कोमारोवस्की ही थे। उसीके साथ पत्र-व्यवहार करके श्रीमती गुइशर मास्को चली आई थी। उसने माटोग्रेवो होटल मे उसके रहने की व्यस्था कर दी थी। बाद मे ट्रायम्फल आर्क के निकट स्थित कपडे सिलाई करने के कारखाने को उसने खरीद लिया था और कारखाने के समीप ही तीन कमरोवाले एकफ्लैट मे आकर रहने लगी थी। होटल मे वह केवल एक महीने तक ही रही।

कोमारोवस्की श्रीमती गुइशर से प्राय मिलने आया करता था। उसका स्वभाव अच्छा न था। वह श्रीमती गुइशर के घर आते समय मनचली औरतो के साथ अश्लील मजाक करता हुआ आता था। लारा की आयु उन दिनो सोलह वर्ष की थी, किन्तु अच्छे स्वास्थ्य के कारण वह नवयुवती लगती थी। कोमारोवस्की ने कुछ दिन मे ही लारा को अपने प्रेम मे फसा लिया था। उसने उनपर काफी धन भी खर्च किया। लारा उसके साथ थियेटरो मे जाती और वह उसके लिए कुछ भी करने को उत्सुक रहता था। कोमारोवस्की की आयु लारा के पिता के समान थी। वह धीरे-धीरे उससे घृणा करने लगी थी। वह सोचा करती थी कि उसने कोमारोवस्की को आत्मसमर्पण कैसे कर दिया। कोमारोवस्की जब कहता कि वह उससे विवाह कर लेगा तो वह रोने लगती। अन्त मे लारा ने सोचा कि कोमारोवस्की की सहायता पर उसकी मा का अवलम्बित होना ही उसकी दुर्बलता का कारण है। वह किसी भी प्रकार उससे छुटकारा पाने की बात सोचने लगी। जिन दिनो हडताल के कारण कोमारोवस्की उसके घर नही आ सका वह बहुत प्रसन्न रही।

लारा का घर विद्रोह-क्षेत्र मे तो था ही। रेडक्रास-पोस्ट के निकट का स्थान ऐसा था जहा कि विद्रोही एकत्र होते थे। विद्रोही लोगो मे लारा दो लडको को जानती थी, एक तो निकी डुडरोव को और दूसरे पाशा आन्तिपोव को। निकी डुडरोव लारा की सहेली नाथा का मित्र था और पाशा को उसने श्रीमती तिमिरजिना के यहा देखा था। लारा पाशा की सरलता को बहुत पसन्द करती थी। इस समय उन्हे विद्रोहियो के साथ देखकर भी लारा उन्हे भले लडके मानती थी। हडताल-सचालन के अपराध मे जब से पाशा का पिता गिरफ्तार हुआ, तभी से वह श्रीमती तिमिरजिना के यहा रहने लगा था। पहले कुछ

दिन तक वह अपनी बहरी चाची के पास अवश्य रहा था। पाशा अब हाई स्कूल मे पढता था।

जब सुरक्षा के लिए बनाई गई बाढ तोप से उडा दी गई और मकान सकट मे पड गया तो गुइशर-परिवार ने माटोग्रेवो के होटल मे जाकर रहने की सोची। मकान की चाबी फियेट को दे दी गई, और वे आवश्यक सामान लेकर होटल की ओर चल पडे, रास्ते मे चौराहे पर उनकी तलाशी ली गई, और वे होटल मे जाकर रहने लगे।

लारा यही सोचकर प्रसन्न हो रही थी कि जब तक शहर का सम्बन्ध जिले से टूटा हुआ है, कोमारोवस्की उन्हे परेशान नही कर सकता। मा की पैदा की हुई परिस्थितियो के कारण वह उससे न तो सम्बन्ध ही तोड सकती थी और न ही उसका वहा आना रोक सकती थी।

मामा निकोलाय पीटर्सबर्ग जाते समय यूरा को अपने सम्बन्धी ग्रोमेकोज-परिवार मे छोड गए थे। ग्रोमेकोज-परिवार की अनुकूल परिस्थितियो का यूरा पर बहुत अच्छा प्रभाव पडा। जनवरी १९०६ की शाम को एक सगीत गोष्ठी मे एलेक्जेडर, यूरा और मिशा गोर्डन भी सम्मिलित हुए। यह सगीत-गोष्ठी सगीत-प्रेमी एलेक्जेडर ने स्वय आयोजित की थी। गोष्ठी चल रही थी तभी उन्हे नौकरानी द्वारा समाचार मिला कि सगीतज्ञ की कोई सम्बन्धी महिला मरणासन्न अवस्था मे पडी है। एलेक्जेडर मिशा और यूरा के साथ स्वय होटल मे उक्त महिला को देखने गए। सगीतज्ञ तिश्केविच महोदय की सम्बन्धी श्रीमती गुइशर ने आयोडिन ली थी और डाक्टर ने उन्हे वमनकारक औषध देकर ठीक करने की चेष्टा की थी। वही आरामकुर्सी पर लारा सो रही थी। जब कोमारोवस्की ने लैम्प टेबल पर रखा तब उसकी नीद उचट गई और वह आखो ही आखो मे बाते करने लगी। यूरा लारा का सौन्दर्य देखकर बहुत ही प्रभावित हुआ। तभी मिशा ने यूरा को बताया कि कोमारोवस्की ही उसके (यूरा के) पिता के साथ रेल-यात्रा कर रहा था और उन्हे शराब पीने के लिए एक प्रकार से उसीने बाध्य किया था। मिशा ने कहा कि नशे मे ही यूरा के पिता ने रेल से कूदकर आत्महत्या कर ली जिसका दायित्व कोमारोवस्की पर था। कुछ देर वहा रुकने के बाद ही एलेक्जेड्रोविच यूरा और मिशा के साथ लौट आए।

यूरा डाक्टरी पढ रहा था, टोन्या कानून, और मिशा दर्शनशास्त्र। सन् १९११ तक यूरा का व्यक्तित्व असाधारण रूप से प्रभावशाली हो गया था। जीवन के बारे मे उसका दृष्टिकोण बहुत सुलझा हुआ था। वह वास्तविक कला के लिए मौलिकता को आवश्यक मानता था। इन दिनो तक उसके मामा निकोलाय की कई पुस्तके भी प्रकाशित हो चुकी थी जिनका उसकी विचारधारा पर गहरा प्रभाव पडा। निकोलाय ने विश्व-इतिहास को नवीन दृष्टि से देखा था। मृत्यु की चुनौती के रूप मे समय और स्मृति के आधार पर उन्होने मानव-द्वारा बनाई हुई नूतन सृष्टि की कल्पना की थी। यूरा ने डाक्टरी पढते समय अपना समय आपरेशन के कमरे मे तथा मुर्दाघर मे भी बिताया था। उसने मृत्यु को निकट से देखा था। जीवन और मृत्यु के अनन्त रहस्य के सम्बन्ध मे वह प्राय सोचा करता। इन्ही दिनो अन्ना के अस्वस्थ होने पर उसने उसे समझाते हुए कहा था—तुम्हारी

इम चेतना का क्या होगा ? दूसरे की चेतना की बात नही कह रहा हू, कह रहा हू, तुम्हारी अपनी चेतना की बात। तुम क्या हो ? यही तो समस्या का कठिन पक्ष है। सर्व-प्रथम इसीका पता लगाना होगा। अपने सम्बन्ध मे जानने की उत्सुकता क्या है ? शरीर के अवयव ? गुर्दे, हृदय, रक्तवाहिनी शिराए ? नही। ये सब बाहरी वस्तु है। दूसरो के लिए, परिवार के लिए तुम्हारे जो काम है, वे ही तुम्हारे अस्तित्व के क्रियाशील प्रमाण है। इस प्रकार तुम्हारे प्राण दूसरो मे प्रतिष्ठित है। इसी प्रकार दूसरो मे तुम्हारी आत्मा सदैव अवस्थित रहती है। दूसरो मे प्रतिष्ठित तुम्हारे ये प्राण ही चिरन्तन है।

लारा ने कोमारोवस्की से पीछा छुडाने के लिए कोलोग्रिवोव के यहा उसकी लडकी लीया की सरक्षिका के रूप मे नौकरी कर ली थी। उसने तीन वर्ष तक वहा शाति से कार्य किया। तीन वर्ष पश्चात् उसका भाई रोड्या उससे मिलने आया।

रोड्या ने लारा से कहा कि उसने केडिट्स दल का सात सौ रूबल जुए मे गवा दिया है और यदि उसने समय पर धन जमा नही किया तो उसका सम्मान मिट्टी मे मिल जाएगा। लारा के लिए इतने रूबल का प्रबन्ध करना कठिन था। रोड्या ने कहा कि यदि वह कोमारोवस्की से कहे तो वह प्रबन्ध कर सकता है। लारा कोमारोवस्की का नाम सुनकर बेचैन हो उठी। किसी भी दशा मे वह उससे मिलना नही चाहती थी। कोलो-ग्रिवोव से रूबल लेकर उसने रोड्या को दे दिए। वह कोलोग्रिवोव के परिवार मे एक सदस्य को भाति रहती थी।

लारा अपने पैसो मे से कुछ राशि अपने पिता के पास साइबेरिया भेजा करती, किन्तु चुपके-चुपके मा की सहायता भी करती और इसके अलावा पाशा अन्तिपोव के खर्च का कुछ भाग भी दिया करती। पाशा वैसे लारा से आयु मे कुछ छोटा ही था फिर भी लारा से बहुत प्रेम करता था। लारा चाहती थी कि दोनो ग्रेजुएट होकर विवाह कर लेगे। विवाह के पश्चात् वह यूराल्स के किसी नगर मे अध्यापन का कार्य करने और रहने की आकाक्षा रखती थी।

१९११ के क्रिसमस दिवस को लारा ने निश्चय कर लिया कि वह कोलोग्रिवोव को छोड देगी और कोमारोवस्की से बदला ले लेगी। अपने पैरो पर खडे होने का उसका विचार इसलिए और पक्का हो गया था कि लीया, जिसकी वह सरक्षिका थी, अब बडी हो गई थी। अब लारा के सरक्षण की उसे आवश्यकता भी नही थी। दस्तानो मे रोड्या का रिवाल्वर छिपाकर वह एक दिन कोमारोवस्की से मिलने चल दी। उसने सोच लिया था कि यदि कोमारोवस्की ने उसे ज़लील किया तो वह उसे गोली मार देगी। लारा को वह अपने घर नही मिला, क्योकि वह क्रिसमस पार्टी मे गया हुआ था। लारा वहा का पता लेकर चल पडी। मार्ग मे पाशा का घर पडता था। वह पाशा के पास जा पहुची। पाशा से उसने कहा—पाशा, मै सकट मे हू। तुम्हे मेरी सहायता करनी होगी। डरो मत और मुझसे प्रश्न भी मत पूछो। मैं सचमुच भयकर सकट मे हू। यदि तुम मुझे प्रेम करते हो और चाहते हो कि मेरा सर्वनाश न हो तो विवाह की बात को टालो मत। पाशा किसी भी समय विवाह करने को तैयार था। उसने स्वीकृति दे दी। तत्पश्चात् स्विटटस्की की क्रिसमस-पार्टी मे लारा ने कोमारोवस्की पर गोली चलाई, किन्तु उसके लगी नही।

कोर्नाकोव नामक व्यक्ति के हाथ मे उसमे थोडी-सी खरोच आ गई। यूरा भी वहा उपस्थित था। इस अवसर पर लारा को उसने दूसरी बार देखा था। लारा कुछ देर बाद ही मूर्च्छित हो गई थी और लोगो ने उसे आरामकुर्सी पर लिटा दिया था। इस घटना को लेकर पुलिस भी चक्कर लगाने लगी थी। कोमारोवस्की ने सार्जेण्ट से मिलकर मामले को समाप्त करने का प्रयास किया। लारा ज्वर के कारण बेहोश थी। इस घटना से कोमारोवस्की और लारा को लेकर कई अफवाहे फैल रही थी। कोमारोवस्की उन्हे बढने देना नही चाहता था। कोलाग्रिवोव अस्वस्थ लारा से मिलने आए थे और उसके रहने के लिए उन्होने स्थान की व्यवस्था भी कर दी थी। लारा को वह हजार रूबल का चैक भी दे गए थे। पाशा बहुत दु खी था। लारा से वह अत्यधिक प्रेम करता था, फिर भी उसे ऐसा लगता कि लारा ने पाप किया है।

ग्रेजुएट होने के पश्चात् लारा और पाशा का विवाह हो गया। दोनो ही अपनी-अपनी परीक्षाओ मे सफल रहे थे। यूराल्स के एक नगर मे उन्हे नौकरी भी मिल गई और वे दोनो वहा चले गए। युर्यातिन मे पाशा और लारा चार साल तक व्यवस्थित रूप से रहे। इस बीच उनकी कन्या कात्या तीन साल की हो गई थी। लारा कात्या का ध्यान रखने के अतिरिक्त कन्या-विद्यालय मे पढाती भी थी। लारा युर्यातिन मे ही उत्पन्न हुई थी, इसलिए उसे वहा के सीधे-सादे लोग अच्छे लगते थे। पाशा उन्हे आचारहीन और पिछडा हुआ मानता था। वह उनके सम्पक से ऊब उठा था। इन दिनो उसने बहुत पढा था। लैटिन और प्राचीन इतिहास पढाने पर भी वह शरीरशास्त्र और गणित का अध्ययन कर चुका था। अब वह विज्ञान मे डिग्री लेकर उसी विभाग मे स्थानान्तरण करवाना चाहता था। वह तो चाहता था कि वही से परिवार के साथ पीटर्सबर्ग चला जाए परन्तु लारा उन्ही लोगो मे खुश थी। अन्त मे पाशा लारा के प्रेम से ऊब-सा गया। वह उसके प्यार मे मातृत्व अधिक पाता था। पाशा हाई स्कूल की नौकरी छोडकर ओमस्क के मिलिट्री ट्रेनिग स्कूल का नियुक्ति-पत्र प्राप्त करते ही साइबेरिया चला गया। वहा से लारा को प्रेम-भरे पत्र लिखा करता, किन्तु जब वह गया था तो लारा के रोकने पर वह रुका नही था, क्योकि वह उकता चुका था। पाशा अब किसी तरह घर जाने की छुट्टी लेना चाहता था, उसे लारा और कात्या की याद आती थी। सकटकाल मे उसे सेना के आगे झण्डा लेकर चलने का काम मिला था। कुछ दिन तक तो वहा से भी लारा के पास उसके पत्र आते रहे परन्तु फिर बन्द हो गए। लारा पत्र न मिलने से चिन्तित हो उठी। उसने नर्स की ट्रेनिंग ली और कात्या को मास्को मे लीया के पास छोडकर रेडक्रास की एक रेल से युद्धक्षेत्र के निकट के एक गाव मे जा पहुची।

यूरा, जिसे अब डाक्टर ज़िवागो के नाम से जानते थे, उसी क्षेत्र मे घायलो का उपचार करता था। उसे इसीलिए मास्को से बुलाया गया था। मिशा गोर्डन उससे मिलने गया और एक सप्ताह तक वही रहा। जब मिशा को विदा करके ज़िवागो लौट रहा था तभी उसके पैर मे बम का टुकडा लगा और वह बेहोश हो गया। वास्तव मे वह गाव युद्ध-क्षेत्र के अत्यधिक निकट था। ज़िवागो को एक छोटे-से अस्पताल मे ले जाया गया और अधिकारियो के वार्ड मे रखा गया। यहाँ से हैड क्वार्टर पास ही था। लारा

इसी अस्पताल मे नर्स का काम करने लगी थी। वह मरीजो से बहुत अच्छा व्यवहार करती थी। वही गल्युलिन ने उसे बताया पाशा की मृत्यु बम फट जाने से हो गई है और उसका सामान मेरे पास तुम्हे देने के लिए सुरक्षित रखा है। पाशा की मृत्यु का समाचार सुनकर लारा बेहोश होने को हुई किन्तु उसने अपने-आपको सभाल लिया। इन्ही दिनो जिवागो को मास्को से सूचना मिली कि डुडरोव और गोर्डन ने उसकी पुस्तक प्रकाशित कर दी है और एक महान साहित्यिक कृति के रूप मे उसका सम्मान हुआ है। उसे यह समाचार भी मिला कि मास्को की जनता मे असन्तोष बढता जा रहा है। कुछ दिनो मे मेल्यूजेवो मे अस्पताल आ गया और जिवागो तथा लारा वहा साथ-साथ काम करने लगे। ज़िवागो सेना की टुकडियो को देखने भी जाया करता था। उसने अपनी पत्नी टोन्या को लिखा कि वह कुछ ही दिन मे आनेवाला है। जेबुकिरनो मे गणतन्त्र समाप्त हो गया तब भी मेल्यूजेवो की क्रान्तिकारी समिति का जिले-भर मे प्रभाव था। डा० ज़िवागो मास्को लौटने के लिए आज्ञा-पत्र लेने का प्रयास कर रहा था। आखिर मेडमेजिल ने डा० जिवागो को मास्को जानेवाली रेल मे व्यवस्था करा दी और वह वहा से विदा हुआ।

गाडी सशस्त्र पहरे मे जा रही थी। जिवागो सोच रहा था कि रूस मे अशान्ति बढती जा रही है, उत्तेजना के स्वर ऊचे उठ रहे है, क्रान्ति का सन्देश चारो ओर व्याप्त हो रहा है। जब ज़िवागो रेल मे यात्रा कर रहा था तभी उसके सहयात्री पागोरेवाकिल ने उसे एक बत्तख भेट की। उन दिनो मास्को मे बत्तख मिलना कठिन था। जिवागो निरन्तर रूस की स्थिति के सम्बन्ध मे सोच रहा था। उसे प्रतीत होता था कि असाधारण परिवर्तन हानेवाला है। जब उसकी टैक्सी स्मालेस्काय के चौराहे से गुज़री तो उसने लोगो को कागज़ी फूल, कॉफी छानने की चलनी, सीटिया, रोटियो के नुकीले टुकडे और मोटा तम्बाकू बेचते देखा। चारो ओर लगे हुए पोस्टरो को देखकर उसे बहुत आश्चर्य हुआ मकान आने पर जिवागो ने टैक्सी रुकवाई और बन्द दरवाज़े की घटी बजाई। टोन्या ने आकर दरवाज़ा खोला। वह उसे देखकर स्तब्ध रह गई। जिवागो बिना सूचना दिए ही आ गया था। कुछ देर मे ही दोनो एक-दूसरे से प्रश्न पूछने लगे। जिवागो ने अपने लडके साशा के बारे मे पूछा, मित्रो के सम्बन्ध मे और नौकरो के सम्बन्ध मे। साशा अच्छा था, और टोन्या ने बताया कि उसके पिताजी ससद् मे सदस्य भेजनेवाली काउन्सिल के अध्यक्ष हो गए है। टोन्या ने बताया कि लोगो के कथनानुसार आगामी सर्दियो मे वहा अकाल पडेगा। इसपर जिवागो ने कहा कि वह टोन्या को तो सुरक्षित रूप से फिनलैड भेज देना चाहता है और स्वय मास्को मे ही रहेगा। तभी टोन्या ने जिवागो को बताया कि उसके मामा निकोलाय निकोलायविच बोल्शेविक हो गए है। जिवागो अपने लडके साशा को बहुत प्रेम करता था। जब साशा पैदा हुआ था तभी जिवागो को युद्ध-क्षेत्र मे बुलाया गया था। टोन्या द्वारा भेजे गए चित्रो मे ही उसने साशा को अच्छी तरह देखा था। अब उसे देखकर ज़िवागो बहुत प्रसन्न हुआ। ज़िवागो ने अपने मित्रो को बहुत बदला हुआ पाया। ऐसा लगता जैसे किसीका अपना व्यक्तिगत दृष्टिकोण हो ही नही। कुछ दिनो पश्चात् ही वोदका और बतख की दावत का आयोजन किया गया। गोर्डन एक दवा की बोतल मे

चोरबाजार से वोदका ले आया था। दावत मे लोगो को बेचैनी अनुभव हो रही थी। शायद ही मास्को के किसी घर मे इस तरह ही दावत हो रही हो। सध्या समय दावत मे कोल्या मामा के आ जाने से रौनक आ गई। रात को शूरा स्किलसिगर आ गई। डा० जिवागो ने भी और लोगो की तरह शराब पी, जिससे उसका सिर चकराने लगा। इसी अवस्था मे वह एक टेबल के किनारे खडा होकर भाषण देने लगा। सभी लोगो ने तालिया बजाई।

मास्को मे जिवागो हालीक्रास के अस्पताल मे काम करने लगा था। उसने देखा कि वहा के कमचारी विभिन्न दलो मे बट गए थे। जिवागो को न तो मध्यवर्गवाले लोग अपना मानते थे और न राजनीति मे आगे बढे हुए लोग ही। फिर भी वह अपने काम मे जुटा रहता। आकडा-सकलन-विभाग का कार्य भी डायरेक्टर ने जिवागो को सौप दिया था। इस सब काम के अतिरिक्त वह साहित्य-सृजन का कार्य भी करता रहता। अक्तूबर-युद्ध के कुछ ही दिनो पश्चात् एक रात सिल्वर स्ट्रीट को पार करनेवाली गली मे जिवागो को एक आदमी मूर्च्छित अवस्था मे पडा हुआ मिला। जिवागो उसे सकटकालीन वार्ड मे ले गया और उपचार किया। कई वर्ष बाद इसी व्यक्ति ने, जो कि प्रसिद्ध नेता था, जिवागो की रक्षा की।

शीतकाल मे जिवागो का परिवार मकान की ऊपरी मजिल के तीन कमरो मे आ गया था। मास्को मे ईधन और भोजन-सामग्री मिलना असम्भव-सा हो गया था। रविवार के दिन जिवागो छुट्टी पर था। स्टोव जल रहा था तभी निकोलाय निकोलायविच उनके यहा आ गए। आते ही उन्होने कहा—"अस्थायी सरकार के लिए नौसिखिये सैनिक बोल्शेविको की सहायता मे दुर्ग-रक्षक सैनिको के साथ लड रहे है। विप्लव के इन सूत्रो की गणना नही की जा सकती। आते समय फस गया था। पहली बार ड्रिमिट्रोवका के कोने मे और बाद मे निकित्सी गेट पर। सीधे आना-जाना कठिन हो गया है। घूमकर आना पडता है। कोट पहनो और बाहर आओ यूरा, देखो यह इतिहास है। जीवन मे एक बार ही इसे देखने का अवसर मिलता है।" इसी समय गोर्डन आया और उसने भी इसी प्रकार के समाचार सुनाए। उसने बताया कि बन्दूको की गोलिया चारो ओर चल रही थी और यातायात बन्द हो गया था। निकोलाय को पहले तो गोर्डन की बातो पर विश्वास नही हुआ परन्तु बाहर देखकर लौटे तो बोले कि गोर्डन ठीक कह रहा था। इसी सप्ताह साशा को सर्दी लग गई थी और टान्सिल सूज गए थे इसलिए वह पीडा से व्याकुल था। उसे दूध की आवश्यकता थी किन्तु घर से बाहर जाना सम्भव नही था। ऐसी स्थिति मे दूध मिलना भी कठिन था। तीन दिन तक निकोलाय निकोलायविच और गोर्डन का जिवागो के घर मे ही रहना पडा। बाद मे भी लोग आसपास से रोटी खरीद लाते थे परन्तु शहर मे शान्ति स्थापित नही हुई थी। एक सन्ध्या को जिवागो ने सडक पर भागते हुए अखबारवाले लडके से एक अखबार खरीदा, जिसमे राजकीय घोषणा थी कि सोवियत पीपल्स कमीसार सघटित हो चुका है और सोवियत शक्ति तथा प्रोलेतेरियत समाज की तानाशाही रूस मे स्थापित हो गई है। अस्पताल मे पर्याप्त वेतन नही मिलता था इसलिए जिवागो के बहुत-से साथियो ने काम छोड दिया था, किन्तु वह काम करता रहा। ईंधन

और भोजन-सामग्री की कमी के कारण उनका काम और भी कठिनता से चलता था। एक बार तो टोन्या ने अपनी काच की अलमारी के बदले मे लकडिया गिरवाई थी। जब ज़िवागो को टायफ़ुस हुआ तब तो उनका काम चलना कठिन ही नही असम्भव हो गया था। इन दिनो जिवागो-परिवार भूखो मरने लगा था। काफी दिन तक ज़िवागो बीमार पडा रहा। इस बीच उसके सौतेले भाई युवग्राफ ने परिवार की सहायता की थी। वह टोन्या से यह भी कह गया था कि एक-दो वर्ष के लिए उन्हे शहर से बाहर की ओर चला जाना चाहिए।

उस वर्ष अप्रैल के महीने मे ज़िवागो-परिवार युर्यातिन शहर के पास वैरिकिनी इस्टेट को चल पडा। उन्हे अपने पुराने मैनेजर मिकुलिस्सिन का बहुत भरोसा था। ज़िवागो तो इस स्थिति मे जाने को तैयार भी नही था किन्तु टोन्या के कहने पर वह मान गया। एक गाडी मे बैठकर वे स्टेशन पहुचे। जैसे-तैसे उन्हे २३ डिब्बोवाली गाडी मे स्थान मिल गया। उस समय गाडी मे ५०० यात्री थे। एक स्टेशन पर गाव की एक औरत से तौलिये के बदले मे टोन्या ने पकाए हुए खरगोश का आधा भाग लिया। उसी स्टेशन पर एक सशस्त्र व्यक्ति ने एक बुढिया से दूध और कचौडिया ली और खा गया। उस व्यक्ति ने बुढिया को बदले मे कुछ भी नही दिया जिससे वह चीखने लगी। जब गाडी मध्य रूस से आगे बढी तो और भी विचित्र घटनाए देखने मे आईं। वहा सशस्त्र सैनिको की टुक-डिया पडी हुई थी और गावो की क्रान्तियो को कुचल दिया गया था। वहा का वातावरण अशान्त था। गाडी बीच मे कही भी खडी हो सकती थी और सुरक्षा के लिए नियुक्त सैनिक यात्रियो के कागज़ात का निरीक्षण कर लिया करते थे। एक दिन इसी प्रकार गाडी के रुकने पर जब कोई व्यक्ति नही आया तो जिवागो बाहर निकल आया। उसे दूसरे यात्रियो से मालूम हुआ कि ड्राइवर ने इस अशान्त क्षेत्र मे और आगे गाडी ले जाने से मना कर दिया है। ड्राइवर ने भागने की कोशिश की, किन्तु नौ-सैनिको ने उसे गाडी चलाने को विवश कर दिया। धीमी गति से फिर गाडी आगे बढ चली। रास्ते मे लोवर केल्मिश स्टेशन मिला जिसके अब खण्डहर ही बचे थे। स्टेशन के पास का गाव भी खण्ड-हर जैसा था और उस पर बर्फ की चादर बिछी हुई थी। स्टेशन-मास्टर ने गार्ड को बताया कि गाववालो के अपराध के कारण ही गाव और स्टेशन की यह दशा हुई। उन्होने निर्धन किसानो की कमेटी को भग कर दिया था और लाल सेना को घोडे नही दिए थे, इसीलिए स्ट्रेलिनिकोव ने इसे नष्ट कर दिया। स्टेशन-मास्टर ने बताया कि सशस्त्र रेल-गाडी से उनपर गोली चलाई गई। उसने उसे यह भी कहा कि लाइन पर बर्फ जमी हुई है इसलिए आगे बढना कठिन है। तीन दिन तक यात्री लाइन पर से बर्फ हटाते रहे तब जाकर गाडी आगे बढी। युर्यातिन शहर के औद्योगिक उपनगर रेजविला स्टेशन पर खडे हुए गाडी के कुछ डिब्बो का उपयोग फौजी कार्यालय के रूप मे किया जा रहा था। वही फौजी प्रधान स्ट्रेलिनिकोव रहता था। डा० जिवागो वाली गाडी जब उस स्टेशन पर रुकी और घुटन के कारण सोना कठिन हो गया तो वह स्टेशन की ओर चल दिया। बीच मे ही उसे सतरी ने पकड लिंया और स्ट्रेलिनिकोव के पास ले आया। स्ट्रेलिनिकोव ने उसके कागजात देख-कर कहा कि उसे गलती से पकड लिया गया था। स्ट्रेलिनिकोव ने ज़िवागो से पूछा कि ऐसी

अशान्ति के समय मे वह मास्को छोडकर वेरिकिनो क्यो जा रहा था, तो उसने उत्तर दिया, "अनिश्चित भविष्य की शान्ति और आराम की खोज मे।" इसके पश्चात् स्ट्रेलिनिकोव ने सतरी के सरक्षण मे उसे उसके डिब्बे मे भेज दिया। सतरी ताम्बोव के निकट मारजास्क का निवासी था। उसने जिवागो से कहा, "आह, कामरेड डाक्टर, यदि यह गृहयुद्ध न होता, क्रान्ति के विपरीत आक्रमण न होता तो मै यहा थोडे ही होता ? इस अपरिचित प्रदेश मे अपना समय थोडे नष्ट करता। देखे, क्या परिणाम होता है !"

जैसे ही जिवागो डिब्बे मे पहुचा, टोन्या ने नये यात्रियो से उसका परिचय कराया। उनमे सामदेवयातोव भी था। गाडी चली तो वह ज़िवागो से अपने और उस प्रदेश के सम्बन्ध मे बाते करता रहा। उसने जिवागो को मिकुलित्सिन की कहानी सुनाई। साथ ही उसने मिकुलित्सिन के लडके लिबेरियम के सम्बन्ध मे भी बताया। अब वह कामरेड फोरेस्टर के नाम से प्रसिद्ध था और क्रान्तिकारियो की सहायक सेना का नायक था। यह सेना 'वन्य बन्धुत्व' के नाम से प्रसिद्ध थी। अपना स्टेशन आने पर सामदेवयातोव तो उतर गया और जाते-जाते उन्हे बता गया कि अगले स्टेशन पर उन्हे उतरना है। तोर्फयानाया स्टेशन पर जिवागो-परिवार उतर गया। सामदेवयातोव ने सकमा से टेलीफोन करके वहा के स्टेशन-मास्टर को कह दिया था कि वह ज़िवागो-परिवार की सहायता करे। स्टेशन-मास्टर ने उनके लिए घोडा-गाडी का प्रबन्ध कर दिया था। उसने टोन्या को परामर्श दिया कि वह किसीसे, क्रोइगर से, अपने सम्बन्ध के बारे मे बाते करे तो सावधानी बरते। किसी नये मित्र पर विश्वास कर लेना इस समय उचित नही। रास्ते मे गाडी-चालक मेखोनोसिन ने उन्हे मिकुलित्सिन के बारे मे बहुत कुछ बताया। उसने लिबेरियस की बाते भी की। एक पहाडी के दूसरी ओर मिकुलित्सिन रहता था। नीचे की ओर एक जलमार्ग था जिसे शुत्मा कहते थे। मिकुलित्सिन उन्हे मैनेजर के मकान के सामने मिला। बन्द कारखानो और भागे हुए कामगारोवाले इस गाव मे वह अकेला ही रहता था। पहले तो ज़िवागो-परिवार के सामने अपनी कठिनाइया बताई किन्तु बाद मे उसने उनके रहने का प्रबन्ध कर दिया। उसने यह भी बताया कि स्ट्रेलिनिकोव वास्तव मे पाशा आन्तिपाव ही है। वह मरा नही था।

कुछ दिनो पश्चात् ही लोग डाक्टर ज़िवागो के पास आने लगे। उसे फीस के रूप मे मुर्गी, अडे और मक्खन दे जाते थे जिन्हे वह अस्वीकार नही करता था। एक प्रकार से यूरा की प्रैक्टिस चलने लगी थी। इन दिनो उसे जब भी अवकाश मिलता वह डायरी भी लिखता।

उन दिनो अपने जीवन के सम्बन्ध मे यूरा ने डायरी मे स्पष्ट लिखा था—हम जीर्ण-शीर्ण मकान के पिछले भाग मे स्थित लकडी के बने दो कमरोवाले घर मे रह रहे हैं। अन्ना की बाल्यावस्था मे क्रूइगर इन घरो का उपयोग विशिष्ट घरेलू काम के लिए करता था। हमने इसकी भली प्रकार मरम्मत कर दी है। योग्य परामर्शदाताओ के परामर्श पर दो चूल्हो का पुनर्निर्माण हुआ। धुआ निकलने के मार्ग का भी पुनरुद्धार किया गया है। अब वह अधिक गर्मी देते है। शरदऋतु ने तो सभी कुछ नस्ट कर दिया है। जो पौधे बच रहे है वे भी मृत पौधो के अन्त पर आसू बहा रहे है ।

बसन्त ऋतु के प्रारम्भ मे एक दिन यूरा ने लिखा—मुझे भली प्रकार ज्ञात हो गया है कि टोन्या गर्भवती है। जब मैने उसे कहा तो उसे विश्वास नही हुआ। प्रारम्भिक लक्षण स्पष्ट हे। इसे प्रभावित करनेवाले बाद के लक्षणो की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नही। ऐसे अवसर पर स्त्री का चेहरा बदलने लगता है। मेरा तात्पय यह नही कि उसका चेहरा रूखा दिखाई पडने लगता है ।

फिर एक दिन लिखा—दम फूल जाता है। कण्ठ-नली मे खिचाव-सा अनुभव होता है जैसे गले मे कोई चीज अटक गई हो। ये बुरे लक्षण है। यही हृदय-रोग का प्रारम्भ है। वशानुगत, मातृपक्ष की परम्परा की यह प्रारम्भिक चुनौती है। जीवन-भर मा का हृदय दुर्बल ही रहा। क्या यही हे वह ? और इतने शीघ्र यदि ऐसी बात है तो अधिक दिन जीने की आशा नही की जा सकती । ठीक होने पर यहा के पुस्तकालय मे जाकर इस क्षेत्र के मानवजाति-शास्त्र का अध्ययन करूगा। यहा के लोगो का कहना है कि यह बहुत ही बढिया पुस्तकालय है, और इसे अनेक महत्त्वपूर्ण दान मिल चुके है। एक डाक्टर अथवा किसान के रूप मे मै एक उपयोगी व्यक्ति बनना चाहता हू। साथ ही किसी मौलिक कृति का निर्माण भी करना चाहता हू। कर सकू तो कला अथवा विज्ञान को कोई अभिनव देन देना चाहता हू। इस ससार मे प्रत्येक व्यक्ति फास्ट की भाति, प्रत्येक प्रकार के अनुभवो के सम्पर्क मे आता है और उन्हे प्रकट करने की क्षमता रखता है। आदि।

इन दिनो जिवागो-परिवार की सामदेवयातोव ने बहुत सहायता की। वह उन्हे आवश्यक वस्तुए दे जाता था। एक दिन अचानक ज़िवागो का सौतेला भाई युवग्राफ यहा आया। उसे देखकर सभी ने आश्चर्य प्रकट किया। वह उनके साथ पन्द्रह दिन तक वही रहा। कभी-कभी वह युर्यातिन जाता था। जिवागो को लगता था कि युवग्राफ सामदेव-यातोव से भी अधिक प्रभावशाली व्यक्ति है।

एक दिन जिवागो युर्यातिन के पुस्तकालय मे पुस्तके देख रहा था, तभी उसे लारा दिखाई पडी। उसे देखते ही उसे मल्यूजेवो की घटनाए स्मरण हो आई। लारा पढ रही थी इसलिए वह भी अध्ययन मे लग गया। जब उसने अध्ययन समाप्त किया, लारा जा चुकी थी। लारा द्वारा लौटाई गई पुस्तको पर लगे हुए आदेशपत्र पर लिखे पते को ज़िवागो ने लिख लिया। मई के प्रारम्भ मे एक दिन वह पुस्तकालय मे अध्ययन करके और शहर मे अपना काम समाप्त करके लौट रहा था तभी उसने सोचा कि लारा से मिल ले। वह लारा के घर के पास पहुचा तो उसने देखा लारा कुए से पानी भरकर आ रही थी। वह उसे अपने घर लिवा ले गई। वह एक पुराने मकान मे रहती थी जिसकी दीवार मे दरारे पड गई थी। गोलाबारी का उस मकान पर भी प्रभाव पडा था। लारा ने उसे एक दरार दिखाकर कहा कि यदि वह कभी उसकी अनुपस्थिति मे आए तो वहा से ताली निकालकर कमरे मे बैठ जाए। लारा की सरलता पर यूरा मुग्ध था। लारा ने उसे बताया कि स्ट्रेलिनिकोव उसका पति पाशा आन्तिपोव ही है और उसीकी खोज मे वह युद्ध-क्षेत्र मे गई थी। उसने यह बता दिया स्ट्रेलिनिकोव पाशा का बनावटी नाम है। वह क्रियाशील क्रान्तिकारी था इसीलिए ही अपना वास्तविक नाम प्रकट करना नही चाहता था। लारा ने ज़िवागो को बताया कि स्ट्रेलिनिकोव इस समय साइबेरिया मे है और युद्ध कर रहा है।

उसपर लगाए जानेवाले आरोपो की बात भी उसने बताई।

जिवागो लारा से प्रेम करता था, किन्तु टोन्या के प्रति विश्वासघात भी नही करना चाहता था। वह टोन्या के प्रति श्रद्धावान था। अब भी वह लारा के यहा आता था। एक रात उसने लारा के यहा ही बिताई और घर यह कहा कि आवश्यक काम से सामदेवयातोव की सराय मे रहना पडा। कभी-कभी तो वह सब बाते टोन्या से कहकर क्षमा मागने की सोचता।

एक दिन ज़िवागो शहर से लौट रहा था, तभी रास्ते मे उसे तीन सवारो ने घेर लिया। मिकुलित्सिन के पुत्र लिबेरियस के मुख्य सम्पर्क-अधिकारी ने उससे कहा—"कामरेड डाक्टर, बिलकुल मत हिलो। आदेश मानने पर तुम बिलकुल सुरक्षित रहोगे। नही तो बिना अपराध ही तुम्हे गोली मार दी जाएगी। हमारी टुकडी का डाक्टर मारा है। तुम्हे हम डाक्टर के रूप मे भर्ती करते है। नीचे उतर जाओ, घोडे की लगाम इस युवक के हाथ मे दे दो। " विवश होकर जिवागो को उनके साथ जाना पडा। सपक्षियो के दल का नेता लिबेरियस मिकुलित्सिन था। उसे जिवागो का साथ बहुत पसन्द था, किन्तु ज़िवागो अपने परिवार की चिन्ता करता रहता। उनके बीच रहते हुए जिवागो को दो वर्ष के लगभग बीत चुके थे। श्वेतदल के विरोध के बावजूद सपक्षियो की शक्ति बढती जा रही थी। यूरी के दो सहायक थे—करैजी लैजोस और क्रोट एन्जेलर। बहुत-से अनुभवी चपरासी भी उसकी सहायता के लिए नियुक्त किए गए थे। श्वेतदल और सपक्षियो की मुठभेड के समय घायलो का उपचार करना जिवागो का प्रमुख कार्य था। वह चपरासियो से घायलो को स्ट्रेचरो पर रखवाता और उनका उपचार करता था। बीमारो का इलाज भी वही करता था। जब रूस अक्तूबर-क्राति से गुजर रहा था, जिवागो सपक्षियो का बन्दी था। कई बार उसने वहा से निकल भागने की चेष्टा की किन्तु सफल नही हुआ। पतझड के मौसम मे सपक्षियो ने फोक्सेस थिकेट मे घेरा डाला था। यह ढालवाली जगली पहाडी थी। यूरी भी लिबेरियस के साथ वहा खोदी हुई एक खाई मे रहता था। लिबेरियस की निरन्तर बात करने की आदत से वह परेशान हो उठा था। यूरी ने देखा कि परिवार के लोगो की चिन्ता ने बहुत-से लोगो को चिन्तित कर रखा था। पालरेव नामक व्यक्ति ने तो पागलपन मे अपनी स्त्री तथा तीन बच्चो की हत्या ही कर दी थी। वैसे वह पुराना क्रातिकारी था। लिबेरियस यूरी को बताया करता था कि अमुक-अमुक स्थान से स्वेतदलवाले खदेड दिए गए है और कुछ ही दिनो मे वह अपने परिवार से मिल सकेगा। इस तरह के आश्वासनो से यूरा ऊब गया था। अन्त मे एक रात वहा से निकल भागने मे वह सफल हो ही गया।

ज़िवागो सीधा युर्यातिन आकर लारा के घर जा पहुचा। द्वार पर ताला लगा था, इससे उसे बहुत निराशा हुई किन्तु दरार मे ईट के नीचे चाबी के साथ एक पत्र रखा हुआ था। पत्र लारा ने ज़िवागो के नाम लिखा था—"प्रिय, मैंने सुना है कि आप जीवित है और सकुशल लौट आए हैं। किसीने आपको शहर के पास देखा था और मुझे सूचना दी है। मेरा विचार है कि आप वैरिकिनो जाएगे। इसलिए मै वहा जा रही हू। शायद आप यहा आए। वापस मत लौट जाइएगा। मेरी प्रतीक्षा करे। घर खाली है। थोडा बहुत खाने का

सामान, उबले हुए आलू रखकर जा रही हू। बर्तन पर ढक्कन अवश्य रखें ताकि चूहे वहा तक न पहुच सके। मै खुशी के मारे पागल हो रही हू।" लारा के आने पर यूरा को मालूम हुआ कि उसकी नई बच्ची का नाम माशा रखा गया था और उसका परिवार यहा से सुरक्षित चला गया। ज़िवागो को ग्लाफिरा से टोन्या का एक पत्र भी मिला जिसमे उसने लिखा था—"हमारे एक लडकी हुई है। आपकी मा की स्मृति मे उसका नाम माशा रखा है। अनेक प्रमुख व्यक्ति तथा प्रोफेसर—जो दक्षिणपथी सोशलिस्ट पार्टी के लोग है, और जिनमे मिल्यूकोव, किजेवेटर, कुसकोव तथा अनेक व्यक्तियो के साथ आपके कोल्या मामा भी है—रूस से निष्कासित कर दिए गए है। यह दुर्भाग्य की बात है, विशेषता उस दशा मे जबकि आप हमारे साथ नही है। फिर ईश्वर को लाख-लाख धन्यवाद है कि ऐसे भीषण समय मे हमे केवल निष्कासन का दण्ड मिला। आप कहा है ? मै यह पत्र आन्तिपोव के पते पर भेज रही हू। यदि किसी दिन 'वह' आपको पा सकी, तो यह पत्र आपको दे देगी अभी तक कुछ भी निश्चिन नही है, लेकिन सम्भवत हम पेरिस जा रहे है। पिताजी आपको आशीर्वाद भेज रहे है। "

कई महीनो पोस्ट-आफिस मे खडा रहने के पश्चात् जिवागो को यह पत्र मिला था। पत्र पढकर वह बेहोश हो गया। शिशिर ऋतु मे जब बर्फ गिरने लगी तो लारा ने एक दिन उसे बताया कि कोमारोवस्की वहा आया था और कह रहा था कि पाशा, लारा और यूरा सकट मे है। यूरा ने उसकी बात पर ध्यान नही दिया, किन्तु लारा ने कहा कि उनके परामर्श पर चलकर बच सकते है। रात को कोमारोवस्की उनके घर आया और उसने उन्हीके साथ भोजन किया। उसने पूरी स्थिति उन्हे समझाते हुए कहा कि वहा महत्त्वपूर्ण परिवर्तन होनेवाले हैं। और उनका नाम उसने सूची मे देखा है। उसने कहा कि लारा को वह अपने साथ ले जा सकता है और यूरा को उसके परिवार के पास भेजने की व्यवस्था कर सकता है। पाशा को बचाने की योजना भी उसने बताई। यूरा कोमारोवस्की की योजना पर सहमत नही हुआ। लारा, यूरा और कात्या कुछ दिन रहने के लिए वेरिकिनो चले गए । यूरा और लारा मिलकर वहा काम करते और यूरा अपना लेखनकार्य भी करता । लारा उसकी प्रेरणा थी, वह कविताए लिखता । लारा यूरा के साथ-साथ अपने-आपको भूल जाती। इन दिनो वह गर्भवती भी हो गई थी। कुछ दिन तो वेरिकिनो के एकान्त मे लारा रही, परन्तु दूसरे सप्ताह मे ही वह भयभीत हो उठी। उसने वहा से चलने की तैयारी कर ली। कोमारोवस्की अपनी स्लेज गाडी मे उनसे वहा भी मिलने गया और उसने लारा को चलने को कहा। लारा यूरा के बिना कही भी जाने को तैयार न थी। कोमारोवस्की ने ज़िवागो को अलग ले जाकर समझाया कि स्ट्रेलिनिकोव मारा गया है और कात्या तथा लारा का जीवन सकट मे है, इसलिए वह उन्हे उसके साथ भेज दे । यूरा ने लारा को कोमारोवस्की के साथ भेज दिया और स्वय वही रहा। कुछ दिन वही रहकर वह लिखता रहा। एक दिन स्ट्रेलिनिकोव वहा आया और यूरा से बातें करता रहा। वह लारा के प्रति अपना प्रेम प्रकट करता रहा और अपनी विवशता भी उसने बताई । वास्तव मे कोमारोवस्की को ठीक मालूम नही था इसलिए उसने स्ट्रेलिनिकोव के मरने की बात कही थी। स्ट्रेलिनकोव ने वेरिकिनो मे ही गोली मारकर

आत्महत्या कर ली क्योकि उसे अपने गिरफ्तार होने का विश्वास हो गया था।

ज़िवागो मास्को आया तो उसने यात्रा का अधिकाश भाग पैदल ही तय किया था। जिस समय सपक्षियो के यहा से आया था तब यूरा ने साइबेरिया और यूराल्स के उजडे हुए गावो को देखा था और अब रास्ते के खाली पडे गावो को देखा। खेत बिना काटे पडे थे और गृहयुद्ध के कारण गाव मे रहनेवाले ही नाममात्र को थे। रास्ते मे उसके साथ गाव का एक किशोर वास्या ब्रेकिन हो लिया था, जिसने आगे चलकर उसकी पुस्तके छापी। मास्को जाकर पहले तो वास्या और जिवागो साथ-साथ ही रहे, परन्तु बाद मे ज़िवागो मार्केल के कमरे मे रहने लगा। यह कमरा स्विटटस्की के पिछले घर मे था। मार्केल की लडकी मरीना यहा जिवागो का बहुत ध्यान रखती। वह धीरे-धीरे यूरा से प्रेम करने लगी। उससे मरीना के दो लडकिया भी हुई—कपिटोलिना और कपोडिया।

एक दिन ज़िवागो चुपचाप अपने सौतेले भाई युवग्राफ के साथ उसके यहा चला गया। मरीना को उसने मनीआर्डर से रुपये भेज दिए थे और अपने मित्रो को पत्र। मरीना भी यूरा की विचित्र आदतो से परिचित हो गई थी इसलिए उसने इस घटना को उसकी सनक ही समझा। ज़िवागो ने यह तो लिख ही दिया था कि नये सिरे से जीवन प्रारम्भ करने और आत्मशुद्धि करने के लिए ही वह एकान्त मे रहना चाहता है। जिवागो की रचनाए अब लोकप्रिय हो गई थी। वह अब फिर से अपनी अधूरी रचनाओ को पूरा करने और नई लिखने मे लग गया।

युवग्राफ यूरा की पारिवारिक समस्याओ को हल करने का भी प्रयास कर रहा था कि किसी प्रकार उसका परिवार पेरिस से आ जाए, या यूरा वहा चला जाए। अपने काम पर जाने के लिए ज़िवागो ट्राम से जा रहा था। उसको बेचैनी अनुभव हुई, उतरकर प्लेटफार्म पर आ गया और सडक पर दो-तीन कदम चलने के पश्चात् ही गिर पडा। गिरने के पश्चात् जिवागो उठ नही सका। उसकी वही मृत्यु हो गई। उसके हृदय की गति बन्द हो गई थी। जब उसका शव लाया गया तब मरीना पछाड खाकर गिर पडी। यूरी के मित्र, अस्पताल मे काम करनेवाले लोग, पुस्तक-विक्रेता और मुद्रक तथा अन्य परिचित लोग यूरी को देखने आए। लारा भी वहा आ गई थी। वह मास्को स्टेशन पर सामान छोडकर शहर घूमने आई थी। यहा भीड देखकर आ गई और ज़िवागो का शव देखकर रुक गई। युवग्राफ ने उसे यह कहकर रोक लिया कि वह अपने भाई के कागजात उसकी सहायता से छाटना चाहता है। लारा यूरा के शव को देखकर काफी देर तक तो चुप रही। फिर फूट-फूटकर रोने लगी। रोते-रोते उसकी हिचकिया बध गई।

इस घटना के पाच या दस वर्ष पश्चात् डुडरोव और गार्डन ज़िवागो की सम्पादित पुस्तक पढ रहे थे और स्वतन्त्रता का उत्साह अनुभव कर रहे थे।

प्रस्तुत उपन्यास में रूस की जनक्रान्ति के अधेरे पहलू को प्रकट किया गया है। व्यक्ति की घुटन का इसमें प्रभावोत्पादक चित्र उपस्थित किया गया है। यह उपन्यास अपने साथ घोर विवाद लाया है, क्योकि इसमें दो विचारधाराओ की टक्कर दिखाई देती है।

अजनबी
[द स्ट्रेंजर[1]]

कामू, आल्बेयर फ्रेंच उपन्यासकार आल्बेयर कामू का जन्म १९१३ में ७ नवम्बर को हुआ और मृत्यु मोटर-दुर्घटना से १९६१ में हुई। आप मडोवी, अल्जीरिया में पले। परिवार बहुत गरीब हो गया। आपने दर्शन का अध्ययन किया। फिर आपको थियेटर में दिलचस्पी हो गई। आपने काफी भ्रमण किया था। १९४० में आप फ्रांस से अल्जीरिया लौट आए और अध्यापन-कार्य करने लगे। १९४० मे आपका विवाह हुआ। आप सिगरेट बहुत पीते थे। १९४७ से आप राजनीति में भाग लेने लगे।

'द स्ट्रेंजर' (अजनबी) आपका एक सुप्रसिद्ध उपन्यास है।

मोशिये म्योरसोल अल्जीयर्स नगर मे एक दफ्तर मे काम करता था। उसकी स्थिति ऐसी नही थी कि अपनी मा का भरण-पोषण समुचित रूप से कर सके। उसने मा को मारगो के वृद्धाश्रम मे रहने भेज दिया था। वृद्धाश्रम अल्जीयर्स नगर से लगभग पचास मील दूर था। आश्रम मे तीन साल तक रहने के पश्चात् म्योरसोल की मा की वही मृत्यु हो गई। आश्रम से तार द्वारा मा के निधन का समाचार पाकर म्योरसोल ने दफ्तर से दो दिन की छुट्टी ली और दोपहर की बस से आश्रम को चल दिया। वहा पहुचने पर आश्रम के वार्डन ने उसे मादाम म्योरसोल के ताबूत के पास मुर्दाघर मे पहुचा दिया। उसने उसे यह भी बताया कि उसकी मा की इच्छा थी कि उन्हे चर्च के नियमानुसार दफनाया जाए। वार्डन के जाते ही आश्रम के चौकीदार ने आकर म्योरसोल से पूछा कि वह मा के दर्शन करना चाहे तो वह पेच खोल दे। किन्तु म्योरसोल मना कर दिया। चौकीदार को म्योरसोल की इस बात पर बहुत आश्चर्य हुआ कि वह अपनी मृत मा के दर्शन करना नही चाहता। फिर भी वह चुप रहा और म्योरसोल से बाते करता रहा। कुछ देर बात करने के पश्चात् चौकीदार म्योरसोल के लिए कॉफी बना लाया। उसने पी ली। अपनी मा के सगी-साथियो के साथ म्योरसोल ने ताबूत के पास प्रथानुसार रतजगा किया और दूसरे दिन सस्कार-व्यवस्थापक के व्यक्तियो के आने पर अत्येष्टि का काम समाप्त करके अल्जीयर्स नगर लौट आया। म्योरसोल परिस्थितियो से तटस्थ रहनेवाला व्यक्ति था, इसलिए मा की मृत्यु ने उसे विचलित नही किया। वैसे वह अपनी मा से प्रेम करता था।

---

१ The Stranger (Albert Camus)—इस उपन्यास का हिन्दी अनुवाद हो चुका है 'अजनबी', अनुवादक—राजेन्द्र यादव, प्रकाशक—राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

नगर लौटने पर म्योरसोल अपने-आपको बहुत थका अनुभव करने लगा और घर पहुचकर सो गया। दूसरे दिन शनिवार था ओर शनि तथा रविवार की उसकी छुट्टी रहती थी। जब वह सोकर उठा तब भी उसकी थकान पूरी तरह दूर नही हुई थो। फिर भी छुट्टी का दिन कटना भारी हो जाता, इसलिए वह बन्दरगाह जानेवाली ट्राम से तैरने के कुण्ड (स्वीमिंग-पूल) चला गया। कुण्ड पर उसे अपने दफ्तर की भूतपूर्व टाइपिस्ट मेरी कार्डाना मिली। दोनो एक-दूसरे की और आकर्षित तो थे ही, कुण्ड से काफी देर तक जल-क्रीडा करते रहे। शाम को मेरी और म्योरसोल ने एक मजाकिया फिल्म देखी और रात को मेरी म्योरसोल के घर ही रही। म्योरसोल ने मा को मृत्यु का शोक भूलकर आनन्द के क्षणो का उपभोग किया। रविवार का दिन भी उसने जैसे-तैसे निकाल दिया और दूसरे दिन दफ्तर जा पहुचा।

जब म्योरसोल दफ्तर से लौटा तो पडोसी रेमड सिन्ते उसे भोजन का निमन्त्रण देकर अपने यहा लिवा ले गया। रेमड के बारे मे लोगो की अच्छी राय न थी। उसे औरतो का दलाल कहते थे, किन्तु वह स्बय अपने-आपको माल-गोदाम मे नौकर बताता था। भोजन के समय रेमड ने म्योरसोल को अपनी कहानी सुनाई और कहा कि बह एक लडकी से प्रेम करता था जिसने उसे धोखा दे दिया। अब वह उस लडकी से बदला लेना चाहता था जिसमे म्योरसोल से उसने सहायता चाही थी। रेमड ने पूरी बात विस्तार से बताते हुए कहा कि वह उसे एक ऐसा चुभता हुआ पत्र लिखना चाहता है कि लडकी तिलमिला उठे और उसे अपने किए पर पछतावा हो। फिर जब लडकी वापस रेमड के पास आए तब वह उसे अपमानित करके कमरे से बाहर निकाल दे। लेकिन पत्र लिखना रेमड की शक्ति के बाहर था। उसने म्योरसोल से इस तरह का पत्र लिख देने को कहा। शराब के नशे मे होने पर भी म्योरसोल ने पत्र लिख दिया जो रेमड को पसन्द भी आ गया।

इस घटना के पश्चात् सप्ताह-भर म्योरसोल दफ्तर के काम मे व्यस्त रहा और शनिवार को पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार मेरी के साथ समुद्र-तट पर स्नान करने गया। उसी दिन जब मेरी म्योरसोल के कमरे मे थी, रेमड की ज़ोर-जोर की आवाज़ सुनाई दी। उसने अपनी तथाकथित प्रेमिका को पीटा था, जिससे लोगो की भीड सीढियो पर एकत्र हो गई थी और पुलिस का एक सिपाही भी वहा आ गया था। सिपाही ने उस लडकी को तो वहा से भगा दिया तथा रेमड को थाने से बुलावा आने तक अपने ही कमरे मे रहने का आदेश दिया। मेरी के चले जाने के बाद रेमड म्योरसोल के कमरे मे आया और उसे अपनी गवाही देने को कहा। म्योरसोल इस बात की गवाही देने को तैयार हो गया कि उस लडकी ने रेमड को धोखा दिया था। इसके पश्चात् दोनो साथ-साथ ही टह-लने गए। रेमड ने म्योरसोल को ब्राण्डी पिलाई। जब वे लौटकर आए तो उनका बूढा पडोसी सलामानो घबराया हुआ अपने कुत्ते को खोज रहा था।

एक दिन रेमड ने म्योरसोल को दफ्तर मे फोन किया कि अगले रविवार की छुट्टी अल्जीयर्स नगर के बाहर समुद्र-तट पर उसके एक मित्र के बगले पर बिताई जाए। म्योरसोल को उसने यह भी बताया कि कुछ अरब उस दिन सुबह से उसका पीछा कर रहे है, जिनमे एक तो उस लडकी का भाई था जिसे उसने अपमानित किया था। यदि घर

लौटते समय वह उन्हे चक्कर काटते देखे तो उसे इशारे से बता दे। म्योरसोल ने रेमड से हा कर ली। इसी दिन म्योरसोल के साहब ने पेरिस मे कम्पनी की शाखा खोलने के सिलसिले मे म्योरसोल से पूछा कि वह पेरिस जाना चाहता है, या नही ? तो उसने कहा कि कही भी रहे, उसके लिए एक ही बात है। म्योरसोल के निरपेक्ष भाव से साहब को दु ख ही हुआ जब उसने कहा, "साहब, अपने वास्तविक जीवन को क्या कभी कोई बदल पाया है ? जैसा एक ढर्रा, वैसा ही दूसरा। जीवन का अब जो ढर्रा है, मुझे तो उससे भी कोई शिकायत नही।" इसपर साहब ने कहा कि उसमे महत्त्वाकाक्षा की कमी है। उसी शाम को मेरी ने म्योरसोल से पूछा, "मुझसे विवाह करोगे ?" तो उसने कहा कि यदि वह चाहती है तो कर लेगा। मेरी ने पूछा, "मुझे प्रेम करते हो ?" तो बोला, "पूछना ही बेकार है। कम से कम इस तरह के प्रश्न का कोई अर्थ नही है। फिर भी लगता है, मेरे मन मे तुम्हारे लिए प्रेम जैसा कुछ नही है।"

"यदि ऐसा है तो विवाह किसलिए करोगे ?"

"वास्तव मे इससे क्या आता-जाता है ? हा यदि विवाह से तुम्हे सुख मिलता हो तो चलो, अभी इसी क्षण किए लेते है।"

ये बाते म्योरसोल की परिस्थितियो से तटस्थ रहने की प्रवृत्ति को स्पष्ट करती है। इसके बाद म्योरसोल और मेरी घूमने गए। मेरी तो फिर घर चली गई और म्योरसोल सेलेस्ते के रेस्तरा मे भोजन करके घर लौटा। कमरे के दरवाज़े की ओर मुडते ही उसे बूढा सलामानो मिल गया जो अपने कुत्ते का रोना रोता रहा। उसे अपने कुत्ते के खो जाने का बहुत दु ख था। कुत्ते के पालने से लेकर अब तक की कहानी उसने म्योरसोल को सुनाई। जाते-जाते भी वह अपने कुत्ते के सम्बन्ध मे बाते करता रहा था।

आखिर रविवार भी आ गया और मेरी तथा म्योरसोल स्नान के कपडे लेकर प्रात काल समुद्रतट की ओर चल दिए। रेमड भी उनके साथ था। जब वे समुद्रतट की ओर जा रहे थ तब रेमड ने बताया कि अरब उसका पीछा कर रहे है। इस बात से रेमड परेशान भी दिखाई देता था। जैसे-तैसे उन्होने बस पकडी और रेमड के दोस्त मैसन के बगले पर जा पहुचे। मैसन का बगला समुद्रतट के पास तो था ही। बगले पर पहुचकर रेमड ने मैसन से म्योरसोल का परिचय कराया। मैसन की पत्नी भी उसके साथ थी। मैसन ने म्योरसोल को बताया कि वह अपनी छुट्टिया उस बगले पर ही बिताता था। बातचीत करते हुए मैसन, मेरी और म्योरसोल समुद्र मे तैरने चले गए। रेमड और मैसन की पत्नी वही बाते करते रहे। उधर तीनो काफी देर तक तैरते रहे। फिर थोडी देर तक मैसन म्योरसोल तथा मेरी रेत पर धूप मे लेटे रहे। बाद मे मैसन तो बगले पर चला गया किन्तु मेरी और म्योरसोल फिर जल-क्रीडा मे व्यस्त हो गए। जब वे लौटे तो मैसन बगले की सीढियो पर खडा भोजन के लिए पुकार रहा था।

भोजन के पश्चात् मेरी और मैसन की पत्नी वही रही, और मैसन, रेमड तथा म्योरसोल घूमने चल दिए। जब तीनो समुद्र के किनारे-किनारे चले जा रहे थे और भटकी हुई लहरे उनके पावो को भिगो रही थी तभी म्योरसोल ने देखा कि दो अरब उनका पीछा कर रहे है। उसने रेमड को सकेत से बताया। कुछ देर मे ही वे पास आ गए। मैसन

और रेमड ने दोनो अरबो को घूसो से पीटा। जिस अरब को रेमड ने घूसो से पीटा उसने अचानक चाकू निकालकर उसपर हमला कर दिया और रेमड की बाह व मुह चाकू से गोद डाले। मैसन इधर आया तो दूसरा अरब पहलेवाले के पास आ गया और दोनो चाकू ताने हुए धीरे-धीरे पीछे हटते गए और भाग गए। मैसन और म्योरसोल कन्धे का सहारा देकर रेमड को बगले तक लाए। मेरी और मैसन की पत्नी रेमड को घायल देखकर घबरा गई, किन्तु मैसन उसे डाक्टर के यहा ले गया। म्योरसोल बगले पर ही रहा। डेढ बजे के लगभग रेमड डाक्टर के यहा से लौट आया और आते ही समुद्र की ओर चक्कर लगाने चल दिया। रेमड ने मैसन और म्योरसोल मे से किसीको अपने साथ नही लिया, लेकिन म्योरसोल उसके पीछे-पीछे हो लिया। जहा तट समाप्त होता था वहा पानी की पतली-सी धारा थी। वह धारा भारी चट्टान के पीछे से निकलकर रेत मे नाली-सी काटती हुई समुद्र मे जा मिली थी। उसी ओर रेमड गया। वहा वे ही दोनो अरब रेत पर लेटे हुए थे। रेमड ने पिस्तौल से उस अरब को भून देना चाहा जिसने उसे घायल किया था, किन्तु म्योरसोल ने उससे कहा कि जब तक वह अपना चाकू निकाले उसे पिस्तौल नही चलानी चाहिए रेमड ने उसकी बात मानकर पिस्तौल उसे दे दी। रेमड पिस्तौल म्योरसोल को देकर अरबो की तरफ बढा ही था कि वे वहा से भाग गए। उसके बाद रेमड और म्योरसोल बगले पर लौट आए। रेमड तो सीढिया चढकर ऊपर चला गया, परन्तु म्योरसोल धूप मे खडा रहा और कुछ देर पश्चात् अकेला तट के पास की चट्टानो की ओर चल दिया। धूप के मारे बुरा हाल हो रहा था लेकिन वह चला जा रहा था। धूप ने उसके भीतर एक उन्माद-सा भर दिया था। वह चट्टान के पारवाली उस सुन्दर जगह पर जाना चाहता था जहा वे अरब मिले थे। उस स्थान पर सुखकर छाह थी। जब म्योरसोल पहुचा तो रेमडवाला अरब अकेला वहा लेटा हुआ था। म्योरसोल ने वहा से चला जाना चाहा किन्तु जा नही पाया। जैसे ही वह अरब की तरफ बढा कि उसने चाकू तान लिया। म्योरसोल ने इसी समय उत्तेजना मे रेमड का पिस्तौल चला दिया। अरब पर उसने पाच गोलिया चलाईं जिससे वह वही मर गया।

अरब की हत्या के अपराध मे म्योरसोल गिरफ्तार कर लिया गया। उसे जाच-मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया जिसने उससे अनेक प्रकार के प्रश्न पूछे। उसने वकील नही किया था इसलिए न्यायालय की ओर से एक वकील उसके लिए कर दिया गया। दूसरे दिन वकील ने म्योरसोल को बताया कि उसके चरित्र के सम्बन्ध मे न्यायालय की ओर से जाच हो रही है और मारेंगो मे हुई जाच मे पुलिस ने इस बात पर ज़ोर दिया था कि उसने अपनी मा की अन्त्येष्टि मे बडी हृदयहीनता दिखाई थी। वकील ने उससे कहा कि वह मुकदमे मे यही बताए कि वह अपनी मा से बहुत प्यार करता था और उसके मरने का उसे बहुत दु ख है। इसके पश्चात् उसी दिन जाच-मजिस्ट्रेट ने म्योरसोल से हत्या के सम्बन्ध से पूरा हाल पूछा। उसने रेमड के मिलने से लेकर समुद्र पर जाने और अरबो से झगडा होने तथा दुबारा समुद्र तट पर जाकर अरब पर गोलिया चलाने तक का हाल उसे बता दिया। यही कहानी म्योरसोल को कई बार सुनानी पडी थी इसलिए वह ऊब गया था। मजिस्ट्रेट ने उससे पूछा कि क्या वह अपनी मा से प्यार करता था, तो उसने बताया

कि जैसे और लोग मा से प्यार करते है वैसे वह भी करता था। मजिस्ट्रेट ने पूछा कि उसने अरब पर गोली क्यो चलाई। जब इस बात का म्योरसोल कोई उत्तर नही दे सका तो वे सूली चढे ईसा की मूर्ति दिखाकर कहने लगे कि उसे अपने पाप के लिए पश्चात्ताप करना चाहिए और ईश्वर के न्याय पर विश्वास करना चाहिए। जाच-मजिस्ट्रेट की बाते सुनकर म्योरसोल ऊब गया था लेकिन वे उसे उपदेश देते ही रहे। अन्त मे वे इस बात पर जोर देते रहे कि वह अरब पर एक गोली चलाकर रुक गया था तो दुबारा चार गोलिया उसने क्यो चलाई। जब म्योरसोल ने पूछने पर कहा कि वह ईश्वर को नही मानता तो मजिस्ट्रेट आश्चर्य करने लगा। उसने कहा, "अपने जीवन मे मैंने तुम जैसा जड और हृदयहीन प्राणी नही देखा। आज तक न जाने कितने मुजरिम यहा आए है और सबके सब भगवान की इस यत्रणा-मूर्ति को देखकर फट-फूटकर रोए है।" फिर भी म्योर-सोल का मन इस बात को मानने के लिए तैयार नही था कि वह अपराधी है। इसके बाद भी कई बार मजिस्ट्रेट के सामने म्योरसोल की पेशी हुई, परन्तु प्रत्येक बार वकील उसके साथ रहा। म्योरसोल के बयानो पर ही विवाद होता रहा।

इन दिनो म्योरसोल जेल मे बन्द रखा जाता था। प्रारम्भ के दिनो मे तो यह उसे अनुभव ही नही हुआ कि वह जेल मे रहता था। उसे अब भी यह आशा बनी रहती थी कि अचानक कोई ऐसी बात होगी जिससे वह इस झझट से छुटकारा पा जाएगा। सोने का गद्दा, टीन का तसला और बाल्टी म्योरसोल को भी दे दिए गए थे। कालकोठरी मे उसे रखा गया था। मेरी उससे मिलने आई तो कहने लगी, "तुम देखना, सब ठीक हो जाएगा। फिर हम लोग शादी कर लेंगे।" म्योरसोल ने पूछा, "सचमुच तुम यही सोचती हो न ?" तब वह कहने लगी, "हा, हा, तुम छूट जाओगे। फिर हम लोग उसी तरह हर रविवार को स्नान करने जाया करेंगे।" इन बातो से म्योरसोल की तटस्थता और बनी रही। फिर भी उसकी यह दशा कुछ ही महीनो तक चली। बाद मे वह भी औरो की तरह सोचने लगा। वह खुले चौक मे टहलने के वक्त को और वकील के आने की राह देखा करता। अकेलेपन को इसी तरह काटना उसका स्वभाव बन चला। एक दिन उसने पानी पीने के तामलोट को खूब घिस-घिसकर साफ किया और अपना चेहरा उसमे देखा ती उसे अपने मुख का भयानक-गम्भीर भाव ज्ञात हो गया। मुस्कराने पर भी इस गम्भीरता मे कोई अन्तर नही आया। इस मनहूसी ने उसे निराश-सा कर दिया। जेल की उदासी और मनहूसियत ने उसे भी प्रभावित कर दिया था। धीरे-धीरे इसी तरह दिन बीतते गए। मा की अन्त्येष्टि आदि की बाते उसे रह-रहकर याद आती।

ग्रीष्म के महीने मे उसका मुकदमा न्यायालय मे चलने लगा। कैदियो की गाडी मे बिठाकर उसे न्यायालय ले जाया गया। उसे कठघरे मे खडा कर दिया गया और मुक-दमे की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। जज, जूरी, पत्रकारो आदि के साथ दर्शको की भीड भी वहा थी। रेमड, मैसन, सलामानो तथा मेरी आदि ने म्योरसोल के पक्ष मे गवाहिया दी। म्योरसोल से भी प्रश्न पूछे गए। सरकारी वकील ने म्योरसोल को हत्यारा सिद्ध करने का प्रयास किया। उसने तर्क दिया कि म्योरसोल हृदयहीन है और मा की अत्येष्टि के समय उसने उदासीनता दिखाई और उसके दूसरे दिन ही उसने मेरी के साथ मज़ाकिया फिल्म

देखी, मेरी के साथ सहवास किया, उसे मा के मरने का दु ख ही नही हुआ। रेमड के साथ षड्यत्र करके उसने पत्र लिखा जिसमे रेमड की प्रेमिका उसके कमरे मे ग्रा गई और रेमड ने उसे अपमानित किया। रेमड से उसने पिस्तौल लिया और जान-बूझकर अरब की हत्या करने घटनास्थल पर जा पहुचा। एक बार गोली चलाने पर जब उसने देखा कि अरब मरा नही तो दुबारा गोली चलाई आदि।

एक हत्यारे की सी हृदयहीनता म्योरसोल मे आरम्भ से थी—इस बात पर सरकारी वकील ने बहुत जोर दिया। म्योरसोल ने अपने अपराध पर पश्चात्ताप नही किया, यह भी हृदयहीनता का चिह्न माना गया। न्याय के नाम पर सरकारी वकील ने म्योरसोल को फासी की सजा देने की सिफारिश की। दूसरे दिन म्यारसोल के वकील ने सफाई के तर्क दिए और उस उत्या को 'उत्तेजना मे की गई हत्या' कहकर अपराव की गुरुता को कम सिद्ध किया। उसने म्योरसोल को सच्चरित्र और परिश्रमी नवयुवक सिद्ध करने का प्रयास किया। जूरी ने इसके पश्चात् उत्तर पढकर सुनाया और प्रधान जज ने फैसला दिया कि फ्रासिसी जनता के नाम पर चौराहे पर खडा करके म्योरसोल की गरदन उडा दी जाए। फैसला सुनाने के बाद जेल मे पादरी ने म्योरसोल से मिलना चाहा जिससे वह अपने पापो को स्वीकृन कर ले, किन्तु तीन बार उसने मिलने से मना कर दिया। अन्त मे पादरी उसकी कोठरी में आ ही गया और उसे पश्चात्ताप करने को कहने लगा। इन बातो से म्योरसोल खीझ उठा। वह ईश्वर की कृपा पर विश्वास करने को तैयार नही था। वह ज़ोर-जोर से चिल्लाकर पादरी की बातो का प्रतिवाद करने लगा और झपट-कर उसने पादरी के लबादे का गरेबान पकड लिया। जब पादरी वहा सेचला गया तब भी उत्तेजना से म्योरसोल की सास उखडी हुई थी। थकान के कारण म्योरसोल इसके पश्चात काफी देर तक पडा सोता रहा। उसे अपनी मा की याद हो आई। मरने से कुछ पहले के दिनो मे उसकी मा के जो महाशय पीरे से घनिष्ठ सम्बन्ध हो गए थे, और जिनके बारे मे म्योरसोल को बहुत आश्चर्य होता था, अब उनका औचित्य भी उसकी समझ मे आने लगा।

अब म्योरसोल आत्मशक्ति बटोरने मे लगा था, ताकि फासी के समय भी पहले की तरह वह प्रसन्न रह सके। वह सोचता था कि यह स्थिति भी तो एक तरह की यात्रा ही है।

प्रस्तुत उपन्यास फ्रास के सास्कृतिक जीवन पर प्रकाश डालता है। उपन्यास के आधुनिकवादी मानदण्डो में 'चरित्र-चित्रण' और 'पात्र' पर विशेष जोर नहीं दिया जाता, व्यक्ति के भीतरी पक्ष का वर्णन अधिक उल्लेखनीय माना जाता है। इस उपन्यास में वही बात अधिक परिलक्षित होती है।

रंजक उपन्यास

तीसमारखा

[डॉन क्विक्जोट[1]]

सरवाते, मिग्युएल डि सावेद्रा इस स्पेनिश उपन्यासकार का जन्म स्पेन में १५४७ में हुआ। कहते है आपका ज मस्थान अलकला डि हिनारेज था। आपके पिता वैद्य थे जो जगह-जगह जाकर लोगों का इलाज करते थे। यौवन में सरवाते ने इटली की सेना में नौकरी की। एक बार जलयुद्ध में आप घायल हो गए। समुद्री डाकू आपको पकड ले गए। पाच बरस तक वे एल्जीयर्स में कैदी बनाकर रखे गए। जब डाकुओं को आपका मूल्य चुका दिया गया तो आप छूटकर स्पेन आ गए। घर आते ही कविताए और नाटक लिखने शुरू कर दिए। इधर वे बहुत कजदार हो गए थे। १६०४ में आपका 'डॉन-क्विक्जोट' नामक यह महान पुस्तक निकली और प्रसिद्ध हुई। इन दिनों आप सख्त बीमार थे, गरीबी ने आपकी हालत खराब कर रखी थी। इसी बीमारी और गरीबी के कारण मैड्रिड में २३ अप्रैल १६१६ को आपका देहान्त हो गया।

आपने 'डॉन क्विक्जोट' (तीसमारखा) में हास्य के माध्यम से ह्रासोन्मुख साम त वर्ग पर गहरा व्यग्य किया है। आज भी आपका यह उपन्यास बिलकुल नया सा लगता है।

लामाचा प्रदेश के एक गाव मे एक पुराने ढग के सज्जन रहा करते थे। उनके तीन साथी थे—एक लम्बा भाला, एक मरियल घोडा और एक शिकारी कुत्ता। गाय के सूखे और कटे हुए मास को वे भेड के मास से ज्यादा पसन्द करते थे। गोमास वे रात को खाते थे। शुक्रवार के दिन केवल कुछ हरी सब्जी लेते थे। शनिवार के दिन वे उपवास करते और आहे भरा करते। इतवार के दिन एक विशेष ढग से पका हुआ कबूतर खाते थे। पीने का मामला यह था कि खब शराब पीते थे। और जो आमदनी बाकी बच रहती उससे एक फर का कोट, मखमली बिरजिस और मखमली कुर्ता चाव से खरीदकर पहनते। छुट्टी के दिन उनकी छटा देखने लायक होती थी। काम के दिन वे घर के बुने कपडे पहना करते थे।

वैसे उनके सारे परिवार मे था ही क्या—घर की देखभाल करने के लिए चालीस साल का एक नौकर और एक भतीजी, जो बीस साल की भी नही थी। उनका वफादार नौकर उनके घर की देखभाल तो करता ही था, साथ ही घोडे की जीन भी कसता था और खेती के सब काम भी उसीके ज़िम्मे थे। मालिक करीब पचास के थे—तन्दुरुस्त, लम्बे, पतले-दुबले, चेहरा-मोहरा सूखा-सा। अलस्सुबह उठ जाते। शिकार खेलने के शौकीन थे। कुछ

---

१ Don Quixote (Miguel De Saavedra Cervantes)

लोग कहते है उनका नाम क्विकराडा था, और कुछ लोग क्विकसाडा कहते है। इस बारे मे अलग-अलग लेखको की अलग-अलग राय है। जो हो, हम यह मान लेते है कि उनका नाम क्विकजाना था—जिसका अर्थ है 'चोडे जबडोवाला', हालाकि हमारा इससे कोई खास मतलब हल नही होता। बहरहाल, इतिहास लिखते वक्त तो सच्चाई की तरफ हमको देखना ही पडेगा।

हमारे इन बुढऊ सज्जन को कोई काम करने को नही होता था—करीब-करीब पूरा साल ऐसे ही गुजर जाता था। आखिर उन्हे किताब पढने का शौक चर्राया—और किताबे भी कैसी, कि वीरता की कहानिया, पुराने वीर नायको की साहसिक कथाए। रस-विभोर होकर, वे ऐसी पुस्तको मे इस कदर डूब जाते कि कुछ दिन बाद उन्हे अपना शिकार-विकार भी भूल गया, अपने घर और अपनी जायदाद की चिन्ता भी भूल गई। वे तो उन कहानियो के आनन्द मे इतने डूब गए कि अपनी बहुत-सी अच्छी जोतने-बोने लायक जमीन बेच दी। किसलिए ? कि किताबे खरीद सके। और किताबे भी कैसी ? कि जिनमे ऐसी साहसिक कहानिया हो। इस तरह से उन्होने किताबो का ढेर लगा लिया। वे अकसर गाव के पादरी से तर्क-वितर्क करते हुए झगड बैठते थे। पादरी उनका मित्र था और पढा-लिखा आदमी था। उनकी बहस अपने मित्र निकोलस से भी हुआ करती, जो उस कस्बे का नाई था। यो पढते-पढते, पढते-पढते, रात को बैठते तो सुबह हो जाती, और सुबह को बैठते तो रात हो जाती। सोते कम, और पढते ज्यादा। धीरे-धीरे उनके दिमाग का रस सूख गया, और इस कदर सूख गया कि अक्ल उसमे से गुम हो गई। उनका दिमाग छाया-मात्र-सा रह गया, कुछ ऐसा कि कुछ इस किताब मे से लिए गए विचार और कुछ उस किताब मे से लिए हुए विचार। और उनके दिमाग मे कुछ नही था—बस कल्पना की एक भीड थी—जादू, झगडे, लडाइया, जोखिम, शिकायते, प्रेम, पथराई आखे, तडपन और ऐसी असम्भव बाते उनके भीतर भर गई जिनका कोई अन्त दिखाई नही देता था।

इस तरह अपनी विवेक-शक्ति को खोकर एक दिन उनके मस्तिष्क मे एक विचित्र विचार आया—ऐसा, जो शायद कोई पागल ही सोच सकता था। अब उन्हे यह उचित और अनिवार्य लगा कि अपना गौरव बढाने के लिए और जनता मे अपना प्रभाव व्याप्त करने के लिए वे प्राचीन वीर नायको के समान निकल पडे और सारे ससार मे भ्रमण करे। उन्होने सोचा कि उन्हे भी कवच धारण कर, घोडे पर सवार होकर नई-नई दुस्साहसपूर्ण यात्राओ पर निकलना चाहिए। क्योकि वीर नायको के बारे मे उन्होने पढा था, जो ससार के दु ख दूर करने को घूमा करते थे और ऐसा करते वक्त भारी खतरे उठाया करते थे। उन्हे भी आशा हुई कि ऐसे साहसो से अन्त मे वे भी एक शाश्वत गौरव प्राप्त कर सकेंगे और उनका यश दिगन्त मे फैल जाएगा।

पहला काम जो उन्होने किया, वह यह कि अपने परदादा के भारी कवच को भीतर से निकाला। वह बहुत पुराना हो गया था। अरसे से किसीने उसे छुआ तक नही था। उसपर जग लग गया था। कौन जानता था कि एक दिन उसका फिर से प्रयोग किया जाएगा। इसके बाद वे अपने मरियल घोडे के पास गए। उसकी हड्डिया निकल आई

थी। चार दिन उनको यह सोचने मे ही लग गए कि आखिर इस घोडे को नाम क्या दिया जाए। एक नाम तय किया, फिर उसको रद्द कर दिया। फिर दूसरा तय किया, वह भी कुछ पसन्द नहीं आया। पसन्द किया गया, नापसन्द किया गया—बस, इसी प्रकार चलता रहा। आखिर मे उन्होने उसका नाम रोजेनान्ते रखा। जब घोडे को नाम दे दिया गया तो उनका मन सतुष्ट हो गया। अब समस्या यह आई कि अपने लिए कौन-सा बढिया-सा नाम चुने, जो वीरता एव शौर्य का सूचक हो। बडी गम्भीरता से इसपर विचार करने के बाद—आठ दिन तक परिश्रम करने के बाद—उन्होने यह निश्चय किया कि वे अपना नाम रखे डॉन क्विक्ज़ोट। दो बाते पूरी हो गई। आखिरी रह गई। प्राचीनकाल के वीर नायक अपने लिए एक प्रिया चुन लिया करते थे, जिसके लिए वे अपने हृदय को समर्पित कर दिया करते थे। ऐसी कौन-सी स्त्री हो सकती थी, जिसके लिए वे इस ससार मे काम करे ? घर के निकट ही एक गवई लडकी रहा करती थी। उसके प्रति इनका हृदय कुछ आकर्षित भी था, हालाकि वह बेचारी कुछ नही जानती थी कि उसपर कौन मर रहा है, और न इसके बारे मे उसकी कोई रुचि ही थी। उसका नाम था अलडोलन्जा सोरेन्जा। हमारे वीर क्विक्जोट ने यह निश्चय किया कि उसका नाम भी बदला जाना चाहिए, और उसका नाम उन्होने रखा डलसीनिया। और जिस जगह वह पैदा हुई थी, उस स्थान के नाम पर उन्होने उसके नाम के आगे डल्टेवोसो और जोड दिया। सब तैयारिया पूरी हो गईं। अब काम करने की ज़रूरत थी। इस समय अपने-आपको रोक लेना एक जुर्म के बराबर था, क्योकि दुनिया एक ऐसे मसीहा का इन्तज़ार कर रही थी जो उसके दुःखो को दूर कर सके।

एक दिन भोर मे मुह-अधेरे, अपनी कल्पना मे मग्न, अपने इरादो को पूरा करने के लिए, उन्होने अपना कवच पहना, अपना भाला थामा, रोजेनान्ते पर चढे और अपने घर के पिछवाडे के दरवाज़े से चुपचाप बाहर निकल गए।

सारा दिन निकल गया यात्रा करते-करते। कोई भी साहस दिखाने योग्य वस्तु मार्ग मे दिखाई नही दी। उनके हृदय मे निराशा भरने लगी, क्योकि वे चाहते थे कि निकट भविष्य मे ही, पास मे ही कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाए जिसपर अपना ज़ोर आज़मा सके, जिसको अपनी भुजाओ का पराक्रम दिखा सके। धीरे-धीरे साझ हो गई और उन्हे दूर से एक सराय दिखाई दी। हमारे वीर नायक ने कल्पना की कि वह एक सराय नही थी, बल्कि एक किला था। किले की कल्पना ने ही उनकी रगो मे खून दौडा दिया। उसी समय ऐसा हुआ कि सूअर पालनेवाला एक व्यक्ति अपना सिंहा बजाने लगा। डॉन क्विक्ज़ोट को लगा कि कोई तुरही बज रही है, मानो एक बौने ने किलेवालो को उनके आगमन की सूचना दे दी थी। उनके हृदय मे अत्यन्त हर्ष प्रवाहित होने लगा और वे सराय के दरवाजे तक घोडे पर सिर उठाए जमे बैठे रहे। सरायवाले ने उसकी विचित्र वेश-भूषा देखी तो उसको हसी आ गई, क्योकि उसने ऐसे विचित्र व्यक्ति को कभी देखा नही था। वह बोला, "हे वीर नायक, श्रीमत, अगर आपकी इच्छा हो तो उतर जाइए। यहा आपको प्रत्येक वस्तु मिल जाएगी। केवल शय्या का अभाव है, बाकी जितनी भी आवश्यकताए हैं, वे आपको मिल जाएगी। आप केवल उनकी कल्पना-भर कर ले।"

डान क्विक्जोट ने जब किले के मालिक की ऐसी विनम्रता देखी, तो उनकी, दुर्ग की एक कल्पना पूरी हो गई। अब दूसरी कल्पना का तोष भी आवश्यक हो गया। वे सराय के मालिक यानी दुर्गपति से बोले, "दुगपति, मुझे तो ससार मे कम से कम वस्तुओ से भी सतोष हो जाता है। मै तो केवल इन शस्त्रो और कवच-मात्र की अत्यधिक चिन्ता करता हू। युद्ध-भूमि ही मेरे लिए शय्या है।"

जब वे भोजन कर चुके तो उन्होने सराय के मालिक—दुर्गपति—को बुलाया। अस्तबल तक उसके साथ गए। वहा उसके चरणो पर गिर पडे और बोले, "मैं कभी इस स्थान से नही उठूगा। ओ मेरे करुणामय दुर्गपति ! तुम मुझे एक वरदान दो, उस वरदान से तुम्हारा गौरव और सम्मान मानवता के कल्याण के लिए द्विगुणित हो जाएगा !"

दुर्गपति उर्फ सराय का मालिक यह देखकर घबरा गया और उसने बडी कठिनाई से उनको उठाया, लेकिन फिर भी वह सफल नही हो सका, क्योकि वे दुर्गपति के चरणो पर गिर-गिर पडते थे और निरन्तर वरदान मागते रहे। डॉन क्विक्जोट ने कहा, "हे मेरे करुणामय, दुर्गपति, मुझे आपसे ऐसी ही आशा थी, इसलिए मै आपसे यह वरदान मागता हू। हे दयालु, कल ही मुझे वीर नायक का पद आप दे दे। यह हो जाने से मेरी कल्पना सतुष्ट हो जाएगी और आप जैसे वीर के लिए यह करना कोई कठिन भी नही है। आज रात आप देखिए कि मैं आपके दुग मे क्रूस तले अपने कवच की रक्षा कैसे करता हू, और प्रात काल आप, मेरे शौर्य को देखकर, मुझे सन्तुष्ट कर दीजिएगा।"

जब सराय के मालिक ने उन्हे इस तरह ऊटपटाग बकते हुए देखा तो वह समझ गया कि उसके इस अतिथि के दिमाग मे कुछ खलल है। उसने सोचा कि आज की रात कुछ दिल्लगी की जाए। वह बोला, "हे वीर ! इस समय बात ऐसी है कि क्रूस तो दुर्ग मे नही है। पहलेवाला क्रूस बहुत पुराना पड गया था, अत नया बनवाने के लिए मैंने उसे उतरवा दिया, लेकिन जहा तक आपके शस्त्रो की देखभाल का सवाल है, आप दुर्ग के आगन मे अपना काम कर सकते है। सुबह बाकायदा एक उत्सव मना लिया जाएगा और आपको वीर नायक की पदवी दे दी जाएगी।"

यह बात तय हो गई। डॉन क्विक्ज़ोट दुर्ग के आगन मे आ गए। विशाल प्रागण था। सराय के बगल की जमीन तमाम खाली पडी थी। अब वीर नायक डॉन क्विक्ज़ोट ने अपने कवच को उतारा। अपने भाले को ठीक से थामा। अपने सारे वस्त्रो को समेट लिया। वहा पास ही एक कुआ था, और कुए के बगल मे घोडो को पानी पिलाने के लिए एक हौज़-सा बना हुआ था। अधेरा गहरा होने पर, अपने कवच और भाले को हाथो मे थाम, वे कुछ देर इधर-उधर चहलकदमी करते रहे और फिर बडे गौरव के साथ चलते हुए उस हौज़ के निकट गए। दूर से सरायवाले ने देखा और बाकी लोगो ने भी, जो इस कौतुक को देख रहे थे, कि डॉन क्विक्ज़ोट ने अपने कवच और वस्त्रो को उस हौज़ के अन्दर रख दिया। इसके बाद उनकी टकटकी उस हौज़ की ओर ही लगी रही। वे अपने वस्त्रो-शस्त्रो की चौकसी कर ही रहे थे, कि एक सईस को पानी की ज़रूरत पडी। वह चाहता था कि अपने खच्चरो को कुछ पानी पिला दे, लेकिन मुसीबत यह थी जब तक कवच हौज़ मे से हटाया

नही जाए, वह उसमे से पानी नही ले सकता था। डॉन क्विक्जोट ने सईस को देखा तो चिल्लाकर बोले, "खबरदार ? जो कोई भी हो, कायर या वीर, यह सोच ले, मेरे अस्त्रो पर अगर तूने हाथ डाला तो आज तक तुझे ऐसा वीर नायक नही मिला होगा ! मेरे प्रत्येक शब्द को तू खड्ग-समान समझ ! सावधान हो, ऐसी दुष्टता न कर ! यदि तूने अपने अपवित्र हाथो मे मेरे अस्त्रो का स्पर्श भी किया तो समझ ले कि मृत्यु तेरे सिर पर मडरा रही है और वह तेरे सिर पर टूट पडेगी ! तेरी हिमाकत का नतीजा सिवाय इसके और कुछ नही होगा !"

पानी ले जानेवाले ने देखा कि एक आदमी उसके सामने बुरी तरह चिल्ला रहा है। उसने सोचा कि आखिर यह मेरा क्या कर लेगा ! उसने उनकी ओर कोई ध्यान नही दिया। और तस्मे पकडकर कवच को बाहर खीच लिया, बिना किसी तरफ ध्यान दिए उसने उसे दूर फेक दिया और अपने काम मे लग गया। डॉन क्विक्जोट ने इस अपमान को देखा। पहले आख आकाश की ओर उठाई और मन मे श्रीमती डलसीनिया से बात करते हुए बोले, 'हे देवी, मेरी सहायता करो !' और पुकार उठे, 'यह मेरे जीवन का, यह तुम्हारे दास का पहला सघर्ष है, इसमे मुझको बल दो !' इस प्रकार प्रेमिका का ध्यान करते हुए उन्होने अपना भाला दोनो हाथो से उठा लिया और पानी ले जानेवाले के सिर पर इतने जोर से मारा कि उसका सिर फट गया। वह घायल होकर, पीडा से व्याकुल होकर पृथ्वी पर गिर गया। जब यह हो गया तो डॉन क्विक्जोट ने कवच उठा लिया और फिर हौज के अन्दर जा रखा। तदुपरात उसके चारो ओर इस प्रकार चहलकदमी करने लगे, जैसे कुछ हुआ ही नही हो।

सरायवाले ने जब इस घटना को देखा तो यह पागलपन उसे पसन्द नही आया क्योकि इसमे उसको खतरा था। लिहाजा, उसने यह ठीक समझा कि उनको वहा से टरकाया जाए और वह 'अभागा' वीर नायक का पद शीघ्र दे दिया जाए, ताकि कोई ज्यादा गडबडी न हो। इसलिए वह आगे आया और बोला, "श्रीमत, वीर नायक, इस मूर्ख ने आपका अपमान करने की चेष्टा की, इसलिए आप उसको क्षमा कर दे। आपने इस योग्यता से अपने शस्त्रो की देखभाल की है, कि आपकी मुक्त-कठ से प्रशसा करनी होगी। अब आप तैयार हो जाइए। मैं इसी समय आपको वीर नायक का पद प्रदान करता हू, जिससे आप आगे बढ सके !"

यह कहकर, जिस बही मे वह कहार का हिसाब लिखा करता था और फूस और अनाज लानेवाले का हिसाब चढाया करता था, उसी बही को लेकर वह खडा हो गया। डॉन क्विक्ज़ोट उसके सामने घुटनो के बल बैठ गए। तब सरायवाले ने अपने रोजनामचे को कुछ ऐसे पढने हुए, जैसे पवित्र मत्रो का उच्चारण कर रहा हो, अपने हाथ ऊपर उठाए, मानो वह किसी गम्भीर विचार मे डूब गया हो। तब उसने एक तलवार ली। तलवार की चपटी ओर से उसने डॉन क्विक्ज़ोट की गदन पर हलका-सा आघात किया और पीठ थप-थपाई। जब वह यह असाधारण कृत्य कर चुका तो उसने, जैसे वह बहुत जल्दी मे हो, डॉन क्विक्ज़ोट को वीर नायक की पदवी दे दी। और डॉन क्विक्जोट तुरन्त वहा से चल दिए, क्योकि अब जीवन मे नये-नये 'एडवेचर' की आवश्यकता थी। अभी वे दो मील भी नही

गए थे कि उनको सामने से कुछ लोग आते दिखाई दिए। वे रोलेडो के सौदागर थे। ज्योही नायक महोदय ने उन्हे देखा, उनकी कल्पना जग उठी। उन्हे ऐसा लगा कि सामने से कोई शत्रु आ रहे है। तुरन्त रकाब पर खडे हो गए और घोडे को सन्नद्ध कर लिया, भाला उठा लिया और सीने के आगे अपनी ढाल लगा ली और बीच सडक पर खडे होकर पुकारने लगे, "रुक जाओ! सब रुक जाओ! अब यह आशा छोड दो कि तुम इस पथ से बचकर निकल सकोगे। पहले इस बात को स्वीकार कर लो कि इस समस्त ब्रह्माण्ड पर लामाचा की सम्राज्ञी अतुलनीय रूपवती डलसीनिया डेल्टेवोसो के अतिरिक्त और कोई भी ऐसी स्त्री नही है जिसका कि वर्णन किया जा सकता है, सौन्दर्य मे वह सिरमौर है।" सामने से आनेवाले लोगो ने जब यह देखा तो उनको यह लगा कि बूढे का दिमाग चल गया है। एक सौदागर उनमे दिल्लगीबाज था। उसने कहा, "श्रीमत, मैं आपकी बात समझा नही। वीर नायक, आप जिस सुन्दरी की बात कर रहे है, हम उसे नही जानते। पहले इसे प्रमाणित करने के लिए, कि वह अप्रमेय सुन्दरी है, आप उनके दर्शन हमे कराए, अन्यथा हम आपकी बात को कैसे स्वीकार कर सकते है!"

डॉन क्विक्ज़ोट ने कहा, "यदि मैने एक बार वह सौन्दर्य तुमको दिखा ही दिया, तो इतनी बडी सच्चाई को स्वीकार करने मे कमाल ही क्या रहा! उसके रूप का महत्त्व तो इसीमे है कि तुम उसको अभी स्वीकार करो, तुम उसको मान लो, तुम उसके बारे मे सौगन्ध खाओ और उसके गुण बार-बार बखानो लेकिन उसको देखो नही।"

सौदागर ने उत्तर दिया, "श्रीमत, वीर नायक, आप रुष्ट न हो, हमपर कृपा करे। न हो तो हमे उनका चित्र ही दिखा दिया जाए, अन्यथा हम कैसे इस बात पर विश्वास कर ले? हा, चित्र के दर्शन के उपरात सम्भवत यह निश्चित रूप से मान लिया जाएगा कि आपकी अप्रमेय सुन्दरी की एक आख खराब है अथवा वह कानी है और दूसरी आख से कीच निकलता रहता है। फिर भी जैसा आप चाहेगे, वह कहने को हम तत्पर हो जाएगे।"

डॉन क्विक्ज़ोट ने रोष से कहा, "ओ नीच, ओ अधम, क्या कहा तूने? आख से कीच निकलता है! अरे तू नही जानता कि अगर उसके अन्दर से कुछ निकलता भी है तो कस्तूरी के अतिरिक्त कुछ नही निकलता। लेकिन तूने इतना भयानक अपमान किया है मेरा, कि इसके लिए तुझे दड स्वीकार ही करना पडेगा।"

यह कहकर उन्होने अपना भाला उठा लिया और इतनी ज़ोर से सौदागर पर हमला किया कि सब लोग देखते रह गए। किन्तु सौदागर का भाग्य अच्छा था, कि इतने मे रोज़ेनान्ते के पैर लडखडाए और वह रास्ते के बीच मे ही गिर पडा। आक्रमणकारी वीर नायक नीचे लुढक गया। काफी चोट आ गई। एक सईस डॉन क्विक्ज़ोट के पास आ गया जो नीचे पडे चिल्ला रहे थे। उनका भाला उसने ले लिया और उसके टुकडे-टुकडे कर दिए। एक डडा लेकर उसने वीर नायक की अच्छी तरह पिटाई की। डॉन क्विक्ज़ोट की मरम्मत करके सौदागर अपने रास्ते चले गए।

वीर नायक का भाग्य अच्छा था। एक किसान उधर से गुज़रा। दूर से उसने पृथ्वी पर किसीको पडे हुए देखा। वह चक्की से लौट रहा था। उसके कधे पर आटे का

बोरा था। भला आदमी था। उसने घायल वीर नायक को उठाया। अत्यन्त कठिनाई से उन्हे अपने गधे पर चढाया। बेचारे वीर नायक के हथियार और कवच रोजेनान्ते की पीठ पर लादे, और उन दोनो को नायक के गाव की ओर हाक ले चला।

उधर पादरी और नाई, डॉन क्विक्जोट की भतीजी और उसका नौकर सब लोग घर के बाहर ही प्रतीक्षा कर रहे थे। वे लोग चिन्ता कर रहे थे कि बूढे महाशय न जाने कहा चले गए है। उनको दूर से आता हुआ देखा, तो सब दौड पडे और उनसे लिपट पडे। डॉन क्विक्जोट ने कहा, "दूर हो जाओ, किसी प्रकार धीरज धरो, अपने हृदय को सतोष दो, क्योकि यह समय सकट का हे। मैं बहुत बुरी तरह घायल हो गया हू, क्योकि मेरा घोडा मुझे ठीक समय पर धोखा दे गया। मुझे मेरी शय्या पर ले चलो, और हो सके तो अरगडा नाम की जादूगरनी को बुलाओ, ताकि वह मेरे घावो को ठीक कर सके।"

पन्द्रह दिन बीत गए, पूरे पन्द्रह दिन। वीर नायक चुपचाप अपने घर पर पडे रहे। उन्होने उन दिनो कोई उत्साह नही दिखाया। उन दिनो उनकी बातचीत केवल अपने दो मित्रो से होती रही। वे उनसे कहते थे कि समार को उनके जैसे वीर नायक की आवश्यकता है, और वही एक ऐसे व्यक्ति हो सकते है जो ससार की बुराइयो को दूर कर सके, फिर से शाति और सुख स्थापित कर सकें।

इस बीच मे डॉन क्विक्जोट ने अपने एक पडोसी को बुलाया। वह बेचारा गरीब आदमी था, मजबूर था, पर था भला, ईमानदार। और यो भी गरीब आदमी को ईमानदार ही कहा जा सकता हे। और वह तो पैमे और दिमाग दोनो मे विपन्न था। उसको वीर नायक ने इतनी पट्टी पढाई, इतनी बाते समझाई, इतने तर्क-वितर्क उससे किए, उससे इतने तरह-तरह के वायदे किए कि वह बेचारा सिडी आखिर मे उनके साथ साहसिक अभियान पर चलने को तैयार हो गया। मतलब यह कि वह उनका सहायक हो गया। कई बाते जो उन्होने उसको बताईं, उनमे एक यह भी थी कि ऐसा साहस करके बहुत मुमकिन है कि वे किसी द्वीप की विजय प्राप्त कर ले, और तब वे अपने सहायक को निश्चय हो उसका स्वामी बना देगे। इतना बडा लालच सेन्कोपाजो कैसे नजरअदाज़ कर सकता था। उसने अपनी पत्नी को छोड दिया, बच्चो को परित्याग कर दिया और अपने पडोसी वीर नायक का सहायक बनने के लिए तैयार हो गया।

रात का समय था। दोनो चुपचाप घर से निकले। किसीको भी इसकी आशा नही थी। जब वे चले तो सेन्कोपाजा ने कहा, "हे स्वामी, हे मेरे वीर नायक, मै आपसे प्रार्थना करता हू, कृपया एक बात का फिर मुझे वचन दे दे। जब आप द्वीप पर विजय कर लेंगे तो मुझे उसका स्वामी बनाना तो नही भूलेंगे न ? और विश्वास कीजिए कि मैं बडा अच्छा शासन करूगा। लेकिन एक बात अवश्य है। द्वीप बहुत बडा नही होना चाहिए, अन्यथा मुझे शासन मे कष्ट होगा।"

डॉन क्विक्जोट ने उत्तर दिया, "मेरे दोस्त, मेरे सहायक ! तुम इस बात को जान लो कि वीर नायको मे प्राचीन काल मे यह परम्परा थी कि वे अपने सहायको को किसी द्वीप का या किसी साम्राज्य का स्वामी बना दिया करते थे, क्योकि विजित प्रदेश पर अपने आदमी रखने की आवश्यकता पडा करती थी। अब मैं न केवल उस पुरानी गौरवमयी

परम्परा की रक्षा करूगा, मै उसमे सुधार करूगा। यदि मैं और तुम जीवित रहे और मैंने किसी साम्राज्य को जीत लिया और मैंने कई साम्राज्य अपने अधीन कर लिए तो निश्चय ही मै तुझे अपने कुल विजित साम्राज्य के आधे का सम्राट ही बना दूगा।"

सेन्कोपाजा ने उत्तर दिया, "श्रीमन्, यदि ऐसा हुआ और आपके चमत्कार से, जैसा आप कहते है, मैं सम्राट बन गया तो मेरी पत्नी—मेरी ब्यूटीरेज—रानी हो जाएगी और मेरे बच्चे राजकुमार का दर्जा पा जाएगे।"

डॉन क्विक्जोट ने जोर देकर कहा, "अरे, इसमे भी क्या कोई सन्देह की बात है ?"

सेन्कोपाजा ने कहा, "मुझे इसमें सन्देह है। मै इस बात का विश्वास नही करता। आखिर इस बात का कोई सिर-पैर भी तो हो! आप साम्राज्य की वर्षा कर दे, पृथ्वी पर मेरे सामने एक के बाद एक साम्राज्य आ जाए, लेकिन मेरी पत्नी के योग्य उनमे से एक भी होगा क्या ? मै आपको एक बात बता द, वह तो दो कोडी की भी नही है! नही, नही, उसको रानी बनाना ठीक नही। मै तो यह चाहता हू कि आप उसको काउण्टेस का दर्जा दे दे, रानी का स्थान उसके लिए बहुत ऊचा है।"

इस प्रकार जब वे बाते कर रहे थे, दूर तीस या चालीस पवनचक्किया दिखाई दी जिनके कि पखे सामने से घूमते दिखाई दे रहे थे। ज्योही वीर नायक ने उनको देखा, वे चिल्ला पडे, 'वो, सौभाग्य जाग रहा है, देखो, भाग्य हमे किधर ले आया है! जिधर हम चाहते थे, वही हमारा पथ खुल गया है। देखते हो, मित्र सेन्को, देखते हो, तीस या चालीस भयानक दैत्य सामने खडे दिखते है। अब मेरी लालसा पूर्ण होने का समय आ गया है। मै इनसे युद्ध करूगा। आज मेरा पराक्रम तुम देखना। इन सबको मैं जीवन से विहीन कर दूगा और फिर हम इनकी सम्पत्ति को लूटेंगे। और वह सब न्यायपूर्वक हमारा होगा। इसमे सन्देह नही कि कितनी भयानक है यह जाति, जो सामने खडी है, क्या इसका नाश होने से स्वर्ग के अधिकारी हमसे प्रसन्न नही होगे ? इन लोगो का आतक तो सब लोगो पर जमा हुआ होगा। पृथ्वी इनके भार से काप रही है।"

सेन्कोपाजा ने कहा, "कहा है वे, दिखाइए स्वामी! वे जो आपके सामने दिखाई दे रहे है ?"

डॉन क्विक्जोट ने कहा, "हा, वे जो सामने खडे हुए है। जिनकी विशाल भुजाए घूम रही हैं। कितनी घृणित है यह जाति! इनके हाथ है या विशाल पजो की तरह वायु को फाडे दे रहे हैं। कितनी दूर-दूर तक उनका प्रसार है!"

सेन्कोपाजा ने कहा, "श्रीमत, गौर से देखिए। सामने जो आपको दैत्य दिखाई दे रहे है, वे कोई दैत्य या दानव नही है, वे तो पवनचक्किया है और जिन भुजाओ की आप कल्पना कर रहे है, वे उनके सामने के पखे हैं। हवा उनको चला रही है और वे घूम रहे हैं। उनके घूमने से भीतर पनचक्की चलती है।"

क्विक्जोट ने चिल्लाकर कहा, "मूर्ख, तू क्या जाने! मैं जो तुझसे कहता हू, वे दानव हैं। और यदि तू भयभीत हो रहा है तो उधर सामने खडा हो जा और प्रार्थना कर, क्योकि मैं निश्चय कर चुका हू कि आज के इस कठिन सघष मे, आज के इस भीषण युद्ध

मै पूरी तरह से जूझूगा और इनको पराजित करूगा । तू मेरे शौर्य को देखना । देखना कि मै किस प्रकार आक्रमण करता हू और किस प्रकार देखते-देखते वे विशालकाय दैत्य अपनी भुजाए समेटे पृथ्वी पर गिर जाएगे !"

यह कहकर उन्होने रोजेनान्ते को एड मारी और उनका सहायक पीछे चिल्लाता रह गया, किन्तु उन्होने ध्यान नही दिया। सेन्को पुकारने लगा, "श्रीमन, ये दानव या दैत्य नही, ये तो पवनचक्किया है।" लेकिन डॉन क्विक्जोट अपने विचारो मे इतने मग्न थे, उनकी कल्पना इतनी जाग्रत् हो गई थी कि उन्होने उसकी एक बात भी नही सुनी और कोलाहल मे उसके शब्द डूब गए।

दैत्यो की घूमती हुई भुजाए डॉन क्विक्ज़ोट को आकर्षित करने लगी और वे उत्तेजित होने लगे। वे गरजकर बोले, "ठहर जाओ, कायरो, ठहर जाओ। ओ नीच और जघन्यो, खडे रहो! अब तुम्हारे लिए भागने का मार्ग नही हे। तुम नही जानते कि किस पराक्रमी का सामना तुम्हे करना पडेगा। अपने-आपको सभालो, और देखो कि तुम्हारा काल आ गया है!" उसी समय हवा उठी और एक चक्की का पखा ऊपर उठने लगा। तब डॉन क्विक्जोट ने कहा, "नीच, दुष्ट, तू यह चाहता है कि अपनी ये भीम भुजाए मेरी ओर बढाए, जैसे कि दैत्य बरायारियस अपनी भुजाए फैलाया करता था, लेकिन तुझे इस कुचेष्टा के लिए पछताना पडेगा। मेरे सामने तेरा यह अहकार नही चलेगा!" फिर डॉन क्विक्ज़ोट ने अपनी कल्पना मे पलनेवाली प्रिया कुमारी डलसी-निया का स्मरण किया, मानो फिर भयानक आक्रमण करने के पहले उसकी सहायता की उन्हे आवश्यकता पड गई थी और अपनी ढाल को आगे करके, अपने भाले को झुकाकर, उन्होने रोजेनान्ते को और भी तेजी से दौडाया और पनचक्की के पास जब वे पहुचे तो अपना भाला मारा। हवा बडी तेज़ी से चल रही थी और पखा भी तेजी से घूम रहा था। भाला टकराते ही टुकडे-टुकडे हो गया और पखे की मार से वीर नायक और घोडा दोनो ही उलट-पुलट हो गए और पृथ्वी पर लुढककर गिर गए।

सेन्कोपाजा अपने गधे पर जितनी तेजी से भाग सकता था, अपने स्वामी की सहा-यता के लिए दौडकर गया और उन्हे पृथ्वी पर गिरा हुआ देखा। हिलने-डुलने की शक्ति भी उनमे बाकी नही थी। इतने ज़ोर की चपेट लगी थी पखे की। घोडा भी बेहोश पडा हुआ था। सेन्को चिल्लाया, "दया करो भगवान! हे स्वामी! क्या मैने आपसे पहले ही प्रार्थना नही की थी? क्या मैंने आपको सावधान नही कर दिया था? क्या मैंने पहले ही नही कहा था, ये पवनचक्किया है। ऐसा तो कोई नही सोच सकता था जैसा आपने सोचा था। क्या आपके दिमाग मे पवनचक्किया दैत्य बन गई थी?"

डॉन क्विक्ज़ोट ने उत्तर दिया, "शात रहो, मित्र, शात रहो। भाग्य बडा चचल होता है और युद्ध मे उसका कोई भरोसा नही किया जा सकता। मै जानता हू कि भविष्य-वक्ता फरस्टन ने ही इन दैत्यो को पवनचक्की के रूप मे बदल दिया है ताकि जो गौरव मुझे मिलना चाहिए था वह मुझसे छीन लिया जाए। क्या बताऊ, जब भाग्य विरुद्ध हो जाए, जब ईश्वर मे ही ईर्ष्या उत्पन्न हो जाए तो मै क्या कर सकता हू। लेकिन फिर जो कुछ जितने षड्यत्र है, वे एक न एक दिन मेरी तलवार की धार के नीचे असफल हो

जाएगे और मैं विजयी होकर इस ससार मे प्रसिद्ध होऊगा।"

सेन्को ने उत्तर दिया, "तथास्तु, तथास्तु। किन्तु इस समय तो चलिए।"

यह कहकर उसने उन्हे किसी तरह खडा किया। एक बार फिर वीर नायक अपने मरियल घोड़े पर चढे, क्योकि उसकी भी हालत इस समय पूरी तरह से पस्त हो रही थी।

कुछ दूर तक वे चुपचाप चलते रहे। जब डॉन क्विक्जोट ने सामने से बादलो की एक घुमडन-सी देखी। वे बादल नही थे, वह तो उडती हुई धूल थी। वे ठिठक गए और बोले, "समय आ गया है। वह दिन आ गया है! सेन्को, अब सदैव के लिए प्रसन्नता हमारे जीवन मे आ आएगी। दुर्भाग्य हट गया है। मेरे जीवन मे एक नया आलोक फैलनेवाला है। आज के दिन तुम मेरी भुजाओ की शक्ति देखो। तुम देखोगे कि मै कितनी वीरता दिखा सकता हू और बाद मे अनन्त काल तक लोग उसके विषय मे बाते किया करेंगे। उन्हे आश्चर्य होगा कि किसी समय डॉन क्विक्जोट नाम का ऐसा पराक्रमी रहा करता था जिसने ऐसे अद्भुत कृत्य किए थे। देखते हो, यह धूल का बादल दिखाई दे रहा है, कोई भयानक सेना चली जा रही है और उसके पावो से उठी हुई है यह धूल, और न जाने कितने-कितने राष्ट्र के लोग इस सेना मे है।"

सेन्को ने आश्चर्य से देखा और उसको एक कौतूहल हुआ। उसने कहा, "श्रीमान्, यदि यह सेना है तब तो ये दो सेनाए होनी चाहिए क्योकि दूसरी ओर देखिए, सामने भी धूल के बादल घुमडते चले आ रहे है।"

डॉन क्विक्जोट ने देखा तो हर्ष से विह्वल हो गए। उन्होने कहा, "निश्चय ही दो सेनाए है। कितनी विशाल सेना है! मालूम होता है, मैदान मे एक-दूसरे से भिडनेवाली है।"

उनकी कल्पना मे सदैव ही युद्ध रहा करते थे। जादू, आश्चर्यजनक साहस-कथाए, प्रेमी को विभोर कर देनेवाली कल्पनाए और इसी प्रकार कई बाते उनके दिमाग मे भरी हुई थी। जब भी किसी वस्तु को देखते, तुरन्त ही उनकी कल्पना उसी रूप मे परिवर्तित कर देती और जो वे देखना चाहते थे वही उन्हे दिखाई देता, इसलिए वे नही देख पाए कि वे धूल के उठते हुए बादल है या वह वास्तव मे भेडो के रेवड से उठी धूल हैं। वे एक ही सडक पर दो अलग-अलग रास्तो से जा रही थी। यह उन्हे दिखाई नही दिया। वे अपने निश्चय मे इतने दृढ हो गए कि वे दो सेनाए थी और अन्त मे सेन्को ने भी इसपर विश्वास कर लिया कि सचमुच वे दो सेनाए है, जिनके पावो की ध्वनि सुनाई दे रही थी।

सेन्को बोला, "श्रीमान्, अब हम क्या करे, आप कुछ आज्ञा दीजिए।"

डॉन क्विक्जोट ने कहा, "हम क्या करें। अरे, हम निर्बल की ओर से लडेंगे, जो कि दु ख मे है। तुम जानते हो कि निर्बल की सहायता करना कितना परोपकार है। देखो, सेन्को, वह जो विशाल सेना आगे बढ रही है, वह ऐलफिन फोरोल की सेना है, जो तापरोबन्द के विशाल द्वीप का सम्राट है, वही उसको बढा रहा है, और वह दूसरी जो सेना है, वह उसके शत्रुओ की सेना है, रामानटियन लोगो का सम्राट उसका नेता है। पेण्टापोलिन उसका साथी है। उसका नाम इसलिए पडा है कि वह अपनी सीधी भुजा को नगी रखकर युद्धभूमि मे उतरा करता है।"

सेन्को चिल्लाया, "श्रीमान्, आप तो ऐसे कह रहे है, जैसे सब कुछ जानते है, किन्तु

मुझे कोई दिखाई नही दे रहा है। पर कौन जानता है कि यह सब किसी जादूगर या चुडैल की करतूत न हो।"

डॉन क्विक्जोट ने उत्तर दिया, "क्या तुम हिनहिनाहट नही सुनते ? क्या तुम तुरही निनाद नही सुनते ? क्या तुम नगाडो की बजती हुई आवाज को नही सुनते ?"

सेंको ने उत्तर दिया, "हे स्वामी, मै सूअर की तरह अपने कानो को खडा किए हुए हू लेकिन फिर भी मुझे कुछ सुनाई नही दे रहा है। मुझे तो भेडो की मिनमिनाहट ही सुनाई दे रही है। हाय, मै क्या यही दिन देखने के लिए चल पडा हू।"

लेकिन डॉन क्विक्ज़ोट को सलाह पसन्द नही आई। वे चिल्लाकर बोले, "मूर्ख तू चुप रह।" और फिर आगे बढकर कहा, "जय हो, वीर नायक की जय हो। आगे बढो ? वीर पेन्टोपोलिन की सेना मै अपना प्रराक्रम दिखानेवाला वीर आत्मा, मैं आज तुम लोगो को अपना भीम शौर्य दिखाऊगा !" ओर यह कहकर वे भेडो के रेवड पर टूट पडे। ऐसा प्रचण्ड उत्साह उन्होने दिखाया कि उन्होने भेडो को चकरा दिया, उनमे खलबली मच गई, कुछ इधर भागने लगी और कुछ उधर भागने लगी। इन्होने अपने शत्रुओ का इतना सहार किया कि पृथ्वी के ऊपर कई भेडो की लाशे गिरा दी और रक्त बहने लगा।

जब गडरियो ने यह देखा कि उनकी भेडे ख्वाहमख्वाह मारी जा रही है तो उन्होने उसे रोकने की चेष्टा की, किन्तु वहा सुनता कौन था। अन्त मे जब उनकी बात का कोई प्रभाव नही पडा तो उन्होने अपनी गोफन निकाल ली और उनमे पत्थर लगा-लगा कर वीर नायक की ओर फेंकने लगे। वे पत्थर एक-एक मुट्ठी के बराबर थे। चारो ओर से पत्थरो की वर्षा होन लगी। दुर्भाग्य से एक पत्थर वीर नायक की पसली पर टकराया, वे पीडा से चिल्ला उठे। उनको ऐसा लगा कि वे मर गए है या कम से कम बहुत बुरी तरह घायल हो गए है। उनके पास एक मिट्टी का पात्र रहता था जिसमे वे पानी रखा करते थे। उन्होने तुरन्त उसे निकाला और मुह से लगाकर पानी पीने को हुए किन्तु वे एक घूट भी नही ले सके थे कि जोर से एक और पत्थर आया। उसने उनका पात्र तोड दिया। वह पत्थर उनके हाथ पर लगा और दातो से जा टकराया। दो-तीन दात नीचे गिर पडे। यह प्रहार इतना भयानक था कि कोलाहल मे हमारे वीर नायक घोडे पर से लुढक गए और पृथ्वी पर ऐसे गिर पडे जैसे वे मर गए हो। जब गडरियो ने यह देखा तो उनको डर हो आया कि कही उनसे हत्या न हो गई हो। उन्होने अपनी भेडो को तेजी से हॉका और सात मरी हुई भेडो को उठाकर वे भाग गए। उन्हे डर था कि कही वे हत्या मे गिरफ्तार न हो जाए।

जब गडरिये चले गए, सेंको भागकर आया और बोला, "मेरे स्वामी, मैंने पहले ही आपको परामर्श दिया था किन्तु आपने उसपर ध्यान नही दिया। क्या मैने नही कहा था कि यह भेडो का रेवड है, कोई सेना नही ? मै सच कहता हू, भगवान मेरे अजर-पजर ढीले कर दे। मैं इतना भयानक दिन को देखने के लिए पैदा नही हुआ था। यदि आप इतने ज़ोर के सघर्ष के बाद थक गए है और श्रीमन्त के दात टूट गए है, तो मैं यही कहूगा कि श्रीमन्त वीर नायक का नाम एक ही रखा जा सकता है—दुर्भाग्य का सामना करने-

वाला वीर नायक।"

उसी समय डॉन क्विक्जोट चिल्लाया, "तुमने ठीक कहा, तुमने ठीक कहा सेको-पाजा! मुझे तुमसे इसीकी आशा थी। प्राचीन काल के वीर नायको के ऐसे ही वीर नाम हुआ करते थे। किसीको धधकते हुए खड्गवाला वीर नायक कहा जाता था, किसीको एकशृगी वीर नायक कहा जाता था, किसीको अर्ध-पशु, अर्ध-सिहा वीर नायक कहा जाता था। समस्त भूमि पर वे ऐसे पराक्रमी नाम के साथ घूमा करते थे। निश्चय ही भविष्य मे होनेवाला वह बुद्धिमान मेरा इतिहासकार तुझमे यह शक्ति भर रहा है। तुझमे कल्पना को जगा रहा है, इसलिए तूने नाम दिया है—दुर्भाग्य का सामना करने-वाला वीर नायक।"

जब वे लोग कुछ देर विश्राम कर चुके और डॉन क्विक्जोट ने निकट ही बहते हुए एक झरने से अपने मुख को धोया और रक्त को पोछा, तब वे फिर अपनी-अपनी सवारियो पर चढे और सीधे हाथ को चलकर राज-पथ पर आ गए। अभी वे अधिक दूर नही गए कि उन्हे एक घुडसवार दिखाई दिया जिसके सिर पर कोई विचित्र-सी सोने जैसी चमकती हुई चीज रखी हुई थी। ज्यो ही वीर नायक ने उसे देखा, वे अपने सहायक से बोले, 'सेको, देखते हो, सामने से कौन आ रहा है घोडे पर ? देखो सेको, उसके सिर पर क्या चमक रहा है—मेम्ब्रीनो का शिरस्त्राण है वह !"

सेको ने कहा, "मै नही जानता श्रीमान, लेकिन यदि मुझे बोलने की आज्ञा दी जाए, यदि मेरे अपराध को क्षमा कर दिया जाए तो मै यही कहूगा कि आप वस्तु-स्थिति से बहुत दूर है।"

"मै कही गलती कर सकता हू ?" डॉन क्विक्जोट ने कहा, "तू अनन्त अविश्वासी है, तू कभी विश्वास नही कर सकता। क्या तू नही देखता कि जो वीर नायक घोडे पर चढा हुआ चला आ रहा है उसके सिर पर सोने का शिरस्त्राण है।"

सेको ने उत्तर दिया, "श्रीमत, शैतान ने शायद मुझे अन्धा कर दिया है लेकिन मैं तो केवल इतना ही देख रहा हू कि जैसे मैं गधे पर चल रहा हू, वैसे ही एक भूरे गधे पर बैठकर एक और आदमी चला आ रहा है। उसके सिर पर कोई ऐसी वस्तु अवश्य है जोकि चमचमा रही है, पर उसे सोने की तो नही कह सकता।"

वास्तविकता यह थी कि वहा दो गाव थे—एक इतना अधिक छोटा था कि उसमे एक दुकान भी नही थी, यहा तक कि नाई भी नही था। इसलिए बडे गाव का नाई ही छोटेवाले गाव मे भी जाया करता था और लोगो की हजामत बनाया करता था। कभी वह किसीके शरीर मे जोक लगाकर रक्त निकालता था, कभी किसीकी हजामत बनाता और मालिश आदि किया करता था। नाई अपनी कासे की एक बडी पतीली अपने सिर पर ढके चला जा रहा था। उसको डर था कि बूदाबादी मे कही उसका टोप न बिगड जाए।

डॉन क्विक्ज़ोट ने जब उस कल्पनालोक के वीर को इस प्रकार आते हुए देखा तो तुरन्त अपना भाला उठा लिया और उसको सूचना दिए बिना ही वेग से उसपर आक्रमण कर दिया और चिल्लाने लगे, "नीच, दुष्ट, अपने-आपकी रक्षा कर, अन्यथा जो कुछ मेरा है उसे मेरे चरणो पर समर्पित कर दे !"

नाई बेचारा शान्ति से चला जा रहा था। उसे क्या मालूम था कि धडधडाता हुआ एक घोडा उसपर चढता चला आएगा और ऐसे गर्जन-तर्जन के साथ उसको घेर लिया जाएगा। उसके लिए इसके अलावा और कोई चारा नही था कि वह उस भाले की चोट झेल जाए। इसलिए वह तुरन्त गधे पर से जमीन पर कूद पडा, और जितनी जल्दी हो सका, अपने गधे और पतीली को छोडकर वह वहा से भाग निकला। डॉन क्विक्जोट ने सेको को आज्ञा दी कि वह शिरस्त्राण को उठाकर उन्हे दे। सेको ने बरतन उठाकर कहा, "सौगन्ध खाता हू मालिक, यह तो एक खास किस्म की पतीली है और बहुत मामूली-सी चीज है। इसे तो कोई चोर भी उठाकर ले जाने से इन्कार कर देगा।"

और यह कहकर उसने पतीली अपने मालिक को पकडा दी जिसने तुरन्त उसे अपने सिर के ऊपर पहन लिया। और हर तरफ घुमाकर कहा, "कम्बख्त, जिस किसी भी विधर्मी का यह प्रसिद्ध शिरस्त्राण है, उसका सिर निश्चय ही बहुत बडा रहा होगा क्योकि देखो मेरे सिर से दुगुनी जगह चारो तरफ खाली हे।"

सेको को हसी आ गई। उसका मालिक नाई के बरनन को शिरस्त्राण कह रहा था।

अब वे लोग अपनी साहसिक यात्रा पर फिर से चल पडे। रास्ते मे एक कुलीन ड्यूक और डचेज जगल मे शिकार खेलते हुए मिले। जब उन्होने इन दो विचित्र प्राणियो को देखा, जो उनके सामने अत्यन्त विनम्र होकर आए थे, तो उन्हे कुछ याद आ गया। वे पहले ही ऐसे वीर नायक और उसके नौकर के बारे मे सुन चुके थे। अत उन्होने डॉन क्विक्ज़ोट को अपने दुर्ग पर निमन्त्रित कर दिया और सोचा कि इससे कोई अजीब दिल्लगी करके अपना मन बहलाया जाएगा। डॉन क्विक्जोट ने गम्भीरता से निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और इसके बाद सब दुर्ग की ओर चल दिए। ड्यूक और डचेज ने मनोरजन के साधन जुटाना प्रारम्भ कर दिए।

दुर्ग के उपवन मे जब वे भोज के उपरान्त पहुचे तो अचानक ही एक दूत दिखाई दिया जो बहुत ही विशालकाय था और उसकी सफेद दाढी कमर तक लटक रही थी। उसने प्रार्थना की कि क्या उसकी दु खी स्वामिनी त्रिफालिदी वहा आ सकती है। जब उसे आज्ञा मिल गई तो बारह सेविकाए उपवन मे आई, जो सब शोक के वस्त्र पहने हुई थी और उनके माथे पर हलके मलमल के नकाब पडे हुए थे। उनके पीछे आई काउण्टेस त्रिफालदी। उसके पीछे और सेविकाए थी।

वह कर्कश स्वर मे बोली, "ओ परम वीर योद्धा, मैं तुम्हारे चरणो पर विनत हू। तुम पराक्रम और शौर्य के स्तम्भ के समान हो। मेरी डूबती हुई आत्मा का उद्धार करने-वाले हो। केवल तुम ही मेरी इस व्याकुल आत्मा को सहायता दे सकते हो। तुम्हारे ही चरणो मे वह शक्ति हैं जो मुझे इस अपार यातना के सागर मे से बाहर निकाल सकती है।"

और इसके बाद वह दु खी स्वामिनी अपनी कथा सुनाने लगी। उसने बताया कि केण्डया की सुदूर भूमि से समुद्र का लाघती हुई वह आई थी। वह अन्तोनोमासिया की पुत्री थी। दुर्भाग्य से रानी की मृत्यु के बाद जब उसे पता चला कि उसकी माता ने दूसरा विवाह कर लिया है तब श्रीमती त्रिफालदी ही उस स्थान पर गलती से चली गई थी।

उसके भाई ने, जोकि एक भयानक दैत्य और जादूगर था और जिसका नाम था मलामब्रूनो, पति और पत्नी को क्रमश मुर्गा और बन्दरिया बना दिया था और वे दोनो अब धातु के बने रखे थे। और उसी के जादू के कारण उसके तथा उसकी साथ की स्त्रियो के मुख पर सारे रन्ध्र खुल गए थे, उनमे पीडा हुई थी और ऐसा लगा था जैसे उनमे से काटे और सुइया निकल आई हो। और जब उन्होने अपने हाथ चेहरो पर रगडे तब उन्हे पता लगा कि उनकी घनी दाढिया उग आई है। काउण्टेस की कथा समाप्त हो गई और इसके बाद उन स्त्रियो ने अपने नकाब उलट दिए और उनकी भयानक घनी दाढिया दिखाई देने लगी। उसने कहा, "यह है उस भयानक मलामब्रूनो का अत्याचार! उसने हमारे चेहरो के ऊपर ये कटीली झाडिया उगा दी है अन्यथा पहले यहा की त्वचा अत्यन्त स्निग्ध थी।"

ड्यूक और डचेज को ऐसी अप्राकृतिक घटना के विषय मे सुनकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ। और असतुष्ट स्वामिनी फिर कहने लगी, "जानते है, श्रीमत, इस जगह से केण्डया की राजधानी बहुत दूर है, कम से कम पाच हजार लीग होगी। मलामब्रनो ने मुझसे कहा था कि जब तेरा भाग्य सुखी होगा तो तुझे एक वीर नायक योद्धा मिलेगा और वह हमारे जादू को नष्ट कर सकेगा और वह वीर नायक विश्व-विख्यात डॉन क्विक्जोट के अतिरिक्त और कोई नही हो सकता। और मै उसके लिए एक प्रसिद्ध घोडा भेजूगा जो माथे पर जडा लकडी की एक कील के जरिए उडेगा और उसपर लगाम नही होगी और फिर भी वह आकाश के बीच मे वायु वेग से उडता हुआ चला जाएगा, मानो नर्क के दूत उसको प्रेरित कर रहे हो।"

सेको ने कहा, "नही नही यह तो बहुत कठिन काम है। मेरे मालिक को ऐसी कठिनाई मे मत भेजो, वह तुम्हारा कोई प्रेमी नही है। और वह कौन-सा घोडा है जो हवा मे उडेगा?"

उसी समय अचानक चार जगली लोग उपवन मे घुस आए। उनके सिर पर अगूर की ढेर सारी लताए थी और कन्धे के ऊपर लकडी का एक विशाल घोडा था जिसे उन्होने सबके सामने धरती पर रख दिया। उनमे से एक चिल्लाया, "जिसमे साहस हो वह इस भीमयन्त्र के ऊपर आरोहण करे!"

सेको ने कहा, "मै तो निश्चय ही इसपर नही चढूगा क्योकि न तो मैं वीर हू और न नायक ही।"

डॉन क्विक्ज़ोट ने पुकारकर कहा, "श्रीमती, मै इस कार्य को अपने सम्पूर्ण हृदय के साथ करूगा। मैं किसी गद्दे पर सोने के लिए आतुर नही हू और न मुझे अब एड लगाने की भी जरूरत है। मै इसी समय इस घोडे के ऊपर चढूगा!"

सेको ने कहा, "इतनी आतुरता मुझे बिलकुल नही है। नही, नही मुझे इतनी आतुरता की क्या आवश्यकता है! अगर इसके ऊपर चढने के लिए साहस की आवश्यकता है तो पहले स्वामी ही चढे। और मेरी राय तो यह है कि ये देविया जोकि दाढी उग आने से व्यथित हो गई है, किसी नाई का इन्तज़ाम कर ले तो इस घोडे पर चढने की हमे आवश्यकता ही नही पड़ेगी।"

ड्यूक ने सेकोपाजा का साहस बढाया और कहा, "अगर तुम इस घोडे पर अपने वीर स्वामी के साथ चढोगे और लौट आओगे, तो तुम एक विशाल द्वीप के स्वामी बना दिए जाओगे।"

सेको चिल्ला उठा, "बस बस श्रीमत अब कुछ न कहे। मैं तो केवल एक अदना सेवक हू। लेकिन नीचता का नाश हो। चढिए-चढिए, मालिक चढिए! मेरी आखो पर पट्टी बाध दीजिए ताकि मुझमे साहस भर सके और लम्बी यात्रा सफल हो। भगवान से प्रार्थना करे, स्वामी। लकडी के घोडे की ओर बढिए, लकडी के घोडे की ओर बढिए! इन दाढीवाली स्त्रियो की दशा देख-देखकर मेरा हृदय पिघल रहा है और आखो मे आसू भरे आ रहे है। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरी आखो मे इनकी दाढी के बाल चुभ रहे हो।"

जब दोनो इस प्रकार मूर्ख बन गए और डॉन क्विक्जोट ने देखा कि प्रत्येक वस्तु तैयार है तो वे घोडे पर बैठ गए और सामने की कील को मरोडने लगे। ज्योही उन्होने उस पर हाथ रखा तो उपथिस्त समुदाय बडे जोर से चिल्लाने लगा, "उठा उठा, और ऊपर उठा! देखो, ओह, देखो-देखो! किस तेजी से यह घोडा उडा चला जा रहा है, जैसे वायु मे कोई बाण जा रहा हो। चढ गए, घोडे पर चढ गए और ऊपर मीनार को पार कर गए। उफ, सारा ससार देख-देखकर आश्चर्य कर रहा है!"

सेको ने अपने मालिक की कमर के दोनो तरफ हाथ लपेटते हुए कहा, "श्रीमत ये लोग हमको इतनी ऊचाई पर पहुच गया कैसे बताते है। अभी तो हमे इनकी आवाज़ सुनाई दे रही है।"

डॉन क्विक्जोट ने कहा "इसकी चिन्ता मत करो क्योकि इस असाधारण प्रकार के वाहन पर हमारी सुनने और देखने की शक्ति भी असाधारण बन गई है। साहस ग्रहण करो। देखो, हम लोग झूले के ऊपर बैठे हुए है और कितनी अच्छी हवा चल रही है!"

सेको ने कहा, "मुझे यह लगता है, श्रीमत! कि हवा चारो ओर से तेजी से बह रही है। पता नही कितनी धौकनिया है जो सचमुच इस हवा को हमारी ओर फेंक रही है।"

सेको की बात अश मे सत्य भी थी क्योकि तीन जोडी धौकनिया उनकी ओर हवा फेंक रही थी। यह भी उस खेल का एक भाग था जो उनमे यह भ्रम पैदा कर सके कि वे लोग वायु मे उडे चले जा रहे है।

डॉन क्विक्जोट को जब हवा लगी तो उन्होने कहा, "सचमुच ऐसा लगता है कि हम लोग हवा मे बहुत ऊचे उठ आए है जहा तूफान, बर्फ, बिजली और वज्र गर्जन हुआ करता है, जहा तरह-तरह के छोटे-छोटे नक्षत्र घूमा करते है। अगर इस गति से हम लोग ऊपर चढते रहे तो कुछ ही देर मे हम लोग अग्नि प्रदेश मे चढ जाएगे। पता नही उस वक्त मैं इसकी कील को कैसे मरोडूगा। मै तो इसका प्रयोग भी नही जानता। क्या वहा हम लोग जल-भुनकर कबाब नही बन जाएगे!"

उसी समय ड्यूक की आज्ञा से कुछ ऊन मगवाया गया और अन्य जलनेवाले पदार्थ तैयार कर लिए गए। उनको एक लम्बी लकडी के छोर पर लगा दिया गया और

उन लोगो की नाक से कुछ दूर आग जला दी गई। उसमे से निकलती आग और धुए ने डॉन क्विक्जोट और उसके सेवक को कुछ प्रपीडित करना प्रारम्भ किया।

सेको चिल्लाया, "श्रीमत अभी आप जिस अग्नि प्रदेश की बात कर रहे थे, सचमुच हम उसके बहुत निकट आ गए है क्योकि मेरी आधी दाढी तो जल भी चुकी है। मेरी तो इच्छा हो रही हे कि मै कूद पड्।"

डॉन क्विक्जोट ने कहा, "नही, नही, शात बैठे रहो।"

सेको ने कहा, "श्रीमत, मै ज़रा झुककर देख ल् कि हम लोगो के आसपास क्या है ?"

अन्त मे इस असाधारण साहस का अत हुआ क्योकि ड्यूक और उसके साथी अपना काफी मनोरजन कर चुके थे। घोडे की पूछ मे आग लगा दी गई और घोडा चूकि पटाखो से भरा हुआ था इसलिए एकदम फट गया। एक भयानक आवाज़ हुई और आखो पर पट्टी बाधे हुए वीर नायक डॉन क्विक्ज़ोट और उनका नौकर दोनो काफी झुलस गए और घोडे पर से नीचे जा गिरे। वह दु खी स्वामिनी और उसकी दाढीवाली सेविकाए उपवन मे से गायब हो चुकी थी। और बाकी सब लोग मूर्च्छित होने का ढोग करके पृथ्वी पर गिर पडे थे।

जब डॉन क्विक्जोट और सेको उठे तो उन्हे लगा कि वे चारो ओर लाशो से घिरे हुए है। सामने एक लट्ठे के ऊपर लिखा हुआ था—'पराक्रमी वीर योद्धा डॉन क्विक्ज़ोट डिलामाचा ने काउण्टेस त्रिफालदी, जिसको व्यथित स्वामिनी भी कहा जाता था, की रक्षा की और उसकी साथिनो को भी बचा लिया। मलामब्रनो पूर्णतया सतुष्ट हो गया है। सेविकाओ की दाढिया गायब हो गई हैं। अलक्लाविनो और मरियम अन्तोनोमासिया ने अपने मूल स्वरूपो को प्राप्त कर लिया है।'

इस प्रकार लकडी के घोडे की साहस कथा समाप्त हुई और अब सेको ने ड्यूक से अपने लिए उपहार मागा। ऐसा हुआ कि यद्यपि ड्यूक के पास उसे देने के लिए कोई द्वीप नहीं था, पर उसके राज्य मे एक नगर मे कोई गवर्नर नही रहा था। उस जगह को भरने के लिए ड्यूक ने मनोरजन का नया प्रबन्ध किया। और सेको तुरन्त उसके लिए तैयार हो गया। उसके हर्ष का ठिकाना नही रहा। अपने गधे पर चढकर दुर्ग मे अपने स्वामी को छोडकर बडे ताम-झाम के साथ सेको निकल पडा। ज्योही वह नगर मे पहुचा, लोगो ने उसको यह भाव दिखाया कि इस नगर का नाम बारातारिया द्वीप है। फिर वे उसे न्यायालय मे ले गए ताकि कुछ झगडो का फैसला करके गवर्नर साहब प्रजा मे अपनी उच्च स्थिति की योग्यता प्रमाणित कर सके।

उसकी ग्रामीण बुद्धि ने, जो भी मामला उसके सामने आया, सबको चतुराई से हल कर दिया। एक आदमी एक बूढे से इसलिए झगडा कर रहा था कि बूढे ने उससे दस रुपये लिए थे और अब तक वापस नही किए थे। बूढा कसम खाने के लिए तैयार था कि उसने रुपये लौटा दिए हैं। उसने अदालत मे शपथ लेकर यही बात कही। लेकिन इससे पहले उसने अपना डडा उस आदमी को थोडी देर के लिए दे दिया। शपथ लेने के बाद उसने अपना डडा वापस ले लिया और न्यायाधीश के सामने प्रणाम करके वह वहा से

चल दिया। सेको ने देखा और क्षण-भर उस छडी की ओर टकटकी बाधे रहा। उसने कर्ज देनेवाले के धैय की प्रशसा की और सहसा उसने बूढे आदमी को आज्ञा दी कि वह उस डडे को लेकर लौट आए। जब वह सामने आ गया तो सेको ने कहा, "ओ भलेमानुस, तनिक मुझे वह अपनी छडी तो दो।" यह कहकर सेको ने उस छडी को अपने हाथ मे ले लिया। और दूसरे को देते हुए कहा, "जाओ, तुम्हे रुपये मिल गए।" वह आदमी शोक से व्यथित हो गया। तब सेको ने कहा, "इस छडी को तोड दो।" ज्योही छडी तोडी गई तो उसमे से दस सिक्के नीचे गिर पडे। उपस्थित दर्शक चकित रह गए। उनको ऐसा लगा मानो उनका गवर्नर हजरत सुलेमान जैसा विचक्षण और बुद्धिमान है।

लेकिन सेको ने देखा कि द्वीप का गवर्नर होना एक बहुत कष्टप्रद कार्य है। लोग उसे गवर्नर के महल मे ले गए और उसके लिए शानदार भोजन तैयार किया गया। किन्तु जब वह खाने बैठा तो उसका कुर्सी की बगल मे ही उसका एक वैद्य खडा हो गया। तरह-तरह के गोश्त पकाए गए, तरह-तरह के स्वादिष्ट फल लाए गए। सेवक आते और खाद्य-सामग्री प्रस्तुत करते लेकिन ज्योहो सेको खाने का प्रयत्न करता वैद्य अपनी छडी हिला देता। और गवर्नर के स्पर्श करने के पहले ही खाने की तश्तरी को हटा लिया जाता और कहा जाता कि यह गवर्नर के उच्च पद के अनुकूल नही है कि वह ऐसा कुप्रभाव डालनेवाला भोजन करे।

सेको ने कहा, "श्रीमान वैद्यराज, यदि ऐसा ही है तो मेज पर इतने अच्छे-अच्छे पदार्थ क्यो लाए गए हैं? आप इनमे से कोई एक चुन लीजिए और उसे अपने हाथ के इशारे से मत हटाइए ताकि मैं उसे कम-से-कम पेट-भर खा तो लू। मैं जीवित हू और भूख से मरने के लिए तैयार नही हू। इस प्रकार कुछ भी नही खाऊगा तो अपने-आप मेरी उम्र कम हो जाएगी।"

वैद्य ने कहा, "सच कहते है, श्रीमन, किन्तु आपको यह खरगोश तो नही खाना चाहिए, क्योंकि इसके ऊपर बाल बहुत होते है और यह अच्छा भोजन नही है। और न मै आपको वह मछली खाने दूगा क्योकि उसमे काटे है और उसमे मसाला भी नही पडा है। लिहाज़ा आपको वह भी नही खाना चाहिए।"

इस तरह ड्यूक की आज्ञा से नये गवर्नर को तरह-तरह के कष्ट दिए गए। एक सप्ताह मे ही अपने द्वीप के इस शासन से सेको ऊब गया। तभी ग्रामीणो को इकट्ठा करके एक नकली हमला कर दिया गया। उसमे सेको की इतनी पिटाई हुई, इतनी पिटाई हुई कि जब सब शात हो गया तो वह चुपचाप अपने बिस्तर से उठा, जहा उसे बेहोशी मे पटक दिया था, और धीरे-धीरे रेंगता हुआ अस्तबल मे जा पहुचा। उसने अपने गधे के पास पहुचकर बडे प्यार से उसका माथा चूमा और कहा, "ओ मेरे दोस्त, ओ मेरे वफादार दोस्त, तूने मेरी यात्रा मे और दु खो मे मेरा कष्ट बटाया है।" यह कहते हुए सेको की आखो मे आसू आ गए। उसने आगे कहा, "जब मै और तुम साथ चलते है तो मुझे केवल तेरी चिन्ता करनी पडती है, इस तेरे छोटे-से पेट को भरने की चिन्ता करनी पडती है। वे मेरे दिन, वे मेरे महीने, वे मेरे साल कितने खुशनुमा थे! लेकिन जब से मैने तुझे छोड दिया और मै महत्त्वाकाक्षा, अहकार और गर्व की मीनारो पर चढ गया तो मुझपर हज़ार-हज़ार दु ख और

यातनाए और अत्याचार टूट पडे। मेरी यह आत्मा भीतर से गिर गई है और मुझे परम कष्ट हो रहा है। मैं गवर्नर बनने के लिए पैदा नही हुआ था, न मेरा काम था कि मै द्वीप और नगर की शत्रुओ मे रक्षा करू और उनसे बुरी तरह पिटू। न मै जीता हू, न मैं हारा हू। कहने का मतलब यह है कि बिना एक कोडी लिए मै इस राज्य मे आया था और बिना एक कोडी लिए मै इसका परित्याग करता हू। हाय, द्वीप के गवर्नर तो ऐसा नही किया करते।"

यह कहकर एक रोटी का आधा टुकडा और कुछ पनीर लेकर वह अपने गधे पर बैठ गया और फिर अपने मूख स्वामी की सेवा करने के लिए चल पडा।

ड्यूक के दरबार को छोड देने के बाद डॉन क्विक्जोट और सेकोपाजा कई दिनो तक अपने घोडे और गधे पर क्रमश चलते रहे। अन मे वे सिअरामोनेरा नामक एक विशाल काले पहाड के पास पहुच गए और उसके पथरीले पथ के ऊपर आगे बढते गए। डॉन क्विक्जोट को यह देखकर परम हर्ष हुआ कि वे ऐसी विचित्र जगह पर पहुच गए थे। उनकी फिर एक बार इच्छा हुई कि वे कोई नया साहस दिखाए जिससे उनका पराक्रम दूर-दूर तक फैल मके। अब उन्हे फिर अनेक वीर नायको की याद आने लगी क्योकि ऐसे एकान्त मे ही वे परम वीर नायक भी घूमा करते थे। फिर उन काल्पनिक विचारो से उनका मस्तिष्क भर गया और अब वे कुछ और सोचने से मजबूर हो गए। किन्तु सेको भूखा था, वह कुछ ठोस चीज़ खाना चाहता था। नाई के गधे पर से चुराया हुआ सामान करीब-करीब खत्म हो चुका था। बस एक गोश्त का टुकडा रह गया था और वह उसे अपने दातो के बीच चबाता हुआ चुप रहा।

अब धीरे-धीरे वे लोग एक बडी अच्छी चट्टान के नीचे आ गए जो अकेली खडी थी। उमके निकट ही मोतियो जैसा उज्ज्वल एक झरना बह रहा था जो अलबट्टे खाता हुआ, नीचे की हरियाली मे कलकल निनाद करता हुआ चला जा रहा था। वहा की घास ठण्डी, मुलायम और ताजगी भरनेवाली थी। चारो ओर जगली वृक्ष खडे थे। सुकुमार पौधे और फूलो को देखकर आखे ललचा जाती थी। उस एकात मे ऐसा सुन्दर दृश्य देखकर दुर्भाग्यवाले इन वीर नायक डॉन क्विक्जोट ने यह निर्णय किया कि ऐसे स्थान पर ही वे रहकर प्रेम के लिए तप करेगे। जब उन्होने सको से अपना यह इरादा कहा तो सेको चकराया। आदेश के रूप मे डॉन क्विक्जोट ने कहा, "तीन दिन के बाद तुम यहा से चले जाना। तीन दिन तक मैं अपनी प्रिया के लिए जो कुछ यहा करू, उस सबको तुम देखते रहना ताकि इस सबका वर्णन उससे कर सको। जो पत्र मैं तुम्हे दू, उसे ले जाकर मेरी प्रिया को देना।

सेको ने कहा, "तो क्या तीन दिन तक मुझे आपके सारे पागलपन को देखना पडेगा? आप ऐसा क्यो नही करते कि जो कुछ आप करनेवाले है, उसके बारे मे यह समझ ले कि कर चुके है। भले ही मैंने उन्हे न देखा हो, लेकिन मैं यह मान लेता हू कि मैंने वह सब देखा-भाला है और मैं सुन भी चुका हू और उस सबका वर्णन मैं बढा-चढाकर आपकी प्रिया से कर दूगा। लिहाजा आप शीघ्र वह पत्र ही लिख दीजिए और मुझे जल्दी ही यहा से भेज दीजिए।"

"बिलकुल ठीक है," वीर नायक ने कहा, "यह बात बिलकुल ठीक है। लेकिन मेरे पास कागज नही है। तो मै कैसे लिखू? हा, प्राचीन काल मे जिस प्रकार वीर नायक करते थे, इस समय मुझे वही पद्धति अपनानी पडेगी। पत्तो पर या पेड की छाल पर मैं लिखूगा और तुम उस पत्र को ले जाकर पहले जो गाव पडे वहा किसी स्कूल मास्टर को ढढ लेना ओर पत्ते से उस पत्र को कागज पर उतरवा लेना। इससे कोई मतलब नही है कि वह किसके हाथ से लिखा हुआ पत्र है क्योकि जहा तक मै समझता हू डलसीनिया न तो पढ सकती है और न लिख सकती है। न उसने आज तक मेरा कोई पत्र पाया है और न उसने मेरी लिखावट पहचानी है। मेरे और उसके प्रेम के लिए केवल एक ही बात मैं कहूगा कि आज तक वह निरन्तर बौद्धिक रहा है। लजीली दृष्टि के अतिरिक्त उस प्रेम की सीमाए आगे नही बढी है और वह भी कभी-कभी, क्योकि लारेन्जो कुरचुएलो जो उनके पिता है और अलदाओ नागेलिस जो उनकी माता है, उन्होने उसे हमेशा सुरक्षित रखा है और वैसी ही शिक्षा दी है।"

सेको बोला, "हे भगवान, ऐसी बात क्या कभी किसी और ने भी सुनी है! तो क्या मेरी होनेवाली मालकिन, जो डलसीनिया डेल्टेबोसो कहलाती है, आखिर लारेन्जो कुरचुएलो की पुत्री निकली, वह जिन्हे अलदोनजो लारेन्जो भी कहा जाता है?"

डॉन क्विक्जोट ने कहा, "वही-वही। बिलकुल ठीक वही है, जो इस ब्रह्माण्ड की स्वामिनी होने के योग्य है!"

सेको चिल्लाया, "धूल मे धल गिर रही है। मै उसे खूब अच्छी तरह जानता हू। वह बिलकुल एक बेवकूफ-सी औरत है और हमारे गिरजे के पास काम किया करती है। बडी मज़बूत, लम्बी-चौडी औरत है, मर्दानी आवाजवाली, हर बात मे झगडा करने को तैयार रहती है। हे भगवान, क्या उसकी प्रशसा करना उत्तम है? एक बार मैने उसे छत पर खडे होकर आवाज देते हुए सुना था। वह कुछ किसानो को बुला रही थी खेत से और वे बेचारे बहुत दूर थे। फिर भी उसकी आवाज सुनाई दी, जैसे कोई पास मे बोल रहा हो।"

डॉन क्विक्ज़ोट ने डाटकर कहा, "सेको, मै तुम्हे अकसर कह चुका हू और मै तुमसे फिर कहता हू कि तुम्हारी जबान बहुत चकचक करती है। इसपर लगाम लगाने की जरूरत है, क्योकि तुम एक कूढमग्ज बेवकूफ हो और तुम्हारा यह नामाकूल मज़ाक बेवक्त के लिए पैना हुआ जा रहा है जो मुझे कतई नापसन्द है।"

सेको ने कहा, "श्रीमत, मेरी बुद्धि भले ही मद है, पर अब मेरी समझ मे आता है कि जिन वीर योद्धाओ का वर्णन आप कर रहे है कि उन्होने किसी समय मे तप किया था, अवश्य ही वे सब भी मूर्ख ही रहे होगे। क्या किसी स्त्री ने आपको आज तक कोई भेंट भेजी है?"

डॉन क्विक्जोट ने कहा, "बस यही तो बात है। यही तो एक खास बात है जिसकी वजह से मैं तप कर रहा हू। देखो, सेको, कोई वीर नायक अगर किसी मौके पर पागल हो जाए तो यह न तो कोई विचित्र बात है और न इसमे कोई तारीफ मिलती है। कमाल तो यह है कि वह बिना कारण के पागल हो जाए, तब उसमे तारीफ है। उसके उपर कोई रुकावट नही होनी चाहिए और उसकी आवश्यकता की भी आवश्यकता नही है। फिर

भी वह पागल हो जाए तब समझा जाता है, सेको, कि उसके प्रेम मे भावावेश है और वह उसे अभिव्यक्ति देना चाहता है। मै तो पागल हू और पागल ही रहूगा। जब तक कि तुम मेरी प्रिया डेलसीनिया के पास से मेरे पत्र का उत्तर लेकर नही लौट आओगे। और देखो यह पत्र है, इसपर मै अपना नाम लिखने की आवश्यकता नही समझता, क्योकि प्राचीन काल मे गोलका आमादिस भी अपने पत्र पर कोई हस्ताक्षर नही करता था।

सेको ने कहा, "स्वामी मुझे कोई फर्क नही पडता। अब मेरा इरादा है कि मै चल पडू। मै आपकी किसी पागल हरकत को नही देखना चाहता। मै तो अपनी तरफ से कह दूगा कि मै आपका इतना तप देख चुका हू कि और देखने की इच्छा भी नही करता।"

"नही नही!" डोन क्विक्जोट ने कहा, "थोडी देर तो तुम्हे रुकना ही पडेगा। सेको, और एक बार मुझे पूर्णतया वस्त्रहीन देख जाओ और कम से कम मेरे तप की बीस, तीस हरकते भी देख जाओ।"

यह कहकर उन्होने अपने वस्त्र उतार दिए और वे कमर तक पूर्णतया नग्न हो गए। और दो-तीन बार हवा मे उछले और अपने हाथो के बल जोर देकर सिर नीचे कर लिया और पैर ऊपर उठा लिए। और जब वे फिर नीचे लुढक कर आए तो सेको उन्हे नग्न देखकर लज्जित हो गया, और उसने अपने गधे के सिर को भी दूसरी ओर मोड दिया ताकि गधा लज्जित न हो जाए और अब उसे यह पूर्ण सन्तोष हो गया था कि उसका मालिक सचमुच पागल हो गया है।

टोबोसो को जानेवाली सीधी सडक पर चलता हुआ सेको दूसरे दिन एक सराय मे पहुच गया। जब वह द्वार पर पहुचा तो दो आदमी बाहर निकले। उसमे से एक बोला, "देखिए, देखिए, क्या यह सेकोपाजा ही नही है। हमारे घर की देखभाल करनेवाले ने यह भी तो बताया था कि हमारे स्वामी के साथ यह भी चला गया था।"

दूसरे ने कहा, "बिलकुल वही है। यह निश्चय ही वही है।"

ये दोनो व्यक्ति डॉन क्विकजोट के मित्र थे—एक पादरी और एक नाई।

सेको उन्हे पहचानता था। उन लोगो ने पूछा, "अरे, तुम्हारे मालिक कहा है?"

सेंको ने उत्तर दिया, "मै उन्हे दूर उस पर्वत पर अपनी प्रिया के लिए तपस्या करते हुए छोड आया हू।"

और उसने विस्तार से उनकी सारी हरकते बताई और कहा कि वह अब अपने स्वामी की प्रिया डलसीनिया डेल्टेबोसो, लोरेन्जो करचुएलो की पुत्री, के पास उनका प्रेम-पत्र ले जा रहा है, क्योकि वे उसके बिना बहुत व्याकुल हो रहे है।

पादरी और नाई को डॉन क्विक्जोट के बढते हुए पागलपन को देखकर और भी आश्चर्य हुआ और बेचारे वीर नायक की रक्षा करने के लिए वे चल पडे। रास्ते मे वे कोई तरकीब सोचने लगे कि किस प्रकार उस वीर नायक की बुद्धि को ठिकाने लगाया जाए और उस तपस्या को छुडवाकर लामाचा मे उन्हे लौटा लाया जाए।

उसी सराय मे दो व्यक्ति ठहरे हुए थे—डॉन फर्डीनेण्ड एक उच्च कुल का व्यक्ति था और डोरोथिया अत्यन्त सुन्दरी और श्रेष्ठ कुल मे जन्मी एक युवती थी। वे दोनो परस्पर प्रेम करते थे। भाग्य ने उनमे वियोग कर दिया था और समय के फेर ने उन्हे

इस सराय मे लाकर फिर मिला दिया था। पादरी और नाई उनके पास गए और डॉन क्विक्जोट की सारी कथा सुनाई। इन लोगो ने बैठकर वीर नायक के उद्धार की योजना बनाई।

उन्होने सेको को आज्ञा दी कि वह अपने गद्दे की काठी सजा ले और उस कुलीन युवती और एक नाई को लेकर वह काले पहाड की ओर फिर लौट चले। सेको उस समय सराय के मालिक के पास बैठा हुआ मस्ती से अपनी मनचाही गाय की एडी को चूस रहा था। उसने ज्यो ही उस सुन्दरी डोरोथिया को देखा तो उसके मुह से निकल गया, "यह अतीव सुन्दरी कौन है ?"

पादरी ने कहा, "मेक्रोमिकोन एक विशाल राज्य है, उसमे यह सुन्दरी युवती अब सम्राज्ञी होनेवाली है क्योकि यह सम्राट की पुत्री है। तुम्हारे मालिक की महान कथाए सुनकर, जिनका यश सारे ससार मे फैल गया है, यह व्याकुल हो गई है और उनसे मिलने के लिए आई है। इसके प्रति एक भयानक दानव ने घोर अत्याचार किया है। यह अपना उद्धार कराने के लिए उनसे वरदान मागने आई है।"

सेको ने कहा, "ठीक, यह अच्छा रहा, इन्होने अच्छे आदमी को ढढा और अवश्य ही ये अपने वर को प्राप्त करेगी। यदि मेरे स्वामी इतने भाग्यशाली है तो वे अवश्य इनके प्रति हुए अत्याचार को दूर करेगे और उस हरामजादे दानव को अवश्य ही विनष्ट कर देगे और फिर मै भी बना-बनाया आदमी हू, इसमे कोई सन्देह नही रह जाता।"

एक बार फिर पादरी ने डोरोथिया को सब बाते समझा दी। सुन्दरी युवती सेको और नाई के साथ चल पडी। नाई ने अपने-आपको छिपाने के लिए चेहरे पर नकली दाढी लगा ली।

जब वे लोग काले पहाड पर पहुचे तो उन्होने चट्टानो के बीच डॉन क्विक्जोट को देखा। सौभाग्य से इस समय वीर नायक अपने कपडे पहन चुके थे किन्तु उनका कवच अब भी पास रखा हुआ था। सुन्दरी डोरोथिया तुरन्त समझ गई कि जिस व्यक्ति से मिलना था वह यही वीर नायक था। वह गधे पर से उतरी और वीर नायक की ओर बढ चली। वह तुरन्त उनके घुटनो के पास झुक गई और यद्यपि वे रोकते ही रह गए फिर भी वह कहने लगी, 'ओ महावीर, पराक्रमी, दुर्दम्य वीर नायक! मैं इस स्थान से तब तक नही उठूगी जब तक कि आप मुझे एक वर नही दे देते। उससे आपका गौरव दिगन्तो मे फैल जाएगा और मुझ दुखियारी स्त्री को आपकी अपार करुणा का एक अश प्राप्त हो जाएगा। इस सारे इलाके मे मुझ जैसा व्याकुल और प्रपीडित कोई भी व्यक्ति नही है। हे श्रीमन्त, जो मै आपके महान हृदय से याचना कर रही हू उसका मुख्य कारण यह है कि मैने आपका यश बहुत दूर से सुना है और उसी के सहारे मै आपका दर्शन करने के लिए यहा तक आ गई हू। मेरी प्रार्थना है कि जहा मै आपको ले चलू आप तुरन्त वहा चलने को तत्पर हो जाए और किसी दूसरे साहसिक कार्य मे तब तक न लगे जब तक मेरे राज्य को छीन लेनेवाले उस दुष्ट दानव का अन्त न कर दे, जिसने समस्त मानवीय और ईश्वरीय नियमो का उल्लघन करके मुझे इस प्रकार असहाय बना दिया है।"

डॉन क्विक्जोट ने कहा, "तथास्तु! इसी क्षण से मैं अपने सारे चचल विचारो को

स्थिर किए देता हू। तुम्हारी पराजित आशाओ को फिर से जीवित करने के लिए मै अपनी भुजाओ को पुन उठाने को तत्पर हू। ईश्वर मेरी ओर है, मेरा पराक्रम मुझे सहायता देगा। और तुम देखना कि मै तुम्हारे साम्राज्य को फिर से जीत लूगा और तुमको तुम्हारे ही पूर्वजो के पवित्र राज्य सिहासन पर बिठा दूगा।"

यह कहकर डॉन क्विक्जोट ने उसे धीरे से उठाया और बडे ही गौरव के साथ विनम्रता से उससे आलिगन किया और फिर सेको को आज्ञा दी कि वह उनके वस्त्र और शस्त्र ले आए।

जब उन्होने कवच को धारण कर लिया तो सेको को आज्ञा दी, "चलो, अब हम इस दुखियारी राजकुमारी के दुखो को दूर करे।"

इस समय तक नाई अपने घुटनो के बल चुपचाप बैठा हुआ था। उसे अपनी हसी रोकने मे बडी मुश्किल हो रही थी। उसे यह भी डर था कि कही उसकी दाढी न गिर जाए क्योकि उस समय उसके मुख का खुल जाना ही सारे रहस्य का उद्घाटन कर देता।

सेको अपने मालिक का एकदम सम्राट होते हुए देख रहा था। अपने स्वप्नो की पूर्ति इतने निकट जानकर उसका रोम-रोम पुलकित हो रहा था। वह अभी तक यह प्रश्न नही पूछ रहा था कि मालिक उस राजकुमारी से विवाह भी कर लेगे, या नही ? और क्या वे मेक्रोमिकोन साम्राज्य के सम्राट होना स्वीकार करेगे, या नही ?

वे लोग सराय की ओर लौट पडे। डॉन क्विक्जोट एक लम्बा भाषण देते रहे जिसमे उन्होने यह प्रमाणित किया कि वीरता का स्थान साहित्य से ऊपर है और उन्होने आधुनिक कालीन युद्ध के कायर ढग की निन्दा करते हुए उच्च स्वर से कहा, "कितने अच्छे थे वे अतीत के दिन जब यह गोली बारूद नही था। निश्चय ही इनका आविष्कार करनेवाला व्यक्ति अब नरक मे होगा। उसे अपने इस भयानक आविष्कार के लिए दड मिल रहा होगा। इसके कारण मनुष्य कायर हो गया है। वीरतम व्यक्ति का जीवन धोखे से नष्ट कर दिया जाता है और इसीलिए इस घृणित युग मे जो मैंने यह वीरता का कार्य अपने ऊपर ले लिया है, इसके लिए निस्सन्देह दु ख होता है क्योकि आजकल वीरता की पूछ ही कहा है ?"

इस प्रकार बाते करते हुए जब वे बढे चले आ रहे थे तो घनी हरी घास के बीच मे उन्हे लगभग छ आदमी बैठे हुए दिखाई दिए। उनके पास ही वायल की चादरे बिछी हुई थी। ऐसा मालूम होता था जैसे कुछ ढका हुआ है। डॉन क्विक्जोट उनके निकट चले गए और उन्होने विनम्रता से उसमे पूछा, "इस कपडे के नीचे तुम लोगो ने क्या ढक रखा है।"

उनमे से एक ने कहा, "श्रीमान्, ये कुछ मूर्तिया है। हम अपने नगर मे एक वेदी बना रहे हैं, उसपर हमे इन्हे स्थापित करना है।"

डॉन क्विक्जोट ने कहा, "अच्छा, यह बात है। तो मुझे बडी प्रसन्नता होगी यदि मैं उनके दर्शन कर सकूगा।"

एक व्यक्ति ने एक पुतले को खोल दिया, वह सेण्ट जॉर्ज का था। डॉन क्विक्जोट ने उसे देखकर कहा, "दैवी युद्ध मे युद्धरत यह चर्च की ओर से लडनेवाला एक वीर नायक

था। इनका नाम डॉन सेण्ट जॉर्ज था और यह सुन्दरियो का एक असाधारण रक्षक था।"

इस प्रकार चर्च के वीर योद्धाओ के अन्य पुतले दिखाए गए जिनकी डॉन क्विक्जोट प्रशसा करते रहे। अन्त मे उन्होने सेण्ट पॉल को घोडे पर से गिरती हुई मुद्रा मे चित्रित करनेवाला एक पुतला दिखाया। डॉन क्विक्ज़ोट ने कहा, "एक समय यह युद्ध-रत चर्च का सबसे बडा शत्रु था किन्तु बाद मे यह उसका सबसे बडा रक्षक हो गया।"

जब और पुतले नही रहे तो डॉन क्विक्ज़ोट ने फिर उनको चादर से ढकवा दिया और उनसे कहा, "इन पुतलो को दिखाकर तुमने मेरे लिए शुभ शकुन का काम किया है, क्योकि ये सन्त और वीर नायक वही काम करते थे जो मै करता हू अर्थात् मैं भी आयुध-जीवी हू। भेद केवल इतना है कि वे लोग सन्त थे और पवित्र नियमो के अनुसार युद्ध करते थे और मै एक पापी हू और मनुष्य की रीति से युद्ध करता हू। उन्होने स्वर्ग को बलपूवक जीत लिया था क्योकि स्वर्ग सदैव शक्ति के द्वारा ही पराजित किया जाता है किन्तु दुर्भाग्य, मै नही जानता कि मेरे इस सब परिश्रम का फल क्या है। लेकिन जो कुछ भी हो, मेरा भाग्य परिर्वातत हो रहा है। मेरी बुद्धि जागे और मै भी कोई अच्छा रास्ता पकड सकू जिससे कि मेरा कल्याण होगा।"

सेको ने उसी समय कहा, "तथास्तु!"

कुछ समय बाद वे लोग सराय मे पहुच गए। सब लोगो ने वहा दो दिन व्यतीत किए। अब पादरी और नाई ने यह योजना बनाई कि किस प्रकार डॉन क्विक्जोट को घर ले जाया जाए और डॉन फर्डिनेण्ड और डोरोथिया को अधिक कष्ट न दिया जाए। उन्होने एक गाडीवाले को तय किया और उसके बैल लाकर जोते और उनके ऊपर एक लकडी का पिंजडा बनाया। वह पिजडा इतना बडा था कि उसमे वीर नायक बडे आराम से बैठ और लेट सकते थे।

सराय के सब लोगो ने अपने वेश परिर्वातत कर लिए। उन्होने अपने मुखो पर नकली चेहरे चढा लिए। कुछ ने वस्त्र बदल लिए, कुछ ने रग इत्यादि लगाकर अपने मुखो को विकृत कर लिया। ताकि डॉन क्विक्ज़ोट पहचान न सके कि वास्तव मे वे लोग कौन थे। इतना काम हो जाने पर वे सब शान्ति से उनके कमरे मे घुसे जहा वे गहरी नीद मे सोए हुए थे। वे लोग तुरन्त उन पर झपटकर टूट पडे और उनके हाथो और पैरो को इतनी ज़ोर से पकड लिया कि वीर नायक डॉन क्विक्ज़ोट डिलामाचा बेचारे जहा के तहा दब गए। उनमे हिलने की भी शक्ति नही रही। अपने चारो ओर खडी विचित्र आकृतियो को वे फटी-फटी आखो से देखते रह गए। उन्हे लगा कि वे सारी विकृत आकृतिया केवल किसी प्रेत-लोक की आत्माए थी, और उन सबने उनपर कोई जादू कर दिया है।

उन व्यक्तियो ने उन्हे शय्या पर से बलपूवक उठा लिया और पिजडे मे रखकर बन्द करके बाहर से साकल चढा दी। और फिर उसपर कील ठोक दी।

गाडी चल पडी। छ दिन मे वे अपने गाव आ पहुचे। मध्याह्न का समय था। गाडी नगर मे घुसने लगी। उस रोज़ इतवार भी था। सब लोग बाज़ार मे ही इकट्ठे थे। और गाडी का भी रास्ता वही था। सब लोगो को यह जानने की उत्सुकता हो गई कि गाडी के पिजडे मे क्या रखा है, और जब उन्होने अपने ही आदमियो को देखा तो और भी

आश्चर्य हुआ। भीतर डॉन क्विक्ज़ोट को देखकर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। अभी वे लोग आश्चर्य ही कर रहे थे कि एक छोटा लडका दौडकर वीर नायक के घर चला गया और उसने वीर नायक की भतीजी को सूचना दे दी कि आपके चाचा पुआल पर लेटे हुए गाडी मे चले आ रहे है और कई बैल उस गाडी को खीचे ला रहे हे।

घर के लोग लाए। उन्होने डॉन क्विक्जोट को गाडी पर से उतारकर कपडे पहनाए और शय्या पर लिटाया। वे फिर भी उजबक की तरह इधर-उधर देखते रहे और कल्पना नही कर पाए कि वे इस समय कहा थे। क्या वे उसी पर्वत पर थे या उस जादू के नगर मे जहा दैत्य निवास करता था ? उनपर भय छा गया और उनका मस्तिष्क चल गया। बहुत लम्बी-सी बेहोशी उनपर छा गई। जब वे जागे तो उन्होने कहा, "परमात्मा को धन्यवाद है। उन्होने मुझपर कितनी असीम करुणा की है। उनकी दया का कोई अन्त नही। मनुष्य की जितनी परिस्थिति है उस सबसे भी अधिक उस परमेश्वर की दया है, असख्य, अगणित। मेरी बुद्धि अब ठीक हो गई है। चारो ओर शान्ति-सी प्रतीत होती है। अज्ञान का मेघ मेरे मस्तिष्क पर छा गया था। उन वीर नायको की पुस्तको को पढ-पढकर, जो मूर्च्छा मेरी बुद्धि पर छा गई थी वह सब नष्ट हो गई है। मेरी भतीजी मेरे सामने है। मेरी देखरेख करनेवाले भी यहा है और मेरा प्यारा सेको भी यहा है। सुनो, अब मेरा अन्त आ गया है किन्तु यद्यपि मेरा जीवन एक पागल व्यक्ति के समान व्यतीत हुआ है, मै चाहता हू कि मेरी मृत्यु ऐसी हो कि मुझपर से यह लाछन सदा के लिए मिट जाए।"

सेको की आखो मे पानी आ गया। उसने रोते हुए कहा, "मुझपर वज्र गिर जाए, मेरे स्वामी, इस प्रकार मत मरिए ! मेरी सलाह मानिए और कुछ और वर्ष तक जीवित रहिए। अपने जीवन मे सबसे अधिक मूर्खता आप यह करेगे कि इस असमय मे मर जाएगे। इस श्वास को अपने शरीर मे से निकल मत जाने दीजिए। और यह क्या हुआ कि बिना हाथ-पैर चलाए ही आप सहज मर जाए। आप मोमबत्ती तो नही कि सहज बुझ जाए। और यह भी कोई बात नही कि केवल वेदनाओ के कारण आपका अन्त हो जाए।"

डॉन क्विक्जोट ने कहा, "शान्त रहो, सेको, मैं पहले पागल था किन्तु अब मैं ठीक हो गया हू। एक समय मे डॉन क्विक्ज़ोट डिलामाचा था लेकिन अब मैं केवल एलोन्सो क्विकजानो हू और मैं चाहता हू मेरा प्रायश्चित्त मुझे फिर से उबार सके और तुम जो सम्मान मेरे लिए अपने हृदय मे रखते हो, वही मुझे फिर से प्राप्त हो सके।"

डॉन क्विक्जोट का अन्तिम दिन आ गया और अपने मित्रो के आसुओ और दु ख के बीच उन्होने अपने नश्वर शरीर को छोड दिया। इस प्रकार डॉन क्विक्ज़ोट डिलामाचा परमवीर मृत्यु को प्राप्त हो गए। वे कहा रहते थे, इस विषय मे उनके इतिहासकार ने कुछ भी नही लिखा है। इसलिए लामाचा के सारे कस्बो और गावो को हमे वैसे ही अमरता प्रदान कर देनी चाहिए जैसे होमर के लिए ग्रीस के सातो नगर प्रसिद्ध हो गए थे।

प्रस्तुत उपन्यास में मध्यकालीन सामतवाद का अन्त दिखाया गया है। पुरानी मान्यताए नये समाज में किस प्रकार हास्यास्पद हो जाती हैं, यह प्रकट होता है। व्यंग्य के क्षेत्र में यह एक महान कृति मानी जाती है।

डेनियल डिफो :

रॉबिन्सन क्रूसो[1]

डिफो, डेनियल अग्रेजी उपन्यासकार डेनियल डिफो का ज म क्रिपिलगेट में १६६० में हुआ और आपकी मृत्यु मूरगेट मे १७३१ में हुई। आपके माता पिता ने आपको अच्छो शिक्षा नही दी। आप पत्रकार बन गए आर राजनीति में भी भाग लेते रहे। १७१६ में आपका 'रॉबिन्सिन क्रूसो' नामक उप यास प्रकाशित हुआ। इसमें काल्पनिक वर्णन का बहुत सशक्त उदाहरण मिलता है। आपकी भाषा जैसे दृश्य को सजीव कर देती है। आपका दूसरा प्रसिद्ध उपन्याम 'मोल फ्लैण्डर्स' है।

'रोबिन्सन क्रूसो' विश्वविख्यात रचना है। इसकी विशेषता यह है कि इसे बच्चे भी समझ लेते है। इसलिए प्राय इसे बच्चो की पुस्तक ही समझा जाता है। वस्तुत चरित्र चित्रण इसमें बहुत श्रेष्ठ हुआ है।

सन् १६५१ की पहली सितम्बर की बात ह। हम लन्दन की ओर से जानेवाले जहाज़ पर बैठे। मेरी आयु केवल उन्नीस वर्ष की थी। मेरे पिता ने मुझे बहुत अच्छी सलाह दी, लेकिन मैने उनमे से एक बात पर भी ध्यान नही दिया। बार-बार उन्होने मुझसे कहा कि विदेश मत चले जाना। अपना घर यूरोप है वही रहने मे क्या बुराई है। जीवन मे सन्तोष का भी बहुत बडा मूल्य है। हमारे परिवार का नाम क्रुत्सनायर था क्योकि मेरे पिता ब्रेमेन के रहनेवाले थे। लेकिन इग्लैड के लोग-बाग जैसे है वह कौन नही जानता। असल शब्दो को बोलना और उसके लिए उच्चारण की कठिनाई से अपनी जीभ को मोडना उन्हे नही भाता। इसलिए हम लोग अभी क्रूसो कहलाते है और मेरा नाम रॉबिन्सन क्रूसो हो गया है। पिता की बात मे भी न्याय था, क्योकि जब हम्बर से आगे हम चले तो जहाज़ टूट गया। हालाकि मै और लोगो के साथ डूबने से बच गया था, लेकिन यह बडे दु ख की बात थी। अगर मैं पिता की बात मान लेता और शातिपूर्वक/अपने घर लौट जाता तो मैं भी कितनी समृद्धि और सुख से निवास कर पाता।

लेकिन मेरे दुर्भाग्य ने मुझको धकेल दिया। मेरे अन्दर एक हठ था। मुझे कुछ भी नही रोक सकता था। उन्ही दिनो लन्दन मे एक जहाज़ के मालिक से मेरी दोस्ती हो गई। जहाज़ आया था गिनी से और फिर वही लौट जाना चाहता था। मुझे जहाज़ का वह धडाका बहुत पसन्द आया। कप्तान ने कहा मैं अपने साथ ले चलूगा। मैंने अपने थोडे-से खिलौने और कुछ ऐसी चीज़े ले ली जिनसे कि जगली लोग बडे प्रसन्न हो जाते है। मैंने सोचा कि इनको मैं उन्हे दे दूगा तो मुझे थोडा धन प्राप्त हो जाएगा। मेरे पास तो

---

१ Robinson Crusoe (Daniel Defoe)

यह सब खरीदने को कुछ भी नही था। मैने रिश्तेदारो के यहा चक्कर लगाए और उनसे थोडा-बहुत धन इकट्ठा कर लिया। पहली बार ही हम लोगो को बडा फायदा हुआ और मैने देखा कि करीब तीन सौ पौड मेरे नाम मे जमा हो गए थे। अब तो गिनी की ओर यात्रा करने की मेरी और भी तीव्र इच्छा हो गई। हम लोग दूसरी यात्रा पर निकले भी, शैली के आगे निकलकर हमारा जहाज पकड लिया गया और हम लोग बन्दी बना लिए गए, क्योकि हमारे मालिक हमे गुलामो की तरह बेच देना चाहते थे।

दो साल इस बन्दी जीवन मे बीत गए लेकिन मैं कभी भयभीत नहीं हुआ। मैने बार-बार कोशिश की कि मै वहा से किसी तरह भाग निकलू। मेरे मालिक का यह कायदा था कि वह अक्सर मछलिया मारने जाया करता था और इसलिए एक नाव भी रखा करता था। उसमे वह मुझे बिठा लेता और अपनी मदद करने के लिए दो मूर लोगो को और बिठा लेता था। एक दिन ऐसा हुआ कि उसने खूब सारा खाना और पानी नाव मे रखा ताकि अपने दोस्तो के साथ उसमे जाकर उन्हे सैर करा सके, लेकिन वह उस दिन नही जा सका। फिर उसने हम तीनो को कुछ मछलिया पकडने के लिए भेज दिया। उस दिन मैंने चालाकी की। मैने अपने साथियो से कहा कि भाई मछलिया तो कही मिलती नही आओ तुम मेरे साथी हो, थोडी दूर खाडी मे आगे वहा निकल चले। उन लोगो को कोई शक तो था नही, झट तैयार हो गए। नाव चल पडी। लहरो का बिखेरती हुई वह आगे खाडी की गहराई की ओर बढ चली।

जब हम लोग किनारे से दूर पहुच गए तो मैने एक मूर को अचानक पकड लिया और उसे समुद्र मे फेक दिया। दूसरा मूर युवक था, मैने उससे कहा कि अगर वह मेरी मदद करेगा और जैसा मै कहूगा वैसा ही करता चला जाएगा तो मैं उसको छोड दूगा। उस बेचारे ने मेरे कहने से पाल किनारे की तरफ कर दिए। उसमे हवा भर गई और पहले मूर को हमने तैरते हुए छोड दिया कि वह किनारे पर पहुच जाए, नाव दूसरी ओर चल पडी। कैसा बियाबान था किनारा, भयानक हिंस्र जन्तु उसमे घूमते थे। रात हो गई। हमने लगर डाल दिया। भयानक पशुओ का गर्जन सुनाई देने लगा। और इसमे उस मूर का भी बडा डर था। वह जाकर वहा सूचना देगा, कही वे लोग पीछा न कर बैठे और हम पकड न लिए जाए। और कौन जानता था कि उस द्वीप मे कौन-से जगली लोग रहते है। उनसे बचना भी तो कठिन था।

फिर भी कभी-कभी हमे किनारे पर तो नाव रखनी ही पडती थी, क्योकि आखिर ताजा पानी तो पीने के लिए चाहिए ही, और ऐसा करने जाते समय एक बार हमको एक सिंह मिल गया जिसे हम लोगो ने मार डाला। अगली बार हमको दोस्ताना बर्ताव करने-वाला एक हब्शी मिला जिसने हमको अनाज दिया और मीठा पानी भी पिलाया। ये हब्शी लोग भी विचित्र हैं। इनमे स्त्रिया भी पुरुषो की भाति वस्त्रहीन रहती है। हब्शी को छोडकर हम लोग बराबर ग्यारह दिन तक समुद्र पर चलते चले गए, क्योकि लहरें साथ थी और हवा भी भयानक नही थी। लेकिन एक समस्या हमारे सामने आ गई, जिसे हमे हल करना था, और मैंने यह नतीजा निकाला कि हो न हो हम लोग वार्ड द्वीप के अतरीप के पास है। मैं नाव के आगे के हिस्से मे बैठा रहा और बराबर सोचता रहा कि

किनारे पर उतरू या नही, लेकिन तभी वह मूर लडका, जिसका नाम जूरी था, दौडता हुआ आया और पुकार उठा, "मालिक पाल खोल दो !"

दूर देखा मैने—एक पुर्तगाली जहाज़ ब्राजील जाने के लिए आ रहा था। कप्तान ने भी हम लोगो को देखा। उसने हमे ऊपर चढा लिया। मुझसे उसने अत्यन्त स्नेह का व्यवहार किया। मैने उसे कुछ देना चाहा तो उसने कुछ भी लेने से इन्कार कर दिया। उसने मुझसे कहा, "मैं तुम्हे वहा मुफ्त मे ही ले जाऊगा और यह जो तुम्हारे पास नाव इत्यादि है इनसे तुम्हे अपनी रोज़ी चलाने लायक सामान मिल जाएगा। हो सकता है कि तुम इनकी मदद से इग्लैड भी लौट सको।" और यही तय हुआ। भाग्य ने फिर एक नया मोड लिया। जब हम ब्राजील पहुचे तो मैने देखा कि मेरी नाव मे सामान बहुत कम रह गया है। फिर जो कुछ भी था उसको लेकर मैं किनारे पर उतर गया।

वहा मैने फसले वोना शुरू किया, जिन्होने पहले-पहल मेरे पेट को भरने का साधन बना दिया। उसके बाद मैने तम्बाकू की खेती बोई। तम्बाकू बेचकर मैंने काफी मुनाफा कमा लिया। जब इतना हो गया तो मैंने एक ज़मीन का टुकडा खरीद लिया। उसमे मैने गन्ना भी बो दिया। इस तरह चार साल बीत गए। मेरे साथ काम करनेवाले एक व्यक्ति से मेरी मित्रता हो गई। उससे बात ही बात मे मैंने अपनी पुरानी दो यात्राओ की ऐसी वर्णना की—उसको बताया कि किस तरह मैं गिनी के किनारे गया, किस तरह वहा मैंने स्वर्ण-धूल का व्यापार किया था, वहा कैसे बडे-बडे हाथियो के दात मिलते है, जिन्हे हब्शी लोग लाकर दे जाते है—कि उनके नयन विस्मय से फैल गए।

एक बार फिर मैं कुछ सौदागरो को लेकर आगे निकलने को तैयार हो गया। हमने अपना जहाज़ बनाने और फिर गिनी की ओर चलने का इरादा कर लिया कि हम वहा जाकर गुलाम खरीदेंगे और उन्हे बेचेंगे। गुलामो का मिलना कितना कठिन था ! इसलिए इतनी बडी यात्रा की चिन्ता भी लोगो ने नही की। लोगो को इसमे लाभ दिखाई देता था। जिसके पास भी अपनी खेती थी उसे काम करनेवाले मज़दूरो की ज़रूरत थी। लेकिन कौन जानता था कि मै अपना विनाश स्वय कर रहा था। मैं तब पहली बार भी अपने को नही रोक सका था जब मेरे पिता ने अच्छी सलाह दी थी। मेरी कल्पना ने मुझे रास्ता दिखाया। मेरे हठ ने मुझे प्रेरित किया, मेरी तर्कबुद्धि लुप्त-सी हो गई। जहाज़ तैयार हो गया। माल लद गया। जाने अपशुकन की कौन-सी घडी आई कि पहली सितम्बर, सन् १६५६ को हम फिर लहरे चीरते हुए जहाज़ पर निकल पडे।

हमारे जहाज़ का वजन करीब १२० टन था। हमारे पास छ बन्दूके थी और चौदह आदमी थे। जहाज़ का चलानेवाला अलग से था। उसका एक नौकर भी था। और एक मै था। और ऐसी रगीली चीज़े हमने फिर इकट्ठी कर ली थी जो जगलियो से व्यापार करने मे फायदा देती थी, जैसे काच के टुकडे, सीप, शख और ऐसी ही अनेक छोटी-मोटी चीज़े। मैंने दर्पण, चाकू, कैंचिया, हसिया आदि इस तरह की चीज़ो को खास तौर पर इकट्ठा कर लिया। मैं जानता था कि उनकी माग बहुत थी। करीब १२ दिन गुज़र गए। हम लोगो ने विषुवत रेखा पार कर ली और उत्तर की ओर हम लोग करीब २२ मिनट बिताने पर ६० डिग्री आगे पहुच गए। तभी आकाश काला हो उठा। प्रचड पवन के झोके उठने लगे।

लहरे तुमुल निनाद करने लगी । नन्हे जुगनू-सा छोटा होता हुआ हमारा जहाज़ ऐसे थर्रा-थर्राकर कापने लगा मानो भीषण तूफान की भयानक सासो को सुनकर उसका दिल दहल-दहल उठता था । ग्यारह दिनो तक हम कुछ भी नही कर सके । समुद्र हिलता रहा, आकाश कापता रहा, महानाश की तरह पवन फुकारता रहा और हम बहते रहे । भाग्य और तूफान की दया पर हमने अपने-आपको छोड दिया था ।

बारहवे दिन ऐसा लगा जैसे कि वह क्रोध थम गया था । जहाज़ के कप्तान ने देखा कि हम लोग गिनी के किनारे पर पहुच गए थे । एमेजन नदी के भी पार ओरिनिको नदी, जिसे कि महानदी कहते हैं, हम लोगो के पास आ गई थी । कप्तान चाहता था कि हम लोग फिर ब्राज़ील की तरफ लौट चलें क्योकि जहाज़ अब चुचाने लगा था और आशका थी कि वह अब अधिक कार्य नही कर सकेगा । लेकिन मै इसके लिए तैयार नही था । मैं चाहता था कि हम बारबदोज की तरफ बढ चले जोकि कैरीबी द्वीपो के समीप है । और हमने यही किया । उत्तर-पश्चिम की ओर पश्चिमी मार्ग पकडा । अब भी पवन बडी तेज़ी से चल रहा था । एक दिन भोर मे हमारा आदमी चिल्ला उठा, "पृथ्वी ! पृथ्वी दिखाई पड रही है !" हमारा जहाज़ उसी समय बालू से टकराया और उसकी गति एकदम रुक गई । समुद्र की लहरे हमारे ऊपर से निकलने लगीऔर हम लोग अपनी केबिनो के अन्दर घुस गए । हालाकि हमने सोचा था कि वायु तनिक शात हो गई है लेकिन बालू मे फसा हुआ जहाज़ बहुत गहरा धस गया था । हमारी दशा बहुत ही खराब हो गई । हमारे सामने कोई चारा ही नही था । किसी प्रकार हमारा जीवन बच जाए, सबसे बडी समस्या तो यही थी । जहाज़ पर एक नाव थी लेकिन प्रश्न यह था कि उसको समुद्र मे उतारा कैसे जाए । आखिर हमने उसे एक किनारे लटकाया और सब उसमे बैठ गए । आकाश की ओर देखा । उस परमात्मा की असीम कृपा पर हमने अपने-आपको छोड दिया, क्योकि किनारे पर समुद्र भयानकता से ऊचा होता चला जा रहा था । हमारे पास कोई पाल नही था । बस अब हम किनारे पर पहुचने के लिए डाड चलाने लगे । हृदय भारी हो गया था । ऐसा लगता था कि हम सब मृत्युदण्ड पाने के लिए चले जा रहे है । हम जानते थे कि किसी भी समय लहरो के थपेडे हमको बडी तेज़ी से बहा ले जाकर और तट से टकराकर सैकडो टुकडो मे हमे छितरा सकते है, और इससे बचने का हमारे पास कोई उपाय नही था । एक भयानक लहर उठी, मानो एक पहाड उठ आया । वह लुढकती हुई इतनी भयानकता से हमको बहा ले चली कि नाव उलट गई । एक दूसरे से सदा के लिए हम बिछुड गए । सबको वह पानी निगल गया जैसे वह बहुत प्यासा था और मैं अकेला रह गया ।

उस समय की अवस्था का मैं कोई वर्णन नही कर सकता । मैं पानी मे डूब गया, भले ही मैं अच्छा तैराक था । लेकिन लहरे तो मुझे सास भी नही लेने देती थी । अन्त मे वही ऊची लहर मुझे पकड ले चली । मुझे उसने उठा दिया और किनारे पर फेक दिया । मैं बहुत भीगा नही था, लेकिन जो पानी मैं पी चुका था उससे मेरी हालत खराब हो चुकी थी, जैसे मैं आधा मर चुका था । अब भी मेरा दिमाग जाग रहा था । मैने कोशिश की कि मैं अपने पैरो पर खडा हो जाऊ और ऊचे पहाड की ओर भाग चलू, लेकिन समुद्र मेरी

ओर बढा चला आ रहा था। वही पर्वत की भाति उत्तुग, और शत्रु के समान क्रुद्ध और हिंस्र। मैने अपनी सास रोक ली और पानी पर अपने-आपको डाल दिया। मेरी सबसे बडी चिन्ता यह थी कि कही पानी की लहरे मुझे लौटाकर फिर समुद्र मे न फेंक दे। लगभग बीस-तीस फुट मेरा शरीर पानी की गहराई मे उतरता चला गया। प्रवाह के वेग ने फिर से मुझे किनारे की ओर ठेलना शुरू किया। तभी मुझे ऐसा लगा कि मैं अपनी सास नही रोक पाऊगा और अचानक उसी समय मुझे ऐसा लगा कि मेरा सिर और मेरे हाथ पानी की सतह के ऊपर आ गए हैं। लहरो का वेग समाप्त हो चुका था और लौटने ही वाला था कि मैं आगे कूदा और धरती मेरे पाव के नीचे आ गई थी। मैं अभी खडा भी नही हुआ था कि समुद्र मेरे पीछे बरसता हुआ आ गया। दो बार उसने मुझे फिर उठा लिया। अत मे उसने मुझे एक चट्टान के ऊपर फेंक दिया। मेरे दुखो का अन हो गया, क्योकि मैं निरीह और मूर्च्छित होकर बाहर लुढक गया। पानी के लौटने के कुछ देर पहले ही मेरी चेतना लौट आई और मैंने चट्टान के एक टुकडे को जकडकर पकड लिया। धीरे-लहर लौट गई और वह मुझे अपने साथ नही ले जा सकी, क्योकि चट्टान ने मुझे अटका लिया था। इस तरह एक के बाद एक अनेक चट्टानो का सहारा लेता हुआ मैं काफी दूर पहुच गया और फिर मैने ऊची पहाडियो पर बैठकर देखा कि मेरे चारो तरफ घास उगी हुई है। मैं खतरे से दूर हो गया, पानी अब मुझे नही छू सकता था।

वह जीवन का मेरा खास क्षण था। मैं उसे कैसे अभिव्यक्ति दे सकता हू! ओह, मेरी आत्मा कहा से कहा पहुच गई थी! कितना हर्षातिरेक हुआ! मृत्यु से बच जाना भी जीवन का कितना बडा आनन्द था! उसकी विकराल छाया मुझे डरा रही थी और मैं उसमे से अजेय बाहर निकल आया था। मैं किनारे पर चला आया था। मैंने अपने हाथो को ऊपर उठाया और परमात्मा को धन्यवाद देने के लिए गहन गम्भीरता से अत्यन्त कृतज्ञता प्रकट की। जो मेरे साथी डूब गए थे उनके लिए मुझे बहुत दुख हुआ। काश, उनमे से एक भी बच जाता तो वह मेरा कितना अच्छा साथी होता! लेकिन मैने उनमे से एक को भी नही देखा और न उनसे कोई इशारा ही मिला। केवल तीन के टोप व एक की टोपी और दो जूते मुझे बहते हुए दिखाई दिए, लेकिन वे तो मनुष्य नही थे जिनसे मैं बातचीत कर सकता।

लेकिन मेरा आराम जल्दी खत्म हो गया, क्योकि मैंने यह अनुभव किया कि मैं बिलकुल भीग गया हू। मेरे पास खाना और पीने के लिए पानी कुछ भी नही था और अब मेरे सामने भयानक भूख खडी थी या यह भय था कि हिंस्र जन्तु मुझे चबा-चबाकर खा जाएगे। मेरे पास कुछ था भी तो नही। केवल एक चाकू था और एक तम्बाकू का पाइप था। एक छोटे-से डिब्बे मे तम्बाकू रखी हुई थी। यह जो कुछ भी था, मेरे पास यह भी तो नही के बराबर ही था। रात बिताने के लिए मैने एक बहुत घनी झाडी खोज ली। मैं किनारे के आसपास करीब एक फर्लांग घूमा। पहले मैने यह देखा कि कही पीने के लिए ताज़ा पानी मिलता भी है या नही। परमात्मा जिसको बचाने के लिए भेजता है उसको कोई नही मार सकता। मेरे हर्ष की सीमा नही रही कि जब मैंने देखा कि वहा पानी का एक स्रोत बह रहा था।

तुरन्त मैने पास ही के पेड से काटकर अपनी रक्षा के लिए एक डडा बनाया, और उसी पेड के ऊपर चढकर शीघ्र ही गहरी नीद मे डूब गया। जब मेरी नीद खुली तब धूप आ गई थी। आकाश स्वच्छ था और तूफान शात हो गया था। लेकिन मुझे तो जिस बात का सबसे अधिक आश्चर्य हुआ वह यह थी कि जहाज़ का लहरो ने बालू पर से उठा लिया था और उस चट्टान से टकरा दिया था जिसपर उन्होने मुझे फेका था। मुझे यह देखकर असीम दु ख हुआ कि यदि हम लोग जहाज के ऊपर रहते तो शायद सबके सब बच जाते। यह सोचते ही मेरी आखो मे आसू आ गए। मैंने निश्चय किया कि किसी भी प्रकार उस जहाज़ के ऊपर जाऊ और अपनी आवश्यकता के लिए जो कुछ भी बच सके उसकी रक्षा कर लू। यह सोचकर मैने अपने कपडे उतारे, क्योकि मौसम बहुत गरम था। मैं पानी मे उतर गया। जहाज के पास पहुचकर मैने चारो ओर खोज की। एक छोटी-सी रस्सी लटक रही थी। उसको पकडकर मैं चढ गया और जहाज़ के ऊपर पहुचा। पहला काम मैने यह किया कि चारो ओर यह देखा कि क्या-क्या नष्ट होने से बच गया है। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नही रहा जब मैने यह देखा कि खाने का सारा सामान सूखा था। मैं वही बैठ गया। मैंने शराब की बोतल निकाली और बिस्कुट बाहर उठा लिए, और उसके बाद जितनो को मै बाहर ले जा सका, किनारे पर पहुचाने लगा।

जहाज़ मे कोई नाव नही थी लेकिन कुछ कपडे बचे थे। मस्तूल के टुकडे बचे थे। पालो के कपडे बचे थे, लकडियो के कुछ शहतीर बाकी थे। मैंने उन सबको जोडकर एक छोटी नाव-सी बनाई और अपने तीन मल्लाहो के वस्त्र उसपर उतार दिए। उसमे रोटी, चावल, पनीर, सुखाए हुए बकरे के गोश्त के टुकडे, अनाज आदि चीज़े इकट्ठी कर ली। बढई का सामान ले लिया। बन्दूक और बारूद लिया। और मैं उसके साथ पानी मे चलता हुआ उसे किनारे पर खीच लाया। तब मेरी जान मे जान आई।

मैंने अगला काम सोचा। पहले मैंने चारो ओर की भूमि को जाचा। मैं नही जानता था कि मैं कहा था। वह कोई महाद्वीप था या केवल एक छोटा-सा द्वीप। वहा कोई रहता था या वह निजन था, यह सब मेरे लिए अज्ञात था। तब मैंने अपनी पिस्तौल उतारी और बारूद से भरकर शीघ्र अपने पास लटका ली। मैं नज़दीक की पहाडी की चोटी पर धीरे-धीरे चढ गया और वहा मे मैंने उस जगह को देखा। मैंने यह भी देखा कि मैं एक छोटे-से द्वीप के ऊपर था। चारो ओर समुद्र जैसे कुडली मारकर बैठ गया था आर उसके बाद कही भी पृथ्वी दिखाई नही देती थी। हताश मैं अपनी नई बनाई हुई नाव के पास आ गया और फिर जहाज़ से माल उतार-उतारकर उसपर रखने लगा। फिर धीरे-धीरे उसे मैं किनारे पर खीच लाया।

वन-जन्तुओ से बचने के लिए रात मे मैंने अपने चारो ओर एक घेरा-सा बनाया हालाकि कुछ ही दिनों मे मुझे यह ज्ञात हो गया कि वहा ऐसी डरने योग्य कोई वस्तु नही थीं। अगले दिन मैं फिर जहाज़ पर गया और जितने आदमियो के कपडे मुझे वहा पर मिल सकें और जितनी भी चीज़ें मेरे लिए लाभदायक हो सकती थी वे सब मैंने इकट्ठी कर लीं और फिर उन्हे नाव मे रखकर अपने साथ ले आया। मैं बार-बार जहाज़ पर गया। हर चीज़ को मैं वहा से लाद लाया। और जब वहा कुछ भी नही रहा तब मैने उस

सबका जोड लगाया। अब मेरे पास करीब छत्तीस पौड थे कुछ साना भी था। कुछ चादी के टुकडे भी थे। किनारे पर आए मुझे तेरह दिन हो गए थे। बडी जोर की हवा चलने लगी और सारी रात लरजती हुई चारो तरफ घूमती रही। रात उसी तूफान मे गुज़री। भोर की पहली किरण ने मुझे जगाया और मैंने आखे खोलकर देखा कि द्वीप पर कोई जहाज़ बाकी नही था। लहरे जिस तरह उसे लाई थी उसी तरह से बहाकर वापस ले गई थी। उसे शायद परमात्मा ने इसीलिए भेजा था कि मेरे भूखे पेट के लिए वह सामान इकट्ठा करके चला जाए।

अब मेरे सामने एक ही समस्या थी। यहा कोई जगली आदमी या कोई वन जन्तु आ जाए तो कही वह किसी प्रकार मुझे नष्ट न कर दे। इसीलिए मैंने पहले अपने रहने के लिए उचित स्थान की खोज की। वहा एक पहाड था। जिधर से उसकी उठान प्रारम्भ होती थी वहा एक छोटा-सा मैदान था और पहाड के तले मे एक गुफा-सी थी मानो किसी समय हवा और पानी ने चट्टान को काट दिया था। वहा मैंने अपना तम्बू गाडने का निश्चय किया। गोला खीचकर मैंने दो लट्ठे वहा गाड दिए और जहाज़ के तार इधर-उधर फैला दिए और लकडियो के टुकडे इकट्ठे करने लगा। कुछ ही देर मे मैंने एक मज़-बूत दीवार खडी कर दी। इसके अन्दर घुसने के लिए मैंने कोई दरवाज़ा नही बनाया। छत पर से एक रस्सी-सी उतार दी। यदि मैं उसे ऊपर चढकर खीच लेता तो चारो तरफ से एक घेरे मे बन्द हो जाता था और मेरा सब सामान मेरे पास सुरक्षित रहता था। मुझे किसीका भी भय नही था। लेकिन, साथ ही साथ यह काम करते हुए मैं हर रोज़ अपनी बन्दूक को लेकर कम से कम एक बार टोह लेने ज़रूर निकलता था। मैंने देखा कि द्वीप पर बकरे और बकरिया थी, लेकिन वे मुझे देखकर दूर भाग जाती थी और उनकी चाल भी बहुत तेज़ थी। लेकिन शीघ्र ही मैंने यह जान लिया कि उनको चौकाने से पहले ही किस प्रकार मैं उनको मार सकता था। मेरी बन्दूक अपना निशाना नही चूकती थी।

बारह दिन और बीत गए। तब मुझे यह ध्यान आया कि कुछ ही दिनो बाद मैं दिन और रात की गणना नही कर सकूगा। तब तो मैं पवित्र रविवार का भी ध्यान नही रख पाऊगा और काम करने और विश्राम के दिनो मे कोई अन्तर नही रह जाएगा। अन्त में मैंने एक लम्बे लट्ठे पर चाकू से कुछ अक्षर खोदे। उसके ऊपर एक विशाल सलीब बनाया और उसे किनारे पर गाड दिया। मैंने उसपर लिख दिया ३० सितम्बर को मैं इस किनारे पर पहुचा था और उसके दोनो ओर मैं अपने चाकू से रोज़ एक निशान बनाता, और यह मेरा कलैंडर बन गया। जब मैंने देख लिया कि वन-जन्तुओ का यहा भय नही है तो मैं चट्टान के आसपास घूमने लगा और वहा की रेतीली भूमि को सरकाने लगा। मैंने अपने घेरे मे से बाहर निकलने के लिए एक दरवाज़ा भी बनाया। फिर मैने आवश्यक वस्तुओ का निर्माण प्रारम्भ किया। एक कुर्सी बनाई, एक मेज़ बनाई। हालाकि बढई के औज़ारो का मैंने पहले इस्तेमाल नही किया था और मुझे बहुत अधिक परिश्रम करना पडा, लेकिन सामान भी बहुत कुछ था ही। लकडियो के टुकडे थे। फिर मैंने एक अल-मारी बनाई और गुफा की दीवार पर एक ओर उसको लगा दिया और कायदे से मैंने उसमे सामान को सजा दिया। मेरा मस्तिष्क सदैव काम मे लगा रहता। पहले मैं पहाड

के ऊपर चढकर समुद्र की ओर देखता, और जब मुझे ऐसा लगता कि कोई पाल दिखाई दे रहा है तो मै हर्ष से विह्वल हो जाता। लेकिन शीघ्र ही मुझे लगता कि यह मेरी कल्पना-मात्र है, तब मैं बच्चो की तरह फूट-फूटकर रोने लगता और अपनी मूर्खता से अपनी पीडा को दस गुना बढा लेता। इतना सब हो जाने के बाद मेरी गृहस्थी जैसे बस गई थी। मै अपने दैनिक कार्यक्रम को लिखने मे लग गया, और जब तक मेरे पास स्याही बाकी रही, मैने इस काम को नही रोका।

एक दिन मै समुद्र के किनारे गया, तो मुझे एक बहुत बडा कछुआ मिला। मैंने उसको मार डाला और पकाया। उसके अन्दर मुझे कई अण्डे मिले। मुझे उसका गोश्त बडा स्वादिष्ट दिखाई दिया और इतना अच्छा लगा कि जैसे मैंने बहुत दिनो से इतना अच्छा खाया ही नही था। इन दिनो बरसात आ गई। चारो ओर ठड पडने लगी, जिससे मुझे कुछ बुखार-सा आ गया। पाच या छ दिन तक मैं अपनी गुफा मे चुपचाप लेटा रहा। कठिनाई से ही इधर-उधर चल पाता था और भयानक सपने मुझे डराया करते थे। बरसात के बाद एक बडी अजीब बात हुई।

मैंने यह देखा कि जो अनाज मैं अपने साथ लाया था और वहा शेष धरती पर फैल गया था, अपने-आप उसके अकुर फूटने लगे और अब पौधे मजबूती से खडे हुए थे। मेरे सामने जो समस्या थी वह हल हो गई। मैं अन्न उगा सकता था। मृत्यु मुझे अब डरा नही सकती थी। पन्द्रह महीने बीत चुके थे मैं इस निर्जन द्वीप मे अकेला था और तभी मैंने चारो ओर देखा था कि मेरा भडार धीरे-धीरे समाप्त हो रहा था। इसके बाद मैने दूसरी बार द्वीप की खोज-बीन करना प्रारम्भ किया। एक पानी की धारा बहती चली आ रही थी। मैं उसके किनारे-किनारे चलता चला गया और एक बहुत ही हरियाले प्रदेश मे पहुच गया। कितने सुन्दर-सुन्दर वृक्ष उगे हुए थे! वहा जगली तम्बाकू उग रही थी। गन्ने उग रहे थे। नीबू के पेड थे और बहुत ही पके हुए मोटे-मोटे अगूर के गुच्छे के गुच्छे लटक रहे थे। मैंने उन अगूरो को तोडकर पेड पर सूखने के लिए लटका दिया ताकि वे मेरे लिए दाख बन जाए।

इस ऋतु मे मुझे सबसे बडा आश्चर्य तो यह हुआ कि मेरा परिवार बढने लगा था। बिल्लिया मै जहाज पर से ले आया था उनके बच्चे हो गए थे और अब इतनी अधिक बिल्लिया हो गई कि मुझे कुछ को तो कीडो की तरह मारना पडा क्योकि वे मुझे बहुत परेशान करती थी। एक तोता पालतू था, जो मेरे पास पिंजरे मे रहता था। इस तरह मक्खन, दूध और गोश्त मेरे लिए प्राप्त करना दुष्कर हो रहा था क्योकि मेरी बन्दूक का बारूद अब खत्म होने लगा था। अब मुझे मालूम पडा कि जो जीवन मैं व्यतीत कर रहा था वह कितना सुखी था। उसके सारे दु ख-अभिशाप मेरे लिए धीरे-धीरे दूर होते चले आ रहे थे। मेरे मस्तिष्क मे नए-नए विचार आने लगे, परमात्मा का वचन मैं नित्य दोहराया करता था। उससे एक अखड सात्वना मुझे प्राप्त होती थी। एक दिन सवेरे बहुत ही उदास था मैं, और अचानक बाइबिल के इन शब्दो पर मेरी दृष्टि पडी

"मैं तुझे कभी नही छोडूगा,
मैं कभी तेरा परित्याग नही करूगा। "

और इस तरह से मुझे ऐसा लगा कि निर्जन अनजान मे भी कोई मेरे साथ था जो मुझे सुखी बनाने के लिए आतुर था। ससार के अन्य किसी प्रदेश मे सम्भवत मुझे इतनी सात्वना प्राप्त नही हुई थी।

अपनी परिस्थिति के लिए जितना भी भय सम्भव था उस सबको मैं भूला नही था। एक यह भी था कि कही से कोई जगली न आ जाए जो मुझे ग्रस जाए, या अपने दल को न ले आए जिसके सामने मैं बेकाबू हो जाऊ। अभी मैने अपने लिए एक नाव बनाना प्रारम्भ किया। वह नाव नही थी, एक विशाल वृक्ष का तना मैंने काट लिया था। सिडार वृक्ष को गिराना कोई आसान काम नही था और फिर मैंने उसे आग नही छुलाई, हथौडी और छेनी से धीरे-धीरे साफ किया। कितनी ही बार मैंने उसपर प्रहार किया, कितनी ही बार मैंने घननाद किया होगा, यह मुझे अब याद नही है। लेकिन जब यह काम पूरा हो गया तो बस एक ही समस्या थी। उस भारी वस्तु को मैं किस प्रकार पानी मे उतार ले जाऊ। वह इतनी भारी चीज़ थी कि मैं उसको पानी मे तो क्या एक इच भी सरकाने मे असमर्थ था। इसलिए मैं वहा रुक गया और देर तक देखता रहा। कितनी बडी मूर्खता की थी! इतना परिश्रम करने के पहले मैंने यह नही सोचा कि यदि मै इसे पानी तक नही पहुचा पाऊगा तो इसका लाभ क्या होगा। तभी मैने एक छोटी नाव बनाई जिसमे कम से कम मैं अपने द्वीप के सब तरफ घूम-फिर सकता था। फिर मैं अधिक दूर नही जा सकता था क्योकि ज़बरदस्त धाराओ का मुझे खतरा था और प्रचण्ड पवन को भी वह झेल ही नही सकती थी।

जब से मैं इस द्वीप मे आया तब से चार वर्ष व्यतीत हो गए। ससार मुझे अब एक दूर की वस्नु दिखाई देने लगा, जिसमे मैं कभी रहता था लेकिन अब उससे बाहर आ गया था। मानो मेरे और उसके बीच मे एक बहुत बडी खाडी आ गई थी, लेकिन मैं वहा रहता रहा और अपनी फसले काटता रहा जो खूब पनपती थी। बकरो का मुझे गोश्त मिलता था। कछुए और समुद्री पक्षी ये सब मेरे भोजन बन गए थे। मेरे पुराने कपडे जर्जर हो गए थे। तब मैंने एक बासकट और एक ब्रीचेज़ बनाई। नई ताज़े बकरे की खाल थी और उसने मेरा काम चला दिया। उसी खाल मे से मैंने अपने सिर के लिए एक टोपी बनाई उसके बाल मैने बाहर की तरफ रखे ताकि अगर पानी बरसे तो वह भीतर न चला जाए। जलते हुए सूरज की प्रखर धूप से बचने के लिए मैंने बकरे की खाल का एक छाता भी बनाया और मैं पूर्ण शान्ति के साथ वहा दिन बिताने लगा। मैंने अपने-आपको ईश्वर की इच्छा पर समर्पित कर दिया। मेरे अन्दर अब कोई महत्त्वाकाक्षा नही थी। मैं केवल उसीके चरणो पर आश्रित हो गया था। उस समय यदि मुझे कोई देखता तो अवश्य ही अत्यन्त व्यग्य से मुझे देखकर मुस्करा देता। मै और मेरा यह परिवार जब इकट्ठा होते, जब वे बिल्लिया, कुत्ता, तोता इत्यादि मुझे घेरकर बैठते तो वह सब कितना विचित्र लगता। मैं उन सबके बीच मे एक सम्राट की तरह बैठकर खाना खाता था। एक तोता ही तो था मेरा मुहलगा नौकर, जो मुझसे बात करने का अधिकारी था। मेरा कुत्ता, जो अब सनकी भी हो गया था क्योकि अब वह बूढा हो गया था, अकेला ही रहता था और मेरे सीधे हाथ की तरफ बैठा रहता। दोनो बिल्लिया मुझको घेर, इर्द-गिर्द बैठती और यह

आशा किया करती कि मै खाते-खाते कुछ टुकडे नीचे डाल दू। मेरा रग बहुत अधिक काला नही पडा था। मैने अपनी दाढी बहुत छोटी काट दी थी लेकिन मूछे लम्बी थी और मैंने उन्हे मुसलमानो के गलमुच्छो की तरह बना लिया था। अगर इग्लैड मे मेरी वैसी मूछे होती तो लोग निश्चय ही डरकर भाग जाते।

एक दिन ऐसा हुआ कि जब मुझे उस द्वीप मे रहते हुए कई वर्ष व्यतीत हो गए और मैं अपनी नाव की तरफ जा रहा था तो मुझे यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि भूमि पर बालू मे किसी मनुष्य के पाव के चिह्न दिखाई दे रहे थे। उगलिया थी, एडी थी, पाव का अगला हिस्सा था। निश्चय ही वह नगे पैर था। मुझपर जैसे वज्र गिर गया। मैं चौकन्ना होकर खडा रहा, लेकिन मुझको कुछ भी सुनाई नही दिया। मैंने अपने चारो ओर देखा, दीखने को वहा कुछ भी नही था। तब मैं किनारे पर आगे बढकर गया, लौट-कर आया फिर भी मुझे किसीके निशान नही दिखाई दिए, तो ये पाव के निशान कहा से आए! मुझे कुछ पता क्यो नही चलता। अनेक विचार मेरे मस्तिष्क मे आने लगे। मैं अपनी गुफा मे लौट आया। मुझे ऐसा लगा कि जैसे धरती मेरे पाव के नीचे नही थी। न जाने कितना आतक मेरे अन्दर समा गया था! कभी मैं आगे देखता, कभी पीछे और प्रत्येक पग पर मुझे ऐसा लगता कि जैसे कोई मनुष्य खडा है। रात बडी बेचैनी से बीती। नीद जाने कहा चली गई थी।

सवेरे उठते ही मैंने द्वीप को खोजना शुरू कर दिया। पहले मैने अपने पशुओ को खतरे से बाहर कर दिया। और पश्चिम की ओर बढते हुए मैंने यह निश्चय किया कि आज मैं उस भूभाग मे भी जाऊगा जिसमे आज तक नही गया था। मैंने समुद्र की ओर देखा तो मुझे बहुत दूर एक नाव दिखाई दी। जब मैं किनारे पर पहुचा तो मै स्तब्ध रह गया। एक क्षण-भर के लिए मेरा हृदय चमत्कृत हो गया। उस समय की भयभीत अवस्था का वर्णन भी मै नही कर सकता। बालू पर नर-ककाल पडे हुए थे। हाथ-पावो की हड्डिया थी। सारा किनारा मनुष्य की हड्डियो से भरा हुआ था। एक जगह मैंने देखा कि एक गोल गड्ढा खोदकर उसमे आग जला रखी गई थी। अवश्य ही नरभक्षी जगली वहा आ पहुचे थे। उन्होने अपना भोजन पकाया था। उनका भोजन उनके द्वारा पकडे हुए कैदी थे। उस आतक का वर्णन करने के लिए न जाने कितने ग्रन्थो का प्रणयन करना पडेगा। अब पहली बात मेरे दिमाग मे यह आई कि किसी तरह इन दुष्टो को नष्ट करना होगा। ताकि वे इस ओर आना बन्द कर दे। फिर आखिर मैंने यही तय किया कि मैं स्वय छिप जाऊ। मैंने अपनी तीनो बन्दूको को डबल-लोड करके रख लिया। और यह निश्चय किया कि उस भीड पर गोली चलाऊ और उन सबको भगा दू। इस उद्देश्य से मैं एक खोखले पेडके अन्दर बैठ गया। उसके अन्दर मै छिप रहा। उनकी दावत की जगह मुझे दिखाई देती रही।

प्रतिदिन मैं पहाड की चोटी पर बैठकर उनके जहाज के आने की आशा किया करता। लेकिन तीन वर्ष बीत गए और उनमे से कभी कोई नही आया। मुझे द्वीप पर आए छब्बीस वर्ष हो गए थे। एक सुबह मुझ यह देखकर आश्चर्य हुआ कि किनारे पर पास ही पाच नावे आकर लग गई थी। मेरे पास दूरबीन जैसा काच था। उसकी सहा-यता से अपने घर की छत पर से मैंने देखा कि लगभग तीसेक नरभक्षी वहा एकत्रित थे।

उन्होने आग जला रखी थी और गोश्त तैयार कर लिया था। वे उसके चारो ओर नाच रहे थे। उनके भयानक जगली इशारे दिखाई दे रहे थे और काटने के लिए वे दो-तीन व्यक्तियो को खीचे ला रहे थे। एक के सिर पर उन्होने बडी ज़ोर से डडा मारा और उसे नीचे गिरा दिया और उसके बाद उसको काट डाला। किन्तु दूसरा उनके पजे से अपने को छुडाकर भागा और इतनी तेजी से मेरी ओर आया कि पीछा करनेवाले दो व्यक्ति उसको पकड नही सके। मैं तुरन्त सीढी पर से नीचे उतरा। जितना जल्दी हो सकता था, मैंने अपनी दोनो बन्दूको को उठा लिया और उनकी ओर भागा। एक छोटे रास्ते से मैंने इन दोनो के बीच मे पहुचकर भागनेवाले को अपने हाथ से इशारा किया और फिर मैं धीरे-धीरे उन पीछा करनेवाले नरभक्षियो की ओर बढा। एक को मैंने बडे जोर से बन्दूक के कुन्दे की मार से गिरा दिया। दूसरा मुझे अपनी कमान के तीर से निश्चय ही मार डालता, पर मैंने तुरन्त ही अपनी बन्दूक उठाई और उसपर दाग दी और वह चिल्लाकर गिर पडा। जो जगली भागकर आया था वह मेरी बन्दूक की आवाज़ और आग से इतना डर गया था कि वज्राहत-सा मुझे देखता खडा रहा। उसमे कोई भी जुम्बिश नही हुई। मैंने साहस बढाया और उसकी ओर इशारा किया। अन्त मे वह मेरे पास आ गया। हर दस-बारह कदम पर वह झुकता, पृथ्वी को चूमता और अन्त मे उसने झुककर मेरे पैर पकड लिए और मेरे पाव को उठाकर अपने सिर पर रख लिया।

वह बडा कोमल-सा एक सुन्दर व्यक्ति था। सम्भवत उसकी आयु छब्बीस वर्ष थी। उसका चेहरा देखने मे बडा प्यारा था। न तो उसपर चालाकी थी, न कोई डरावना-पन। उसकी त्वचा ऐसी थी जैसे चमकदार जैतून का रग होता है। उसकी नाक छोटी थी लेकिन हब्शियो की तरह चपटी नही थी। कुछ ही देर मे मैं उससे बात करने लगा और फिर मैंने यह निश्चय किया कि इसको मैं अपनी भाषा सिखाऊगा ताकि यह मुझसे बात कर सके। मैंने उसका नाम फ्राइडे रखा क्योकि शुक्रवार के दिन ही मैंने उसकी जान बचाई थी। फिर मैंने उसको अपने लिए मालिक शब्द सिखाया। मैंने उसे बताया कि जब वह मुझे पुकारे तब मालिक कहकर पुकारे। फिर मैं उसे पहाडी के ऊपर ले गया। शत्रु गए थे या नही, यह देखना आवश्यक था। मैंने अपना काच निकाला और देखा कि उनकी नावे चली गई थी। वे अपने दोनो साथियो को वही पडा छोड गए थे। शायद उन्हे ढूढने भी नही आए थे। हम लोग उतरकर वहा गए जहा उनकी दावत हुई थी। मेरा रक्त मानो मेरी नसो मे जम गया और मेरा हृदय मेरे भीतर ही डूबने लगा। सारी जगह मनुष्य की हड्डियो से भरी पडी थी। रक्त से मिट्टी भीग गई थी। गोश्त के बडे-बडे टुकडे पडे थे कुछ इधर, कुछ उधर, अध-खाए, अध-जले और चबाकर थूके हुए। मैंने फ्राइडे से बहुत सारी हड्डिया, गोश्त और जो कुछ भी वहा बचा था सब इकट्ठा करवाया और उसे जलवा दिया। जब हम यह काम कर चुके तो हम अपने घर को लौट आए। आखिर बहुत दिनो बाद मुझे अपने सन्नाटे को तोडने के लिए अपनी निर्जनता मे एक साथी मिल गया था। और मैं अपने प्यारे जगली फ्राइडे के साथ उस एकान्त द्वीप मे अपने बाकी दिन बिताने लगा। मैं समझता हू कि इस द्वीप के निवास मे मेरे लिए इससे बढकर आनन्द का और कोई अव-सर नही था।

कुछ ही दिनो मे वह अग्रेज़ी भी इतनी सीख गया कि करीब-करीब मेरे हर सवाल का जवाब देने लायक हो गया। तब मुझे पता चला कि हमारा द्वीप ओरुनोको नदी की खाडी मे स्थित था। और वह त्रिनीदाद के विशाल द्वीप से बहुत दूर नही था, जहा कि केरेब लोग रहा करते थे। मै फ्राइडे को इग्लैड और यूरोप की कहानिया सुनाया करता। मैंने उसको तैरने का तरीका बताया। मैंने उसको यह बताया कि हम लोग ईश्वर की प्रार्थना किस तरह करते है और यह भी बताया कि किस तरह हमारा जहाज खडित हो गया था। तब उसने कहा कि कुछ ही दिन हुए सत्रह गोरे लोग जहाज के टूट जाने से उसके कबीले मे आ मिले थे और अब वही रहते थे। मुझे इसमे सन्देह नही रहा कि वे सब स्पेन निवासी या पुर्तगाली होगे और मेरे अन्दर यह इच्छा जाग उठी कि मै किसी तरह उनसे मिल सकू। यह विचार आते ही हम लोग फिर अब एक नई नाव बनाने लगे जो बहुत बडी थी जिसमे कम से कम दस आदमी एकसाथ बैठ सकते थे और उसमे मैने तमाम सामान भर लिया और चलने ही वाला था कि फ्राइडे भागता हुआ आया और चिल्ला उठा, "ओ मालिक, कितना बुरा हुआ, बहुत ही दु ख की बात है।"

मैंने कहा, "क्या बात है, फ्राइडे ?"

"वह बहुत, दूर वहा एक दो तीन नावे आ रही है।"

मैंने अपना दूरबीननुमा काच फिर अपनी आख के सामने लगाया और देखा कि तीन नावे किनारे पर रुकी थी। उनपर से इक्कीस जगली उतरे और उनके साथ बन्दी भी थे। उनमे से एक बन्दी निश्चय ही यूरोप का निवासी था।

मैंने और फ्राइडे ने बन्दूकें सभाल ली और हम लोग नरभक्षियो की ओर चल पडे। जब हम पास पहुच गए तो हमने गोलिया चला दी और एकसाथ कई जगलियो को गिरा दिया। केवल तीन निकलकर भाग सके और बाकी सब मर गए। फिर मैंने गोरे बदी के बधन काट दिए। मुझे पता चला कि वह स्पेन का निवासी था और जिन लोगो के बारे मे फ्राइडे ने मुझे कहा था उन्हीमे से था। लेकिन अभी एक और आश्चर्य आनेवाला था। एक बन्दी फ्राइडे का पिता था। उसे भी युद्ध मे बन्दी बना लिया गया था। उस समय पिता और पुत्र के मिलन को देखकर, उनका हर्ष, उनका हास्य, उनका आनन्दातिरेक से सगीत मे झूम उठना और नृत्य मे विभोर हो उठना देखकर ऐसा कौन था जिसके नयनो मे अश्रु आप्लावित न हो उठते।

अब मेरे छोटे परिवार मे दो आदमी और बढ गए। मैंने उन लोगो से बातचीत की और आखिर हम लोगो ने यह निश्चय किया कि वे दोनो मेरी नाव मे चले जाए और मुख्य भूमि पर जो बाकी स्पेन निवासी थे उनको भी ले आए। उन्होने मुझको बताया कि वे लोग वहा अत्यन्त कष्ट पा रहे थे। लेकिन उनके आने के पहले मैंने कहा कि वे सम्पूर्णतया मेरी आज्ञा का पालन करेंगे और जो कुछ मै करूगा उसमे पूरी तरह से वे मेरी सहायता करेंगे, तब तो मैं उन्हे यहा आने दूगा और यह प्रतिज्ञा-सौगन्ध खाकर लिखी जाएगी और उसपर उन लोगो को हस्ताक्षर करने होगे। उन लोगो ने दाख और रोटिया खाकर अपनी यात्रा प्रारम्भ कर दी। आठ दिन बीत गए। मैं आशा कर रहा था कि वे लोग लौटेंगे तभी एक अघटित घटना घटी। मैं अपनी कुटिया मे गहरी नीद मे सो

रहा था। मेरा नौकर फ्राइडे एकदम सवेरे भागता हुआ आया और चिल्ला उठा, "मालिक, मालिक! एक जहाज़ आ रहा है।"

खतरे की परवाह न करते हुए मैं तुरन्त कूदकर खडा हो गया और बिना हथियार लिए बाहर निकल पडा। देखा, डेढ लीग की दूरी पर किनारे पर लगर डाले एक जहाज़ खडा था। मै अपनी घबराहट की अभिव्यक्ति नही कर सकता। ऐसे जहाज़ को देखकर मैं हर्ष से जैसे विह्वल हो उठा, किन्तु फिर भी मैं अपनी जगह से तनिक भी टस से मस नही हुआ। मैं नही जानता कि वे लोग कौन थे, उनके हृदय मे दया थी या विनाश था। तभी मैने किनारे पर आती हुई एक नाव देखी जिसमे ग्यारह आदमी बैठे थे। उनमे से तीन कैदी थे और बाकी लोग उनसे दुर्व्यवहार कर रहे थे। जब कैदियो को लेकर उनके बन्दी करनेवाले लोग भूमि प्रदेश के भीतर घुस आए और आगे बढ गए, तो मै चुपचाप छिपकर कैदियो के पास पहुचा और मैंने उनसे धीरे से पूछा, "तुम कौन हो?"

उन्होने कहा, "हम अग्रेज़ है। एक कमाडर है, मैं उसका साथी हू और यह एक यात्री है। हमारे मल्लाहो ने बगावत कर दी है और हम लोगो को नष्ट कर देने के लिए यहा ले आए है।"

मैंने उस कप्तान से कहा, "देखिए श्रीमान, यदि मैं आपको मुक्ति दिला दू तो क्या आप मेरी दो शर्तें मानने को तैयार होगे?"

उसने कहा, "क्या है वे शर्तें?"

मैंने कहा, "यदि मैं अपने हथियार आपके हाथ मे दे दू तो आप मेरे विरुद्ध कोई कार्यवाही नही करेंगे। दूसरी बात अगर जहाज़ आपको वापस मिल जाता है तो आप मुझे और मेरे साथी को इग्लैंड तक मुफ्त पहुचा देगे।"

मनुष्य के आश्वासन मे जितना बल है उसका कप्तान ने पूरा प्रयोग किया। तब मैंने उसको और उसके दोनो साथियो को मुक्त कर दिया। उनको कुछ हथियार दे दिए और उनको वहा ले गया जहा उनके साथी बैठे थे। उनपर हमने एकदम गोलिया चलानी शुरू कर दी। जो मरे नही थे, उन्होने तुरन्त समर्पण कर दिया।

अब इग्लैंड लौटने मे मेरे सामने कोई बाधा नही थी। मैं और फ्राइडे आनन्द से जहाज़ पर चढ गए और स्मृति के रूप मे मैंने बकरे की खाल की अपनी बडी टोपी ले ली। अपना छाता लिया, अपने तोतो मे से एक को सभाला और अपना धन भी मैंने साथ ले लिया। बगावत करनेवाले कप्तान को हमने लटका दिया और तीन को उसी द्वीप पर एकान्त मे तडपने के लिए छोड दिया और उसके बाद अपना जहाज़ चला दिया। बिना किसी कष्ट के हम लोग इग्लैंड पहुच गए। ३५ वर्ष बाद ११ जून, १६८७ को मैं फिर अपने देश मे आ गया था। मैंने देखा कि तब मैं पाच हज़ार पौड से भी अधिक का मालिक हो गया था क्योकि इस दौरान मे मेरे पुराने धन ने ब्राज़ील की जायदाद मे इतनी आमदनी कर ली थी और मेरी खेती मे से भी मुझे हज़ार पौड सालाना मिलने लगे थे। अन्त मे आज मैं उस ईश्वर को धन्यवाद देता हू जिसने इतने विचित्र रूप से मुझे सुख पहुचाया। तब से मै अपने सेवक फ्राइडे के साथ अपने जीवन के शेष दिन व्यतीत कर रहा हू।

प्रस्तुत उपन्यास म साहसिक जीवन का अद्भुत चित्रण किया गया है । यह उपन्यास अत्यन्त विख्यात हुआ । इसमें बिना किसी नारी पात्र के भी बडा आकर्षण है। जीवन की महान शक्ति और मनुष्य की अपराजित भावना ही इसका मूल्य बढाती है। इसमें तत्कालीन यूरोप की दुर्दम्य साहस-भरी कहानी भी झलकती है ।

भयकर कृति

[फ्रैकैंस्टीन[1]]

शेली, मेरी डब्लू० अग्रेजी लेखिका मेरी शेली का जन्म ३० अगस्त, १७६७ को लदन में हुआ। प्रसिद्ध सपादक और 'स्वतन्त्र विवाह सिद्धात' के प्रचारक विलियम गौडविन मेरी के पिता थे। माता मेरी वौलस्टोनक्रैफ्ट ने 'स्त्रियों के अधिकार' (द राइट्स ऑफ विमैन) नामक पुस्तक लिखी थी। पर्सी बीशी शेली ने अपनी पहली स्त्री हैरियट को छोड दिया था। गौड्विन के यहा शेली को मेरी दिखाइ दी और शेली ने उसे रिझा लिया। परिणामस्वरूप कुमारी मेरी शेली के साथ जुलाइ, १८१४ में यूरोप भाग गई। जब हैरियट (शेली की पहली पत्नी) का देहान्त हो गया, तो शेली ने मेरी से ३० दिसम्बर, १८१६ को विवाह कर लिया। १८२२ में कवि शेली की मृत्यु हो गई। मेरी शेली विधवा हो गई। तब उसे शेली परिवार से खर्चा मिलने लगा और वह उसीसे काम चलाती हुई कवि शेली की कृतियों का सम्पादन करती अपना जीवन व्यतीत करती रही। २१ फरवरी, १८५१ ई० को मेरी वौलस्टोन क्रैफ्ट शेली इस ससार से बिदा हो गई।

प्रस्तुत उपन्यास 'फ्रैकैंस्टीन मेरी वौलस्टोनक्रैफ्ट शेली ने साहित्य में एक विचित्र और भयानक कथा लिखने के दृष्टिकोण से सन् १८१७ में प्रकाशित किया था, जो अत्यन्त प्रसिद्ध हुआ क्योंकि इसमें विज्ञान के विकास और मानव की प्रकृति को जीत लेने की दुर्दम्य लालसा पर व्यग्य किया गया है। मध्यकालीन कीमियागरी (रसायन विद्या) पर भी इसमें प्रकाश पडता है।

उत्तर के समुद्र बर्फ जैसे जमे रहते है। आर्केन्जिल के उत्तर मे विक्टर फ्रैकैंस्टीन एक भयानक दानव का पीछा कर रहा था। वहा एक ब्रिटिश यात्री गया हुआ था, जो नई धरतियो, समुद्रो की खोज कर रहा था। बर्फ पर फ्रैकैंस्टीन उस दानव को ढूढता फिर रहा था। एक ब्रिटिश अन्वेषक ने फ्रैकैंस्टीन की जान बचाई, क्योकि वह भयानक सकट मे पड गया था। यह कथा उस अन्वेषक को फ्रैकैंस्टीन ने ही इस प्रकार सुनाई थी

जिनेवा मे एक राज्यकर्मचारी था। उसका जीवन सम्मानित था। उसने अधेड उम्र मे जाकर विवाह किया। उसीका पहला बेटा फ्रैकैंस्टीन था।

फ्रैकैंस्टीन का जीवन बचपन मे आनन्द से व्यतीत हुआ। उसने कोर्नेलियस एग्रिप्पा और अन्य कीमियागरो की कृतियो का गहरा अध्ययन किया। सत्रह वर्ष की आयु प्राप्त

---

१ Frankenstein (Mary W Shelley)

होने पर फ्रैंकैस्टीन ने इगोल्स्टैट नामक विश्वविद्यालय मे प्रवेश किया। उसकी माता इस समय से पूर्व ही दिवगत हो चुकी थी। मृत्युशय्या पर पडे हुए उसने उसमे यह प्रतिज्ञा कराई थी कि वह एलिज़ाबेथ लैवैन्जा से ही विवाह करेगा। मिलान के एक कुलीन व्यक्ति की उस कन्या को फ्रैंकैस्टीन परिवार ने ही उसके पिता की मृत्यु के बाद उसके अनाथ हो जाने पर पाला-पोसा था। उस बालिका के केश बहुत सुन्दर थे।

बचपन मे कीमियागरी की तरह-तरह की किताबे पढकर विक्टर फ्रैंकैस्टीन मे 'अमृत' खोज लेने की एक ज़बरदस्त चाह पैदा हो गई थी। लेकिन इगोल्स्टैट विश्वविद्यालय मे पहुचने पर उसके दिमाग से वे पुराने कीमियागर दूर हो गए थे और वह आधुनिक विज्ञान का अध्ययन करने लगा। रसायनशास्त्र तथा प्राकृतिक विज्ञानो के अध्ययन ने उसे नई प्रेरणा दी। रुक्ष स्वभाव के प्रोफेसर क्रैम्प और विनम्र प्रोफेसर वाल्डमैन की सरक्षकता मे उसे नई-नई बातें ज्ञात हुईं। दो वर्ष मे ही फ्रैंकैस्टीन ने इतनी लगन से अध्ययन किया कि उसको सिखाने योग्य उसके अध्यापको के पास और कुछ नही रहा।

उसने जिनेवा लौटने का विचार किया, किन्तु तभी उसने एक अद्भुत खोज कर डाली। वह जितनी आश्चर्यजनक थी, उतनी ही सरल भी थी। यहा तक कि उसे स्वय इस बात पर घोर आश्चर्य हुआ।

जब वह मुर्दाघरो मे हड्डिया जमा करने के स्थानो मे रात और दिन घूमा, तो अचानक उसे यह बात सूझी कि जीवन किस प्रकार प्रारम्भ होता है। और यही उसकी खोज थी, जिसे पागल का प्रलाप नही समझा जा सकता। उसने जीवन के प्रारम्भ को समझ लिया। किस प्रकार किसीको जीवित किया जा सकता है, इस सिद्धान्त का उसने पता लगा लिया। और फिर उसने यह भी पता लगा लिया कि निर्जीव मे किस प्रकार जीवन डाला जा सकता था।

अब वह एक आदमी बनाने लगा। उसकी कल्पना जागरूक हो उठी। उसमे एक आवेश भर गया। आदमी से कम वह आखिर बनाता भी क्या ?

आठ फुट लम्बा मनुष्य! यही उसने योजना बनाई। और फिर वह सब कुछ भूलकर उसीमे जुट गया। इतना लम्बा मनुष्य बनाने के लिए उसे सामग्री की आवश्यकता थी। महीनो बीत गए। वह अपने स्वास्थ्य को भी ठीक नही रख सका। चादनी रातो मे वह गीली कब्रो मे उतर जाता और कभी कट्टीखानो मे जाता और कभी डाक्टरो के चीरा-फाडी के कमरो मे। कभी ज़िन्दा जानवरो को पकडकर तरह-तरह की तकलीफें देता। उसे मृत मे से अमृत पैदा करना था, निर्जीव मे से जीवित पैदा करना था। आवेश मे उसे लगने लगा, जैसे वह स्वय ही विधाता था क्योकि वह एक नई योनि का निर्माण कर रहा था। कितना विचित्र था यह विचार! और इसने उसमे एक अद्भुत लगन भर दी।

एक ग्रीष्म ऋतु व्यतीत हो गई। और धीरे-धीरे दूसरी आ गई। फ्रैंकैस्टीन की प्रयोगशाला तरह-तरह की गन्दी चीज़ो से भरी थी। हड्डी, मास, मज्जा और इसी प्रकार की अनेक वस्तुए थी। और वह अपने घर की ऊपरी मज़िल के कमरे में सब-कुछ छोडकर व्यस्त था। घर से पत्र-व्यवहार भी बन्द हो गया था। उसका प्रयोग सफल हो रहा था। उत्सुकता ने उसे जैसे परवश कर दिया था। किसीसे मिलना-जुलना भी उसे ऐसा लगता,

मानो वह कोई घोर अपराध कर रहा हो।

नवम्बर की ठडी रात थी। बाहर पानी बरस रहा था। चारो ओर अन्धकार साय-साय कर रहा था।

फ्रैंकैस्टीन को मानो आत्मयत्रणा हो रही थी। उसी समय उसने उस निर्जीव ढाचे मे प्राण डाल देने का निश्चय किया। जिस समय उसने उसमे प्राण सचारित किए और उस शरीर—उस काया—ने अपनी पीली-सी आखे खोली, पानी बरसने की आवाज आ रही थी। फ्रैंकैस्टीन के मन मे भयानक भय भर गया। उसका श्वास आतक से अवरुद्ध-सा हो गया। उस विशाल काया—उस दैत्य के विशाल अग उसके दीर्घाकार के अनुरूप ही थे। उसके केश काले और चमकीले थे। उसके सुघर दात सुन्दर-सुन्दर चुनकर लगाए गए थे। लेकिन उसकी पीली खाल सिकुडनो से भरी हुई थी। उसकी आखे जैसे पनीली थी और उसके होठ काले और खिंचे हुए थे। इस पृष्ठभूमि पर उसके दात और भी अधिक भयानक लगते थे। अपने हाथो से बनाए हुए इस दानवाकार मनुष्य को देखकर स्वय फ्रैंकैस्टीन के ही रोगटे खडे हो गए।

वह अपने शयनागार की ओर भागा और थकान, घबराहट और बेचैनी से आक्रान्त-सा शय्या पर गिर गया। पता नही, कब उसे नीद आ गई ! किन्तु अचानक ही उसकी आख खुल गई, क्योकि दानव उसके शयनागार मे घुस आया था। वह कुछ बड-बडाया। शायद मुस्कराया भी, पर वह भयानक दिखाई दिया। भयभीत होकर फ्रैंकैस्टीन बाहर भाग चला। उस दानव के भयानक मुख को देखना किसी भी मानव के बस की बात नही थी। वह विकराल था और उसे देखकर यही लगता था जैसे कोई डरावना मुर्दा उठकर खडा हो गया हो।

हैनरी क्लैखल उसी समय विश्वविद्यालय मे आया था। वह फ्रैंकैस्टीन का बच-पन का मित्र था। इस समय फ्रैंकैस्टीन उसी के पास भागा गया। जब क्लैखल के साथ वह घर लौटा तो वह दानव कही जा चुका था। आवेश और भय से ग्रस्त फ्रैंकैस्टीन पहले तो इस विचार से खुशी से पागल हो गया कि उसने इतनी ज़बर्दस्त खोज करके सफलता प्राप्त कर ली थी, किन्तु उत्तेजना ने उसके स्वास्थ्य पर विचित्र प्रभाव डाला और कई महीनो के लिए वह ज्वराक्रात पडा रहा। अपने ताप मे वह दानव के बारे मे जाने क्या-क्या बर्राता रहा। और यह आवेग उसमे अश्रात भाव से बना रहा।

एक ग्रीष्म ऋतु और एक शीत ऋतु फिर व्यतीत हो गई, तब कही जाकर फ्रैंकै-स्टीन का मन स्थिर हो पाया। पर अब उसमे पदार्थ विज्ञान के प्रति घोर अरुचि हो गई थी। जीवशास्त्र पर बात भी करना उसे दूभर लगता था। वह उसका नाम भी सुनना पसन्द नही करता था।

मई का महीना था फ्रैंकैस्टीन जिनेवा लौटने की योजना बना रहा था। उसी समय खबर आई कि एक दिन उसका भाई विलियम खेलते-खेलते ज़रा इधर-उधर निकल गया और वहा किसीने उसको गला घोटकर मार डाला। इस सवाद ने फ्रैंकैस्टीन को बहुत दु ख पहुचाया, परन्तु घर तो उसे जाना ही था। और अब बाकी लोगो से इस सवे-दना की बेला मे मिलने के लिए उसका हृदय पहले से भी अधिक आतुर हो उठा। यात्रा

मे उसने विश्राम नही लिया। जब वह जिनेवा के समीप के पर्वत-प्रदेश मे पहुचा, वह चौक उठा। उसको अपने हाथो से बनाया हुआ वही विशालकाय, भयकर और कुरूप दैत्य दिखाई दिया। उसे देखकर फ्रैकैस्टीन के मन मे यह धारणा पक्की बन गई कि उसीने उसके भाई की हत्या की थी। उधर एक विचित्र काण्ड हो गया। फ्रैकैस्टीन परिवार ने जस्टिन मौरिज़ नामक एक लडकी को देखकर उसका पालन-पोषण किया था। अब उसी को उस हत्या के अपराध मे पकड लिया गया था। फ्रैकैस्टीन उससे जाकर मिला। किन्तु किसी भी अनुनय ने उस लडकी की रक्षा नही की। जस्टिन की जेब से विलियम का एक छोटा चित्र बरामद हुआ था और जब वकील ने उससे कडी जिरह की, जस्टिन ने हारकर स्वीकार कर लिया लिया कि उसीने हत्या की थी। उसको फासी दे दी गई। फ्रैकैस्टीन मे इतना साहस नही जाग सका कि वह उस दैत्य के बारे मे सबको बता डाले। यदि वह बता भी देता, तो सब लोग उसको पागल समझते। इस भय ने ही उसका मुह बन्द कर दिया था।

किन्तु अब उसके मन मे एक कटुता आ गई। यह उसीकी कुशल क्रियाओ का परिणाम ही तो था कि विलियम और जस्टिन व्यर्थ ही मार डाले गए थे। उसकी मगेतर एलिज़ाबेथ ने उसे बहुत समझाया, उसके मन को डूबने से वह रोकती रही, किंतु उसे किसी भी चीज़ से सात्वना नही मिल सकी। कितना भयानक कार्य कर दिया था उसने! जब उसे अपने हाथो से निर्मित दैत्य की याद आती तो वह घृणा से भर जाता। अपने मन का भार दूर करने के लिए वह आल्प्स पर्वतो मे चला गया। एक दिन जब मौट ब्लैक के हिमखड के पास घूम रहा था, उसे वह दैत्य दिखाई दिया। फ्रैकैस्टीन आतक से अभिभूत हो गया। दैत्य बर्फ पर अतिमानवीय शक्ति के साथ प्रचड गति से चल रहा था। अब फ्रैकैस्टीन भाग नही सका। दैत्य ने उसे घेर ही लिया। विवश होकर फ्रैकैस्टीन को दैत्य की कथा सुननी ही पडी। दैत्य ने कहा, "मेरा जीवन बहुत ही दु खी है। जीवित प्राणियो मे मुझसे अधिक दु ख किसीको नही है। यहा तक कि तुम जो मेरे स्रष्टा हो, तुम भी मुझसे घृणा करते हो। मैं तो दयालु और अच्छा था। किन्तु मेरे सूनेपन ने, सबसे निरन्तर मिलनेवाली घृणा और भय ने मुझे अब एक शैतान बना दिया है। यदि मानवजाति को यह ज्ञात हो जाए कि मैं भी एक अस्तित्व रखता हू, तो निश्चय ही वह मेरे विनाश की योजना मे रत होगी और मेरे विरुद्ध अस्त्र-शस्त्रो का प्रयाग किया जाएगा। मैं अपने शत्रुओ से किसी प्रकार की भी शर्तें नही रखूगा। मेरा भविष्य तुम पर निर्भर है। यदि तुम चाहते हो कि मैं शातिपूर्वक बिना किसी की हानि किए अपना जीवन बिता दू, तो यह केवल तुम्हारे ही हाथ मे है।"

बातें करते हुए वे दोनो पर्वत-प्रात की एक कुटिया मे चले गए। दैत्य सुनाने लगा। वह भटक निकला था और जब वह बाहर पहुचा तो उसने देखा कि मनुष्य उसे देखकर भय से भाग जाते हैं। उसे देखना भी पसन्द नही करते है। अन्त मे वह दैत्य एक बार शीत ऋतु मे एक कुटिया के बगल में एक दीनतर झोपडी मे जा बसा। उस कुटीर मे एक अंधा आदमी रहता था। उसकी दो सतान थी, फैलिक्स और एगाथा। वे लोग फ्रास से निर्वासित थे, इसलिए ऐसा जीवन व्यतीत कर रहे थे।

दैत्य दीवार के एक छेद से उन्हे देखा करता। इन दु खी व्यक्तियो मे स्नेह था,

और दरिद्रता ने उनके मानवीय गुणो को विकसित कर दिया था। दैत्य के मन मे उनके प्रति ममता भरने लगी। उसमे उनके प्रति दया-भाव ही भर आया। दैत्य ने उनसे बोलना सीखा। दैत्य को मास खाना पसन्द नही था। वह फल खाता था। फैलिक्स का काम उसने हलका कर दिया। वह जगल से चुपचाप लकडिया बटोर लाता। उन लोगो से ही दैत्य ने पढना भी सीखा। उसने मिल्टन का 'पैरैडाइज़ लॉस्ट' तथा प्लूटार्क की 'जीवनिया' इत्यादि पढ डाली, जो उसे वहा मिल गई। किन्तु इसके बाद उसने सोचा कि जिन लोगो से उसने चुपचाप, उनके अनजाने ही, इतना सब कुछ प्राप्त किया था, उनसे अवश्य मिलना चाहिए। किन्तु यही एक भूल हो गई। जब वह उनके सामने गया, तो वही घृणा और भय उन लोगो के हाथो आगे आ गए और दैत्य फिर से अकेला रह गया, उसका हृदय पीडा से कराह उठा। अब वह भाषा और साहित्य से परिचित हो जाने के बाद कही अधिक सवेदनशील हो गया था।

जिस समय दैत्य फ्रैंकैस्टीन के घर से भागा था, तब वह कुछ कागज़ात उठा ले गया था। अब उसने उन्हे पढा। तब उसे ज्ञात हुआ कि फ्रैंकैस्टीन ही उसका निर्माता था। अपनी सृष्टि का कारण मालूम होने पर वह जिनेवा की ओर चल दिया। जगल मे उसे विलियम मिला। उसने उसकी हत्या कर दी और खलिहान के पास जस्टिन को सोते देख, उसकी जेब मे उसने वह चित्र रख दिया।

दैत्य की कथा समाप्त हुई। तब उसने कहा, "तुम्हे मेरी एक इच्छा पूरी करनी होगी।"

"क्या है वह ?" फ्रैंकैस्टीन ने पूछा।

"मुझे अपनी जैसी एक स्त्री चाहिए।"

फ्रैंकैस्टीन का मन विद्रोह कर उठा। परन्तु दैत्य ने कहा, "नही, तुम डरो मत। अपनी साथिन को लेकर मै दक्षिण अमरीका के जगलो मे चला जाऊगा।"

फ्रैंकैस्टीन को मजबूर होकर उसकी माग स्वीकार कर लेनी पडी।

ओर्कनीज़ द्वीप के एकात निर्जन मे फ्रैंकैस्टीन ने फिर से अपनी प्रयोगशाला खडी की। और वह दैत्य के लिए साथिन बनाने मे जुट गया। किन्तु उसका मन प्रतिक्षण भीतर ही भीतर विद्रोह कर रहा था। उसे लग रहा था कि वह कोई भयानक और घृणित रूप से पैशाचिक कार्य कर रहा था। फिर भी वह कठोर परिश्रम करता रहा। धीरे-धीरे कार्य पूर्ण होने का समय निकट आने लगा। तभी वह दैत्य वहा आ उपस्थित हुआ।

फ्रैंकैस्टीन ने उसका विकराल मुख देखा। उसे लगा जैसे वह स्वय पागल हो गया था कि उसके लिए एक वैसी दैत्या बना रहा था। ऐसा करना एक भयानक पाप के बराबर था। और उत्तेजना मे उसने उसे नष्ट कर दिया। दैत्य ने जब अपनी साथिन के ढाचे को नष्ट होते देखा, तो वह विक्षोभ और क्रोध से पागल हो उठा। उसने प्रतिहिंसा से भरकर प्रतिज्ञा की, "फ्रैंकैस्टीन! अब से तुम्हारा समय भयानक दु खो और आतक मे व्यतीत होगा। जिस दिन तुम्हारी शादी होगी, मै तुम्हारे पास रहूगा। भूलना नही।"

यह भयानक अध्याय समाप्त हुआ। दैत्य ने प्रतिशोध लेना प्रारम्भ किया। उसने एक बार अवसर पाकर हैनरी क्लैखल का गला घोट डाला और सदेह मे फ्रैंकैंस्टीन को

पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। तीन महीने तक फ्रैकैंस्टीन अपने को निरपराध प्रमाणित नही कर सका। बमुश्किल जब वह किसी तरह छूट सका तो वह जिनेवा लौट गया।

पिता अत्यन्त दु खी थे। एलिजाबैथ भी प्रतीक्षा करते-करते थक गई थी। फ्रैकैंस्टीन ने शीघ्र ही विवाह कर लेने का निश्चय किया। क्लैखल की मृत्यु ने फ्रैकैंस्टीन को दैत्य की प्रतिहिसा की झलक तो दे दी थी, किन्तु वह इस समय विवाह के लिए विवश हो गया था। विवाह मे वह निरतर आशकित रहा। सुहागरात मनाने के लिए दपती ने इवियन नामक स्थान को प्रस्थान किया।

वे लोग एक सराय मे जाकर ठहरे और एलिजाबैथ पहले सोने चली गई।

सोने के पहले फ्रैकैंस्टीन घर की तलाशी लेने लगा। वह दैत्य के आने के सब मार्ग बद कर देना चाहता था। इसी समय उसके कानो मे एक भयानक चीत्कार गूज उठी। फ्रैकैंस्टीन के रौगटे खडे हो गए। वह ऐलिजाबैथ के कमरे की ओर भागा। जो कुछ उसने देखा, उससे उसकी आख फटी की फटी रह गई। ऐलिजाबैथ शय्या पर आडी पडी थी और उसके अग तोड-मरोड दिए गए थे। मुख विकृत हो गया था। वह मर चुकी थी और खिडकी के पास खडा था वही दैत्य, भयानक हास्य उसके विकराल मुख पर दीखता था। दैत्य ने अपनी भयकर उगली उठाकर शव की ओर इगित किया और जब फ्रैकैंस्टीन ने उसे मारने को पिस्तौल उठाई, तो दैत्य झपटा और उसने पीछे की गहरी झील मे गोता लगा दिया। वह उसके हाथो से बचकर निकल गया।

फ्रैकैंस्टीन के वृद्ध पिता को जब यह समाचार प्राप्त हुआ, दु ख ने उन्हे घेर लिया और वे भी इस ससार से शीघ्र ही उठ गए। फ्रैकैंस्टीन का मानसिक सतुलन इन प्रहारो से हिल गया और तब विवश होकर लोगो ने उसे एकात कोठरी मे बन्द कर दिया क्योकि उसके आचरण पागलो जैसे हो गए थे। जब उमे छोडा गया, फ्रैकैंस्टीन ने अपनी कथा लोगो को सुनाने की चेष्टा की, किन्तु उसने देखा कि किसीको भी उस कथा पर विश्वास नही होता था। अधिकारीगण उसे मानसिक व्याधिग्रस्त समझते थे। अब उसने निर्णय किया कि यदि अपने द्वारा निर्मित उस दैत्य का नाश करना आवश्यक था, तो वह उसे स्वय अपने हाथो करना होगा, इसके अतिरिक्त और कोई चारा नही था।

अब फ्रैकैंस्टीन उसका पीछा करने लगा। दैत्य भाग चला। फ्रैकैंस्टीन ने उसके पीछे-पीछे फ्रास पार किया। भूमध्यसागरीय प्रदेशो मे उसका पीछा करता रहा। दैत्य कालेसागर की ओर चला गया। फ्रैकैंस्टीन ने शान्ति स्वीकार नही की। वह भी उसके पीछे चलता रहा। उन्होने तातार देश पार किया, रूस पार कर डाला। कभी-कभी दैत्य अपने निशान छोड जाता। वह पेडो और पत्थरो पर खोद जाता, "मेरा पीछा करो। मैं उत्तर की अविनाशी बर्फ की ओर जा रहा हू।"

अत मे दैत्य और उसका पीछा करते-करते फ्रैकैंस्टीन उत्तरी सागर के क्षेत्र मे पहुच गए। चारो ओर बर्फ जम रही थी। फ्रैकैंस्टीन कुत्तो की फिसलनेवाली गाडी पर चढकर दैत्य के पीछे चल पडा। बर्फ के कारण फ्रैकैंस्टीन का स्वास्थ्य बिगड चला। वहा उसे एक ब्रिटिश यात्री ने बचाया। तब फ्रैकैंस्टीन ने उसे सारी कथा सुनाई।

किन्तु फ्रैकैंस्टीन पूणत जर्जर हो चुका था। वह जीवित नही रह सका। अग्रेज

यात्री ने देखा कि एक विकराल दैत्य उसके जहाज़ पर चढ आया। उसने अपने स्रष्टा फ्रैंकैंस्टीन की ओर अतिम बार देखा और फिर वह बर्फ पर कूद गया और लहरें थपेड़े मारते हुए उसे बहा ले गई।

प्रस्तुत उपन्यास में वैज्ञानिको की महत्त्वाकाक्षा पर व्यग्य किया गया है। मनुष्य अपनी ही रचना से डरने लगता है और अत में अपने को उससे बचा नहीं पाता।

विल्की कॉलिन्स

चन्द्रकान्त मणि
[द मूनस्टोन[1]]

कॉलिन्स, विल्की अग्रेजी उपन्यासकार विल्की कॉलिन्स का जन्म विलियम कॉलिन्स के परिवार में हुआ। पिता चित्रकार थे। आपका जन्म ८ जनवरी, १८२४ को लदन में हुआ। आपने वकालत पढी और परिणामस्वरूप आप पत्रकार बने। और इसमें आपको शीघ्र ही सफलता मिल गई। आपका वास्तविक यश आपके उपन्यासो पर आश्रित है। आपको आधुनिक जासूसी उपन्यास लिखने की परम्परा में, स्रोत-स्वरूप माना जा सकता है। चार्ल्स डिकिन्स से आपकी अच्छी मित्रता थी और 'नोथॉरो फेयर' नामक उपन्यास को दोनों ने सहयोग से लिखा था। १८६८ के आसपास 'द मूनस्टोन' (चन्द्रकान्त मणि) नामक उनका यह सुप्रसिद्ध उपन्यास प्रकाशित हुआ। तत्पश्चात १८७० के लगभग आपने अमेरिका की यात्रा की और वहा भाषण दिए और अपनी रचनाओं के अश भी पढ पढकर सुनाए। २३ सितम्बर, १८८९ को आपका देहावसान हो गया।

चन्द्रकान्त मणि पीले रग का चमकदार पत्थर था। उसका मूल्य कूता गया बीस हज़ार पौड। कहा जाता था कि किसी समय यह मणि भारतवर्ष के प्रसिद्ध नगर सोमनाथ मे सोमदेवता के मस्तक पर सुशोभित थी। समय बदल गया था। वह एक अद्‌भुत उपहार के रूप मे अट्ठारह साल की एक अग्रेज तरुणी को उसके जन्म दिन पर प्राप्त हुई। किन्तु मिस रेचेल विरिनदर इस बात को समझ नही सकी कि उसने कितनी बहुमूल्य वस्तु प्राप्त कर ली थी। और इससे भी अधिक इस बात को नही जान सकी कि देनेवाले ने उसे किसी विशालहृदयता के कारण वह भेट नही दी थी बल्कि उसके पीछे एक प्रतिहिंसा की भावना थी। उसके चाचा जॉन हर्नकासिल दुश्चरित्र थे। उन्हे वह चन्द्रकान्त मणि भारतवर्ष मे हत्या और चोरी के द्वारा प्राप्त हुई थी। वे यह जानते थे कि जिसके पास भी यह मणि रहेगी दुर्भाग्य उस पर अवश्य टूटेगा और इसीलिए उन्होने अपनी भतीजी को ऐसा उपहार दिया था। कारण यह था कि रेचेल की माता श्रीमती जूलिया ने उनका स्वागत नही किया था। अपमान की इस भावना ने उनमे ऐसी प्रतिहिंसा भर दी थी।

यद्यपि रेचेल इस खतरे को नही जानती थी लेकिन श्रीमती जूलिया, रेचेल के चचेरे भाई और प्रेमी तरुण फ्रैंकलिन ब्लैक इस बात को जानते थे। घर का पुराना नौकर गेबरियल बेटरेज बूढा था। वह भी जानता था कि प्राचीन परम्परा से देवता के पुजारी

---

१ The Moonstone (Wilkie Collins)

उस चन्द्रकान्त मणि को लेने के लिए भारतवर्ष से इग्लैंड आ गए थे और उन्ही मे से कुछ यहा भी बाकी थे जो अच्छे या बुरे किसी भी तरीके से उस चन्द्रकान्त मणि को फिर से भारत ले जाने की ताक मे थे। वृद्ध गेबरियल और फ्रैंकलिन ब्लैक ने एक दिन देखा कि मकान के आस-पास ही तीन भारतीय जादूगर घूम रहे है। इस बात से वे लोग आतकित हो उठे।

जन्म-दिन की पार्टी समाप्त होने को आ गई। सन्ध्या हो गई थी। घर मे सब लाग आशका से घिरे हुए थे। और भी ऐसी बाते हो गई थी जिनसे लगता था कि वातावरण मे कुछ अपशकुन अवश्य विद्यमान था। रोज़ाना स्पियरमैन घर की नौकरानी थी। किसा समय उसने कोई अपराध किया था, अब उसका सुधार हो गया था, लेकिन फिर भी वह अभागिन थी। फ्रैंकलिन ब्लैक से वह अत्यन्त प्रेम करने लगी। रेचेल ने एक बार विवाह की एक भेंट वापस कर दी थी, जो उसे गॉडफ्र एबिल व्हाइट नामक सुन्दर तरुण ने दी थी। वह रिश्ते मे उसका भाई लगता था और उससे विवाह करना चाहता था। वह गम्भीर व्यक्ति बहुत दान देता था और धार्मिक क्षेत्र मे बहुत प्रसिद्ध था। जन्म-दिन की पार्टी शान्ति से व्यतीत हो गई। वैसे कोई दुर्घटना नही हुई। केवल एक बार वे भारतीय जादूगर ज़रूर दिखाई दिए। धीरे-धीरे सब लोग शान्ति से सो गए।

भोर हो गया। मिस रेचेल के कमरे मे चन्द्रकान्त मणि नही थी। कहा चली गई थी वह ? यही सवाल सबके सामने था। श्रीमती जूलिया और फ्रैंकलिन ब्लैक ने पुलिस को तुरन्त बुलाया, लेकिन यह देखकर उसको बडा आश्चर्य हुआ कि रेचेल किसी प्रकार भी उनको कोई सहयोग नही दे रही थी। उसका व्यवहार कुछ विचित्र-सा दिखाई दे रहा था, जैसे वह कुछ छिपाना चाह रही थी। फ्रैंकलिन ब्लैक के प्रति उसके व्यवहार मे भी अन्तर आ गया था। आज तक वह उससे आकर्षित थी, किन्तु इस समय जैसे उसकी उपेक्षा कर रही थी। पुलिस ने भारतीय जादूगरो को पकड लिया। रात वे लोग नौकरो के कमरो मे घूमे थे लेकिन फिर भी पुलिस उनके विरुद्ध कोई प्रमाण नही पा सकी।

लन्दन का प्रसिद्ध जासूस सार्जेण्ट कफ बुलाया गया। उसने चोरी का समय पता लगा लिया। मिस रेचेल के कमरे मे जो नया रग हुआ था उसके दरवाज़े के ऊपर एक निशान था, इसलिए उसने ऐसे कपडे की खोज की जिसके ऊपर वह रग लगा हुआ हो। चोर इस तरह पकडा जा सकता था लेकिन मिस रेचेल ने इस विषय मे आपत्ति की और यह काम भी नही किया जा सका। सार्जेण्ट कफ को यह सदेह हुआ कि रेचेल इस विषय मे रोज़ाना से मिली हुई है। कफ को यह निश्चय हो गया कि रोज़ाना ने ही वह रग लगा हुआ कपडा गायब कर दिया था और दूसरा कपडा उसकी जगह रख दिया था। उसीने अपने कर्ज़ चुकाने के लिए चन्द्रकान्त मणि को चुरा लिया था। उसने श्रीमती जूलिया से अपने विचारो को प्रकट कर दिया लेकिन जूलिया ने भी आगे उसे खोज करने से रोक दिया। रेचेल लन्दन भाग गई, फ्रैंकलिन ब्लैक का हृदय खण्डित हो गया। अपनी प्रिया से उसे ऐसी आशा न थी। वह भी अपना घर छोडकर विदेश यात्रा को निकल पडा। रोज़ाना ने कफ से पीछा छुडाने के लिए फ्रैंकलिन ब्लैक को एक पत्र डाल दिया और चली गई। कोई भी नही जानता था कि फ्रैंकलिन उस समय कहा था। कफ ने यह स्वीकार कर लिया

कि उसकी जाच का कोई नतीजा नही निकल पा रहा था। उसने यह कहा कि चन्द्रकान्त मणि अवश्य ही सेप्टीमस लूकर नामक बौहरे के पास होगी क्योकि वहा ऐसे बहुमूल्य रत्नो को लिया करता था।

कुछ दिन बीत गए, चन्द्रकान्त मणि और रेचेल का कोई पता नही चला। कुछ दिन बाद रेचेल अपनी माता के साथ लन्दन मे चुपचाप निवास करने लगी, लेकिन अब भी वह यह नही बताती थी कि चोरी का कारण क्या था। लूकर जिसके बारे मे कफ ने सोचा था कि चन्द्रकान्त मणि उसीके पास होगी। वह कोई चीज कही गिरवी रख आया था। वह कोई बहुमूल्य वस्तु थी किन्तु क्या थी इसे कोई नही जानता था। उन्ही दिनो लूकर के ऊपर किसीने हमला किया और उसकी खोज की गई। रेचेल के इज्जतदार भाई गॉडफ्रे पर भी, जो कि बडा दानी आदमी था, ऐसा ही आक्रमण किया गया।

गॉडफ्रे के बारे मे सन्देहास्पद बाते उठने लगी, लेकिन रेचेल ने कसम खाकर कहा कि गॉडफ्रे निर्दोष है। सबको आश्चर्य हुआ कि आखिर वह कौन-सी रहस्यमय बात थी, जिसे वह जानकर भी बताने से इन्कार करती थी। लेकिन फिर भी वह यह कह सकती थी कि इस विषय मे अमुक व्यक्ति निरपराध था।

श्रीमती जूलिया का देहान्त हो गया और यह मृत्यु आकस्मिक हुई थी। रेचेल का जीवन और भी दु खी हो गया। वह फ्रैंकलिन को भूलना चाहती थी। वह उसके पास नही था, इसलिए उसने गॉडफ्रे से विवाह करना स्वीकार कर लिया, पर तभी उसे पता चला कि गॉडफ्रे ने उसकी आर्थिक परिस्थिति की जॉच की थी। रेचेल को यह बहुत बुरा लगा और उसने उससे विवाह करने से इन्कार कर दिया और अपने एक उम्रदार रिश्तेदार के साथ रहने के लिए चली गई।

चन्द्रकान्त मणि का अभी तक कोई पता नही चला था। वृद्ध गेबरियल और मिस्टर ब्रफ, जोकि वेरिन्दर-परिवार के वकील थे, अभी तक इस विषय की वास्तविकता जानने के प्रयत्न मे थे। तीनो भारतीय जादूगर अभी तक लन्दन के आसपास ही चक्कर लगा रहे थे, जैसे वे उस दिन की प्रतीक्षा मे थे जब लूकर अपनी प्रतिहिसा पूर्ण कर लेगा और वे फिर उस मणि को पा लेगे। लूकर की यही इच्छा थी, इसके बारे मे कोई जानकारी नही थी। कुछ दिन और बीत गए। फ्रैंकलिन के पिता की मृत्यु हो गई। वह इग्लैंड लौट आया। उसने रेचेल से मिलने की कोशिश की, किन्तु रेचेल ने उससे मिलने से इन्कार कर दिया। फ्रैंकलिन ने अपने मन मे यह निश्चय कर लिया कि वह न केवल मणि का पता लगाएगा, वरन अपनी खोई हुई रेचेल का प्रेम भी पुन प्राप्त करेगा और इसीलिए वह फिर से वेरिन्दर-परिवार मे खोज-बीन करने की ओर लग गया। यहा उसे रोज़ाना का पत्र मिल गया जिसमे उसने अपना प्रेम उसके प्रति प्रकट किया था और लिखा था कि उसने एक जगह एक छोटा-सा बक्स छिपा दिया है। फ्रैंकलिन ने उत्सुकता से उस बक्स को खोज निकाला। उसका विचार था कि उस बक्स मे ही चन्द्रकान्त मणि रखी हुई होगी और इसीलिए उसने उसे खोला, लेकिन उसमे केवल उसे रगलगा कपडा मिला, जिसे एक दिन सार्जेण्ट कफ ने ढ्ढा था। और उसे आश्चर्य यह हुआ कि उस कपडे पर स्वय उसका अपना ही नाम लिखा हुआ था। और जब वह रेचेल से मिला तो उसने कहा

कि उसने अपनी आखो से फ्रैंकलिन को वह मणि चुराते हुए देखा था।

अविश्वसनीय थी यह घटना, वही एक एजरा जिनिग्स नाम का डॉक्टर रहा करता था, उसको बडी पीडा हुआ करती थी, किसी रोग ने उसे ग्रस लिया था और इसीलिए उसे अफीम खाने की आदत पड गई थी। एजरा ने प्रयोग करके यह सिद्ध कर दिया कि फ्रैंकलिन ने अपने पहले डाक्टर के द्वारा दी हुई अफीम खाकर नशे मे यह काम कर दिया था। उसके पहले डाक्टर ने शायद उसे मज़ाक मे अफीम खिला दी थी और फ्रैंकलिन ने ऐसा कार्य केवल इसलिए किया था कि वह उस मणि को किसी सुरक्षित स्थान मे रख दे। किन्तु अब वह मणि कहा थी ? वह लूकर के पास किस प्रकार पहुच गई थी ? रेचेल और फ्रैंकलिन मे धीरे-धीरे फिर से मित्रता हो गई और वे इसकी प्रतीक्षा करने लगे कि जब लूकर किसी समय अपना खजाना खाली करे तो वे लोग उसे दूसरी जगह ले जाकर रख दें।

आखिर वह दिन आया। लूकर ने उसे एक काले और दाढीवाले मल्लाह को दिया, जो अपने साथ मणि लेकर चला गया। उस रात वह मल्लाह जाकर मल्लाहो के निवासस्थान पर रहा, लेकिन दूसरे दिन जब फ्रैंकलिन और मिस्टर ब्रफ उसको पकडने के लिए आए, तो मल्लाह पडा हुआ मिला और मणि उसके पास से जा चुकी थी। जब उससे पूछा गया तो उसने कोई उत्तर नही दिया। वह मर चुका था और जब उसके कपडे उतारे गए तो पता चला कि वह छद्म-वेश मे गॉडफ्रे ही था उसपर इतने कर्ज़ लद गए थे कि वह दो तरह की जिन्दगी बिताने लगा था। उसीने नशे मे डूबे हुए फ्रैंकलिन के हाथ से जन्मदिन के भोजवाली रात को वह मणि चुरा ली थी। इस प्रकार रहस्य तो खुल गया लेकिन चन्द्रकान्त मणि किसी प्रकार हाथ नही आई। तीनो भारतीय अपना वचन पूरा कर चुके थे। वे चन्द्रकान्त मणि को लेकर सोमनाथ के मन्दिर लौट गए थे।

यह उपन्यास बहुत ही कौतूहलपूर्ण है। जिसमें रहस्य की भावना है और जासूसी-सा वातावरण है। इसमें पूर्व के प्रति पश्चिम का वह आतक-भरा दृष्टिकोण भी है, जिसमें यहा की भूमि को लोग विचित्र समझते थे। उपन्यास घटना-प्रधान है।

राइडर हैगार्ड

रहस्यमयी

[शी[1]]

हैगार्ड, हेनरी राइडर अग्रेजी लेखक राइडर हैगार्ड का जन्म नारफोक में २२ जून, १८५६ को हुआ था। आपने रोमांटिक उपन्यास लिखे है। आपकी शिक्षा इप्सविच ग्रामर स्कूल में हुई थी। आप अफ्रीका चले गए और वहां उपनिवेश विभाग में नौकरी की। आपने राजनीति में भी भाग लिया, और वैसे आप साम्राज्यवादी थे। आपकी मृत्यु १४ मई, १९२५ को हुई।

आपके अनेक उपन्यास विख्यात है, जिसमें 'शी' की कल्पना बडी रोचक है। इसमें एक २००० वर्ष की स्त्री है। वह अनिद्य सुदरी है, कथानक बहुत ही सुगठित है।

विचित्र घटनाए जीवन मे आती है और चली जाती है, लेकिन कुछ बाते ऐसी भी हैं जिनकी याद सदा के लिए बनी रह जाती है। मै केम्ब्रिज मे रहता था। उसी समय मुझे यह अनुभव हुआ कि मै अत्यन्त कुरूप हू। दर्पण देखने से मैं इसीलिए घृणा करता था। मैंने अपने से कहा, तू इतना सशक्त है फिर भी तेरी कुरूपता के कारण कोई स्त्री तुझसे प्रेम नही कर सकती। इस विचार ने ही मुझे उदास बना दिया। धीरे-धीरे रात हो गई। मेरे दरवाज़े को किसीने खटखटाया। मैने दरवाज़ा खोला। रोग से व्याकुल मेरा एक मित्र कठिनाई से अपने दाहिने हाथ मे एक लोहे का बक्स लटकाए खडा था। वह मृतप्राय था। मैंने उसे अन्दर बुलाया। उसने कहा, "मेरा नाम विन्सी है, यह तो तुम जानते ही हो। मेरा विवाह हो चुका है और अब पत्नी भी मर चुकी है और फिर तुम यह नही जानते कि मेरा एक बेटा भी है। इस समय वह पाच वर्ष का है और अब मैं अपनी मृत्यु के समीप आ गया हू। मैं चाहता हू कि यदि तुम मेरी वसीयत की शर्तों को मान जाओ तो आज मै तुम्हे अपने पुत्र का सरक्षक बना द।"

उसका मुझपर विश्वास था इसलिए मुझे स्वीकार करना पडा। विन्सी कहने लगा, "आज से छियासठ या सढसठ पीढी पहले तक मैं तुम्हे अपने पूर्वजो के नाम गिना सकता हू। मेरा छियासठवा पूर्वज प्राचीन मिस्री सभ्यता मे देवी ऐसिस का पुजारी था। वह ग्रीक रक्त से उत्पन्न हुआ था परन्तु मिस्र मे ही रहता था। उसका सम्मान राजाओ की भाति होता था। वह अत्यन्त सुन्दर था। उसका नाम था केलीक्रिटीज़। उसके पिता को मिस्र

---

१ She (Henry Rider Haggard)—इस उपन्यास का अनुवाद हो चुका है 'रहस्यमयी'; अनुवादक श्री रामनाथ 'सुमन', प्रकाशक राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली।

की उन्तीसवी पीढी के फराऊन हाकहोर ने एक बहुत बडी जागीर दी थी। उसका नाम भी केलीक्रिटीज ही था। ईसा से लगभग तीन सौ उन्तालीस वर्ष पूर्व देवी एसिस के प्रति अपने कर्तव्य को भूलकर राजवश की एक सुन्दरी कन्या को लेकर पुजारी केलीक्रिटीज भाग निकला। मिस्र मे उस समय अव्यवस्था थी। जब केलीक्रिटीज अपनी प्रिया को लेकर जहाज मे समुद्री राह से भागा तो कई रातो बाद उसका जहाज तूफान मे फस गया और बडी मुश्किल से वह अपनी पत्नी के साथ अफ्रीका के तट पर डेलगोआ की खाडी के पास भयानक दलदल के पास उतरा। अन्त मे उस देश की रानी ने उन्हे सहारा दिया। रानी अत्यन्त सुन्दर थी लेकिन बाकी लोग जगली थे। उस रानी के बारे मे प्रसिद्ध था कि वह अमर थी। मेरा पूर्वज रानी की तृष्णा का शिकार बन गया, परन्तु वह अपनी प्रिया को छोडना नही चाहता था। जब उसने रानी के प्रेम को ठुकरा दिया तो रानी ने उसे मार डाला। उसकी पत्नी किसी तरह भागकर एथेंस पहुची और उसने अपने पुत्र का नाम टाइसिसथीनिस रखा। पाच सौ वर्ष बाद टाइसिसथीनिस के वशज रोम मे आकर बस गए। पाच सौ वर्ष और बीत गए। जब आठ पीढिया बीत गईं तो उसके वशज इग्लैंड आकर बस गए, और अब मैं उनका वशज हू। अब हम लोगो का परिवार विन्सी कहलाता है। मेरे बाबा ने काफी धन कमाया और १८२१ मे मर गए। मेरा पुत्र अभी छोटा है। उसके बारे मे मैने यह सोचा है कि उसे अरबी भाषा सिखाई जाए।"

यह कहकर उसने एक सीलबन्द लिफाफा निकाला और उसपर मेरा नाम व पता लिखा और कहा, "तुम लियो के सरक्षक बन जाओ। मैंने सब लिखा-पढी कर दी है। मेरी वार्षिक आय दो हजार पौड है और यह ध्यान रखना कि वह अरबी अवश्य पढे।"

मैने कहा, "अरे भाई तुम अरबी के प्रति इतने व्याकुल क्यो हो ?"

उसने कहा, "हम लोग विन्सी है—विन्सी शब्द 'विन्डेक्स' से बना है जिसका अर्थ है 'बदला लेनेवाला'—हमारे पूर्वजो को टाइसिसथीनिस, जिसका भी अर्थ है बदला लेने-वाला, नाम से एक प्रकार का पद प्राप्त हुआ है, क्योकि हम लोग अभी बदला नही ले सके हैं।" इसके बाद कुछ ही देर मे विन्सी की मृत्यु हो गई।

मैंने अब उसके पुत्र को अपने पास बुला लिया। बच्चा पाच साल का था। उसकी देखभाल करने के लिए मैंने जौब नाम के एक व्यक्ति को अपने यहा नौकरी पर रख लिया। जौब उस बच्चे को अच्छी तरह खिलाया करता था। धीरे-धीरे बच्चा जवान हो गया। जब वह पन्द्रह वर्ष का था तब उसका सौन्दर्य देखकर लोग चकित रह जाते थे और अब मेरी कुरूपता और भी अधिक दिखाई देने लगी। उसकी तुलना मे लोग मुझे जानवर कहते। लियो को लोग ग्रीक देवता बताया करते थे। जब वह अट्ठारह का हुआ तो कालेज के होस्टल मे आ गया। मैंने उसके वश की सारी बातें उसे बताईं और उसमे कौतूहल जाग उठा। धीरे-धीरे लियो पच्चीस वर्ष का हो गया तब मैंने उस विचित्र बक्स को बैंक से निकलवाया जिसको विन्सी की मृत्यु के बाद मैने सुरक्षित रखवा दिया था। जब हमने उसे खोला तो ढक्कन के खोलने ही लियो के मुह से एक हलकी चीख निकल पडी। बक्स के अन्दर बक्स था। तीसरा बक्स चादी का था—एक फुट चौडा, एक फुट लम्बा और करीब आठ इच ऊचा। प्राचीन मिस्र का बना हुआ यह छोटा-सा बक्स देखकर मैं भी

चकित रह गया। पास ही एक पत्र था जिसपर लिखा था—'मेरे पुत्र लियो को, यदि वह कभी इसे खोले।'

पत्र खोला गया उसमे लिखा था—'मेरे बेटे लियो, मै तुम्हे सदा के लिए छोड-कर जा रहा हू। अब तुम सुनो, हमारे वश के बारे मे तुम्हे हौली ने ज़रूर कुछ न कुछ बता दिया होगा। लगभग दो हजार व ि से हमारे पास यह बक्स चला आ रहा है। इस बक्स के कारण ही मैने अफ्रीका की यात्रा की। जाम्बेसी नदी जहा समुद्र मे गिरती है वहा से दक्षिण की ओर लगभग एक सौ पचास मील की दूरी पर एक ऊचे से द्वीप मे एक विशाल पर्वत है जिसकी चोटी एक हब्शी के सिर की तरह दिखाई देती है। वहा एक खास जगली जाति निवास करती है जिसके लोग अरबी बोलते है। उस देश मे भयानक दलदल है और वह पहाड अन्दर से पोला है। कहते है वह पोला पहाड कब्रो का देश है जहा एक अनिद्य सुन्दरी और अपार शक्तिवाली रानी रहती है। इतना ही मुझे वहा मालूम हो सका और मै अरबी न जानने के कारण आगे कुछ पता नही चला सका। मैं चाहता हू कि तुम अरबी सीखकर वहा पहुचो।"

इस पत्र को पढकर लियो ने कहा, "इसीलिए शायद तुमने अरबी सिखाई है, चाचा। पर यह केलीक्रिटीज़ कौन है जिसके बारे मे आगे लिखा हुआ है।"

मैने कहा, "दूसरा पत्र पढो।"

यह पत्र एमीनारटस नामक एक स्त्री ने लिखा था। वह पुजारी केलीक्रिटीज़ की पत्नी थी। वह चाहती थी कि हब्शी के सिर की चोटी की तरह के पहाड के अन्दर जहा कोअर लोगो की ममिया रखो है वहा रहनेवाली रानी से बदला लिया जाए और जब तक बदला नही लिया जाएगा तब तक उसकी आत्मा इसी प्रकार भटकती रहेगी।

जौब को विश्वास नही हुआ, लेकिन लियो मे एक विचित्र प्रकार का आवेश भर गया और उसने मुझसे कहा, "चाचा हम सब चलेगे।"

तीन महीने बाद हम लोगो का पालदार जहाज़ अफ्रीका के समुद्र तीर से लग गया। जब रात बीत गई तब हमने देखा कि दूर हब्शी के सिर जैसा पहाड दिखाई देने लगा था। वहा के विचित्र जलवायु के कारण भयानक तूफान हम लोगो को झेलने पडे और बडी कठिनाई से हम लोग अपनी रक्षा कर सके। चारो ओर बियाबान और दलदल ही दलदल था। एक स्थान पर विशालकाय और बेहद बदसूरत दरियाई घोडे अब भयानक रूप से दहाड रहे थे। हम लोगो ने डरकर अपनी बन्दूके सभाल ली। पर वे इधर नही आए। मच्छरो के मारे हम बडे परेशान हो रहे थे और आगे जाने का मार्ग स्पष्ट नही दिखाई दे रहा था। इसी समय कुछ आदमी सम्मुख आए और उनमे से एक ने भाला उठाकर कहा, "तुम कौन हो ? यहा क्यो आए हो ?"

मैंने अरबी मे उत्तर दिया, "हम यात्री है। जहाज़ डूब जाने के कारण इधर आ गए हैं।"

वे हमारी बोली समझ गए। एक व्यक्ति ने पूछा, "पिता, क्या हम इनको मार डाले ?'

एक वृद्ध ने पूछा, "इन आदमियो का रग कैसा है ?"

उसने उत्तर दिया, "गोरे हैं।"

वृद्ध ने कहा, "इनको मारना मत। चार दिन हुए मेरे पास सूचना आई थी कि गोरे लोग आएगे उन्हे न मारा जाए। यह 'उसकी' आज्ञा है जिसकी आज्ञा माननी ही होती है। ये लोग वही जाकर ठहरेगे। इन्हे ले चलो और साथ मे इनका तमाम सामान भी ले चलो।"

अब हम लोग उनके साथ चलने लगे। इन लोगो की वेशभूषा विचित्र थी। हमे साथ ले जानेवाले का नाम बिलाली था। मार्ग मे उसने कुछ सूचना नही दी। धीरे-धीरे हम लोग पहाडी पर चढ गए और अन्दर की ओर हमने प्रवेश किया। वह एक ज्वालामुखी पर्वत का ठडा हो चुका मुख था जिसके अन्दर काफी हरियाली नज़र आ रही थी। वहा की स्त्रियो ने जब लियो को देखा तो बेहाल हो गईं। इसी समय एक अत्यन्त सुन्दरी युवती बाहर आ गई। उसने लियो को देखा तो अपने आलिगन मे बाध लिया। उस युवती ने उसे निर्लज्जता से चूम लिया और हमे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि लियो भी उसको अपना स्नेह प्रतिदान मे दे रहा था। उस स्त्री का नाम यूस्टेन था। किन्तु बिलाली हम लोगो को मनुष्य के हाथो से तराशी हुई एक बहुत ऊची अस्सी फुट चौडी और डेढ सौ फुट लम्बी गुफा के भीतर ले चला। विचित्र देश को देखकर हम लोग चकित रह गए। पाच लडकिया हमारे आराम और देखभाल के लिए तय कर दी गई। अब हम लोग यह जानना चाहते थे कि 'वह' जिसकी आज्ञा मानना अनिवाय था—वह कौन थी ? क्योकि हर बात मे उसीका उल्लेख होता था। लियो ने कहा, "मुझको यह वही रानी लगती है जिसने केलीक्रिटीज़ को मारा था और जिसका उल्लेख उस पत्र और ढक्कन मे किया था। हम ठीक स्थान पर आ लगे है।"

साझ हो गई। वहा के निवासी एमहेगर लोग खाना खाने लगे। वहा रोशनी करने के लिए मसालो मे सूखी हुई पुरानी ममिया अर्थात् लाशे जलाई जाती थी, यह देखकर मुझे पसीना आ गया रात भयानकता से कटी। प्रकृति का सौन्दर्य देखकर प्रात काल मुझे आश्चर्य हुआ। तीन दिन बीत गए। हमने उस कटोरे जैसी भूमि को खूब अच्छी तरह देखा। तब यूस्टेन ने बताया, "वह जिसकी आज्ञा मानना अविवार्य है, जहा रहती है उस स्थान के पास मालो के घेरे मे खडहर पडे है। वहा आत्माए आती-जाती है, इसलिए सब उसे डरावनी जगह कहते हैं। हज़ारो साल पहले वहा ओकर लोग रहते थे। शायद हम उन्हीकी बची हुई सतान है। इस द्वीप पर लगभग दस कबीले है जिनके अलग-अलग पिता है। सबके ऊपर वह है जिसकी आज्ञा मानना अनिवार्य है। रानी की आज्ञा के बिना पत्ता भी नही खडक सकता।"

इस समाचार को सुनकर रानी के बारे मे हमारा कौतूहल फिर जग उठा। यूस्टेन का प्रेम बढता जा रहा था। लियो भी उसकी ओर आकर्षित था। धीरे-धीरे हम वहा के निवासियो से बातचीत करने लगे। एक दिन कुछ लोगो ने हम लोगो की हत्या करने की चेष्टा की। उन्होने बर्तन गर्म करके हमारे सिर पर रखने की कोशिश की। भयानक युद्ध होने लगा। उसी समय बिलाली ने आकर हम लोगो की रक्षा की। अब बिलाली हमको लेकर आगे बढा।

कटोरेनुमा मैदान को पार करके हम ऊपर चढ चले। दलदल पार करके हम लोग फिर चढाई पर पहुच गए। ज़मीन उठती जा रही थी और तब हम उसके घर पहुचे जिसकी आज्ञा टाली नही जा सकती। पहाड की दीवाल के सहारे अन्दर माग के पास से निकलकर एक सूखा पक्का मार्ग था। तब हमारी आखो पर पट्टी बाधी गई और हम लोग आगे ले जाए गए। अब हम एक विशाल गुफा मे पहुच गए थे। जो लगभग एक सौ पच्चीस फुट ऊची थी। लियो अपने घाव के कारण कुछ मूर्च्छित-सा था और यूस्टेन उसकी देखभाल कर रही थी। नई जगह आकर हम लोगो ने अच्छी तरह स्नान किया। सहस्रो वर्ष पूर्व के उस स्थान मे हमने दीवारो पर रगीन चित्र देखे। यहा विशाल कमरे भी थे। सामने का पर्दा हिला और फिर एक ऐमी सुन्दर स्त्री दिखाई दी कि हम लोग आश्चर्य से चकित रह गए। उस स्त्री ने मुझसे पूछा, "तुम यहा कैसे आए हो ?"

मैने अरबी मे उत्तर दिया, कहा, "हम लोग यात्रा पर है।"

मेरी अरबी सुनकर वह बोली, "अच्छा तुम अरबी बोलते हो। यह भाषा अब भी बोली जाती है ? आजकल कौन-सा फराऊन गद्दी पर है ? क्या अब भी फारस के ओखस का वश चल रहा है ? क्या अब एकमीनियन लोग नही रहे ?"

सुनकर मेरी हड्डिया काप उठी। मैने कहा, "ये तो दो हजार पाच सौ साल पुरानी घटनाए है। फारस के लोग तो करीब दो हजार साल पहले ही मिस्र से चले गए थे। उसके बाद वहा रोमन आए और जाने कितने परिवर्तन हुए।"

वह हस दी। उसने कहा, "क्या यूनान के लोग अब भी है ? क्या यहूदी अब भी जेरूसलम मे ही है और उस मसीहा का क्या हुआ जिसके बारे मे शोर था कि वह ससार पर राज्य करेगा ? क्या उसका राज्य फैल गया ?"

मैने कहा, "वे लोग ससार मे फैल गए है। वह मदिर जिसे हेरोद ने बनवाया था "

उसने टोककर कहा "कौन हेरोद ? खैर, कहे जाओ।"

उस समय मेरे मुह से हठात् लैटिन भाषा निकल गई। उसने कहा, "तुम लैटिन भी जानते हो! हीब्रू भी बोल लेते हो। हो तो तुम बहुत कुरूप किन्तु लगते बहुत बुद्धिमान हो।"

उसकी बातें सुनकर जैसे मैं भय से जम गया। उसकी कोई भी बात ऐसी नही थी जो ढाई हज़ार वर्ष के पूर्व के इतिहास की बात नही दोहराती हो। अब उसने कहा, "अजनबी, तुम्हे मेरे लम्बे जीवन पर आश्चर्य होता है पर दो हजार साल की ज़िन्दगी होती ही कितनी है! पचास हज़ार साल मे आधी और तूफान पहाड को एक हाथ भी कम नही करते। करोडो साल से तारे आसमान मे चमकते है उनका कुछ भी नही बिगडता। इन ढाई हज़ार वर्षों से ये गुफाए वैसी ही हैं जैसी मैंने पहले देखी थी।" और फिर उसने मुझसे कहा, "देखो, उधर पानी मे झाककर देखो।"

मैंने देखा—उस पानी मे हम लोगों के दलदल मे फस जाने का दृश्य साफ दिखाई दे रहा था। रानी ने कहा, "यह पानी मेरा दर्पण है। इसमे मैं जब चाहू तब भूत और वर्तमान देख लिया करती हू। मेरे पास यह बहुत प्राचीन काल से है। इसे पचास हज़ार

वर्ष पहले मिस्र और अरब के सिद्धो ने बनाया था। पर मैं भविष्य इसके द्वारा नही जान पाती। मुझे न जाने क्यो उस नहर का ध्यान हो आया जहा से दो हज़ार वर्ष पूर्व मैं आई थी, और जब मैंने इस दर्पण मे वह नहर देखी, तो तुम लोग भी मुझे दिखाई दिए। यह गोरा युवक मुझे सोता हुआ दिखाई दिया। इसीलिए मैंने तुम लोगो को यहा बुलवा लिया।"

मैंने कहा, "आपके आदमी हमारे साथ थे। बिलाली की गुफा मे हमे यूस्टन नाम की एक युवती भी मिली है। आपके आदमियो के नियमानुसार वह उसकी स्त्री है।"

रानी ने कहा, "ये मेरे आदमी नही है। ये मेरे कुत्ते है। जब मेरा प्रियतम लौट आएगा तब मैं इन जगलियो को छोडकर चली जाऊगी। तुम मुझे आयशा कहकर पुकारो।"

"और यह यूस्टेन कौन है ?"

"ठहरो, मै देखती हू।" यह कहकर उसने उस पानी पर हाथ फेरकर झाका और कहा, "अच्छा यह लडकी है।" फिर उसने सिर हिलाकर पानी मे दिखता हुआ दृश्य बन्द कर दिया।

उसके अनिन्द्य सौन्दर्य ने जैसे मुझपर जादू कर दिया था। रात हा गई थी। मैं सोचने लगा—क्या यही वह स्त्री है जिसने केलीक्रिटीज की हत्या की थी ? क्या यह उसी प्रेमी के लौट आने की प्रतीक्षा कर रही है ? क्या यह पुनजन्म मे विश्वास करती है ? यूस्टेन ऊघ रही थी। लियो को ज्वर आ गया था। कब्रिस्तान की भाति सन्नाटा छा रहा था। मैं एक ओर चल पडा।

मैंने देखा, एक बडे कमरे के द्वार पर पर्दा गिरा हुआ था। मैंने उस पर्दे से देखा कि अन्दर कोई लम्बी स्त्री खडी है। उसी समय उस स्त्री ने अपना काला चोगा उतार दिया और मैने देखा कि वह जिनकी आज्ञा मानना अनिवार्य था अपने अनिन्द्य सौन्दर्य को लिए खडी थी। न जाने वह अरबी भाषा मे क्या कहने लगी। वह नागिन की तरह फुकार रही थी। "उसका नाश हो, उस स्त्री का नाश हो।" उसके हाथ उठाते ही उसके सामने जलती हुई अग्नि की शिखाए ऊपर उठने लगी। उसने फिर कहा, "उसकी याद, उसकी स्मृति का भी नाश हो। उस मिस्री स्त्री का नाम भी मिट जाए।" उसके हाथ नीचे आ गए और आग गायब हो गई। उसने फिर कहा, "उसका जादू मेरे विरुद्ध भी चल गया। उसका नाश हो, क्योकि उसने मेरा प्यारा मुझसे छीन लिया !" उसकी यह प्रतिहिंसा देखकर मेरा रोम-रोम काप उठा। फिर वह रोने लगी। "मेरे प्रियतम, दो हज़ार वर्षों से मैं तुम्हारी राह देख रही हू। मेरी वासना मेरे हृदय को मरोडे डालती है। अभी न जाने कब तक मुझे जीना पडेगा। जाने बीस या पच्चीस या अस्सी हज़ार साल मुझे और तुम्हारी प्रतीक्षा करनी पडेगी !" फिर वह एक ममी की ओर बढी और बोली, "मेरे प्यारे केलीक्रिटीज़ आज मैं तुम्हे दो हज़ार साल बाद देखने के लिए बेचैन हो उठी हू।" उसने ममी पर लिपटा हुआ कपडा खोला और न जाने क्या बडबडाने लगी। और फिर उसने कहा, "उठ, उठ !" मैंने देखा मुर्दा उठने लगा, लेकिन तभी उसने कहा, "नही, इससे लाभ क्या। तुम जीवित हो जाओगे लेकिन तुम्हारे अन्दर आत्मा मै कैसे डालूगी ?" लाश फिर

गिर पडी। मै न जाने कैसे अपनी गुफा मे लौटकर आया। आतक से मेरा हृदय अब भी थर्रा उठता था। लियो का स्वास्थ्य अब तक खराब था। समझ मे नही आता था कि वह कब ठीक होगा ? तभी रानी ने मुझे बुलवाया और कहा, "जिन लोगो ने तुम्हारे ऊपर आक्रमण किया था मै उन लोगो को सजा दूगी।"

उसने न्याय किया और कइयो की हत्या करने की आज्ञा दे दी और मुझसे कहा, "मैं उन्हे सदा नही मारती। एक पीढी या दो पीढी के बाद उन्हे इकट्ठे मरना पडता है, इसीलिए उनपर भय चढा रहता है।" फिर उसने मुझसे कहा, "इस जगह ससार की सबसे आश्चर्यजनक कब्रे है। आठ हजार वर्ष पूर्व कोअर लोगो ने ये कब्रे बनानी प्रारम्भ की थी। कोअर मिस्र से भी पूर्व था, शायद बहुत पुराना था। वह सभ्यता किसी बीमारी के कारण विनष्ट हो गई। क्योकि ऐसा नही लगता कि उसपर किसीने आक्रमण किया था। दो हजार साल पहले जब मैं यहा आई तब मेरा जीवन दूसरे ही प्रकार का था।"

इसी समय सवाद आया कि लियो की हालत ज्यादा खराब है। आयशा ने लियो को वही बुलवा लिया और उसने यूस्टेन से कहा, "तू जा !" किन्तु जब वह नही गई तो उसने कठोर स्वर मे आज्ञा दी, "जाओ।" वह डरती हुई चली गई।

अब आयशा ने एक शीशी निकाली, उस दवा की एक बूद गिरते ही लियो की मरण-यत्रणा एकदम रुक गई और उसने देखा कि वह ठीक हो गया था। तब आयशा रो उठी और बोली, "मेरा केलीक्रिटीज़ बच गया है।" और उसने कहा, "हौली, अगर एक पल की भी देर हो जाती तो न जाने कितने हज़ार वर्ष और मुझे उसी यातना मे तडपना पडता। हौली, मै इतने वर्ष जीकर प्रकृति के कुछ रहस्यो को जानकर भी भविष्य के एक पल के बारे मे भी नही जानती, वरना क्या मेरा प्रियतम इस बीमारी की यातना झेलता। अब यह बारह घण्टे तक सोता रहेगा और इसकी बीमारी उसे छोड जाएगी। तुम नही जानते कि मेरे पास ऐसी शक्ति है कि तुम्हे मैं दस हज़ार वर्ष का जीवन दे सकती हू। और फिर उसने कहा, "वह यूस्टेन लियो की कौन है।"

मैंने कहा, "एमहेगर लोगो की रीति से उसने लियो से विवाह किया है।"

आयशा ने कहा, "तब वह मेरे और लियो के बीच मे दीवार बनकर खडी होना चाहती है इसलिए उसे मरना पडेगा।"

यूस्टेन लौट आई। आयशा ने उससे कहा, "चली जा यहा से। जब वह नही गई तो उसने अपनी तीन उगलिया यूस्टेन के सिर पर रख दी, जहा उगलिया स्पर्श हुई वहा उसके बाल बर्फ की भाति सफेद हो गए थे। यूस्टेन के नेत्र बन्द हो गए थे। तब वह भयभीत-सी वहा से चली गई। आयशा ने कहा, "यह जादू नही है यह मेरी शक्ति है।"

मैं डर गया। उस समय लियो ठीक हो गया था। उसने अपने ऊपर झुकी हुई आयशा को यूस्टेन समझकर भुजाओ मे बन्द कर लिया, आयशा विभोर हो गई। अगले दिन लियो बिलकुल स्वस्थ हो गया था। आयशा ने उससे कहा, "मेरे मालिक, मेरे अतिथि, यदि मैं तुम्हे समय पर औषध नही खिलाती तो तुम कभी नही बच पाते।" आयशा की आखो मे जैसे जीवन का नया आनन्द फैल गया था। इसी प्रकार कुछ समय व्यतीत हो गया।

एक रात वहा एक उत्सव सा मनाया जाने लगा। यूस्टेन के प्रति आयशा का क्रोध बढ गया था। उसने कहा, "सुनो मैं मरने को उद्यत हू, मनुष्य का सबसे बडा भय मृत्यु ही है।"

यूस्टेन ने कहा, "तुम मेरे प्रिय से प्रेम करती हो। लेकिन याद रखो कि तुम यदि मेरे प्रिय की हत्या करोगी तो वह तुम्हे नही मिल पाएगा और यदि तुम मेरी हत्या करोगी नो वह तब भी तुम्हारा नही बन सकेगा।"

आयशा चिल्लाकर, तनकर खडी हो गई। उसने अपना दाया हाथ यूस्टेन की ओर फैला दिया। एक तीव्र प्रकाश आयशा के हाथ से निकलकर यूस्टेन पर गिरने लगा। यूस्टेन पत्ते की तरह कापने लगी। हमने देखा क्षण-भर मे ही वह मर चुकी थी। आयशा के हाथ से निकली हुई उस अज्ञात बिजली ने यूस्टेन को सदा के लिए नष्ट कर दिया था। लियो को जब रोष आया तो वह भयानक पशु की तरह आयशा पर टूट पडा। आयशा जैसे तैयार थी। उसने अपना हाथ उठा लिया और लियो लडखडाता हुआ पीछे जा खडा हुआ। उसकी यह शक्ति देखकर हम सब लोग भयभीत हो गए। लियो चिल्लाया, "हत्यारी।"

आयशा ने कहा, "तुम नही जानते कि तुम मेरे केलीक्रिटीज़ हो।"

लियो ने कहा, "मैं केलीक्रिटीज़ नही हू। वह मेरा पूर्वज अवश्य था।"

आयशा ने कहा, "अच्छा तो तुम्हे यह बात मालूम है। सुनो, तुमने ही वह पुनर्जन्म लिया है।"

उसकी बात सुनकर जैसे लियो का हृदय परिर्वातित नही हुआ। और तब उसने अपना वस्त्र सामने से हटा दिया। उस सौन्दर्य को देखकर लियो अपने ऊपर काबू नही रख सका और मैने देखा कि नीचे यूस्टेन की लाश पडी रही लेकिन आयशा लियो की भुजाओ मे आ गई थी। तब आयशा उसके आलिंगन से हटती हुई बोली, "मैंने कहा था न कि मुझे देखकर तुम सब कुछ भूल जाओगे। केलीक्रिटीज़, आखिर तुमने अपनी प्रिया को पहचान ही लिया।" और इसके बाद यूस्टेन की लाश हटा दी गई। आयशा मनोहर गीत गाने लगी। कुछ देर बाद उसने कहा—केलीक्रिटीज़! अब तुम्हे मेरे साथ चलना होगा और मैं तुम्हे जीवन की नई ज्योति मे नहलाकर अमर कर दगी, तब तुम मेरे साथ अनन्त काल तक भोग करना।"

हम तीनो चल दिए। लम्बी सीढिया पार करने के बाद हमे एक गुफा मिली। फिर एक सीढी और पार कर एक गुफा थी। सीढिया बहुत चिकनी थी। तब आयशा ने कहा, "मेरे ही छोटे और कोमल पैरो ने इतने पत्थरो को चिकना कर दिया है। दो हज़ार साल तक हर रोज़ और कभी-कभी दिन मे दो-तीन बार तक मै इनपर से चढती-उतरती रही हू। इसलिए पत्थर घिस-घिसकर चिकना हो गया है।" अब हम लोग एक कब्र मे घुस गए थे। आयशा ने कहा, "यहा मैं दो हज़ार साल से भी अधिक नित्य सोई हू। यहा देखो, और यह है मेरा प्यारा। ओह मैंने उसे क्रोध मे मार डाला था क्योकि इसकी मिस्री स्त्री एमीनारटस ने इसे मुझे नही लेने दिया था और मैंने उस पाप का फल दो हज़ार साल तक तडपकर पाया है। केलीक्रिटीज़! दो हजार साल से मैं तुम्हारे ही लिए कौमार्य

धारण किए रही हू, मैं तुम्हारे प्रति सच्ची रही हू !" यह कहकर उसने कहा, 'देखो!"

हमने देखा-सामने पत्थर पर बिलकुल लियो जैसा ही एक और व्यक्ति लेटा था। मैने देखा, लियो मे और उस व्यक्ति मे बाल बराबर भी अन्तर नही था। आयशा ने कहा, "इस पृथ्वी पर मनुष्य अपना ही पहला रूप लेकर बार-बार जन्मता है। लेकिन लोग उसे पहचान नही पाते। दो हजार वर्ष बाद अब तुम ठीक वैसे ही पैदा हुए हो। मैंने कोअर से मुर्दे रखने की विधि अपने ज्ञान और अनुसधान से खोज निकाली थी, ताकि मेरा प्यारा हमेशा मेरी आखो के सामने बना रहे।" और फिर आसू पोछकर उसने कहा, "अब मुझे इस मुर्दे को रखने की आवश्यकता नही है।" और फिर उसने एक मिट्टी की बोतल निकाली और उस लाश को उस बोतल के तरल पदार्थ से भिगो दिया और हट गई। कुछ ही देर मे लाश भाप बनकर उड गई। हम लोग हैरत से भरे लौट आए। अब लियो यूस्टेन की याद करके रोने लगा, पर आयशा का जैसे उसपर जादू चल गया था। अगले दिन जब हम आयशा के सामने गए तो उसने लियो को अपनी भुजाओ मे बाध लिया और कहा, "प्रियतम, आज मैं तुम्हे उस स्थान पर ले चलूगी जहा से मैने अक्षय जीवन प्राप्त किया था। वहा जीवन की एक अक्षुण्ण ज्वाला जलनी है। यदि मैं मार्ग नही भूलू तो कल शाम तक हम लोग वहा पहुच जाएगे और फिर यौवन का अखड प्रवाह बहेगा और मैं तुम्हारी स्त्री बन जाऊगी।" वह फिर कहने लगी, "अजर और अमर व्यक्ति जीवन की शक्तियो और रहस्यो को जानकर आनन्द भोगता है वह सवशक्तिमान बनकर ससार पर राज्य करता है।"

मैंने कहा "रानी ! चाह का कभी अन्त नही होता। अधिक जीने से भी मनुष्य की तृष्णा नही मिटती। अधिक जीने से क्या लाभ, जब जवानी से मन बूढा हो जाए !"

आयशा ने कहा, "हौली, प्रेम ही एक वस्तु है जो उसे शताब्दियो तक जीवित रखती है।"

मैने कहा, "प्रेम !"

वह हस पडी और उसने कहा, "केलीक्रिटीज़, मुझे एक बात बताओ ! तुम्हे मेरा पता कैसे चला ?"

तब लियो ने अपने पिता के उस बक्स के बारे मे सब बाते बताईं। यह सुनकर कि मैंने उसको पाला था आयशा ने कहा, "होली, तुम वास्तव मे बहुत ऊची श्रेणी के मनुष्य हो। नील की पुत्री एमीनारटस ने मुझसे शत्रुता के नाते अपने वशजो से मुझे मारने और बदला लेने के लिए लिखा था और इसका फल यह हुआ कि दो हज़ार साल के बिछुडे फिर मिल गए ! केलीक्रिटीज़, तुमने दो हज़ार साल पहले मुझे ठुकरा दिया था लेकिन आज तुमने मुझे स्वीकार कर लिया है !" यह कहकर उसने एक छुरा निकाल लिया और कहा, "यह वही छुरा है जिससे मैंने तुम्हे मारा है। तुम्हारी माता ने मुझ मारने के लिए लिखा था तो लो इस छुरे को पकडो और मुझे मार डालो !"

किन्तु लियो उसे नही मार सका। फिर उसने कहा, "अच्छा मुझे अपने देश के बारे मे बताओ, क्या वहा बहुत सभ्य लोग रहते है ?" जब हमने इग्लैड के बारे मे बताया तो वह बोली, "दो हज़ार साल बाद समय आ गया है कि मैं अपने प्रियतम के साथ इन

जगलियो को छोडकर जा सकती हू। तुम इग्लैड मे रहते हो। चलो हम लोग इग्लैड मे ही रहेगे। मैं वहा की रानी बनूगी और तुम मेरे स्वामी बनोगे।"

उसका आत्मविश्वास देखकर हम लोग काप उठे। मैने सोचा—जब यह दो हज़ार साल की स्त्री इग्लैड पहुचेगी तब न जाने कितनी सनसनी मच जाएगी।

मै, लियो और जौब थोडे वस्त्र, पिस्तौल और हलकी राइफले लेकर निश्चित समय से पहले ही आयशा के कक्ष मे जा पहुचे। वह काला लबादा ओढे तैयार बैठी थी। वह बोली, "चलो।" बीच की बडी गुफा मे होकर शाम के उजाले मे हम बाहर आ गए। बिलाली एक पालकी को उठानेवाले छ गूगे लिए खडा था। मैदान पार करके एक घटा चलने के बाद हम कोअर के खडहरो मे पहुच गए। बडा सुन्दर था वह देश। कोअर की राजधानी पार करने के बाद जब हम बाहर निकले तो रात हो चुकी थी। खडहरो को पार करते-करते हम बीहड वन मे पहुच गए। धीरे-धीरे भोर हो गया। करीब दो बजे दोपहर को हम एक विशाल पर्वत की एक झाडी मे पहुचे जहा से गहरा पर्वत ज्वालामुखी के फैले होठो के समान चट्टान उठाए खडा था। आयशा यहा पालकी से उतर पडी और बोली, "अब हम लोगो को पैदल ही पर्वत पर चढना पडेगा। ये लोग हमारे साथ नही चलेगे।" और उसने बिलाली से कहा, "तुम इन आदमियो को लेकर यही ठहरो। हम कल मध्याह्न तक लौट आएगे। यदि किसी कारण नही भी आए, तो भी हमारी राह देखना।"

अब हम लोग पहाड के ऊपर चढने लगे। वह कूदकर एक विशाल चट्टान पर चढ गई। हम पीछे चले। हम लोग उसके पीछे एक के बाद एक चट्टान को पार करते हुए आगे बढ चले। जौब पीछे-पीछे आ रहा था क्योकि उसे एक तख्ता लेकर चढना पड रहा था। उसे यह तख्ता उठाने की आज्ञा आयशा,ने ही दी थी। पहाड का भाग अन्दर धस गया था, हम उसमे घुस गए। मार्ग पहले सकरा था फिर चौडा होता गया। यहा के पत्थर कौअर की गुफाओ के जैसे नही थे। पचास गज़ जाने के बाद मार्ग सामने से बन्द हो गया और दाहिनी ओर एक अधूरी गुफा दिखाई देने लगी। यहा आयशा के कहने से दो लालटेनें जला ली गई। यह बडा ऊबड-खाबड और पथरीला मार्ग था। घूम-घूमकर गुफा मे जाना पडता था। घटे-भर बाद हम गुफा के दूसरे छोर पर निकले। तेज़ हवा के झोके से दोनो लालटेने बुझ गईं। सूर्य उतर चुका था। चारो ओर तीन-तीन हज़ार फ़ुट ऊचे पहाड खडे थे। गुफा के द्वार से हम करीब दस कदम जाकर रुक गए। प्रकाश क्षीण हो गया था। सामने एक अथाह गड्ढा था जिसका तल नही दिखाई देता था। हम सब उस गड्ढे को देखकर काप उठे। पता नही कितनी बिजलिया गिरकर उस गड्ढे को बना पाई होगी! तभी आयशा ने कहा, "हौली! आगे बढो। इस तख्ते को सामने के पत्थर के ऊपर अडा दो।"

वह पत्थर देखकर उस भयानक तूफान मे हम लोगो का दिल दहल उठा। तख्ता रख दिया गया। और आयशा निर्भीक होकर अपने शरीर को साधे हुए हवा मे फरफराते हुए वस्त्रो को पकडे उस तख्ते पर होकर उस अथाह गड्ढे के ऊपर से सभलकर निकलने लगी। आयशा उस अधेरे मे चिल्लाई, "नीचे इसका तल नही है। विश्वास जानो, यही

अन्तिम परीक्षा है। यह सच है कि मेरा कुछ बिगड नही सकना फिर भी मै सचेत हू। सावधान ! इसी तरह इसपर सब लोग सरकते चले आओ।" इसी समय हवा से उसका काला लबादा उड गया। वह अपने सफेद वस्त्रो मे बडी भव्य दिखाई दे रही थी। वह कहती रही, "केलीक्रिटीज, पत्थर पर आखे गडा दो। यहा से गिरने पर फिर बचाव नही है।"

अब हम उस चट्टान के लम्बे दातो से चिपटकर सरकने लगे। सहस्रो वर्षो से चलता तूफान भयानकता से गजन कर रहा था। सामने भयानक अन्धकार था। मै आयशा के बिलकुल पीछे था, मेरे पीछे केलीक्रिटीज और फिर जौब। हमने देखा सामने कोई दस या बारह गज की दूरी पर एक विशाल गोल चट्टान पडी थी। हम लोग पुल पार करके एक गुफा मे घुस चुके थे। तभी तूफान से तख्ता उड गया। लियो ने घबराकर पूछा, "अब वापस कैसे जाएगे ?"

चट्टान का गोला काफी बडा था, उसके पिछले छोर पर पहुचकर आयशा ने कहा, "नीचे कूदो।"

नीचे छोर दिखाई नही दे रहा था लेकिन तीन ही हाथ नीचे भूमि थी। हम लोग कूद पडे। आयशा कहने लगी, "यहा किसी समय एक आदमी रहता था। यह उसका घर था और वह यहा वर्षो रहा था। हर बारहवे दिन वह पर्वत के उस मुहाने पर जाता जहा से हम अन्दर घुसे थे। लोग वहा उसके लिए भोजन, पानी और तेल श्रद्धा से पहुचा देते थे। ससार से उदासीन उस व्यक्ति का नाम नूत था। वह दार्शनिक था। उसीने जीवन की अमर ज्योति को पृथ्वी के गर्भ मे घुसकर खोज निकाला था, जिसकी लपटो मे नहाने से मनुष्य प्रकृति के समान ही बहुत समय तक स्थायी हो जाता है। परन्तु वह नूत इतना बडा रहस्य जानकर भी उसका उपभोग नही करता था। वह कहा करता था, मनुष्य मरने ही के लिए होता है। प्रकृति के साथ निरन्तर जीने के लिए नही। मैने जब ऋषि नूत के बारे मे सुना तो मैं यहा इस गुफा मे आकर उसके बाहर आने की प्रतीक्षा करने लगी। जब वह बाहर आया तब मैं उसके साथ यहा अन्दर चली आई और तूफानो के बीच उसके साथ रहने लगी। वह सर्वशक्तिमान व्यक्ति वृद्ध और कुरूप था। फिर मैने खुशामद करके धीरे-धीरे सब बाते जान ली, परन्तु उसने मुझ ज्योति की सतरगी लपटो मे नहाने नही दिया। तभी मुझे केलीक्रिटीज उस यूनानी एमीनारटस के साथ मिली, तब तक मै एमहेगर के जगलियो की रानी हो गई थी। वह घटना मैं तुम्हे फिर कभी सुनाऊगी। मैं तुमपर मर मिटी। एमीनारटस के साथ मैं तुम्हे यहा ले आई। मुझे नूत का भय हुआ और भाग्य से वह मुझे मरा हुआ मिला। मैने चाहा कि तुम्हे अपने साथ लेकर इन लपटो मे स्नान कर लू पर तुम एमीनारटस की बाहो मे चले गए। मैन इन लपटो मे स्नान किया। मेरा रोम-रोम सौन्दर्य का केन्द्र हो गया पर तुमने मेरी बात न मानी और उस जादूगरनी एमीनारटस के वक्ष मे सिर छुपा लिया। तब मैने तुम्हे मार डाला। उसके बाद मैं कितनी रोई, कितनी रोई और तब मै मर भी नही सकती थी। अब मुझे तुम फिर मिल गए हो। अब हम कभी अलग नही होगे।" यह कहकर उसने फिर कहा, "केली-क्रिटीज ! अब यह अग्नि का घूमता हुआ खम्भा इधर से आएगा, तब तुम मेरे साथ निर्भय

होकर उस अग्नि मे खडे हो जाना।"

यह कहकर वह लालटेन जलवाकर और उसे हाथ मे लेकर एक ओर चल दी। हम लोग फिर सीढिया चढने लगे और एक कमरे मे पहुचे जो काफी बडा था। फिर चट्टान के अन्दर दीवार के सहारे हमने सीढियो पर उतरना शुरू किया और घटे-भर तक तीन सौ से साढे तीन सौ तक सीढिया उतर गए। अब हम पृथ्वी के गभ मे घुस गए जहा घोर अन्धकार था। अब हम एक ऐसे कक्ष मे पहुचे जिसकी दीवार मे एक झरोखा-सा था। उस चार फुट के दरवाजे मे हम लोगो ने प्रवेश किया। अन्दर एक ढलवा गुफा थी जो जैसे-जैसे आगे जाती थी सकरी होती जाती थी। ऐसी सात गुफाए पार करने के बाद हम एक गोल ऊची गुफा मे पहुचे। यहा पृथ्वी पर सफेद रेत बिछी थी। गुलाबी प्रकाश फूटकर दीवार को चमका रहा था। आयशा चिल्लाई, "वह रहा जीवन-ज्योति का अमर स्तम्भ! इसकी धडकन से पृथ्वी मे प्राण धडकते है। यह भी एक दिन करोडो वर्षो बाद शात हो जाएगा, तब पृथ्वी भी चन्द्रमा की भाति मर जाएगी।" हम लोगो मे स्फूर्ति छा रही थी। आयशा ने कहा, "वह देखो जीवन का अमर स्तम्भ घूम रहा है। पृथ्वी के गर्भ मे स्नान करने को उद्यत हो जाओ। जीवन के इस स्रोत से ससार के मनुष्य, जन्तु और वृक्ष प्राण खीचते है।"

अर्राटा बढने लगा। दूर सामने सटा हुआ एक चट्टान का एक छेद था जिसमे प्रकाश फूट रहा था। आवाज बढने लगी। एक धुध भरा विशाल स्तम्भ इन्द्रधनुषी जैसे नाना रग की लपटो से दहकता हुआ गर्जन करता हुआ आया। हमे उसीका ऊपरी भाग दिख रहा था। उसमे से दस-बारह गज तक लपटे निकलकर फैलने लगी। उसकी रगीन भाप से उजाला फल रहा था। वज्र गर्जन-सा गूजने लगा। चालीस सैकड बाद वह फिर आगे निकल गया। आयशा ने कहा, "अगली बार जब वह आए तो उसकी लपटो मे खडे होकर स्नान करना केलीक्रिटीज! तुम अमर हो जाओगे। डरना मत, मैं भी तुम्हारे साथ नहाऊगी। जौब और होली तुम भी नहाना। पहले मै स्नान करूगी फिर मुझे देखकर तुम लपटो मे आ जाना।" यह कहकर उसने अपने कपडे उतार दिए और अपने लम्बे केश सामने कर लिए, इसी समय स्तम्भ लुढकता हुआ फिर आ गया। दोनो हाथ उठाए आयशा उसकी लपटो मे खडी हो गई। हठात उसका सौदर्य लुप्त हो गया। स्तम्भ आगे निकल गया था। हमने देखा—आयशा के मुह से झाग निकल रहा था। वह छोटी होती जा रही थी, अब वह चिल्लाने लगी। उसके बाल झड गए और वह मर गई। मैंने देखा कि वह बन्दर जितनी छोटी हो गई थी। आखिर दो हज़ार साल का बुढापा प्रकट हो गया था। लियो बेहोश हो गया। दो मिनट पहले जो ससार की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी थी जिसके एक कटाक्ष मे त्रिभुवन की वासना समुद्र के समान थपेडे ले उठती थी और जिसके वक्षो की चमक मे मनुष्य अपनी शक्ति, ज्ञान और विवेक को खो बैठता था, वही अब इतनी कुरूप होकर पडी थी!

वह मर चुकी थी। मै भी बेहोश हो गया। जब होश मे आया तो जीवन स्तम्भ फिर लुढकता हुआ इधर आ गया, लेकिन हममे से किसीने भी उसमे स्नान नही किया। हम लोग वहा से भाग चले। हफ्तो बाद जब हम लोग बाहर पहुचे तब लियो यद्यपि धीरे-धीरे फिर से ठीक होने लगा था किन्तु आयशा की स्मृति उसके हृदय मे जैसे बस गई थी।

प्रस्तुत उपन्यास का लेखक साम्राज्यवादी विचारो का समर्थक था, किन्तु उसने ऐसी मानववादी अद्‌भुत कल्पना की है कि देखकर आश्चर्य होता है। स्पष्ट ही हिंदू चिंतन का यहा गहरा प्रभाव मिलता है। इस उपन्यास में बडी सार्वभौमिकता है।

एच० जी० वेल्स

लोकों का युद्ध

[द वार ऑफ द वर्ल्ड्स[1]]

अंग्रेजी उपन्यासकार एच० जी० वेल्स का जन्म २१ सितम्बर, १८६६ को ब्रोम्बले केण्ट में हुआ। आपके पिता क्रिकेट के एक पेशेवर खिलाडी थे। आपका परिवार निम्न मध्यमवर्गीय था। यौवन के आरम्भ में आपने अनेक उतार-चढाव देखे और बाद में एक स्कॉलर-शिप मिला तब आपने रॉयल कालेज ऑफ साइन्स में अध्ययन किया। १८८७ में लन्दन विश्वविद्यालय से ग्रेजुएट हुए। उसके बाद आप विज्ञान पढने लगे और साथ ही साथ कुछ पत्रकारिता में भी दिलचस्पी लेने लगे। १८९५ में आपकी पहली रचना प्रकाशित हुई। उसके उपरान्त आपने कई उपन्यास लिखे और इतिहास, दार्शनिक ग्रन्थ तथा विज्ञान सम्बन्धी पुस्तकों का प्रणयन भी किया। आप इंग्लैंड में रहते थे। १३ अगस्त, १९४६ में आपकी मृत्यु से ससार में एक विचारक का अभाव हो गया, क्योंकि अतिम दिनों में आपने विश्व राज्य की एक कल्पना की थी। यों तो वेल्स ने अनेक उप यास लिखे हे लेकिन महत्त्व उन उपन्यासों का अधिक रहा है जिनमें कल्पना ने अधिक प्रभाव दिखलाया है। आपने विचित्र वर्णन किए और विज्ञान की सहायता से अनेक प्रकार के चरित्र प्रस्तुत किए। उनके 'द इन्विजिबल मैन' तथा सी प्रकार के अन्य उपन्यास लोगों में बहुत अधिक ज्यादा पढे जाते है। आपका द वार ऑफ द वर्ल्ड्स' नामक उपन्यास बहुत प्रसिद्ध हुआ है। यह १८९८ में प्रकाशित हुआ था। इसमें आपने यह कल्पना की है कि पृथ्वी पर मगलग्रह के निवासियों ने आक्रमण कर दिया है।

ओगिलवी ज्योतिष का प्रकाण्ड विद्वान था और अतरिक्ष को अपनी दूरबीन से निरन्तर देखा करता था। कोई नही जानता था, न किसीने कल्पना की थी कि ओगिलवी ने मुझे कितनी बडी चीज़ दिखाई! मुझे उसने दूरबीन मे दिखाया कि मगलग्रह पर कुछ रहस्यात्मक लपटे दिखाई दी और उसके बाद उस रात तो हम लोग यह कल्पना भी नही कर पाए कि मगलग्रह के निवासी हम लोगो की ओर कुछ मिसाइल फेंक रहे है।

उन्नीसवी शताब्दी के अन्तिम वर्षों मे इग्लैंड मे लोग अपने छोटे-छोटे धन्धो मे लगे रहते थे। कौन जानता था कि यह लाल-सा दिखाई देनेवाला मगलग्रह क्या था और उसमे कैसे लोग रहते थे, जो मनुष्य की तुलना मे कही अधिक बुद्धिमान थे, कही अधिक समर्थ थे?

---

१ The War of The Worlds (H G Wells)—इस उपन्यास का अनुवाद हो चुका है 'लोकों का युद्ध', अनुवादक रमेश बिसारिया, प्रकाशक राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली।

वहा से आनेवाले मिसाइलो मे से एक आधी रात के समय बोकिग के समीप होर्सल कामन मे मेबेरी पर्वत के समीप, जहा मेरा घर था, टूटते हुए तारे की तरह आकर गिरा और धरती मे गड गया। ओगिलवी प्रात काल के समय उसे देखने लगा। उसने देखा कि वह धातु का एक लम्बा सिलण्डर था। उसका व्यास लगभग पन्द्रह गज़ था और उसका एक छोर धीरे-धीरे पेच की तरह खुलता जा रहा था। तुरन्त ही ओगिलवी ने यह मान लिया कि मगलग्रह के ऊपर जो चकाचौध-सी दिखाई दी थी वह इसीके कारण हुई थी और उसने यह भी निश्चय कर लिया कि अवश्य ही उसके अन्दर कुछ मनुष्य भी होगे जिन्हे कि सहायता की आवश्यकता होगी ही। लेकिन सारा दिन बीत गया, सूर्यास्त होने को आया तब ही वह ढक्कन-सा धीरे से खुला। उसी समय भीड मे भयानक चीत्कार सुनाई दिया। लोग बडे कौतूहल से इस नई वस्तु को देख रहे थे। उन्होने देखा कि उस सिलण्डर के अन्दर से जो वस्तु निकली वह मनुष्य नही था। मैंने भी उसको देखा। उसका कुछ भूरा-सा रग था। गोल-गोल-सा शरीर जैसे कोई भालू हो। उसके पजे बाहर निकले हुए थे, जिनके सहारे से वह बडी कठिनाई से ऊपर आने का प्रयत्न कर रहा था। और एक कुरूप अनगढ-सी उसकी मुखाकृति थी जिसके नीचे उसके पजे निकले हुए से थे। दो काली बडी-बडी आखे थी और कापता हुआ बिना होठो का, अग्रेजी के वी अक्षर जैसा बिना ठोडी का मुख था। उसकी तेलिया खाल ऐसी चमक रही थी जैसेकि गीला चमडा हो। और यहा के विचित्र वातावरण मे वह व्यक्ति बडी तेज़ी से आवाज करता हुआ सा सास ले रहा था। गोधूलि बेला हो गई थी।

ओगिलवी और उसके कुछ अन्य साथी एक सफेद झण्डा लेकर आगे बढ आए और मगलग्रह के निवासियो की ओर बढ चले। वे मगलग्रह के निवासियो को यह दिखाना चाहते थे कि वे लोग बडे बुद्धिमान है और उनमे मैत्री की भावना है। अचानक प्रकाश की झिलमिलाहट-सी उठी और फिर कुछ हरा-सा धुआ उठ गया और गड्ढे मे से धातु की कोई वस्तु ऊपर की ओर उठी। ज़ोर की आवाज़ सुनाई दी और एक चक्कर लगाती हुई तेज़ रोशनी भयकरता से सामने की ओर घूम गई। जो लोग आगे बढे थे उनको लपटो ने घेर लिया। मगलग्रह के निवासियो ने भयकर ऊष्मा की किरण छोडी थी और सामने की ओर के जिन मकानो और पेडो पर वह किरण फैल गई थी, वहा सब जगह आग लग गई थी, मैं घबराया हुआ सा घर की ओर भाग चला।

आधी रात के समय उत्तर-पश्चिम की ओर कुछ मील की दूरी पर एक दूसरा सिलण्डर गिरा। क्योकि हमारा घर उस भयकर किरण के बहुत निकट था इसलिए मैं अपनी पत्नी को उसके रिश्तेदारो के यहा बारह मील दूर लेदरहेड नामक स्थान पर छोडने के लिए ले गया। जब मैं लौटकर आया तो उस रात मैंने एक घोडा और कुत्ते की एक गाडी पडोसियो से मागी और वहा जाकर देखा। चारो ओर उजाड पडा था। तभी मैंने मगलग्रह के निवासियो की चलनेवाली मशीनो को देखा। वे विशालकाय तिपाइयो जैसी दिखती थी, मकानो से भी ऊची। वे भयकरता से घूमती थी जैसे उनमे सचमुच के प्राण भरे हुए थे। उनके स्वर सुनाई देते थे, जो कठोर थे। मैंने उनके बारे मे पहले गलत समझा था। एक बार हमारे अधिकारियो को भी विचित्र अनुभूति हुई थी। सब यह ही समझ

रहे थे कि आनेवाले लोग खुद नही चल-फिर सकते थे और आसानी से उनको विनष्ट किया जा सकता था। दो पलटने आ गई थी और भागते हुए सिपाहियो ने मुझे बताया कि पूरी पलटने खत्म कर दी गई हे और उसके बाद उन मशीनो ने वोकिग को बरबाद कर दिया था और अब मगलग्रह के निवासी आराम से अपना सगठन कर रहे थे।

उसी रात को तीसरा सिलण्डर आ चुका था और अभी सात ओर आनेवाले थे। सबेरे मैं लेदरहैड की ओर भाग चला। मेरा इरादा यह था कि उस एकान्त मे पडा रहू लेकिन वहा से भी लोग भाग रहे थे। जगह-जगह हथियारबन्दी की जा रही थी। जहा 'वे मो टेम्स' मिलती हु वहा पाच मगल-निवासी आ पहुचे। चारो ओर मनुष्यो की भीड लग रही थी। सिपाहियो ने जब गोलाबारी शुरू की तो मै पानी मे कूद पडा। एक मशीन टेम्स नदी मे आकर गिरी, क्योकि बाहर की गोली ने उसमे बैठे किसी मगल-निवासी को मार डाला था। उसके क्रुद्ध साथियो ने सिपाहियो की भीड, वे ब्रिज और शिपर टन सबको विनष्ट कर दिया। मै न जाने किस चमत्कार से बच सका, यह मैं स्वय नही जानता। दोपहर के समय मैने देखा कि मगल-निवासी कुछ कनस्तर-से बरसा रहे थे जो टूट जाते थे और उनमे से घने बादल जैसे धुए के गोले घुमडते थे और पृथ्वी पर छा जाते थे। मेरे पास ही एक बौराया-सा पादरी खडा था। हमने देखा कि जो कोई भी उस धुए को सूघता था वह तुरन्त मर जाता था। उसमे से स्याही जैसी भाप निकलती थी। बस, वे लोग ही बच सके जो पेडो पर चढ गए या गिरजे की ऊची सीढियो तक पहुच गए। जैसे-जैसे मगल-निवासियो को रोकनेवाले विनष्ट होते गए वे लोग बडे कायदे से लन्दन की ओर बढते चले गए।

इस बीच मेरा भाई लन्दन मे था। उसने खतरे को भाप लिया और शरणार्थियो के साथ वह भी उत्तर की ओर भाग निकला। सरकार का पतन हो गया और चारो ओर भगदड मच गई। ऐसेक्स के किनारे पर वह एक जहाज़ पर चढा। यह आखिरी जहाज था जो फ्रास को बचकर निकल जा सका। उस जहाज से उसने देखा कि मगल-निवासियो की दो भयानक मशीने समुद्र मे बढ आईं। युद्ध का एक जहाज उन दोनो से टक्कर लेते समय विनष्ट हो गया। जो लोग लन्दन से भागकर नही गए वे उस काले धुए से विनष्ट हो गए।

पादरी और मैं, दोनो, हेलीफोर्ड के पास एक घर मे छिप गए। हमने देखा कि धुआ हमारे पास इकट्ठा होता जा रहा था और हमने देखा कि एक मगल-निवासी ने कुछ अत्यन्त गर्म भाप छोडी और वह धुआ उसके पीछे-पीछे चला गया। शीन नगर के बाहर हम लोग एक मकान मे घुस गए। हमे बडी जोर से भूख लग रही थी, लेकिन उस समय एक जोर का धडाका हुआ और हम सिर के बल गिर पडे। पाचवा सिलण्डर मगल से आकर वही निकट ही पृथ्वी पर गिरा था। उसके धरती मे गड जाने से जो धूल और मिट्टी वहा से छिटक कर गिरी थी उसमे हम लोग बिलकुल दब गए थे। मेरी तो यह हालत हो गई कि जो दो कमरे टूटने से बच गए थ अब मुझे पन्द्रह दिन उन्हीमे पडा रहना पडा। दीवार मे एक छोटा-सा छेद था जो मगल-निवासियो के सिलण्डर द्वारा बनाए गए गड्ढे की ओर खुलता था। शायद ऐसे बहुत ही कम लोग होगे जिन्होने इन आक्रमणकारियो

को इतने पास से देखा होगा जितना वहा से मै उन्हे देख पाया हू। अब मैंने महसूस किया कि उनके पास ऐसी-ऐसी विचित्र मशीने थी कि हम उनको देखकर जीवित समझने के भ्रम मे पड जाते थे। एक मशीन ऐसी थी जो मिट्टी मे से अलमोनियम की छडे पदा करती थी।

लेकिन जब मैने उनके खाने-पीने के ढग को देखा तो मेरी रूह काप उठी। बाद मे मुझे मालूम पडा कि उनकी शरीर-रचना बडी साधारण थी। उनका एक विशाल मस्तिष्क था, फेफडे थे और एक ही दिल था। लेकिन उनके आते-वाते नही थी और न पाचन-क्रिया की झझट थी। वे लोग खाते नही थे, लेकिन अन्य जीवित प्राणियो का रक्त लेकर अपनी नसो मे उसका इजेक्शन लगा लिया करते थे। इसलिए जब उन्होने मनुष्य की शक्ति को पृथ्वी पर तोड दिया तो उसके बाद हत्या करने मे उनकी विशेष रुचि नही रही। हम लोग उनके लिए भोजन थे। उस छेद मे से मैने देखा कि वे लोग अच्छे कपडे पहने हुए एक मजबूत आदमी को पकड लाए। उन्होने उसे देखते-देखते समाप्त कर दिया। उसके बाद घटो तक मेरी हिम्मत नही हुई कि उस छेद मे से फिर झाककर देखू। भावुकता का जैसे मगल-निवासियो मे कोई मूल्य ही नही था और न वे उससे प्रभावित होते थे। उनमे सेक्स का कोई स्थान नही था। वे लोग वृक्षो मे से कलियो की भाति पैदा होते थे और मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि वे एक-दूसरे से अपने विचारो की प्रेषणीयता की सहजगम्यता के द्वारा ही बातचीत किया करते थे। अर्थात् एक ने सोचा, दूसरे ने अपने-आप उसके दिमाग को पढकर समझ लिया।

यह बात बिलकुल प्रकट हो गई कि पादरी की अक्ल गुम होती जा रही थी। खाने का सामान हमारे पास बहुत कम था और इतने दिनो तक उस मकान मे हम दोनो का बन्द रहना पादरी के लिए बहुत कष्टकर था। मुझे अकसर उसे रोकना पडता ताकि वह कोलाहल न कर उठे। मुझे डर था कि कही मगल-निवासियो का ध्यान हमारी ओर आकर्षित न हो जाए। लेकिन जब पादरी नही माना तब मैने पकडे जाने के डर से गोश्त काटने का औज़ार लेकर पादरी पर जोर से आघात कर दिया और वह बेहोश होकर नीचे गिर पडा। उसी समय एक मगल-निवासी को हमारे छेद का पता चल गया। एक पजा-सा उस छेद मे भीतर घुस आया और पादरी को पकडकर उठा ले गया। मैं बाल-बाल बच सका। अब खाना नही बचा था। मेरे पास थोडा-सा पीने का पानी बाकी था। घर मे बन्द हुए मुझे दस दिन बीत चुके थे। तब मैंने हिम्मत करके बाहर झाका। अब गड्ढा खाली था। मैं ऊपर निकल आया। जमीन पर एक तरह की लाल सिवार उग आई थी, और यह मगल की ही पैदावार थी, पृथ्वी की नही। मैं लन्दन की ओर भाग निकला। मुझे बाहर न कोई मगल-निवासी दिखाई दिया, न पृथ्वी-निवासी। कही-कही कुत्ते और कौए ज़रूर दिखाई दे जाते थे। खाना मिलना भी बहुत मुश्किल हो रहा था। बडी मुश्किल मे आखिर मुझे एक सिपाही मिला जो एक ज़मीदोज़ नाली के अन्दर छिपा हुआ था और जिसने खरगोश की भाति अपना जीवन व्यतीत करने का निश्चय कर लिया था।

लेकिन यह मुसीबत जिस तरह आई थी उसी तरह अचानक नष्ट भी हो गई। आक्रमणकारियो ने पृथ्वी पर रहनेवाले लघुतम कीटाणुओ से अपना कोई बचाव नही

किया था। वे लोग ऐसे ग्रह से आए थे जहा किसी प्रकार के भी कीटाणु अवशिष्ट नही थे। लेकिन पृथ्वी पर आते ही यहा के विभिन्न कीटाणु सास से उनके फेफडो मे पहुचने लगे। सबसे पहले उनकी लाशो का कुत्तो ने पता लगाया। एक ही मगल-निवासी था जिसे कुत्ते नही खा पाए थे। विज्ञान का अध्ययन करनेवालो के लिए उस व्यक्ति की लाश को बचाकर रख लिया गया। मै अपने मकान की ओर आ गया और वही मुझे अपनी पत्नी भी मिली जो मुझे ही ढूढ रही थी। हम दोनो यह समझ रहे थे, अब शायद कभी भी मिलना नही होगा, लेकिन भगवान ने हम दोनो को जीवन मे फिर एक-दूसरे के समीप कर दिया।

प्रस्तुत उपन्यास में एक विचित्र सनसनी है। यद्यपि यह नितान्त कल्पना है लेकिन वेल्स ने वैज्ञानिक तथ्यो के आधार पर इन कल्पनाओ का सृजन किया है, इसलिए उपन्यास अत्यन्त रोचक बन पडा है। वैसे देखने को ऐसा लगता है कि अब शायद मगल-निवासी इस पृथ्वी के सम्पूर्ण विजेता हो जाए, लेकिन बाद में वेल्स ने ऐसी साधारण घटना को लेकर पूरा तख्ता उलट दिया है कि उपन्यास की रोचकता कहीं अधिक बढ जाती है।

क्लार्क स्मिथ

क्षितिज के पार के कीड़े

[द अमेजिग प्लैनेट[1]]

अग्रेजी लेखक क्लार्क स्मिथ का जन्म अमेरिका में हुआ। आपके उपन्यास 'द अमेजिग प्लैनेट' में वैज्ञानिक कल्पना का वैचित्र्य प्रमुख है। इस उपन्यास में कौतूहल का विशेष स्थान है और यह बीसवी सदी में यथार्थ के विरुद्ध ऐसा एक आदोलन बन गया है कि लोग कल्पना का आसरा लें, यद्यपि इस क्षेत्र का विकास मानव कल्पना का विकास भी माना जा सकता है। बहुतेरे उपन्यासकार वैज्ञानिक कथाओं के द्वारा वर्तमान समाज पर व्यग्य भी करते हैं।

अनरिक्ष के पार शून्य गगन मे कैप्टेन वोल्मर अपने साथियो के साथ तीव्र गति से अपने शून्य-यान 'एन्साईवन्' मे चला जा रहा था। उसके सामने मेज पर कागज फैले पडे थे और मेज़ के इर्द-गिर्द विज्ञान-मडली के दक्ष सदस्य उत्कठा से बैठे थे। वोल्मर ने कहा, "यह सामने का लोक विचित्र है जहा इस समय हम उतरनेवाले है। यह ऐसा लोक है जो शायद अपनी धुरी पर नही घूमता, क्योकि इसका एक भाग सदा इसके सूय की ओर रहता है। इसी प्रकार इसके दूसरे अर्द्धाकार मे कभी न समाप्त होनेवाली रात्रि बनी रहती है। जिधर उजाला है, वह देखो भयकर मरुभूमि है, और दूसरी ओर भयानक अधकार है जहा निश्चय ही बर्फ की पर्ते पडी होगी " और फिर उसने उगली उठाकर सामने की बडी व चौडी दूरबीन की ओर दिखाते हुए कहा, "वह देखो कितना सुन्दर स्थान है, जहा हम उतरनेवाले है यह ध्रुव से ध्रुव तक की मध्य रेखा है जहा सदा उषाकाल की भाति मद्धिम तथा सुनहला प्रकाश फैला रहता है "

शून्य मे निरन्तर आठ मास यात्रा करते-करते वे सभी लोग थक चुके थे और चाहते थे कि कही उतरकर तनिक नवीनता का अनुभव करे। बाहरी आकाश की निरतर उडान, 'एल्साईवन्' की मशीनो का गभीर घोष तथा निविडाधकार—इन सभी चीजो से वे लोग उकता गए थे और कुछ नयापन अनुभव करना चाहते थे। यहा तक कि दृढ विचारोवाला कैप्टेन वोल्मर भी परिवर्तन चाहने लगा था। अब कुछ समय के लिए कही उतरना उन लोगो के लिए जैसे ज़रूरी हो गया था। इस प्रकार के पडाव ये लोग निरन्तर हो रही अपनी कई वर्षों की आकाश-यात्रा मे विभिन्न लोको मे कर चुके थे। आखिरी पडाव को अब आठ मास हो चुके थे। इस समय जिस लोक की ओर ये जा रहे थे वह किसी अनाम सूर्य के चार ग्रहो मे से सबसे पास का कोई ग्रह था जिसके आकर्षण के दायित्व

१. The Amazing P anet (Clark Smith)

मे आकर इन लोगो ने वही उतरने के उद्देश्य से उस आकर्षण की काट करना बन्द कर दिया था। और पास से उन लोगो ने देखा कि उस ग्रह के दो चन्द्र थे—एक प्रकाश की ओर, तो दूसरा अधेरे की आर। दूसरा, उस अधकार मे अपना बहुत ही क्षीण प्रकाश फैला रहा था। वोल्मर ने अपनी बात दोहराई, "वह देखो भयानक बर्फ की मोटी पर्तें—मैने पहले ही कहा था।"

ध्रुव से ध्रुव तक का भाग अब स्पष्ट दिख रहा था। उत्सुकता से वोल्मर ने कहा, "वह देखो, कितना स्वप्निल-सा लोक दिखाई दे रहा है कितना सुन्दर कैसा सुनहला प्रकाश है वहा। वहा हरियाली भी है। वहा बादल है, भाप है—तब ता निश्चय ही वायुमडल भी होगा ही!"

'एल्साईवन्' अब नीचे उतर रहा था और सभी की उत्सुकता उस नवीन लोक को पददलित करने की हो उठी।

जब 'एल्साईवन्' नीचे उतर गया, वोल्मर ने पहले भीतर ही बैठकर यन्त्रो द्वारा बाहरी वातावरण की जाच की। बाहरी तापमान तो करीब ६०° था जो सर्वथा उपयुक्त था, परन्तु वायुमडल मे कुछ गैसे ऐसी मालूम हुईं जिनके बारे मे इन लोगो को कुछ पता नही था। अतएव यही तय रहा कि कोई अपना गैस-मास्क नही उतारेगा। सबो ने नये सिरे से उनमे ऑक्सीजनयुक्त हवा भर ली और फिर वह एक-एक कर ऊपरी छिद्र को खोलकर अत्यन्त सावधानी के साथ बाहर निकले।

'एल्साईवन्' जहा उतारा गया था वह स्थान पथरीला था, तथा जहा से सामने की ओर एक लम्बा ढाल था वहा की भूमि कडी तथा नीली थी। भूमि पर एक विचित्र प्रकार की हरियाली फैली हुई थी जो पृथ्वी पर उगनेवाली घास से बिलकुल भिन्न थी। यह तीन-चार इच से ऊची नही थी और इसकी जडे पृथ्वी के अन्दर नही जाती थी। यह काई की भाति फैली हुई थी तथा चलते मे पैरो के बीच इकट्ठी हो जाती थी। उस क्षीण प्रकाश मे भी वहा के आकाश मे दो चन्द्र दिखाई दे रहे थे—एक अर्धचन्द्राकार तो दूसरा पूर्ण-चन्द्राकार। दूर तक पर्वत शृखलाए चली जा रही थी, जिनपर उठी हुई हरियाली वहा से काली दिखाई दे रही थी। उनके बीच कही-कही डोलोमाईट के सफेद पहाड चमक रहे थे। उस काली पृष्ठभूमि मे वह खेत-पर्वत गहनाधकार मे हस के समान उडते हुए प्रतीत हो रहे थे—उषाकाल के आलोक मे वहा की भूमि, वहा के वृक्ष, वहा के पर्वत मानो सब सुप्तावस्था मे पडे थे। सर्वत्र शाति थी। वहा के वृक्ष पृथ्वी के वृक्षो से भिन्न थे क्योकि नीचे से वे बहुत अधिक मोटे थे, किसी हद तक बेडौल कहे जा सकते थे। उनकी जडे पृथ्वी की ओर लटक रही थी जिनके अग्रभाग तॉतोन के पजो की भाति थे जो किसी भी वस्तु का स्पर्श पाते ही उसे पकड लेते थे। वोल्मर के साथियो को उनसे अत्यन्त सावधान होकर चलना पड रहा था।

वोल्मर ने चारो ओर देखकर कहा, "विचित्र है यह लोक! इस सारे सौन्दर्य को जैसे मैं आज पी जाना चाहता हू।" फिर रोबर्टन की ओर वह हठात् मुडा और बोला, "चलोगे मेरे साथ मित्र?" यह प्रश्न नही था शायद आज्ञा थी क्योकि रोबर्टन सबसे छट-कर उसके साथ हो लिया।

"तुम लोग भी अपनी टोली बना लो।" वोल्मर ने बाकी लोगो से कहा, "और खूब घूमो परन्तु ध्यान रहे, यह स्थान निरापद नही दीखता, क्योकि सर्वप्रथम तो यहा के वृक्ष ही भयानक है। इसलिए मै यही कहूगा कि तुम सब लोग 'एल्साईवन्' को दृष्टि से ओझल मत होने देना।" फिर वह रोबर्टन का हाथ पकडे एक ओर चल पडा। फिर हठात् मुडा और अन्य साथियो को सबोधित करते हुए ज़ोर से चिल्ला बोला, "हा एक बात और कहे देता हू अपनी पिस्तौले भरकर तैयार रख लो। हो सकता है आगे चलकर हम लोगो का यहा के रहनेवालो अथवा यहा के हिंस्र पशुओ से मुकाबला हो जाए।"

और जब वह पहाड की ढलान पर रोबर्टन को साथ लेकर चला तो उनके पैरो के बीच वह बिना जडवाली घास इकट्ठी होने लगी। उसे ऐसा अनुभव हो रहा था मानो वही प्रथम प्राणी थे जिन्होने उस भूमि को रौदा था। परन्तु वोल्मर उतावले स्वभाव का व्यक्ति नही था अतएव उसने अपने विचार एकदम से व्यक्त नही किए।

पहाड की ढलाई अब समाप्त हो चुकी थी। अब आगे के मार्ग पर हरियाली नही थी। थोडी दूर जाने पर जो उसकी निगाह भूमि पर गई तो वह ठिठककर रुक गया। रोबर्टन ने देखा कि उसका साथी भूमि पर बने किसी चिह्न की ओर ध्यानपूर्वक देख रहा है। उसने भी देखा—वह पैर के चिह्न थे परन्तु मनुष्य के पैर के नही, वरन किसी जन्तु के पजो के चिह्न जिनमे केवल तीन उगलिया थी जो एक स्थान से तीन ओर चली गई थी। वे उगलिया काफी बडी-बडी थी। एक विचित्र प्रकार की सिहरन उनके अन्दर दौड गई। और साथ ही साथ यह जिज्ञासा भी कि देखा जाए ये किसके पग-चिह्न थे। चिह्न वैसे काफी दूर-दूर थे, जिससे प्रतीत होता था जिसके भी रहे हो, यह निश्चित था कि वह कोई बडा जन्तु था जिसके डग बडे-बडे थे।

"बीभत्स! भयानक!" रोबर्टन बोला, "यह तो किसी जन्तु के भी नही मालूम होते मेरे विचार से तो यह कोई बहुत बडा कीडा है।"

"कीडा?" वोल्मर हसा। रोबर्टन जैसे खिसिया गया। पर बोला कुछ नही।

दोनो बढ चले। वे लोग उन पग-चिह्नो के पीछे-पीछे चलने लगे। परन्तु थोडी दूर जाने के उपरात हरियाली फिर शुरू हो गई थी जिनमे वे चिह्न भी खो गए थे। एक अजीब बेबसी अब सामने आ गई। अब क्या करे? अब उन विचित्र प्राणियो की खोज कैसे हो? एक ओर कुछ अधिक हरियाली दिखाई दी। वोल्मर उस ओर चला। रोबर्टन ने अनुसरण किया। एकाएक मार्ग मे वोल्मर लडखडाया और पीछे से रोबर्टन ने देखा कि वह भूमि के अन्दर कही धसक गया था। वह भागा-भागा वहा पहुचा, परन्तु इससे पहले कि सभले वह स्वय लुढ़कता हुआ उसी गड्ढे मे जा गिरा जिसमे वोल्मर गिर गया था। वे लोग कब और किस तरह गिरे और कैसे उनके पैरो के नीचे से भूमि निकल गई यह उन्हे पता ही नही चला। अब उन लोगो ने अपने-अपको एक गड्ढे मे पडा पाया। गड्ढा करीब आठ फुट नीचा था और अन्दर से गन्दा और सीलन से भरा था जिसमे से एक विचित्र प्रकार की दुर्गन्ध आ रही थी। रोबर्टन ने फुसफुसाकर कहा, "शायद यह किसी गुफा का बीच का हिस्सा है जिसके ऊपर की भूमि धसक गई है मेरे विचार से इस गुफा मे रहनेवाला जन्तु कही सो रहा है अच्छा हो, यदि हम लोग उसके जागने के पहले ही

यहा से भाग चले !"

"ठीक कहते हो।" वोल्मर ने उसकी बात का समर्थन किया। "चलो।"

परन्तु जब वह उस गुहा के मुहाने पर पहुचे तो उन्होने देखा कि द्वार पर एक मज़बूत जाल तना हुआ था और तभी तीखी तुरहिया कहीं बज उठी जिनसे वे लोग चौंक उठे। उस लोक मे पदार्पण करने के उपरात यह पहली ध्वनि थी जो उन्होने वहा सुनी थी। और तब उन्होने गौर से देखा कि द्वार के बाहर विचित्र जीव खडे थे। उनके दो पैर थे जो बहुत ही मोटे तथा भद्दे थे। उनके हाथ भूमि तक लटक रहे थे। उनके सिर कैसे थे यह उन्हे गुहा के उस भाग मे खडे होकर दिखाई नही दिया। उनके हाथो मे एक छोटा परन्तु दृढ बनावटवाला जाल था जिसे वह गुफा के मुख पर ताने हुए थे। उस जाल के छोरो पर धातु की सी किसी वस्तु की बनी हुई दो चमकदार गेंदे थी जिन्हे वे कसकर पकडे हुए थे। बाहर से तथा उस स्थान से जहा ये लोग गिरे थे वही तीखी ध्वनि आ रही थी जो बीच-बीच मे हुकार की भाति भी सुनाई देती थी। ध्वनि निरन्तर आ रही थी जैसे कोई जान-बूझकर ऐसा कर रहा हो।

रोबर्टन ने वोल्मर के कानो मे धीरे से कहा, "हम लोग बुरे फस गए है। ये लोग इस गुफा मे रहनेवाले किसी भयानक जन्तु को पकडने के लिए ये तरह-तरह की ध्वनिया कर रहे है कि वह इन्हे सुनकर बाहर निकल आए और तब ये लोग उसे जाल मे "

"या शायद इन्होने हमे गिरते देख लिया हो।" बात काटकर वोल्मर बोला, "और यह हमे भी उस जानवर के साथ पकड लेना चाहते हो।"

"हे भगवान !" रोबर्टन फुसफुसाया। तुरहिया बजती रही और पृथ्वी के मानव भय से सास बाधे खडे रहे। उन्हे एक-एक पल पहाड लग रहा था और रह-रहकर उन्हे अपने ऊपर ग्लानि हो रही थी कि इतने सभ्य समाज के रहनेवाले वे लोग तनिक असावधानी के कारण वहा जगलियो के बीच फसे हुए अपनी जान दे रहे है। अज्ञात के भय ने उन्हे एक तरह से जडवत् भी बना दिया था। और तभी गुफा के भीतर से कही दूर अन्धकार मे से किसी भयानक जन्तु की गम्भीर दहाड सुनाई देने लगी। वोल्मर और रोबर्टन मुडकर खडे हो गए। अब शिथिलता का अर्थ मृत्यु था। उनके हाथ स्वत पिस्तौलो पर चले गए। दहाड पास आ रही थी और बाहर तुरहिया बज रही थी। मानव सन्नद्ध थे। और अन्दर दो गहरी हरी आखे दिखाई दी।

"शिकारी बाहर से ध्वनि कर रहे है—ऐसी ध्वनि जिससे शायद यह मोहित होता हो " वोल्मर ने धीरे से कहा, "और हा देखो तो इन विचित्र प्राणियो को—इनके चेहरे " परन्तु वह अपना वाक्य पूरा नही कर सका। जन्तु बिलकुल पास आ चुका था। रोबर्टन ने गोली दाग दी। वोल्मर की पिस्तौल भी चल गई। उसी समय उन्होने देखा कि ऊपर के गड्ढे मे से चमकदार भाले नीचे आए और उस बेडौल जानवर के शरीर मे घुस गए। उनके घुसते ही उसके शरीर से नीला रस-सा, जो शायद उसका रक्त था, बाहर टपकने लगा। परन्तु वह जन्तु विकट था। भाले भी झेल गया और गोलिया भी खा गया पर गिरा नही। उसने एक भयकर दहाड लगाई और अब इनकी ओर झपटा। मानवो ने फिर गोलिया दागी, परन्तु वह जैसे उनसे रुकता नही नज़र आता था। अब भय ने इनके

पेर उखाड दिए और ये गुफा से बाहर की ओर भागे। इन्होने बाहर खडे प्रहरियो के पैरो पर वार किया। गोलिया लगते ही वे लुढक गए और ये दोनो मानव बाहर निकल गए। दूसरे ही क्षण वह भीमकाय जन्तु भी उस जाल मे लिपटा हुआ बाहर आ गिरा। वोल्मर ने देखा कि बाहर विचित्र प्रकार के कोई एक दर्जन जीव खडे थे जिनके पैर मोटे, भद्दे तथा हाथ ज़मीन तक लटक रहे थे। उनके हाथो मे किसी मजबूत धातु की भाति के किसी वस्तु के बने हुए जाल थे। उनके भाले चमचमा रहे थे। वे अत्यन्त ही कुरूप थे। उनकी तीन आखे थी, दो चेहरे के दोनो ओर तो एक माथे के बीच एक उठे हुए भाग मे। वे तीनो ही गोल थी। बीच मे एक कटा हुआ सा भाग था जो शायद उनका मुख था और उसके चारो ओर मोटे-मोटे तन्तु लटक रहे थे। वे देखने मे ही बीभत्स लगते थे। उस भीमकाय जन्तु को उन्होने पलक मारते उसी जाल मे दबा लिया और भूमि पर खूटे ठोककर जड दिया। मानवो को देखकर वे तनिक भी विस्मित नही हुए और जब इन लोगो ने भागना चाहा तो उन्होने इन्हे चारो ओर से घेर लिया। हालाकि वे मोटे पैरो के थे परन्तु उनकी गति विद्युत् की भाति तीव्र थी। वे दानवाकार बलिष्ठ प्राणी थे। उन्होने पलक मारते मनुष्यो को भी जालो मे बाधकर पटक दिया। वोल्मर व रोबर्टन की पिस्तौले हाथ से छूट गई। उनकी बोली भी विचित्र थी। वे केवल ध्वनियो मे ही बोलते थे, वाक्यो मे नही। थोडी देर विचार-विमर्ष के उपरात उन्होने मानवो के पैर खोल दिए और तब एक दानव ने अपना भाला रोबटन की छाती से लगाया और आगे चलने का इशारा किया।

अब वे लोग इन्हे पकडे पर्वत के दूसरी ओर चल दिए—ठीक वहा से दूसरी दिशा की ओर जहा 'एल्साईवन्' खडा था। कुछ शिकारियो ने किसी धातु की किस्म की किसी चीज़ के बने जालो मे उस जन्तु को बाध रखा था और वे उसे घसीटे लिए चले आ रहे थे। और वे दोनो व्यक्ति, जो गुहा के मुहाने पर जाल लिए खडे थे और जिनके पैरो को पृथ्वी के मनुष्यो ने अपनी पिस्तौल की गोलियो से बीध डाला था, पीछे की ओर घिस-टते चले आ रहे थे। अद्भुत था उनका साहस तथा निस्सन्देह अपार था उनका बल, जो गोली खाकर भी चल रहे थे वे। एक बात विचित्र थी और वह यह कि उनके पैर छोटे होने पर भी वे लोग काफी तेज चल रहे थे। यहा तक कि वोल्मर और रोबर्टन को भी उनके साथ तेज़ी से कदम मिलाने पड गए।

"अब किधर ?" रोबर्टन ने मानो प्रश्न किया। फिर कहा, "अब हम दोनो स्यात इस जन्तु के साथ इकट्ठे किसी पात्र मे पकाए जाएगे और खा लिए जाएगे।"

वोल्मर ने कोई उत्तर नही दिया। थोडी देर बाद वह बोला, "मै इतनी देर से इस जाल को ही देख रहा था। यह देखो यह कितनी अच्छी बुनावट का है और कितनी सफाई से बनाया गया है। यह हमारी पृथ्वी पर पाए जानेवाले ताबे की भाति किसी धातु का बना हुआ है और बहुत मज़बूत है और वह देखो उन भालो का, जो ये लोग लिए हुए हैं—कितने चमकदार तथा मजबूत मालूम देते है मुझे तो यह शक है कि क्या यह जगली लोग इतनी अच्छी कारीगरी जानते हैं ?"

"हो सकता है।" राबर्टन ने उत्तर दिया, "कि इन्ही लोगो ने यह सब बनाई हो क्योकि इनके रूप से ही तो हम इनके बारे मे कुछ निश्चय नही कर सकते। हालाकि ये

बिलकुल जगली मालम देते है, फिर भी हो सकता है कि इनकी कोई बढी-चढी सम्यता हो और ये विज्ञान के क्षेत्र मे काफी आगे बढे हुए हो आखिर आकाश मे स्थित नाना लोको मे, जहा-जहा हम अभी तक गए है, हमारे दृष्टिकोण के अनुसार सभी लोग तो कुरूप ही मिले है, हमारे अपने हिसाब से तो हमारी पृथ्वी के लोग ही अत्यन्त सुन्दर है "

"हो सकता है।" वोल्मर ने कन्धे उचकाए फिर कहा, "पर मेरा मन न जाने क्यो कहता है कि इस लोक पर केवल यही लोग—मेरा मतलब है कि ऐसे ही लोग नही रहते, बल्कि यहा और भी किस्म के लोग रहते है।"

शिकारियो ने जैसे इन लोगो की वार्ताओ पर तनिक भी ध्यान नही दिया। वे स्वय चुपचाप चल रहे थे। बीच-बीच मे उनमे से एक-आध ही एक विचित्र प्रकार की ध्वनि निकालता था। इसी प्रकार वे लोग जाने कितने मील चलते रहे—बडे-बडे मैदान, जिनमे वही बिना जडवाली हरियाली फैली हुई थी—पहाड तथा डोलोमाईट की खाने—सब रास्ते मे आई और निकल गई पर जैसे उनका मार्ग अभी समाप्त नही हुआ था। अब वे लोग 'एल्साईवन्' से बहुत दूर चले आए थे।

अब मार्ग उतरने लगा। ढलाव आ गया। रास्ता दोनो तरफ से घिरा हुआ था। ये लोग चलते रहे और वह जन्तु जो शायद अपनी भारी देह ढोते-ढोते थक गया था कभी-कभी डकराने लगा था। शिकारी खामोश थे। बुरी शक्ल, मोटे भद्दे पैर—वोल्मर ने उनपर से निगाहे हटा ली।

और मार्ग अब एक विशाल मैदान मे आकर समाप्त हो गया। मनुष्यो ने देखा कि वह स्थान दूर-दूर तक फैला हुआ था जिसके छोरो पर अनगढ ढेरो पत्थर खडे थे और यहा-वहा पहाड की गुफाओ के आगे तथा चोटियो तक ऊपर की तरफ चढते हुए अनगढ पत्थरो से ही बने हुए छोटे-छोटे मकान बने थे। और उस मैदान के बीचोबीच एक अडाकार चमचमाता हुआ एक विशाल घर का सा कुछ खडा था।

"वह!" उसे देखते ही रोबर्टन चिल्लाया, "वह मै शर्त लगा सकता हू किसी प्रकार का आकाश-यान है या शायद बाहरी आकाश मे चलनेवाला कोई विचित्र यान।"

"ओह!" वोल्मर मानो हताश-सा बोल उठा, "पर मै शर्त क्यो बदू ? हो सकता है वह ऐसा ही हो, पर आश्चर्य होता है कि भला कहा यह जगली और कहा आकाश-यान ?"

उस चमकदार वस्तु के चारो ओर कई लोग घूम-फिर रहे थे और जब ये लोग उनके बिलकुल पास पहुच गए तो इन्होने देखा कि वे लोग उन लोगो स बिलकुल भिन्न थे जो इन्हे पकडकर लाए थे। वैसे इन लोगो के समान वहा इर्द-गिर्द और बहुत-से थे परन्तु उस चमकदार वस्तु के पास के लोग इनसे भिन्न थे। वे लोग इनसे उतने ही भिन्न थे जितने उस लोक के प्राणी अर्थात् वे शिकारी पृथ्वी के मनुष्यो से भिन्न थे। वे लोग करीब चार फीट ऊचे थे जिनके हाथ-पाव बल खाए हुए और शरीर कोमल थे। बीच मे उनकी कटि इतनी पतली थी जैसे चीटो की होती है। उनके सिर ज़रूरत से ज़्यादा बडे थे। ऐसा लगता था मानो वे कोई शिरस्त्राण पहने हुए हो। ये लोग विचित्र-से और

अत्यन्त रग-बिरगे थे और उन भद्दे शिकारियो के मुकाबले मे अत्यन्त चटकदार दिखाई देते थे।

और वह अडाकार बडी वस्तु पास से देखने पर पता लगा कि कोई उडनेवाली वस्तु थी अर्थात् कोई आकाश-यान जैसाकि रोबर्टन ने उसे देखते ही कहा था। उसके अन्दर कई कक्ष दिखाई दे रहे थे और वह अन्दर कुछ चमकदार नीले सामानो से भरा था। उसके अडाकार मुख के अन्दर से एक हलकी सीढी-सी लटकी हुई दिखाई दे रही थी। प्रत्यक्ष था कि अन्दर जाने का रास्ता वही होकर था—और यह भी कि वह उडते समय ऊपर उठा ली जाती हो। वोल्मर तथा उसके साथी ने देखा कि वह कुरूप दानव अपने कर्कश स्वर मे उन चटकीले बौनो से बाते कर रहे थे घुल-मिलकर। बौनो की आवाज उनसे कितनी भिन्न थी क्योकि वे काफी पैनी आवाज़ मे बोल रहे थे। फिर दानवो ने अपने तमाम बाधकर लाए हुए जतुओ को, जो जालो मे बधे पडे थे, एक तरफ ला-लाकर पटक दिया, जिन्हे देखकर बौनो ने उस आकाश-यान मे से नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्र निकाले और उन्हे लाकर दूसरी तरफ ढेर लगा दिया। पृथ्वी के मनुष्यो को समझते देर नही लगी कि सौदा हो रहा था।

"मैने क्या कहा था पहले ही?" वोल्मर चिल्लाया, "मैं जानता था कि इन जाल तथा अस्त्रो के बनानेवाले कोई और ही है मुझे तो अब एक और शक हो रहा है और शायद मेरा भ्रम पक्का ही हो क्योकि ये बौने इस लोक के निवासी नही मालूम देते—सम्भव है कि यह यहा के सूर्य के किसी अन्य ग्रह के निवासी हो और यह भी कि यह जो बौने दिख रहे हैं जन्तु विशेषज्ञ हो जो इस लोक से विभिन्न प्रकार के जन्तुओ को क्रय करके ले जाते हो और अपने यहा उन्हे चिडियाघरो मे प्रदर्शित करते हो और यह जो इनके सिर इतने बडे दिखाई देते हैं यह वास्तविकता मे शिरस्त्राण हो क्योकि यह भी हो सकता है कि हमारी भाति यह लोग भी यहा के वायुमडल मे जीवित न रह सकते हो।

अब बौने अन्य जन्तुओ को देखते-देखते मनुष्यो के सम्मुख आ गए थे। मनुष्यो को देखकर वे लोग अति विस्मित दिख रहे थे। वे लोग कुछ देर तक इन्हे देखते रहे। तत्पश्चात् आपस मे काफी उतावलेपन के साथ बहस करने लगे—उसी अपनी विचित्र ध्वनि मे जिसमे कि वे लोग बोलते थे। उनकी मुद्राओ, अगचालन तथा हाथो के हिलाने से पता चलता था कि वे लोग गर्मागर्मी साथ के मनुष्यो के बारे मे ही कोई बहस कर रहे थे। और मनुष्यो ने तब देखा कि उनके चार-चार आखे थी—दो एक तरफ ऊपर-नीचे तो इसी प्रकार दो दूसरी तरफ। और वे आखे हरी चमकदार थी। उनके पलक नही चलते थे और उनका स्थिर दृष्टि भयानक लगती थी। प्रत्येक नेत्र अन्दर से मानो सैकडो टुकडो मे विभाजित था जैसे पृथ्वी पर कीटाणुओ की आखें विभाजित होती है। आखो के तनिक नीचे की ओर एक पोली-सी उठी हुई नली थी जो शायद उनका मुख हो, और ऊपर की ओर दो सीग-से उगे हुए थे जो शायद उनके कान हो। बाकी उनका शरीर एकदम नगा था—धड और हाथ-पैर और उनका रग ऐसा था जैसे किसी दीपक के रग-बिरगे चटकदार कीडे का।

कुछ क्षण बौनो ने फिर मनुष्यो को खामोश निगाहो से घूरा, फिर आपस मे उसी

प्रकार बहस करने लगे। शायद वे उनके बारे मे कुछ निश्चय करना चाहते थे।

"यह हमे भी इस लोक का कोई जन्तु समझ रहे है। मैं निश्चयात्मक रूप से कह सकता हू।" वोल्मर ने अनुमान लगाया।

"और वह देखो कप्तान वे हमे भी मोल लेने की बात कर रहे है। वह देखो वे शिकारी भी शायद पूरा मूल्य चाह रहे है " और वह तनिक हसा। उस कठिन परिस्थिति मे भी रोबर्टन ने अपना विनोदपूर्ण व्यवहार नही छोडा था। वोल्मर अवश्य गम्भीर हो गया था।

और रोबर्टन का अनुमान सत्य निकला। थोडी ही देर बाद बौने अपने यान के अदर से कुछ सामान और लाए, कुछ विचित्र अस्त्र तथा औज़ार। उनमे कुछ घण्टेनुमा और घडे-नुमा पात्र भी थे जो शायद मिट्टी के बने हुए थे। उन सबका मूल्य आकना पृथ्वी के मनुष्यो की समझ के बाहर था, परन्तु उन भद्दे दानवो ने उस ढेरी के पास जाकर उन वस्तुओ का मूल्य आकना प्रारम्भ कर दिया। थोडी देर बाद दानव ने कुछ ध्वनि निकाली और इशारे किए। बौनों ने एक बार सिर हिलाया, जिसपर दानव उस ढेरी के पास से हटने लगे। साफ दिखाई देता था कि दानव उन लोगो का अधिक मूल्य माग रहे थे और बौने अधिक वस्तुए दे नही रहे थे। इसी भाति मोल-तोल थोडी देर और होता रहा परन्तु अत मे बौनो ने और उसी प्रकार का सामान बाहर निकालकर एक और ढेर लगा दिया और वे दानवो के उत्तर की बाट जोहने लगे। दानवो ने वह सामान उठा लिया। सौदा पक्का हो गया।

वोल्मर ने भी उस विचित्र परिस्थिति मे मुस्कराकर कहा, "बिक गए हम लोग।"

"अब देखो नया मालिक।" रोबर्टन मुस्कराया।

तत्पश्चात् उस बडे घायल जन्तु की जाच की गई जिसे वोल्मर और रोबर्टन के साथ लाया गया था। बौनो ने उसके घावो को देखकर उसे लेने से इन्कार कर दिया। इसी भाति कई जानवर उन्होने नही लिए। अब सौदा समाप्त हो गया था। दानव अन-बिके जानवरो को तथा प्राप्त मूल्य को लेकर अपने घरो की ओर बढने लगे।

रोबर्टन ने अब देखा कि उनके साथ-साथ तरह-तरह के अन्य जानवर भी बौनो ने मोल लिए थे—विचित्र सर्प, मानवो की भाति खडे होनेवाले और उतने ही बडे कीडे, दीर्घाकाय छिपकलिया और कुछ ऐसे जन्तु जिनका रूप तथा जिनकी सूरत मनुष्यो के लिए एकदम नई थी। न जाने क्या-क्या थे वे सब! किसीके भयानक जबडे बाहर लटके हुए थे जिनपर पैने-पैने दात मानो बाहर से ही जडे हुए हो, तो किसीके मुख के चारो ओर मोटे-मोटे तन्तु लटक रहे थे।

"समझ मे नही आता कि इन भारी तथा भयानक जन्तुओ को ये बौने ले किस तरह जाएगे।" वोल्मर ने प्रश्नवाचक वाक्य मानो स्वय से कहा और मानो उसीके उत्तर मे उसी समय आकाश-यान मे से धातु की सी वस्तु की बनी हुई कुछ रस्सिया नीचे लट-काई गईं जो काफी मोटी और मज़बूत थी। जब वह नीचे गिरा दी गईं तो उनके पीछे से दो बौने और उतरे जिनके हाथो मे धातु जैसी वस्तु के हो बने हुए लम्बे-लम्बे डडे थे जो कुछ नीलापन लिए हुए थे तथा जिनके किनारो पर दो तश्तरिया-सी लगी थी जो धारदार

नथा चमकदार थी। उनसे उन बौनो ने प्रत्येक जानवर की रीढ की हड्डी छूनी शुरू कर दी। वे उसे पीठ से छुलाते तथा एकदम हटा लेते। जिसके वे उसे छुलाते वह बेहोश होकर फौरन गिर पडता। क्रिया बहुत ही आसान तथा तुरन्त असर दिखानेवाली थी। इधर जानवर बेहोश होकर गिरता, उधर दूसरे बौने उसे उन रस्सो से बाध देते और एक झटका देते जिसके साथ ही आकाश-यान मे वह स्वत ऊपर खिच जाते—इतनी आसानी से जैसे उनमे कुछ वज़न ही न हो। वे निश्चय ही किसी क्रेननुमा वस्तु के द्वारा ऊपर खीच लिए जाते थे। जब सब जानवर चढा दिए तब वही दो बौने वोल्मर तथा रोबर्टन की ओर बढे।

"माड्डाला।" वोल्मर चिल्लाया, "अब तो सचमुच ही हमारा नम्बर आ गया। रोबर्टन भागो। करो इन लोगो पर हमला, अन्यथा "

वह कह ही रहा था कि रोबर्टन ने उन दोनो पर हमला किया। धक्के से वे लोग पीछे हट गए परन्तु तुरन्त बाकी बौनो ने उन्हे घेर लिया और इससे पहले कि ये उनपर एक बार मिलकर फिर टूटे, दो बौनो ने विद्युत् गति से बढकर इनके शरीरो से अपने वही डडे स्पर्श करा दिए। वोल्मर की छाती पर तथा रोबर्टन के पेट पर उनका स्पर्श हुआ और जैसाकि ये सोचे हुए थे कि बिजली का सा झटका लगेगा ऐसा कुछ नही हुआ, बल्कि इनपर एक प्रकार की बेहोशी चढने लगी उसी प्रकार जैसे क्लोरोफार्म या किसी बेहोश करनेवाली ओषधि का असर होता है। आखो के सामने अन्धकार आने लगा। प्रज्ञा लुप्त होने लगी और वे लोग बेहोश होकर गिर पडे।

जब रोबर्टन की आखे खुली तो उसने देखा कि वह हलके नीले प्रकाश मे नीचे पडा हुआ है। उसका मस्तिष्क अभी काम नही करने लगा था। उसने आश्चर्य से सुना मानो बहुत दूर कही ऊपर गम्भीर घोष हो रहा है—ऐसा घोष जो निरन्तर चालू है। उसने सोचा क्या यह घोष सदा से ऐसा ही होता आया है और क्या वह उसे अनन्तकाल से सुन रहा है। उसकी प्रज्ञा तब लौटले लगी और उसने सोचा, 'मैं, तो, वोल्मर हा वोल्मर ** पर वोल्मर कहा है ?' और उसने मुडकर देखा, बगल मे ही वोल्मर अभी बेहोश पडा था। उसकी विचारधारा फिर चल पडी, "हा तो हम दोनो वहा उस लोक मे बेहोश कर दिए गए थे अच्छा ठीक है फिर शायद हम दोनो को उस आकाश-यान मे उन बौनो ने खीच लिया था। ठीक है, ठीक है। और यह जो गम्भीर घोष हो रहा है यह शायद इस आकाश-यान की मशीनें हैं। तो हम उड रहे हैं ? ' उसने स्वय से प्रश्न किया। उसने देखा कि वह जिस स्थान पर बधा था वह एक पिंजडानुमा कमरा था जो किसी पारदर्शी वस्तु का बना हुआ था जिसके बाहर मोटी तथा मज़बूत धातु की सी सलाखें कसी थी। उसने गौर से देखा उसी प्रकार के कई कक्ष पास-पास बने हुए थे जिनमे कही तो कोई जानवर अभी बेहोश पडा था, तो कही कोई चहल-पहल कर रहा था और अब रोबर्टन को सारी बाते याद आ गईं। उसने निगाहे दौडाई। उसने देखा बाहर गहन अधकार था। दूर कही-कही नक्षत्र-लोक भयानकता से चमक रहे थे। किन्ही-किन्ही मे से तो मीलो लम्बी अग्नि की लपटें निकल रही थी। वह बडबडाने लगा, 'तो हम इस

समय शून्य मे यात्रा कर रहे है। बाहरी आकाश से भी परे ’

तभी वोल्मर ने आखें खोल दी और वह बोल उठा, “रोबर्टन हम कहा है ?”

“कहा हैं, यह सही-सही तो नही बता सकता परन्तु लगता ऐसा है कि इस समय हम कही बाहरी आकाश मे यात्रा कर रहे है। उन्ही बौनो के साथ, उन्हीके उस विचित्र यान मे और यह भी कि अब हमे यह लोग अपने लोक मे ले जाकर किसी अजायबघर मे अथवा ज़िदा रहे आए तो चिडियाघर या जतुघर मे रख देगे जिससे हम जैसे विचित्र प्राणियो को वहा के लोग देख-देखकर खुश हुआ करे मेरे ख्याल से जहा हम जा रहे है—यह भी उसी सूर्य का कोई ग्रह है जिसका ग्रह वह था जहा हम ‘एल्साईवन्’ पर से उतरे थे आह ‘एल्साईवन्’ ! हाय रे दुर्भाग्य हम कहा फस गए !” उसके स्वर मे दु ख की छाप थी।

“निश्चय ही समय बहुत भयानक है !” वोल्मर ने उत्तर दिया और दीर्घ श्वास छोडा, “मुझे तो अब चिन्ता इस बात की है कि अब हमारे खाने-पीने तथा सास लेने का प्रश्न जटिल हो जाएगा। खैर, यहा से भाग निकलने या बचने का तो प्रश्न ही नही उठता हमारे सास लेने के शिरस्त्राणो मे जिनमे केवल बारह घटो के लिए पर्याप्त मात्रा मे ऑक्सीजन भरी हुई थी, अब जाने कितनी कम मात्रा मे वही गैस रही हो। हमे यह भी तो पता नही है कि हमे ‘एल्साईवन्’ छोडे कितनी देर हो गई है। ”

रोबर्टन ने चारो तरफ घूमकर देखा। उसे एक मुडी हुई धातु की नली दिखाई दी जो एक ओर जडी हुई थी। उसने उसके मुह पर हाथ रखा तो उसे पता लगा कि उसमे से कोई गैस निरन्तर उस कमरे मे आ रही थी। उसने कुछ सोचकर कहा, “हमारे पिंजडे की भाति निश्चय ही दूसरे पिंजडो मे भी यही गैस भेजी जा रही होगी और यह गैस वह है जो उस लोक के प्राणियो के लिए आवश्यक है जहा से हम अब आ रहे है क्योकि बौनो ने हमे तथा उन जानवरो को आखिर उसी स्थान से तो खरीदा था फिर वे लोग हमे भी वही के जानवर समझे तो उनका क्या दोष।”

और फिर उन दोनो ने देखा कि पारदर्शी दीवार के बाहर पाच बौने आकर खडे हो गए थे और इन लोगो को गौर से देख रहे थे। उन लोगो के हाथो मे कुछ पात्र थे जिनमे किन्ही मे तो पानी की भाति कुछ भरा था तथा कुछ मे कुछ विचित्र प्रकार का सामान भरा था जो शायद कुछ खाने के लिए था। बौनो ने जाने किस विधि से उस एकदम जुडी हुई दीवार मे मार्ग बनाया और सावधानी से वह खाने तथा पीने का सामान अन्दर रख दिया। जिस हाथ ने वह सब अन्दर रखा था वह भी सचमुच का हाथ नही था बल्कि कोई यन्त्र था। रोबर्टन तथा वोल्मर ने देखा कि इसी भाति प्रत्येक जानवर के पिंजडे मे भोजन-सामग्री रख दी गई। फिर तुरन्त वे द्वार उसी भाति बन्द कर दिए गए। बौने बाहर चुपचाप खडे होकर देखने लगे।

रोबर्टन ने वोल्मर को दिखाते हुए कहा, “वह देखो हमे यह लोग देख रहे है कि हम इनका दिया हुआ भोजन खाते हैं या नहीं। खाना भी तो यह उसी लोक के रहनेवालो लायक होगा जहा से हम इस समय लाए गए हैं और वह देखो कप्तान, अब इन लोगो के सिर कितने छोटे दिखाई दे रहे हैं तो गोया वह इनके शिरस्त्राण थे। ठीक ! ”

और वोल्मर ने भी देखा कि रोबर्टन सत्य कह रहा था। अब उन लोगो के सिरो पर वह बडे-बडे शिरस्त्राण नही थे। उनकी आखे बडी-बडी थी तथा चेहरे के बीच मे कुछ तन्तु से लगे हुए थे। वह सब उनके शरीर के अनुसार ही कोमल तथा छोटे-छोटे ही थे। जब उन्होने देखा कि वोल्मर और रोबर्टन ने उनका दिया हुआ भोजन छुआ भी नही तो वे लोग आपस मे फिर बहस-सी करने लग गए।

"मैं तो भूख व प्यास से मरा।" रोबर्टन चिल्लाया। "लेकिन गैस का शिरस्त्राण चढाए भला मै खाऊ कैसे ? यह भी मान लिया कि जो कुछ दिया गया है वह मनुष्यो के खाने योग्य वस्तु नही है, फिर भी शिरस्त्राण तो उसे भी खाने के लिए उतारना ही पडेगा। जो भी हो यह बौने तो इन गैस-शिरस्त्राणो को भी हमारे शरीर का भाग ही समझ रहे हो ठीक उसी प्रकार जैसे इनके बारे मे हमारी धारणा थी।" फिर स्वय सोचकर उसने कहा, "पर ये लोग है मूर्ख जो यह भी नही समझ पा रहे है कि हम भी सभ्य समाज मे रहनेवाले लोग है "

वोल्मर हसा फिर बोला, "शब्दार्थ लगाना केवल मनुष्य ही नही जानते बल्कि और लोग भी लगाते है। इन लोगो ने जब हमे इसी अवस्था मे पाया था तो भला वे क्यो न इन्हे हमारा अग ही समझते ? और खासकर जबकि वह हमे उन असभ्य लोगो के पास से लाए थे। फिर दीर्घ श्वास फेककर कहा, "काश ! इन्हे यह पता चल जाता कि इनकी तरह हम भी आकाश-यान 'एल्साईवन्' मे आए थे।"

तत्पश्चात् जब बौने चले गए तो मनुष्य अपने पिंजडे मे बहुत देर तक खामोश बैठे रहे। आकाश-यान शून्य मे उडता रहा, मशीनो का गम्भीर घोष होता रहा और समय का मानो अन्त ही नही था। वोल्मर ने देखा कि अन्य पिंजडो मे भोजन-सामग्री पर वे सभी जानवर टूटकर पडे थे, अब खा-पीकर निश्चित बैठे थे।

मनुष्यो की भूख-प्यास बढती गई। आखिर और सब्र करना असम्भव हो गया। रोबर्टन बोल उठा, "क्या कहते है कप्तान ? देखू कैसा है ?"

"चालू करो।" अनुमति देते हुए वोल्मर ने उत्तर दिया, "यदि तुम इसे खाकर बच गए तो फिर मैं भी आजमाऊगा " और वह मुस्करा दिया। उस समय उसकी मुस्कान बिलकुल फीकी थी।

रोबर्टन ने धीमे से अपना शिरस्त्राण खोल दिया और फिर एक दीर्घ श्वास खीचा। हवा बहुत भारी थी। उसने अनुभव किया—उसके फेफडे दब रहे थे। उसे खासी उठ आई। परन्तु वह सासे लेता रहा। अब और चारा भी क्या था ? फिर उसने वह पानी से भरा बडा पात्र उठाकर मुह से लगा लिया। वह जो पानी की तरह तरल पदार्थ था पास से देखने पर गहरा तथा स्वादरहित था। एक-दो घूट लेने के बाद उसने झिझकते हुए वह नीला-नीला कुछ सामान उठाकर मुह मे रख लिया। वह देखने मे एक बडे आलू के समान था। रोबर्टन ने उसमे से थोडा दातो से काट लिया। बडे बुरे स्वाद का था वह। ऊपर से कडा तथा अन्दर से स्पज की भाति पोला।

"इससे तो यह तरल पदार्थ ही भला।" कहकर फिर उसने उसी पात्र को उठाकर मुह से लगाया। अब वोल्मर ने भी अपना गैस-मास्क उतारना शुरू कर दिया। उसने

उस तरल पदार्थ को सावधानी से थोडा पिया और फिर वह खाद्य उठाकर थोडा-सा मुह मे रखा परन्तु एकदम उसे नीचे थूक दिया। फिर कहा, "हम मानवो के लिए यह भोजन ठीक नही है। इसे खाकर हम जीवित नही रह सकेगे। तुम तो जानते ही हो रोबर्टन कि प्रत्येक लोक पर मनुष्यो का भोजन नही मिलता हा तुमने अधिक तो नही खाया न इसमे से ?" उसने प्रश्न किया।

"केवल थोडा-सा निगल गया हू।" रोबर्टन ने मानो सफाई दी।

"ठीक किया।" वोल्मर ने खासते हुए कहा, "सम्भव है कि यह हम लोगो के लिए विष सिद्ध हो।"

ठीक उसी समय रोबर्टन ने बडे जोर से कराह भरी। वह बोला, "आह ! मेरे पेट मे भयानक दर्द उठ रहा है आह मै आह मै " और वह नीचे लेटकर तडपने लगा।

तबियत तो वोल्मर की भी खराब होने लगी थी, परन्तु क्योकि उसने उस पात्र मे से कुछ खाया नही था इसलिए उसने सोचा कि शायद उस तरल पदार्थ तथा उस नई हवा के कारण उसकी वैसी हालत हो गई हो।

परन्तु रोबर्टन की हालत बिगडती गई। वह भूमि पर तडपने लगा। उसके मुह से झाग निकलने लगी। उसके पेट मे ऐसी मरोडे उठ रही थी कि वह स्वय बल खा जाता था और रह-रहकर पीडा से चिल्लाता था। वोल्मर यह सब देख रहा था। उसके हृदय मे दु ख उमड रहा था परन्तु बिना ओषधियो तथा अन्य साधनो के वह कितना असहाय बना बैठा था।

और इसी प्रकार दो घटे निकल गए। रोबर्टन की तडपन पराकाष्ठा को पार कर गई थी। वोल्मर खोया-खोया बैठा था और अपने साथी को मरता देख रहा था—असहाय, निरीह। मानो वह स्वय जडवत् हो गया था। वह इतना तल्लीन तथा खोया हुआ बैठा था कि उसे पता ही न चला कि कब से दो बौने आकर उन्हे देख रहे थे। वोल्मर ने देखा कि वह आश्चर्य-मुद्रा मे इनकी ओर देख रहे थे। वोल्मर को एकदम ध्यान आया कि वे इस समय उन्हे गैस-मास्क रहित चेहरे मे देख रहे थे जिससे उनका आश्चर्यचकित होना अवश्यम्भावी ही था। दोनो बौने हटे और चले गए, परन्तु शीघ्र लौटे तो उनके साथ अन्य कई भी थे। उन लोगो ने आकर पिजडे को चारो ओर से घेर लिया और अब इन्हे देखकर ज़ोरदार बहस कर रहे थे। परन्तु वोल्मर का ध्यान उस समय उनकी ओर अधिक नही जा पाया, क्योकि रोबर्टन की हालत बिगडती जा रही थी और वह स्वय भी शायद उस हवा के कारण बहुत ही अस्वस्थ हो रहा था। उसका सिर एकदम भारी हो रहा था और अग-प्रत्यग शिथिलता का अनुभव कर रहे थे। तभी एक स्थान से उस पारदर्शक दीवार मे एक मार्ग बना और एक के बाद एक करक तीन बौने अन्दर कूदे। उनके हाथो मे वही लम्बे डडे थे। उन्होने तीव्र गति से बढकर उन्हे दोनो के शरीरो से छुला दिया। वोल्मर बेहोश हो गया और रोबर्टन के लिए मानो उस असह्य पीडा से छुटकारा मिल गया।

और अब की बार जब वे दोनो मनुष्य बारी-बारी से होश मे आए तो उन्होने

अपने-आपको पहले से कही अधिक विचित्र परिस्थिति मे पाया। यह तो स्पष्ट था कि अब वे उस शून्य-यान मे नही थे क्योकि जिस कक्ष मे वे उस समय लेटे हुए थे वह काफी बडा था जिसकी दीवारे, छत व फर्श, चिकने एलाबास्टर नुमा किसी वस्तु के बने हुए थे जो कि चमकदार तथा बहुत ही लुभावने लग रहे थे। उस कक्ष मे कई अडाकार वातायन भी थे जिनमे से बाहर का चटकीला नीलाकाश दिखाई दे रहा था। उनमे से ऊची-ऊची दीर्घाकार इमारतो के ऊपरी भाग भी दिखाई दे रहे थे जिससे यह लगता था कि जहा ये उस समय थे वह शायद किसी बडी इमारत का ऊपरी हिस्सा था। वातावरण भला लग रहा था। वे उस समय बडे-बडे पलगो पर लेट रहे थे जिनपर बहुमूल्य लाल तथा केसरिया रग के गुदगुदे वस्त्र बिछे थे तथा वे पलग भी सिर की ओर तनिक ऊचे थे। कक्ष नाना प्रकार की छोटी-बडी मेजो से सजा हुआ था जिनके पैर पतले तथा मकडी के पैरो जैसे थे। कमरे मे अनेकानेक रूप की शीशिया रखी थी जो शायद किसी अज्ञातलोक मे वहा के वैज्ञानिक काम मे लाते हो। वोल्मर तथा रोबर्टन के अतिरिक्त उस समय कमरे मे कोई नही था।

इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यह थी कि उन्होने अपने-आपको आशा के बिलकुल विपरीत भली-चगी हालत मे पाया था। कहा तो वे यह सोच रहे थे कि बिना हवा, पानी तथा भोजन के उन्हे मरना होगा और कहा अब यह हालत थी कि उन्हे भूख-प्यास कुछ भी यहा नही लग रही थी और हवा भी बिलकुल ठीक ऑक्सीजस मिली हुई श्वास के साथ खीच रहे थे। वोल्मर ने सिर मे हाथ लगाकर कहा, "आश्चर्य ! यह हमारे गैस-मास्क फिर हमारे किसने चढा दिए ?"

ऐसा लगता था मानो उनकी बेहोशी के समय उन बौनो ने उनके गैस-मास्क फिर उसी प्रकार की हवा से भर दिए थे। रोबर्टन, जो अब बिलकुल ठीक था, अगडाई लेकर बोला, "क्या तुम ठीक हो कप्तान ?" और फिर स्वय ही उत्तर मे बोल उठा, "मेरा अपना तो यह हाल है कि शायद जीवन-भर मे आज का सा आनन्द अनुभव नही किया है। पर समझ मे नही आ रहा है कि इतना आनन्द कैसे आ रहा है ! जहा तक याद आता है हम तो उस आकाश-यान मे थे न ? जहा मेरे पेट मे भयानक पीडा उठी थी।"

यह प्रश्न भी नही था, न विवरण, पर मानो स्वत एक प्रकार का भाव था जो उसने व्यक्त किया। वोल्मर बोला, "अब हम लोग उस यान मे नही हैं, बल्कि जिन्होने हमे पकड रखा है, शायद उन्हीके लोक मे हम आ पहुचे है। बाकी बातें सब साफ है। जब उन्होने हमे गैस-मास्क उतारते देख लिया तो वे समझ गए कि हम भी कोई सभ्य लोग थे अतएव उन्होने हमारे मास्को मे बची गैस का विश्लेषण करके उन्हे पुन उसी प्रकार की गैसो से भर दिया और अब शायद वे लोग हमसे अच्छा बर्ताव करे।"

"रही मेरी बात।" रोबर्टन हसा, "मैं तो एकदम ठीक हू। मालूम होता है कम्बख्तो ने इजेक्शन द्वारा हमारे शरीरो मे खाने-पीने की मात्रा पहुचा दी है—उस समय जबकि हम लोग बेहोश थे।"

उन्हे बातो मे पता भी न चला कि उनके पास कब तीन बौने आकर खडे हुए थे। यह पहलो से अधिक ऊचे तथा अधिकार मे भी कुछ अधिक मालूम देते थे। इनकी मूछे

तथा ततू भी पहलेवालो से नर्म मालूम होती थी और इनका रग गहरा लाल, नारगी तथा हलका नीला मिश्रित था। अजीब से झटके के साथ वे इनसे कुछ कहने लगे। उन्होने जो भी कहा हो वह मानव-कर्णों द्वारा सुना व समझा नही जा सका। परन्तु उनके द्वारा उन्होने अपनी ओर से अभिवादन प्रदर्शित किया जिसका उत्तर मनुष्यो ने भी भरसक सभ्यता के साथ खडे होकर दिया। तत्पश्चात् उन लोगो ने मनुष्यो की बाहो को अपनी पतली उगलियो से पकडकर उन्हे एक ओर, जहा बडा-सा द्वार था, चलने का इशारा किया। इसपर वे दोनो स्वय उठकर उनके साथ चल दिए। जैसे द्वार पार किया कि पृथ्वी के मनुष्य ठिठककर खडे हो गए। उन्होने जो कुछ देखा उससे वे घबरा उठे और उन्हे चक्कर सा आ गया। वे लोग एक गोख मे खडे थे जिसके किनारो पर कोई डौली या सहारा नही था और जहा ये खडे थे वह स्थान नीचे के तल से कम से कम आधा मील ऊचा था। नीचे देखते भय लगता था—सारे शरीर मे चीटिंया-सी काटने लग जाती थी। नीचे उस भयानक मृत्यु के गह्वर मे एक महानगर बसा हुआ था जिसमे इसी प्रकार की दीर्घाकार विशाल इमारते खडी थी। उन्हे ऐसा लगा जैसे वे एल्प्स पर्वत की किसी भयकर सीधी चट्टान से नीचे गहनाधकार मे देख रहे हो, जहा का तल दिखाई नही दे रहा था। चारो तरफ की इमारते—सब सफेद थी और सभी मे स्थान-स्थान पर गौखे बनी हुई थी और वह ऊपर नीचे एक इमारत से दूसरी, दूसरी से तीसरी और फिर तीसरी से चौथी—इसी प्रकार पतले-पतले पुलो द्वारा मिली हुई थी। कोई-कोई इमारत तो वहा से भी इतनी ऊची थी कि उनका ऊपरी भाग स्पष्ट दिखाई नही दे रहा था। उन पुलो से ऐसा लगता था मानो किसी जाल द्वारा सब कुछ मिला हुआ था। वे पुल न जाने किस वस्तु के बने हुए थे जो अत्यन्त हलके तथा एलाबास्टर भी भाति चमकदार थे। उनके नीचे न पुल था न कोई दूसरा सहारा और कोई-कोई तो पचास-पचास गज़ मील लम्बा था।

मनुष्यो ने आश्चर्य से देखा कि वहा से बहुत नीचे तक उसी प्रकार के अन्य पुलो पर वहा के लोग कीडो की भाति आ-जा रहे थे जो नाना रगो से विचित्र लग रहे थे।

और तब तो आश्चर्य तथा भय से उनकी बोली भी बन्द हो गई जब उनका एक साथी बौना बडे इतमीनान के साथ एक पुल पर, जो वही उनके पैरो के पास से शुरू होता था, उतरने लगा और उसने उन्हे भी इशारा किया कि वे भी उसके पीछे चले आए।

"पवित्र आत्मा! हे भगवन!" रोबर्टन चीखा, "क्या हमे इस गज़-भर चौडे ढालू पुल पर चलना होगा जिसके दोनो ओर सहारे के लिए भी कुछ नही है?"

आगेवाला बौना पक्षी की भाति सधा हुआ दक्ष गति से उनर रहा था। उसके दो साथी वोल्मर और रोबर्टन के पीछे खडे थे और उनके हाथो मे वे ही बेहोश कर देने-वाले डडे थे। जैसे ही वोल्मर और रोबर्टन ने उतरने मे हिचकिचाहट दिखाई उन्होने अपने वे डडे मानो डराने को उठाए और तब मजबूर होकर वोल्मर आगे बढा। बोला, "अब तो चला ही जाए कैसा भी बुरा हो पर कम-से-कम रस्सी पर चलने से तो अच्छा ही है।"

अब वे लोग सावधानी से अपने मार्ग-दर्शक के पीछे-पीछे उतरने लगे। शून्य मे अनेक बार यात्रा करने के कारण उस भयानक ढलान से जब वे उतरे तो उन्होने नीचे की तरफ नही झाका बल्कि अपनी दृष्टि उन्होने सामनेवाली गौख मे अडा दी और साधकर

छोटे-छोटे कदम रखते हुए आगे बढने लगे। मुडकर एक बार उन्होने देखा तो उन्हे पता लगा कि जिस इमारत से वे आए थे उमसे भी अधिक ऊची तो कई और इमारते थी जो सभी सफेद थी। उनमे से कुछ के ऊपर सुँरिया बनी हुई थी और कुछ की मीनारे ही टेढी बनी हुई थी। एक स्थान पर उन्हे छत पर बहुत-मे चमकदार आकाश-यान इकट्ठे दिखे। यह शायद उनके रखने का अथवा उतारने का स्थान था। अब वे लोग उन इमारतो के इद्रजाल मे बीचो-बीच एक स्थित गगनचुम्बी अट्टालिका मे पहुच चुके थे। बडे-बडे घुमावदार कक्षो मे होकर इन्हे अब आगे ले जाया गया। जब यह सब वे पार कर चुके तो एक ऐसे स्थान मे पहुचे जो निश्चय ही कोई बडी विज्ञानशाला थी। यह स्थान पारदर्शी वस्तु का बना हुआ था जिसमे अलग-अलग पिजडो मे नाना प्रकार के जानवर बन्द थे जिनमे से कई तो वे थे जो इनके साथ उस दानवो के लोक मे यहा लाए गए थे। वाल्मर और रोबर्टन ने देखा कि बौने उनके शरीरो से किसी विचित्र औजार के द्वारा उनका कुछ रक्त तथा उनके शरीर का थोडा रस बाहर निकाल रहे थे। कोई जानवर बेहोश कर दिया गया था, तो कोई वैसे ही खडा हुआ था। मनुष्यो ने देखा कि तरह-तरह के रगोवाले रस चपटी बोतलो मे भरे जा रहे थे। वोल्मर की तबियत मिचलाने लगी।

"तो यह बात है।" रोबर्टन चिल्लाया, "पर यह लोग भला इस जीवन-दायक रस का करते क्या है ?"

"कौन जाने !" वाल्मर ने सोचते हुए उत्तर दिया, "कि ये रस किस काम आते है या शायद इनकी दवाइया बनती हो।"

असख्य पिंजडो के बीच मे होते हुए ये लोग आगे बढ रहे थे। अन्त मे ये एक छोटे-से कमरे मे पहुचा दिए गए। अन्दर पहुचते ही घटा-ध्वनि करता हुआ वहा का द्वार बन्द हो गया। इस कमरे मे चार बौने मौजूद थे जो वहा के महान वैज्ञानिक मालूम पड रहे थे। चारो ही गैस-मास्क चढाए हुए थे। मनुष्यो से इशारे मे कहा गया कि वे अपने मास्क उतार दे। वोल्मर और रोबर्टन ने आज्ञा का पालन किया। उन्होने अब देखा कि इस कमरे मे पृथ्वी का सा वायुमण्डल बनाया गया था। तत्पश्चात् इतनी ज्यादा जाच उनके शरीरो की की गई कि मनुष्य यह भी भूल गए कि उन्हे कितनी बार नाना प्रकार के औजारो द्वारा जाचा गया। विभिन्न प्रकार की रोशनियो मे उन्हे खडा किया गया। तरह-तरह के औजारो की ध्वनिया होती रही और वे वैज्ञानिक आपस मे बहस तथा सलाह इत्यादि भी करते रहे।

और अन्त मे जाने क्या हुआ कि एकदम उनके सीनो मे कब और किस तरह दो हाथी की सूड की शक्लवाली दो सुइया घुसेड दी गईं। उन्हे तो तब पता चला जब एकदम दर्द हुआ और उन्होने देखा कि उनके जीवन का रस उसी प्रकार बाहर खीचा जा रहा था। जिस प्रकार उन जन्तुओ का रक्त बाहर खीचा गया था। दोनो को चक्कर आने लगे, और जब वे गिरने ही वाले थे कि सभाल लिए गए। नलिया सीने मे से जाने कब बाहर निकाल ली गईं, उन्हे पता भी नही चला।

अब मानवो ने देखा कि इनका रक्त जाच के हेतु चपटी गोल शीशियो मे भरा हुआ मेज़ पर रखा हुआ था। दूसरी बार ये चौक पडे क्योकि अब की बार इनके कन्धो मे

न जाने कब दो-दा सुइया घुमा दी गई और सर्प के दशो की भाति उन सुइयो के द्वारा न जाने कैसा और कितना रस इनके शरीरो मे भर दिया गया कि उसके लगते-लगते इनकी तबियत बिलकुल साफ हो गई और ये एक बार फिर अपने-आपको पूर्ण स्वस्थ समझने लग गए। न भूख, न प्यास, न कमजोरी बल्कि सब ओर से पूर्ण—यह वैसी ही हालत थी जिसमे उन्होने दूसरी बार बेहोशी से उठकर अपने-आपको पाया था।

"क्या कहने इस ओषधि के!" वोल्मर बोल उठा, "यह तो कोई अमृत मालूम देता है!"

"अगर यही तक इनकी हमारे बारे मे खोज समाप्त हो जाए तब भी भला ही समझना। कही वह नौबत न आ जाए कि ये लोग हमारे शरीरो को काटकर अन्दर से देखना चाहे। मुझे तो यह सब भयानक लग रहा है—न जाने क्यो, पर मुझे इस सबका नतीजा अच्छा नही दिख रहा है।" रोबर्टन ने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया।

बौनो ने जैसे इनकी बातो पर तनिक भी ध्यान नही दिया था और जब इनकी जाच समाप्त हुई तो इन्हे इशारा किया गया कि ये अपने कपडे और गैस-मास्क पहन ले, जब वे बाहर निकले तो इनके साथ वे जाच करनेवाले भी आए जिन्होने बाहर आते ही अपने शिर-स्त्राण उतार लिए। अब वे लोग इन्हे लेकर नीचे की मजिल मे एक बडे गोल कक्ष मे पहुचे। उनके हाथो मे इनके शरीर से निकाला हुआ रक्त उन चपटी गोल बोतलो मे था। उस बडे कक्ष मे आधे दर्जन लोग (बौने) इनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वे सब अधिकतर मकडी के पैरो जैसे पतले तथा उसी शक्ल के बने हुए पैरो के स्टूलो पर बैठे थे। वे लोग अर्ध-चन्द्राकार श्रेणी मे बैठे थे और उनमे से किसी-किसीके हाथो मे काले चमकदार दड थ जिनके छोरो से अग्नि की हरी लपटे निकल रही थी। बोल्मर ने गौर से देखा तो उनमे दो व्यक्ति ऐसे भी थे जो उन सबके मुकाबले मे उजड्ड तथा मामूली रगोवाले थे। वे लोग खडे हुए थे। सामने मेज़ पर नाना प्रकार की ओषधिया तथा औज़ारो का मानो ढेर लगा हुआ था। रोबर्टन को वह परिस्थिति आपत्तिजनक लगी। वह बोला, "तो क्या अब हमारी चीरा-फाडी होगी?"

"देखो। सब्र करो।" वोल्मर ने अदम्य साहस से उत्तर दिया। फिर वे अब बौने आपस मे सलाह इत्यादि करते रहे। केवल वे दो बौने, जो अन्य सबो से भिन्न थे और जो गवार मालूम देते थे, एक ओर खडे रहे। जब आपस मे बाते समाप्त हुई तो दो वैज्ञानिको ने लम्बी-लम्बी दो सुइया मनुष्य के रक्त से भरी और उन दोनो गवारो के पेट मे लगा दी। वे ऐसे खडे रहे जैसे उन्हे इससे कोई आपत्ति नही थी।

तत्पश्चात् वे सब वैज्ञानिक उत्सुकतापूर्वक परन्तु शात और गम्भीर भाव से बैठे उन दानो को देखने लगे।

"कुत्तो पर असर!" रोबर्टन फुसफुसाया।

वोल्मर चुप रहा और एकदम वह दोनो गवार पछाड खाकर नीचे गिर पडे और बुरी तरह चीखने-चिल्लाने लगे। उनके मुह से सर्प के समान फुफकारिया तथा विचित्र चीखे निकल रही थी। उनके शरीर नीचे गिर गए थे। उनका मुह सूज गया था, तन्तु भी सूजकर खडे हो गए थे। शायद सौ विषधरो का विष भी उनपर उतना भयकर सिद्धन

होता जितना मनुष्य का रक्त।

"मनुष्य का रक्त क्या इतना भयकर निकला ?" वोल्मर ने घबराकर कहा।

"खन !" गेबर्टन ने वाक्य पूरा किया। वह इतना भयभीत हो गया था कि आगे और बोल ही न सका।

अब उन दोनो गवार बौनो का अग-चालन शिथिल हो रहा था। कराहे भी लम्बी हो गई थी। उन्होने दो-चार हाथ और फेके और फिर शात हो गएं। वे मर गए थे।

"भयानक !" रोबटन चिल्ला उठा।

तभी बैठे हुए बौनो मे से एक उठा और उसने अपने हाथ का काला डडा, जिसके छोरो से हरी अग्नि की लपट निकल रही थी, इनकी तरफ ताना और इनकी ओर बढा। रोबर्टन आगे था। वह उसका आना देखकर घबरा उठा। यह सम्भव था कि वह बौना किसी बुरे उद्देश्य से न उठा हो, केवल जिज्ञासा के कारण ही वह उठा हो, जैसाकि बहुत बाद मे पृथ्वी के उन मनुष्यो ने अनुमान लगाया, परन्तु उस समय एक के बाद एक हुई विचित्र घटनाओ के कारण वे ऐसे डर गए थे कि उस समय उस बौने का उठना उन्हे एक आक्रमण-सा लगा और रोबर्टन ने चिल्लाकर वोल्मर को सावधान किया और वह द्वार की ओर भागा। आनेवाला बौना एक बार तो ठिठककर खडा हो गया और जब रोबर्टन ने एक मेज उठाकर उसपर फेकी तो वह अपना सतुलन खो बैठा और उसके हाथ का वह आगवाला डडा उसके हाथ से छिटककर रोबर्टन के पैरो के पास आ गिरा जिसे उसने लपककर उठा लिया। अब तक वोल्मर भी अपने साथी के पास आ चुका था। बाकी बौनो ने तब उन्हे रोकने के लिए घेरा बनाया और डडेवाले बौने आगे बढने लगे। इस समय सभी बौने उद्विग्न हो उठे थे जैसाकि उनके फुफकारने तथा पैनी आवाज़ो से पता चल रहा था। वे सब विद्युत्-गति से मानवो को पकडकर गिरा लेने के लिए आगे बढे। रोबर्टन के पास अब स्वय को तथा वोल्मर को बचाने का केवल एक ही साधन था—वह था उस विचित्र आगवाले डडे से उन बौनो पर प्रहार। पर भय यह था कि वह उस डडे की विचित्रता के बारे मे स्वय भी कुछ नही जानता था। उसने देखा कि दो बौने वैसे ही डडे लेकर आगे आ रहे थे। भयानकता से चिल्लाते हुए भीमवेग से उसने सामनेवाले बौने पर उस डडे से प्रहार किया। और उसके आश्चर्य का ठिकाना तब नही रहा जब उसने देखा कि वह डडा उस बौने के शरीर मे ऐसे घुस गया जैसे मक्खन की ढेरी मे लाल लोहा घुस जाता है। बौना वही लुढक गया। वह मर गया था और रोबर्टन अपने ही ज़ोर के कारण सतुलन खो बैठने के कारण गिरते-गिरते बचा, परन्तु उसने उस हालत मे भी उस दूसरे बौने के फेके हुए अग्नि-दड से अपने-आपको बचा लिया। उस दड को वोल्मर ने लपककर उठा लिया। अब दोनो मानवो ने क्रुद्ध होकर उन सभी बौनो का पीछा किया और अपने अपूर्व बल तथा लम्बे हाथो के कारण उन सबको उन्हीके अग्नि-दडो से मार डाला। परन्तु उन लोगो ने मरते-मरते इतना शोर मचाया कि ढेर सारे बौने न जाने कहा से वहा एकत्र हो गए। वोल्मर को साथ लेकर रोबर्टन द्वार से बाहर भागा। कई गोल तथा लम्बे कक्षो मे होकर वह दोनो भागे चले जा रहे थे और उनके पीछे आ रहे थे कम

से कम एक दर्जन बौने। मानवो के पैर बडे होने के कारण उनकी दौड तेज थी। जब वे उस विज्ञानशाला के सामने स दौडे जहा उनकी परीक्षा हुई थी तो उन्होने देखा कि उस छोटे-से कक्ष के बाहर कुछ वैज्ञानिक खाली हाथो खडे थे। और जब इन लोगो ने उनके सामने अपने डडे घुमाए तो वे चीख भारकर भागे। आगे मोड था। डडो की आग जल रही थी। वोल्मर और रोबर्टन उस समय जान पर खेल रहे थे। अब सामने ही द्वार के पास उसी प्रकार का बिना सहारेवाला पुल था और उस महानगर की वह गगनचुम्बी अट्टालिकाए थी जिनके नीचे मृत्यु का गह्वर था, वही खून को जमा देनेवाला दृश्य। परन्तु इन्हे उसी पुल पर होकर भागना था। कोई दूसरा मार्ग बचने का नही था। रोबर्टन आगे और वोल्मर पीछे अपने-अपने डडे सभाले उस पुल पर भागे। वे सीधे आगें देखते गए, पीछे बौने चले आ रहे थे।—"एक कदम गलत और बस " रोबर्टन चिल्लाया। "पर्वाह मत करो सावधान!" वोल्मर ने साहस फूका।

चारो ओर शोर हो रहा था। शायद और पुलो पर के अन्य बौने चिल्ला रहे थे परन्तु मानवो ने अपना लक्ष्य नही छोडा। मृत्यु के भय ने उन्हे अत्यन्त एकाग्रचित्त कर दिया था। तभी सामने से कुछ बौने आए। उनके हाथो मे भी उसी प्रकार के डडे थे। एक बार रोबर्टन घबराया कि अब कैसे पार पडेगी। परन्तु फिर साहस करके वह आगे झपटा और उसने सबसे आगेवाले पर वार किया। और उसे पलक मारते नीचे उस पैदा न दिखनेवाले गड्ढे मे जाने कहा गिरा दिया, दूसरा बौना घबराया। उसने नीचे अपने साथी को देखना चाहा और तभी रोबर्टन ने उसे भी वही भेज दिया। दो और थे। वे भय से उल्टे भागे, पर रोबर्टन और वोल्मर ने उनका पीछा किया और एक-एक कर दोनो को मार डाला। अब आगे का मैदान साफ था। बहुत ऊचाई पर अब यह एक इमारत मे पहुच चुके थे। वोल्मर ने मुड करके देखा—दूर बौने चले आ रहे थे।

धडकते हुए दिलो से रोबर्टन और वोल्मर ने उस विशाल इमारत मे प्रवेश किया। पहला कक्ष सूना था। ये अन्दर भागे। वहा सब सूना था। और देखा। सब सूना था। जान मे जान वापस आई। "तिनके का सहारा।" रोबर्टन फुसफुसाया, "देखो वोल्मर, क्या सूना घर मिला है!"

"ज्यादा मत बोलो," वोल्मर ने मुडकर कहा, "ऊपर चलो ऊपर जल्दी।" सामने ही सीढी थी। यह लोग लपककर ऊपर चढ गए सीढी बढती गई और ये उन-पर चढते गए। चढते-चढते जब थक गए तो रुक गए और उन्होने आहट ली सर्वत्र शाति थी अब कोई पीछा नही कर रहा था। परन्तु अभी इनका स्थान दूर था। ये चलने लगे। घटो बीत गए पर सीढिया समाप्त नही हुई।

"कम्बख्तो के पास लिफ्टनुमा कोई साधन नही है इस तरह तो इन्हे नीचे से ऊपर चढ़ते-चढते युगो बीत जाते होगे।" रोबर्टन ने हाफते हुए कहा।

"होगी जरूर कोई न कोई विधि लिफ्ट की तरह नही होगी तो किसी और भाति की होगी पर यह मकान वीरान खूब मिला और फिर इतना बडा कि इसमे छिपे हुए मनुष्य को कोई सारे जीवन भी ढूढे तो भी शायद नही मिले।" वोल्मर ने इतमीनान की सास ली।

कई घटे चलने के उपरान्त ये लोग ऊपर प्रकाश मे पहुच गए। यहा दिन का उजाला फैल रहा था। ऊपर कई छतरिया बनी हुई थी जिनमे जाने के लिए सीढिया दिखाई पड रही थी। परन्तु अब रोबर्टन और वोल्मर के पैर ऐसे भारी हो गए थे जैसे सीसे के बने हुए हो। ये दोनो थोडी देर के लिए पैर फैलाकर छत पर बैठ गए। वह स्थान जनशून्य था, ऊपर गहरा नीलाकाश था। थोडी देर बाद वोल्मर ने कहा, "चलो इस छतरी मे ही छिप जाए इस तरह खुले मे बैठना भी खतरे से खाली नही है।"

सीढिया चढकर ये ऊपर छतरी के अन्दर जब पहुचे तो इन्होने देखा कि वह स्थान नाना प्रकार के यन्त्रो तथा शीशियो से भरा पडा था तथा उसके ऊपर के गुबज मे हजारो छेद थे। इन्हे समझते देर नही लगी कि वह कोई वेधशाला थी। वहा त्रिमुखी दपण, श्वेत धातु के अर्धचन्द्राकार, गोल तथा गहराई लिए हुए नीले पारदर्शी पात्र रखे थे। भूमि चमकदार एलाबास्टर की तरह की किसी वस्तु की बनी हुई थी। बीचोबीच एक गोल गड्ढा था जो करीब छ इच नीचा था और श्वेत चमकदार धातु का बना हुआ था जिसके दो छोरो पर छत तक दो काले पतले खम्बे खडे थे। जब यह उसके अन्दर घुसे उन्हे लगा कि स्थान सुनसान तथा निरापद था परन्तु जब निगाहे जमी तो इन्होने देखा कि वहा एक वृद्ध बौना एक बडे से पात्र के बगल मे बैठा कुछ कर रहा था। उसने भी शायद उन लोगो को आते नही देखा था परन्तु जब उसे इनके आने का पता लगा तो वह भागा और तब इन लोगो ने उसका पीछा किया परन्तु वह आगे था और इनके लिए वह स्थान भी नया था। रोबटन खम्बे से टकरा गया। बौना हाथ नही आया और नीचे भाग गया।

"गजब हो गया।" वोल्मर बोल उठा, "अब यह भीड इकट्ठी कर देगा इसका बचना बुरा हुआ।"

"फिर ?" रोबर्टन बोल उठा, "नीचे जाऊ ?"

उत्तर मे नीचे से पैनी आवाजे आने लगी। मानव समझ गए कि पीछा फिर से चालू हो गया था। वोल्मर द्वार पर खडा हो गया और रोबर्टन ने उस गुम्बज मे रखी चीजो को एक तरफ समेटकर फेकने के लिए इकट्ठा कर लिया। अब जब बौने ऊपर आने लगे तो यह दोनो उन लोगो पर उन वस्तुओ को फेकने लगे तथा उन्हे उन्ही डण्डो से मारने लगे। भयानक युद्ध हो रहा था। सीढी बौनो की लाशो से ढक गई थी। कइयो के शरीर अग्निदडो से जलाए जा चुके थे और कई उन वस्तुओ की चोटो से बिखरे पडे थे।

अचानक एक भयानक शब्द हुआ और एक ओर से गुम्बज खुल गई और एकदम उसके बगल मे एक बडा-सा कमरा और खुल गया जिसमे से करीब एक दजन बौने नीचे इनकी गुम्बज मे कूदे। इनके सभी के हाथो मे विचित्र चमकदार गोले थे।

रोबटन चिल्लाया, "वेधशाला खुल गई है कप्तान। शून्ययान आ गया है, सावधान।"

परन्तु इससे अधिक कहने का अवकाश उसे नही मिला। एक बौने का फेका हुआ एक गोला भयानक शोर करता हुआ भूमि पर फटा और उसका धुआ चारो ओर फैल गया। मानवो को दिखना बन्द हो गया। जी घुटने लगा। उस धुधलके मे रोबर्टन ने देखा

कि वोल्मर नीचे गिर गया था और उसको बौनो ने घेर लिया था। वह भयानकता से चिल्लाया, "वोल्मर ! वोल्मर ! मेरे कप्तान ! !"

कोई उत्तर नही आया।

'आह ! तो कप्तान मर गया मार डाला इन कम्बख्तो ने उसे ' वह अधिक नही सोच सका। उसने झूमकर बीच मे गडे हुए डडे को पकडकर अपने-आपको गिरने से सभाला। धुआ अपना असर कर चुका था। उसे चक्कर आ रहा था और तभी न जाने क्या हुआ कि वह नीचे धसकने लगा। उसकी समझ मे नही आया, परन्तु वह तीव्र गति से नीचे जा रहा था। उसके पैरो के नीचे से भूमि नीचे दरक रही थी

उसने सोचा—तो क्या यह उस खम्बे को पकडने का नतीजा है। तब तो फिर इस बगल के काले खम्बे को पकडकर देखू क्यो नही ? जब एक नीचे ले जाता है तो दूसरा अवश्य ऊपर ले जाएगा। परन्तु क्यो जाऊ ? और वोल्मर की याद उसे हो आई। • परन्तु वह तो मर चुका ! और उसने अपने-आपको भाग्य पर छोड दिया। वह नीचे धसकता गया, धसकता गया।

जब वह नीचे उतरा उस समय तक वह होश मे आ चुका था। नीचे जहा वह सफेद पत्थर, जिसपर वह खडा था, रुका, वहा भयानक रोर उठ रही थी। ऐसा लगता था, जैसे महासमुद्र मथा जा रहा हो। परन्तु थोडी ही देर मे उसे पता चल गया कि वह भीमकाय-मशीने थी, नाना प्रकार के यत्र थे जो अथक चल रहे थे। शायद यह उस महानगर के नीचे पृथ्वी के गर्भ के अन्दर स्थित थे। जहा सम्पूर्ण महानगर के लिए विद्युत्-शक्ति पैदा होती थी और यही नही बल्कि यही वहा के विज्ञान का ऊष्मी-केन्द्र था। रोबर्टन ने देखा—वहा रोशनी बहुत कम थी। कही-कही प्रकाश था, अन्य स्थानो मे अन्धकार था। वह मशीनो के पीछे लुकता-छिपता आगे बढा। उसे अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया था। जब थोडी ही देर पहले उसने वोल्मर से कहा था, 'इन कम्बख्तो के यहा लिफ्टनुमा कोई यन्त्र नही है ' तब वह मन ही मन विज्ञान की उस उन्नति की प्रशसा किए बिना नही रह सका। थोडी दूर जाने के बाद जो कुछ उसने देखा उससे उसकी रीढ की हड्डी काप गई। उसने देखा उन भीम-यन्त्रो के चालक बौने नही थे बल्कि भीमकाय राक्षस थे। यहा-वहा दो-चार बौने दिखाई पड रहे थे जो कुछ आज्ञा-सी दे रहे थे, काम केवल वह भीमकाय दानव ही कर रहे थे। रोबर्टन को समझते देर नही लगी कि अपने विज्ञान बल से इन बौनो ने उन दानवो को दासता मे बाध लिया होगा और अब उन्ही लोगो से मेहनत का काम कराते हैं। वह बढने लगा, परन्तु वह अधिक छिप नही सका। एक बौने ने उसे देख लिया। उसने दानव की ओर इगित किया। दानव भागा। देखकर रोबर्टन प्राणो को लेकर भागा। आगे एक पहाड-सा यन्त्र था। रोबर्टन ने उसके दो चक्कर लगाए। देखा कि दानव मूर्ख था। सोचा, उस विकट परिस्थिति मे भी, मूर्ख है तभी तो दासता स्वीकार कर रखी है। दानव यन्त्र के चक्कर लगाता रहा। रोबर्टन आगे चकमा देकर निकल गया। आगे एक द्वार था। बेधडक वह उसके पार चला गया। आगे सहस्रो मोटे-पतले नल लगे थे जिनके एक ओर कुप्पी-सी लगी हुई थी। यह शायद उस महानगर

का जल-यन्त्र केन्द्र था। वह बढता गया। यहा हलका प्रकाश फैल रहा था। पीछे भयानक कोलाहल हो रहा था। वह भागा। सामने दूर कुछ चमक रहा था। वह उसी तरफ चला। जब पचास कदम रह गए तो देखा, यह दूसरा इजन-घर था। एक बहुत ही बडी भट्टी के सामने बैठा हुआ एक दानव कुछ कर रहा था। वह उस तरफ नही गया। बगल की तरफ चला। आगे छत से सहस्रो रस्सिया लटक रही थी। वह उनके बीच बढता गया। जब बीच मे पहुचा तो रस्सिया उससे लिपटने लग गई। उसने उन्हे झटका दिया। वे झूल गई परन्तु फिर लिपट गई। अब की पकड पहले से अधिक थी। वह उन्हे हटाता रहा। वे उसके लिपटती रही। न जाने वह किससे लड रहा था। अध-प्रज्ञावस्था मे वह लड रहा था। अब उसके हाथ ढीले-ढीले चलने लगे। रस्सियो ने उसे साध लिया। नीचे गिरने नही दिया। वह बेहोश हो चुका था।

जब रोबर्टन को होश आया, उसने देखा कि उसके हाथ-पैर बधे हुए थे और उसका अग-प्रत्यग टूट रहा था। वह जैसे गहरी नीद से उठा था। उसने देखा कि वह एक चबूतरे पर बाध दिया गया था। कितना बडा था वह चबूतरा, यह तो वह नही जान सका पर इतना जरूर वह जान गया कि वह भूमि से एक फुट ऊचा अवश्य था। उसने देखा कि वह चमकदार था। शायद किसी धातु का बना था। सामने सिर झुकाए बहुत-से रग-बिरगे शरीरोवाले बौने चुपचाप खडे थे। रोबटन को याद आया किस तरह वह रस्सो द्वारा पकडा गया था और किस प्रकार उसने तथा उसके साथी ने बौनो का ध्वस किया था। वोल्मर की याद आते ही उसका दिल बैठने लगा। क्या करेगा अब वह अकेला जीकर और वह भी उस विचित्र लोक मे जो शून्य मे जाने कहा स्थित था। उसकी पृथ्वी प्यारी पृथ्वी से जाने कितनी दूर फिर उसे याद आए वे सब साथी जो पीछे उस दानवो के लोक मे छट गए 'एल्साईवत्' उसके मुह से निकल पडा और उसने गर्दन झुका ली। फिर वह स्वत बडबडाया—'सब कुछ समाप्त हो गया सब खत्म हो गया।'

और उसकी गर्दन एक तरफ को झुक गई परन्तु ऐसा करने मे उसकी दृष्टि बगल की ओर चली गई। देखा कि ठीक जैसे वह बधा हुआ था वैसे ही बधा हुआ बगल मे वोल्मर था रोबर्टन ने दो-चार पलक झपकाई, फिर कहा, "कौन कप्तान ? तो क्या तुम जीवित हो ? तुम्हे तो उन बौनो ने मार डाला था न ?"

परन्तु वोल्मर नही बोला।

"ठीक है।" रोबर्टन बोला, "मरा ही सही है तो मेरे ही पास मेरा मित्र मेरा प्यारा मित्र।" और उसने आखे बन्द कर ली। उसने सोचा, 'तो अब क्या होना बाकी है क्यो नही यह बौने अब मुझे भी मारकर किस्सा खत्म करते ? अब भला बाकी भी क्या है ?'

कि तभी किसी ओर से एक बटन दबाया गया। स्पष्ट क्लिक का शब्द हुआ। रोबर्टन ने आखे खोली—देखा कि बौने चारो ओर से कितने विवश-से देख रहे थे।

तभी कही दूर तोप-सी छूटी। सीटी बजी और जिस धातु के चबूतरे पर वह चमडे के बन्धनो से बधा पडा था उसके नीचे एक वर्र्र्रर्र का अति तीव्र शब्द हुआ। रोबर्टन की समझ मे नही आया कि क्या हुआ, परन्तु पलक मारते जब वह उन मीलो ऊची

इमारतो से ऊपर उठने लगा तो वह समझ गया कि उस चबूतरे-समेत उसे तथा उसके प्रिय मित्र को उन लोगो ने ऊपर उडा दिया था। विद्युत्-गति से वह चबूतरा पलक झपकते तमाम इमारतो से ऊपर उठ गया। ऊपर भयानक आधी चल रही थी। रोबर्टन ने देखा—वोल्मर हिल रहा था। रोबर्टन हसा, फिर कराहा फिर चुप हो गया। थोडी देर बाद वोल्मर क्षीण स्वर मे बोला, "हम लोग कहा है ?"

"क्या तुम सचमुच ही जीवित हो ?" रोबर्टन ने फीकी हसी हसते हुए पूछा।

"जीवित तो हम दोनो ही दिख रहे है।" वोल्मर ने उत्तर दिया, "परन्तु यह मेरे प्रश्न का उत्तर तो नही है न ?"

"तो सुनो कप्तान।" रोबर्टन अब इतमीनान के साथ बोला, "जहा तक मै समझता हू इस समय हम किसी प्रकार के यान पर बधे हुए है जिस पर यहा के लोक का आकर्षण असर नही करता है और हमे उन लोगो ने आकाश मे यानी शून्य मे उडा दिया है उन लोगो ने शायद यह निश्चय कर लिया था कि हमे उनके लोक मे और अधिक नही रहने दिया जा सकता। परन्तु तुम जब उस मीनार मे गिर गए थे, तत्पश्चात् तुम पर क्या गुज़री ? यह तो बताओ।"

"मेरा विचार है कि हम मानवो ने उन लोगो के साथ अच्छा व्यवहार नही किया। हमारे इतने बुरे व्यवहार के बावजूद उन्होने हमे मारा नही बल्कि मजबूर होकर हमे अपने यहा से निकाल दिया। उन्हे समझने मे निश्चय ही हम लोगो से गलती हो गई। मैने जब उन लोगो का बहुत ध्वस कर दिया मै वहा की कह रहा हू जब हम उस गुम्बज मे उन लोगो से लड रहे थे—हा तो उस समय एक गोला मेरे घुटने मे आकर न जाने कहा से लगा। उसके स्पर्श से मुझपर वही असर हुआ जो उस लोक से लाते समय इन लोगो के बेहोशी करनेवाले डडो के स्पर्श से हुआ था, अर्थात् बेहोशी छाने लगी। फिर जब मेरी आखे खुली तो मैने देखा कि मै एक कोच पर पडा था तथा मेरे हाथ-पैर बधे हुए थे। थोडी देर बाद एक बौना आया और मुझे तो पता भी नही चला कि कब मेरे शरीर मे भूख-प्यास मिटानेवाली सूई लगा गया। फिर उन्होने मेरे गैसमास्क मे भी नई हवा भर दी। पूरी रात गुज़र जाने के बाद फिर आज वह मुझे यहा लाए। मैंने फिर जब हाथ-पैर चलाए तो मुझे फिर बेहोश कर दिया गया।"

"मानव बुरा होता है।" रोबर्टन ने खिन्न हृदय से कहा, "परन्तु हमने भी तो शक हो जाने के कारण वैसा व्यवहार किया था खैर"

वह धातु का डिस्क उन्हे लेकर उसी तीव्र गति से ऊपर उठ रहा था। अब आकाश अन्धकारमय हो गया था। दूर बहुत दूर नक्षत्र बहुत ही तेजी से चमक रहे थे परन्तु उनक प्रकाश फैलाने के लिए वहा वायुमडल नही था। उन्हे लगा, अब वह शीघ्र शून्य मे प्रवेशा कर जाएगे।

वोल्मर ने कहा, "मानव के कुकृत्यो का दड उन्हे अच्छा मिल रहा है, रोबर्टन अब देखो ठड बढ रही है देखो भयानक सर्दी हो गई है और शीघ्र ही हम लोग मर जाएगे और हमारी यह डिस्क एक छोटे धूमकेतु की भाति न जाने किस लोक का चक्कर सदा-सदा के लिए लगाया करेगी विदा! मेरे मित्र रोबर्टन विदा!!"

"विदा वोल्मर मेरे कप्तान मेरे मित्र ! विदा !"

और उन्होने आखे मीच ली। वे शायद और कुछ देर उस ठड का मुकाबला करते परन्तु अन्त अवश्य था। यह सोचकर उन्होने और यन्त्रणा सहना स्वीकार नही किया। मौत मीठी मौत की प्रतीक्षा वे करने लगे, सब कष्टो से मुक्ति पा जाने के लिए। लाखो सुइयो की तरह भयानक शीत उनके शरीरो को जमाने लगी।

तभी दूर कही दूर इजनो का भयानक और गम्भीर घोष सुनाई दिया पहले धीमा, फिर तेज़ और तेज़ उन लोगो ने आखे खोली। ऊपर देखा कि उनका अपना आकाश-यान 'एल्साईवन्' उनके ऊपर मडरा रहा था। उस विकट परिस्थिति मे भी उन्हे अपने उस 'एल्साईवन्' को पहचानते देर न लगी। आकाश-यान अब उनके बराबर उड रहा था उन लोगो ने अर्धतद्रा मे देखा 'एल्साईवन्' से लोहे के आकडे बाहर निकले जिन्होने इनकी डिस्क थाम ली। फिर कोई ऊपर से निकला और इनकी डिस्क पर कूदा। उसने इनके बन्धन काटे और

आधे घटे बाद वोल्मर और रोबर्टन ने अपने-आप को एक गर्म भरके हुए कमरे मे पाया।

कमरा चालीस फुट लम्बा व बीस फुट चौडा था। वह उत्तम ढग से सजा हुआ और स्वच्छ था।

ऊपर की ओर इजनो के चलने का गम्भीर घोष हो रहा था। वे लोग 'एलसाई-वन्' मे बाहरी आकाश मे यात्रा कर रहे थे।

जब इन लोगो ने ब्राण्डी पी ली तथा गर्म-गर्म भोजन कर लिया और जब इनके हाथ-पाव, तेल मालिश से, उनके साथियो ने पुन गर्म कर दिए, तब कही उन्हे होश आया।

जैस्पर ने कहा, "जब तुम लोग वापस नही आए और एक घटा बीत गया तो हम लोग परेशान हो गए और तुम्हे ढूढने निकले। तुम्हारे पदचिह्न हमे शीघ्र मिल गए और हमने फिर शीघ्र ही तुम्हारा पता लगा लिया। मार्ग मे हमे तुम्हारी पिस्तौले भी एक स्थान पर पडी मिल गई थी। परन्तु जब हम तुम्हारे पास पहुचे तो हमने देखा कि तुम्हे कोई अन्य आकाश-यान अपने साथ लिए उडाए लिए जा रहा है हमारे पास तुम्हारा पीछा करने के अतिरिक्त और कोई चारा ही न था, परन्तु इस कार्य मे भी हमे काफी देर हो गई, क्योकि जब तक हम पैदल लौटकर 'एल्साईवन्' मे उडे, तुम्हारावाला आकाश-यान काफी दूर जा चुका था, परन्तु शुक्र है कि हमने उसे अपनी दूरबीनो से देख लिया। हमने विद्युत्-गति से उसका पीछा किया और ठीक उस समय हम उस महानगर के ऊपर आ चुके थे, जब वह यान उस वेधशालावाली छत पर उतर रहा था। पूरे नौ घटे जितना देर उस लोक मे दिन रहता है हमने तुम्हारा पता लगाने की कोशिश की और अन्त मे जब तुम्हे वहा नीचे बधे देखा तो हम भी पहले ही ऊपर उड आए यह चोचकर कि मार्ग मे तुम्हे पकड लेगे ।"

जैस्पर इतना उतावला हो रहा था कि यह सब वह एक ही सास मे सुना गया।

"धन्य भाग्य !" रोबर्टन ने वोल्मर को देखा और जैस्पर को चिपटा लिया।

"ऐसे उज्ज्वल भाग्य को लेकर तो शायद हम दो-चार दूसरे नये लोक इसी यात्रा मे और देख सके।" वोल्मर हसा।

सभी प्रसन्न हो उठे थे।

आज पृथ्वी के बाहर के लोको की कल्पना विज्ञान के सहारे से साहित्य में बहुत प्रभाव डाल सकी है। कथा-साहत्यि को तो जैसे एक नया क्षेत्र मिल गया है। इसमें हमारे समाज पर व्यग्य भी होता है और कल्पना भी नये क्षितिज का स्पर्श करती है। यहा अद्‌भुत के दर्शन होते है।

ऐतिहासिक उपन्यास

वाल्टर स्कॉट :

वीर सिपाही

[आइवनहो[1]]

स्कॉट, सर वाल्टर अंग्रेजी उपन्यासकार वाल्टर स्कॉट का जन्म एडिनबरा में १५ अगस्त, १७७१ को हुआ था। आपको कानून की शिक्षा दी गई थी। आपने सफलतापूर्वक प्रैक्टिस की और अवकाश में साहित्य का सृजन किया करते थे। १७९६ में आपकी पहली पुस्तक छपी और १८१४ तक आप खूब लिखते रहे। आगे चलकर १८१९ में आपका 'आइवनहो' प्रकाशित हुआ। १८२० में आपको बैरोनेट मिली। छ वर्ष बाद आप स्वय प्रकाशक बने और फिर दिवालिया हो गए। अपने कर्जे चुकाने के लिए आप फिर लिखने लगे और दो वर्ष में आपने चालीस हजार पाउड कमाकर कर्ज चुका दिए। परन्तु इतने परिश्रम ने आपको तोड दिया और आपको लकवा मार गया। २१ सितम्बर, १८३२ को आपका एबट्सफोर्ड में देहान्त हो गया। आप कवि भी थे। किन्तु आपके ऐतिहासिक उपन्यास अधिक प्रसिद्ध है।
'आइवनहो' आपकी एक महान रचना है।

रेजरबुड का थेन सेक्सन सेड्रिक विशाल मेज के सामने बैठा हुआ था। उसकी खूबसूरत कुर्सी पर हाथीदात जडा हुआ था। कई बाते उसको बेचैन कर रही थी। नारमन दुस्साहसिक लोगो ने इग्लैंड को जीत लिया था। यह विचार उसे परेशान कर रहा था लेकिन वह महान हेरे-वर्ड का वशज था और इन गर्वीले नारमनो को सेक्सन-जाति की शाति नष्ट करने के अपराध का भयानक दण्ड देना चाहता था।

सुन्दरी रोबेना सम्राट एलफर्ड की वशज थी। आजकल वह थेन की देखभाल मे थी। इसलिए थेन यह विचार कर रहा था कि कुलीन ऐथलस्टेन से उसका विवाह कर दिया जाए और दोनो अग्रेज राजघराने इस प्रकार मिल जाए। तब सारे दु खी देशवासी उनके चारो और इकट्ठे हो जाएगे। उसने बडबडाकर कहा—ये नारमन मूर्ख है ! ये समझते है कि मै बूढा हो गया हू। लेकिन भले ही मैं अकेला और सन्तानहीन हू, फिर भी मेरे शरीर मे अब भी हेरे-वर्ड का पवित्र लहू बहता है।

और फिर उसने शोक-भरे विचारो सेअ भिभूत होकर धीमी आवाज मे कहा, "मेरा पुत्र विलफ्रिड यदि अकारण ही रोबेना के लिए इतना पागल न हो जाता तो मैं उसे किसलिए निर्वासित करता !" आज सेड्रिक अपने बुढापे मे अकेला रह गया है, मानो वह एक विशाल वृक्ष है जो नारमनो के तूफान के सामने आज बिना सहारे के रह गया है।

---

१ Ivanhoe (Walter Scott)

उसकी विचारधारा टूट गई। बाहर सिघा बज रहा था। आवाज आई, "नीचो, फाटक की ओर बढो !" प्रहरी भीतर सम्वाद लाया कि प्रायर एमर और सर ब्रायन दिवॉय गिल्बर्ट नाइट्स टेम्पलर के सेनापति रात के लिए आश्रय चाहते है।

सेड्रिक बडबडाया, 'दोनो नारमन है। लेकिन हमने सदैव अतिथियो का स्वागत किया है। रजरवुड के थेन के यहा आकर बिना स्वागत के कोई वापस नही जाएगा। "

उन दोनो को आश्रय दे दिया गया। भोज प्रारम्भ होनेवाला था। मेजर डोमो ने अपने हाथ का डडा घुमाते हुए कहा, "जगह छोड दो, कुमारी रोबेना के लिए स्थान छोड दो।"

सेड्रिक उठा और अपनी पालिता की ओर बढा। अपनी दायी ओर की ऊची कुर्सी पर उसने उसको ससम्मान बिठाया। उस सेक्सन-सुन्दरी को देखकर गिल्बर्ट का अन्तरतम विचलित हो उठा। पूर्वदेश की मलिकाओ को उसने देखा था। पर यह उन जैसी नही थी। रोबेना लम्बी और बहुत सुन्दर थी। लेकिन उसके मस्तक पर ऐसा कुलीन गौरव दिखाई देता था जो सौन्दय की चचलता को उससे बहुत दूर किए देता था। जब उसने गिल्बर्ट को अपनी ओर वासनामयी दृष्टि से देखते देखा तो मानो उसकी आखो मे अगारे दहकने लगे। और यह प्रकट करने के लिए कि वह उसकी ऐसी हरकत से घृणा करती है, उसने अपने हलके नकाब को बडे गौरव के साथ गिरा लिया। ताकि वह उसके लावण्य को फिर न देख सके।

उसी समय चषकवाहक ओस्वाल्ड अपने मालिक के कान मे फुसफुसाया, "एक और व्यक्ति आश्रय लेने के लिए बाहर खडा है और वह अपने को यॉर्क का इसाक नामक यहूदी बताता है।"

यहूदी का कोई विशेष सम्मान नही किया गया। वह एक लम्बा, पतला-दुबला बूढा था जो डरता, हिचकिचाता, अत्यन्त विनम्र-सा मेज के निचले हिस्से की तरफ आकर बैठने को हुआ। लेकिन वह बैठ नही पाया क्योकि किसीने उसके लिए स्थान नही रिक्त किया। वही चिमनी के कोने मे एक तीर्थयात्री बैठा हुआ था। उसने उस कापते हुए भूखे यहूदी को अपना स्थान दे दिया।

उन दिनो जेरूसलम की पवित्र भूमि के लिए मुसलमानो और ईसाइयो मे क्रूसेड (धर्मयुद्ध) चल रहा था। खाना खाते वक्त मेज पर क्रूसेड के बारे मे बात चल पडी। गिल्बर्ट ने कहा, "सबसे अधिक वीर टेम्पलर लोग थे। अग्रेज वीर-नायको का दर्जा पराक्रम मे उनसे नीचा था।"

हठात् तीर्थयात्री ने उसे बीच मे ही टोक दिया और कहा, "अग्रेज किसीसे भी पीछे नही है। पराक्रम मे वे सर्वश्रेष्ठ है।" और तीर्थयात्री कहने लगा कि एक बार उसने सम्राट रिचार्ड और उनके पीछे अग्रेज वीर-नायको को रगशाला मे चुनौती दी थी कि जो कोई भी वीरनायक वहा उपस्थित हो, उससे आकर लड ले। और उस समय प्रत्येक वीरनायक ने अपने तीन-तीन शत्रुओ को पराजित कर दिया था।

जब सेड्रिक ने उन वीरनायको के नाम सुनाए जिन्होने इग्लैड के गौरव को ऊचा उठाया था तो गिल्बर्ट उपहास के स्वर से हस उठा। तीर्थयात्री ने उसी समय फिर बाधा

उपस्थित की और कहा, "उन नामो को जाने दीजिए और सुनिए, श्रीमान गिल्बर्ट सत्य को स्वय भी जानते है।"

गिल्बर्ट को तीर्थयात्री की बात चुभ गई और वह स्वय ही कह उठा, "मुझसे छिपाने की आवश्यकता नही है। जिस वीरनायक के सामने मेरा घोडा गलती से गिर गया था वह आइवनहो का वीरनायक था। उसका नाम छिपाने की आवश्यकता ही क्या है! यदि वह इग्लैड मे होता और अब की बार के क्रीडागण मे मेरे साथ उतरता तो मै उसे शस्त्रो का पूरा लाभ देकर भी पराजित कर देता।"

उसी समय सुन्दरी रोबेना का स्वर सुनाई दिया, "मै निश्चय से कहती हू कि आइवनहो चुनौती को स्वीकार करेगा और अपने प्रतिद्वन्द्वी को पराजित कर देगा।"

अपने निर्वासित पुत्र का वर्णन सुनकर वृद्ध सेक्सन सेड्रिक के भाव उमड आए थे, परन्तु जब उसने रोबेना के मुख से अपने पुत्र की प्रशसा सुनी तो वह कुछ घबरा भी गया और बेचैन-सा हो उठा। लेकिन उसने कहा, "अगर इसके बाद भी किसी प्रतिज्ञा की आवश्यकता है नो आइवनहो के सम्मान के लिए मै अपना सम्मान भी दाव पर लगाने के लिए तैयार हू।'

ऐसवी मे वीरो की क्रीडा होनेवाली थी। अगले दिन राजकुमार जॉन सम्राट रिचार्ड के स्थान पर आए और उन्होने टूर्नामेंट का उद्घाटन किया। सम्राट रिचाड उस समय भी आस्ट्रिया मे बन्दी थे। वीरता के इतिहास मे उनका नाम अमर समझा जाता था। यह घटना सेड्रिक के लिए मी बहुत महत्त्वपूर्ण थी। आज की क्रीडा मे उसने देखा कि गिल्बट नारमन वीरो का नेतृत्व कर रहा था।

नारमन वीर चुनौती देते थे और एक के बाद एक सेक्सन वीरो को पराजित करते चले जा रहे थे। एक तरुण वीरनायक काले घोडे पर बैठकर आगे बढा। उसने अपना नाम 'अधिकारवचित' बताया। वह अचानक ही मैदान मे आ गया। उसने बडे गौरव के साथ अपना भाला झुकाकर उपस्थित महिलाओ और राजकुमार का अभिवादन किया। लोगो को यह विश्वास नही था कि इस आगन्तुक को अत मे कोई सफलता प्राप्त होगी, किन्तु उसके यौवन का सौन्दर्य देखकर उसके उन्नत भवो और घोडा बढाने की पराक्रमी गति देखकर लोगो के अन्दर एक स्फूर्ति-सी भर गई। देखकर ही लगता था कि यह युवक साहस का प्रतिरूप है। युद्ध का कौशल मानो उसकी भुजा मे प्रस्फुटित होरहा था। उसके भीम भुजदड और प्रशस्त वक्षस्थल देखकर चचल गति से चलनेवाले सिह का स्मरण हो आता था। उसका गाम्भीर्य देखकर भीड मे तुमुल नाद उठने लगा। आश्चर्य की एक लहर-सी दौड गई। लोगो ने देखा कि वह अश्वारोही चारो ओर भव्य दृष्टि से देख रहा था। गिल्बर्ट ने, समस्त महिलाओ और राजकुमार जॉन ने भी उसे देखा। उसने गिल्बर्ट की ढाल पर अपने पैने भाले से आघात किया। चुनौती देनेवालो के नेता की ढाल पर भाले के तीक्ष्ण फलक ने प्रतिध्वनि की, जो क्रीडागण मे लोगो ने दूर-दूर तक सुनी।

गर्वीला टेम्पलर गिलबर्ट आश्चर्य से भर गया। उसने कहा, "मृत्यु के सामने निर्भय होकर आ रहे हो। क्या प्रात काल तुम ईश्वर से प्रार्थना कर चुके हो ?"

आगन्तुक ने उत्तर दिया, "मृत्यु से आलिगन करने के लिए मै तुम्हारी अपेक्षा अधिक तत्पर हू।"

गर्वीले नारमन ने कहा, 'तो आज रात को तुम स्वर्ग मे ही शयन करोगे।"

दोनो की आखे मिली, मानो अगारो से अगारे खेल गए। दोनो ने अपने घोडे बढाए। दोनो के अग अग स्फुरित हो रहे थे। मैदान के बीच मे लोगो ने देखा, दोनो ओर से दोनो घोडे बढने लगे। उनके सुमो की आवाज से लगा कि आखे जैसे वध गई और पृथ्वी विक्षुब्ध हो उठी। लोगो की सासे अटक गई। उनके भाले उठे हुए थे। जब वे दोनो मैदान के बीच मे पहुचे, एक भयानक नाद उठा जैसे वज्र से वज्र टकरा गया हो, जैसे बिजली से बिजली गुथ गई हो। दोनो के भाले टकराए और उन्होने नये हथियार अपने हाथो मे ले लिए। एक बार घोडे फिर प्रचण्ड वेग से एक-दूसरे की ओर दौडे और फिर वेग से दोनो की टक्कर हो गई। 'अधिकारवचित' वीरनायक घोडे पर से झुक गया लेकिन उसके पाव घोडे की पीठ पर कसे रहे। उसका भाला सच्चा साबित हुआ। वह नारमन के वेग को उखाड देने मे समर्थ हो गया था। नारमन घोडे पर मे नीचे लुढक गया। अपमान ने जैसे उसे पागल कर दिया। उसने तुरन्त अपना खड्ग खीच लिया और अधिकारवचित पर आक्रमण किया। यह देखकर वीरनायक अपने घोडे पर से कूद पडा और उसने अपनी लम्बी तलवार खीच ली। किन्तु इसी समय युद्ध रोक दिया गया क्योकि युवक जीत चुका था। दम्भी गिल्बर्ट हताश-सा देखता रह गया। वह अपने शिविर मे चला गया और शेष सारा दिन उसने इस वेदना मे व्यतीत किया।

राजमच से राजकुमार जॉन ने पुकारकर कहा, "हे अधिकारवचित वीरनायक, अब यह तुम्हारा कर्तव्य है कि कल के उत्सव के लिए तुम किसी सुन्दरी का नाम बताओ। जो सम्मान और प्रेम की सम्राज्ञी बनकर कल रगशाला मे सभापतित्व कर सके। उठाओ अपना भाला।" वीरनायक ने आज्ञापालन किया। राजकुमार जॉन ने उसके भाले की की नोक पर हरे साटन का एक मुकुट टाग दिया।

विजेता घोड पर बैठकर सुन्दरी महिलाओ की ओर बढ चला। कुलीन और रूपवती महिनाए प्रतिद्वन्द्विता-सी किए बैठी थी। वह पक्तियो मे जैसे किसीको खोजता चला जा रहा था। अत मे उसने सुन्दरी सम्मानिता रोबेना के चरणो पर उसको समर्पित कर दिया।

पौ फटी। उजाला हुआ। तुरहिया बजने लगी। कभी-कभी नगाडो का घोष गूजता। भीड के तुमुल निनाद से एक बार फिर मैदान भर गया। लोग आज वीरो के युद्ध-कौशल को देखने के लिए पुन एकत्रित हो गए थे। सौ वीरनायक आज अपना पराक्रम दिखाने के लिए उपस्थित थे। वे पचास-पचास के दो दलो मे बट गए। एक ओर का नेतृत्व गिल्बर्ट कर रहा था और दूसरी ओर अधिकारवचित नेता बना खडा था। दोनो ओर के वीर अपने भाले और ढाल उठाए घोडो को दोनो ओर से भगाते हुए चलते, योद्धाओ के शस्त्र टकराते और उत्तेजित घोडो की भीम गति से और शस्त्रो की प्रचण्ड वेगमयी शक्ति से दो मे से एक गिर जाना। भीड कोलाहल करती और महिलाए उत्तेजित

हो उठती। धीरे-धीरे दोनो के वीरनायक छटने लगे। आज बहुत ही कठिन सघर्ष हुआ। अधिकारवचित वीरनायक ने देखा कि उसके सामने तीन बहुत सशक्त योद्धा थे। एक था एथलस्टेन, जो यद्यपि सेक्सन था पर बूफ और गिल्बर्ट जैसे नारमन लोगो से मिल गया था। ऐसे सकट के क्षण मे एक काला वीर, जोकि उसके अपने ही पद का था, अधिकार-वचित की सहायता करने के लिए आ गया। उसने घोडा दौडाकर इतने वेग से प्रहार किया कि बूफ घोडे पर से नीचे लुढक गया। और जब एथलस्टेन की बारी आई तो उसने बाज़ की तरह हमला करके उसको नीचे फेक दिया। एथलस्टेन अपना वेग नही सभाल सका और मूर्च्छित होकर गिर गया। इसके बाद गिल्बर्ट और अधिकारवचित वीरनायक मे तुमुल सघर्ष हुआ। एक बार फिर अधिकारवचित वीरनायक ने गर्वीले नारमन को नीचे गिरा दिया और उसी समय राजकुमार जॉन ने चुनौती का अत कर दिया। उन्होने खेल रोक दिया। नारमन एक बार फिर बच गया। उसकी छाती पर रखा हुआ अधिकार-वचित का खड्ग उसके लहू को नही पी सका।

अधिकारवचित फिर उस दिन का विजेता कहलाया और उसे सुन्दरी रोबेना के पास उस दिन का पुरस्कार प्राप्त करने के लिए ले जाया गया। यद्यपि वह घायल हो गया था और लोग उससे कह रहे थे कि वह अपने शिरस्त्राण को उतार दे फिर भी उसने उनकी एक बात नही मानी। किन्तु उन लोगो ने इसको स्वीकार नही किया। शिरस्त्राण उतार दिया गया, भीतर से धूप मे तपा हुआ एक अत्यन्त सुन्दर पच्चीस वर्षीय युवक दिखाई दिया, जिसके सिर पर अत्यन्त सुन्दर केशराशि थी। उसका मुख अत्यन्त पीला पड रहा था और लहू की धाराए बह रही थी। शिरस्त्राण के उतरते ही रोवेना के मुख से एक चीत्कार-सा निकल गया और सेड्रिक अपने पुत्र आइवनहो को रोबेना से दूर करने के लिए आगे बढ आया। उसीने तो इन दोनो के विवाह को रोक दिया था।

टूर्नामेंट मे राजकुमार जॉन की दृष्टि एक सुन्दरी यहूदिन पर पडी जो भीड मे खडी खेल देख रही थी। राजकुमार ने उस युवती को अपने यहा निमन्त्रित किया। युवती के साथ उसका पिता यॉर्क का इसाक भी आया। उसको उन्होने स्थलस्टेन के आसन के पास स्थान दिया। स्थलस्टेन इस बात से मन ही मन बहुत विक्षुब्ध हुआ। खेल के बाद इसाक और उसकी पुत्री रेबेका ने ही आइवनहो के घावो को धोया और उसकी सुश्रूषा की, वे लोग उसको ऐसवी मे अपने निवासस्थान पर ले गए। आइवनहो ने भी जब सुन्दरी रेबेका को देखा तो उसके मुह से भी प्रशसा के शब्द निकल पडे। राजकुमार जॉन ने जब उस अनिन्द्य सुन्दरी को देखा तो वह हठात् ही कह उठा, "पूण सौन्दर्य की प्रतिमा यही है, सम्भवत ऐसी ही किसी स्त्री को देखकर ससार के समस्त सम्राटो मे बुद्धिमान सुलेमान भी विचलित हो गया था।"

किन्तु सेवा-सुश्रूषा करते समय जब रेबेका ने आइवनहो से कहा कि वह यहूदिन है तो उसने न जाने क्यो यह अनुभव किया कि उसपर उपकार करनेवाली उस स्त्री की दृष्टि मे बसनेवाली कोमलता जैसे ठडी हो गई है—मानो वह हीनत्व की भावना से ग्रस्त हो गई है। किन्तु आइवनहो उसे उन्ही प्रशसा-भरे नेत्रो से देखता रहा। उनमे एक प्रकार की दया-भावना छलक आई।

आइवनहो को पालकी मे लिए हुए तीनो ऐसवी मे से निकल पडे, लेकिन सेक्सन सनिक भी उनको छोडकर चला गया। डाकुओ के आतक के कारण इसाक ने रजरबुड की ओर लौटते हुए सेड्रिक की दिल से प्राथना की कि वे लोग अपने साथ इन्हे भी चलने आज्ञा दे दे। किन्तु एथलस्टेन ने इस बात को तुरन्त अस्वीकार कर दिया। राजकुमार जॉन ने टूर्नामेंट मे इस यहूदी को उसके समीप बिठाकर जो उसका अपमान किया था वह अभी तक उसके हृदय मे चुभ रहा था।

सेक्सन महिला रोबेना भी उसी दल मे थी। नौकरो के बीच मे से रेबेका सीधी रोबेना के समीप चली गई। वह उसके सम्मुख अपने घुटनो के बल बैठ गई और पूर्वीय लोगो की परम्परानुसार सम्मान प्रदर्शित करती हुई विनम्रता से झुक गई। उसने रोवेना के वस्त्र के छोर को पकडकर चूम लिया और कहा, "देवी, मै अपने लिए करुणा की भीख नही मागती, न मै वृद्ध पिता के लिए आपसे कोई याचना करती हू किन्तु उसके नाम पर आपमे भीख मागती हू जो अनेको का प्रिय है और जिसे आप भी अपना प्रिय समझती है। यह व्यक्ति रुग्ण है। घावो ने इसे असमथ कर दिया है। यदि आप आज्ञा दे तो आपकी सरक्षा मे यह घायल भी आपके दल के साथ चला चले। यदि दुर्भाग्य इसपर टूट पडा और इसके जीवन का अन्तिम समय ही आ गया तो आज जो मैने आपसे याचना की है, कही ऐसा न हो कि वह भीख न देकर कल आपको शोक होने लगे।"

रेबेका ने जिस मर्यादा और पवित्रता से अपने शब्दो का उच्चारण किया उससे रोबेना प्रभावित हुई किन्तु उसने वृद्ध सेड्रिक के सामने यह नही बताया कि वह घायल व्यक्ति कौन था, क्योकि इस वृद्ध ने ही तो अपने पुत्र को अधिकारवञ्चित कर दिया था। देवी रोबेना रेबेका की इस दृढता को देखकर और भी अधिक प्रभावित हुई। वह नही जान सकी कि आज उससे किसकी सुरक्षा की प्रार्थना की जा रही है। रेबेका की प्राथना स्वीकार कर ली गई। जिस आदमी से रेबेका प्यार करती थी वह आदमी, अब उसकी जानकारी के बिना ही, उसीकी सुरक्षा मे उसीके दल के साथ चलने लगा।

बैरन मे लौटते हुए कुछ नारमन कुलीनो ने डिब्रेसी के नेतृत्व मे मार्ग पर स्वेच्छाचार प्रारम्भ कर दिया था। सम्राट रिचाड के विरुद्ध राजकुमार जॉन से मिलकर वह षड्यत्र रच रहा था। एक सकरे स्थान पर आकर उसने अपने आदमी पहाडियो मे छिपा दिए, जिन्होने सेड्रिक के दल पर आक्रमण कर दिया। सेक्सन लोगो को बन्दी बना लिया गया। बैरन बूफ के अभेद्य दुर्ग टोकक्वील स्टोन मे उन लोगो को ले जाकर बन्द कर दिया गया ताकि उनको छुडानेवाले नियत धनराशि दे जाए अन्यथा उनके भयानक प्रतिहिसा के कोप तथा कठोरतम दण्ड के भागी होने की आशा थी।

नारमन लोगो ने अपने बन्दियो को एक-एक करके बुलाया। सबसे पहले यॉर्क का यहूदी इसाक इसके लिए चुना गया। बूफ अपने साथ यातना देनेवाले को लेकर उसकी काल-कोठरी मे उतर गया और चिल्लाया, "ओ अभिशप्त जाति के अभिशप्त कुत्ते, मैं तुझे आज्ञा देता हू कि तू मेरे किसी आदमी को भेज, जो यॉर्क जाकर तुझे छुडाने के लिए एक हज़ार चादी के पौंड ले आए अन्यथा मैं तेरी बोटी-बोटी काट लूगा।"

यहूदी ने कापते हुए स्वर मे कहा, "पवित्र अब्राहम मेरी रक्षा करेगे।' और सहसा उसका स्वर बदल गया। उसने कठोरता से कहा, "तू सारे यॉर्क नगर को विध्वस्त कर दे, तुरन्त आज्ञा दे दे कि मेरे घर को लूट लिया जाए। और मेरी जाति के प्रत्येक व्यक्ति को नष्ट कर दिया जाए। किन्तु इतना अधिक धन फिर भी एकत्र नही हो सकेगा।"

बूफ ने कहा, "मै अनुचित बात नही कर रहा हू। यदि तेरे पास चादी नही है तो मैं स्वर्ण भी अस्वीकार नही करता।"

इसाक ने पुकारकर कहा, "मुझ पर दयाकर वीरनायक। मै वृद्ध हो गया हू। मै असमर्थ हू, दरिद्र हू।"

वीरनायक ने उत्तर दिया, "वृद्ध तो तू है। किन्तु उन लोगो को धिक्कार है जिन्होने कि तेरी दुष्टता देखकर भी तुझे इतना बडा हो जाने दिया। भले ही तू असमर्थ और निर्बल है किन्तु इसमे कोई सन्देह नही है कि तू निश्चय ही एक धनी व्यक्ति है।"

यहूदी ने कहा, "नही वीरनायक। मै सौगन्ध खाता हू।"

नारमन बूफ ने उत्तर दिया, "अपने ऊपर एक नया अपराध मत ले। यह बन्दीगृह कोई साधारण स्थान नही है। तुझसे दस हजार गुने अधिक सम्मानित व्यक्ति इन दीवारो के बीच बन्दी होकर अपने प्राण त्याग चुके है। उनके अन्त का किसीको पता भी नही चला। किन्तु इस बात का स्मरण रख कि तेरे लिए मै घुल-घुलकर मरने का कोई न कोई माध्यम निकाल लूगा, जिसकी असह्य यत्रणाओ मे तू तडपा करेगा।" यह कहकर बूफ ने अपने सेरेसेन दासो को लोहे की सलाखो के एक पलग के नीचे आग जलाने की आज्ञा दी। और कहा, "इस तप्त शय्या पर सोना तुझे पसन्द है, या एक हजार चादी के सिक्के देना ? मैं इस चुनाव को तुझपर ही छोडता हू।"

विह्वल और दीन यहूदी ने पुकारकर कहा, "यह असम्भव है।"

बूफ ने आज्ञा दी, "इसको पकडकर नगा कर दो।"

दुखियारा यहूदी करुणा की एक किरण की आशा मे उन लोगो की आखो की ओर देखने लगा, किन्तु उसे कही भी दया की छाया नही दिखाई दी। तब उसने कापते हुए स्वर से कहा, "मै तुम्हे धन दूगा किन्तु इसके लिए मेरी पुत्री रेबेका को जाना पडेगा और उसको पहुचाने का जिम्मा तुमको लेना पडेगा कि वह निरापद जाए और वैसे ही सुरक्षित लौट आए।"

बूफ ने उत्तर दिया, "तेरी बेटी ! वह काली भौहवाली लडकी ? मैंने उसे गिल्बर्ट की सेवा मे उपस्थित कर दिया है। वह मैंने उसीको दे दी है।"

यहूदी के मुख से दारुण चीत्कार फूट पडा। इस निर्मम सवाद को सुनकर मानो उसका हृदय विदीर्ण हो गया था। वह पृथ्वी पर गिर गया और करुणा की भीख मागते हुए उसने बूफ के घुटनो को पकड लिया और कहा, 'तुमने जो मुझसे मागा है वह ले लो, तुमने जो मुझसे मागा है उससे दस गुना मुझसे माग लो, तुम मुझे बरबाद कर दो, मुझे भिखारी बना दो। और यदि फिर भी तुम्हारी प्रतिहिंसा शात नही होती तो मुझे अग्नि की भयानक लपटो के ऊपर जला दो, किन्तु मेरी पुत्री का सम्मान नष्ट मत करो। तुम

एक पिता का हृदय नही जानते कि वह अपनी जिस बेटी को पालता है उसके सम्मान और सुख के लिए उसे ससार मे सब-कुछ तुच्छ दिखाई देता है।"

बूफ जैसे उसकी दारुण पुकार को सुनकर हिल गया। उस आर्द्र वेदना ने जैसे उसे क्षण-भर के लिए लज्जित कर दिया। और उसने कहा, "मै यह समझता था कि तुम्हारी जाति मे धन के अतिरिक्त किसी भी अन्य वस्तु का मूल्य नही होता।"

यहूदी ने फूत्कार किया, "ओ नीच, दुष्ट, जब तक मेरी पुत्री मेरे पास सुरक्षित नही लौट आएगी तब तक तू चाहे मेरी बोटी-बोटी ही क्यो न कटवा दे, मै तुझे कुछ भी नही दूगा।"

बूफ चिल्लाया, "गुलामो, इसको नगा कर दो और इस दहकते हुए पलग के ऊपर कस दो।"

उसी समय एक तुरही का तीखा स्वर द्विगुणित होता हुआ दो बार दुर्ग मे गूज उठा। यातना देनेवाले ठिठककर रुक गए। यह स्वर उनका ध्यान दूसरी ओर केन्द्रित कर रहा था।

जिस समय अभागे यहूदी को बन्दीगृह मे बूफ इस प्रकार यत्रणाए दे रहा था उस समय एक अन्य स्थान पर डिब्रेसी रोबेना को आतकित करने की चेष्टा कर रहा था। रोबेना ने ठडे स्वर से कहा, 'श्रीमत वीरनायक, मै आपको नही जानती। किसी भी योद्धा और सम्मानित व्यक्ति को एक अरक्षित महिला के सम्मुख इस प्रकार आ जाना कहा तक उचित है ? यह मैं नही जानती।"

उसने उत्तर दिया, "डिब्रेसी का नाम ऐसा अनजाना नही है। चारण और दूत उसके पराक्रम के गीतो को गाते हुए दिगन्तो मे घूमा करते है।"

रोबेना ने व्यग्य से कहा, "कौन-सा चारण है जो इस गौरव-गाथा को गाएगा कि एक रात एक वृद्ध अपने कुछ नौकरो के साथ अपनी एक अभागी लडकी को लिए चला जा रहा था और कुछ कुत्तो ने उसपर अचानक धोखे से हमला कर दिया और उसकी पुत्री को उसकी इच्छा के विरुद्ध एक डाकू के दुर्ग मे लाकर बन्द कर दिया।"

डिब्रेसी घबरा गया, उसने कहा, "तुम्हारी यह बात उचित नही है। माना कि तुममे कोई आवेश और वासना नही, लेकिन फिर भी दोष तुम्हारे ही सौन्दर्य का है जिसने किसीको ऐसा करने के लिए उत्तेजित कर दिया है।"

रोबेना ने कहा, "कोई भी कुलीन व्यक्ति इस प्रकार की छिछली बात नही कर सकता।"

डिब्रेसी अपना ऐसा अपमान होते देखकर विक्षुब्ध हो गया। उसने कहा, "अभिमानिनी, गर्वीली रोबेना, तू ही मेरी पत्नी होने के योग्य है। इतना उच्च पद, इतना अधिक सम्मान तुझे और किसी माध्यम से प्राप्त नही हो सकता।"

रोबेना ने उत्तर दिया, "श्रीमत वीरनायक, जहा मैं पली हू उस स्थान को मैं तभी छोडूगी जब मुझे ऐसा व्यक्ति मिलेगा जो मेरे उस निवास और वहा के आचार-व्यवहार से भी प्रेम करेगा।"

डिब्रेसी समझ गया कि वह आइवनहो के बारे मे कह रही थी। उसने कहा, 'वह प्रतिद्वन्द्वी मेरे वश मे है।"

रोबेना को विश्वास नही हुआ। उसने कहा, "क्या आइवनहो का विलफ्रिड यही है ?"

डिब्रेसी के मुख से हास्य की ध्वनि फूट निकली। उसने कहा, "दुर्ग मे विलफ्रिड ही नही, उसका शत्रु बूफ भी हे। वह स्वय आइवनहो का बैरन बन चुका है। ज्योही उसे पता चल जाएगा कि विलफ्रिड ने ही उसको उस अधिकार से वचित कर रखा है, वह उसका सर्वनाश कर देगा।"

रोबेना भयभीत हो गई और एकदम चिल्ला उठी, "ईश्वर के लिए उसकी रक्षा करो।"

योद्धा के होठ काप उठे , उसने कहा, "मै उसकी रक्षा कर सकता हू। मैं उसकी रक्षा करूगा, अगर सुन्दरी रोबेना डिब्रेसी की पत्नी होना स्वीकार कर ले।"

जब इधर यह हो रहा था दुर्ग के एक एकात मीनार मे सुन्दरी रेबेका अपने आने-वाले दुर्भाग्य के लिए मन ही मन चिन्तित हो रही थी। वृद्ध सेड्रिक का एक मित्र था। वह मर चुका था। उसकी एक बेटी थी जो उलरिका कहलाती थी। यह सेक्सन स्त्री अपने नारमन विजेताओ द्वारा अपमानित हो चुकी थी। इस समय वह रेबेका की देखभाल कर रही थी। वह सुन्दरी यहूदिन को देखकर ईर्ष्या से व्याकुल हो रही थी। उसमे दुष्टता के कारण वृद्धावस्था और क्ररता अधिक कुटिल दिखाई दे रही थी। सुन्दरी युवती को देख-कर उसमे ऐसा भाव हो जाना नितान्त सहज था। वृद्धा ने कहा, "निकल भागने का एक ही रास्ता है और वह है मृत्यु का द्वार!" और यह कहती हुई वह कमरे के बाहर निकल गई। उसके मुख पर व्यग्य से भरी हसी ऐसे काप उठी जैसे कोई नागिन फडफडा रही हो।

रेबेका भय से काप उठी। उसका मुख विवर्ण हो गया। सीढियो पर किसीके भारी पाव की चाप सुनाई दे रही थी। डाकुओ का सा वेश धारण किए हुए एक लम्बा पुरुष भीतर घुस आया मानो वह कोई ऐसा काम करने आया था जिसकी लज्जा स्वय उसे व्याकुल कर रही थी।

उसके बोलने के पहले ही रेबेका ने अपने दो बहुमूल्य कगन और गलहार उतार-कर उसकी ओर बढाते हुए कहा, "मेरे उपकारी, इन्हे ले लो और मुझपर तथा मेरे वृद्ध पिता पर दया करो।"

दीर्घाकार पुरुष ने कहा, "ओ पेलेस्टाइन के मनोहर सुमन, इन आभूषणो के ये मोती तुम्हारे दातो की निर्मलता के सम्मुख लज्जित हो रहे है। निस्सन्देह ये हीरे देदीप्य-मान है किन्तु तुम्हारे शोभन नेत्रो की समता ये नही कर सकते। और मै धन का भूखा नही हू। मुझे रूप को प्यास सता रही है।"

रेबेका ने कहा, "तब तो तुम कोई डाकू नही हो क्योकि ऐसी बहुमूल्य भेंट कोई डाकू अस्वीकार नही कर सकता।"

अपने मुख को खोलते हुए उस समय गिल्बर्ट ने कहा, "शेरान के प्यारे गुलाब, मैं डाकू नही हू, मुझे पहचानो।"

रेबेका का रोम-रोम भय से काप उठा। उसने विह्वल स्वर से कहा, "तुम क्या चाहते हो मुझसे ? मैं एक यहूदिन हू, मेरा और तुम्हारा मिलन गिरजे और हमारे पवित्र मन्दिर के नियमो का उल्लघन होगा।"

गर्वीले टेम्पलर गिल्बर्ट ने हसते हुए कहा, 'सच कहती हो। मै तुमसे विवाह नही कर सकता। मै टेम्पलर हू और अपनी शपथ के अनुसार मै तुम्हारे अतिरिक्त किसी और स्त्री से प्रेम नही कर सकता। मैने तुम्हे अपने धनुष और खड्ग के बल पर बन्दिनी बनाया है। समस्त राष्ट्र मे एक ही नियम है, और वह है शक्ति की विजय ! मैने उसीसे तुम्हे अपने अधीन कर लिया है।"

रेबेका चिल्ला उठी, "दूर हट जाओ, टेम्पलर गिलबर्ट, मैं यूरोप के एक कोने से दूसरे कोने तक तुम्हारी इस नीचता की घोषणा करती फिरूगी। तुम जिस पवित्र सलीब को धारण करते हो उसका अपमान करने पर तुले हुए हो, इसलिए तुम ससार मे अभिशप्त और पापग्रस्त नाम से प्रसिद्ध हो जाओगे !"

टेम्पलर ने कहा, "तुम बडी चतुर मालूम होती हो। इस दुर्ग की लौह प्राचीरो के बाहर यदि कही यह स्वर पहुच पाए तो अवश्य लोगो मे प्रतिकार की भावना जाग सकती है। किन्तु बन्दी, माग अवरुद्ध है। तुम्हे अपनी पराजय स्वीकार करनी ही होगी।"

रेबेका क्रोध से चिल्ला उठी, "तुम्हारे सम्मुख समर्पण नही करूगी। तुम टेम्पलरो मे भले ही सर्वश्रेष्ठ पराक्रमी योद्धा हो, लोग भले ही तुम्हारे शौर्य को देखकर पराजित हो जाते हो, किन्तु मैं तुम्हारे मुह पर थूकती हू। अब्राहम का ईश्वर अपनी निरीह पुत्री को इस प्रकार अपमानित होते हुए नही देख सकता। इस भयानक बेला मे भी वह उसके लिए कोई मार्ग अवश्य प्रशस्त करेगा।" यह कहकर उसने खिडकी खोल दी और विद्युत् गति से उसपर चढकर खडी हो गई। चौखट के पास खडे होकर उसने देखा कि बहुत नीचे पृथ्वी-तल दिखाई दे रहा था। वायु के झोके आ रहे थे। उस क्षण वह निस्सहाय बाला असीम साहस से भर गई। उसने अपने हाथो को एक-दूसरे से बाध लिया, फिर उसने अपने हाथो को खोल दिया और आकाश की ओर उठा दिया। और मानो कूदने के पहले अन्तिम बार हाथ जोडकर ईश्वर से प्रार्थना की और कहा, "ओ अनन्त करुणामय !'

टेम्पलर कठोरहृदय व्यक्ति था, उसमे करुणा नही थी, न वह किसीके कष्टो को देखकर पिघलता था। किन्तु इस समय उसका साहस देखकर उसका हृदय दहल गया। उसने कहा, "नीचे उतर आ पागल लडकी, मैं पृथ्वी, आकाश और समुद्र की शपथ खाकर कहता हू कि मैं तेरा कोई अपमान नही करूगा।"

रेबेका ने उत्तर दिया, "टेम्पलर, मैं तेरा विश्वास नही करती।"

उसी समय बाहर बजती हुई तुरही ने टेम्पलर की मोह निद्रा को जैसे खडित कर दिया और वह बाहर चल पडा।

सेड्रिक के विदूषक वम्बा ने नारमन षड्यन्त्रकारियो के पास एक पत्र भेजा था। उसने माग की थी कि सेक्सन बन्दी छोड दिए जाए अन्यथा वह अपने साथियो के साथ दुर्ग पर आक्रमण करेगा। उसके साथ वनराज रोबिनहुड और उसके दुर्धर्ष योद्धा तथा अपराजित काला वीरनायक भी होगे जो इस दुर्ग की ईंट से ईंट बजाकर, विनष्ट करके

ही दम लगे ।

जब यह समाचार आया कि दुर्ग के बाहर लगभग दो सौ आदमी तैयार खडे है तो बूफ भयभीत हो गया ।

टेम्पलर ने कहा, "घबराओ मत बूफ, यह समय विचार करने का है । तुरन्त किसीको यॉर्क भेजो या कही भी भेजो, ताकि सहायता के लिए लोग आ सके ।"

किन्तु उनके पास कोई चर उपस्थित नही था जो इतनी कष्टसाध्य यात्रा कर सकने मे समर्थ हो । तब नारमन लोगो ने एक और चाल सोची । उन्होने बहाना बनाया । घेरा डालनेवालो से उन्होने कहा कि वे एक पादरी को भीतर भेज दे । अगली सुबह बन्दियो का वध किया जाने को था, इसलिए पादरी की आवश्यकता थी कि वह आकर उनके लिए अन्तिम समय प्रार्थना कर सके ।

घेरा डालनेवाले भी बहुत चतुर थे । दुर्ग मे छद्म वेश धारण करके सेड्रिक का विदूषक वम्बा पादरी बनकर घुस गया । जब वह अपने स्वामी के सम्मुख पहुचा, उसने अपने वस्त्र उतार दिए और सेड्रिक को विवश कर दिया कि वे पादरी के वस्त्र पहन ले और दुर्ग मे से निकल जाए ।

बूफ को इस प्रकार का कोई सन्देह नही था । पादरी का भेष धारण किए हुए सेड्रिक को वह स्वय ले चला और उसने उसे समझाया कि किसी प्रकार वह घिरे हुए नारमनो की सहायता के लिए बाहर से कोई मदद ले आए । उसने कहा, "पादरी, यदि तुम मेरा यह कार्य कर दोगे और लौट आओगे तो तुम देखना कि मैं बाजार मे बिकनेवाले सूअर से भी सस्ता कर दगा इन सेक्सनो का मास ।"

यह कहकर उसने सेड्रिक के हाथो मे सोने का एक सिक्का रखते हुए कहा, "पादरी, यदि तुम अपने कार्य मे सफल नही हुए, तो याद रखना तुम्हारा यह चोगा और तुम्हारी खाल इन दोनो को इकट्ठा जलवा दूगा ।"

सेड्रिक ने कहा, "मै तुम्हे ये दोनो काम करने की स्वत आज्ञा दे दूगा । अगर हम फिर मिले तो इससे अधिक मेरे लिए क्या योग्य हो सकता है ।" दुर्ग के बाहर निकलकर उस कट्टर वृद्ध ने सोने का सिक्का बूफ की ओर फेकते हुए कहा, "अरे झूठे नारमन, तेरे धन का तेरे साथ ही मिनाश हो ।"

बूफ उसके वचनो को स्पष्ट नही सुन पाया लेकिन फिर भी उसका यह कार्य सन्देह जगा गया । भीत पर खडे हुए धनुषधारियो से पुकारकर उसने कहा, "उस पादरी को अपने बाणो से बीध दो, लेकिन ठहरो, हमारे पास और कोई चारा नही है । हमे उस-पर विश्वास करना ही होगा । मुझे आशा नही है कि वह हमे धोखा देगा ।"

इसके बाद उसने देर तक मदिरा-पान किया और फिर अपने बन्दियो को देखने चला । उसे लगा जैसे कोई चला गया है । इस विदूषक के सिर से जब उसने टोपी उतारी तो गुलामी का तोक उसके गले मे दिखाई दे गया । बूफ क्रोध से चिल्ला उठा, "नरक के कुत्तो, तुमने भयानक षड्यन्त्र किया है ।" और उसने विदूषक से कहा, "मै तुझे पवित्र आज्ञा दूगा । इसके सिर पर से इसकी खोपडी को काट डालो और दुर्ग की दीवार पर इसे उलटा लटका दो । इसका काम लोगो को हसाना ही तो है । इसलिए इसे ऐसे ही

हसाने दो।"

वम्बा हसा और उसने कहा, "इस तरह तो तुम मेरे सिर पर लाल टोपी लगा दोगे। फिर मै साधारण पादरी नही रहूगा, कार्डिनल बन जाऊगा।"

डिब्रेसी ने कहा, "तब तो यह दुष्ट निश्चय ही मरना चाहता हे। बूफ, तुम इसकी हत्या मत करो। यह मेरे साथियो के लिए मनोरजन का एक साधन बन जाएगा।"

किन्तु दुर्ग के बाहर शत्रुओ के कार्यकलाप बढ गए थे, अत इन लोगो को अपनी बातचीत बन्द कर देनी पडी।

टॉक्लिस्टोन का ऐतिहासिक युद्ध प्रारम्भ हो गया। आइवनहो के कमरे से रेबेका देखने लगी—वह इस समय एक रोगी पादरी के रूप मे चुपचाप पडा हुआ था। बाहर सघर्ष छिड रहा था जिसपर उसकी स्वतन्त्रता और मृत्यु निर्भर थी। इस खेल को दूसरे लोग खेल रहे थे और वह स्वय खेलने मे असमर्थ था।

उसने पूछा, "क्या देख रही हो, रेबेका ?"

रेबेका ने उत्तर दिया, "कुछ नही दिखता। बाणो की घनी बौछार ही रही है। मेरी आखे उनको देखकर चौंधिया जाती है और मै बाण फेंकनेवालो को भी नही देख पाती।"

"बाण-वर्षा इन पत्थरो की दीवालो के विरुद्ध क्या कर सकेगी। सुन्दरी रेबेका! काला योद्धा कहा है? उसको देखो। क्या वह अपने अनुयायियो को लेकर आगे बढ रहा है।"

"वह मुझे दिखाई नही देता," रेबेका ने डूबती हुई दृष्टि से देखकर कहा।

आइवनहो ने कहा, "वह भयानक गिद्ध है, गिद्ध! जब प्रचण्ड पवन चलता है तब भी क्या वह भाग सकता है ?"

"वह नही भाग सकता, नही भाग सकता।" रेबेका ने कहा, "मै अब उसे देख रही हू वह अपने योद्धाओ के आगे खडा है। उन्होने मार्ग तोड दिया है। वह झपटकर आगे बढते है और फिर उन्हे पीछे हटना पडता है। बूफ रक्षको के आगे है, जिसका भीम शरीर भीड मे ऊपर दिखाई दे रहा है। यह लो, आक्रमणकारी फिर इकट्ठे हो गए। ओ, जेकब तुम परमेश्वर हो! समुद्र की भयानक उत्ताल तरगे मानो आपस मे टकरा रही है।"

वह भय से चीत्कार कर उठी, "वह गिर गया! वह गिर गया!"

आइवनहो चिल्लाया, "कौन गिर गया ? कौन गिर गया ?"

रेबेका ने उत्तर दिया, "काला योद्धा। पर नही, वह फिर खडा हो गया है। उसकी तलवार टूट गई है और उसने पास ही किसीसे एक कुल्हाडी ले ली है। बूफ पर वह प्रहार पर प्रहार किए चला जा रहा है। इस दैत्य के सामने काप रहा है बूफ, जैसे लकडहारे की कुल्हाडी के सामने कोई विशालकाय वृक्ष लडखडा रहा हो। वह गिर गया। वह गिर गया।"

बूफ को वे लोग उठा ले चले और उसके कमरे मे उसे पहुचा दिया। युद्ध के इस

वीरान मे गिल्बर्ट और डिब्रेसी ने आपस मे बातचीत की।

'घबराओ नही," गिल्बर्ट ने कहा, "देर नही है, कुछ ही देर मे बूफ अपने पूर्वजो के साथ जा बैठेगा।"

डिब्रेसी ने उत्तर दिया, "शैतान के राज्य मे एक दुष्ट और पहुच जाएगा।"

उधर एक पतली और टूटी-सी आवाज ने मरते हुए बूफ के पास से पुकारा, "क्या अभी बूफ जीवित है ?"

उसने कापकर पूछा, "कौन ?"

"मै तुम्हारा यमदूत हू।"

"तुम यह तो मत समझो कि मै तुमसे भयभीत हो जाऊगा।"

"बूफ ! अपने पापो का स्मरण कर, विद्रोह, हत्या और बलात्कार ही तेरे जीवन का इतिहास है।"

"मुझे शान्ति से मरने दो।"

उस स्वर ने उत्तर दिया, "शान्ति से तू नही मरेगा। मरते समय भी तुझे अपनी हत्याओ का स्मरण आता रहेगा।"

"ओ हत्यारी बुढिया, ओ घृणित कुटिल स्त्री।" मरता हुआ बूफ चिल्ला उठा। उसने इतनी देर मे अपनी पुरानी प्रिया उलरिका की आवाज़ को पहचान लिया था।

वह बोली, "बूफ, तूने जो कुछ मुझसे ले लिया है, आज उस सबको वापस मागने आई हू। आज तक तू मेरे लिए यमदूत था किन्तु आज मैं तेरे लिए यमदूत बनकर आई हू।"

बूफ ने कराहकर कहा, "आह, यदि मुझमे थोडी-सी भी शक्ति बाकी होती !"

उलरिका ने हसकर कहा, "वीर योद्धा, अब इसकी आशा मत कर। तू किसी वीरनायक की भाति नही मरेगा। तुझे याद है, इन्ही कमरो के नीचे ईंधन इकट्ठा है और लपटे तेज़ी से उठती चली जा रही है।"

बाहर गर्वीले टेम्पलर गिल्बर्ट का गर्जन रणनाद से ऊपर सुनाई दे रहा था। वह चिल्ला रहा था, "डिब्रेसी ! सर्वनाश हो गया। दुर्ग मे आग लग गई है !"

डिब्रेसी अपने आदमियो को लेकर बाहरी द्वार की ओर भाग चला, किन्तु बाहर से प्रचण्ड आक्रमण हुआ और पत्थरो के वे विशाल गलियारे शस्त्रो की ध्वनि से गूजने लगे। काले योद्धा की तलवार डिब्रेसी के खड्ग से जा टकराई। डिब्रेसी भाग चला किन्तु काले सवार ने उसका पीछा नही छोडा। उसने एक कुल्हाडी लेकर डिब्रेसी का पीछा किया।

काले सवार ने कहा, "डिब्रेसी, समर्पण करता है ?"

डिब्रेसी ने उत्तर दिया, "मैं किसी अज्ञात विजेता के सामने समर्पण नही करूगा।"

सहसा काले योद्धा ने अपना नाम धीरे से बुदबुदाया और डिब्रेसी ने चीत्कार कर उसके सम्मुख समर्पण कर दिया।

दुर्ग धधकने लगा। भीम लपटे हवा को महानागो की तरह ग्रसने लगी थी।

उमडते हुए धुए के कारण विशाल दीवारो और छतो के नीचे अधियारा-सा छाने लगा था। चारो ओर हाहाकार और चीत्कार से पाषाण प्रतिध्वनित हो रहे थे। बाहर योद्धाओ का तुमुल निनाद बढता जा रहा था। छतें अर्रा-अर्राकर गिरने लगी थी।

उस धधकती हुई आग मे काला सवार वेग से भीतर घुस गया और उसने घायल आइवनहो को अपनी भुजाओ पर उठा लिया। रोबेना को उसके पिता के नौकरो ने बचा लिया। लेकिन गिल्बर्ट रेबेका को उठाकर भाग चला। असहाय स्त्री के चीत्कार से पवन रुआसा हो उठा।

आग की जीभ सध्या के आकाश तक लपलपा रही थी। मीनार पर मीनार नीचे गिरती चली जा रही थी। विजेता आश्चर्य से उन धधकती लपटो को देख रहे थे, जिनके कारण उनके शस्त्र और उनकी पक्तिया लोहित वर्ण प्रतीत हो रही थी। और आकाश के सम्मुख पागल सेक्सन उलरिका विभोर होकर चिल्लाती हुई हाथ उठाए हुए दिखाई दी, मानो आज वह सर्वनाश की स्वामिनी हो गई थी। उसी समय मीनार जलकर गिर पडी और वह उस आग मे जलने लगी, जिसमे कि थोडी देर पहले उसपर अत्याचार करने-वाले नष्ट हो चुके थे।

टॉर्क्लिस्टोन के युद्ध मे सेक्सन लोगो की आशाओ का प्रतीक एथलस्टेन तलवार की चोट से गिर गया था।

काले सवार को विदा देने के पहले सेड्रिक ने कोनिग्सवरो नामक दुर्ग मे शव-सस्कार पूरा करने के लिए निमन्त्रित किया। काला योद्धा आया, उसके साथ छद्म वेश मे आइवनहो था और उसने सेड्रिक से कहा "दुर्ग के युद्ध मे आपने मुझे वचन दिया था कि आप मुझे एक वरदान देंगे। आज मैं वही वरदान मागने आया हू।"

सेड्रिक ने कहा, "तुम एक अपरिचित व्यक्ति हो। तुम इन झगडो मे अपने-आपको क्यो सम्मिलित करते हो ?"

काले सवार ने विनम्रता से कहा, "मै सम्मिलित नही होना चाहता था, लेकिन मैं आपकी आज्ञा चाहता हू कि कुछ भाग ले सकू। आज तक आपने मुझे फेटरलो का काला सवार ही समझा है, पर आज से आप मुझे रिचार्ड प्लेण्टाजनेर समझें।"

सेड्रिक ने पीछे हटते हुए कहा, "मजु का रिचार्ड !"

"नही, वीर सेड्रिक, इग्लैड का रिचार्ड, जिसकी इच्छा है कि वह अपने पुत्रो को एकता के सूत्र मे बधा हुआ देखे। तुम अपने वचन के पक्के व्यक्ति हो, इसलिए मैं चाहता हू कि तुम आइवनहो के वीर विलफ्रिड को क्षमा प्रदान करो और पिता की भाति उसे अपना वात्सल्य देने को तत्पर हो जाओ।"

सेड्रिक ने कहा, "तो क्या छद्म वेश धारण करनेवाला यह व्यक्ति, जो तुम्हारी सेवा मे उपस्थित है, विलफ्रिड है ?"

विलफ्रिड सेड्रिक के चरणो पर लोट गया और कहा, "मुझे क्षमा कर दो मेरे पिता, मुझे क्षमा कर दो।"

सेड्रिक ने उसे उठाते हुए कहा, "मैं तुझे क्षमा करता हू, पुत्र ! तू जो कहना चाहता है, मैं जानता हू ! तू मुझसे क्या कहना चाहता है ! लेकिन श्रीमती रोबेना को अपने

वाग्दत्त पति के लिए दो साल तक शोक मनाना पडेगा। एथलस्टेन मर चुका है। उसके उपरात ही हम किसी नये वर की कल्पना कर सकेगे।"

सेड्रिक के शब्द समाप्त भी नही हुए थे कि एक विकराल छाया बाहर आ गई। एथलस्टेन मरा नही था। वह केवल खड्ग की चोट से बेहोश होकर नीचे गिर गया था।

सेड्रिक ने भयभीत होकर कहा, "तू मेरी पालिता रोबेना को नही छोडेगा। उसे अब भी आशा थी कि इग्लैड सेक्सन लोगो का ही बना रहेगा।"

एथलस्टेन ने विरोध किया और कहा, "पिता सेड्रिक, न्याय कीजिए। श्रीमती रोबेना को मेरी चिन्ता नही। मैं भाई विलफ्रिड के लिए अपने इस अधिकार को वापस लेता हू। अरे! विलफ्रिड कहा चले गए?"

सब लोगो ने देखा कि आइवनहो वहा नही था। उसी समय उसे सूचना मिली थी कि रेबेका को गिल्बर्ट उठा ले गया है। और धर्म के नियमो को छोडने के कारण जो सज़ा गिल्बर्ट को मिलनी चाहिए थी, उसीसे बचने के लिए उसने उसे एक डायन घोषित कर दिया था।

उन दिनो तात्रिक डायनो के लिए केवल एक ही सज़ा थी—मौत। और तभी उसकी रक्षा हो सकती थी जब क़ोई उनके लिए युद्ध करके उसके सकट को झेल जाने को तैयार हो जाए।

न्यायाधीश बैठे हुए थे। जब आइवनहो पहुचा तब दो घटे का विलम्ब हो गया था। गिल्वर्ट टेम्पलरो की तरफ से नेता बना खडा था। अपने पुराने शत्रु को इस समय आते देखकर भीतर ही भीतर उसका क्रोध भयानक हो उठा। वह चिल्लाया, "सेक्सन कुत्ते, उठा ले अपना भाला और मरने के लिए तैयार हो जा। क्योकि आज तूने काल को स्वय निमत्रण दिया है।"

आइवनहो ने पुकार कर कहा, "ओ दम्भी टेम्पलर, क्या तू यह भूल चुका है कि दो बार इस भाले के सामने तू पृथ्वी पर गिरकर धूल-धूसरित हो चुका है!"

तुरहिया बजने लगी। अश्वारोही योद्धा एक-दूसरे के सामने दौड चले। घोडे प्रचण्ड वेग से भाग रहे थे।

गिल्बर्ट गिर गया था। मृत्यु उसको चाट गई थी किन्तु वह आइवनहो के हाथो से नही मरा था। उसकी अपनी घृणा और वासना ने उसे पराजित कर दिया था।

भोर हो गई थी। विलफ्रिड और रोबेना का विवाह हो चुका था। रेबेका रोबेना के समीप आई। उसने पृथ्वी पर झुककर प्रणाम किया और उसके सुन्दर वस्त्र का छोर पकडकर चूम लिया।

रेबेका का स्वर काप रहा था। उसने अत्यन्त स्नेह से रोबेना से विदा मागी और रोबेना को आश्चयचकित छोडकर वह उस कक्ष मे चली गई, जैसे कोई स्वर आया था और चला गया।

रोबेना ने यह घटना अपने पति को बतलाई, जिसने उसपर एक गम्भीर लकीर-सी छोड दी। वह अपनी पत्नी के साथ बहुत दिनो तक आनन्द से जीवन व्यतीत करता

सम्बन्ध को और भी अटूट कर दिया था। कोई नही जानता कि आइवनहो को रेबेका की याद फिर कभी आई या नही।

प्रस्तुत उपन्यास रूमानी वातावरण का चित्रणकर्ता है। यूरोप के वे शौर्य-भरे दिन स्कॉट की लेखनी ने उभार कर रख दिए थे। उसने मानव-जीवन की ईर्ष्या, दु ख आदि वासनाओ का बहुत सुन्दर वर्णन किया है।

तीन तिलगे
[द थ्री मस्कैटियर्स[1]]

ड्यूमा, अलेक्जैंडर फ्रेंच उपन्यासकार अलेक्जैंडर ड्यूमा का जन्म फ्रास में आइने नामक स्थान पर २४ जुलाई, १८०२ को हुआ। आपका प्रारम्भिक जीवन साधारण परिस्थितियों में व्यतीत हुआ। उसके उपरान्त आप लेखक के रूप में प्रसिद्ध हुए और आपने अनेक पुस्तकें लिखी। आपने बहुत धन कमाया, पर आप इतना अधिक खर्चा करते थे अत शीघ्र ही दिवालिया हो गए। आपने 'थियेटर हिस्टोरिक' की स्थापना की। आपकी रिपब्लिकन प्रवृतिया थी। मेरी केथरीन लेवे से आपका एक पुत्र अवैध रूप से हुआ था, किन्तु आपने उससे विवाह कर लिया और पुत्र को वैध बना दिया। आपकी मृत्य ५ सितम्बर, १८७० को हुई। अपने समय में ड्यूमा अत्यन्त प्रसिद्ध लेखक थे। आपके उपन्यासों में बडो रोचकता है। यद्यपि उनके अधिकाश उपन्यास आज अधिक महत्त्वपूर्ण नही माने जाते, परन्तु प्रस्तुत उपन्यास 'द थ्री मस्कैटियर्स', जो १८४४ में प्रकाशित हुआ था, में मनोरजन और रोचकता का एक समन्वय मिलता है।

डार्टानन गेस्कन था, युवक था। वह पेरिस की ओर चल पडा। उसके पास अधिक सामान नही था। उसके पिता ने मोसिये द त्रिवेले के नाम उसे एक पत्र दे दिया था। सम्राट के तिलगो के कप्तान त्रिवेले के पास पहुचने के पहले ही डार्टानन एक झगडे मे पड गया और उसका घोडा और पत्र दोनो ही उससे बिछुड गए। लेकिन त्रिवेले को उसके पिता की याद आ गई और इसलिए उन्होने पुत्र से भी अधिक स्नेह-भरा व्यवहार किया।

डार्टानन को इसका खेद रहा कि उसे तुरन्त ही सम्राट के तिलगो के रेजीमेट मे स्थान मिलना असम्भव था। उसकी कल्पना थी कि वह उस विख्यात और गौरवमयी रेजीमेट मे अपना स्थान पा लेगा। किन्तु वह विवश था। त्रिवेल की आज्ञा की प्रतीक्षा करते हुए वह उनके समीप ही रहने लगा। वहा उसने बुद्धिहीनता से तीन तिलगो का अपमान कर दिया। तीनो क्रुद्ध हो उठे और उन्होने क्रमश उसे बारह, एक और दो बजे द्वन्द्वयुद्ध के लिए चुनौती दे दी। डार्टानन को लगा, अगर वह अपने पहले दो प्रतिद्वन्द्वियो के हाथो से बच भी गया तो तीसरे से बचना अवश्य कठिन होगा। जब वह नियत स्थान पर आया तो उसको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि जिस सबसे पहले व्यक्ति ने चुनौती दी थी वह आगे था और बाकी दो उसके पीछे खडे थे। जब उन तीनो तिलगो ने युवक गेस्कन का ऐसा साहस देखा तो वे बहुत प्रभावित हुए। वे लोग द्वन्द्व-युद्ध आरम्भ करने की तैयारी मे ही

---

१ The Three Musketeers (Alexander Dumas)

थे कि उसी समय कार्डिनल की रक्षक-सेना का एक दल आ गया। उन्होने आकर उनको चेतावनी दी कि द्वन्द्वयुद्ध की परम्परा अब वर्जित है। तीनो तिलगे रक्षक-दल के विरुद्ध हो गए और उन्होने अपनी तलवारे खीच ली। इस कार्य मे डार्टानन ने उनका साथ दिया और लडाई होने लगी। कुछ ही देर मे इन लोगो ने कार्डिनल के दल को हरा दिया और इसके बाद इनमे मैत्री स्थापित हो गई। तीनो तिलगो का नाम क्रमश ऐथोस, पार्थोस और ऐरेमिस था। डार्टानन अब उनका साथी बन गया।

निश्चय ही, इन तीनो व्यक्तियो के ये असली नाम नही थे। डार्टानन पहले इस विषय को नही जानता था। ऐथोस किसी समय बहुत धनी था और उसने दानशीलता मे सब कुछ व्यय कर दिया था। अब वह धनहीन और दुखी था। पार्थोस गर्वीला था और बडे बोल बोलने का शौकीन था। ऐरेमिस धार्मिक मनोवृत्ति का व्यक्ति था और एक बहुत ऊचे कुल की स्त्री से प्रेम करता था। डार्टानन को एक दूसरे रेजिमेट मे जगह मिल गई और उसने बोनाक्यो के भवन मे अपना निवासस्थान बनाया। नोनाक्यो धनी और उम्र-दार व्यक्ति था, जिसकी स्त्री कान्स्टेन्स सुन्दरी और तरुणी थी। वह सम्राज्ञी की सेवा मे जाती थी और उसकी वहा पहुच भी थी। ऐथोस के पास ग्रमोद नामक सेवक था जो उसी-के समान चुप रहता था। पार्थोस के सेवक का नाम मोस्केटोन था जो उसीके समान सुन्दर था। ऐरेमिस का सेवक वेजिन धार्मिक मनोवृत्ति का व्यक्ति था। डार्टानन ने भी एक नौकर रख लिया जो चालाक और साहसी था। इसका नाम था प्लेनचेट।

कुछ ही दिन मे डार्टानन को मालूम हुआ कि सम्राट के तिलगो और कार्डिनल के सैन्य-दल का सघर्ष वही तक सीमित नही था बल्कि सम्राट और कार्डिनल मे भी आपस मे चल रही थी। सारे राज्य मे कार्डिनल रिशलू सबसे सशक्त व्यक्ति था। सम्राट लुई तेरहवे को उससे घोर घृणा थी, जो उससे डरते भी थे और पूर्णतया उसके प्रभुत्व को स्वीकार करते थे। रिशलू आस्ट्रिया की सुन्दरी ऐना नामक महारानी का शत्रु था और इस शत्रुता का कारण यह था कि महारानी के सौन्दर्य ने उसके हृदय मे आग लगा दी थी और महारानी उसकी उस आग को बुझाने मे असमर्थ थी। दरबारी हलको मे वह विख्यात था कि अग्रेजो के सम्राट चार्ल्स प्रथम का एक प्रिय पात्र अग्रेज बर्मिघम का ड्यूक भी महारानी से प्रेम करता है। महारानी यद्यपि अपने पति सम्राट से घृणा करती थी फिर भी उसके प्रति अपने कर्तव्यो से च्युत नही होती थी, किन्तु इस सुन्दर ड्यूक को देखकर उसके हृदय मे कुछ ममत्व अवश्य छलक आता था।

एक दिन डार्टानन जब घर मे अकेला था, ऊपर की मजिल से पुकार आने लगी, "बचाओ, बचाओ।" वह तलवार लेकर उस ओर भागा और उसने अपने मकान-मालिक की युवती स्त्री को कुछ लोगो के चगुल से छुडा लिया। वह तुरन्त ही उस सुन्दरी के प्रेम-जाल मे फस गया। जब उसे यह मालूम पडा कि वह किसी भयानक जाल मे फसी हुई है तो उसने अपने को उसका रक्षक घोषित कर दिया और बर्मिघम के ड्यूक और महारानी की गुप्त मुलाकात के समय उनकी रक्षा करने का भी जिम्मा लिया। आस्ट्रिया की ऐना ने, जो कि महारानी थीं, ड्यूक को बारह जवाहरातो की एक पेटी दी। ड्यूक उसे इग्लैंड में अपने दुर्ग मे ले गया लेकिन इस सारी घटना का पता रिशलू को चल गया और उसने

सम्राट पर यह जोर दिया कि महारानी उनके सम्मुख अपने बारह जवाहरात पहनकर उपस्थित हो।

यह उत्सव एक हफ्ते के अन्दर ही किया जाने को था। महारानी को यह लगा कि उनकी बात अब छिप नही सकती थी। लेकिन कान्स्टेन्स ने डार्टानन को ड्यूक के समीप सन्देश लेकर भेजा। तीनो तिलगे अपने इस मित्र के साथ गए। यद्यपि उनपर कई हमले किए गए और एक-एक कर ऐथोस, पार्थोस और ऐरेमिस पराजित हो गए, फिर भी डार्टानन अन्त मे इग्लैड पहुच गया और ठीक समय पर महारानी के सम्मान की रक्षा करने के लिए बारह जवाहरात लेकर वापस आ गया। महारानी ने उसको हीरे की एक अगूठी इनाम दी और उसकी प्रिया कान्स्टेन्स ने उससे एकान्त मे मिलने का वायदा किया।

लेकिन जब वह एकान्त मे अपनी प्रिया से मिलने पहुचा तो उसे यह देखकर बडा खेद हुआ कि कोई उसकी प्रिया को पहले ही उडा ले गया था। कार्डिनल के गुप्तचर सब जगह लगे रहते थे। ब्रिटिश कुलीन विधवा लेडी द विण्टर की बहन मिलेडी नामक एक सुन्दरी युवती कार्डिनल की एक चालाक और भयकर गुप्तचर थी। डार्टानन को यह विश्वास हो गया कि उसकी प्रिया कान्स्टेन्स के बारे मे मिलेडी को ज्ञात है और वह उससे मिलने चला। लेकिन मिलेडी इतनी सुन्दर थी कि उसको देखकर वह अपने-आपको भूल गया। उसने डार्टानन को एक अगूठी दी। उस अगूठी को देखकर ऐथोस ने पहचान लिया कि मिलेडी ही उसका जीवन नष्ट करनेवाली स्त्री है। वही उसकी पहली पत्नी थी। बाद मे ऐथोस को ज्ञात हुआ कि वह एक वेश्या थी जिसने कई जुर्म भी किए थे। अब मिलेडी कार्डिनल की सेवा मे थी और वर्मिघम के ड्यूक की हत्या करने के षड्यन्त्र मे लगी हुई थी।

यद्यपि वर्मिघम का ड्यूक अग्रेज था और शत्रु भी था लेकिन तीनो तिलगे और डार्टानन उसकी रक्षा करने पर तुल गए। उन्होने लेडी द विण्टर को सूचना दी और उसने अपनी दुष्टा बहन को बन्दी बना लिया। लेकिन उस चालाक स्त्री ने अपने ऊपर नज़र रखनेवाले तरुण लेफ्टीनेण्ट फिल्टन पर जादू कर दिया और उसे फुसलाकर इसके लिए तैयार कर लिया कि वह ड्यूक पर छिपकर हमला कर दे। वर्मिघम का ड्यूक फिल्टन के घावो मे अपनी रक्षा नही कर सका और इसी बीच मिलेडी भागकर फ्रास पहुच गई। तीनो तिलगे उसके पीछे निकल पडे और उन्होने उसे अन्त मे गिरफ्तार कर लिया, पर तब तक वह वहा पहुच चुकी थी जहा कि कान्स्टेन्स ने शरण प्राप्त की थी। उसने उस युवती के गिलास मे ज़हर मिला दिया और जब डार्टानन वहा पहुचा तो उसकी प्रिया कान्स्टेन्स ज़हर पी चुकी थी और मर रही थी। तिलगो ने द विण्टर के साथ मिलकर न्याय किया और मिलेडी को हत्या करने के अपराध मे प्राण-दण्ड दिया। इसके बाद तीनो तिलगे पेरिस लौट आए। डार्टानन को सर का पद मिल गया और सम्राट और कार्डिनल का युद्ध पहले से भी अधिक तीव्रतर हो गया।

प्रस्तुत उपन्यास में इतिवृत्तात्मकता अधिक है और घटना-क्रम की रोचकता ही इसका मुख्य प्राणवन्त भाग है। इसमें लेखक ने प्रेम, षड्यन्त्र, हत्या इत्यादि मध्यकालीन विषयो को लेकर रोमाचक चित्रण करने का प्रयत्न किया है। इस उपन्यास में वातावरण का चित्रण भी बहुत सुन्दर हुआ है और विस्तार से लेखक ने अनेक छोटी-छोटी बातें भी गिनाई हैं। कथा अपने-आप में इतनी रोचक नहीं, जितनी कि अपने चित्रण में सफल हुई है।

विक्टर ह्यूगो

°

पेरिस का कुबड़ा
[द हचबैक ग्राफ द नोत्र दाम[1]]

ह्यूगो, विक्टर फ्रेंच उपन्यासकार विक्टर ह्यूगो का जन्म फ्रास में २६ फरवरी, १८०२ को हुआ। आपके पिता नेपोलियन की सेना में जनरल थे। आपको अच्छी शिक्षा-दीक्षा मिली। आपने बहुत जल्दी ही नाटक और कविता लिखना प्रारम्भ कर दिया। किंतु कलम पर जीवित रहना दुश्वार प्रतीत हुआ। फिर शीघ्र ही आप प्रसिद्ध हो गए तथा आपके सब आर्थिक सकट दूर हो गए। १८५१ में राजनीतिक कारणों से आपको फ्रास से निकाल दिया गया। परन्तु १८७० में जब आप देश लौटे, तो आपका भव्य स्वागत किया गया। २२ मई, १८८५ को आपका देहान्त हुआ। उस समय पेरिस में आपकी शवयात्रा के सम्मान में दस लाख व्यक्तियो की भीड उपस्थित थी। आपने अनेक महान उपन्यास लिखे है। प्रस्तुत उपन्यास 'द हचबैक ऑफ नोत्र दाम' इतिहास की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। इसका मूल फ्रेंच नाम 'नोत्र दाम द पारी' है।

छह जनवरी, चौदह सौ बयासी! भोर होते ही पेरिस मे खलबली मच उठी। आज दो कारणो से छुट्टी थी—आज ही सम्राट का दिवस था और आज ही मूर्खों का भोज। न्याय-प्रासाद मे लोग नाटक देखने के लिए इकट्ठे हो रहे थे। उस नाटक के बाद मूर्खों के पोप का चुनाव होनेवाला था और जो फ्लेनिस राजदूत आया था वह भी पेरिस मे रहने के कारण इस नाटक को देखने के लिए आनेवाला था।

लकडी के एक ऊचे मच पर यह खेल होनेवाला था। प्रासाद के एक विशाल हाल के कोने मे यह मच एक बहुत बडे सगमरमर के चबूतरे पर बना हुआ था। मच के निचले हिस्से मे अभिनेता लोग अपने वस्त्र बदलते थे। उसको सुन्दर वस्त्र लटकाकर चारो ओर मे ढक सा दिया गया था और सामने की ओर एक सीढी लगा दी गई थी। हाल मे जमा होने के बाद लोगो मे आपस मे मज़ाक होने रहे। कभी कोई ज़ोर से आवाज़ लगाता, कभी कोई ज़ोर से गाता। वे लोग एक-दूसरे से भद्दे मज़ाक भी कर रहे थे। लेकिन जब फ्लेनिस राजदूत के आने का समय हो गया, और जबकि ठीक बारह बजे नाटक प्रारम्भ होने को था, भीड मे कुछ असन्तोष के चिह्न दिखाई देने लगे। इस बीच विश्वविद्यालय के प्रमुख लोग आ गए और भीड के लोग उनपर ताने कसकर अपनी दिल की आग बुझाने लगे।

---

१ The Hunch Back of Notre Dame (Victor Hugo)—इस उपन्यास का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो चुका है 'पेरिस का कुबडा', अनुवादक शिवदानसिंह चौहान एव श्रीमती विजया चौहान, प्रकाशक हिंद पॉकेट बुक्स, दिल्ली।

अभी ये आगन्तुक बैठे भी नही थे कि घडी ने बारह बजाए।

भीड एकदम चुप हो गई और सबकी निगाह फ्लेनिस राजदूत की गैलरी की ओर मुड गई। समय निकल गया कोई राजदूत दिखाई नही दिया। भीड बेचैन हो गई और एक बार फिर गुस्से से भरी आवाज़े सुनाई देने लगी। जब यह लगने लगा कि भीड अब खतरनाक हो चली है तो ग्रीनरूम मे से पर्दा हटाकर एक व्यक्ति ऊपर आ गया। वह देवताओ के राजा जुपिटर का पार्ट करनेवाला था। वह सगमरमर के चबूतरे के किनारे पर पहुचकर रुक गया और उसने घोषणा की कि ज्योही महामहिम कार्डिनल आ जाएगे, नाटक प्रारम्भ हो जाएगा। भीड उसकी बात चुपचाप सुनती रही और ज्योही उसने बोलना खत्म किया, लोग तरह-तरह से चिल्लाने लगे और धमकिया देने लगे कि अगर नाटक तुरन्त ही प्रारम्भ नही किया गया तो भीड कुछ न कुछ सजा देगी। उसी समय एक अत्यन्त सुन्दर व्यक्ति बहुत थोडे-से कपडे पहने हुआ एक खम्भे की छाया मे से निकलकर जुपिटर की ओर बढ चला। उसने कहा, "जुपिटर, तुरन्त प्रारम्भ कर दो। वेलिफ और कार्डिनल जब आएगे तो मैं उनसे सब ठीक-ठाक कर दूगा।"

अभिनेता को अब कोई हिचकिचाहट नही रही और उसने ज़ोर से एलान किया, "नागरिको, हम इसी क्षण प्रारम्भ करते है।"

उसकी घोषणा को सुनकर बडी ज़ोर से जय-जयकार हुआ और उसके समाप्त होने के पहले ही रगमच पर चार अभिनेता चढ आए। नाटक बडा उबा देनेवाला था। केवल अभिनेताओ के वस्त्र ही दर्शको को आकर्षित कर सके। अभिनेताओ के वार्तालाप को हॉल मे केवल एक ही व्यक्ति गौर से सुन रहा था। उसका नाम था पियरे ग्रीनगाय। इसी व्यक्ति ने जुपिटर से नाटक प्रारम्भ करने को थोडी देर पहले कहा था। उसकी दिलचस्पी इसलिए थी कि वह नाटक स्वय उसीका लिखा हुआ था। अभी अभिनेता अधिक बोल भी नही पाए थे कि कार्डिनल, फ्लेनिस राजदूत और उनके असख्य नौकर हॉल मे घुस आए। अभिनेता रुक गए और सबकी आखे गैलरियो की ओर उठ गईं। पहले लोगो के ऊपर सम्मानित लोगो का आतक-सा छा गया और तुरन्त ही उन्हे याद आ गया कि आज मूर्खों का भोज था और उन्हे चाहे जैसा व्यवहार करने की स्वतन्त्रता थी। तब वे कार्डिनल और उसके साथियो पर ही भद्दे मज़ाक करने लगे।

इन विशिष्ट दर्शको के आने के पन्द्रह मिनट बाद फ्लेनिस राजदूत, जो लम्बा और प्रसन्नमुख व्यक्ति था, उठ खडा हुआ और उसने दर्शको से कहना प्रारम्भ किया कि नाटक को देखना चाहिए और पहले लोगो को मूर्खों का पोप चुन लेना चाहिए और उसने कहा, "घेण्ट मे हमारा अपना मूर्खों का पोप है। हम तो उसे इस तरह चुनते है कि भीड इकट्ठी हो जाती है जैसे यहा पर लोग इकट्ठे हैं और तब जिसकी भी इच्छा होती है वह एक सूराख मे से सिर निकालकर दूसरो की तरफ दात निकालकर हसता है और जो सबसे कुरूप चेहरा बनाने मे सफल हा जाता है, उसीको पोप चुन लिया जाता है। मैं प्रस्ताव करता हू कि आप भी मेरे देश की परिपाटी का आज अनुसरण करें।"

नागरिको को यह सलाह बहुत पसन्द आई और यह तय किया गया कि सगमरमर के चबूतरे के सामने जो छोटी चेपल थी, उसमें प्रतियोगी इकट्ठे हो जाए। एक के

बाद एक व्यक्ति चेपल की खिडकी के सामने आता और अपनी सूरत को भद्दा बनाकर हसने की चेष्टा करता। भीड मे कोलाहल होता और इतनी भयानक सूरते उस खिडकी पर दिखाई दी कि यह तय करना मुश्किल हो गया कि उनमे से सबसे ज्यादा बदसूरत कौन था। किन्तु अचानक एक पल भीड मे इतना प्रचण्ड कोलाहल हुआ कि मूर्खों का पोप निर्विवाद चुन लिया गया। वहा उपस्थित लोगो मे से आज तक किसीने इतना कुरूप मुख नही देखा था। मुह ऐसा था जैसे घोडे की नाल होती है। नाक चौखूटी मालूम देती थी। उसकी एक आख पर काटो की तरह भौह के बाल झुके हुए थे और दूसरी आख भयानक सूजन के नीचे दबी हुई थी। दात ऊबड-खाबड थे और उनमे से एक दात सूअर के दात की तरह सीग जैसा मोटे होठो मे से बाहर निकला हुआ था। जब उस मुख के बाद लोगो ने उस मुखवाले व्यक्ति को देखा तो भीड को आश्चर्य हुआ। कधो पर एक बहुत बडा कुब्बड था और उसका सतुलन जैसे बहुत आगे निकला हुआ पेट कर रहा था। हाथ और पैर बहुत बडे-बडे थे और पाव तो बिलकुल ही बराबर नही थे।

यह चेपल का घण्टा बजानेवाला क्वासीमोडो था, नोत्रदाम का कुबडा क्वासीमोडो, एक आख का क्वासीमोडो, जो पैर से लगडाकर चलता था। तुरन्त मूर्खों के पोप के वस्त्र लाए गए और कुबडे को पहना दिए गए और उसे एक रगीन पालकी मे बिठाकर मूर्खों की जमात के बारह अफसरो ने अपने कधो पर उठा लिया। जुलूस बन गया और नगर मे फेरी लगाने के लिए निकल पडा। थोडे ही लोग हॉल मे रह गए थे जो अब भी ग्रीनगाय के इस प्रयत्न को देख रहे थे कि किसी प्रकार नाटक समाप्त हो जाए। इसी वक्त किसीने पुकारा, "एस्मराल्डा, एस्मराल्डा! बाहर चौक मे आओ!" अब सब लोग यह देखने के लिए बाहर निकल पडे कि एस्मराल्डा कौन है।

ग्रीनगाय की अन्तिम आशा भी समाप्त हो गई। पेरिस निवासियो की मूर्खता को कोसता हुआ वह भी सडक पर निकल आया। इधर-उधर घूमने के काफी देर बाद वह प्लेस दि ग्रीव नामक स्थान पर आ गया। वहा एक अलाव-सा जल रहा था। वह उसकी ओर चला। आग के पास कुछ लोग घेरा डाले बैठे थे और मुग्ध नयनो से एक युवती को नाचते हुए देख रहे थे। उस सुन्दरी को देखकर ग्रीनगाय अपनी परेशानियो को भूल गया। वह पतली-दुबली, अत्यन्त सुन्दर देहवाली अपने पजो पर घूमती हुई, अपनी सुडौल बाहो को अपने सिर पर उठाए काली आखो से जिधर देखती थी उधर ही मानो लपट-सी उठने लगती थी। उसको देखकर स्पष्ट था कि वह कोई कजरिया थी। सैकडो लोग उसे देख रहे थे किन्तु एक व्यक्ति ऐसा था जिसकी आखो मे कुटिलता थी जैसे उनमे वासना का आनन्द भी लिया जा रहा था और दूसरी ओर घोर घृणा भी जाग रही थी। यह व्यक्ति लगभग पैतीस वर्ष का था। लेकिन वह गजा हो चुका था और उसकी भौह पर झुरिया पड चकी थी। उसके शस्त्र दिखाई नही दे रहे थे। युवती नाचते-नाचते रुक गई और उसने झुककर अपने पाव पर पडी हुई सफेद बकरी को बुलाया। बकरी उछल-कर खडी हो गई और अपनी मालकिन की आज्ञा का पालन करती हुई ऐसे तमाशे करने लगी कि भीड देखकर चकित रह गई।

खल्वाट व्यक्ति ने कठोर स्वर से कहा, "इसमे जादू मालूम देता है!" लेकिन

भीड के कोलाहल मे उसकी आवाज डूब गई और नर्तकी कधे फरफराकर फिर तमाशा दिखाने मे लग गई। कुछ देर बाद चौक के अधेरे कोने से एक स्त्री का चीत्कार सुनाई दिया, "ओ मिस्री कुतिया, क्या तू नही जाएगी!" उसकी आवाज मे ज्वार था और उसके शब्दो मे विक्षोभ अब अधिकाधिक प्रकट होने लगा था। उसी समय मूर्खों के भोज की मौज मे जुलूस इधर आ गया और सब लोग उसे देखने मे लग गए।

चेहरे पर गर्व की भावना लिए सबसे ऊपर बैठा था मूर्खो का पोप क्वासीमोडो। जब क्वासीमोडो को प्लीअर भवन के पास ले जाया गया तो खल्वाट व्यक्ति भीड मे से निकल आया। ग्रीनगाय ने उस आदमी को पहचान लिया। वह आर्चडीकन क्लोडे फ्रोलो था। उसने क्वासीमोडो के हाथ से उसके पोप-पद का राजदड छीन लिया। लोगो को लगा कि अब अमानुषिक बलशाली कुबडा इस पादरी के टुकडे-टुकडे कर देगा लेकिन यह देखकर उनके आश्चर्य की सीमा नही रही कि क्वासीमोडो पादरी के सामने घुटनो के बल बैठ गया और तब तक बैठा रहा जब तक कि पादरी ने उसके मुकुट और वस्त्रो को उतार कर फेक नही दिया। मूर्खो की बिरादरी इस बात से विक्षुब्ध हो उठी। उन लोगो ने पादरी पर हमला कर दिया होता, लेकिन कुबडा खडा हो गया और पादरी के सामने भयानक जानवर की तरह दात पीसता हुआ सा भीड पर झपटने को तैयार हो गया। अपने मालिक को आगे ले जाने के लिए वह भीड को इधर-उधर धक्का देने लगा।

ग्रीनगाय ने आश्चर्य मे इस विचित्र जोडे को वहा से चले जाते देखा और फिर वह उस नर्तकी के पीछे चल पडा। रात काफी बीत चुकी थी और इन पिछवाडे की सडक और गलियो मे, जिनमे होकर लडकी अपनी बकरी लिए चली जा रही थी, इक्का-दुक्का ही आदमी गुज़रता था। एक कोने पर वह मुडी और कुछ देर के लिए ओझल-सी हो गई। उसके बाद ही ग्रीनगाय को ऐसा सुनाई दिया जैसे लडकी ने चीत्कार किया हो। वह दौडकर उसके समीप पहुचा और उसने देखा कि दो आदमियो ने उसे पकड रखा था। वह उनसे छूटने की चेष्टा कर रही थी। उसने एक आदमी को पहचान लिया। वह क्वासीमोडो था। उसने उसमे इतनी ज़ोर का घूसा दिया कि वह नाली मे जा गिरा। क्वासीमोडो ने फिर लडकी को उठा लिया। उसी वक्त एक घुडसवार आ गया। उसके पीछे बारह तीरन्दाज़ थे। वे एकदम गली मे से निकल आए थे। उन्होने लडकी को उसके हाथो से छीन लिया। कुबडा पकडकर बाध लिया गया। उसका साथी भाग गया। नर्तकी ने घुडसवार से उसका नाम पूछा। अफसर ने उत्तर दिया, "कप्तान फी बस द सेत्योपर्स मेरा नाम है।"

लडकी ने कहा, "मैं तुम्हे धन्यवाद देती हू।"

कप्तान मूछो पर ताव देने लगा। लडकी मुडी और रात के अधेरे मे आगे बढ गई। सडक पर सन्नाटा छा गया था।

ग्रीनगाय को होश आ गया। अब वह बेचैन था क्योकि वह कही सो जाना चाहता था। लेकिन वह भटक गया और चोरो, वेश्याओ और गुडो के मोहल्ले मे पहुच गया। उसे गुडो के एक दल ने पकड लिया और अपने राजा के पास ले गए। यह सबसे बडा गुडा था जो बाकी सबपर राज्य करता था। पेरिस का यह अपराधी साम्राज्य बाहर के वैभव के साथ-साथ अपना भी अस्तित्व बनाए रखता था। चोरो के राजा ने यह निर्णय

दिया कि चोरो की बस्ती 'कोर द मिरेकिल्स' की कोई स्त्री यदि उसकी पत्नी बन जाए तो उसे छोड दिया जाए अन्यथा उसे तुरन्त फासी पर लटका दिया जाए। अनेक स्त्रियो ने उसे देखा और घृणा से मुह मोड लिया। और गुडो को मौका मिल गया। वे फासी का फदा उसके गले मे फसाने ही वाले थे कि लोग चिल्ला उठे, "एस्मराल्डा, एस्मराल्डा।" ग्रीनगाय ने मुडकर देखा—वही लडकी खडी थी। उसने अपने राजा से पूछा, "क्या इस आदमी को फासी पर लटका देने का इरादा किया है ?"

राजा ने कहा, "बिलकुल, मेरी बहन। हा, अगर तुम इससे शादी कर लो तो यह छूट जाएगा।"

नर्तकी ने अपने नीचे का होठ काट लिया और फिर कहा, "ठीक है। मै इससे शादी कर लूगी।"

उनके विवाह की रात भी वैसी ही असाधारण रही, जैसाकि अब तक का सब कुछ असाधारण था। जब ग्रीनगाय ने उससे प्रेम करने की चेष्टा की तो एस्मराल्डा ने एक लम्बा चाकू निकाला और उसकी हत्या कर देने की धमकी दी। वे लोग अलग-अलग कमरो मे सोए। बेचारे ग्रीनगाय को जमीन पर सोना पडा क्योकि उसके पास बिस्तर भी नही था।

क्वासीमोडो बीस साल का था। सोलह साल पहले वह गिरजे मे पाया गया था। वह अब वही घण्टा बजाता था। उस समय उस बच्चे को देखकर पालने के चारो ओर वृद्धाए एकत्रित हो गई थी लेकिन उसकी कुरूपता देखकर उन लोगो ने एक स्वर से यह घोषणा कर दी थी कि यह शैतान की औलाद है। और इसीलिए उन्होने यह भी निणय किया कि उसको जीवित ही जला देना उचित है। उसे वे लोग सचमुच जला ही देती किन्तु एक तरुण पादरी क्लोडे फ्रोलो ने उनके इस कार्य मे बाधा डाल दी थी। उसने चखचख करती बुढियो को धक्का देकर हटा दिया था और पालने के पास जाकर अपने हाथ बच्चे की ओर बढाकर उसने कहा था, "मैं इस बच्चे को गोद लेता हू।" पादरी ने उस बच्चे को अपना चोगा ओढा दिया और वहा से हटा लिया। पादरी के इस काम को देखकर स्त्रियो को बडा आश्चर्य हुआ और उनमे से एक ने कहा था, "क्या मैंने तुमसे पहले नही कहा था कि क्लोडे फ्रोलो एक जादूगर है !"

पादरी कोई साधारण आदमी नही था। गम्भीरता उसके मुख पर सदैव विराजती थी। उसकी आखें भीतर तक का भेद जानने की शक्ति रखती थी। अपने धार्मिक कार्य मे वह इतना तल्लीन रहता था कि अन्य पादरियो की तुलना मे स्पष्ट अलग-सा दिखाई देता था। क्वासीमोडो जैसे कुरूप को अपने साथ ले जाने के पहले उसने अपने जीवन की सारी ममता अपने छोटे भाई जॉहन पर केन्द्रित कर रखी थी। उसको भी उसने बचपन से पाला था।

जब कुबडा बडा हो गया तो पादरी भी आर्चडीकन के उच्च पद पर पहुच गया था। उसीने अपने प्रभाव से उसको गिरजे मे घण्टा बजानेवाले की नौकरी दिला दी। नोत्र दाम की ऊचाई पर वह भीमाकार घटा टगा रहता और उसकी रस्सी को नीचे से

पकडकर क्वासीमोडो हवा मे झूलकर झटके दे-देकर बजाता था। उसका गम्भीर निनाद सुनकर लोग इकट्ठे हुआ करते थे। तब से क्वासीमोडो के जीवन मे दो ही काम थे— या तो वह घण्टे बजाता या फिर अपने पालन करनेवाले पिता की देख-रेख करता। इन दोनो के प्रति उसे बडी ममता थी। उस विशाल घटे की गम्भीर गूज ने क्वासीमोडो को बहरा बना दिया था। अब वह मनुष्य के स्वर को सुन नही पाता था। इसलिए भी उसका जीवन इतना एकातमय हो गया था।

पादरी के हृदय की सारी ममता अपने भाई जॉह्न पर केन्द्रित थी किन्तु जॉह्न ने उसके जीवन मे एक निराशा भर दी। वह क्लॉडे के चरणो पर चलकर धर्म और ज्ञान के प्रति आकर्षित नही हुआ बल्कि जुआ खेलना, सरायो मे आना-जाना, पानी की तरह धन बहाना और व्यभिचारी के रूप मे नाम कमाना उसे अधिक भाता था। क्लॉडे ने हर तरह से उसे डाट-फटकारकर देख लिया किन्तु उसके सब प्रयत्न विफल हो गए। तब इस दु ख को भूलने के लिए क्लॉडे अपने पुस्तकालय मे अपने-आप बन्द हो गया और तात्रिक क्रियाओ की सिद्धि करने लगा। शीघ्र ही वह जादूगर के नाम से प्रसिद्ध हो गया। अशिक्षित जनता के लिए गम्भीर ज्ञान और जादू मे जैसे कोई अन्तर ही नही था।

कप्तान फीबस द्वारा गिरफ्तार हो जाने के बाद क्वासीमोडो को एक मजिस्ट्रेट के सामने खडा किया गया। उसपर रात को दगा करने का अभियोग लगाया गया कि वह एक युवती पर अत्याचार कर रहा था और सम्राट के सिपाहियो के काम मे रुकावट डाल रहा था। न्यायाधीश ने उसे कोडे लगाने की आज्ञा दी और प्लेस द ग्रीव के पास दड-स्थान नियत किया, जहा ग्रीनगाय पहले ही दिन एस्मराल्डा के सौदर्य से अभिभूत हो गया था। एस्मराल्डा के नृत्य मे व्याघात डालनेवाली बुढिया का नाम सिस्टर ग्युडोले था। पूरे सोलह वर्ष के लिए प्लेस द ग्रीव के पास एक छोटी कुठरिया मे वह प्रायश्चित्त और तपस्या करने को घुसी थी और आज भी वहा मौजूद थी। उस कुठरिया मे उसे कानून के बल पर किसीने बन्द नही किया था बल्कि उसने स्वय अपनी तपस्या के लिए वह स्थान चुन लिया था।

वह अपने यौवन मे बहुत ही अधिक सुन्दरी थी किन्तु उसने अपने को विलास और आनन्द मे बहा दिया था। बीस साल की आयु मे ही उसने यह देखा कि उसका अन्तिम प्रेमी भी उसे छोड गया था क्योकि उसका सौन्दर्य विलुप्त होने लगा था। उसकी गोद मे एक लडकी थी और उसके पास अब कोई नही था। वह लडकी ही उसके जीवन का एकमात्र सहारा रह गई थी। एक दिन जब कि बच्ची लगभग एक वर्ष की थी वह उसे घर मे सोता छोडकर बाहर चली गई। जब वह लौटकर आई तो उसे पालना खाली मिला और अपनी प्यारी बच्ची के पाव का एक स्लीपर ही उसके हाथ पड सका। बच्ची को उडा ले जानेवालो के हाथो से शायद वह वहा छूट गया था। उसी दिन प्रात काल कजरो का एक जत्था पडोस मे ठहरा था। इसलिए यह सोच लिया गया कि बच्ची को ले जानेवाले वही लोग होगे।

उसी दिन बाद मे जब माँ अपनी बच्ची को ढूढ-ढाढकर लौटी तो निराशा उस-पर छा गई। उसे अपने घर मे बच्चा पडा हुआ मिला जो एक छोटे-से राक्षस जैसा था।

जिसकी एक आख थी और जो लगडा था। तब वह व्याकुल हो गई। शोक और क्रोध ने उसे घेर लिया और वह पेरिस चली गई। अपनी बच्ची का स्लीपर भी उसके साथ ही चला गया। उसने यह सोचकर कि यौवन के पापो के लिए परमात्मा ने उसे यह दण्ड दिया था, उसने प्लेस द ग्रीव मे मादाम रोलेन्द की कुठरिया मे अपने-आप को बन्द कर लिया और तब से वह वही रहती थी। कोई दयालु जो कुछ भी रोटी के टुकडे वहा फेक जाता था, उसी से उसका जीवन-निर्वाह हो रहा था। उसका असली नाम पक्वेथला चान्ती फुकुरी था। किन्तु लोग उसे सिस्टर ग्युडोले कहते थे। जो बदसूरत बच्चा उसके मकान मे छोड दिया गया था उसको आर्चबिशप ने अपने सरक्षण मे लेकर उसके अन्दर बैठे शैतान को बाहर निकाल लिया था और उसे नात्र दाम मे पालन के लिए भेज दिया था।

ग्युडोले का स्थान ऐसी जगह था जहा क्वासीमोडो को दड-स्वरूप बन्द कर दिया गया था। वह बेचारा बहरा अपने दड के बारे मे कुछ भी नही जानता था। उसे अपने दुर्भाग्य के बारे मे कुछ भी पता नही था। उसने बिना किसी विरोध के पहिये मे अपने-आप को बाध लेने दिया, लेकिन जब उसने धातु की गाठोवाला चमडे का कोडा देखा जो-कि उसपर बजने वाला था तब उसकी समझ मे आया। जब वह कोडा उसकी नगी कुरूप पीठ पर बजनेलगा तब उसने छूटने के लिए एक व्यर्थ सघष किया और उसके बाद उसने चेष्टाए छोड दी और चुपचाप सब कुछ सहता रहा। जब काफी कोडे लग चुके और खून उसके शरीर पर बहने लगा तब उसको लगभग घण्टे-भर के लिए फिर बन्द कर दिया गया, ताकि अपने शरीर की पीडा के साथ-साथ वह बाहर खडी भीड के व्यग्य और उपहास को भी सहता रहे।

जहा एक दिन पहले वह मूर्खों का पोप बनकर विजेता के रूप मे ले जाया गया था, वही अब उसे यातना मिल रही थी। जब वह कोठरी मे बन्द था, क्वासीमोडो ने एक खच्चर पर चौक मे एक पादरी को जाते हुए देखा। उसे देखकर उस कुबडे के घृणित मुख पर एक विचित्र प्रकार की विनम्रता आ गई। वह हर्षोन्मत्त हो उठा। उसे ऐसा लगा जैसे वह इस यातना से छूटनेवाला है, लेकिन ज्योही पादरी को मालूम पडा कि क्वासीमोडो को यातना दी जा रही थी, उसने खच्चर मोडा और शीघ्रता से उसे हाक ले चला। क्वासीमोडो ने एक ही व्यक्ति को प्यार किया था और वह भी उसे छोडकर चला गया था। यही व्यक्ति था जिसके कारण क्वासीमोडो को यह यातना सहनी पड रही थी। इसी पादरी ने उसे आज्ञा दी थी कि वह एस्मराल्डा को पकड लाए और जब क्वासीमोडो ने यह प्रयत्न किया था तब वही उसके साथ भी गया था।

पादरी जब दूसरी ओर चला गया तब क्वासीमोडो देह और आत्मा दोनो से पराजित होकर और तीव्र दाह से व्याकुल हो चिल्ला उठा, "पानी, पानी !" भीड ने उसकी करुण पुकार सुनकर उसपर पत्थर फेके और नालियो से कीचड ला-लाकर उसपर उछाला। जब वह तीन बार चिल्ला चुका तो उसने यह देखा कि उसकी कुठरिया की और एक युवती चली आ रही है। उसके पीछे एक बकरी थी। क्वासीमोडो तुरन्त पहचान गया कि उसने इसी लडकी को उठा ले जाने की चेष्टा की थी। उसने यह सोचा कि उसे बधा

हुआ और असहाय देखकर शायद वह उसे मारने के लिए आ रही है। वह भयभीत हो उठा और उससे बचने के लिए भयकर चेष्टा करने लगा। लेकिन युवती ने उसपर हाथ नही उठाया। उसने अपनी कमर मे से एक पानी की बोतल निकाली और क्वासीमोडो के जलते हुए होठो से लगा दी। पानी पीते हुए क्वासीमोडो की लाल सुर्ख आखो से आसुओ की धारा बह चली। इस करुण दृश्य को देखकर लोगो के हृदय हिल गए।

किन्तु तभी सिस्टर ग्युडोले का कठोर स्वर सुनाई दिया। वह अपनी कुठरिया मे से देख रही थी। नर्तकी को कजरिया समझकर वह एकदम क्रोध से पागल-सी हो गई और चिल्लाने लगी, "ओ मिस्र की कुतिया, तुझपर परमात्मा का घोर क्रोध टूटे ! तुझ-पर सैकडो शाप टूटे ! तू अभिशप्त हो ! तेरा सवनाश हो !" एस्मराल्डा जब सामने की सीढियो से नीचे उतरने लगी तो तपस्विनी ग्युडोले अत्यन्त क्रोध से चिल्लाने लगी, "उतर जा नीचे ! उतर जा ! ओ, बच्चे चुरानेवाली मिस्री औरत, तू भी अब शीघ्र ही यही बन्द होती हुई दिखाई देगी !"

क्वासीमोडो नोत्र दाम लौट गया। फिर वही घटे बजाने का काम था, लेकिन अब पहले जैसा उत्साह उसमे शेष नही था। कैद होने के पहले वह या तो गिरजे की बात सोचता था या आर्चडीकन की, लेकिन अब उसके दिमाग मे बार-बार उस देवदूत जैसी स्त्री की कल्पना आती, जिसको उसने उडा ले जाना चाहा था, लेकिन फिर भी जिसने अपनी असीम करुणा मे उसको पराजित कर दिया था।

उसी एस्मराल्डा की स्मृति आर्चडीकन के मानस मे भी गहरी होती चली जा रही थी। वह भी नोत्रदाम के एक गुप्त कक्ष मे घटो एकाकी उसके विषय मे सोचा करता। उसको पता चल गया था कि ग्रीनगाय से उस नर्तकी का विवाह हो गया था किन्तु वह अभी भी कुमारी थी और उस नाटककार से पूछकर उसने यह भी पता चला लिया था कि एस्मराल्डा का ध्यान फीबस नाम के एक व्यक्ति पर केन्द्रित था लेकिन वह यह नही बता पाया कि यह फीबस कौन था।

एस्मराल्डा सडको पर नाचती थी। अब उसके साथ बकरी के अलावा ग्रीनगाय भी खडा रहता। वह और ग्रीनगाय दोनो ही एक-दूसरे के प्रति इतने आकर्षित नही थे जितने कि दोनो बकरी के प्रति आकर्षित थे। नर्तकी उस नाटककार के साथ केवल इस-लिए रहती कि उसे मरने से बचा सके और नाटककार नर्तकी के साथ इसलिए रहता था क्योकि उसके साथ रहने के कारण उसे खाने और रहने का ठौर मिल जाता था।

कई हफ्ते बीत गए। कप्तान फीबस ने जब एस्मराल्डा को बचाया तो उसके बाद अचानक ही एक दिन फिर वह मिल गया और दोनो मे यह निश्चय हुआ कि एक बदनाम सराय मे दोनो का मिलन हो। फीबस के शराबी साथियो मे एक व्यक्ति का नाम था जॉह्न, जो आर्चडीकन का भाई था। एस्मराल्डा से मिलने के नियत समय के पहले फीबस ने एक सराय मे अपने मित्र के साथ कई घटे बिताए। जब दोनो चले तो उनके पीछे आर्चडीकन भी छिपकर चलने लगा। उसने जॉह्न और फीबस की बातो से जान लिया कि आज फीबस कहा जा रहा है। जब फीबस ने जॉह्न को छोडा तो वह शराब मे

धुत नाली मे गिर गया था। कप्तान फीबस अकेला ही चल पडा। उसे यह ज्ञात नही था कि आर्चडीकन क्लोडे फ्रोलो छिपकर उसका पीछा कर रहा है। आर्चडीकन ने अनेक चालाकिया करके इन दोनो प्रेमियो द्वारा नियत किए गए कमरे की बगल मे ही एक कमरा ले लिया। कुछ क्षण तक वह एस्मराल्डा और फीबस को दीवार की एक सन्धि से देखता रहा और अचानक ही एक भयानक-सी ईर्ष्या और क्रोध से भर गया। वह आवेश से उनके कमरे मे घुस आया और उसने मद-विह्वल कप्तान फीबस को छुरी से गोद दिया। एस्मराल्डा मूर्च्छित हो गई। और जब उसे होश आया तब पहरा देनेवाले सिपाही आ गए थे। फीबस रक्त के दलदल में पड़ा हुआ था। लेकिन पादरी का कोई निशान भी वहा नही था। वह उस खिडकी मे से निकल भागा था जो नदी की ओर खुलती थी।

नर्तकी पर हत्या का दोष लगाया गया। कहा गया कि शैतान ने उसकी इसमे सहायता की है। इस बात से न्यायालय को कोई मतलब नही था कि कप्तान अब जल्दी-जल्दी ठीक होता चला जा रहा था। वह मरा नही था। एस्मराल्डा ने पहले अपने अपराध को स्वीकार नही किया, लेकिन जब उसे शारीरिक यातनाए दी गईं, तब उसने स्वीकार कर लिया कि वह चुडैल है, जादू जानती है और कप्तान की हत्या उसीने की है। नोत्रे दाम की विशाल मेहराब के नीचे उसे प्रायश्चित्त-स्वरूप तप करने की आज्ञा मिली और उसके बाद उसे यह दड दिया गया कि उसे प्लेस ग्रीव मे ले जाया जाए और गरदन मे फदा डालकर फासी पर लटका दिया जाए। जब यह दड उद्घोषित कर दिया गया तो न्याय-प्रासाद के एक अधेरे तहखाने मे उसको डाल दिया गया। पेरिस की सडको पर जो स्वच्छन्द आनन्द की प्रतीक थी, जो तितली की तरह हलकी थी, उसे भारी जजीरो मे जकडकर अन्धकार मे डाल दिया गया। सब उसे यह कहते थे कि फीबस मर चुका है, इसलिए जीवित रहने की उसकी कामना भी समाप्त हो चुकी थी। वह भी यह चाहती थी कि मृत्यु उसे शीघ्रातिशीघ्र ग्रस ले।

बन्दीगृह मे उसके पास एक व्यक्ति आया। वह पादरी आर्चडिकन क्लोडे फ्रोलो था। उसको देखकर वह चौंक उठी। पादरी ने बात को छिपाया नही। उसने अपना प्रेम प्रकट कर दिया। उसने बताया कि उसीने उसको उडवा ले जाने की चेष्टा की थी और वही फीबस की हत्या का कारण था। उसने फिर कहा, अगर तू मेरे साथ देहात मे निकल चलेगी तो मैं तुझे बन्दीगृह और मृत्यु से बचा दूगा।"

किन्तु विक्षोभ से उसने इसे अस्वीकार कर दिया और कहा, "तुम्हारे साथ जाने की बजाय मैं मर जाना अधिक पसन्द करती हू।" पादरी क्रोध से उसको छोडकर चला गया।

नियत दिन आ गया। नोत्रे दाम की विशाल मेहराब के नीचे एस्मराल्डा को लाया गया और वहा उसने मृत्यु के लिए अपनी आत्मा को तैयार किया। उस दिन धार्मिक क्रियाए करानेवाला पादरी कोई अन्य नही स्वय क्लोडे फ्रोलो था। उसने अपना कार्य करते वक्त धीरे से लडकी से कहा, "अब भी मैं तुझे बचा सकता हू।" किन्तु युवती ने उसकी बात को फिर ठुकरा दिया।

जब उसे फासी के फन्दे की ओर ले जाया जाने लगा तो उसकी निगाह पडोस के

घर की एक खिडकी की ओर उठी और उसे यह देखकर अपार हर्ष हुआ कि वहा फीबस खडा था। उसने उसे आवाज दी, लेकिन वह शीघ्र ही वहा से हट गया। उसके साथ एक औरत और थी। यह देखकर एस्मराल्डा मूर्च्छित होकर गिर पडी। नोत्रे.दाम के चारो ओर जो भीड इकट्ठी हुई थी वह नर्तकी को देखने मे इतनी व्यस्त थी कि किसीने भी यह नही देखा कि क्वासीमोडो गिरजे के ऊपर चढकर बैठा हुआ था। किसीने यह भी नही देखा कि उसने ऊपर से नीचे तक एक रस्सी बाधकर लटका रखी थी। ज्योही एस्मराल्डा का शरीर मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिरा, क्वासीमोडो बिजली की तेजी से रस्सी पकडकर नीचे फिसल आया मानो कोई बद खिडकी के शीशे के ऊपर फिसलकर नीचे आ गई हो। पलक झपकते वह लडकी के पास आ गया। फिर अपनी भयानक मुट्ठिया भीचकर उसने इतनी ज़ोर से घूसे लगाए कि युवती को पकडनेवाले दोनो सैनिक मुह के बल धरती पर गिर गए। क्वासीमोडो ने नतकी को उठा लिया और उसे तेजी से लेकर नोत्रे दाम की मेहराब की ओर भाग चला और इस समय वह चिल्ला रहा था, "धमस्थान ! धमस्थान !" एक बार गिरजे मे घुस जाने के बाद युवती कानून की पकड के बाहर हो गई थी।

क्वासीमोडो उसे ऊपर के हिस्से मे ले गया और उसे एक छोटे-से कमरे मे लिटा दिया। फिर उसने उसे शय्या पर सुलाया और उसके लिए भोजन का भी प्रबन्ध किया। उसने कहा, "दिन मे तुम यही रहा करना, लेकिन रात को तुम सारे गिरजे मे भले ही घूम सकती हो। लेकिन रात और दिन, कभी गिरजे के बाहर मत निकलना वरना तुम्हे वे लोग मार डालेगे और वह मेरी मौत के समान होगा।" उसी शाम को एस्मराल्डा के कमरे मे उसकी बकरी भी आ गई।

जब यह घटना क्लोडे फ्रोलो को पता चली तो वह समझ गया कि अब गिरजे मे युवती की देखभाल करनेवाले क्वासी मोडो को ठीक करना होगा। और अब क्रोध से वह उस युवती को वहा से निकालने की योजना बनाने लगा। उसने ग्रीनगाय को बुलाया और उस सीधे-सादे कवि से कहा, "एस्मराल्डा की रक्षा के लिए यह आवश्यक है कि उसे नोत्रेदाम से बाहर कर लिया जाए। क्या तुम कोई ऐसी तरकीब सोच सकते हो, जिससे ऐसा सम्भव हो सके ?"

काफी बहस करने के बाद ग्रीनगाय ने स्वीकार कर लिया कि वह अपने साथी गुडो और लुच्चो को 'कोर द मिरेकल्स' मे उकसाएगा। वे लोग गिरजे पर हमला करेंगे और नर्तकी को उडा ले जाएगे। दूसरा दिन बीत गया, रात आ गई। क्वासीमोडो रात को पहरा देते हुए अपनी फेरिया लगा रहा था कि उसने देखा, गिरजे की ओर एक विशाल भीड चली आ रही है। यह गुण्डो की सेना थी। गुण्डो ने विशाल द्वार पर कुल्हाडियो, बेलचो और अन्य आयुध लेकर आक्रमण प्रारम्भ कर दिया। लेकिन वे लोग अभी कुछ कर भी नही पाए थे कि क्वासीमोडो ने मेहराब के ऊपर चढकर एक बड शहतीर को नीचे धकेल दिया। वह इतने वेग मे भीड पर गिरा कि लगभग बारह आदमी वही के वही मर गए। अब गुण्डो ने आवेश के साथ उस शहतीर को उठा लिया और वे सब मिलकर उस शहतीर को वेग से बढाकर विशाल द्वार मे टक्कर देने लगे। उनका हमला पहले से भी अधिक भयानक हो गया। छत की मरम्मत के लिए मजदूरो ने बहुत-से पत्थर ऊपर इकट्ठे

किए थे। उनमे से बहुत-से पत्थर अब भी पड़े हुए थे। क्वासीमोडो उन विशाल पत्थरो को उठा-उठाकर नीचे फेकने लगा।

नीचे भयानक •उत्पात और हाहाकार होने लगा। शीघ्र ही पत्थर समाप्त हो गए लेकिन क्वासीमोडो फिर भी पराजित नही हुआ। उसने बडे-बडे कढाहो मे जमे हुए सीसे के नीचे आग सुलगा दी और जब सीसा पिघल गया तो उसने उन कढाहो को नीचे की ओर लुढका दिया। गरम-गरम पिघलते हुए सीसे के स्पर्श से अनेक आक्रमणकारी जल उठे और भगदड मच गई। किन्तु शीघ्र ही पादरी का भाई जॉह्न एक सीढी ले आया और उसने और उसके साथियो ने गिरजे के सामने की ओर उसको अडा दिया और वह उसपर चढने लगा। उसका इरादा था कि अस्सी फुट की ऊचाई के ऊपर दीखती गैलेरियो पर से एक पर वह किसी प्रकार चढ आया। ज्योही जॉह्न गैलेरी मे चढा, दूसरे आदमी के चढने के पहले ही क्वासीमोडो वहा पहुच गया और उसने सम्पूण शक्ति लगाकर उस सीढी को पीछे धकेल दिया। वह सीढी नीचे की भीड के ऊपर जाकर अर्रा पडी। कई आदमी, जो उसपर चढे हुए थे, नीचे गिरकर मर गए और सीढी के गिरने से कई आदमी बुरी तरह जख्मी हो गए। और तब भीम-शक्ति से क्वासीमोडो ने जॉह्न को उठा लिया और नीचे फेक दिया। इसी बीच भयभीत नागरिको ने सम्राट के प्रहरियो को बुला लिया था। ज्योही गुण्डे दूसरी सीढिया लगानेवाले थे, सिपाहियो ने उन्हे पीछे से घेर लिया। कप्तान फीबस ने भीड को मारना शुरू किया और शीघ्र ही वह तितर-बितर हो गई। अब क्वासीमोडो को यह निश्चय हो गया कि अब आक्रमण का कोई भय नही था, वह एस्मराल्डा की कोठरी मे भागकर गया। उसे यह देखकर अत्यन्त खेद हुआ कि कोठरी खाली थी, एस्मराल्डा चली गई थी।

जब जोरो से लडाई हो रही थी, पादरी क्लोडे फ्रोलो ग्रीनगाय के साथ गिरजे मे एक ऐसे गुप्त द्वार से घुस आया था जिसमे नदी की ओर से प्रवेश करना पडता था। पादरी अपने छद्म वेश मे था और जब वह भीतर आया, युवती उसे पहचान नही सकी। वह केवल ग्रीनगाय से ही बाते करती रही। जब पादरी ने उसे अपना परिचय दिया तो एस्म-राल्डा भयभीत हो गई। उसने फिर अपना प्रेम प्रकट किया और कहा, "मै प्रतिज्ञा करता हू कि मैं तेरी रक्षा कर दगा किन्तु शर्त यह है कि तुम मेरे साथ रहोगी।" किन्तु जब उस युवती ने फिर मना कर दिया तो वह उसे प्लेस द ग्रीव मे पकडकर ले गया और सिस्टर ग्युडोले की कोठरी के सामने आकर बोला, "ग्युडोले, यह है वह स्त्री जिससे तू घृणा करती, है ! इसको तब तक पकड रख जब तक मैं सम्राट के सैनिको को नही ले आता।"

बुढ़िया ने चुडेल की तरह उस स्त्री को पकड़ लिया और एस्मराल्डा अपने-आप को उससे नही छुडा सकी। किन्तु इस दौरान सिस्टर ग्युडोले अपने दुर्भाग्य की कहानी भी उसे सुनाती गई और अत मे उसने उस स्लीपर को दिखाया जो उसकी अपनी बच्ची का था और जिसे वह सोलह वर्षो से अपने पास रखे हुए थी। एस्मराल्डा की आखे जैसे फट गई। उसने अपनी छाती पर लटकते एक लौकिट को तोड दिया और वेसी ही एक छोटी-सी चीज, उस स्लीपर की जोडी, उसके सामने रख दी। मा और लडकी ने एक-दूसरे को पह-चान लिया। सिस्टर ग्युडोले ने आवेश और क्रोध से अपनी कोठरी के दरवाज़े की एक

सलाख तोड दी और वह युवती को अन्दर ले आई ताकि आनेवाले सैनिको से उसको छिपा सके किन्तु यह अब व्यर्थ था। वह उसकी रक्षा करना चाहकर भी कुछ नही कर सकी। सिपाहियो ने उसे मार डाला। एस्मराल्डा को उन्होने फासी पर चढा दिया और वह मर गई। सिपाहियो को उसके समीप पहुचाकर गिरजे की एक ऊची गैलेरी पर क्लोडे फ्रोलो चला गया था ताकि वहा से फासी पर लटकती युवती को देख सके। अभी वह उसके लटकते शरीर को देख ही रहा था कि क्वासीमोडो पीछे से आ गया और उसने उसको उठाकर छज्जे के ऊपर से वेग से पृथ्वी पर दे मारा। गिरते ही क्लोडे फ्रोलो का सिर फट गया।

इसके बाद किसी ने भी क्वासीमोडो को नही देखा। लेकिन कुछ वर्ष बाद जिस तहखाने मे एस्मराल्डा को रखा गया था, उसके खोलने पर हड्डियो के दो ढाचे आलिंगन मे लिपटे हुए मिले—एक उस युवती का था, दूसरा कुबडे का। कुबडे की गरदन मे झटका नही लगा था। इससे यह प्रमाणित हुआ। कि उसे फासी नही दी गई थी। लोगो ने यह अनुमान लगाया कि शायद उसने यह मृत्यु अपने मन से स्वीकार की थी।

प्रस्तुत उपन्यास म रोमाचक घटनाए ही नहीं, तत्कालीन समाज का बडा ही सशक्त वर्णन भी किया गया है। इसमें लेखक ने मनुष्य की आत्मा को दिखाया है। अधिकार और दलित चेतना का, सौन्दर्य और ममता का बहुत ही सुन्दर चित्रण इसमें हुआ है।

अन्तिम दिन

[द लास्ट डज ऑफ पोम्पेई[1]]

लिटन, एडवर्ड बुलवर अंग्रेजी लेखक लिटन के पिता का नाम था जनरल अर्ल बुलवर। आपका जन्म २५ मई, १८०३ को लंदन में हुआ था। १८१३ में अपनी माता के स्वर्गवासी होने पर, एडवर्ड ने उनका 'लिटन' नाम भी अपने नाम के साथ जोड लिया। आप कवि थे। २२ वर्ष की अवस्था में आपने विवाह किया, किन्तु वह असफल रहा। फिर भी आपने अनेक उपन्यास, काव्य और अत्यन्त सफल नाटको की रचना की। आपके कार्य में कोई व्याघात नही पडा। बाद में आपने पार्लियामेंट में काम किया। आप ब्रिटिश मन्त्रिमडल के सदस्य भी रहे। १८६६ में आपको 'बैरन' का पद प्राप्त हुआ। आपकी मृत्यु १८ जनवरी, १८७३ को हुई।

प्रस्तुत उपन्यास 'द लास्ट डेज ऑफ पोम्पेइ' १८३४ में छपा। यह ऐतिहासिक रचना है। जिसमें वातावरण का चित्रण बहुत ही प्रभावोत्पादक बन पडा है।

बडी सुन्दर दीवारे थी रोमन साम्राज्य के उस नगर की। उन दीवारो के भीतर अनेक लोग अपने वैभव एव विलास के साथ रहा करते थे। उस दीवारवाले नगर को वे पौम्पिआई कहा करते थे। उसमे छोटी-छोटी दुकाने थी, छोटे-छोटे महल थे। क्रीडाघर, रगशाला और नाट्यगृह सभी कुछ वहा थे। मानो किसी साम्राज्य की सारी अच्छाइया और बुराइया अपने छोटे रूप मे वहा इकट्ठी हो गई थी।

वहा नावे चलती थी, समुद्री जहाज़ चलते थे और खाडी का पानी शीशे की तरह चमकदार था, जो कभी-कभी बहुत धनी लोगो के जहाज़ी बेडो से झूम उठते थे। और प्लीनी की आज्ञा उन सब जहाज़ी बेडो पर चलती थी।

नेपल्स से एथेन्स का निवासी ग्लॉकस लौटकर आया था। इस समय वह क्लॉडियस के साथ बैठा था। दोनो उठती-गिरती लहरो को देख रहे थे। क्लॉडियस जुए मे जीतने मे सिद्धहस्त था और इस सुदूर के यूनानी को योही पराजित कर देता था। उसका धन ले लेता था। लेकिन यूनानी को धन से घृणा थी, क्योकि रोम ने उसके नगर को जीत भी रखा था। वे लोग प्रेम की बात कर रहे थे और ग्लॉकस ने कहा कि वह सुन्दरी जूलिया से विवाह नही करना चाहता, हालाकि वह बहुत पैसेवाली थी और उसके प्रति आकर्षित भी थी। एक बार नेपल्स मे मिनर्वा देवी के मन्दिर मे ग्लॉकस को बहुत दिनो पहले एक ग्रीक सुन्दरी मिली थी, लेकिन उसको देखते ही देखते एक दूसरा युवक उसे

---

1 The Last Days of Pompeii (Edward Bulwer Lytton)

अपने साथ ले गया था और तब से ग्लॉकस का मन ससार के सुखो से हट गया था। अब उसे किसी बात मे ऐसी दिलचस्पी नही होती थी जैसी कि उसकी आयु माग सकती थी। रात हो गई थी पोम्पिआई मे ग्लॉकस को ईयोन मिली ओर उसे मालूम था कि वह उसे प्यार करती थी। वह लडकी और उसका भाई ऐपीसिडीज एक धनी मिस्री की देखभाल मे थे। मिस्री का नाम था अर्बासीज। अर्बासीज की इच्छा थी कि वह ईयोन को अपनी बना ले और इसीलिए जो जादू की विद्या वह जानता था, बार-बार उसको वह दिखाया करता था। अर्बासीज ने एपीसिडीज को देवी आईसिस के मन्दिर मे पुजारी बनवा दिया। वहा केलेनस नामक एक व्यक्ति था, जिसको उसने उसकी देख-रेख करनेवाला बना दिया।

मिस्री अपने-आप को एपीसिडीज के सामने प्रकट करने का शौकीन नही था, और इसीलिए उसको पता नही चल पाया कि ईयोन और ग्लॉकस मे पारस्परिक सम्बन्ध बढ गए थे और वे लोग रोज मिला करते थे। लेकिन जब उसको मालूम पडा तो उसने यही कोशिश की कि वे ग्लॉकस को दूर करने का यत्न करे और उसने ईयोन का अपने घर निमन्त्रित किया। जब वह उसके घर आई तो उसने बडे सम्मान से उसका स्वागत किया और उसका भय दूर किया। बातो ही बातो मे उसने उसको बताया कि वह उससे प्रेम करता है और चाहता हे कि वह उसकी हो जाए। लेकिन ईयोन शरमा गई और उससे कहा कि तुम मुझे चाहते हो, यह ठीक है, लेकिन मै किसी दूसरे को चाहती हू। अर्बासीज को यह सुनकर क्रोध आया और उसने डरावने ढग से उसके कान मे फुसफुसाया, "तुम उसकीभुजाओ मे नही जा पाओगी। तुम मेरी जादू की शक्ति नही जानती। मै तुम्हे कब्र मेसुला दूगा।"

अधी फल बेचनेवाली लडकी निदिया थैसाली की रहनेवाली थी। उसको ग्लॉकस ने खरीद लिया था, क्योकि उस दासी पर बहुत अत्याचार होते हुए देखकर उसका मन पसीज गया था। अब वह ईयोन की सेवा मे रहती थी। वह मन ही मन ग्लॉकस को प्यार करती थी, उसके लिए वफादार थी। अर्बासीज के घर की यह घटना उसने ग्लॉकस और एपीसिडीज को बता दी। कठिनाई से ही ईयोन का भाई और प्रेमी मिस्री के घर पहुच सके और उन्होने बाला ईयोन को उसके चगुल से छुडा दिया।

लेकिन अर्बासीज हारा नही। वह जूलिया के पास गया और उसने ग्लॉकस को देने के लिए एक तरल पदार्थ दिया। यह पदार्थ विष था। ऐसा विष जो पीनेवाले को पागल बना दे। निदिया को ईयोन से ईर्ष्या थी। उसने वह विष चुरा लिया और उसे ग्लॉकस को दे दिया। ग्लॉकस ने सध्या की उतरती छाया मे उस विष को पी लिया और बर्राने लगा। वह पागल-सा हो गया था। तब आकाश मे तारे निकल आए थे। ग्लॉकस बाहर भाग निकला।

■

दूसरे दिन सुबह मिस्री को सडक पर एपीसिडीज़ मिला। दोनो मे लडाई हो गई और मिस्री ने उसके छुरा भोक दिया। इसी समय ग्लॉकस वहा आ पहुचा और अर्बासीज ने उसे भी गिरा दिया और अपने हथियार को उसके रक्त से भिगोकर ग्लॉकस पर डाल दिया और जोर-जोर से चिल्लाकर वह ग्लॉकस को अपराधी, हत्यारा घोषित करने लगा। ग्लॉकस पर अभी भी ज़हर का असर था। वह कुछ प्रकट नही कर पाया और उसे जेल हो गई। मिस्री ने केलेनस और निदिया को बन्दी बना दिया, क्योकि वे दोनो उसके षड्यन्त्र

को जानते थ।

उन दिनो खुले मैदान मे, आकाश की छाया मे, एक रगमच बनाया जाता था। उसे घेरकर सब लोग बैठा करते थे और वहा अपराधी को आदमियो की भीड के बीच मे छोड दिया जाता था, जिसकी शेर से लडाई कराई जाती थी और लोग तमाशा देखा करते थे। ऐसा उस युग के लोगो का मनोरजन था। ऐसी ही एक रगशाला मे भीड के सामने तमाशे के लिए ग्लॉकस को शेर से लडने के लिए छोड दिया गया। ग्लॉकस भयानक हिंस्र-जन्तु के हमले की प्रतीक्षा मे बैठा रहा, लेकिन सबको यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि सिह ने जैसे ग्लॉकस को देखा ही नही, बल्कि वहा से भाग जाने की कोशिश की और बेचैन-सा होकर अपने पिजरे मे लौट गया। शेर का रखवाला शेर को फिर से अकुश मारकर ग्लॉकस की ओर भेजना चाहता था कि एक ओर से बडी जोर की आवाज सुनाई दी, जिसे सुनकर सबकी आखे उधर ही फिर गई। सामने खडा था एक आदमी। उसका नाम था सेलेस्ट। वह ग्लॉकस का मित्र था। वहा सिनेट के सदस्य बैठे थे। उन सब बैठे लोगो को उसने देखा और कहा कि उस ग्रीक को वहा से हटा दो, वह निरपराधी है। अर्बासीज को गिरफ्तार कर लो, वह हत्यारा है। यह कहकर सेलेस्ट ने केलेनस को आगे कर दिया। भूखा थका-मादा केलेनस मिस्री के सामने खडा हो गया और भीड से पुकारकर बोला, "मैंने अपनी आखो से इस मिस्री को एपीसिडीज की हत्या करते देखा है।"

लोग चिल्लाए, "चमत्कार कर दिया! इस अर्बासीज को ही शेर के सामने डाल दिया जाए!"

वह काम था अधी निदिया का। छूटने की कोशिश जब उसके लिए बेकार हो गई तो उसने एक पहरेदार को रिश्वत दी और सारी घटना की सूचना सेलेस्ट के पास पहुचा दी। सेलेस्ट अपने नौकरो को लेकर अर्बासीज के घर गया। उसने वहा कैदियो को छुडा दिया और ठीक समय पर उनको लेकर रगमच पर पहुच गया।

भीड अर्बासीज की ओर टूट रही थी। उसी समय ऊपर एक अजीब और एक भयानक छाया-सी दिखाई दी और उसका साहस लौट आया। उसने अपने हाथ ऊपर फैला दिए और वज्र गर्जन से पुकारा, "देखो निरपराधो की देवता किस प्रकार रक्षा करते हैं! मुझ पर झूठा इलजाम लगाया गया है और देवता भयानक प्रतिहिसा लेनेवाले है। उनकी लपटे प्रकट हो रही है।"

भीड की आखे उधर ही चली गई, जिधर मिस्री ने इशारा किया था। उन्होने देखा कि विसूवियस पर्वत के शिखर से भयानक भाप-सी निकल रही थी, मानो एक विशाल चीड का पेड था, उसका तना अधेरा था, काला, और शाखाए आग की थी और वह आग काप रही थी, फूट रही थी और क्षण-क्षण उसका रूप बदलता जा रहा था। कभी उसकी चमक बढ जाती थी और कभी लाल-लाल दिखाई देती थी। पृथ्वी हिल रही थी, रगमच की दीवारे कापने लगी थी और सुदूर मकानो के गिरने की आवाज भीषणता से गरजने लगी थी। ऐसा मालूम देता था जैसे वह भाप का बादल भीड की ओर चला आ रहा था और राख उसमे से गिरती जा रही थी, जिसमे से लाल-लाल अगारे नीचे गिरते जाते थे। और तब पहाड मे जैसे आग लग गई। खौलता हुआ पानी खम्भो की तरह

उसमे से उमडने लगा।

उस भयानक दृश्य को देखकर लोग अर्बासीज और न्याय की बात भूल गए। उनका हृदय आतक से थर्रा गया और भीड भागने लगी। चारो ओर से कोलाहल उठने लगा। एक-दूसरे को ठेलते हुए, रोदते हुए वे समुद्र की ओर भाग चले, लेकिन नगर उनके लिए डरावना हो गया था। दिन का उजाला एक भयानक काली छाया के समान रात बन गया। उसमे से निदिया ग्लॉकस और ईयोन को लेकर रास्ता दिखाती अधेरे मे चली। ग्लॉकस का नशा कम हो गया था। अन्धी निदिया अधेरे से डरी नही क्योकि उसकी आखो मे तो सदा ही अधेरा रहता था। लोग जब डरकर रास्ते मे भटक रहे थे निदिया दूसरो को रास्ता बताती हुई निकल चली, क्योकि अधेरे से अधेरे का मेल हो गया था।

अर्बासीज और पौम्पिआई नगर के अन्य अनेक लोग नष्ट हो रहे थे, लेकिन ये तीनो समुद्र के किनारे पहुच गए, और एक जहाज़ पर बैठकर चल दिए। थकामादा ग्लॉकस जहाज़ मे सो गया, ईयोन उसके सीने पर अपना सिर रखकर लेट गई और निदिया उसके चरणो मे पडी रही। आकाश से सागर की लहरो पर अब राख और धूल की बौछारे हो रही थी। जहाज़ के ऊपरी लोगो पर भस्म-सी इकट्ठी हो रही थी। और प्रचण्ड पवन राख को लेकर दूर-दूर तक बहा चला जा रहा था। सुदूर अफ्रीका के लोग उस आधी को देखकर चौक उठे और सीरिया देश की धरती से लौटकर वह हवा बजने लगी।

अन्त मे भयानक समुद्र शान्त होने लगा। प्रभात की पहली किरण आकाश मे फूटने लगी, लेकिन इनके जहाज़ से कोई हर्ष का स्वर नहो उठा। तीनो थके-मादे थे, ऐसे कि जैसे चूर-चूर हो गए हो, लेकिन फिर भी उठी हृदय से एक प्रार्थना की पुकार। सारी रात बीत गई थी। उजाले की प्रतीक्षा मे एक बार फिर हृदय को यह अनुभव हुआ कि ऊपर एक परमात्मा है जो सबको जीवन देता है।

निदिया धीरे से उठी। गलॉकस के मुख पर झुक गई और उसने उसे धीरे से चूम लिया और उसने उसके हाथ को खोजा तो दुख से उसके मुह मे एक आह निकल गई क्योकि ग्लॉकस का हाथ उस समय भी ईयोन के हाथ मे गुथा हुआ था। उसने अपने केशो से अपने मुख की रात की राख और पानी को पोछ दिया। वह धीरे से बडबडाई, "तुम अपनी प्रिया के साथ रहो। कभी-कभी निदिया को याद कर लेना। क्योकि उमे अब इस धरती पर रहने की कोई ज़रूरत नही है।" वह हट गई, और एक जहाज़ी ने अधमुदी, अधनीदी आखो से एक छाया-सी देखी, और उसे ऐसा लगा जैसे पानी पर एक छपाका-सा हुआ। उसने देखा कि लहरो पर बडे झाग से आए और फिर शीघ्र ही मिट गए। वह फिर सो गया। जब दोनो प्रेमी जागे तो निदिया कही नही थी और तब वे समझ गए कि निदिया समुद्र मे समा गई। अपने बच जाने का सुख उनको फीका लगने लगा और वे ऐसे रो उठे कि जैसे उनकी अपनी बहन सदा के लिए चली गई थी।

प्रस्तुत उपन्यास की भूमि व्यापक है। इसमें लेखक ने तत्कालीन समाज की कुरीतियो के साथ मनुष्य की सार्वभौम चेतना का अच्छा चित्रण किया है। पौम्पिआई का पतन बहुत ही चित्रात्मक ढग से प्रस्तुत हुआ है।

दो नगरो की कहानी

[ए टेल ऑफ टू सिटीज[1]]

डिकेन्स, चार्ल्स अग्रेजी उपन्यासकार डिकेन्स का जन्म ७ फरवरी, १८१२ को इग्लैंड में पोर्टसी नामक स्थान पर हुआ। आपके पिता जहाज-विभाग में क्लर्क थे। डिकेन्स का बचपन में ऐसा जीवन व्यतीत हुआ कि आपने गरीबी को अच्छी तरह देखा। आपके पिता कर्जदार होने के कारण जेल में बद कर दिए गए थे और इसलिए बचपन में ही आपको एक कारखाने में काम करना पडा, ताकि रोजी कमा सकें। यहा आपने शार्टहैड सीखी और लदन के एक अखबार के लिए रिपोटर बन गए। कुछ दिन बाद कथा-साहित्य के क्षेत्र में उतर आए और शीघ्र ही यश प्राप्त कर लिया। इसके बाद जीवन-पर्यत आपको साहित्यिक सफलताए मिलती रही, लेकिन पारिवारिक जीवन में निरन्तर सकट उपस्थित होते रहे। ९ जून, १८७० को कायाधिक्य के कारण निर्बल हो जाने से गेड्सहिल प्लेस केंट में आपका देहान्त हुआ। आपने हास्य पर भी लिखा है। आपने अनेक सामाजिक उपन्यास लिखे है, किन्तु 'ए टेल ऑफ टू सिटीज' आपका अत्यन्त विख्यात ऐतिहासिक उपन्यास है जिसमें आपका कलात्मक कौशल पूर्ण रूप से विकसित हुआ है। यह सन् १८५९ में प्रकाशित हुआ।

ईसामसीह के बाद १७७५ वर्ष बीत चुके थे। उच्च वर्ग के लोग, जोकि लोगो की रोटी के मालिक थे, मन मे यह जान गए थे कि सब कुछ वैसा ही बना रहनेवाला नही है। व्यवस्था मे कुछ सकट उपस्थित होनेवाला था, क्योकि चारो ओर असन्तोष की ज्वालाए धीरे-धीरे भडकने लगी थी।

मिस्टर जार्विस लौरी टेल्सन एण्ड कम्पनी नामक लन्दन के एक बैंक के एक अधिकारी थे। नवम्बर की ठडी रात मे वे एक घोडागाडी मे डोवर की सडक पर चले जा रहे थे। उनके सामने बार-बार एक पैतालीस वर्षीय व्यक्ति का मुख आ जाता था। उस मुख पर क्षय और ह्रास के चिह्न थे। मिस्टर लौरी बार-बार सोचते, यह व्यक्ति कब मरा? क्या अट्ठारह वर्ष पहले? या अब भी जीवित होगा? और वे इसका निश्चय नही कर पाते थे।

डोवर पहुचकर उन्हे एक पतली-दुबली, सुनहले बालोवाली सत्रह वर्ष की एक लडकी मिली। मिस्टर लौरी ने उसे बताया कि उस लडकी के पिता का नाम डाक्टर मैनेट था। वह एक फ्रेच डाक्टर था। उसके पिता का देहान्त अभी तक नही हुआ था। इस लडकी के जन्म के पहले ही उसके पिता को जेल मे डाल दिया गया था और यह काम इतने रहस्यमय ढग से हुआ था कि किसीको पता भी नही चल सका था। लडकी का नाम

---

१ A Tale of Two Cities (Charles Dickens)

लूसी था। लूसी की माता ने यह सोचकर कि लडकी का दिल न टूट जाए, उसका यही बताया था कि उसके पिता की मृत्यु हो चुकी थी। मा की भी मृत्यु हो चुकी थी। अब बैक मे डाक्टर मैनेट की जमा रकम की मालकिन लूसी ही थी। इधर डाक्टर मैनेट भी जेल से छट आए थे और मिस्टर लौरी उसे पेरिस ले जाना चाहते थे जहा कि डाक्टर मैनेट अपने परिवार के एक पुराने नौकर के घर मे इस समय शरण प्राप्त किए हुए थे।

सेट ऐंतोयने जिले मे एक शराब की दुकान थी। उसके मालिक का नाम दिफार्ज था। उसकी पत्नी एक भयकर स्त्री थी। दिफार्ज की दुकान के पास ही डाक्टर मैनेट इस समय अपना निवास कर रहे थे और उनका दिमाग एक तरह से खाली हो गया था। जा भी उनसे बात करता था, उसकी ओर वे शून्य दृष्टि से देखा करते थे। आजकल वे जूते सिला करते थे। लूसी ने मिस्टर लौरी के साथ डाक्टर मैनेट को वहा देखा तो उसे बडा खेद हुआ। फिर लूसी और मिस्टर लौरी ने आपस मे सलाह की और उन्होने यह तय किया कि वृद्ध मैनेट के रहने के लिए लन्दन अधिक उपयुक्त स्थान रहेगा। अत वे उन्हे वही ले आए।

इस घटना के पाच वर्ष बाद चार्ल्स डारने नामक एक फ्रैंक युवक ओल्डबेली मे गिरफ्तार किया गया। कचहरी मे उसपर यह अभियोग लगाया गया कि वह इग्लैड के विरुद्ध जासूसी करता था। डाक्टर मैनेट का दिमाग अब कुछ-कुछ ठीक हो गया था क्योकि लूसी ने बडे मनोयोग से अपने पिता की सेवा की थी। डाक्टर मैनेट को उनकी इच्छा के विरुद्ध होते हुए भी डारने के केस मे गवाही देने को बुलाया गया। डारने के विरुद्ध अभियोग प्रमाणित हो गया था। उसके वकील मिस्टर स्ट्राइवर का एक असिस्टेंट था। उसका नाम था सिडनी कार्टन। जब फैसला होने की बात आई तो सिडनी कार्टन ने कहा कि उसका मुख डारने के मुख से इतना अधिक मिलता है कि पहचानने मे आसानी से भूल हो सकती है। कार्टन एक बडा चतुर व्यक्ति था, लेकिन उसने अपनी जिन्दगी को एक तरह से बिगाड लिया था। मिस्टर स्ट्राइवर बडे आगे बढनेवाले व्यक्ति थे। कार्टन उनका सहयोगी था। छूट जाने के बाद डारने अग्रेजो को फ्रेच पढाने लगा। उसके पिता एवरेमोड के रईस थे, लेकिन फ्रास मे उनसे लोग अत्यन्त घृणा करते थे, क्योकि एवरेमोड परिवार अपनी क्रूरता के लिए प्रसिद्ध था। डारने ने अपने पिता के यहा जाना पसन्द नही किया। उसको यही अच्छा लगा कि वह अपनी रोजी खद कमाए और अपनी जिन्दगी बिताए।

डाक्टर मैनेट का छोटा-सा मकान सोहो नामक स्थान पर था। डाक्टर फिर से अपनी प्रैक्टिस करने लगे थे। हमेशा यह खतरा बना रहता था कि उनके दिल को कोई ऐसा सदमा न लग जाए, जो उन्हे फिर से जूते बनाने के काम मे लगा दे। जेल मे रहकर जो उनसे जूते बनवाए गए थे, उससे उनका दिमाग खाली-सा हो गया था। एक तरह का पागलपन-सा सवार हो जाता था उनपर, इसलिए लूसी बडी सावधानी बरतती थी कि पिता को किसी प्रकार का कोई मानसिक आघात न लग जाए। अब वकील स्ट्राइवर, कार्टन तथा डारने तीनो ही का, डाक्टर मैनेट के यहा आना-जाना शुरू हो गया। डारने और कार्टन दोनो ही लसी को अपना हृदय दे बैठे किन्तु लूसी ने डारने को पसन्द किया। तब कार्टन ने अपने मन को बात लूसी के सामने प्रकट कर दी और कहा कि जब-तब उसको

भी वहा आने की आज्ञा दे दी जाए। उसने कहा, "जिस व्यक्ति से तुम प्रेम करती हो उसके सुख के लिए समय आने पर मै अपनी जान भी दे देने मे नही हिचकूगा।"

फ्रास मे भयकर विप्लव होनेवाला था। मादाम दिफार्ज एक कठोर स्त्री थी, जो अपने पिता की शराब की दुकान मे बैठी-बैठी देखने को तो सिफ ऊन बुना करती थी, लेकिन वास्तव मे वह एक रजिस्टर रखा करती थी, जिसमे वह जनता पर अत्याचार करनेवालो के नाम लिख लिया करती थी। इन अत्याचारियो से उसे बदला लेना था। फ्रास की सी हालत इग्लैड मे नही थी। इधर डारने और लूसी का विवाह हो गया और उनके एक छोटी-सी सुनहले बालोवाली बच्ची पैदा हुई। वे लोग आनन्द से अपना समय व्यतीत कर रहे थे।

फ्रास मै विद्रोह उठ खडा हुआ और सम्राट का दुर्ग भयकर बेस्टील तोड दिया गया। उसपर दिफाज और मदाम दिफार्ज ने भीड को उकसाकर आक्रमण किया और सफलता प्राप्त की। तीन वर्ष तक फ्रास मे भयकर रक्तपात होता रहा। टेल्सन बैंक की ब्राच से उन्ही दिनो मिस्टर लौरी को पेरिस बुलाया गया ताकि वहा के रिकार्डो की देख-भाल की जा सके। चाल्स डारने भी पेरिस गया। एवरेमोड जागीर मे काफी आमदनी थी। उसकी आमदनी से किसानो का भला करने के लिए चार्ल्स डारने वहा जाकर गिरफ्तार हो गया। मिस्टर लौरी पर तो कोई आपत्ति नही आई, क्योकि वे अग्रेज़ थे, लेकिन चार्ल्स फ्रास के अभिजात वर्ग का एक व्यक्ति था, इसलिए उसको गिरफ्तार कर लिया गया और जब लोगो को यह पता चला कि वे एवरेमोड-परिवार के है तो उनको एकात कारावास मे रख दिया गया।

जब उसकी गिरफ्तारी की खबर लन्दन मे पहुची, डाक्टर मैनेट, लूसी और उसकी बच्ची को साथ लेकर तुरन्त पेरिस पहुचे। वे स्वय बेस्टील के दुर्ग मे वर्षों तक बन्दी रह चुके थे, इसलिए उन्हे आशा थी कि उनके पहुचने का अच्छा असर होगा और वे चार्ल्स डारने को शीघ्र ही छुडा सकेगे। लेकिन जब वे पेरिस पहुचे उस समय उन्होने देखा कि पेरिस रक्त के प्यासे क्रातिकारियो के हाथ मे था, जिनपर इतने अधिक अत्याचार अनेक वर्षों से होते रहे थे कि उनमे बडी भयकर प्रतिहिंसा भर गई थी। वे दया-ममता दिखाना एक तरह से भूल ही गए थे। यद्यपि डाक्टर मैनेट को अत्यन्त सम्मान दिया गया और उनको कारागार मे डाक्टर बना दिया गया लेकिन वे अपने दामाद को नही छुडा सके। एक वर्ष तक चार्ल्स डारने को उसकी काल-कोठरी मे रखा गया। उसके बाद हत्याकाडो का समय आ गया। इतिहास मे वह समय अत्यन्त क्रूर माना जाता है। लूसी निरन्तर आशा किया करती थी, किन्तु वह अपने पति के दर्शन नही कर सकी थी।

आखिर मे चार्ल्स डारने को क्रातिकारी न्यायाधीश के सामने उपस्थित किया गया। मादाम दिफार्ज न्यायालय मे आगे की सीटो मे से एक पर बैठी थी और बैठी-बैठी अब भी ऊन बुन रही थी। उसके मुख पर वैसी ही कठोरता विराजमान थी जैसी कि पहले रहती थी। वहा लोगो ने यह माग की कि चार्ल्स डारने को मृत्यु-दड दिया जाए। चाल्स ने वहा उपस्थित लोगो को बताया कि उसने स्वय ही फ्रास की जागीर का परित्याग कर दिया था। वह स्वय अपने अत्याचारी परिवार मे मे नही था क्योकि उसकी मनोवृत्ति दूसरे

प्रकार की थी। उसकी यह बात सुनकर न्यायालय मे उस समय उसके पक्ष मे और भी आवाजे उठने लगी, जब उसने यह बताया कि बह डाक्टर मैनेट का दामाद था, वह स्वय इसलिए फ्रास मे आया था कि फ्रास के एक नागरिक का जीवन खतरे मे था जिसे वह बचाना चाहता था अन्यथा वह फ्रास मे लौटता भी नही।

डाक्टर मैनेट ने लोगो से अपील की कि उसको छोड दिया जाय। उपस्थित जूरी ने इस बात पर विचार-विमर्श किया और यह वोट दिया कि चाल्स को स्वतंत्र कर दिया जाए। इस बात को सुनकर लोगो ने हर्ष से कोलाहल किया। चार्ल्स को छोड दिया गया और डाक्टर मैनेट उसको आनन्द मनाने के लिए अपने निवासस्थान पर ले आए। लेकिन इस समय भी उन लोगो मे यह साहस नही हुआ कि वे पेरिस छोडकर तुरन्त इगलैंड चले जाए। इसके बाद एक नई विपत्ति आई और चार्ल्स को गिरफ्तार कर लिया गया और उसको बदीगृह मे भेज दिया गया।

मादाम दिफार्ज की प्रतिहिसा अभी तक उग्र बनी हुई थी। वह एक किसान-परिवार मे जन्मी थी और उसके परिवार को एवरेमोड-परिवार ने अत्यन्त क्रूरता से नष्ट कर दिया था। इसलिए मादाम दिफार्ज के हृदय मे आग जल रही थी और वह चाहती थी कि एवरेमोड-परिवार के प्रत्येक व्यक्ति का सर्वनाश कर दिया जाए। उसकी इस प्रतिहिसा के कारण ही चार्ल्स डारने को फिर से गिरफ्तार कर लिया गया था। डाक्टर मैनेट को इसलिए सजा हुई थी कि एवरमोड परिवार के अन्याचारो के विरुद्ध उन्होने उस समय आवाज़ उठाई थी जबकि मादाम दिफार्ज की बहन से एवरेमोड-परिवार के एक व्यक्ति ने बलात्कार किया था। इसलिए भी डाक्टर मैनेट एक प्रकार से मादाम दिफार्ज के प्रति उपकार कर चुके थे, लेकिन मादाम दिफार्ज की प्रतिहिसा बडी कठोर थी और उसने यह निश्चय कर लिया था कि एवरेमोड-परिवार का बीज-नाश हो जाए। यहा तक कि वह लूसी की बच्ची की भी हत्या करवा देना चाहती थी। डाक्टर मैनेट यह जानते थे कि चार्ल्स कौन था और किस परिवार मे पैदा हुआ था, लेकिन उन्होने इस बात को जैसे क्षमा कर दिया था। वे कभी इस विषय पर कुछ नही बोले थे। चार्ल्स डारने स्वय यह बात नही जानता था कि उसके परिवार ने स्वय उसके ससुर पर कितना अत्याचार किया था।

अगले दिन कचहरी मे दिफार्ज ने एक पत्र प्रस्तुत किया। डाक्टर ने यह पत्र बेस्टील मे लिखकर छिपा दिया था। उसमे उन्होने अपने जेल जाने की कहानी लिखी थी और सारे एवरेमोड-परिवार के प्रति अपनी घृणा प्रकट करते हुए उसको अभिशाप दिया था। इस बार न्यायालय मे किसीने भी दया के लिए आवाज नही उठाई। जूरी ने शीघ्र वोट दे दिया और यह दण्ड दिया गया कि चौबीस घण्टे के अन्दर चार्ल्स डारने का वध कर दिया जाए।

अपने मित्रो से मिलने के लिए सिडनी कार्टन हाल मे ही पेरिस आया था। उसको चार्ल्स के फिर गिरफ्तार हो जाने की खबर मिली और वहा उसे एक अग्रेज़ मिला, जो क्रातिकारी लोगो के हाथो मे आए हुए बन्दीगृह मे जासूसी का काम करता था। सिडनी कार्टन को यह बात पता चल गई। उसने उस आदमी को धमकी दी कि वह उसे चार्ल्स डारने

की कोठरी मे पहुचा दे अन्यथा वह इसका भेद खोल देगा कि वह जासूस है। वह आदमी मजबूर हो गया और उसे यह काम करने को तैयार होना पडा। इसके बाद सिडनी कार्टन ने मिस्टर लौरी को कुछ बाते समझाई और डारने के मुकदमे मे पहुचा। वहा उसने लूसी का बिदा का चुम्बन लिया। लूसी उस समय मूर्च्छित पडी हुई थी।

एक घण्टे बाद चार्ल्स डारने को गिलोटीन पर चढाया जानेवाला था। ठीक उस समय सिडनी कार्टन काल-कोठरी मे उसके सामने जा खडा हुआ। वहा कार्टन के जोर देने पर चार्ल्स डारने ने सिडनी कार्टन के कपडे पहन लिए और अपने कपडे उसे दे दिए। सिडनी कार्टन ने चार्ल्स डारने को अपना अन्तिम सन्देशा दिया और उसे ज़बरदस्ती बेहोशी की दवाई दे दी। जब चार्ल्स डारने बेहोश हो गया तो उसको बन्दीगृह के प्रहरी बाहर उठा ले गए। लेकिन रास्ते-भर वह इस बात पर हसते रहे कि यह अंग्रेज़ जो अभी चार्ल्स डारने से मिलने आया था था, कितने कमजोर दिल का था, यह उसे देखकर ही बेहोश हो गया। उनमे से यह कोई भी नही जान पाया कि सिडनी कार्टन चार्ल्स डारने से वस्त्र बदल चुका था और अब जेल के अन्दर चार्ल्स डारने की जगह सिडनी कार्टन था।

जब चार्ल्स डारने को लेकर गाडी बन्दीगृह से चल पडी। मिस्टर लौरी अपने कागज़ातो को लिए वृद्ध मैनेट, लूसी और उसकी बच्ची के साथ पेरिस से बाहर चले जा रहे थे। मादाम दिफार्ज के दिमाग मे एक बात आई। उसने यह चाहा कि चार्ल्स डारने की पत्नी भी ढूढ ली जाए। लूसी की नौकरानी वहा मौजूद थी। उसने इस बात को छिपाने की कोशिश की कि उसकी मालकिन भाग चुकी थी। मादाम दिफार्ज ने मकान के भीतर घुसने की कोशिश की और पिस्तौल निकाल ली। लेकिन लूसी की अंग्रेज़ नौक-रानी ने उसे पकड लिया और मादाम दिफार्ज अपनी ही पिस्तौल से घायल हो गई और मर गई। अगले दिन गिलाटीन पर लोगो को चढाया जाने लगा और लोगो के सिर कट-कटकर गिरने लगे। प्रतिहिसा से भरी हुई कुछ औरते वहा जमा थी, लेकिन आज उनके बीच मादाम दिफार्ज नही थी। एक गाडी मे एक युवक मुस्कराता हुआ बैठा था। औरत कटते हुए सिरो को घूर रही थी। आखिर मे गाडी मे से वह युवक उतारा गया। कई आवाजे आई—नम्बर तेईस। चार्ल्स डारने की जगह सिडनी कार्टन गिलोटीन पर जा खडा हुआ। कोई भी उसे नही पहचान पाया। उसके मुख से निकला, "आज तक मैंने जो कुछ किया है उस सबसे अच्छा काम मै अब कर रहा हू। आज तक मैने जो कुछ जाना-बूझा है उस सबसे अधिक शाति मुझे इसी कार्य मे मिलेगी।" कुछ ही देर मे गिलो-टीन का चाकू नीचे उतरा और सिडनी कार्टन की गरदन कट गई। उस समय चार्ल्स डारने अपने परिवार के साथ फ्रास से बाहर निकल चुका था।

प्रस्तुत उपन्यास में डिकेन्स ने क्राति के बीज दिखाए हैं जिसमें पहले अत्याचारो का वर्णन किया गया है, लेकिन निष्पक्ष दृष्टि से लेखक ने यह भी दिखाया है कि बाद में जो प्रतिहिंसा जागी वह काफी सीमा तक हृदयहीनता से भरी हुई थी। चित्रण के दृष्टिकोण से दो देशो के वातावरण को लिया गया है और लेखक ने इसमें आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त की है।

डाकू और सुन्दरी

[लोरना डून[1]]

ब्लैकमोर, रिचर्ड सी० आपका जन्म ६ जून, १८२५ को हुआ था। आपके पिता रैक्टर थे और लौंगवर्थ बर्कशायर (इंग्लैंड) में रहते थे। रिचट ने छोटी आयु में ही एक पुर्तगाली लडकी से विवाह कर लिया। एक लम्बी बीमारी से आप बहुत परेशान हुए और कई बरस मुसीबतें उठाईं। लेकिन अचानक ही १८६० मे आपका भाग्य चेता। आपको बागबानी का शौक था। आप ऐतिहासिक 'रोमास' (कल्पित कथाए) भी लिखने लगे। आपने एक नये आंदोलन को जन्म दिया। हैडिंग्टन में २० जनवरी, १६०० को आपका देहांत हो गया। आपका प्रसिद्ध उपन्यास 'लोरना डून' बहुत प्रभावोत्पादक है।

जॉन रिड बारह साल का था। स्कूल से एक बार अपने को बुलाने के लिए एक किसान को आया देखकर उसे आश्चर्य हुआ, क्योकि उसका पिता ही उसे एक्समूर प्रदेश मे लिवा ले जाने के लिए आया करता था। यह किसान, जिसका नाम जॉन फ्राई था, चुप रहने का आदी नही था लेकिन आज जैसे वह बोलता ही नही था। रिड को कुछ सन्देह हो गया। उसे लगा जैसे कोई दुर्घटना हो गई थी। दोनो गाडी पर चलते रहे और रिड अपने बाल-हृदय मे यह सोचता रहा कि आज न जाने क्या हो गया होगा। उसके फार्म का नाम प्लोवर्स बेरोज था। जब वह फ्राई के साथ वहा पहुचा तब उसने अनुभव किया कि उसकी आशका निर्मूल नही थी। उसकी मा और दोनो बहनें हृदयविदारक रुदन कर रही थी। शातिपूर्ण फार्म मे डून लोगो का भय गहराने लगा था क्योकि उन्होने डकैती के लिए हमला किया था। उस समय जॉन रिड के पिता ने बाधा पहुचाई थी। आत्म-रक्षा करते हुए वह मृत्यु को प्राप्त हो गया था और आज इस फार्म का मालिक अकेला बारह वर्षीय जॉन रिड ही रह गया था। इस फार्म के निकट ही डून लोग रहते थे। सर रेन्सर डून स्कॉटलैंड का निवासी था। उसपर इतने मुकदमे और कर्ज़ चढ गए कि उसने अनेक अपराध किए और इसलिए वह भागकर इस वीराने मे आ गया था। पश्चिम के इन पर्वतो मे जो दुर्गम घाटी थी वही उसने अपने रहने के लिए अपना ली थी। पथरीले मार्गों के कारण वहा आना-जाना बडा कठिन था। हत्यारो की एक बस्ती बस गई और रेन्सर डून इनपर शासन करने लगा। उस दिन से अडोस-पडोस की नीद निरापद नही रही। राजा ने यद्यपि प्रयत्न किए कि उस भूभाग मे उसका दड चलता रहे किन्तु कोई

---

१ Lorna Doon (Richard C Blackmoore)

सेना वहा अपना प्रभाव नही दिखला मकी, क्योकि सडके ही नही थी। इस एक्समूर प्रदेश मे कोई गाडी नही चल पाती थी और राजा के सैनिक भयानक कोहरे और दलदल मे चलना पसन्द नही करते थे। इसीलिए वह प्रदेश उपेक्षित पडा हुआ था। डून लोग इसलिए और भी अधिक समर्थ हो रहे थे।

जॉन रिड का पिता सदा के लिए चला गया। इस भय ने फार्म के लोगो को व्याकुल कर दिया। बारह वर्षीय जॉन रिड ने अपनी बन्दूक उठा ली और निशाना साधने का अभ्यास करने लगा। इस प्रकार वह बडा हो चला। उसका ५०० एकड का फार्म था। सम्राट एलफ्रेड के युग से रिड-परिवार ही वहा शासन करता आया था। अब जॉन रिड के ऊपर ही अपने परिवार की महिलाओ, अपने सेवको और फार्म की रक्षा का उत्तरदायित्व आ गया था।

फिर आया एक नया दिन। जॉन रिड के जीवन मे नया प्रकाश। दो वर्ष व्यतीत हो गए थे। माता बीमार पड गई। जॉन रिड ने सोचा कि वह एक्समूर की पथरीली नदी मे जाकर मछली मार लाए ताकि मा को एक स्वादिष्ट भोजन मिल सके और उसकी अहेर की तृष्णा भी तृप्त हो सके। उस दिन सेण्ट बेलण्टाइन दिवस था। शीत का भयानक प्रहार हो रहा था। लिन नदी मे हिम-खण्ड जम रहे थे। फिर भी जॉन रिड का हृदय हारा नही और वह पानी को भागो से भरता हुआ, फेनो के अम्बार उठाता हुआ एक चट्टान के सहारे-सहारे चलता डून लोगो के गढ के नीचे आ गया। मछलियो के शिकार ने उसे और भी आगे बढाया और आगे पछवा जल-धारा की ओर वह आकर्षित हो गया। हिम से बहुत ठण्डे हुए पानी से आखिर उसे टकराना पडा। जल-वेग ने उसको पीछे फेक दिया, अधडूबा-सा। वह लडखडाता हुआ किनारे की मुलायम घास पर गिर गया और मूर्च्छित हो गया। जब उसे कुछ चेतना लौटी, उसने देखा कि आठ वर्ष की एक लडकी उसके मुख को पोछ रही थी। मानो उसकी सुश्रूषा मे वह तन्मय हो गई थी। उसके प्यार को देखकर वह सकोच से भर गया। जॉन ने कहा, "मेरा नाम जॉन रिड है। आज तक मैने तुम जैसी बालिका को यहा नही देखा। तुम्हारा नाम क्या है?"

बालिका जैसे भयभीत थी। उसने धीमे स्वर से कहा, "लोरना डून।"

डून नाम सुनकर रिड मन ही मन थर्रा उठा, किन्तु बालिका मानो स्वर्ण की प्रतिमा थी। इसलिए भय रीड के हृदय मे अपना उतना प्रवेश न कर सका जितना कि वह करना चाहता था। बालिका रुआसी हो गई थी।

"घबराओ मत," रिड ने कहा। "जो कुछ भी हो, मुझे यह विश्वास है कि तुमने कभी किसीका कोई नुकसान नही किया। सुनो, लोरना, मैं तुम्हे अपनी पकडी हुई मछलिया दूगा और मा के लिए दूसरी मछलिया फिर पकडूगा।"

वह अल्पावस्था थी। वे लोग नही जानते थे कि जीवन की गति क्या थी। लेकिन फिर भी जैसे एक-दूसरे के पास आ गए थे।

लोरना को डून लोग अपनी रानी कहा करते थे। इस समय जैसे उसके लिए पुकार उठने लगी और डून लोग उसे खोजते हुए निकलने लगे। लोरना डर गई। उसने रिड को एक गुफा मे छिपा दिया क्योकि वह जानती थी, उसके अपने आदमियो के हाथ

रिड निरापद नही था। जब वे लोग चले गए, बर्फीली धारा को पार करते हुए रिड घर लौटने लगा। भयानक अधेरी गिर आई, रात अपनी भयावनी छाया गिराने लगी। रिड भयभीत-सा घर लौट आया।

फार्म मे जीवन फिर चलने लगा। भेडो की ऊन काटने का समय आया, फिर कटाई आई, फिर नये नाज कटने लगे, फिर कद खोदे जाने लगे, फिर सेब तोडने का समय आया। जाडे के लिए लकडिया इकट्ठी की जाने लगी और इस प्रकार एक-एक करके खेत और बाग अपने जीवन के नियमित रूपो को मनुष्यो के द्वारा सवरवाने लगे।

नवम्बर आ गया। उन दिनो जॉन के घर टॉम फेगस नाम का एक व्यक्ति आया। वह यद्यपि रिश्ते मे उसका भाई लगता था और कई स्थानो पर लोग उसे अपना प्रिय मानते, परन्तु वास्तव मे वह एक लुटेरा था।

फार्म मे आकर उसने जॉन की बहन ऐनी का देखा। उसने अपने घोडे पर अपने विचित्र करतब दिखाए। देखकर आश्चर्य होने लगा। किन्तु जॉन की माता उससे डरती थी। उस जैसे खतरनाक आदमी को अपनी बेटी देना उसे पसन्द नही था।

बडा दिन आ गया। जॉन की माता के रिश्ते के चाचा रियूबेन हकाबक अपने घोडे पर डलबर्टन से अपने भतीजे के फार्म पर जाडा बिताने के लिए चल पड। किन्तु इस समय डून लोगो ने दो बार हमले किए और वृद्ध रियूबेन को लूट लिया। उसको घोडे पर उलटा बाधकर उन्होने लौटा दिया। किन्तु रियूबेन कोई साधारण किसान नही था जो डून लोगो के इस अत्याचार को भूल जाता। साधारण किसान अपने काम मे लगे रहते थे और सब कुछ होनी के सहारे छोड दिया करते थे।

उसने जॉन रिड को साथ लिया और वहा के शासक के पास गया। किन्तु शासक ने उसकी प्रार्थना पर कोई ध्यान नही दिया, तो वृद्ध ने कहा, "जॉन, मुझे वह जगह दिखाओ, जहा डाकू डून रहा करते है। मै इनकी घाटी को एक बार अच्छी तरह देख लेना चाहता हू।"

देर तक उसने सारी भौगोलिक परिस्थिति को जाचा और फिर वह डलबर्टन लौट गया। चलते समय उसने कहा, "जॉन, जब आवश्यकता होगी तो मै तुम्हे बुलाऊगा, और तुम आने के लिए तैयार रहना।

आज भी सेण्ट वेलण्टाइन का दिवस था। प्रथम बार ही जब जॉन रिड मछलिया पकडने लगा था तब से आज सात वर्ष बीत गए थे। एक बार फिर जॉन उस धारा की ओर चल पडा और लोरना उसे वही मिली उस धारा के किनारे खडी हुई, वह अब युवती हो गई थी। उसके नयनो मे एक गाम्भीर्य उभर आया था। डून लोग उसमे बहुत अधिक दिलचस्पी लेने लगे थे और उसपर नजर रखते थे।

लौटते समय जॉन ने उससे कहा, "नही, लोरना, मै इसे हम दोनो के बीच आखिरी बात तो नही मानता, लेकिन एक बात कहता हू कि अगर कभी खतरा हो तो सामने के इस विशाल सफेद पत्थर पर कोई काला कपडा लटका देना क्योकि वह मुझे दूर से चमकता हुआ दिखाई दे जाएगा और मैं समझ जाऊगा कि तुमपर कोई सकट आ गया है।"

मधुर वसन्त की पग-ध्वनि गूजने लगी। लोरना ने किसी खतरे का सकेत नही

किया। फिर एक दिन फार्म मे आया राजा का आदमी, जिसने जॉन रिड से कहा कि उसको वृद्ध रियूबेन ने लन्दन बुलाया था। उसके प्रयत्न सफलीभूत हुए थे। इस व्यक्ति का नाम जेरेमी स्टीक्लिस था। उस समय जज जेफरी एक प्रभावशाली व्यक्ति था और वह उसका एजेण्ट था। लन्दन पहुचकर जॉन की जेफरी से मुलाकात कराई गई। प्रभावशाली जज फार्म और डून मे अधिक दिलचस्पी लेने को उद्यत नही था। उसके राजनीतिक कारण थे और वह जॉन को अपना गुप्तचर बनाकर रखना चाहता था। अनभिज्ञ था जॉन, सीधा-सादा उत्तर देनेवाला, इसलिए जेफरी के लिए वह अनुपयुक्त था। जब वह घर लौटकर आया तो उसने सफेद पत्थर पर लटकता काला कपडा देखा। वह चल पडा। एकान्त मे उसने देखा, लोरना की आखो मे भय कौध रहा था। वह जानती थी कि डाक दल मे कारवर डून अपनी भीम-भुजाओ के कारण सशक्त हो गया था और चाहता था कि लोरना उसकी हो जाए। किन्तु वही चार्ल बर्थ डून भी था जो लोरना के प्रति आकर्षित हो गया था। जिस समय लोरना को अपने इन दो प्रेमियो की सूचना मिली वह घबरा गई और उसने वह कपडा टाग दिया था। जॉन उस समय लन्दन गया हुआ था। उसके हृदय मे जॉन के प्रति अखण्ड प्रेम था, किन्तु डून लोगो की छाया ने उसकी आखो मे पलते सुनहरे ससार को जैसे धुए से ढक दिया था और उसने कहा, "नही, जॉन, यहा तुम्हारे लिए खतरा है। तुम चले जाओ। जब तक मै कभी इशारा न करू तब तक तुम यहा न आया करो।"

एक्समूर प्रदेश के लोग प्राय भयभीत हो जाया करते थे। कुछ अजीब-सी भयानक आवाजे आया करती। वृद्ध रियूबेन अपनी रहस्यमयी यात्राए करता हुआ इस एकात प्रदेश मे बार-बार आया करता, किन्तु उनके हृदय मे डून लोगो का आतक निरन्तर जमा हुआ था। खेती चलती रही। कभी-कभी जॉन लोरना से मिल लेता। फिर कटनी आई और समाप्त हो गई। टॉम फेगस ने डकैती छोड दी और ऐनी से प्रेम प्रदर्शित करने आ गया। वह बराबर इधर-उधर के अपराधियो की तलाश करता और जॉन मन ही मन घबराने लगा। उसके हृदय मे आशका जग उठी कि कही लोरना किसी खतरे मे न पड गई हो।

वह फिर डून लोगो के गढ की ओर गया और उसने लोरना को सचेत किया, किंतु लोरना उतनी दूर नही पहुच सकती थी कि जाकर इशारा भी दे सके। पथरीली चट्टानी भाग ऊचा उठा हुआ था और उसके ऊपर एक विशाल वृक्ष था जिसपर सात गिद्ध अपने घोसले बनाए हुए थे। लेकिन लोरना की एक कोर्निश सेविका थी, जो बिल्ली की तरह चचल और चपल थी। यह निर्णय हुआ कि यदि लोरना पर कोई खतरा आएगा तो वह सेविका उस पेड पर चढकर एक घोसले को उतार लेगी और यदि सशक्त डाकू नेता कारवर डून किसी प्रकार लोरना को उठा ले जाएगा तो वह दो घोसले उतार लाएगी। जॉन का मन हलका हो गया। अब उसका मन खेती मे लगने लगा।

कुछ दिन बीत गए। झाडियो के पीछे फुसफुसाहट सुनाई दी। तीन लम्बी-बन्दूकोवाले आदमी धीरे-धीरे चौकस चल रहे थे। जॉन छुपकर सुनने लगा। वह समझ गया कि ये लोग जेरेमी स्टीक्लिस की हत्या करने आए थे। ऊपरी प्रदेश के चप्पे-चप्पे को जॉन

रिड जानता था। वह एक दुर्गम छोटे रास्ते से भागा और उसने जेरेमी के जीवन को बचा लिया। इस प्रकार उनमे एक सुदृढ मित्रता स्थापित हो गई।

शीत ऋतु का तुषार सघन हो उठा। इस वर्ष सर रेन्सर डून का देहान्त हो गया। जॉन ने जब सुना तो उसका भय बढ गया क्योकि वह जानता था कि कारवर डून जैसे भयानक डाकू की लोरना के प्रति आसक्ति को रोक सकने की सामर्थ्य यदि किसीमे थी तो वह वृद्ध रेन्सर डून मे थी। और उस वर्ष तुषार भी ऐसा आया जैसा बडे-बूढो की स्मृति मे नही आया था। पत्ते गिर गए, पेड ढह गए, धाराए जम गई, धरती के गड्ढे, समतल और उठान रुई के बादलो से ढक-ढक गए। झिल्ली की सी शीतल हवा और चारो ओर कडकडाती सर्दी। भेडे बर्फ मे दब गई। खोद-खोदकर उन्हे निकाला जाने लगा। विशाल वृक्षो को काट-काटकर फार्म मे निरन्तर धधकती आग पनपाई जाने लगी, ताकि मनुष्य की शिराओ मे रक्त का सचार हो सके। जॉन ने एक चित्र मे बर्फानी जूतो को देखकर वैसे जूते अपने लिए बना लिए।

बहुत ही ठण्डी शाम आई थी। धमनियो मे जैसे रक्त जमने लगा और उसी शाम को जॉन ने देखा कि एक गिद्ध का घोसला वृक्ष पर से गायब हो गया था।

हिमानी ऋतु, चारो ओर बर्फ और डून घाटी की ओर चल पडा जॉन। हृदय मे आशका, चारो ओर विरोध करती हुई शीतलता, हिमानी झझा। जीवन जैसे आज दाव पर खेल रहा था। जब वह पहुचा, उसने देखा कि लोरना भूखी-सी पडी थी। घाटी मे पग-पग पर बर्फ, केवल बर्फ दिखाई देती थी। धीरे-धीरे चलते भी किसी राहगीर के जाने की आवाज सुनाई नही देती थी और इसलिए दुष्कर्म-भरे जीवन मे पहली बार डून लोगो को खाने को कुछ नही मिल रहा था, और लूटने के लिए उनके पास कोई व्यक्ति नही था।

जॉन के पास जो भी रोटी थी, वह लेकर वह फिर पहुचा और अब उसने निश्चय कर लिया कि जो कुछ भी परिणाम हो, वह उसको अपने साथ लेकर ही लौटेगा। जब वह दूसरी बार डून घाटी मे पहुचा, द्वार खुला हुआ था। चार्ल बर्थ डून ने लोरना को पकड रखा था और चाहता था कि कारवर के आने के पहले उसे ले भागे। एक और आदमी कोर्निश सेविका को नीचे गिराए हुए था। जॉन रिड ने भीम शक्ति से आक्रमण किया। दोनो खिडकी मे से भागे और बुरी तरह घायल हो गए। उनके चीत्कार बर्फ के तूफान मे डूब गए। और जॉन अपनी प्रिया लोरना और कोर्निश सेविका को लेकर बियावान भूमि पर भागने लगा। बर्फ-गाडी निकट ही खडी थी। कुछ ही देर मे वे लोग फार्म पर पहुच गए। जॉन की माता ने जब अपने पुत्र की होनेवाली वधू को देखा, उसके हृदय मे वात्सल्य जग उठा।

लोरना के पास अपने वस्त्रो के अतिरिक्त और कुछ भी तो नही था। बस था तो गले मे एक हार बचपन का, जो गुरियो का या मणियो का था। कौन जानता था उसका मूल्य। किन्तु टॉम फेगस ने जब उसे देखा, उसने कहा, "यह तो बहुत मूल्यवान हार है। निश्चय ही अगर कारवर डून लोरना के लिए न भी आए, तो भी वह इस हार के लिए जरूर आएगा।"

जॉन के लिए एक नई चिन्ता आ गई। कुछ दिन बाद लोरना नदी के किनारे

फूल चुन रही थी। दूसरे किनारे पर वृक्ष की छाया मे कारवर डून दिखाई दिया। उसने अपनी बर्बरतायुक्त विनम्रता को दिखाते हुए बन्दूक से गोली चलाई जो लोरना के पावो के बीच मे से निकल गई और उसने पुकारकर कहा, "इस बार तुम्हे इसलिए छोडे देता हू कि मेरी इच्छा यही है। लेकिन मैं किसी भी वस्तु से भयभीत नही होता। कल तुम बिलकुल पवित्र ही मेरे पास लौट आना, जो कुछ भी साथ ले गई हो, वह तुम्हारे साथ आ जाए। और उस मूर्ख से कह देना, जिसने तुम्हारे पीछे मुझे अपना शत्रु बना लिया है, उसकी मृत्यु निकट है। उसे वह बहुत दूर न समझे।"

जेरेमी स्टीक्लिस ने डून लोगो के गढ पर आक्रमण करने का विचार कर लिया। अडोस-पडोस मे से राजा के विरुद्ध विद्रोह होने की सम्भावना दिखाई दे रही थी। यद्यपि डाकू लोगो का राजद्रोह से कोई सम्बन्ध नही था फिर भी उसने सोचा कि इस गढ को नष्ट कर देने मे एक प्रकार की प्रतिष्ठा स्थापित हो जाएगी और विद्रोहियो के भी कान खडे हो जाएगे। किन्तु इससे पहले कि हमला सफल होता डून लोगो ने फार्म पर हमला कर दिया। आधी रात, धुधली चादनी अधिक प्रकाश फैलाने मे असमर्थ थी। डाकुओ का दल आगे बढ चला किन्तु जॉन ने जो चौकीदार पहले से ही लगा रखे थे, उनकी आखो से वे डाकू छिप नही सके। दोनो ओर से गोलिया चलने लगी। दो डून मारे गए और दो को बन्दी बना लिया गया। बाकी लोग भागने लगे। जॉन रिड ने कारवर का हमला अपने ऊपर झेला और उसे बुरी तरह पराजित कर दिया। किन्तु कारवर किसी तरह भाग गया। जब फार्म पर यह आक्रमण असफल हो गया तब डून लोगो ने दूसरी चाल खेली। एक वृद्ध को वे अपना गुरू कहते थे। वह सबसे अधिक दुष्ट था। सन्धि की बात करने के लिए वह लोरना डून के पास आया। फार्म के लोगो ने उसका स्वागत किया, किंतु जिस समय वह लौटा लोरना का हार भी उसके साथ चला गया। उसने जॉन रिड की बहन ऐनी को अपशकुनो की आशका से व्याकुल कर दिया और वह हार ले आई। वृद्ध की इस चाल से जॉन रिड हृदय मे दु खी हो गया।

डाकू-दल पर आक्रमण करने की योजना बनाते समय जेरेमी स्टीक्लिस को एक विचित्र सूचना मिली। कई वर्ष पूर्व डून लोगो ने एक बच्ची को उडा लिया था और वह बच्ची लोरना थी। अन्तिम समय मे उसकी मा ने हीरो का एक हार बच्ची के गले मे बाध दिया था। जब उसकी इटेलियन नर्स, जो डेबेन शायर की एक सराय मे रहती थी, बुलाई गई तो उसने लोरना के विषय मे सारी सूचनाए दी। जेरेमी अपने उच्च अधिकारियो को डाकू दल का विनाश करने को प्रेरित करता रहा किन्तु उसे अधिक सफलता नही मिल सकी। तब उसने अपने एक सौ बीस आदमियो के साथ पहाडियो पर हमला कर दिया। किन्तु जेरेमी और जॉन का यह आक्रमण व्यर्थ हो गया। दूसरी ओर से डेबेन का विद्रोही दल टूट पडा और उस समय डून दल की बात जेरेमी और जॉन भूल गए। जेरेमी बुरी तरह घायल हो गया। जॉन बडी कठिनाई से उसे अपने साथ ला सका। इस सघर्ष मे डून दल की पूर्ण विजय स्थापित हो गई। जेरेमी धीरे-धीरे ठीक होने लगा। इटेलियन नर्स को देखकर लोरना ने पहचान लिया। तब प्रमाणित हो गया कि लोरना ड्यूगल के स्वर्गीय अर्ल की बेटी थी। उसी समय चान्सरी से दूत आ गया। लोरना को

लन्दन बुलाया गया था, ताकि वह अपनी जायदाद को सभाल ले। समय आने पर वह चल दी।

जॉन खेती मे अकेला रह गया। डून लोगो से उसे अब भी घृणा थी। इन दिनो टॉम फेगस राजा से क्षमा प्राप्त करके आ गया और ऐनी से विवाह करके बस गया। वृद्ध रियूबेन हकाबक चाहता था कि जॉन उसकी भतीजी से शादी कर ले और इसलिए वह उसको लेकर एक्समूर के उन दुर्गम प्रदेशो मे गया जहा से वे विचित्र आवाज़े आया करती थी। वहा जाकर जॉन ने देखा कि वहा एक कोर्निश धातु-विशेषज्ञ अपना इजिन निरन्तर चलाया करता था और खान तोडा करता था। वह एक सोने की खान थी। जब उसका इजिन चलता था तो विचित्र-सी आवाजे उठती थी।

सम्राट चार्ल्स द्वितीय बीमार पड गया। इस सवाद के फैलने से जेरेमी स्टीक्लिस को दक्षिण की ओर भेज दिया गया कि वह वहा समुद्र तट की देखभाल करे। चारो ओर यह आशका होने लगी कि सम्राट के मरने पर कही मन्मत का चिरप्रतीक्षित विद्रोह फूट न पडे। किन्तु जॉन रिड को इस सबसे कोई मतलब नही था। उसे केवल अपने मित्रो का भय था। सम्राट चार्ल्स की मृत्यु हो गई।

जॉन घर लौटा। उसने देखा कि उसकी बहन ऐनी अपने बच्चे को छाती से लगाए फूट-फूटकर रो रही थी क्योकि टॉम फेगस विद्रोही सेना मे मिलकर नये सम्राट के विरुद्ध उठ खडा हुआ था। किन्तु जॉन डून लोगो के आक्रमण के भय से फार्म को छोडकर टॉम फेगस का पीछा करने मे असमर्थ था। ऐनी विचारहीन हो गई। वह डून लोगो की घाटी मे चली गई और उस दुष्ट वृद्ध गुरु के चरणो पर लोट गई और उसने प्रार्थना की कि जब तक जॉन रिड लौटकर न आ जाए तब तक डून लोग कोई आक्रमण न करे। वृद्ध गुरु ने उसे ऐसा ही वचन दिया। भारी हृदय लिए जॉन टॉम फेगस को बचाने के लिए चल दिया। यद्यपि उसके हृदय मे निरन्तर आशका बनी हुई थी और डून लोगो के वचन पर उसे विश्वास भी नही था। जॉन टॉम फेगस का कोई पता नही जानता था। वह एक जगह से दूसरी जगह भटकने लगा। चारो तरफ हत्याकाड हो रहा था। जगह-जगह लाशे बिखरी हुई मिलती थी। राज्य-सिहासन के लिए झगडा हो रहा था। अन्त मे उसने देखा टॉम फेगस एक युद्ध के बाद घायल पडा हुआ था। जॉन ने उसकी पट्टिया बाधी, मदिरा पिलाकर उसे सचेत किया और उसे अपने घोडे पर बैठाकर भगा दिया। किन्तु कर्नल बर्थ के सैनिको ने जॉन को पकड लिया। बडी कठिनाई से वह वहा से छूट सका, क्योकि ठीक समय पर जेरेमी स्टीक्लिस उपस्थित हुआ और उसने जज जेफरी का नाम लेकर जॉन को छुडा दिया।

फिर भी जॉन के लिए कोई शान्ति नही थी। जेरेमी जानता था कि उन दिनो न्याय किसी गहरी नीव पर खडा हुआ नही था। जॉन पर कभी भी खतरा आ सकता था। यहा जॉन को लोरना के बारे मे पता चला। एक बडी पार्टी मे उसने लोरना को देखा। ब्रान्दिर के अर्ल लोरना की माता के चाचा थे और वही इन दिनो उसकी देखभाल कर रहे थे। जब जॉन उसके समीप गया तब भीड मे भी लोरना ने उसे पहचान लिया। जॉन ने देखा कि लोरना का हृदय अब भी उसकी ओर उसी प्रकार आकर्षित था।

जॉन ने देखा कि रात मे दो व्यक्ति एक झाडी के पास छिपे हुए थे। वे अर्ल ब्रान्दिर का धन लूटने के लिए आए थे। जॉन ने उन दोनो को गिरफ्तार कर लिया। दोनो राजनीतिक शत्रु दल के लोग निकले, जिनसे कि स्वय राजा को भय था। जॉन का भाग्य चेत गया। राजा जेम्स ने उस सवाद को सुनकर ब्रान्दिर के अर्ल और जॉन दोनो को निमन्त्रित किया और जॉन से कहा, "हम तुमसे प्रसन्न है। मागो, तुम हमसे क्या मागते हो।"

जॉन ने कहा, "मै श्रीमन्त की सेवा मे उपस्थित होना चाहता हू।" सम्राट ने प्रसन्न होकर उस समय जॉन को खड्ग देकर कहा, "आज से तुम सर जॉन रिड हुए।" जॉन कृतज्ञता से भर गया। अब वह लोरना के पद के अनुकूल हो गया। जब वह घर लौटकर आया, उसने देखा कि उसके फार्म पर डून लोगो ने अभी तक हमला नही किया था। लेकिन बाकी प्रदेश को डून लोगो न बुरी नरह त्रस्त कर दिया था। जाडा बीतने के पहले ही उनका अत्याचार यहा बहुत अधिक बढ गया था। कारवर उनका नेता था। एक दिन वे लोग फार्म पर टूट पडे। वहा से खाना, सामान और एक बच्चा लूट लिया और वहा के रहनेवाले की पत्नी को उन्होने बन्दिनी बना लिया। उस समय निकट के सब भोले-भाले आदमी जॉन के पास आए और उन्होने प्रतिज्ञा की कि वे उसकी सहायता करेगे और उससे प्रार्थना भी की कि वह इन डाकुओ का विनाश करने मे कोई कसर नही छोडे। किन्तु जॉन ने इसको स्वीकार नही किया। डून लोगो ने उसके ऊपर आक्रमण अभी तक नही किया था इसलिए उसके लिए आवश्यक था कि आक्रमण करने से पहले वह डून लोगो से कह दे कि वे सचेत हो जाए।

हाथ मे सफेद झण्डा तथा हृदय पर बाइबल रखे हुए वह डून घाटी की ओर चल पडा। किन्तु कारवर के लोगो ने जॉन पर गोलिया चलाई। भाग्य से ही जॉन बाल-बाल बचा और किसी प्रकार भाग निकला। वृद्ध रियूबेन ने, जोकि डून लोगो का पुराना शत्रु था, कुछ डाकुओ को स्वर्ण देकर फास लेने का विचार किया। उसने मदिरा पिलाई और डाकू लोगो को मस्त बना दिया। उनकी बन्दूको मे शराब डालकर उनको खराब कर दिया। दिन का समय था, कारवर के अतिरिक्त एक भी डून को जीवित नही छोडा गया, केवल वृद्ध गुरु ज्यादा उम्र के कारण बच गया और कारवर इसलिए बच गया कि वह वहा था नही। इस युद्ध मे जॉन का नाम अत्यन्त प्रसिद्ध हो गया।

लोरना फिर लौट आई। वह राज दरबार से ऊब गई थी। जज जेफरी ने लोरना को जॉन रिड से विवाह करने की आज्ञा दे दी थी। विवाह का शुभ अवसर आ गया। जिस समय पादरी ने अपने शब्द समाप्त किए, लोरना अपने प्रेमी की ओर मुडी और उसने प्रसन्नता से विभोर नयनो से उसकी ओर देखा। अचानक कही गोली चली। लोरना के हिम जैसे श्वेत वस्त्र पर रक्त की लाल धारा उमड आई। जॉन अपनी मृत पत्नी को अपनी माता की गोद मे लिटाकर बिना हथियार लिए ही पागल-सा घोडे पर भागा, किन्तु हत्यारा कारवर भाग चुका था। जॉन और भी आगे बढा, मोड पर उसने कारवर को पकड लिया और अन्त मे भीम शक्ति से जॉन ने कारवर को पराजित कर दिया। फिर भी जॉन ने उसकी हत्या नही की और सिर्फ यह कहा,"अपने अपराध के लिए प्रायश्चित्त करने

को तत्पर हो, तो मै तुझे छोड दू ।" किन्तु मृत्यु आ गई थी, कारवर सदा के लिए मर चुका था। धीरे-धीरे जॉन लौट चला लेकिन अभी लोरना मरी नही थी। उसकी सास बाकी थी। सेवा-सुश्रूषा से धीरे-धीरे वह सचेत हो गई। जॉन भी, जो कारवर की गोली से घायल हो गया था, अब धीरे-धीरे ठीक हो गया। और एक बार फिर उस फार्म पर पराक्रमी जॉन रिड और सुन्दरी लोरना सुनहली धूप से भीगी हुई पहाडियो पर विहार करते हुए आनन्द से जीवन व्यतीत करने लगे।

इस उपन्यास में साहस, वीरता तथा उदात्त भावनाओ का सम्यक् सम्मिश्रण हमें प्राप्त होता है। लेखक ने जनजीवन की भी सुन्दर अभिव्यक्ति की है। हमे वहा के समग्र समाज का जीवन प्रतिबिम्बित मिलता है। नगर, ग्राम और भयानक स्थल—तीनो ही अत्यन्त सजीव हुए मिलते है। प्रेम का गम्भीर रूप हमें यहा बहुत ही आकर्षक रूप में दिखाई देता है।

सीनकीविक्ज

जब रोम जल रहा था

[क्वो वादिस ?[1]]

सीनकीविक्ज, हेनरिक का जन्म १८४६ में रूसी पोलैण्ड में लुकलो नामक स्थान के पास हुआ था। आपने वारसा विश्वविद्यालय में दर्शन का अध्ययन किया था। १८७६ में आप अमेरिका गए और पोलैण्ड लौटने पर आपने अपने यात्रा-विवरण प्रकाशित किए। इससे आपको यश प्राप्त हुआ और पत्रकारिता आपके लिए लाभप्रद सिद्ध हुई। आपने अपने जीवन का अधिकाश समय वारसा और क्रैकॉव में बिताया और वारसा के पत्र 'स्लोवो' का सपादन करते रहे। १८९६ में आपका 'क्वो वादिस ?' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ जिसने आपको तुरन्त प्रसिद्ध कर दिया। इसके अनुवाद तीस भाषाओं में प्रकाशित हुए। १९०५ में आपको साहित्य पर नोबल पुरस्कार दिया गया। १४ नवम्बर, १९१६ को आपकी स्विट्ज़रलैंड में मृत्यु हुई। उस समय आप पोलैंड के लिए युद्ध में सेवाकार्य कर रहे थे।

'क्वो वादिस ?' ईसा की मृत्यु के बाद के युग का चित्रण करता है। यह एक बहुत ही सशक्त रचना है, जिसमें तत्कालीन युगांतरकारी मानववाद का अकन मिलता है। चरित्र-चित्रण आदि की दृष्टि से यह रचना अपने-आप में बहुत ही समर्थ है।

निरकुश स्वेच्छाचारी सम्राट नीरो किस समय क्या कह उठेगा इसे कोई नही जानता था। क्षण-भर मे ही उसका विचार कही से कही चला जाता था। एक क्षण मे वह क्रुद्ध हो जाता था और किसी भी व्यक्ति के सिर पर मौत झूलने लगती थी। दया-ममता उसमे प्राय नही के बराबर ही थी।

उसके दरबार मे पेट्रोनीयस सौन्दर्य का उपासक था। वह इतना बुद्धिमान और कविता का पारखी था कि स्वय सम्राट उसको सौन्दर्य का प्रतिरूप कहा करता था। पेट्रोनियस का जीवन रोमन लोगो की भाति केवल व्यभिचार और बर्बरता मे ही डूबा हुआ नही था। लेकिन नीरो के दरबार मे व्यभिचार और हत्या सजीव हो उठे थे। पेट्रो-नियस को वह सब पसन्द नही था, इसलिए नही कि वह कोई नैतिक विचारो के कारण उनको त्याज्य समझता था, बल्कि इसलिए कि वह उसे सुरुचि के अन्तर्गत नही मानता था। वह एक प्रकार से सनकी-सा हो गया था।

पेट्रोनियस के भतीजे का नाम था मारकस विनीसियस। विनीसियस एक बलिष्ठ

---

१ Quo Vadis ? (Henryk Sienkiewicz)—इसका हिन्दी अनुवाद हो चुका है 'जब रोम जल रहा था', अनुवादक : श्रीकान्त व्यास।

युवक था। एक बार उसने लिजिया नाम की एक युवती को देखा। रोम की विजयी सेना ने एक बर्बर शासक को पराजित कर दिया था। वह उसी की पुत्री थी। इस समय बदिनी के रूप मे वह रोम के एक जनरल ऑलस के पास रहती थी, किन्तु ऑलस उसे बदिनी के समान नही रखता था। उमे अपनी लडकी के समान पालता था। पेट्रोनियस जानता था कि ऑलस नैतिकतावादी था और सत्यप्रिय भी। उसको निश्चय था कि विनीसियस की वासना तृप्त करने के लिए ऑलस कभी अपनी पुत्री जैसी लिजिया को नही भेजेगा किन्तु विनीसियस दग्ध हो उठा था। अन्त मे पेट्रोनियस ने कहा, "विनीसियस तुम योद्धा हो। यद्यपि तुम्हारा कार्य सहज नही है, फिर भी सम्राट नीरो के दरबार मे मेरी बात सुनी जाती है। मै प्रयत्न करूगा कि किसी प्रकार लिजिया को तुम्हारे लिए माग लू।"

पेट्रोनियस अपने वचन का पक्का निकला। अगले ही दिन सम्राट नीरो का पत्र ऑलस के पास पहुच गया। आज्ञा यह थी कि लिजिया को राजमहल मे भेज दिया जाए। ऑलस पर दु ख का पहाड टूट पडा, किन्तु सम्राट की आज्ञा को न मानने का अर्थ था अपना सर्वनाश करना। इसलिए विवश होकर उसने लिजिया को सम्राट के यहा भेज दिया। लिजिया के साथ उसका सेवक उर्सुस भी गया। उर्सुस ने बचपन से लिजिया को देखा था। वह दीर्घाकार बर्बर एक दैत्य जैसा दिखाई देता था। उसमे अविश्वसनीय शक्ति थी किन्तु उसका हृदय बच्चे की तरह कोमल था। ऑलस ने अपनी बेटी को बिदा दी। यद्यपि वह हृदय मे अच्छी तरह जानता था कि आज वह अपनी बेटी को मृत्यु की गोद मे नही भेज रहा था बल्कि अपमान उसकी पुत्री को ग्रसने के लिए सामने खडा था। किन्तु लिजिया के हृदय मे एक विश्वास था। वह किसी प्रकार भी विचलित नही दिखाई देती थी। वह ईसाई धर्म को स्वीकार कर चुकी थी। अनेक देवताओवाले रोम मे जहा व्यभिचार का बोलबाला था, ईसाई धर्म का प्रारम्भ मनुष्य की प्रीति और सुख-शान्ति का प्रतीक बन गया था। अनेक रोम-निवासी गुप्त रूप से ईसाई हो गए थे और वह भी उन्ही मे थी।

दो दिन लिजिया सम्राट के महल मे रही। अधनगी युवतिया, बहती हुई मदिरा, व्यभिचार, वैभव का अतिचार, निरकुश अट्टहास इन सबने राजमहल को नरक के समान बना रखा था। पहली ही शाम को उसे सम्राट के भोज के समय उपस्थित होने को विवश किया गया। चारो ओर का नारकीय दृश्य देखकर लिजिया के रोगटे खडे हो गए।

उसने विनीसियस को पहले भी ऑलस के घर पर देखा था। उस समय उसे वह एक आकर्षक युवक के रूप मे दिखाई दिया था, किन्तु अब अपनी वासनामय चेष्टाओ के कारण वह उसे भयानक दिखाई देने लगा। एक दिन विनीसियस वासना से मत्त होकर उसकी ओर बढने लगा। लिजिया मूर्च्छित-सी हो गई। उसी समय उर्सुस आ गया और उसने लिजिया को अपने कन्धे पर उठाकर उसे सुरक्षित स्थान मे पहुचा दिया। अगले दिन जब लिजिया को यह ज्ञात हुआ कि सन्ध्यावेला मे उसे विनीसियस के घर राजाज्ञा से जाना पडेगा तो उसने सारी आशा ही छोड दी। किन्तु जिस समय दास उसे उठाकर ले जा रहे थे, सडक पर एक झगडा हो गया और उस हलचल मे उर्सुस अपनी तरुण स्वामिनी को लेकर एकान्त मे छिप जाने मे समर्थ हो गया।

विनीसियस अभिमानी था, हठीला भी। जब उसे पता चला कि इतने परिश्रम से प्राप्त लिजिया उसके हाथ से निकल गई तो फिर वह क्रोध और विक्षोभ से व्याकुल हो गया। उसने अपने मित्रों से मिलना-जुलना बन्द कर दिया और दासो पर अत्याचार करना प्रारम्भ कर दिया।

पेट्रोनियस ने उसको शान्त करने के लिए अपनी दासी यूनिस उसको देने के लिए प्रस्तुत की, किन्तु विनीसियस ने स्वीकार नही किया और यूनिस ने भी पेट्रोनियस का घर छोडने से इन्कार कर दिया। दासी का यह दुस्साहस देखकर पेट्रोनियस को अत्यन्त आश्चर्य हुआ, किन्तु जब उसे यह मालूम पडा कि यूनिस का हठ अपने-आप मे कुछ भी नही था, वह तो स्वय पेट्रोनियस के प्रेम मे विह्वल थी, तब उसका क्रोध शान्त हो गया। उसने उसको ध्यान से देखा तब उसे उसमे एक नया सौन्दर्य दिखाई देने लगा। उसकी आखो मे उसे प्रेम दिखाई दिया जो आज तक के जीवन मे उसको कभी नही मिला था। प्रेम ने पेट्रोनियस के हृदय मे एक नई शक्ति और श्रद्धा का उदय किया।

किन्तु विनीसियस की समस्या अब भी वैसी ही थी। चतुर पेट्रोनियस ने एक ग्रीक जासूस को अपने पास बुलाया, जिसका नाम था चिलो चिलोनिडीज। यह ग्रीक बडा वाक्चतुर और बडा ही चालाक था। धन के लिए उसने लिजिया को ढूढ निकालना स्वीकार कर लिया। उसने कहा, "पेट्रोनियस! तुम एक महान व्यक्ति हो। यह सच है आज लोग तुम्हारी मेहनत को स्वीकार नही कर रहे, लेकिन एक दिन ऐसा आएगा जब लोग विवश होकर तुम्हारी विचक्षण बुद्धि को देखकर अपना सिर झुका देंगे। इसलिए तुम विश्वास रखो कि मैं लिजिया को ढूढ निकाल लूगा। मैंने ये बाल अकारण ही सफेद नही किए है। लेकिन मै बहुत दरिद्र हू और दरिद्रता बुद्धि से शत्रुता पैदा कर देती है।" पेट्रोनियस ने उस व्यक्ति की कुशाग्र बुद्धि को देखा और उसको और धन दिया।

पैट्रोनियस ने शीघ्र ही पता चला लिया कि लिजिया ईसाई धर्म मे दीक्षित हो चुकी थी। क्रिसपस नाम का एक व्यक्ति ईसाई था। वह अपने घर मे अन्य ईसाइयो को छिपाकर रखता था। चिलो ने लिजिया को वहा ढूढ लिया। इतनी ही देर के लिए प्रतीक्षा करना भी विनीसियस को मुश्किल हो गया। ज्योही उसे लिजिया का पता चला, वह क्रिसपस के घर पहुच गया। उसने उर्सुस को वहा देखा। जब विनीसियस ने बल प्रयोग करने का प्रयत्न किया, तब उस भीमकाय बर्बर दैत्य जैसे उर्सुस ने उसे ज़ोर से दे मारा। क्षण-भर को ऐसा लगा जैसे विनीसियस मर गया हो।

लेकिन जब विनीसियस को होश लौटा तो यह देखकर उसके आश्चर्य का ठिकाना नही रहा कि ईसाई लोग उसकी बडे प्रेम से सेवा-सुश्रूषा कर रहे थे, मानो वह उनका शत्रु नही मित्र था। विनीसियस धीरे-धीरे ठीक होने लगा। उसकी सेवा मे और कोई नही स्वय लिजिया रहा करती थी। विनीसियस की वासनाओ का पर्दा फटने लगा, और उसमे एक पवित्र प्रेम अकुरित हुआ जिसकी वह पहले कभी कल्पना भी नही करता था। लिजिया बैठी उसे ईसामसीह के उपदेश सुनाया करती। विनीसियस ने कहा, "लिजिया! मैं तुम्हारी बातो को स्वीकार करता हू। मैं निश्चय ही तुम्हारे इस नये देवता को भी अपने अन्य देवताओ के साथ स्थान दूगा।" लेकिन लिजिया ने अपना मुह फेर लिया। उसने कहा,

"मेरे देवता इन सब देवताओ से भिन्न है, विनीसियस, मै जानती हू कि देवताओ की भीड बढाने से मनुष्य की मुक्ति नही हो सकती, इसलिए कि उन सब देवताओं को मनुष्य ने अपनी वासना से रग दिया है, ईसामसीह का वचन शुद्ध परमात्मा से मिलन कराता है क्योकि वह मनुष्य के जीवन का गौरव सिखाता है, मनुष्य-मनुष्य से प्रेम करना सिखाता है। मै जिस विचारधारा मे विश्वास करती हू वह केवल उपासना से ही सम्बन्ध नही रखती बल्कि समग्र जीवन के चिन्तन को परिवर्तित करने मे अपना सौष्ठव देखती है।"

विनीसियस उसकी बातो को नही समझ सका, किन्तु उसके हृदय मे ईसाइयो के प्रति एक आदर जाग गया। रोम को उस अहकार-भरी, व्यभिचार से ग्रस्त सभ्यता मे ईसा का सदेश मनुष्य की नई प्रतिष्ठा करता था। उस समय वह प्रेम का सदेश सुना रहा था। जिसमे नये मानदड जीवन को उजागर करने के लिए प्रस्तुत हो रहे थे। चारो ओर दासो का कोलाहल हो रहा था। उनपर अत्याचार हो रहे थे, अधिकारी लोग दूसरो को यत्रणा देते थे। उनकी निरकुशता से चारो ओर यातना का साम्राज्य फैल गया था। ईसा का प्रेम-भरा सदेश उस नारकीय दृश्य मे स्नेह और समता का सदेश था।

उस घर मे एक व्यक्ति आया करता था। उसको सब लोग ईश्वर का दूत पीटर कहा करते थे। उसमे असीम करुणा थी। वह जैसे मनुष्यमात्र से प्रेम करता था। शीघ्र ही पीटर के विनम्र व्यवहार ने विनीसियस को उसका प्रशसक बना दिया किन्तु लिजिया के हृदय मे सन्देह था और वह भी वेदना से व्याकुल-सी हो उठी। उसने अनुभव किया कि वह इस मूर्तिपूजक विनीसियस से प्रेम करती थी और इसलिए अपने को पापिनी समझने लगी थी। क्रिसपस की सलाह से वह घर छोडकर भाग गई। विनीसियस अच्छा हो गया था, अब वह उसे ढूढने लगा, किन्तु लीजिया जैसे गायब हो गई थी। अन्त मे विनीसियस ने पीटर से प्रार्थना की। पीटर ने उसकी बात सुनी और उसके प्रेम की गहराई का अनुभव किया। उसने उन दोनो के विवाह की आज्ञा दे दी और लिजिया को उसके प्रेमी के पास भेज दिया।

ज्योही विवाह हुआ विनीसियस को सम्राट की ओर से एनथियम जाने की आज्ञा प्राप्त हुई। आजकल सम्राट वहा आनन्द मनाने चला गया था। प्रतिदिन उसकी पशुता अधिक मे अधिक हिंस्र होती चली जा रही थी। छतो पर केशर बिछी रहती, सुवास से चारो ओर वातावरण महकता रहता। जिस प्रकार सम्राट उच्छृङ्खल था उसी प्रकार उसकी रानी पॉपिया विलास के साधनो मे डूबी रहती। वह प्रतिदिन गधियो के दूध मे नहाती ताकि उसकी त्वचा स्निग्ध बनी रहे। उसके बाद कुलीन रोमन रमणिया उसकी कृपा के लिए लालायित रहती कि उसके नहाए हुए दूध मे वे भी एक बार डुबकी लगा सके ताकि उनका भी गौरव बढ सके। वैभव और विलास की पराकाष्ठा हो रही थी।

दूसरी ओर दरिद्रो का हाहाकार रोमन साम्राज्य के आकाश मे आहो का धुआ भरता चला जा रहा था। घोर विभीषिका मे सम्राट नीरो का हृदय जैसे अधिक से अधिक अत्याचार करने लिए पागल होता चला जा रहा था। मनुष्यता जैसे कही नाममात्र को भी जीवित नही थी। उसके हृदय मे बर्बरता शिखर पर पहुच गई, और एक दिन

उसने रोम मे आग लगाने की आज्ञा दी। कहा जाता था कि प्राचीन काल मे ट्रॉय नगर मे आग लग गई थी, उसी समय महाकवि होमर ने धधकती हुई लपटो को देखकर अपने 'इलियड' नामक महाकाव्य का सृजन किया था। सम्राट नीरो अपने को महाकवि समझता था। चारो ओर उसे खुशामद मिलती थी। उसकी बुरी से बुरी कविता की लोग प्रशसा करते थे। एक दिन उसने अपनी कविता सुनाई। सब लोग चाटुकारिता मे उसकी प्रशसा करने लगे। यहा तक कि सिसरो जैसा विद्वान भी भयभीत होने के कारण कुछ नही कह सका। किन्तु पेट्रोनियस ने जब सुना तो उसने कहा, 'यह कविता आग मे झोक देने के योग्य है।" यह सुनकर सब लोगो ने दातो-तले जीभ दबा ली। उनको निश्चय हो गया कि अब नीरो पेट्रोनियस को जान से मरवा डालेगा। लेकिन पेट्रोनियस-सा चतुर व्यक्ति दरबार मे अन्य नही था। सम्राट् नीरो स्वय उसका साहस देखकर अवाक् रह गया। उसके मुख से निकला, "क्या कह रहे हो तुम !"

पेट्रोनियस ने कहा, "ओ विद्वान सम्राट ! यदि यह रचना महाकवि होमर की कलम से निकली होती या महाकवि वर्जिल ने लिखी होती तो मैं मान सकता था कि यह एक अच्छी कविता थी, लेकिन आपके गौरव के लिए ऐसी कविता बहुत रद्दी है, इसलिए मैं कहता हू कि इसे आग मे झोक देना चाहिए।"

दरबार मे उपस्थित लोग और स्वय सम्राट उसकी प्रशसा से चकित रह गए क्योकि पेट्रोनियस ने यद्यपि स्पष्ट कह दिया था कि वह कविता आग मे जला देने योग्य थी, फिर भी सम्राट् को मूर्ख बनाकर उसने अपनी रक्षा भी कर ली थी।

सम्राट की आज्ञा से रोम मे आग लगा दी गई और सम्राट ने अपना वाद्य-यत्र सभाल लिया और तारो को झनझनाने लगा। अब उसे आशा थी कि उसकी कविता जाग उठेगी।

महानगर रोम धू-धू करके जलने लगा। उसके फाटक बन्द कर दिए गए थे। नागरिक जलने लगे। लपटे उठने लगी। सडको पर सैनिक भागनेवालो को कोडे मारकर पीछे हटा देते। दीवालें और छतें आग की गर्मी से अर्राकर गिरने लगी और निरीह प्रजा का विध्वस होने लगा। चारो ओर भयानक हाहाकार मच उठा। प्रचड वेग से चलनेवाले घोडो के रथ पर खडे होकर विनिसीयस रोम की ओर भागा। राज सेवको ने उसे मार्ग मे रोकने की चेष्टा की। किन्तु विनीसियस ने कोडे मार-मारकर उन्हे नीचे गिरा दिया और किसी प्रकार रोम मे घुस गया। वह लिजिया की रक्षा करने के लिए उसे ढूढने लगा। स्त्रिया आर्तनाद कर रही थी। बच्चे झुलस रहे थे। पशुओं को हाक-हाककर लोग बाहर ला रहे थे। चारो ओर प्रलय-सा दृश्य उपस्थित हो गया था। धीरे-धीरे ज्वालामुखी की लपटो की तरह आग आकाश को चूमने लगी। शताब्दियो से इस रोम मे कलाकारो और शिल्पियो ने सौन्दर्य की रचना की थी। जहा ज्ञान का अपरिमित भडार पडा था, उसमे एक निरकुश सम्राट की स्वेच्छा को तृप्त करने के लिए आग लगा दी गई थी और इधर लोग मर रहे थे, उधर हृदयहीन सम्राट नीरो अपना वाद्य-यत्र बजा-बजाकर अपनी कविता को जगाने की चेष्टा कर रहा था।

आग के शान्त होने पर प्रजा मे विप्लव की भावना जाग उठी। भीड टूट पडी

और उन्होने सम्राट से आग लगाने का कारण पूछा। नीरो डर गया। इस समय उसे बचने का कोई उपाय दिखाई नही दे रहा था। अन्त मे उसकी बुद्धि काम कर गई। वह जानता था कि गुप्त रूप से ईसाई लोग रोम मे निवास करते थे। रोम के निवासी देवताओ के उपासक थे और इन ईसाइयो से घृणा करते थे। उसने आग लगाने का दोष ईसाइयो पर लगा दिया।

हजारो ईसाइयो की हत्या की जाने लगी। खुली रगशाला मे ईसाई घेर-घेरकर लाए जाने लगे। उन पर भूखे सिंह छोड दिए जाते और उनकी बोटी-बोटी छितर जाती। ईसाइयो को अपने इस बलिदान के प्रति गर्व था।

लिजिया भी बदिनी हो गई, और यद्यपि उसको छुडवाने मे विनीसियस और पेट्रोनियस राज क्रोध के पात्र बन गए, फिर भी वह नही छूट सकी। अन्त मे वह दिन आ गया जब लिजिया को मृत्यु का सामना करना था। खुली रगशाला मे एक जगली साड के सीगो से उसे नगी करके बाध दिया गया। और उस को उर्सुस साड से लडने के लिए मैदान मे छोड दिया गया। सबको निश्चय था कि साड उर्सुस को मार डालेगा और सीगो पर बधी लिजिया भी सदैव के लिए चली जाएगी। सम्राट ने देखा कि उत्तेजना से चारो ओर की भीड कोलाहल करने लगी थी। विचित्र दृश्य था। सीगो पर बधी हुई अनिद्य सुन्दरी लिजिया नगी ही दिखाई दे रही थी और स्त्री-पुरुषो की भीड निर्लज्जता से उसे देख रही थी। ऐसा था उस समय का पागल रोम और सामने खडा था उसका दैत्याकार उर्सुस, जिसके मुख पर एक शिशु सुलभ कोमलता थी। साड भाग चला। उसस झुक गया और प्रतीक्षा करने लगा। भीड से तुमुल कोलाहल उठा, फिर साड के खुर धरती पर बजने लगे। वह उर्सुस पर टूट पडा। भीड निस्तब्ध हो गई। सुई गिरने की भी आवाज़ सुनाई दे सकती थी। विनीसियस ने अपनी आखे मूद ली किन्तु उसी समय चारो ओर इतना कोलाहल मचा कि आकाश जैसे फटने लगा। रोम की प्राचीन दीवारे उस भयकर निनाद से कापने लगी। विनीसियस ने आखे खोलकर देखा कि बलिष्ठ उर्सुस ने साड के सीगो को पकड लिया था और अब वह जन्तु टस से मस नही हो पा रहा था। उस भीम विक्रम को देखकर भीड मे एक आवेश छा गया और चारो ओर से उर्सुस और लिजिया के प्राणो की रक्षा के लिए पुकार उठने लगी। आज तक उन्होने ऐसा विचित्र दृश्य नही देखा था। एक-एक पेशी उफन आई थी उर्सुस की, और साड यद्यपि सम्पूर्ण प्रयत्न से उसपर झपटना चाहता था, किन्तु इस समय अपना सिर उठाना भी उसके लिए असम्भव हो गया था। सम्राट को विवश होकर लिजिया और उर्सुस को प्राण-दान देना पडा।

विनिसियस ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया और वह लिजिया को लेकर महा-नगर से बाहर भाग गया। किन्तु सम्राट नीरो पेट्रोनियस से क्रुद्ध हो गया। पेट्रोनियस ने जब सुना तब वह उपेक्षा से हसने लगा। उसने अपने सब दासो को मुक्त कर दिया और अपनी प्रिय दासी यूनिस से कहा, "आज मुझे अपने हाथ से मदिरा पिला दो और एक पैनी छुरी लाकर मेरे पास रख दो।"

यूनुस की काली आँखे चमक उठी। वह बोली, "तुम अकेले तो नही जाओगे ? क्या मैं तुम्हारे साथ नही चलूगी ?"

पेट्रोनियस ने कहा, "सम्राट की आज्ञा आई है, पगली तू नही जानती मुझे कहा जाना है।"

"मै जानती हू, यूनुस ने कहा और उसने अपने हाथ और पैरो की नसो को काटकर, लहू से भीगी हुई छुरी पेट्रोनियस की ओर बढा दी। पेट्रोनियस ने भी अपनी नसो को काट दिया और दोनो आलिगन करके मृत्यु की गोद मे सो गए।

नीरो भी बहुत अधिक दिन नही जिया चारो ओर विद्रोह फैल गया। प्रजा, दरबारी, मित्र सब उसके विरुद्ध हो गए थे। उसकी जघन्य बर्बरता, जोकि पागलपन के समान थी, लोगो को क्रुद्ध कर उठती थी। लोगो ने घोषणा कर दी कि नीरो उनका सम्राट नही है। सिनेट के सदस्य एकत्रित हुए और उन्होने उनके विरुद्ध न्याय किया और उसको प्राण-दण्ड दे दिया। नीरो कायर था और उसमे आत्महत्या करने की शक्ति नही थी, इसलिए उसके एक वफादार नौकर ने उसकी हत्या कर दी।

सत पीटर भी अधिक दिन नही जिए। उनके शिष्यो ने उन्हे सलाह दी कि वे रोम से बाहर भाग जाए किन्तु जिस समय बे बाहर निकलने को हुए तो उन्हे एक प्रकाश-सा दिखाई दिया और एक गम्भीर नाद सुनाई पडा। पीटर ने देखा, वह स्वय ईसामसीह थे। उन्होने पूछा, "प्रभु! आप कहा जा रहे है ?" ईसामसीह ने उत्तर दिया, "मै फिर से रोम जा रहा हू ताकि मुझे सूली पर चढाया जाए, क्योकि मनुष्य अभी तक सुखी नही हो सका है।"

तब सत पीटर की समझ मे आया कि अभी भी उनका कर्तव्य पूरा नही हुआ था और तब वे अपने साथियो के साथ मरने के लिए महानगर रोम के द्वार के भीतर चले गए।

ईसाई धर्म के आविर्भाव ने एक भयानक विलासिता के जगत में मनुष्य की समानता का स्वर उठाया था। उस समय ईसाइयो पर भयानक अत्याचार किए गए थे। लेखक ने मनुष्य की वेदना का अत्यन्त सजीव चित्रण किया है।

यौवन की आधी
[अफ्रोदिते[1]]

लुई, पियरे का जन्म सन् १८७० में हुआ और मृत्यु १६२५में। आप फ्रेंच कवि और उपन्यासकार थे। आपने दर्शन का अध्ययन भी किया। 'अफ्रोदिते' आपकी एक महान रचना है, जो १८६६ में प्रकाशित हुई। इसका अनुवाद ससार की अनेक भाषाओं में हुआ है। इसमें आपने मिस्र की प्राचीन सभ्यता और यूनानी सस्कृति का चित्रण प्रस्तुत किया है। आपपर अश्लीलता का दोषारोपण किया गया, किन्तु आपने कथानक के युग विशेष की नैतिकता का ध्यान रखकर वातावरण की सृष्टि की।

वह यौवन से गदराई हुई बिस्तर पर पडी थी। उसने अगडाई ली। उसके केश अत्यन्त सुन्दर थे। एलेक्ज़ेड्रिया की समस्त गणिकाओ मे उसका नाम बहुत विख्यात था। उसको देखकर रूप के दीवाने उसपर कविताए लिखते, मानो वह रूप की देवी अफ्रोदिते थी। वह यहा की रहनेवाली नही थी। उसे इस देश मे आना पडा था। अपनी बारह वर्ष की अवस्था मे वह कुछ घुडसवारो के साथ चल पडी थी। वे हाथी दात के व्यापारी थे जो उस समय टायर जा रहे थे। उन लोगो ने उसे अच्छा भोजन दिया और वही लोग उसे ऐलेक्जेंड्रिया मे लाकर छोड गए थे। उसकी एक हिन्दू दासी थी जिसको वह ज्वलन्त कहने की बजाय द्जाला कहती थी। एलेक्ज़ेड्रिया मे गणिका बनने के बाद उसने अनेक देशो की भाषाए सीख ली थी। उसने अपना जादू लोगो पर फैलाकर अपार धन एकत्रित कर लिया था।

कुछ वर्ष तक वह इसी प्रकार अपने जीवन से सतुष्ट बनी रही। किन्तु उसके जीवन मे एक उदासी छाने लगी तब उसने देखा कि वह बीस वर्ष की हो चुकी थी। उसमे एक नये विकास, एक नये उन्माद ने अपना सिर उठाया था। वह चिल्ला उठी, "दजाला द्जाला!"

"कल कौन आया था दजाला?" उसे देखते ही गणिक क्रसिस ने पूछा, "वह कब गया था, क्या दे गया वह!"

दासी उसके आभूषण ले आई जो उसका प्रेमी रात को दे गया था। "आह, द्जाला!" उसने आश्चर्य से उन्हे देखकर कहा, "जीवन मे कुछ विचित्रिता नही आ रही

---

[1] Aphrodite (Pierre Louys)—इस उपन्यास का हिन्दी में अनुवाद हो चुका है 'यौवन की आधी', अनुवादक महावीर अधिकारी, प्रकाशक राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली।

है। कुछ विशेष घटना होनी चाहिए।"

उसने आगे कहा, "कोई मुझे देखकर दीवाना हो उठता है तो मैं उसको सताने मे आनन्द पाती हू। जो मेरे पास आते है वे कुत्ते है। वे इस योग्य भी नही कि मै उनकी मौत पर आसू बहाऊ, पर दोष उनका ही तो नही है मेरा भी तो है। मैं ही तो उन्हे यहा आने देती हू पर यहा आकर मूर्ख मुझसे प्रेम क्यो करते है!"

क्रेसिस उठी और खडी हो गई और फिर वह स्नानघर मे चली गई। स्नानघर से जब वह बाहर आई तो उसने द्जाला से कहा, "मेरे शरीर को पोछो!" द्जाला उसका शृगार करने लगी तब उसने दासो से कहा, "गाओ!" द्जाला गीत गाने लगी। क्रेसिस उसके गीत को सुनकर मुग्ध हो गई और स्वय भी मधुर कठ से उसके साथ गाने लगी—'मेरी केशराशि समस्त समतल भूमि पर बह रही नदी के समान है जिसके सम्पर्क मे सदियो की उदासी नही ठहर पाती बिना डठल की कलियो के समान तेरे रतनारे नयन है जो भीतरी ताल के तीर पर निश्छल पडे है घनी छाह के नीचे गहरी झील के सदृश्य मेरी आखे है जो पलको के भार से सदा अलसाई रहती है।' इसी प्रकार वे लोग गाती रही। सहसा वह खडी हो गई और उसने कहा, "अरे रात हो गई, तब मै बाहर कब जाऊगी।" और उसने द्जाला से कहा, "मैं अब शिकार करने जाती हू।" और फिर वह खिलखिलाकर हस पडी।

जब वह घर से बाहर निकली, पथ सुनसान था। क्रेसिस हलके स्वर से गुनगुनाती चली जा रही थी। ऐलक्जेड्रिया के समुद्र-तट पर दो स्त्रिया बासुरी बजा रही थी। उस समय वहा बहुत भीड थी। भीड का कोलाहल इतना अधिक था कि उसने समुद्र की रोर को भी दबा दिया था। गणिकाओ का यहा साम्राज्य था। यहा सभी भाति के लोग आते थे। विलास और आनन्द के लिए जैसे सारा ससार तृष्णा से व्याकुल था। वे लोग दासियो की नई कीमत के बारे ने बातचीत करने लगे। वहा वे लोग कपडे, गहने, नगी औरतो, विलास और दासियो के अतिरिक्त कोई विशेष बात नही करते थे। धीरे-धीरे भीड हट गई। सामने ही विचित्र पोशाक पहने एक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति कठघरे पर झुका खडा था। टाइफेरा नामक गणिका ने उसे देखा और उससे कहा, "मुझे लगता है तुम परदेशी हो।"

अजनबी ने कहा, "हा मै यहा का रहनेवाला नही हू। मैं केबेरा का निवासी हू। मैं यहा अनाज बेचने आया था। अब की फसल भी अच्छी हुई थी। भगवान की असीम कृपा है कि मैंने यहा आकर ५२ मीनी बचा ली। देखो, मै यहा के बारे मे कुछ भी नही जानता, तुम यहा के लोगो के बारे मे बताओ ना।"

टाइफेरा ने कहा, "हा, मैं तुम्हे यहा सब लोगो का परिचय दूगी।" और यह कहकर वह आते-जाते लोगो को दिखाने लगी। कोई दार्शनिक था, कोई मूर्ख था, किसीको उसने धूर्त बताया और किसीको कूट राजनीतिज्ञ। कोई कवि था। तभी सारी भीड हिल उठी, मानो समुद्र मे ज्वार हिल उठा हो। सभी फुसफुसाने लगे, "डिमीट्रिअस, डिमीट्रिअस!" टाइफर ने भी उस नाम को दोहराया और कहा, "यह व्यक्ति कभी बाहर नही निकलता। आज मैंने समुद्र तीर पर इसे पहली बार देखा है। यह रानी का प्रेमी है। इसीके सामने रानी ने नगी होकर देवी अफ्रोदिते की मूर्ति बनाई थी। यह महान कलाकार है। यह सारे

मिस्र का स्वामी बन गया है और एपोलो के समान सुन्दर है। किन्तु यह मुझे दु खी लग रहा है।"

सूर्य अस्त हो चुका था। स्त्रिया उस व्यक्ति को विस्फारित नेत्रो से देख रही थी। किन्तु डिमीट्रिअस मानो किसीकी भी आवाज नही सुन रहा था। रात गहरी हो चली, लोग धीरे-धीरे लौट चले। उस समय एक सुन्दरी दीवार की आड से बाहर निकली और डिमीट्रिअस की ओर बढी। वह अब भी निर्विकार खडा था। सुन्दरी ने उसपर एक पीला गुलाब फेका। डिमीट्रिअस ने उधर देखा भी नही।

तीन गायिकाए समुद्र-तट पर बैठी थी। डिमीट्रिअस उनके निकट आ बैठा। आज उसका हृदय कुछ भारी-सा हो रहा था। महानगर की सारी स्त्रिया उसे देखकर मानो विह्वल हो जाती थी। स्त्रियो के उपहारो से उसका घर भर चुका था। वह ऐसी स्थिति पर पहुच गया था कि जैसे उसकी भावनाए मानो मर गई हो। उसके पैरो से स्पर्श प्राप्त धूलि को भी नागरिक स्त्रिया समेटकर रखने को उद्यत रहती थी। उसे वह सब भयानक और बीभत्स दिखाई देता था। अपने जीवन को उसने दो भागो मे बाटा—एक प्रेम और दूसरा वासनामय क्षेत्र। उसने अफ्रोदिते की जो मूर्ति बनाई थी उसमे रानी का तमाम सौदर्य उतार दिया था और उसने उसमे अपनी ओर से भी लावण्य की रेखाए बना दी थी। असली रानी से उसका आकर्षण हट गया था और वह इसी पाषाण से प्रेम करने लगा था। वह इसे स्त्रीत्व की पराकाष्ठा समझता था और जितना उसे देखता उतना ही उसका उसके प्रति अनुराग बढता जाता था। उसका ससार विचित्र था। उस मूर्ति और रानी के बीच वह झूलता रहता और जैसे उन दोनो से ही उसका जी नही भरता।

जब वह महल मे नही जाता था तो उस मदिर मे चला जाता जो पवित्र गणिकाओ से भरा रहता था। वह पुजारिनो से बडी देर तक बाते करता। आज वह उस मदिर मे घुसते ही घबरा गया, क्योकि पुजारिने अब पथ-भ्रष्ट होकर घने पेडो की छाया के नीचे अधनग्न होकर उसे बुला रही थी। रात गहरी हो चली थी वह धीरे-धीरे मिस्र की मिट्टी को रोदता, नगर की गुलाब और मेहदी-मिश्रित सुगन्धित वायु को सूघता आगे बढने लगा। आज उसे विचित्र-विचित्र विचार आ रहे थे। चलते-चलते वह रेतीले डीह के नीचे आ गया। उसने उसपर सिर उठाकर देखा। सामने एक स्त्री का पीला वस्त्र दिखाई दिया। वह उस निर्जन स्थान मे अकेली भला क्या कर रही थी? धूमिल चादनी मे वह धीरे-धीरे पास आ गई। जब वह उसके पास से निकली तो उसने देखा कि उस स्त्री को जैसे देखा तो नही। वह अपने ही ध्यान मे मानो मग्न थी। डिमीट्रिअस को अत्यन्त आश्चर्य हुआ। कौन थी वह स्त्री जो उसकी ओर पलक उठाकर भी नही देख रही थी। वह सीधी फरोआ के द्वीप की ओर पहाडी के पास चढ गई और अन्धकार मे विलीन हो गई।

डिमीट्रिअस हतबुद्धि हो गया। उसे लगा जैसे वह उस स्त्री से न जाने कब से प्रेम करता था। वह उसके पीछे भागा किन्तु सहसा उसे अपनी भूल का ध्यान हो आया, वह रुक गया। उसकी मर्यादा खो जाने को थी। इसलिए उसे अपने ऊपर क्रोध भी आया और लज्जा भी। परन्तु यह स्त्री अकेली वहा क्यो आई थी? यह विचार उसे अब सताने

लगा। कैसी विचित्र स्त्री थी ! उसका रूप अनिद्य था। उसी समय वह स्त्री वापस आने लगी। स्त्री ने अचानक राह मे खडे डिमीट्रिअस को देखा। डिमीट्रिअस उसके आग की लपट जैसे सौदर्य को देखकर काप गया। स्त्री को जैसे अपने सौदर्य का ज्ञान था। मल्लाह कहा करते थे कि सुदूर महासागर के परे गगा की श्वेत धाराओ मे चुम्बक की चट्टाने तैरा करती है, जो दूर से ही आते हुए जहाज की कीले तथा लोहे के बने तमाम जडाव को वेग से अपनी ओर खीच लेती और लोहा सदा वहा चिपट जाता था और जहाज खड-खड होकर नदी के जल पर तैरा करता था। तूफान उन्हे उठाकर उनका रहा-सहा अस्तित्व भी मिटा देता था। उस सुन्दरी के नयनो ने उसे कसकर अपनी ओर चिपटा लिया था और वह दुर्बल होकर टूटे जहाज की भाति आनेवाले तूफान की झपेटो की प्रतीक्षा मे काप रहा था। जब वह पास आई तो उसने घबराकर कहा, "मैं तुम्हे अभिवादन करता हू।"

स्त्री ने सहज उत्तर दिया, "मै भी तुम्हे अभिवादन करती हू।" और अपनी सहज गति से ही चलती रही। डिमीट्रिअस को भ्रम हुआ कि शायद वह गणिका नही थी और उसने पूछा, "तुम अपने पति के पास जा रही हो ?"

स्त्री हसी और उसने कहा, "आज तक मेरा कोई पति नही हुआ।"

उसको ज्ञात हुआ कि वह गणिका ही थी। डिमीट्रिअस ने कहा, "तुम कौन हो ? यहूदी हो ?"

क्रेसिस ने कहा, "मुझ लोग क्रेसिस कहते है।"

डिमीट्रिअस ने उसे छुआ, किन्तु वह बोली, "इस समय बहुत देर हो गई है। अब मैं जाती हू।"

डिमीट्रिअस ने कहा, "चलो, मुझे मार्ग दिखाकर ले चलो !"

यह सुनकर वह बोली, "क्या कहा ! मैं और मार्ग दिखाकर तुम्हे ले चलू, जैसे मै खरीदी हुई दासी हू ! जानते हो, मेरे पीछे तुम्हारे जैसे कितने ही फिरते है ? मेरे पीछे आने का साहस न करना।"

डिमीट्रिअस ने चिढकर कहा, "तुम मुझे जानती नही हो कि मैं कौन हू।"

क्रेसिस ने डाटकर कहा, "मै तुम्हे खूब जानती हू। तुम्हीने देवी अफ्रोदिते की मूर्ति बनाई थी। तुम मेरी रानी के प्रेमी डिमीट्रिअस हो और आजकल मेरे नगर के स्वामी बने हुए हो। पर मेरे लिए तुम एक सुन्दर दास से अधिक मूल्य नही रखते क्योकि तुम मुझे चाहते हो !"

डिमीट्रिअस हतबुद्धि हो गया। आज तक उसका ऐसा अपमान नही हुआ था। वह हसकर फिर बोली, "मैं जानती हू कि तुमने किस प्रकार अनेक स्त्रियो को अपने प्रेम मे दीवाना कर दिया है। मैं जानती हू कि तुम्हे अपने ऊपर अहकार है। तुम मेरे जिस रूप को देखकर बेसुध हो रहे हो उसे लोगो ने मन भरकर भोगा है। इन सात वर्षों मे मै अकेली सिर्फ तीन रात सोई हू। पिछले साल मै बीस हज़ार पुरुषो के बीच नगी नाची थी, पर मुझे मालूम है तुम उनमे नही थे। तुम समझते हो कि मैं निर्लज्ज हू लेकिन डिमीट्रिअस, तुम मुझे कभी नग्न नही देख पाओगे क्योकि मैं तुम्हे तनिक भी प्रतिष्ठा नही देती।

तुम्हारी परवाह नही करती। तुम्हे दुत्कारती हू। तुम निर्दयी दास और कायर हो। मैं तुम्हे घृणा करती हू। मैं तुम्हारे ऊपर थूकती हू। तुम घृणा के पात्र हो। हट जाओ, तुम्हारी छाया मेरी कचन-सी काया पर न पड जाए।"

डिमीट्रिअस ने उसे बलिष्ठ हाथो से पकड लिया। अपमान से उसका हृदय धधक उठा था। क्रेसिस हस उठी। उसने कहा, "हटो, मुझे मत दाबो क्योकि मेरे हाथ दुखते हैं।"

डिमीट्रिअस झेपा-सा हट गया। और उसने कहा, "क्रेसिस, डिमीट्रिअस को झिडक देना साधारण बात नही हे। मै तुमसे बलात्कार करना नही चाहता हू, यह नही चाहता कि तुम मुझसे प्रेम करो क्योकि स्त्रियो का प्रेम सिर्फ रुपये से है। मै तो सिर्फ यही चाहता हू कि तुम अपना अहकार छोड दो और मुझे अपमानित न करो।"

क्रेसिस ने कहा, "मेरे पास भी सोना बहुत है। मै वह नही चाहती। मेरी तो केवल तीन चीजो की चाह है। यदि तुम मुझे दे सको तो मै तुम्हारी बात को मान लूगी।" और वह कहने लगी, "मै एक चादी का दपण चाहती हू जिसमे मै अपनी आखो को देख सकू, मै एक हाथी दात की कघी चाहती हू जो नक्काशी से ढकी हो, और मुझे एक मोतियो का हार चाहिए जिसे मै पहनकर तुम्हारे सामने नगी नृत्य कर सकू।" डिमीट्रिअस को आश्चर्य हुआ कि वह इतनी मामूली चीजे माग रही थी। क्रेसिस ने कहा, "प्रतिज्ञा करो, अफ्रोदिते की सौगन्ध खाओ और तब मै बताऊगी कि मुझे कौन-सी चीज़ चाहिए।" डिमीट्रिअस ने कहा, "तुम मुझे बताओ, मैं तुम्हारे लिए सब कुछ लाऊगा।'

क्रेसिस ने कहा, "मेरी मित्र गणिका बेक्सिस के पास एक चादी का दर्पण है, वह उसे बहुत छिपाकर रखती है पिछले हफ्ते ही उसने मेरा एक प्रेमी छीन लिया था। मै ब्रचिस से बदला लेना चाहती हू। उसका वह दपण अद्भुत है। अपने घर मे वेदी के तीसरे पत्थर के नीचे प्रति सन्ध्या छिपाकर तभी वह बाहर निकलती है। उसे ले आओ।"

डिमीट्रिअस ने कहा, "यह पागलपन हे। तुम मुझसे चोरी कराना चाहती हो।"

क्रेसिस ने कहा, "तब तो तुम मुझे पा चुके!"

डिमीट्रिअस ने कहा, "अच्छा, मै उसे ले आऊगा।"

क्रेसिस फिर कहने लगी, "पर जो कघी मै चाहती हू वह राजगुरु की स्त्री की कघी है, वह उसे हमेशा अपने केशो मे छिपाकर रखती है। यह मिस्र की किसी प्राचीन रानी की कघी है। उसपर एक युवती का नग्न चित्र खुदा है। मुझे वही कघी चाहिए।"

डिमीट्रिअस ने पूछा, "मुझे वह मिलेगी कैसे ?"

क्रेसिस ने कहा, "वह मुझे कल ही चाहिए। इसलिए कल दिन मे तुम्हे किसी समय उसकी हत्या करनी होगी।" डिमीट्रिअस सोचने लगा और तब क्रेसिस ने कहा, "अफ्रोदिते के गले मे पडा हुआ सतलडियो वाला मोतियो का हार मुझे लाकर दो।"

डिमीट्रिअस ने कहा, "नही-नही, यह नही हो सकता।"

क्रेसिस ने कहा, "ऐसा न कहो क्योकि तुम ऐसा नही कह सकते। तुम यह जानते हो कि तुम्हे यह सब मेरे लिए लाना है और तुम इन्हे लाए बिना भी नही रह सकते। कल सन्ध्या समय तुम इन चीज़ो को लेकर मेरे पास आना और उसके बाद जब तुम चाहोगे मैं

तुम्हारी आज्ञा और इच्छा पर तुम्हारे सामने उपस्थित रहूगी, तुम्हारी सेवा करूगी। सुनो, मैं सभी देशो के गीत जानती हू। कलकल नाद करते हुए निर्झरो का सुखद सगीत और रौद्र स्वर से भयानक डमरू-निनाद मिश्रित भीषण स्वर—ये सब मुझे आते है और मैं तुम्हारे इशारे पर उन्हे गा-गाकर सुनाऊगी। तुम यह नही जानते कि मेरे चुम्बन से तुम्हे कितना आनन्द होगा। डिमीट्रिअस आगे बढा। क्रैसिस ने कहा "अभी नही, अभी नही।"

डिमीट्रिअस ने कहा, "मै तुम्हारी सब मागे पूरी कर दूगा।"

वह चली गई। डिमीट्रिअस जब नगर की ओर चला, शर्म से उसका सिर नीचे झुका हुआ था। पौ फटने लगी। डिमीट्रिअस के हृदय मे हाहाकार मचने लगा। गणिकाओ ने पथ पर निकलना प्रारम्भ कर दिया था। दो गणिकाए आपस मे बाते करती हुई चली जा रही थी।

महानगर के बाहर देवी अफ्रोदिते का मदिर भव्य प्राचीरो से घिरा मीलो के घेरे के अन्दर बना हुआ था। वह मदिर अब दो सौ वर्ष पुराना हो चुका था। नाना राष्ट्रो से प्रतिवर्ष सुन्दर कन्याए बाहर से जहाजो मे लाई जाती थी। मदिर के पुजारी उन्हे अपने साथ उद्यानो मे ले जाकर दीक्षा देते। एक बार कोई युवती वहा घुसकर फिर कभी बाहर नही आती थी। इन गणिकाओ मे पुरुष का प्रेम तो प्रचलित रहता ही था पर उनका आपस का प्रेम भी कम नही होता था। यदि कोई गणिका गर्भवती हो जाती और उसके पुत्र उत्पन्न हो जाता तब वह सतान उस मदिर की निधि मानी जाती और यदि उसके पुत्री हो जाती तो वह अफ्रोदिते की खास गणिका बनाई जाती। क्षणिक वासना और प्रेम-तृप्ति के लिए अलग मदिर बने हुए थे। मदिर की भूमि शुद्ध और श्वेत सगमरमर की थी और स्थान-स्थान पर रगीन पत्थरो से देवी-देवताओ, दैवी पुरुष और मानवी स्त्रियो के सम्भोग के चित्र अकित हो रहे थे। वह सम्पूर्ण ससार वासना से ओतप्रोत था।

डिमीट्रिअस अफ्रोदिते के उस बीहड वन मे घुस गया। उसमे इतनी शक्ति थी कि अपने सेवको से वह क्रैसिस को पकडवाकर बुलवा सकता था किन्तु वह उससे बलात्कार करना नही चाहता था। अनेको गणिकाओ ने डिमीट्रिअस को घेर लिया किन्तु डिमीट्रिअस इन सबसे उकता गया। डिमीट्रिअस ने मार्ग चलते सोचा—काश, वह क्रैसिस को लेकर मिस्र से बाहर यूनान, रोम, सीरिया या और कही चला जाए, जहा उसको छेडनेवाली कोई स्त्री न हो और न क्रैसिस की ओर ही आख उठानेवाला कोई और पुरुष हो। अब वह धर्मगुरु के महल की ओर चल पडा। वह एलेक्जेंड्रिया की ओर जा रहा था। वह जानता था कि रात के पहले पहर मे धर्मगुरु की युवती पत्नी टूनी अपने विशाल प्रासाद के पिछवाडे एकान्त मे सगमरमर की स्वच्छ चौकी पर बैठकर विश्राम करती है। डिमीट्रिअस ने वहा पहुचकर देखा कि वह लेटी हुई थी। वह धीरे-धीरे उसकी ओर बढा। चौकी पर वह उसके पास जाकर बैठ गया। उसने उसे छुआ किन्तु टूनी ने आखे नही खोली। क्षितिज पर छाई हुई रक्ताभा समुद्र पर प्रतिबिम्बित होकर उसके शरीर को ललाई से रग रही थी जिसमे उसका सौन्दर्य प्रस्फुटित हो रहा था। धीरे-धीरे चाद ऊपर उठने लगा और उसके घने घुघराले केशो के बीच डिमीट्रिअस ने वह कघी देखी जिसके

सिरे पर जडा हुआ हीरा चमचमा रहा था ।

"डिमीट्रिअस !" वह जाग उठी और कहने लगी, "ओह, तुम हो मेरे प्रियतम !" वह सरककर बैठ गया । डिमीट्रिअस ने कहा, "मै तुम्हारी हत्या करने आया हू ।' वह एक बार सिहर उठी, पर हसी ।

टूनी ने डिमीट्रिअस की कलाई पकड ली और उसने कहा, "पहले मेरे ऊपर सुख की वर्षा कर दो । जब मै तुम्हारे रस मे डूब जाऊ तब तुम मुझे मार डालना, तब मुझे कुछ दु ख नही होगा ।" डिमीट्रिअस उसको आलिगन मे बाधकर सब कुछ भूल गया और उसके बाद डिमीट्रिअस ने उसकी हत्या कर दी । उसने केवल क्रेसिस के कहने से ही ऐसा किया था । उसने अपना वचन निभाया था और फिर वह मन्दिर मे गया । वह भय से काप रहा था । उसने लपककर सामने के चित्रित स्वर्णद्वार को बन्द कर दिया । जब उसने आख उठाई तो देखा रगीन चौकी पर नग्न अफ्रोदिते चन्द्रमा के धवल प्रकाश मे जगमगा रही है । उसके चरणो पर असख्य धन-राशि पडी है । उसके कण्ठ मे वही हार है जिसे वह चुराने आया है । सतलडीवाला वह मोतियो का हार, जिसके बीच का मोती सबसे बडा लम्बा और चाद की भाति चमकीला है, वह जो समुद्र के गर्भ मे जल-बिन्दु जोडकर बना है । हठात् डिमीट्रिअस को ध्यान आया । उसने वह हार उतार लिया । डिमीट्रिअस चुपचाप बैठ गया और तभी दोनो भारी स्वर्ण द्वार खुल गए ।

आधी रात का घना सन्नाटा छाया हुआ था । किसीने जोर से तीन बार क्रेसिस के घर का द्वार खटखटाया । क्रेसिस शैया से उतरी और उसने कहा, "कौन है ?" उससे मिलने आज नोक्रेटिस आया था । वह दार्शनिक था । उसके दाढी डिमोस्थीनीज़ की भाति थी और उसके हाथ बिलकुल साफ थे । वह एक लम्बा ऊनी श्वेत चोगा पहने हुए था । उसने कहा, "कल बेचिस के यहा दावत है । मै तुम्हे उसकी ओर से निमन्त्रण देने आया हू । दावत के बाद उत्सव होगा । हम सात अतिथि है । आना ज़रूर !"

क्रेसिस ने कहा, "कल उत्सव क्यो है ?"

उसने कहा, "कल बेचिस अपनी सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी दासी अफ्रोडोशियो को स्वतन्त्र कर देगी । नृत्य और खेल भी होगे इसलिए तुम वहा जरूर रहना ।"

श्वेत, गुलाबी, नीले और लाल गुलाब के फूलो से सजी हुई गणिकाए अफ्रोदिते के मन्दिर मे आने लगी । एक लम्बी दाढीवाला पुजारी उपहार लेकर देवी के चरणो पर रखता जाता था । युवतिया आ-आकर अपनी मनचाही भेट चढाने लगी । गणिकाओ के चले जाने के बाद एक अत्यन्त सुन्दरी स्त्री ने प्रवेश किया । वह क्रेसिस थी । उसने कासे का दर्पण देवी के चरणो मे रखकर कहा, "मैने अपना रूप इसमे देखा है । आज मै अपने इस प्रिय दर्पण को तुम्हे देती हू कि इसमे मेरी देखी हुई सुन्दरता ऐसी ही बनी रहे ।" पुजारी ने दर्पण उठाकर एक ओर रख दिया । फिर क्रेसिस ने अपनी कघी निकालकर मूर्ति के चरणो मे रख दी और कहा, "हे देवी ! तू उषा को चीरकर रक्तवर्ण समुद्र के जल से निकली है, मैं तुझे यह कघी भेट करती हू ।" फिर उसने अपने कठ से सच्चे पन्ने के हार को उतारा और उसको भी देवी पर चढा दिया ।

पुजारी ने कहा, "इन मूल्यवान उपहारो के बदले मे तुम देवी से क्या चाहती

हो ?"

उसने सिर हिलाकर कहा, "कुछ नही।"

पुजारी चकित रह गया। कुछ देर बाद वह भी चला गया।

अब कासे की चित्रित चौकी के अन्दर केवल डिमीट्रिअस रह गया था। वह क्रेसिस की इन सारी भेटो को देख रहा था। उसने बाहर निकलकर अपने मन मे कहा, "तुमने तीन वस्तुओ की आशा मे अपनी तीन वस्तुए पहले ही देवी पर चढा दी है।"

जब डिमीट्रिअस राजपथ पर चला तब क्रेसिस से मिलने की इच्छा उसके हृदय मे बलवती हो उठी थी। मार्ग मे रानी बर्निस अपनी विशाल पालकी मे चली आ रही थी। उसने उसे अपनी पालकी मे बिठा लिया। किन्तु डिमीट्रिअस अपने विचारो मे खोया बैठा था। रानी उसकी उस उपेक्षा से मन ही मन आहत हुई। रानी उसको अधिक नही बहला सकी। वह किसी तरह उसके पास से चला आया।

पचीस वर्षीया बेचिस गणिका थी। आज उसके यहा दावत थी। उस दावत मे फिलोडीमोस, नोक्रेटिस, फोसटेना, फ्रेमेलास इत्यादि सब लोग इकट्ठे हुए थे। क्रेसिस भी आ गई थी। टिमन ने क्रेसिस को अपनी वासनामय भुजाओ मे घेर लिया। वह जब वहा से बाहर निकली तो रास्ते के दो मल्लाहो ने उसको पकड लिया। जब बडी मुश्किल से छूटकर वह लौटी तब उसने देखा कि बेचिस की महफिल मे रग आ गया था। अबाध रूप से मदिरा बह रही थी। कई और अतिथि आ गए थे। विलास, अखड विलास वहा लरज रहा था। देर तक वहा आनन्द होता रहा। उसी समय तीन पुरुषो ने एक बडे पात्र मे मदिरा भर दी। बासुरीवाली स्त्री उस मदिरा मे जा गिरी। बेचिस ने उसे देखा तो उसे हसी आ गई। उसने चिल्लाकर कहा, "दासी जल्दी से दर्पण लाकर इसे दिखा।" दासी एक कासे का दर्पण ले आई। "यह नही मेरा वह बहुमूल्य दर्पण ला।" क्रेसिस झटके के साथ उठ बैठी। दासी नही लौटो थी। क्रेसिस पर बोझ-सा गिर रहा था। दासी बडी देर मे खाली हाथ आई। बेचिस ने कहा, "दर्पण कहा है ?"

दासी ने सूखे होठो पर जीभ फेरते हुए कहा, "वह, वह वहा नही है, वह चोरी हो गया है।" बेचिस पागलो की भाति खडी हो गई। उसने दासी का गला पकडकर कहा, "तूने चुराया है।" और वह उसे मारने लगी। दासी के लिए दया की कोई जगह नही थी। उत्सव समाप्त-सा हो गया। अपनी स्वामिनी बेचिस के इस विकराल रूप को देख-कर सब दासिया काप उठी। अन्त मे यह निश्चय हुआ कि चोरी जिस दासी पर लगाई गई, उसे सलीब पर चढा दिया जाए और देखते ही देखते उन्होने उसे सलीब पर चढा भी दिया। क्रेसिस देखती रही। बेचिस ने दासी के हाथ मे हथौडे से कील ठोकी और इस प्रकार देखते ही देखते उस दासी के शरीर से मास के लोथडे लटक आए और मृत्यु के अक मे जाकर फिर वह दासी नही रही, मुक्त हो गई। क्रेसिस को पता चल गया कि डिमीट्रिअस अपना काम कर चुका था। घर पहुचने पर उसने देखा कि सब कुछ वैसा ही था। आज भीतर ही भीतर उसका मन उमस रहा था। वह लेट गई और उसने स्वप्न देखा। वह अपने सुनहले केशो पर वज्रखचित राजमुकुट पहने खडी है। सारा महानगर उसके सामने सिर झुकाए खडा है और भद्दी प्रौढा गणिका बेचिस पथ्वी पर सिर टेके नगी खडी है।

उसकी आख खुल गई तभी एक बडा पक्षी अपने काले डैने फैलाए उसकी बाईं ओर से फडफडाता हुआ समुद्र की ओर उड गया। वह इस अपशकुन मे काप गई।

रानी बर्निस की छोटी बहिन का नाम क्लियोपेट्रा था। रानी ने देखा कि उसकी बहिन इसी आयु मे वासनामयी हो गई थी। उसे डिमीट्रिअस की याद हो आई किन्तु डिमीट्रिअस उसके पास कहा था।"

जब डिमीट्रिअस उस दर्पण, कघी और मोतियो के हार को लेकर अपने घर पहुचा तो रात हो चुकी थी। दिन-भर वह उद्यान मे ही घूमता रहा था। वह शीघ्र सो गया। जब उसकी आख खुली तब वह पसीने मे भीग गया था। उसने भयानक स्वप्न देखा था।

जब बेचिस की यह दावत समाप्त हुई, भोर हो चुकी थी। तभी एकाएक वर्षा होने लगी, सुहावनी बूदे गिरने लगी। वर्षा रुकने पर आकाश स्वच्छ हो गया। आज देवी अफ्रोदिते के उत्सव का तीसरा दिन था। इसमे केवल विवाहित सम्भ्रान्त नारिया ही जा सकती थी। गणिकाए मार्ग पर इकट्ठी थी, उनमे बेचिस की दावत के बारे मे बातचीत होने लगी और धीरे-धीरे दासी की मृत्यु का सवाद भी फैलने लगा। दर्पण की बात सुनकर स्त्रिया हसने लगी। उन्हे बडा आश्चर्य हुआ। लेकिन किसने उसे चुराया होगा! कौतूहल अब ज़ोर पकडने लगा। सैकडो की भीड एकत्रित हो गई। सभी कुछ न कुछ कह रहे थे। तभी एक पैना स्वर भीतर की ओर से ऊपर उठा। राजपुरोहित की स्त्री की हत्या हो गई है। चारो ओर सन्नाटा छा गया। लोगो के श्वास तक बन्द हो गए। किसीको यह तनिक भी आशा नही थी कि राजपुरोहित जैसे महान और उच्चाधिकारी की स्त्री की भी हत्या हो सकती है और वह भी देवी अफ्रोदिते के वार्षिक महोत्सव के दिनो मे। अब सेवक चारो ओर पुकारकर कहते जाते थे, "राजपुरोहित की पत्नी की हत्या हो गई है। राजाज्ञा से उत्सव आज से स्थगित कर दिया गया है। हत्यारा उसके केशो की सुन्दरता बढानेवाली कघी को भी ले गया है!" चारो ओर भय आतक बनकर फैल गया। इतने बडे सिकन्दरिया मे आज तक कभी इतनी भीड नही हुई थी। हज़ारो सिर समुद्र-तट पर दिखाई दे रहे थे। रानी बर्निस के सरदारो ने जब डॉलमी ओलीटस नामक पहले शासक की हत्या करके बर्निस को रानी घोषित करते हुए सिकन्दरिया मे झडा फहराया था तब भी आज के बराबर भीड समुद्र-तट पर नही हुई थी।

एक व्यक्ति ने पुकारकर कहा, "मेरे विचार से जिसने बेचिस का दर्पण चुराया है वही टूनी का हत्यारा है।" कई गणिकाए भय से रोने लगी। तभी धीरे-धीरे एक ओर बडी भीड का शोर सुनाई दिया जो इसी ओर चला आ रहा था। स्त्रिया भय से चिल्लाने लगी। एक वज्रकठ पुकार उठा, "गणिकाओ, पवित्र गणिकाओ!" सब श्रोता खडे हो गए। वह व्यक्ति फिर चिल्लाया, "देवी अफ्रोदिते का मोतियो का हार, सच्चे एनाडालोयमीनो के मोतियो का हार चोरी चला गया है।" सबके चेहरे सफेद पड गए। कितनी भयकर सूचना थी! भीड काप उठी और तब कोई भागा, उसे देखकर और भागे। गणिकाए भय से विह्वल हो रोती हुई भागने लगी। समुद्र-तीर एकदम नीरव हो गया। भीड चली गई थी। एक स्त्री और एक पुरुष वहा बैठे रह गए थे। वे देख रहे थे कि जनता मे उस चोरी और हत्या की क्या प्रतिक्रिया हुई थी। वे क्रेसिस और डिमीट्रिअस थे।

दोनो मैदानो के दो छोरो पर एक-दूसरे को देख तो नही सके लेकिन फिर भी जैसे पहचान गए। वह भागी हुई डिमीट्रिअस के पास आ गई। उसने उसके घुटने पकड लिए और कहा, "मै तुम्हे प्यार करती हू। अब तक मैंने कभी नही जाना था कि प्रेम क्या होता है। मै तुम्हे अपना प्यारा प्यार, सारी वासना, अपना सम्पूर्ण नारीत्व सब कुछ दे डालूगी। आज मैं बहुत खुश हू इसलिए मेरी आखो से आसू बह रहे है। मुझे प्यार करो। लो मेरा चुम्बन लो।"

डिमीट्रिअस ने कहा, "नही, विदा।" और वह हलके कदम रखते हुए बढ चला। क्रेसिस हतप्रभ रह गई। आश्चर्य से उसका मुख खुला का खुला रह गया। वह उसके पीछे भागी और उसके घुटने पकडकर कहा, "तुम मुझसे ऐसा कह रहे हो।"

डिमीट्रिअस ने उत्तर दिया, "तुम्हीसे, क्रेसिस, तुम्हीसे कह रहा हू।"

"तुम इतने बदल कैसे गए ?" क्रेसिस ने पूछा।

डिमीट्रिअस ने कहा, "अब मुझे तुम्हारी आवश्यकता नही रही है। सुनो, मैने ही वह दर्पण चुराया है। मैंने ही काम से विह्वल होकर, निरपराध टूनी की हत्या की है और उसकी कघी ली है। और मैने ही देवी अफ्रोदिते की ग्रीवा से वह सच्चे मोतियो का सतलडी हार चुराया है। इन सब चीजो को तुम्हे देकर मैं तुम्हे प्राप्त करनेवाला था। है ना ! और इस तरह जो तुम मुझे देती और जो अब देने को तैयार हो, उस वस्तु का मूल्य जरूरत से ज्यादा बढ जाता है। है न यही बात ! पर अभी मुझे तुमसे कुछ नही चाहिए। अब कृपा कर तुम भी वही करो जो मैं कर रहा हू और मुझे छोड दो।"

क्रेसिस ने कहा, "तो फिर अपनी ये तमाम चीजे अपने ही पास रखो। मुझे वह नही चाहिए। मुझे तो बस तुम, तुम्हारा प्रेम, तुम्हारा सहवास चाहिए।"

डिमीट्रिअस ने उत्तर दिया, "मै कतई तुम्हारा नही हो सकता क्योकि मै अब तुम्हे बिलकुल नही चाहता।" क्रेसिस समझ नही पाई। डिमीट्रिअस ने उसकी ओर घूरकर देखा और फिर धीरे से कहा, "क्रेसिस, अब बहुत देर हो गई है। मैंने तुम्हे भोग लिया है।"

"ओह, तुम पागल हो गए हो, क्रेसिस ने भर्राए कठ से कहा, 'भला, कब, कहा।"

"मैं सच कह रहा हू," डिमीट्रिअस ने उत्तर दिया, "तुम्हे इस बात का पता भी नही है और मैने भोग लिया है। जो मै तुमसे चाहता था वह मुझे तुम्हारे बिना जाने ही मिल चुका है। आह ! क्रेसिस तुम वास्तव मे कितनी सुन्दर थी, कितनी कमनीय और वासनापूर्ण ! यह सब सुख मैंने तुम्हारी छाया से ही प्राप्त किया है। इसके लिए मै आभारी हू। परन्तु अब और आगे इस खेल को बढाने नही देना चाहता।"

"ओह ! तुम बडे स्वार्थी हो, कठोर हो !" क्रेसिस ने रोते हुए कहा, 'तुमने मुझे दु खी बना दिया है। डिमीट्रिअस, मैं पागल हो जाऊगी।"

डिमीट्रिअस ने कापते स्वर से कहा, "क्रेसिस, क्या तुम भी मेरे बारे मे उस समय चिंतित हुई थी जब अपने क्षणिक आवेश मे आकर तुमने मेरी कमजोरी का फायदा उठाते हुए मुझे वे तीन अपराध करने को विवश कर दिया था। जानती हो वे अपराध ऐसे

भयकर थे कि उसमे मेरा अस्तित्व ही मिट जाता। ऐसा भी हो सकता था ओर अब भी वे जीवन-भर मेरे हृदय को कचोटते रहेगे और लज्जा से मेरा सिर सदैव-सदैव झुका रहेगा। तुमने तो तब मेरे बारे मे नही सोचा था न। अब यदि मै तुम्हारे बारे मे न सोचू तो क्या बुरा करता हू।"

क्रेसिस ने कहा, "अगर मैं वैसा न करती तो तुम मेरी ओर आकर्षित ही क्यो होते ?"

क्रेसिस जितना ही डिमीट्रिअस को अपने पाश मे बाधना चाहती डिमीट्रिअस उतना ही पीछे हटता जा रहा था। फिर उसने कहा, "डिमीट्रिअस, तुम क्या चाहते हो ?" डिमीट्रिअस चुप हो गया। क्रेसिस उसके मौन से घबरा गई।

उसने कहा, "सुनो क्रेसिस, वह जो दर्पण, कघी और मोतियो का हार है, जो मैं तुम्हारे लिए लाया हू उन्हे निश्चय ही तुमने काम मे लाने के लिए तो मागा नही था क्योकि चोरी के सामान का कोई प्रदर्शन तो नही कर सकता। इसका अर्थ है कि तुमने वे अपने लिए नही मागे थे। मागे थे तो केवल अपनी निर्दयी प्रकृति दिखाने के लिए। देखा तुमने ! जनता कितनी उत्तेजित हो उठी हे। कितने बडे अपराध कराए है तुमने मेरे हाथो, और अब मैं चाहता हू कि तुम इन चीज़ो को पहनो।"

और क्रेसिस घबराकर चिल्लाई, "क्या मैं पहनू ?"

डिमीट्रिअस ने कहा, "फिर तुम मदिर के पीछे स्थित हर्मिस की मर्ति के पास जाओ। वह स्थान निजन है। वहा उस मर्ति के बाये पैर के नीचे का पत्थर हटाओ। वहा तुम्हे वे तीनो वस्तुए मिलेगी उन्हे लेकर चली आओ। फिर तीनो से शृगार करके जब तुम बाहर निकलोगी तब रानी बर्निस के सेवक तुम्हे बन्दी बना लेगे और फिर दूसरे दिन सूर्योदय के पहले, जैसाकि तुम चाहती हो, मै डिमीट्रिअस तुम्हारे पास बन्दीगृह मे आ जाऊगा।"

वह पृथ्वी पर चक्कर खाकर बैठ गई। आज डिमीट्रिअस उसे वैसे ही छोड गया, जैसे तीन दिन पहले वह उसे छोडकर चली गई थी। क्रेसिस को अपने वचन का ध्यान आया। वह चल पडी। वह अनेक प्रकार की बाते सोचती हुई अन्त मे उसी मूर्ति के पास पहुच गई। उसने कघी, दर्पण और मोतियो का हार निकाल लिया। उसने उनको पहन लिया और दर्पण मे अपना रूप देखने लगी। उसने अपनी लाल रेशमी ओढनी अपने सिर पर अच्छी तरह लपेट ली और इन भयानक वस्तुओ को पहने ही चल पडी थी।

विशाल मदिर मे आज फिर भीड इकट्ठी हुई थी। तीन चोरियो ने लोगो के हृदय मे आतक फैला दिया था। कुछ समय बीत गया। भीड का कोलाहल जारी रहा। मनुष्यो का वह समुद्र वास्तविक समुद्र की रोर के साथ अतरिक्ष को अपने भीषण कपन से गर्जित कर रहा था और तभी भीड पुकार उठी, "अफ्रोदिते, अफ्रोदिते !" दूसरे ही क्षण हजारो आखे ऊचे पवत की ओर घम गई। अब असख्य मनुष्य इकट्ठे हो गए थे। ऐसा लगता था कि बलवा हो जाएगा। तभी रानी बर्निस की पालकी आती दिखाई दी। परन्तु सभीकी दृष्टि पर्वत की ओर जम गई थी। वहा क्रेसिस अफ्रोदिते की भाति एक पैर उठाकर दूसरे से घुटने के बल बैठी थी। वह नितान्त नग्न थी। उसने अपने दोनो हाथो से अपनी लाल

रेशमी ओढनी कधो से पकड रखी थी। उसके वक्ष पर हार दीख रहा था। केशो मे कघी घुसी हुई थी और सीधे हाथ मे वह दर्पण था। लाल रेशमी ओढनी तेज हवा मे उसकी पीठ पर फरफरा रही थी। उसका रूप देखकर जनता कराह उठी और भीड के लोग चिल्लाए, "अफ्रोदिते! अफ्रोदिते!" सैनिक पर्वत पर उसके पास पहुच गए थे।

क्रेसिस बन्दीगृह मे अकेली थी। उसे पुरानी बाते याद आ रही थी। न जाने कितने-कितने विचार उसे व्याकुल कर रहे थे। तभी धीरे से द्वार खुला और डिमीट्रिअस अन्दर आ गया। उसने द्वार पूर्ववत् बन्द कर लिया। उसने सोचा था कि डिमीट्रिअस उसे आते ही बचा लेगा। वह उसकी ओर लपकी किन्तु डिमीट्रिअस को देखकर हतप्रभ-सी खडी रह गई। वह पत्थर की मूर्ति की तरह खडा था, जैसे वह उससे बहुत दूर था। वह वातायन के पास जाकर बाहर फूटती हुई भोर का सुहावना दृश्य देखने लगा। वह शैया पर बैठ गई। उसी समय किसीने द्वार पर दस्तक दी। डिमीट्रिअस ने आराम से द्वार खोल दिया।

कारागार का रक्षक बूढा अपने साथ दो सैनिक लेकर भीतर आ गया। उसने कहा, "श्रीमान, मै इस छोटे प्याले को लेकर आया हू!" क्रेसिस ने प्याला हाथ मे ले लिया। डिमीट्रिअस ने फिर भी उसकी ओर नही देखा। वह उसमे से आधा पी गई। उसने डिमीट्रिअस की ओर बाकी प्याला बढाया, लेकिन उसने हाथ उठाकर मना कर दिया। फिर वह प्याले के बाकी विष को भी पी गई। क्रेसिस बाहर का दृश्य देखने लगी। बूढे ने पैर दबाकर कहा, "मेरे स्पर्श का अनुभव होता है?"

क्रेसिस ने कहा, "नही।"

धीरे-धीरे क्रेसिस मिट्टी मे मिट्टी बनकर मिल गई।

डिमीट्रिअस अपने कला-मन्दिर मे अकेला घूम रहा था। वह पत्थर के बने हुए एक बहुत बडे घोडे के पास जाकर खडा हो गया। तीन दिन से वह काफी बेचैन था। हठात् उसने अपने सेवक से कहा, "लाल मिट्टी सानकर कारागार के वृद्ध रक्षक के पास तुरन्त जाओ। एक और दास साथ मे हथौडा इत्यादि लेकर मुझे वहा मिले। उससे कहना कि यदि अभी तक गणिका क्रेसिस की मृत देह खाई मे न फेकी गई हो, तो अभी और रोक ली जाए और तब तक वही रहे जब तक मै और दूसरी आज्ञा न भेजू, जाओ।"

जब वह बाहर निकला रात हो चुकी थी। कारागार के द्वार पर उसे अपने दोनो दास मिले। क्रेसिस की लाश अभी उसी कक्ष मे मौजूद थी। डिमीट्रिअस ने उसका मुह खोला। अपलक नेत्रो से उसके सौन्दर्य को देखता रहा। फिर उसने उसे कमर तक वस्त्रहीन कर दिया। फिर उसने उसे बिलकुल वस्त्रहीन करके देखा। वह नारी का असली रूप देखना चाहता था। उसने उसे बडी कठिनाई से दीवार के सहारे बैठाया। डिमीट्रिअस खिडकी के पास पडे मेज पर रखे हुए लाल मिट्टी के लोदे पर अगुलिया चलाने लगा। धीरे-धीरे क्रेसिस की लाश मिट्टी मे सजीव बनने लगी। रात बीत गई। डिमीट्रिअस की क्रेसिस बन गई और उसी शाम से डिमीट्रिअस उस पुतले को सामने रखकर सगमरमर की मूर्ति बनाने लगा। क्रेसिस की मूर्ति बनने लगी।

क्रेसिस की लाश को उसकी दो सखिया ले आई और देखा कि टिमन चार

युवतियो के साथ हसता-बोलता चला जा रहा है। एक सखी ने कहा, "क्रेसिम की लाश वहा उस मकान की छाया मे रखी है। रोडीज और मै उसे कब्रिस्तान ले जा रही है, लेकिन वह बहुत भारी है। वह हमसे नही चलती। तुम हमारी सहायता करो।"

टिमन बोला, "खैर, मै तुम्हारी सहायता करता हू।"

लाश चुराकर लाई गई थी। निर्जन उद्यान मे उन्होने गड्ढा खोदा और क्रेसिस उस कब्र मे सुला दी गई। टिमन ने लाश को सीधा लिटा दिया। मिट्टी मे मिट्टी मिल गई थी।

ईसा के बाद के मिस्री जीवन का यह विलासितामय वर्णन लेखक ने काफी खोज-बीन के बाद लिखा था। उपन्यास में नग्नता काफी है, पर लेखक ने युगपरक सत्य का ही निर्वाह किया है। मनुष्य की तृष्णा पर उसने अच्छा प्रकाश डाला है और उसके चित्रण बड़े ही भावुक बन पड़े है।

युद्ध और शांति

[वॉर एण्ड पीस[1]]

तालसताय काउयट लियो रूसा लेखक तालसताय का जन्म रूस के ट्यूला प्रदेश में ६ सितम्बर, १८२८ को एक कुलीन-सामत परिवार में हुआ था। आपने कानून का अध्ययन किया तथा कज़ान विश्वविद्यालय में अनेक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। इसके उपरात आप सेना में भर्ती हो गए और सेवस्तोपोल के युद्ध में देशरक्षार्थ लडे। आपने किसानों के लिए एक स्कूल खोला और ऋषियों का सा सादा जीवन व्यतीत करने लगे। सरकारी विरोध के कारण स्कूल बन्द कर दिया गया। अपने सुधारवादी विचारों को फैलाने के लिए आप साहित्य सृजन करने लगे। १६०१ में आपको रूसी चर्च ने धर्म बहिष्कृत कर दिया। आपने किसान का सा जीवन अपना लिया और अपने पदों तथा सम्पत्ति से अपने को मुक्त कर लिया। २० नवम्बर, १६१० को आपकी मृत्यु हो गई। आपने अनेक उपन्यास लिखे जिनमें 'वार एण्ड पीस' (वोयना इ मिर) अनुपमेय है। यह १८६२-६६ के मध्य प्रकाशित हुआ। इसका विस्तृत कलेवर देख कर आश्चर्यचकित हो जाना पडता है। आज तक इतना बडा और सुगठित उपन्यास और कोई नही लिख पाया।

"तो तुम भी युद्ध मे जा रहे हो ?" अन्ना पावलोना ने पूछा।

राजकुमार आन्द्रेई बोलकोन्सकी ने कुछ परेशानी से कहा, "हा। जनरल कुटूजोव ने मुझे अगरक्षको मे ले लिया है।"

राजकुमार आन्द्रेई एक अत्यन्त सुन्दर व्यक्ति था और पीटर्सबर्ग के उच्च समाज मे उसका विशेष स्थान था। आज १८०५ की जुलाई की भीगी शाम को अन्ना के घर को अनेक दीपको के प्रकाश ने आलोकिन कर दिया था।

उसने पूछा, "और पत्नी भी जाएगी ?"

"वह गाव जा रही है, मेरे पिता के पास। वही रहेगी।"

उसी समय वाईकोम्प्ट डी मोण्टेमार्ट की बाह पकडे युवती राजकुमारी लिजा बोलकोन्सकी उधर से निकली। वाईकोम्प्ट फ्रास की राज्य-क्राति मे पराजित होकर रूस भाग आया था। लिजा ने चचलता से कहा, "प्रिय आन्द्रेई, मुझे वाईकोम्प्ट ने बोनापार्ट और पेरिस की अभिनेत्री का बहुत ही दिलचस्प किस्सा सुनाया है।"

राजकुमार आन्द्रेई भन्ना गया। पत्नी के नखरो से वह नाराज़ रहता था। यदि

---

१ War and Peace (Count Leo Tolstoi)

राजकुमार हृदय की और गहराई से जाच करता, तो उसे पता चलता कि वास्तव मे वह अपनी स्त्री से ही नही ऊब गया था, ऊबा तो वह अपने समाज के आचार-व्यवहार से था, जिसमे नृत्य, सगीत, भोज और कृत्रिम आडम्बर के अतिरिक्त कुछ भी नही था, तथा कई बार उसे ऐसा लगता था कि यदि वह उस जीवन से दूर नही चला जाएगा तो निश्चय ही वह पागल हो जाएगा ।

सहसा राजकुमार के मुख पर मुस्कराहट खेल गई। कमरे के बीच एक तरुण व्यक्ति चश्मा लगाए आ रहा था । वह वृद्ध काउण्ट बेज़होव का अवैध पुत्र था। काउण्ट बेजूहोव के पास अपार धन था और इस समय वह मास्को मे मृत्यु-शय्या पर पडा था।

इस तरुण व्यक्ति का नाम था, पियरे बेजूहोव। दस वर्ष की अवस्था मे शिक्षा पाने के लिए उसे विदेश भेज दिया गया और कुछ ही मास पूर्व वह लौटकर आया था।

आन्द्रेई ने बढकर पियरे से कहा, "अरे, तुम हो पियरे, और वह भी उच्च समाज मे !"

पास खडे राजकुमार वैसीली ने अपना चमकदार गजा सिर अन्ना की ओर झुकाया और कहा, "यह कुलीन भालू है जो कुछ हफ्तो से मेरे साथ ठहरा हुआ है और आज मैं बडी मुश्किल से इसे बाहर निकालकर लाया हू ।"

राजकुमार वैसीली और उसकी पुत्री सुन्दरी ऐलेन एक ओर बढ गए। पियरे मत्र-मुग्ध और भयभीत-सी आखो से जाती हुई ऐलेन की ओर देखता रहा। ऐलेन निस्सन्देह अत्यन्त सुन्दरी थी। और जब वह वहा खडे हुए पुरुषो के बीच मे से निकली तो उन लोगो ने आदर से उसके लिए मार्ग छोड दिया।

राजकुमार आन्द्रेई ने कहा 'कितनी सुन्दर है !"

पियरे बडबडाया, "बहुत ।"

फिर कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया और फिर उसने धीमे से आन्द्रेई से कहा, "मै रात को तुम्हारे यहा खाना खाने आऊगा।

राजकुमार वैसीली अपनी पुत्री के साथ विशाल कक्ष मे जा रहा था, कि उसके कन्धे पर किसीने हाथ रखा। मुडकर देखा तो चिन्ताग्रस्त एक अधेड स्त्री उसे याचना-भरी दृष्टि से देख रही थी। वह राजकुमारी अन्ना बूब्रेस्थकोय रूस के एक प्राचीन कुल की थी किन्तु अब वह दरिद्र हो गई थी।

वह कुछ घबराए हुए स्वर से बोली, "राजकुमार, मैंने कभी आपको याद नही दिलाया कि आपके लिए मेरे पिता ने क्या-क्या किया था।"

आपके पुत्र बोरिस को गार्ड्स मे ले लिया जाए।"

राजकुमार वैसीली की नीति यह थी कि वह दूसरो के लिए कभी भी बडे लोगो से कुछ नही मागता था क्योकि ऐसा होने से आवश्यकता पडने पर स्वय अपने लिए मागना कठिन हो जाता था। इस समय वह इतना प्रसन्न था कि वह अपने सिद्धान्त को भूल गया। उसने कहा, "अन्ना वेहालोवना ! मैं इस असम्भव काम को भी करके दिखाऊगा। आपके पुत्र का गार्ड्स मे भेज दिया जाएगा।"

एक घटा बीत गया। अतिथि लौटने लग गए। पियरे सबके बाद निकला, इसलिए नही कि उसे वहा बहुत आनन्द आ रहा था, बल्कि इसलिए कि किसीके ड्राइगरूम से बाहर निकलना उसे इतना ही अज्ञात था जितना कि भीतर प्रवेश करने का नियम। वह अत्यधिक लम्बा था, मज़बूत और तितर-बितर होती हुई भीड मे स्वप्निल। वह समय निकालता हुआ इधर-उधर घूमता रहा। बाहर आने पर वह आन्द्रेई के घर की ओर चल पडा। उसे राजकुमार आन्द्रेई प्रतीक्षा करता हुआ मिला। लिजा सोने चली गई थी। खाना खाने के बाद वे लोग आन्द्रेई के अध्ययनकक्ष मे धूम्रपान करने लगे।

पार्टी समाप्त होने के बाद पियरे आन्द्रेई के निवासस्थान पर पहुचा। खाने से निबटकर वे युद्ध की बाते करने लगे।

पियरे ने कहा, "नेपोलियन के विरुद्ध होने वाला यह युद्ध यदि स्वतन्त्रता का सग्राम होता, तब तो बात मेरी समझ मे आ जाती और मैं सबसे पहले फौज मे भरती हो जाता। लेकिन ससार के महानतम व्यक्ति के विरुद्ध इग्लैड और आस्ट्रिया की सहायता की जाए, यह तो मुझे उचित नही जान पडता।"

"और यह तो बताओ, तुम युद्ध करने क्यो जा रहे हो ?"

राजकुमार ने कहा, बस यह समझो कि मुझे जाना पड रहा है। मै इसलिए जा रहा हू क्योकि मौजूदा जिन्दगी से मैं ऊब चुका हू। फिर कुछ आगे झुककर उसने भर्राए हुए स्वर मे कहा, "मेरे दोस्त, कभी भी विवाह मत करना। समझे ? यदि मेरी सलाह मानो तो कभी भी विवाह करने की भूल मत करना। और मुझे यह भी वचन दो कि अब तुम अनातोल कोरागिन की सगत छोड दोगे।"

पियरे के साथियो का नेता अनातोले कोरागिन घुडसवारो के गार्डों के बैरक मे रहता था।

आन्द्रेई ने फिर कहा, 'औरत और शराब की बात मै समझ सकता हू लेकिन कोरागिन की औरत और शराब मेरी समझ मे नही आती।"

पियरे ने वचन दिया कि अब वह कभी अनातोल से नही मिलेगा। लेकिन वापसी पर जब उसने किराये की गाडी ली तो अनायास ही, गाडीवान को घुडसवारो के गार्डों की बैठक की ओर चलने की आज्ञा दे दी। अचानक ही उसे अपनी प्रतिज्ञा याद आ गई। तब उसने अपने अन्त करण को समझाते हुए कहा, "कोई बात नही। आज एक रात और सही, बस उसके बाद फिर कभी नही।"

राजकुमारी अन्ना ब्र्रेस्थकोय मास्को मे रोस्ताव नामक अपने एक धनी रिश्तेदार के यहा रहने को चली गई। इनके साथ उसका बोरिस वर्षो तक रहा था और अब राजकुमार वैसीली के प्रभाव से सेना मे भर्ती होकर युद्ध के लिए आस्ट्रिया जानेवाला था।

उस दिन सुबह मास्को मे एक ऐसी घटना हुई थी कि आज उसीपर चर्चा चल पडी। घटना यह थी कि जिस काउट बेजूहोव की सुन्दरता की मास्को की स्त्रिया एक समय अत्यधिक प्रशसा किया करती थी, आज वह वृद्ध होकर बहुत अधिक बीमार पड़ा हुआ था।

काउण्टेस रोस्तोव ने लम्बी सास ली और बडबडाई, "बेजूहोव किसी समय कितने अधिक सुन्दर थे ! मैंने उतना सुन्दर पुरुष जीवन मे कभी नही देखा।"

राजकुमारी अन्ना ने रहस्य-भरे स्वर से कहा, "उनका यश कौन नही जानता ? वे यह भी भूल गए थे कि उनके कितने बच्चे हुए थे। पर यह पियरे जो है, यह उन्हे हमेशा प्यारा लगा।

उसी समय दरवाजे पर धक्कम-धक्का-सी सुनाई दी और हसती हुई गुलाबी चेहरे-वाली एक तेरह साल की लडकी अपनी पतली बाहो मे एक गुडिया को चिपकाए भीतर घुस आई और उसके पीछे ही खुले दरवाजे मे एक लम्बा खुबसूरत बालोवाला युवक अफसर दिखाई दिया। लडकी ने कहा, "बोरिस कहता है कि वह मेरी ममी को अपने साथ युद्ध मे ले जाएगा।" और अपनी गुडिया को अपनी बाहो मे छिपाती हुई वह बडे ज़ोर से हस पडी।

युवक अफसर ने गुडिया की ओर घूमते हुए कहा, "मै इस गुडिया को तब से जानता हू जब यह बहुत छोटी थी। भले ही इस गुडिया के दात टूट गए हो और इसके सिर मे भी छेद हो गया हो लेकिन इसे मै अब भी उतना ही प्यार करता हू।"

छोटी लडकी ने कहा, "इन्हे यह गुडिया मत ले जाने दो।" और उसने काउण्टेस रोस्तोव के कपडो मे अपनी हसी रोकने के लिए मुँह छिपा लिया।

"अच्छा, अच्छा, नटाशा, बहुत हुआ। जाओ, खेलो !" काउण्टेस ने नकली गुस्सा दिखाते हुए कहा।

काली आखोवाली छोटी-सी लडकी चचलता से भरी हुई जल्दी-जल्दी कमरे मे चली गई। कमरे मे उसके भाई निकोलाई और उसकी बहन सोनिया ने प्रवेश किया। निकोलाई अट्ठारह वर्ष का घुघराले बालोवाला सुन्दर युवक था। सोनिया काउण्टेस की भतीजी थी, जिसे इसी परिवार मे पाला गया था, उसकी बरौनिया लम्बी थी और घने बालो की दो चोटिया सिर पर लिपटी हुई थी। उसको देखकर बिल्ली के बच्चे की याद हो आती थी। हालाकि वह निकोलाई की तरफ शायद ही देखती थी, लेकिन ध्यान से देखने-वाला स्पष्ट ही समझ सकता था कि वह निकोलाई के प्रति कितनी अधिक आकर्षित थी।

कुछ हफ्ते बीत गए। रोस्तोव परिवार ने नटाशा को चौदहवी वर्षगाठ मनाने के लिए बॉल-नृत्य का आयोजन किया। दो नृत्यो के बीच के समय मे सोनिया गायब हो गई। नटाशा एक कमरे मे पहुची तो वह फूट-फूटकर रो रही थी।

"क्यो सोनिया, तुम्हे क्या हुआ ?" उसको देखकर नटाशा भी रोने लगी।

सोनिया ने उत्तर दिया, "कागज़ आ गया है। निकोलाई युद्ध मे जा रहे है। हम कभी भी शादी नही कर सकते। और फिर चाची हमे शादी करने भी नही देगी। वे यह कहेगी कि मैं उनका जीवन बरबाद करना चाहती हू। वे काउण्टेस जूली से उनकी शादी करना चाहती है।"

नटाशा ने उसे उठाया। अपने हृदय से लगाकर वह आसुओ के बीच मे मुस्करा दी, "सोनिया, मेरी प्यारी सोनिया, क्या बकवास कर रही हो ! क्या तुम्हे याद नही कि उस दिन दीवानखाने मे हमने इस बारे मे निकोलाई से बात करके इस बात को हमेशा के लिए तय कर लिया था। भैया तो तुम्हारे प्रेम मे पागल हो रहे हैं। उन्होने कई बार ऐसा

कहा है। और वह जूली तो उन्हे तनिक भी नही भाती।"

नृत्य का छठा दौर हो रहा था, उस समय नगर के दूसरे छोर पर अपने विशालतम भवन मे वृद्ध काउण्ट बेजूहोव मृत्यु-शय्या पर पडा था। डाक्टर ने कह दिया था कि उसके बचने की उम्मीद नही। मरनेवाले आदमी के लिए सारे धार्मिक कर्म कर दिए गए थे। सारे घर मे सन्नाटा छाया हुआ था। राजकुमार वैसीली (जोकि अपनी पत्नी के सम्बन्ध मे इस समय उत्तराधिकारी था) तथा काउण्ट की तीनो लडकिया बराबर शय्या के पास बैठी रोगी की सेवा कर रही थी। पियरे बहुत देर मे पहुचा।

लेकिन जब काउण्ट बेजूहोव के देहान्त के बाद वसीयत पढी गई तो पियरे को मालूम पडा कि काउन्ट बेजूहोव के सारे खेत, घर और विशाल सम्पत्ति का स्वामी अब वही हुआ था। रूस की सबसे बडी सम्पत्ति का उत्तराधिकार उसे मिल गया था।

वृद्ध राजकुमार निकोलाई बोलकोन्सकी किसी समय कमाण्डर-इन-चीफ थे। दरबारी जीवन से वे ऊब चले थे और अपनी जागीर मे लौट आए थे। जहा वे अपनी बेटी राजकुमारी मार्या के साथ रहते थे।

राजकुमारी मार्या उस समय दीवानखाने मे बैठी थी जब राजकुमार आन्द्रेई और लिजा ने प्रवेश किया। माया हर्ष से पुकार उठी और लिजा को उसने अपनी भुजाओ मे बाध लिया।

भोजन के बाद वृद्ध पिता अपने पुत्र आन्द्रेई को अपने साथ अपने अध्ययन-कक्ष मे ले गए। "अच्छा, मेरे अच्छे योद्धा!" उन्होने कहा, "तुम बोनापार्ट से लडने जा रहे हो। देखो, अगर तुम युद्ध मे मर गए तो इस बुढापे मे मुझे अफसोस होगा, लेकिन इसके बावजूद अगर मुझे यह मालूम पडा कि निकोलोई बोलकान्सकी के पुत्र के योग्य तुमने आचरण नही किया तो "

राजकुमार आन्द्रेई ने मुस्कराकर कहा, "यह कहने की आवश्यकता नही है, पिताजी!"

विदा का समय निकट आ गया। राजकुमार आन्द्रेई ने रुकते हुए कहा, "पिताजी, मेरी पत्नी यहा है। मै लज्जित हू कि उसे मुझे आपके ऊपर छोडना पड रहा है। लेकिन वह गर्भवती है।"

वृद्ध ने उत्तर दिया, "बकवास मत करो।"

अक्तूबर, १८०५ का मध्य आ गया था। रूसी सेना के अग्रिम दलो ने पूर्वी आस्ट्रिया के कस्बो और गावो पर कब्जा कर लिया था।

लेकिन अगले कुछ हफ्तो मे रूसी सेना की स्थिति बहुत ही खराब हो गई। नेपोलियन की कमाण्ड मे एक लाख व्यक्ति बढते चले आ रहे थे। ड्यूलन नदी के निकट कुटुजोव के पैतीस हजार मनुष्यो की सेना तेज़ी से पीछे हट रही थी। कही-कही शत्रु बिलकुल पास आ जाता, तब दोनो ओर से झडपे होने लगती। जहा तक होता सघर्ष का बचाव किया जाता और गोला-बारूद और सामान लेकर रूसी सेना जल्दी से जल्दी पीछे

हटने की कोशिश करती ।

काउण्ट बेजूहोव का स्थान प्राप्त करने पर पियरे रूस के सबसे अधिक धनी लोगो मे से एक हो गया । इस अवस्था को प्राप्त होने के पहले उसने बहुत ही एकात, सुस्त और निश्चिन्त जीवन व्यतीत किया था । किन्तु अब उसने देखा कि उसके सामने अनेक काम इकट्ठे हो गए थे और सिवाय सोने के समय के और कोई समय उसे ऐसा नही मिलता जिसे वह अपना कह सके । राजकुमार वसीली तो उसके शुभचिन्तको मे जैसे प्रमुख हो गए थे । पियरे ने यह अनुभव किया कि सुन्दरी ऐलेन भी अपने पिता की भाति उसका सान्निध्य चाहती थी । कई बाल-नृत्यो, सम्मेलनो और सगीत-समाजो मे वह निरन्तर उसके साथ रही और लोगो ने यह अनुभव किया कि पियरे इसके सौन्दर्य की निरन्तर प्रशसा किया करता था।

एक दिन इसी प्रकार पियरे ऐलन के साथ उन्ही के कक्ष के एक एकान्त कक्ष मे बैठा था कि अचानक राजकुमार वैसीली ने वहा प्रवेश करते हुए कहा, "ईश्वर को धन्यवाद दो, पियरे !" उसने एक बाह मे पियरे और दूसरी बाह मे ऐलेन को लपेट लिया और फिर कहा, "मेरे बेटे, मेरी बेटी, आज मे कितना सुखी हू । पियरे ! यह तुम्हारी अच्छी पत्नी बनेगी । भगवान तुम दोनो का मगल करे ।"

और छ हफ्ते बाद उन दोनो का विवाह हो गया । हालाकि पियरे कई बार सुन चुका था कि ऐलेने के एक-दो नही कई प्रेमी थे ।

नेपोलियन छोटे भूरे अरबी घोडे पर बैठा हुआ अपने सेना-नायको से कुछ आगे सामने की पहाडियो पर छाए हुए अपने शत्रुओ की सेना को अपलक और निस्तब्ध होकर देख रहा था। प्रात के नौ बजे थे। आज २ दिसम्बर, १८०५ के ही दिन उसने सिंहासन पर पाव रखा था। आज मानो उसकी बरसी थी। उडते हुए कोहरे के कारण आकाश कुछ धूमिल-सा हो गया था। उसने रूसी सेनाओ को सुदूर पहाडी पर इधर से उधर घूमते हुए देखा और घाटी पर उसे निरन्तर चलती हुई तोपो की गर्जना सुनाई दी । और उस स्थान पर उसकी आखे एकदम जैसे गड गई थी । उसकी भविष्यवाणी ठीक निकली थी। कुछ रूसी सेनाए घाटी मे तालाबो और झीलो की ओर जा रही थी। उनका उतरना दिखाई दे रहा था और कुछ लोग फ्रेटजन की ऊचाइयो को छोडकर दूसरी ओर हट रहे थे। नेपोलियन के मतानुसार फ्रेटजन पहाडी की ऊचाई ही उस मैदान की कुजी थी । वह जानता था कि निकट भविष्य मे, बल्कि शीघ्र ही, रूसियो की बायी ओर की सेना जब फ्रास की सेना पर दायी ओर से आक्रमण करेगी तो उसके सामने कोई आड नही रहेगी। तब वह सोल्त और बर्नादोत की सेना के चुने हुए लोगो को लेकर उनपर इतनी जोर से आक्रमण करेगा कि सीधे फ्रेटजन की ऊचाइयो पर कब्जा कर लेगा।

और यही हुआ भी। आध घण्टे बाद ही ऐसी विचित्र लडाई छिडी कि रूसी सेना के पाव उखड गए और फिर बन्दूको, तोपो से भी ऊची एक आवाज गूजी, "दोस्तो, सब कुछ खत्म हो गया !"

उस आवाज़ को सुनते ही, जैसेकि वह कोई आज्ञा थी, आन्द्रेई को भागते हुए सैनिको की भगदड ने जैसे बहा दिया। जब भीड निकल गई तो उसने देखा जनरल कुटुजोव रक्त से भीगा हुआ एक रूमाल अपने गाल पर दबाए हुए था। आन्द्रेई ने घबराकर कहा, "आप घायल हो गए है।"

कुटुजोव ने कहा, "घाव यहा नही है।" और फिर उसने भागते हुए सिपाहियो की ओर इशारा करते हुए कहा, "वहा है।"

उसी समय फ्रेंच सेना ने एक गोला इधर भी फेका। कुटुजोव ने अपना पाव पकड लिया। कई सैनिक लुढक गए और रेजीमेट का झडा लिए जो सेकड लेफ्टीनेट खडा था, उसके हाथ से झडा गिर गया। राजकुमार आन्द्रेई ने तुरन्त घोडे पर से कूदकर झडा थाम लिया और प्रचड स्वर मे हुकार उठा, "सैनिको, आगे बढो!" उसके सिर पर भी एक भयकर आघात हुआ और उसके बाद चारो ओर अधकार छा गया।

"सुन्दरियो के स्वास्थ्य के लिए, उनके प्रेमियो के स्वास्थ्य के लिए!" दोलोहोव ने पियरे की आखो मे घूरते हुए मस्त होकर मदिरा का गिलास उठाया।

मास्को मे एक इग्लिश क्लब मे आज भोज हो रहा था। जिसमे एक लम्बी मेज़ पर आमने-सामने दोलोहोव और पियरे अतिथि बनकर बैठे हुए थे। अपनी आदत के मुताबिक पियरे बहुत अधिक मदिरा पी गया था। सचाई तो यह थी कि अपने विवाह के उपरात वह दिन पर दिन अधिकाधिक मदिरा पीने लगा था। लोग कहा करते थे कि वह अपनी सुन्दरी पत्नी की उपेक्षा करता था, और यह उसके लिए एक लज्जा की बात थी। सौभाग्य से बॉल-नृत्यो मे ऐलेन को कभी भी अपने प्रशसको का अभाव नही रहता था। अब भी उसका सौन्दर्य अतुलनीय और अनुपमेय माना जाता था। दोलोहोव को युद्ध मे अपनी वीरता दिखाने के कारण फिर ऊचे अफसर का पद मिल गया था। इस समय वह रणभूमि से छुट्टी पर आया था। इधर उसमे और ऐलेन मे काफी मेल-मुलाकात बढ गई थी। वैसे तो पियरे को उनपर सन्देह करने का कोई कारण नही था, किन्तु जब दोलोहोव ने शराब का गिलास उठाकर 'सुन्दरियो और उनके प्रेमियो के स्वास्थ्य के लिए' मगल-कामना की तब पियरे अपने डगमगाते कदमो पर खडा होकर चिल्ला उठा, "नीच, विश्वासघाती! मै तुम्हे चुनौती देता हू।"

अब द्वद्वयुद्ध प्रारम्भ होनेवाला था। पियरे के पास उसका सहायक नेसविदस्की नामक उसका मित्र था और निकोलाइ रोस्तोव दोलोहोव का सहायक था। और यह केवल सयोग था कि शराब मे धुत होने के बावजूद और गोली चलाते समय अपनी आखें बन्द कर लेने के बावजूद दोलोहोव पियरे के हाथो मारा गया।

इस घटना के बाद पियरे अपने अध्ययन-कक्ष मे बैठा था कि ऐलेन बडे वेग से घुस आई और क्रोध से चिल्लाते हुए बोली, "सारा मास्को मुझपर हस रहा है। तुम सारे आदमियो को छोडकर वीरता का काम करने गए। तुम नशे मे थे और तुम यह नही जानते थे कि तुम क्या कर रहे थे।" उसकी आवाज़ उठ गई मानो वह चीत्कार कर रही

थी। और उसने कहा, "तुमने अपने से हर तरह से अच्छे एक आदमी की हत्या कर दी!"

पियरे बडबडाया, "मुझसे बात मत करो। मै तुमसे विनती करता हू।"

"क्यो न करू! मै मै कहती हू कि तुम जैसे पति के साथ रहनेवाली स्त्री ससार मे है ही नही। जो भी होगी वह अवश्य ही अपने लिए एक प्रेमी चुनेगी। किन्तु एक मै हू जिसने ऐसा नही किया।"

पियरे ने गुर्राकर कहा, "अच्छा हो, हम एक-दूसरे से अलग हो जाए।"

एलेन ने कहा, "मुझे तुमसे बिछुडने मे कोई दु ख नही है। लेकिन मेरा हिस्सा मुझको मिल जाना चाहिए।"

पियरे क्रोध से उछल पडा और लडखडाता हुआ उसकी ओर बढा। उसने चिल्लाकर कहा, "मै तुम्हारी हत्या कर दगा।' और उसने मेज पर रखा हुआ सगमरमर उठा लिया। ऐलेन भयभीत-सी चिल्लाकर वहा से भाग निकली और घृणा से पियरे का मुख सख्त हो गया। उसने उस सगमरमर को फर्श पर फेंक दिया जो टुकडे-टुकडे होकर बिखर गया।

एक हफ्ते बाद पियरे ने अपनी सारी सम्पत्ति की आमदनी का आधा भाग अपनी पत्नी के नाम लिख दिया और पीटर्सबर्ग छोडकर मास्को चला गया। अपनी बेफिक्री और अपने धन के कारण मास्को मे भी वह सबका दुलारा बन गया था।

किन्तु इतनी बेफिक्री दिखाने के बाद भी पियरे मन मे यही सोचा करता कि वह एक बेवफा औरत का धनी पति था, जो खाता था, पीता था, बात करता था पर उसके पास करने को कुछ भी नही था। जीवन उसके लिए जैसे मिथ्या था, एक बेकार चीज, जिसमे कोई तथ्य नही था। जीवन की वे समस्याए जो शाश्वत है, उनकी याद करने पर यह पीडा जैसे असह्य हो जाती। इसलिए उसने उन सबको भूलने-मात्र के लिए और भी बेतहाशा शराब पीनी शुरू कर दी।

जिस समय पत्नी के सन्तान होनेवाली थी, ब्लीक पहाडियो पर आन्द्रेई का कोई भी समाचार प्राप्त नही था। इधर एक जर्मन डाक्टर, जिसकी कि प्रत्येक क्षण आने की उम्मीद थी, जिसको लाने के लिए राजमार्ग तक घोडे भेज दिए गए थे और जिसको रास्ता दिखाने के लिए लालटेन ले-लेकर लोग आगे भेजे गए थे ताकि बर्फ के गड्ढे स्पष्ट हो जाए। वह अभी तक नही आया था। राजकुमारी मार्या अपनी किताब मे जी नही लगा सकी। वह चुपचाप बैठी रही। उसकी चमकदार आखे अपनी बूढी धाय के झुर्रियोवाले चेहरे को देखती रही। बूढी कह रही थी, "ईश्वर दयालु है। डाक्टर की क्या जरूरत है?" और यह कहते हुए उसके हाथ फिर मोजा बुनने लगे। उसी समय हवा के झोके से एक खिडकी खुल गई और ठण्डी हवा कमरे मे फडफडाती-सी घूम गई। बूढी धाय ने मोजा रख दिया और खिडकी की ओर चली गई। उसने कहा, "मेरी प्यारी राजकुमारी, लगता है, कोई बाहर गाडी पर आ रहा है। लालटेनें भी साथ है। तब तो वह डाक्टर ही होगा।"

राजकुमारी मार्या ने कहा, "हे भगवान, आया तो सही। चलू मैं उससे मिल लू। वह रूसी भी नही जानता।" राजकुमारी मार्या बाहर निकली और सीढियो तक चली गई। नीचे एक सेवक मोमबत्ती लिए खडा था। दूसरा सेवक द्वार खोल रहा था।

उसी समय एक जानी पहचानी-सी आवाज़ सुनाई दी। बटलर ने कुछ उत्तर दिया। फिर भारी जूते सीढ़ी के निचले हिस्से पर चढने लगे। चढनेवाला दिखाई नही दिया। राजकुमारी मार्या ने सोचा, 'यह तो आन्द्रेई लगता है, पर यह कैसे हो सकता है!' किन्तु फिर अचानक ही वह वहा आ पहुचा। उसका चेहरा पीला और पतला पड गया था जैसे उसकी शक्ल ही बदल गई थी और उसपर एक नर्मी छा गई थी।

उसने बडे स्नेह से अपनी पत्नी को माथे पर चूम लिया और बडबडाया, "कितनी अमूल्य हो तुम! मैं तुम्हे बहुत प्यार करता हू और हम लोगो का जीवन बहुत ही सुख से व्यतीत होगा।" वह उसकी ओर टकटकी बाधे देखती रही।

दर्द शुरू हो गए थे। वृद्धा धाय ने राजकुमार आन्द्रेई को कमरे से बाहर चले जाने के लिए कहा। वह बगल के कमरे मे जाकर बैठ गया। कुछ क्षणो के बाद एक स्त्री बाहर आई और उसने आन्द्रेई की ओर आतकित दृष्टि से देखा। और उसने अपना मुह अपने हाथो मे छिपा लिया। राजकुमार आन्द्रेई तुरन्त कमरे मे चला गया। उसने देखा कि बूढी धाय के हाथ काप रहे थे और कुछ पकडे हुए थे—लाल, बहुत छोटी-सी चीज़, जिसके मुह से बहुत नरम-नरम-आवाज़ निकल रही थी। बूढी धाय उसको देखकर बुदबुदा उठी, "आपका बेटा।"

वह शय्या के निकट चला गया। उसकी पत्नी मर चुकी थी लेकिन अब भी उसका सम्मोहन पहले ही जैसा था। दो घण्टे बाद आन्द्रेई धीरे से अपने पिता के कमरे मे गया। वृद्ध राजकुमार को सम्वाद मिल चुका था। बिना एक शब्द भी बोले वृद्ध के कठोर हाथ आगे बढे और उन्होने पुत्र की गरदन को ऐसे घेर लिया जैसे कोई मुसीबत खुद को पकड लेती है। रोते हुए निकोलाइ रोस्तोव ने कहा, "तो क्या बस इसके लिए हमने युद्ध किया? क्या इसी तरह हमने यूरोप की स्वतन्त्रता की रक्षा की है?'

जून १८०७ की एक दोपहर थी। फ्रास की सेना विजय पर विजय प्राप्त करती जा रही थी। वियेना, आइलोव, फ्राइडलैण्ड, सब जगह उसने शत्रु को पराजित किया था। अत मे ज़ार अलेक्ज़ेण्डर युद्ध से थक गया और उसने सन्धि के लिए चेष्टा प्रारम्भ कर दी। आज तिलसित मे नेपोलियन से उसकी भेट होनेवाली थी जहा सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर होनेवाले थे। चौक मे दो बैटेलियन खडी थी। आमने-सामने—एक रूसी, एक फ्रेंच। दोनो सम्राट एक-दूसरे से मिलने के लिए बढे। दोनो सम्राट घोडो से उतरे और उन्होने हाथ मिलाए। नेपोलियन के श्वेत मुख पर एक अरुचिकर मुस्कराहट दिखाई दे रही थी।

निकोलाइ भी युद्ध-भूमि के अस्पताल मे अपने एक मित्र डेनिसोव का घायल पैर देखकर अभी लौटा था। वहा की गन्दगी, बीमारी और अपेक्षापूर्ण व्यवहार को देखकर, अभी तक वह अपना मानसिक सतुलन ठीक नही कर पाया था। लाशो की सडाध उसकी नाक मे ऐसे घुस गई थी, जिससे उसका भेजा तक सडा जा रहा था। दोनो सम्राटो को मिलते देखकर उसने अपने-आप से कहा—लोग मर चुके है। उनकी बोटी बोटी छितर चुकी है। हत्याओ से पृथ्वी रग गई है। किसलिए? सिर्फ इसलिए कि अलेक्ज़ेण्डर भाई की तरह इस व्यक्ति को अपने गले से लगा ले, जो एक भयकर शैतान है और यूरोप का

सबसे भयानक अत्याचारी और धूर्त है।

दो वर्ष बाद १८०६ मे दोनो सम्राटो की मित्रता इतनी अधिक हो गई कि जब नेपोलियन ने आस्ट्रिया पर युद्ध की घोषणा की तो एक रूसी सैन्य दल अपने पुराने मित्रो के विरुद्ध युद्ध करने के लिए तथा फ्रेंच सेना को सहायता देने के लिए वहा गया।

राजकुमार आन्द्रेई अपना अधिकाश समय आजकल अपनी रियाजान की जागीर मे ही बिताता था। उसके बच्चे का नाम था निकोलुस्का और वह अपने बाबा के पास उन्ही की देख-रेख मे ब्लीक पहाडियो पर रहता था।

मई १८०६ मे रियाजान की जायदाद के सिलसिले मे कुछ ऐसे काम आ पडे कि जिले के माशल से मिलने के लिए राजकुमार आन्द्रेई को जाना पडा। मार्शल काउण्ट इलिया रोस्तोव ने अपने सम्मानित अतिथि का बडे स्नेह से स्वागत किया और रात को ठहर जाने की प्रार्थना की।

नई जगह होने के कारण उसे काफी रात तक नीद नही आई। उसने उठकर खिडकी खोल दी। रात बडी सुहावनी थी—शात और उज्ज्वल। दायी ओर एक विशाल सघन वृक्ष था और इस समय उसके ऊपर चाद अपनी सम्पूर्ण कलाओ के साथ नक्षत्रवाहक वासन्ती आकाश मे चमक रहा था। तभी उसे ऊपर लडकियो की बात सुनाई दी। ऊपर की खिडकी से किसी लडकी ने कहा, "सोनिया, सोनिया, देख तो, कैसा अच्छा चाद चमक रहा है!" शायद वह खिडकी मे से बाहर झुकी हुई खडी थी और उसके कपडो की सरा-सराहट, यहा तक कि उसकी सास भी राजकुमार को सुनाई दी।

दूसरे स्वर ने विरोध करते हुए कहा, "सोने चलो, नटाशा, एक बज चुका है।"

और खिडकी बद हो गई।

अगले दिन राजकुमार आन्द्रेई जब ब्लीक पहाडियो पर पहुचा, उसके पिता ने देखा कि वह बहुत ही गम्भीर और बेचैन-सा था। राजकुमार आन्द्रेई ने बताया कि ज़ार के सम्मान मे बॉल-नृत्य का एक विशाल आयोजन होनेवाला है। और वह भी पीटर्सबर्ग जाएगा, "आखिर अभी मैं इकत्तीस साल का ही तो हू।" उसने कहा, "अभी से देहात की ज़िन्दगी मे पड जाना तो मेरे लिए ठीक नही है।"

कर्नल रोस्तोव का परिवार भी उस बॉल-नृत्य मे सम्मिलित होने के लिए पीटर्स-बर्ग जा रहा था।

नटाशा और सोनिया दोनो श्वेत वस्त्र पहने हुए थी और उनके केशो मे लाल गुलाब लगे हुए थे। इस बात को दोनो जानती थी कि इस नृत्य मे रूस के अत्यन्त सम्मा-नित लोग आमत्रित हुए थे। लेकिन दोनो मे से कोई लडकी भी प्रसन्न नही थी। वाद्ययत्रो का सम्मिलित स्वर आध घटे से गूज रहा था और किसीने भी उन दोनो मे से एक को भी अपने साथ नृत्य करने के लिए आमत्रित नही किया था। पियरे बेजूहोव ने राजकुमार आन्द्रेई के निकट आकर कहा, "तुम हमेशा नाचते हो, आन्द्रेई। रोस्तोव परिवार की लडकी खडी है, उसके साथ क्यो नही नाचते।"

राजकुमार आन्द्रेई पियरे के बताए हुए मार्ग पर चला। वह अपनी अश्वारोही

सेना की कर्नलवाली श्वेत वर्दी मे इस समय बहुत ही आकर्षक और स्फूर्ति से भरा हुआ दिखाई दे रहा था । जब वह चला तो असख्य आखे उसकी ओर खिच गई । नटाशा के खिन्न आनन के सम्मुख उसने अपना सिर झुकाया और अपने आमत्रण के शब्द वह समाप्त भी नही कर पाया था कि उसने अपना हाथ उसकी कमर मे डालने के लिए उठा दिया। तरुणी ने अपनी मुस्कान से ऐसा प्रकट किया कि जैसे वह तो बहुत दिन मे उसकी प्रतीक्षा कर रही थी । अगले दिन आन्द्रेई रोस्तोव परिवार से फिर मिलने गया। इस प्रकार वह उनके यहा अकसर जाने लगा । घर मे सब लोग जानते थे कि उसके आने का कारण क्या था। किन्तु किसीमे भी इतना साहस नही था कि उससे कोई एक शब्द भी इस विषय मे कह देता ।

एक दिन, नटाशा की मा ने नटाशा से पूछा, "बेटी, उसने तुमसे क्या कहा है ?"

उत्तर देने के बजाय नटाशा ने कहा, "मा ! अगर वह विधुर है तो क्या हुआ ?"

मा ने कहा, "नही, नही, नटाशा, भगवान से प्रार्थना करो ! विवाह तो परमात्मा के यहा पहले से ही तय हो जाते है ।"

किन्तु राजकुमार आन्द्रेई को विवाह के पहले अपने पिता की आज्ञा लेनी थी। वह स्वय ब्लीक पहाडियो की ओर चल पडा। वृद्ध राजकुमार ने अपने पुत्र की प्रार्थना को चुपचाप सुना । अपने अन्दर उठते हुए क्रोध का तनिक भी आभास उसे नही होने दिया । वृद्ध ने शान्त स्वर मे उत्तर दिया, "पहली बात तो यह है कि कुल और सम्पत्ति के दृष्टिकोण से यह विवाह अच्छा नही है, दूसरी बात यह है कि तुम्हारा स्वास्थ्य अभी बहुत अच्छा नही है और लडकी बहुत छोटी है, तीसरी बात यह है कि लडकी इतनी छोटी है कि तुम्हारे बच्चे की देखभाल की जिम्मेदारी उसपर नही छोडी जा सकती और चौथी बात यह कि मैं तुमसे प्रार्थना करता हू कि तुम अपनी शादी एक साल के लिए टाल दो । विदेश चले जाओ और अपने स्वास्थ्य को ठीक करो और उसके बाद भी अगर तुम्हारा प्रेम, यानी तुम्हारी वासना, यानी तुम्हारा हठ इतना ही सशक्त बना रहे तो विवाह कर लो और यही इस विषय मे मेरे अन्तिम शब्द है ।"

पीटर्सबर्ग लौटकर जब आन्द्रेई ने अपने पिता की बात नटाशा को बताई तो वह वेदना से उसकी ओर देखती रही। फिर हठात ही चिल्ला उठी, "यह सब ठीक नही है। कितना विचित्र है कितना विचित्र है, एक वर्ष तक मुझे तुम्हारी प्रतीक्षा करनी पडेगी ! मैं तो मर जाऊगी। मेरे लिए यह असम्भव है ।"

और जब विदा की बेला आई और नटाशा ने राजकुमार को कमरे से बाहर जाते देखा तो असह्य पीडा से वह फर्श पर लुढक गई। उसने कराहकर कहा, "उन्हे मत जाने दो। भगवान के लिए उन्हे रोक दो । मुझे डर है कही कोई भयानक बात न हो जाए ।"

छ महीने बाद राजकुमारी मार्या ने जर्मनी मे पडे हुए आन्द्रेई को यह पत्र लिखा कि एलेन वैसीली के भाई अनातोले कोरागिन के साथ नटाशा ने भाग जाने की चेष्टा की थी। बदचलन अनातोले ने अपनी सुन्दरता का लाभ उठाया था और उसने उसे अपने प्रेम मे फास लिया था और उससे यह भी प्रतिज्ञा की थी कि उससे वह विवाह कर लेगा । पियरे बेजुहोव ने उसकी इस योजना को सुन लिया और क्योकि वह जानता था कि

अनातोले की एक पत्नी पोलैंड मे भी मौजूद थी, उसने उस दुष्ट को द्वन्द्व युद्ध के लिए चुनौती दे दी। लेकिन अनातोले पीटसबर्ग से भाग गया। नटाशा ने मार्या को यह पत्र लिखा था कि वह अपने भाई आन्द्रेई को यह सूचना दे दे कि आन्द्रेई कुछ आशा न करे। अब सगाई टूट चुकी है।

जून १८१२ की एक रगीन शाम थी। ज़ार ने जनरल बालासोव को नेपोलियन के हाथो मे देने के लिए एक पत्र दिया, जो इस प्रकार था—

"श्रीमान,

मुझे पता चला हे कि यद्यपि मैंने आपसे अपने प्रत्येक मित्रतापूर्ण वचन का परिपालन किया है, फिर भी आपकी सेना ने मेरी सीमा का अतिक्रमण किया है। यदि महाराजा रूसी सीमा से अपनी सेना को हटा ले जाना स्वीकार कर लेगे, तो मैं भी इस घटना की उपेक्षा कर दूगा और हम दोनो के बीच समझौते की गुजाइश रहेगी, किन्तु यदि ऐसा नही होगा तो मै आक्रमण को खण्डित कर देने के लिए विवश हो जाऊगा, जिसका प्रारम्भ मेरी ओर से नही हुआ है। दूसरे युद्ध से मानवना की रक्षा करने की सामर्थ्य आपके हाथ मे है।

—अलेक्ज़ेडर"

फ्रेंच सेनाओ मे होकर बालासोव बढ चला। नेपोलियन के सम्मुख उसे उपस्थित किया गया। सम्राट ने उसी समय अपने कपडे पहनकर अपना प्रसाधन समाप्त किया था और उसके पास से यूडीकोलोन की बडी तेज़ गन्ध आ रही थी। काले बालो का एक गुच्छा उसके मुखपर चिपका हुआ था। उसका गदगदा चेहरा और गरदन ज़रूरत से ज़्यादा सफेद दिखाई दे रही थी। उसका नाटा और मज़बूत शरीर अपने सकरे कन्धो और कुछ बाहर निकले हुए गोल पेट के कारण मानो उसके गौरव का स्वय उपहास कर रहा था। जब बालासोव ने जार का पत्र उसे दे दिया, नेपोलियन ने कहा, "सम्राट अलेक्ज़ेण्डर से शान्ति रखने की मेरी कामना उनकी तुलना मे कही अधिक है। क्या अट्ठारह महीनो से मैं उसीका प्रयत्न नही कर रहा हू।" यह कह, पत्र पढकर नेपोलियन कमरे मे टहलने लगा। उसकी गरदन फूल गई।

बालासोव को लगा जैसे उसे भयानक क्रोध चढने लगा था। एकाएक नेपोलियन चिल्लाया, "ऐसी माग ब्रिटेन के राजकुमार से की जा सकती है, मुझसे नही। तुम कहते हो, मैंने युद्ध प्रारम्भ किया है लेकिन किसने अपनी सेना मे भाग लिया, सम्राट अलेक्ज़ेण्डर ने ? और जब मैं लाखो खच कर चुका हू और जब तुम इग्लैण्ड से सन्धि कर चुके हो और जब तुम्हारी हालत कमजोर है, तब तुम मुझसे शाति की बात करने आए हो!" यह कहकर वह विद्वेष के साथ हसा। और अपनी सुघनी से नाक मे एक चुटकी चढाकर बोला, "यूरोप अपराधी है क्योकि वह अन्धा हो गया था और तुम लोगो ने उसकी सीमा का अतिक्रमण कर दिया था। मैं यूरोप की उस सीमा को फिर से प्राप्त करूगा और मेरा विरोध करके तुम्हे क्या परिणाम मिलेगा यह भी देख लेना।"

युद्ध प्रारम्भ हो गया।

नेपोलियन को यह देखकर घोर आश्चर्य और क्रोध हुआ कि शत्रु की सेनाए जम-

कर मोर्चा लेने से कतराती थी। चार लाख सैनिको की विशाल वाहिनी लेकर वह रूस मे धस आया था और बढता चला जा रहा था, लेकिन रूस की सेना बडे सधे हुए तरीके से पीछे हट जाती थी और ऐसा लगता था जैसे पीछे हटना उसकी योजना थी। रूसी जनरल राजकुमार बैग्रेशन की सेनाए वोल्कोविस्क मे मोहीलेव चली गई और जनरल वाकले डिटोली की सेनाए विलना सेवतेत्रस्क की ओर चली गई। इससे यह दिखाई देता था कि छोटी लडाइयों के लिए रूमी सदैव तत्पर थे, छोटी जीत हासिल करके वे खुश हो जाते थे, लेकिन जब नेपोलियन यह कोशिश करता था कि जमकर मोर्चा लगे और भयानक टक्कर हो, तभी रूसी लोग अपनी जगह छोड देते थे और पीछे हट जाते थे।

ज़ार को लगने लगा था कि यह चाल युद्ध गौरव के अनुरूप नही थी। उसने वद्ध मार्शल कुटुज़ोव को कमाण्डर इन-चीफ बनाकर रणभूमि की ओर भेज दिया, ताकि इससे पहले कि फ्रेच मास्को के निकट आ सके, उनसे कडा मोर्चा लिया जाए और निर्णयात्मक युद्ध कर लिया जाए, यद्यपि वह भी इस समय पीछे हटने की नीति मे विश्वास रखता था।

नेपोलियन को जब यह पता चला कि आखिर रूसी लोग लडने को तैयार हो गए हैं तो उसे अत्यन्त आनन्द हुआ। रूसी युद्ध की सारी योजना को उसने अपने मस्तिष्क मे दुहरा लिया। गत दो महीनो मे उसे न कोई विजय प्राप्त हुई थी, न कोई झण्डा, न कोई तोप, यहा तक कि कोई बन्दी भी नही बना था।

अब दोनो ओर से सैकडो तोपे छूटने लगी। एक सात हज़ार फुट चौडे मैदान मे मोर्चा जम गया था। शीघ्र ही मैदान धुए से भर गया और फ्रास तथा रूस की सेनाए भयानक युद्ध करने लगी। नेपोलियन को जुकाम हो रहा था। वह अपने मार्शल लोगो को शीघ्रता से आज्ञा देता हुआ अधीर होकर इधर-उधर घूम रहा था। उसकी सर्वश्रेष्ठ सेनाओ के आक्रमण को रूसी सैनिक बडी कट्टरता के साथ झेल रहे थे। दस घण्टो तक नर-सहार होता रहा। किन्तु रूसी अभी वही अजेय खडे थे। नेपोलियन पर एक बेचैनी छाने लगी। उसका दिल जैसे भीतर ही भीतर बैठने लगा। उसके वही सैनिक थे, उसके वही जनरल थे, उसकी तैयारिया भी पहले जैसी थी और ये दोनो सेनाए भी वही थी, खुद भी वही था, बल्कि पहले की तुलना मे वह कही अधिक कुशल और अनुभवी हो गया था। उसके सामने वही सेना खडी थी, वही दुश्मन था, जिसे वह आस्टरलिट्स और फ्राइडलैड मे पराजित कर चुका था। और जिस समय यह सम्वाद उसे मिला कि रूसी उसकी सेना पर बायी ओर से आक्रमण करना चाहते थे, नेपोलियन का हृदय आतक से थर्रा उठा। वह अपने घोडे पर चढकर तुरन्त सेम्योनोवस्कोये की ओर चल पडा।

मैदान मे धुआ धीरे-धीरे उठ रहा था। उसने अपने चारो ओर देखा, मनुष्यो और घोडो की लाशे, रक्त की नदियो के बीच पडी थी। आज तक नेपोलियन ने इस तरह लाशो और घायलो की भीड नही देखी थी। आज तक उसके किसी जनरल ने भी इतना घोर हत्याकाण्ड नही देखा था और तोप का वह भीम गर्जन जैसा आज गज रहा था, पहले कभी नही सुना था।

यह युद्ध नही था, यह नर-सहार था मानो रक्त और मास का कोई मूल्य नहीं

रहा था। नेपोलियन किंकर्तव्य-विमूढ सा उसको देखता रहा। जीवन मे पहली बार युद्ध अर्थहीन-सा दिखाई दिया और पहली बार यह अनुभव हुआ कि युद्ध भयकर नरक की वास्तविकता का दूसरा नाम था। भयकर चीत्कार, कटते हुए नरमुंड, बहता हुआ लहू, धूल, धुआ और सर्वनाशिनी तोपो की प्रतिध्वनि, लडखडाते घोडे, छटपटाते घायल—यह सब नेपोलियन, यूरोप को पराजित करनेवाला नेपोलियन, दिग्विजयी नेपोलियन अवाक् देखता रहा ! एक जनरल उस समय घोडा बढाकर नेपोलियन के निकट आया और उसने कहा, "सम्राट, यदि आज्ञा दे तो पुराने गार्ड आगे बढकर हमला करें।"

यदि यह आक्रमण हो जाता तो सम्भवत उस दिन नेपोलियन की जीत फिर हो जाती किन्तु नेपोलियन की ठोडी उसके वक्ष पर गिर गई, उसका सिर झुक गया। वह चुपचाप देखता रहा। जनरल ने एक बार फिर अपनी बात दोहराई।

"ऐ !" नेपोलियन ने थके हुए स्वर से पूछा जैसे वह चौक उठा था। उसकी आखें धुधली हो चुकी थी। "नही।" उसने धीमे स्वर से कहा, "मैं अपने गार्ड का कत्लेआम नही कराना चाहता।"

सेम्योनोवस्कोये के पीछे राजकुमार आन्द्रेई की रेजीमेट पडी हुई थी। उसके ऊपर से गोले गुज़र रहे थे लेकिन वह अभी युद्ध मे उतरा नही था। छ घटे बीत चुके थे। उन्होने एक भी गोली नही चलाई लेकिन रेजीमेट के एक तिहाई आदमी शत्रुओ की बमबारी से मर चुके थे। राजकुमार आन्द्रेई पीला-सा पड गया था। वह बहुत थका हुआ था। अपनी पीठ पर हाथ बाधे, धरती पर आखे गडाए वह इस समय बेचैनी से टहल रहा था कि एकाएक न जाने क्या हुआ—शायद एक गोला उसके बिलकुल समीप आकर फटा और राजकुमार आन्द्रेई धरती पर लुढक गया। उसके साथी उसकी ओर दौडे वह मूर्च्छित था और उसके पेट की दायी ओर से रक्त बह रहा था।

जब उसे कुछ होश आया तो उसने देखा कि वह एम्बूलेस स्टेशन के एक तम्बू मे एक मेज़ पर पडा है और कोई उसके चेहरे पर पानी छिडक रहा है, बगल की मेज़ पर एक आदमी बिलकुल नगा लिटाया गया था, जिसका चेहरा दूसरी तरफ था। राजकुमार आन्द्रेई ने उसे देखा तो उसके बालो का रग और घुघरालापन देखकर उसे ऐसा लगा जैसे उसने उस व्यक्ति को कही देखा था। उस आदमी का एक पाव अपने-आप तेज़ी के साथ बार-बार काप उठता था और दो व्यक्ति उसके सीने पर ज़ोर लगाकर उसे नीचे दबाए रहने की चेष्टा कर रहे थे और एक डाक्टर बहुत घबराया हुआ कापता-सा उसके दूसरे पाव को काट रहा था। वह मज़बूत आदमी असह्य पीडा से अपना सिर पटक रहा था और मारे दर्द के रो रहा था। राजकुमार आन्द्रेई ने सोचा—'हे भगवान, यह क्या हो रहा है। वह सुन्दर एडजूटेंट, मास्को की समस्त सुन्दरियो का प्रियतम, एलेन बेजुहोव का भाई अनातोले कोरागिन—वही जिसने मुझमे नटाशा को छीन लिया !' उसे एक उन्माद की सी स्मृति आई और उसकी आखो के आगे अधेरा छा गया। वह फिर से मूर्च्छित हो गया।

कुटुजोव का वृद्ध श्वेत शीश नीचे झुका हुआ था और उसकी स्थूल काया मास

के एक ढेर-सी दिखाई दे रही थी। युद्ध के दौरान वह अपने तम्बू के बाहर एक बेंच पर बैठा रहा। उसने कोई आज्ञा नही दी। अगर कोई आकर उससे कुछ कहता तो या तो वह धीरे से उसे स्वीकार कर लेता या अस्वीकार कर देता।

उसका एकमात्र ध्यान इसपर केन्द्रित था कि फ्रास की विशाल वाहिनी को ऐसा झटका दिया जाए कि वह फिर सीधी खडी न हो सके।

साझ हो गई। युद्ध का निर्णय नही हुआ। दोनो ओर से सैनिक पीछे हट गए। प्रात काल जो मैदान मनोहर धूप से उज्ज्वल हो रहा था, जिसको देखकर प्रसन्नता होती थी, जिसमे सगीनें चमक रही थी और सुन्दर वर्दिया अपनी रगीनी से आखो को अपनी ओर खीच लेती थी, वहा अब धुए का कोहरा-सा छा गया था और उसमे से बारूद और खून की बदबू निकलने लगी थी।

पियरे बेजुहोव ने कापते हुए फिर शराब का गिलास भरा और एक घूट मे ही पी गया। और फिर लाल-लाल आखो से उसने सामने खुली हुई बाइबल की ओर देखा। वह पढने लगा, "यही बुद्धिमत्ता है, जिसके पास भी बुद्धि है वह पशुओ की सख्या गिन ले ।" पियरे इस समय गन्दा हो रहा था। उसकी दाढी बढी हुई थी। पाच दिन पहले फ्रेच सेनाओ ने मास्को मे प्रवेश किया था। तब से पियरे ने अपने कपडे नही बदले थे और वह उन्ही को पहनकर सो जाया करता था। वह अपने विशाल भवन मे अकेला था और उस-पर बहुत अधिक नशा चढा हुआ था। जो कोई भी आक्रमणकारी से बचने के लिए भागना चाहते थे, मास्को से जा चुके थे। कई दिनो तक उस विशाल नगर की सडकें गाडियो की कतारो से मानो ठस गई थी।

कुटुजोव ने अपनी सेना को मास्को के पूर्व की ओर डेढ सौ वर्स्ट की दूरी पर खडा कर दिया। और ज़ार क्रोध से पागल हो उठा था। उसने कुटुजोव को पत्र भेजे कि पीटर्सबर्ग को जीत लेने पर नेपोलियन के लिए सम्पूर्ण रूस को जीत लेना कोई कठिन काम नही होगा। उसको रोकने लायक कोई ताकत नही होगी। किन्तु कुटुजोव इस विषय मे अधिक जानता था। बोरेडिनो मे ही फ्रेंच सेना का साहस खडित हो चुका था। मास्को मे वह सेना थकी-मादी, घबराई हुई और चकनाचूर-सी घुसी थी। उसके सारे कायदे खत्म हो चुके थ और सैनिक शराब पीते हुए हर जगह शहर मे हुडदग मचाते थे, लूटने की कोशिश करते थे मानो उनपर कोई अकुश नही रहा था। खाने की कमी थी, कोई चीज मिल नही रही थी। और भूखे मरते हुए निराश आतकित सैनिको की इस हूश भीड के सामने एक ही विचार आ सकता था कि इस विशाल बर्फ से ढककर सफेद हो जानेवाले, खामोशी से हारनेवाले अपराजित रूस की भूमि से भागा जा सके तो भाग लिया जाए अन्यथा यह भूख मार डालेगी।

पियरे ने बाइबल पर फिर दृष्टि गडाई और भजन पढा। अब उसका दिमाग भटकने लगा था और उसने दूसरी बोतल खोल ली थी। तीन-चार पैग और पी चुकने पर नशे के झोक मे उसे विचार आया, सारे यूरोप मे एक ही व्यक्ति ऐसा है जो यूरोप के इस सबसे भयानक अत्याचारी का नाश कर सकता है। इस विचार ने उसे बहुत उत्तेजित

कर दिया। उसने दराज खोलकर एक पिस्तौल निकाली और अपने कोट के अन्दर रख ली और निणय किया कि वह बाहर जाकर आज ही नेपोलियन का अन्त कर देगा।

सारे मास्को पर एक ललाई-सी छाई हुई थी। सैकडो जगह आग लग चुकी थी। भीडे इधर से उधर भाग रही थी। जब पियरे लडखडाता क्रेमलिन की ओर चला, किसीने भी उसपर ध्यान नही दिया। नेपोलियन ने जार से कहा था कि उसके पूर्वीय साम्राज्य के लिए मास्को ही राजधानी बनेगा और वह क्रेमलिन मे से शासन करेगा। सहसा पियरे का ध्यान बटा। उसने देखा सडक के बीच मे अपनी गृहस्थी का सामान रखे हुए अर्मीनियन लोगो का एक दल बैठा था। उनमे भेड की खाल और चमड के लम्बे जूते पहने हुए एक बहुत ही बूढा आदमी भी था। उसके पीछे एक अत्यन्त सुन्दरी युवती बैठी थी, जिसकी काली भौहे धनुष की सी तनी हुई थी और उसके गले को एक हीरे का हार घेरे हुए था। दो फ्रेंच सैनिक उनके सामने खडे थे। एक सैनिक ने आगे झुककर उस बूढे से कुछ कहा। बूढे ने तुरन्त अपने जूते उतार दिए। सिपाही ने उन जूतो को अपनी काख के नीचे दबा लिया। अचानक ही एक पाशविक झटका देकर दूसरे सैनिक ने युवती के गले मे पडे हार को पकड लिया।

पियरे गरज उठा, "उस औरत को छोड दो!" और वह भयकरता से आगे बढा। देखते-देखते उसकी सैनिको से लडाई प्रारम्भ हो गई उसी समय सडक के कोने पर पहरा देनेवाले फ्रेंच सैनिको की एक टुकडी घोडे बढाती आ पहुची। सैनिक उतरे। अफसर ने तुरन्त आज्ञा दी और पियरे को पकडकर दबोच लिया गया।

अफसर ने अपनी सावधान उगलियो से जल्दी-जल्दी उसकी तलाशी ली और कहा, "आग लगानेवाला मालूम होता है। अच्छा, इसके पास तो हथियार भी है! इसको जुकोवस्की बैरक मे ले चलो।"

बैरक के यार्ड मे कैदियो को रखने के लिए एक शेड बना हुआ था। वहा फूस पर पडे हुए असख्य आदमी थे। कुछ ऐसे घायल सिपाही भी थे जो नगर खाली होते समय पीछे ही छोड दिए गए थे। एक सिपाही ने, एक ठण्डा उबला हुआ आलू पियरे को देते हुए कहा, "यहा पर तुमको यही खाना पडेगा।"

पियरे ने उस दिन कुछ भी नही खाया था, उसने उसे धन्यवाद दिया और आलू खाने लगा। सिपाही कहता गया, "मेरा नाम प्लेटन है। मेरा घरेलू नाम कारात्येव है।" वह लगभग पचास वर्ष का झुर्रीदार व्यक्ति था। पियरे की आखो मे आसू देखकर कारात्येव ने कहा, 'मेरे दोस्त, दु ख क्यो करते हो ?" और उसने बडे प्यार से रूस की किसान औरतो का वह गीत दोहराया जिससे वे बच्चो को बहलाया करती है, "दु ख पल-भर रहता है लेकिन जीवन सदैव बना रहता है। "

जब फ्रेंच सेना मास्को की ओर बढी तो आन्द्रेई के पिता वृद्ध राजकुमार निकोलाइ बोलकोन्सकी को भी अपनी ब्लीक पहाडियो की जायदाद का परित्याग करके अपनी बोगुच्चरावो की जायदाद की ओर भाग जाना पडा। वे काफी वृद्ध थे। एक तो इस तरह का पलायन ही उनके लिए काफी बडा धक्का था और जब उन्हे यह खबर लगी कि उनका

पुत्र फिर से घायल हो गया था तब उनकी आयु इस प्रहार को सह नही सकी। एक दिन बागवानी करते समय वे गिर गए और तीन दिन की बीमारी के बाद इस ससार से चल बसे। राजकुमारी मार्या ने शव-सस्कार के दूसरे दिन कहा, "मैं यही चाहती थी कि वे मर जाए ताकि मै आज़ाद हो सकू।" श्रीमती बोरियाने से उसे पता चला कि उसका भाई मितिस्चती मे है और एक अस्पताल मे इतना बीमार है कि वहा से हटाया नही जा सकता। मास्को के बाद रास्तोव परिवार भी इस समय मितिस्चती मे था। राजकुमारी मार्या ने गाडी जुडवाई और अपने बच्चे निकोलुस्का को लेकर मितिस्चती की ओर चल पडी। उसको बताया गया था कि स्टेशन के पास किसी कुटिया मे आन्द्रेई पडा हुआ था।

उसने धीरे से कुटिया का द्वार खोला। आन्द्रेई अपनी पुरानी देह की मानो छाया-मात्र भी नही रहा था। एक खाट पर कोने मे पडा हुआ था और उसके पास नटाशा रोस्तोव झुकी हुई थी। राजकुमारी मार्या ने भीतर प्रवेश नही किया। कुटिया के भीतर घायल राजकुमार आन्द्रेई नटाशा की ओर हाथ बढा रहा था। उसने कहा, "तुम ? आज कैसा अच्छा दिन है !"

अत्यन्त स्नेह से नटाशा ने उसका हाथ पकड लिया। फुसफुसाते हुए बोली, "मुझे क्षमा कर दो। मैं तुमसे क्षमा मागती हू।"

राजकुमार आन्द्रेई ने कहा, "मैं तुम्हे प्यार करता हू।"

नटाशा का स्वर जैसे टूट गया। उसने बहुत धीरे से कहा, "बस, मुझे क्षमा कर दो।'

राजकुमार ने अपने हाथ से उसका चेहरा उठाया और उसकी आखो मे झाकते हुए बोला, "मैं तुम्हे पहले की तुलना मे कही अधिक प्यार करता हू।"

नटाशा की आखो मे आसू भर आए। तभी दरवाज़ा खुला एव डाक्टर ने प्रवेश किया और कहा, "श्रीमतीजी, मेरी प्रार्थना है कि अब आप यहा से प्रस्थान करें।"

नटाशा के चले जाने के बाद एक घटा बीत गया था। राजकुमार आन्द्रेई ऐसी नीद मे सो गया था जिसके बाद कभी कोई नही जागता।

रोस्तोव परिवार अब पीटर्सबर्ग मे आ गया था। उसकी अधिकाश सम्पत्ति युद्ध मे विनष्ट हो चुकी थी और अब वे लोग तगी से अपने दिन निकाल रहे थे।

राजकुमारी मार्या जो राजधानी मे अपनी एक चाची के साथ ठहरी हुई थी, इधर रोस्तोव परिवार मे काफी आने-जाने लगी थी। विशेषकर इसलिए कि वह नटाशा को सात्वना पहुचाती थी। काउण्टेस रोस्तोव बराबर एक बात भूलना चाहकर भी नही भूल पाती थी और वह यह थी कि अपने भाई और बाप के मर जाने से मार्या को बहुत बडी जायदाद मिल गई थी। और दूसरी बात यह भी थी कि किसी भी समय छुट्टी पाने पर निकोलाइ घर आ सकता था। सोनिया की तो जैसे नीद ही गायब हो गई थी। अब उसे यह असम्भव लगता था कि कभी निकोलाइ से स्वप्न मे भी उसका विवाह हो पाएगा। और फिर एक दिन काउण्टेस ने साफ शब्दो मे सोनिया से कह दिया कि वह निकोलाइ के स्वप्न देखना छोड दे। इस परिवार ने उसपर इतने उपकार किए हैं कि उनका कुछ मूल्य

देना भी आवश्यक है। अत मे काउण्टेस ने कहा, "मुझे तब तक शान्ति नही मिलेगी जब तक तुम मुझे यह वचन नही दे देती कि निकोलाइ से तुम कोई सम्बन्ध नही रखोगी।"

सोनिया फूट-फूटकर रोने लगी और उसने घुटती हुई आवाज में हकलाकर कहा, "मैं हर बलिदान देने को तैयार हू।"

निकोलाइ उस समय बोरोनेज मे था। बोरोडिनो मे रूसी विजय के लिए परमात्मा को धन्यवाद देकर वह अभी लौटा था। तभी उसे दो पत्र मिले जिनमे एक सोनिया का था। वह खोलने के पहले कुछ सोचता हुआ उसे देखता रहा। कुछ हफ्तो से उसे इस बात मे लज्जा लगने लगी थी कि उससे उसे विवाह करना पडेगा। उसे इसका जैसे शोक था। इन दिनो उसपर जुए से भारी कर्ज हो गए थे। उसका परिवार दरिद्र हो गया था और उसे एक ऐसी लडकी की जरूरत थी जो किसी बडी जायदाद की वारिस हो।

पत्र खोला तो ये पक्तिया लिखी थी "मै यह जानकर अत्यन्त दु ख पाती हू कि मेरे कारण तुम्हारे जिस परिवार ने मुझपर इतनी कृपा की है, वह इस प्रकार का दु ख पाए। मेरे जीवन का एकमात्र उद्देश्य है और वह केवल यह है कि जिन्हे मैं प्यार करती हू, उनको सुखी देख सक। इसलिए, निकोलाइ, मै तुमसे प्रार्थना करती हू कि तुम अपने आपको स्वतन्त्र समझो। और यह भी मन मे जान लो कि तुम्हारी इस सोनिया से अधिक, चाहे कुछ भी हो जाए, और कोई तुम्हे प्यार नही कर सकता।"

दो हफ्ते बाद जब निकोलाइ छुट्टी पर घर आया, काउण्टेस ने शीघ्र ही अपनी शोचनीय आर्थिक अवस्था का उससे परिचय कराया। उसने राजकुमारी मार्या से उसकी भेंट कराई और निकोलाइ ने अपनी माता की योजना को झट स्वीकार कर लिया तथा इच्छा से या अनिच्छा से वह मार्या के साथ अधिक मे अधिक रहने की चेष्टा करने लगा।

सोनिया का खयाल आता, तो कितनी ही बार वह आत्म-तिरस्कार से भर उठता। किन्तु उसके परिवार की आवश्यकता, आराम मे रहने की उसकी अपनी आदत, मार्या की सज्जनता, यह सब कुछ ऐसे घुल-मिल गए थे कि उसपर कोई रोक नही थी। तीन हफ्ते बाद निकोलाइ और राजकुमारी मार्या की सगाई हो गई।

कुटुजोव ने ठीक ही अनुमान किया था। बोरोडिनो मे नेपोलियन की सेना को भयानक चोट पहुची। घायल जानवर की तरह उसकी सेना मास्को की तरफ बढी। वहा उसने यह देखा कि इमारतें खडी थी, लेकिन जीवन नही था। खाने को कुछ नही था और आधा नगर आग की लपटो मे धू-धू करके जल रहा था। नेपोलियन ऐसे शत्रु द्वारा पराजित किया जा रहा था जो मुठभेड करने के लिए सामने नही आता था, जो बिना अपनी हानि किए उसका सवनाश किए देता था। और यह एक ऐसी हार थी जिसमे से उबर आना उसके लिए असम्भव था। उसने कुटुजोव के पास सुलह के पैगाम भेजे। कुटुजोव ने उत्तर दिया, "रूस के बाहर निकल जाओ।" जैसे घेरा हुआ, मरता हुआ जानवर क्रोध से पागल हो उठता है, उसी तरह फ्रास की विशाल वाहिनी पर एक पागलपन छा गया।

नेपोलियन ने आज्ञा दे दी कि मास्को से वापस लौट चलो ।

१७ अक्टूबर, १८१२ को सुबह के वक्त, जिस शिविर मे पियरे बन्दी था उसका द्वार खुल गया और एक कप्तान ने कर्कश स्वर से चिल्लाकर कहा, "लाइन लगाओ, लाइन लगाओ !" पियरे की कमीज़ गन्दी थी और फट गई थी। उसने सिपाहियोवाली मुडी-तुडी पतलून पहन रखी थी। उसके शरीर पर किसानो का कोट था और पाव नगे थे। चेहरा दाढी-मूछो से भर गया था। उसके लम्बे उलझे हुए बाल जुओ से भर गए थे। घुघराले बालो की एक लट गुच्छा बनकर उसके माथे पर लटक गई थी लेकिन उसकी आखो मे एक दृढता थी।

बाकी शिवरो से भी बन्दी निकल आए, भूखे, लडखडाते। करीब तीन सौ कैदी फ्रेंच सेना-दल के पीछे चल पडे। और उनके पीछे लूटे हुए सामानो की गाडिया आने लगी।

वे लोग कालुगा की सडक पर मार्च करते हुए रात तक देहात मे पहुच गए। कैदियो को खाने को घोडे का मास दिया गया और उन्हे आज्ञा दे दी गई कि खुले मे आग जलाकर वे उसे तापे और रात गुज़ार दे। तीन हफ्ते बाद कैदियो के उस झुण्ड मे तीन सौ आदमियो के बजाय नब्बे आदमी बच रहे। खान के सामान मे से आधे को, रणभूमि के सैनिक छीन ले गए थे और बाकी आधे को लुटेरे कज्जाक लूट ले गए थे। सैनिको की हालत बहुत बुरी हा रही थी। वे स्वय बन्दियो जैसे दिखाई देते थे। विशाल पथ था और उस सारे पथ पर मनुष्य और घोडो की लाशे सडने लगी थी। पियरे भूल चुका था कि वह किसी समय अच्छे समाज मे बैठनेवाला एक धनी व्यक्ति था। उसे यह भी मालूम नही था कि उसकी पत्नी एलेन बडे-बडे डाक्टरो की समझ मे न आनेवाली बीमारी से सड रही थी और मास्को मे मर रही थी। लेकिन यदि उसे ज्ञात होता तो अब यह उसके लिए निरथक बात थी—मानो वह पृथ्वी पर नही, किसी और ही ग्रह पर होनेवाली घटना थी।

तीन हफ्तो के इस मार्च मे जीवन का एक सत्य उसके सामने आ गया, मनुष्य की यातना सहने की एक सीमा होती है और वह सीमा उसके सामने आ गई थी।

प्लेटिन कारात्येव के चेहरे पर अब भी मुस्कराहट बनी रहती थी। उसकी आखो मे एक विचित्र आनन्दमय प्रकाश अब भी झिलमिलाया करता था। अदम्य था उसका साहस कि वह अब भी गाव की कहानिया सुनाया करता था। वे कहानिया बेसिर-पैर की थी। उनका अत [illegible]कर धार्मिकता मे किया जाता था। उससे पियरे की आत्मा मे एक नई स्फूर्ति-सी भरने लगती जैसे वह जीवन का एक नया अर्थ अब समझने लगा था जिसमे वेदना को सहने की भी असीम आवश्यकता थी, जहा अपराधो के ऊपर जीवित रहने की लालसा थी, जहा मनुष्य की अपराधी चेतना सब कुछ सहकर भी एक कल्पना के आनन्द को सदैव के लिए अपने भीतर निमज्जित कर लेना चाहती थी। पियरे जिन अर्थों मे जान-पहचान, रिश्तेदार, दोस्त और प्रेम आदि की व्याख्या करता, कारात्येव वह सब जानता ही नही था, किन्तु वह जिसके भी सम्पर्क मे आता, उसके प्रति प्रेम से रहता, किसी एक व्यक्ति-विशेष के प्रति नही बल्कि मनुष्य-मात्र के प्रति। कोई भी मनुष्य हो, उसके प्रति उसका सहज स्नेह-व्यवहार होता। वह अपने साथियो से प्यार करता था, उसे फ्रेंच लोगो से भी प्रेम था और पियरे से भी प्रेम था क्योकि पियरे उसके पास रहता था। यद्यपि

पियरे यह जानता था कि उसके प्रति कारात्येव की ममता थी, किन्तु जिस क्षण कारात्येव को पियरे से दूर होना पड़ेगा, उस समय भी उसे इसका तनिक दु ख नही होगा।

कारात्येव का बुखार आने लगा था और सैनिको को यह आज्ञा थी कि जो कैदी पिछडता जाए, उसको गोली मार दी जाए। दिन पर दिन बीतते गए। कारात्येव किसी प्रकार चलता रहा, चलता रहा। एक दिन मार्च मे पियरे ने सुबह के वक्त कारात्येव को नही देखा। उसने मुडकर ढूढा। कारात्येव एक वृक्ष के नीचे बैठ गया था और दो फ्रेंच सैनिक उसके पास भुके हुए खडे थे। पियरे मे फिर पलटकर देखने का साहस नही हुआ। थोडी देर बाद गोली चली, लेकिन पियरे के पाव आगे बढते चले गए।

ज़ार और उसके जर्मन जनरल अब कुटुजोव पर जोर दे रहे थे कि इस समय वह फ्रेंच सेनाओ पर ज़ोर से टूट पडे और उसका सर्वनाश कर दे, लेकिन वृद्ध मार्शल उन सारी आज्ञाओ, प्रार्थनाओ और तर्क-वितर्कों को जैसे सुन ही नही रहा था। उसका उद्देश्य यह नही था कि नेपोलियन को रूस मे रोके रखे। वह उसको वहा से निकाल देना चाहता था। देहात उजडा पडा था, और घायल फ्रेंच जानवर उस बियावान मे पलटकर भाग रहा था। उसको घेर कर परेशान कर डाला गया था और वह अब भूख से घबरा गया था। कुटुजोव जानता था कि इतने बडे मैदान से वह भूखा जानवर जिन्दा नही लौट सकेगा। उसकी भविष्यवाणी सत्य प्रमाणित हुई। विशाल फ्रेंच वाहिनी ने जिस समय रूस मे प्रवेश किया था, उस समय की सैनिक संख्या अब बाकी नही रही थी। जब नेपोलियन की सेना रूस की सीमा तक वापस पहुच गई तब उसके दस मे से नौ हिस्से विनष्ट हो चुके थे। कुटु-जोव बीच-बीच मे फ्रेंच सेना पर आक्रमण करने के लिए कुछ चचल गति से प्रहार करने-वाली अपनी सैन्य टुकडिया भेज देता था।

दोलोहोव और पियरे के द्वन्द्व-युद्ध मे निर्णायक बननेवाला डेनीसोव ऐसे ही एक विनाशक दल का अफसर था। अक्टूबर के महीने मे एक दिन डेनीसोव को पता चला कि स्मालेन्स्क से कुछ दूर एक गाव मे एक फ्रेंच सेना पिछड गई थी। वह अपने कज्जाको को लेकर उसपर टूट पडा। उन्होने अनेक फ्रेंच सैनिको को मार गिराया और फिर घोडो को उनके चारो ओर सरपट दौडाते हुए उन्होने इस कदर गोलिया बरसाई कि बाकी बचे फ्रेंच सैनिको ने अपने हथियार डाल दिए। [illegible]हाल, किसान फ्रेंच सैनिको के पीछे से चिल्लाते रहे, "कज्जाक आ गए! कज्जाक!"

डेनीसोव और उसके आदमी घोडो स उतरे और उन्होने रूसी बन्दियो को गले से लगाया। उनमे पियरे भी था। एक मिनट तक वह अपने साथियो के हर्ष के निनाद को सुनता रहा, जैसे वह पागल हो गया था, जैसे वह किंकर्तव्यविमूढ हो गया था। और फिर सहसा वह पागल की तरह हस उठा और चिल्लाया, "साथियो, ये हमारे अपने लोग हैं। हमारे भाई है।'

कज्जाको ने पियरे को आरेल पहुचा दिया जहा वह बीमार पड गया और तीन महीने तक अस्पताल मे पडा रहा। इतने दिन का दु ख और असह्य यातनाए, जो बन्दी जीवन मे उसके लिए सहज बन गई थी, अब मानो उन्होने प्रभाव दिखाया। भयानक

शीत ऋतु की धुधली-सी रात, बरसात, पानी और कीचड की झिलमिल-सी स्मृतिया गले हुए पैरो का दर्द, पसलियो मे कडकती सर्दी, ऐंठन, दु ख से कराहते हुए लोगो की सूरतें, क्रोध से दी गई आज्ञाए, दया के लिए मागी हुई भीख—ओफ !

बहुत धीरे-धीरे पियरे के दिमाग से यह बात हटी कि अब उसको धक्का देकर चला ले जानेवाला कोई नही था, अब उसका गर्म बिस्तर उससे छीनकर कोई नही ले जा रहा था। अब उसे समय पर भोजन भी मिलेगा, चाय भी मिलेगी और सोने को भी मिलेगा। कई-कई बार समझाने के बाद उसके दिमाग मे यह बात उतरी कि उसकी पत्नी मर चुकी है, राजकुमार आन्द्रेई का देहान्त हो चुका है और फ्रेंच सेना का सर्वनाश हो चुका है। और अन्त मे उसे फिर एक स्वतन्त्रता की भावना स्फूर्ति प्रदान करने लगी। वह अपने-आप से कहने लगा, 'मैं कितना सुखी हू। जीवन कितना सुन्दर है।' अब उसे यह लगा कि जो भौतिक सुख अब उसे प्राप्त हो गए थे, बर्फ की सी सफेद मेज, अच्छे-अच्छे हलुए, कोमल शैया—इन सबने ही उसे ऐसा बना दिया था। लेकिन बाद मे उसे यह अनुभव कि वह इन सब बाहरी चीजो से प्रभावित नही था, बल्कि यह आजादी उसके भीतर से अपने-आप पैदा हुई थी। बाहर की सारी बातो से उसका सम्बन्ध नही था। वह स्वतन्त्र था, उसकी अन्तरात्मा स्वतत्र थी, जिसने यह सुख दिया था। वह जो एक पुरानी समस्या उसके सामने खडी थी कि जीवन का उद्देश्य क्या है उस समस्या को जैसे हल मिल गया था। अब वह बुद्धि की दूरबीन को दूर फेंक देने मे समर्थ हो गया था। पहले जो प्रश्न उसको सताया करता था कि यह सब किसलिए है, अब जैसे उसके लिए उस प्रश्न की कोई सत्ता ही न रह गई थी। उस प्रश्न के लिए जैसे उसके पास एक तत्पर उत्तर था। किसलिए ? इसलिए कि एक परमात्मा है—वह परमात्मा, जिसकी इच्छा के बिना एक पत्ता भी नही खडकता।

पियरे ने कहा, "उसके बाद कुछ सिपाही आए और उन्होने हमे बचाया।"

नटाशा ने कहा, "मुझे विश्वास है कि आप पूरी बात हमे नही बता रहे है। आपने निश्चय ही कुछ न कुछ अच्छा काम किया होगा।"

एक साल बीत चुका था। पियरे काउण्टेस मार्या रोस्तोव और उसके पति काउण्ट निकोलाइ के घर मे पीटर्सबर्ग मे बैठा हुआ था और नटाशा से बातें कर रहा था। पियरे कारात्येव के बारे मे बताने लगा, "नही, तुम नही समझ सकती कि मैंने उस सुखी और सीधे-सादे व्यक्ति से कितना बडा सबक लिया।"

काउण्टेस मार्या बात नही सुन रही थी। वह किसी और बात के बारे मे सोच रही थी। उसे यह सम्भावना लग रही थी कि नटाशा और पियरे परस्पर दोनो एक सूत्र मे बध जाएगे, और जब उसे यह विचार पहली बार आया, तो उसका हृदय हर्ष से जैसे आप्लावित हो गया। नटाशा की आखो मे चमक थी और उत्सुकता भी। वह अब भी पियरे की ओर टकटकी लगाए देख रही थी मानो वह उसकी कथा मे उस भाग का सुनना चाहती थी, जो अभी पियरे कह नही पाया था।

पियरे ने कहा, "लोग कहते है कि दु ख दुर्भाग्य का परिणाम है, लेकिन यदि

मुझसे पूछा जाए कि मैं जो कुछ बन्दी हाने के पहले था, वह रहना चाहूगा, या जो कुछ मैंने झेला है, उस सबको स्वीकार करना चाहूगा ? तो मै यही कहूगा कि भगवान् के नाम पर मुझे फिर से बन्दी बना लिया जाए, ताकि मै फिर एक बार घोडे का मास खाते हुए कष्ट झेल सकू। हम यह समझते है कि जिस जीवन के हम आदी है, यदि हम उसमे से निकल गए तो सब कुछ समाप्त हो जाएगा। किन्तु हरएक अन्त का, अन्त मे एक प्रारम्भ होता है जो एक नई अच्छाई की ओर ले जाता हे। जब तक जीवन है, तब तक आनन्द है-।" कुछ लजाते हुए आनन्द की जैसी अव्यवस्थित चेतना का अनुभव करते हुए पियरे ने नटाशा की ओर मुडकर देखा और कहा, "यह मै तुमसे कहता हू।"

नटाशा ने कहा, "ठीक है। और मुझे भी इससे बेहतर कुछ नही मालूम था कि जो कुछ हो चुका है उसमे से एक बार फिर गुज़रना पडे।" पियरे ने कठोर दृष्टि से उसकी ओर देखा। नटाशा ने घोषणा की, "हा, इससे अधिक कुछ नही।"

सहसा नटाशा ने अपना मुह अपने हाथो मे छिपा लिया और रो पडी। काउण्टेस मार्या ने पूछा, "क्या बात हुई, नटाशा ?"

अपने आसुओ मे से नटाशा ने मुस्कराकर पियरे की ओर देखा और कहा, "कुछ नही, कुछ नही, अच्छा अब बिदा दो। अब सोने का समय हो गया है।" यह कहकर वह तेज़ी से कमरे के बाहर चली गई।

पियरे भी बिदा लेने को उठ खडा हुआ। काउण्टेस मार्या ने उसकी ओर देखकर कहा, "एक मिनट।" पियरे ने उसकी आखो मे झाका। "मैं जानती हू, वह तुम्हे प्यार करती है।" यह कहकर काउण्टेस मार्या को जैसे ध्यान आ गया और अपनी गलती सुधारते हुए कहा, "वह तुम्हे प्यार करेगी।"

पियरे ने कहा, "ऐसा आप क्यो सोचती हैं। आप चाहती है, मैं आसुओ मे अटका रहू ?" काउण्टेस मार्या ने मुस्कराकर उत्तर दिया, "हा, मै यही चाहती हू।" फिर कुछ सोचकर उसने कहा, "तुम उसके माता-पिता को लिख दो। बाकी सब कुछ मुझपर छोड़ दो। मैं मौका देखकर उससे बातचीत करूगी। मेरा हृदय कहता है कि यह काम होकर रहेगा।" यह कहते-कहते जैसे उसकी आखो मे एक दिव्य आलोक-सा भर गया।

समरसैट मॉम ने लिखा है कि ससार का सबसे बडा उपन्यासकार बालज़ाक था, किन्तु 'वार एण्ड पीस' (युद्ध और शान्ति) ससार का सबसे महान उपन्यास है। पहली बात के बारे में लोगो को विवाद करने की गुंजाइश हो सकती है किन्तु ऐसे बहुत ही कम लोग होगे, जो इस दूसरी बात से अपना मतभेद प्रकट करेंगे। मनुष्य का जितना सर्वांगीण और गहन-गभीर चित्रण इस उपन्यास में हुआ है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

०००